[बिहार सरकार द्वारा विद्यालयों एवं पुस्तकालयों के लिए स्वीकृत]

अँजोर

[भोजपुरी परिवार (पटना) के त्रैमासिक मुख-पत्र]

⁂

जामें रस कछु होत है ताहि पढ़त सब कोय
भाव अनूठो चाहिए भाषा कोऊ होय

—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

⁂

प्रधान सम्पादक
पाण्डेय नर्म्मदेश्वर सहाय

कला-२
असाढ़-सावन
जुलाई

किरिनि-२
१८६२ साके
१९६१ ई०

संपादक-मंडल
गणेश चौबे : रास बिहारी राय शर्मा
रामवचन द्विवेदी 'अरविन्द' : प्रो० बसंत कुमार : बजरंग वर्मा

सहायक संपादक
अविनाश चन्द्र विद्यार्थी

एह अंक में पढ़ीं—

पन्ना

१ आइल रे बरखा (कविता)—प्रो० उमाकांत वर्मा, रा०ना० कालेज, हाजीपुर १
२ संपादक के विचार २
३ लोक-गीतों में जीवन का यथार्थ-चित्रण—प्रो० श्रीधर मिश्र, हिन्दी विभाग, खालसा कालेज, बंबई १६ ५
४ बउध लीला (प्रबंध-काव्य —स्वामी विमलानन्द सरस्वती, चरित्र वन, बक्सर १२
५ सुरमा सगुन विचारे ना (धारावाहिक उपन्यास)—रमेश चन्द्र झा, मोतिहारी १५
६ कविता-कुंज :
आवे जब सुधिया तोहार—जगदीशचन्द्र मिश्र, तिलठी (मिरजापुर) २०
कुहिल कुहिल छतिया बिहरलि—राम वचन सिंह यादव 'प्रेमी' नौली (गाजीपुर) २१
घेरि घेरि घन घहराये गगन में—शिवनारायण सिंह, राजपुर (शाहाबाद) २१
प्यारी बिरहिनिया के देस—विश्वनाथ प्रसाद 'शैदा', डुमराँव शाहाबाद) २२
सावन आवे ना—पाण्डेय कपिल एम० ए०, अनुवाद विभाग, पटना २३
तनी इहँवो बरसऽना—सत्यनारायण केशरी 'सौरभ', डुमराँव शाहाबाद) २३
आइल रितु बरसात—सतीश्वर सहाय वर्मा, नवीगंज, छपरा २४
गीत—आशा सहाय C/O राधा मोहन सहाय एडवोकेट, नागेश्वर कॉलोनी, पटना—४ २४
अइसन जवानी के रात—रमेश पाण्डेय C/O त्रिवेदी स्टूडियो, बंबई २५
घरवा अइलन हो मेहमान—नाथ नारायण सिंह 'भोजपुरी' ग्रा० पंचपटिया, पो० झौआ, (सारन) २६
मन बहलावेला—जगदीश ओझा 'सुंदर', मालगोदाम रोड, बलिया २७
७ महँगू (कहानी)—रामवृक्ष राय 'विधुर', मुँड़ेरा, पो० खढ़िया (गाजीपुर) २८
८ भोजपुरी लोकगीत में भरथरी-चरित—तारकेश्वर प्रसाद, मोतिहारी २९
९ सुधा के सेनुरबंध (कहानी) घनश्याम मिश्र, सोनबरसा, शाहाबाद ३३
१० लोक गीत—सं० गणेश चौबे, बँगरी (चंपारण) ३६
११ पाहुर : माँझी-गीत—सत्यदेवनारायण अष्ठाना, आकाशवाणी, पटना ३७
१२ भोजपुरी शब्दकोश ३८
१३ भोजपुरी मुहावरे ३९
१४ कविता—रामनाथ पाठक 'प्रणयी' : ध्रुवनारायण सिंह (शैलेश छपरहिया) ४०

प्रकाशक—भोजपुरी परिवार, पटना—३

'तमसो मा ज्योतिर्गमय'

अँजोर

धरती के लोर बाट जोहि रहल भोर के,
पह फाटल, बिहँसी अब किरिनियाँ 'अँजोर' के।

कला–२
असाढ़-सावन विक्रमी संवत् २०१८
शकाब्द १८८२ : : जुलाई १९६१'
किरिनि–२

आइल रे बरखा

निमियाँ के डेहुँगी से सरकत, उतरल रे बरखा !
आइल रे बरखा !

माथे गोरकी बिजुरी पगिया अँगिया साम बरन के
बूँद घुँघुरवा पाँव सँवारे अँखिया काजर रँग के
हाथे तीर धनुहिया तनले चितवत रे बरखा !
आइल रे बरखा !

बाँझी मेंड़ मड़इया भींजल लहुरी गाछ बिरिछिया
इत उत सूतल बिरिहिन मन के उकसल पीत सनेहिया
फुहिया के झोंका में झिपसत झूमल रे बरखा !
आइल रे बरखा !

मुनियाँ निकसल मउनी लेके, कोखिया छोड़े अँगनवाँ
खुरपी लेले रधिया निकसल, झुनियाँ सोच करमवाँ
चट कल से पियवा नाहिं आइल बिहँसल रे बरखा !
आइल रे बरखा !

प्रो० उमाकांत वर्मा (छपरा)

संपादक के विचार

छात्रन पर नया भाषा पढ़े के बोझा लादल अन्याय होखी

स्कूल के पढ़ाई में लरिकन पर जतना बोझ पड़ल बाटे ओतने के सम्हारे में लरिकन के दुर्गति हो जाता। अब फिर ऊपर से एगो आउर नया भाषा पढ़े के बोझ लदाई तऽ भगवाने ओन्हनी के बचइहें। अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत, गणित, इतिहास, भूगोल, विज्ञान आदि विषय साथे-साथे पढ़त-पढ़त ओन्हनी के दिमाग कउआइल रहत बा। अगर हमनी का शिक्षा प्रणाली में लरिकन के रुचि आ झुकाव के माफिक विषय के चुनाव करे के सुविधा रहित तऽ कतना लरिका एक से एक विशेषज्ञ बनिके निकलितेसनि। कई गो विषय एके साथे लदला से कोमल दिमाग के लरिका अइसन अउँजात बाड़ेसनि कि ओन्हनी के ना देह के विकास होखे पावत बा ना दिमाग के। तबो सुनात बा कि एगो अउरो कौनो भाषा ओन्हनी का पढ़े के परी। सब लोक भाषा के पक्षपाती लोग अपना लरिकन के आपन-आपन बोली पढ़ावे के हठ करी तऽ चारू ओरि खूब अउँजारि होई आ कठहुज्जति मची। एह चढ़ा ऊपरी से कौनो लाभ ना होई। बिहार भर में विरोधो खूब बढ़ी। हम भोजपुरी के प्रेमी जरूर हईं, मगर हम अपना प्रान्त के लरिकन का पढ़ाई में हिन्दी का साथे भोजपुरी के खड़ा कइल नइखीं चाहत। हिन्दीए पढ़ला से भोजपुरी के विकास आ उन्नति बराबर होत रही। बाकी जब भाषा के अखाड़ा में दंगल होखे लागी तब तऽ भोजपुरी इलाकन में भी हउँजारि मचबे करी। हमार ब्रह्म इहे कहत बाटे कि प्रजा में असन्तोष बढ़ावे के काम एह नाजुक समय में ना होखे के चाहीं। हमरा देखे से कवनो लरिका के महतारी-बाप भी ना चाही कि लरिकन पर कवनो नया बोझ लादल जाउ। सरकार का भी आगा-पाछा सोचि के डेग बढ़ावे के चाहीं।

महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर के शती जयन्ती

पिछला मई महीना में देश-भर में बँगला भाषा के महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर के शती जयन्ती बड़ा धूमधाम आ उत्साह से मनावल गइल हा। हिन्दी के बहुत-से पत्रन के विशेषांक महाकवि के नाम पर निकसल हा। जवना पत्र के विशेषांक ना निकसल ओहू में उन्हकर जीवनी आ चित्र आ उन्हुका रचना के हिन्दी अनुवाद छपल। अपना देस के कवनो महाकवि के अइसन सन्मान आ सतकार अतना सरधा से कबहीं देखे में ना आइल रहे। भोजपुरी क्षेत्र के स्कूल, कालेज, पुस्तकालय आ साहित्यिक संस्था सब में भी बड़ा हौसला से महाकवि के खूबे गुनगान भइल। एह से पता चलल कि हमरा देस के लोगन में अपना देस के महापुरुषन खातिर कतना आदर-भाव बाटे। ईहे जीवित जाग्रत जाति के लच्छन हउए। जैवना समाज में अपना पुरुखन के जस ना गवाइ ऊ समाज निर्जीव कहाला। रवि बाबू तमाम बिदेसनि में जाके भारत के गौरव बढ़वले। उन्हुका कारन बिदेसनि के नामी गरामी विद्वान लोग भारत के सराहना कइल। उन्हुकर रचल साहित्य से देस भर के सभ भाषा प्रभावित भइली सऽ। 'अँजोर' का ओर से हमहू उन्हुका के श्रद्धांजलि देत बानी।

RajGuru Math, Shiyala, Varanasi Collection

भोजपुरी के विशाल शब्दकोश

एगो विश्वासी आदमी से सुने में आइल हा कि प्रयाग-विश्वविद्यालय के हिन्दी-विभाग के एगो प्रोफेसर भोजपुरी भाषा के बड़ा भारी शब्दकोश तैयार कइले बाड़े। ओह में बत्तीस हजार शब्द के हिन्दी-अर्थ लिखले बाड़े। प्रोफेसर साहब पंजाबी हवें आ अँगरेजी-हिन्दी के एगो भारी-भरकम शब्दकोश बनवले बाड़े। अपना विभाग के भोजपुरिया छात्रन से पूछ-पूछ के कोश तैयार कइले हा। अगर ई बात सचमुच साच होखे त ओह कोश के छपवावे खातिर प्रोफेसर साहब से बातचीत करे के चाहीं। हमरा पास कई भोजपुरिया भाई लोग खबर देले बाड़े कि उन्हुका पास कई एक हजार भोजपुरी शब्दन्हि के कोश तैयार रखल बाटे, बाकी मँगलो पर केहू के किरपा नइखे लउकत जे भोजपुरी-शब्दकोश निकाले खातिर तैयार होखे। भोजपुरी के हितैषी लोग एह तरफ ध्यान दिहिते तऽ बड़ा अच्छा होइत। शब्दकोश बिना भाषा के उन्नति ना हो सके। ओकरा छपि गइला पर बिक्री होत भी देर ना लागी।

'अँजोर' में भोजपुरी-शब्दकोश आ मुहावरा-कोश

'अँजोर' के हर अंक में भोजपुरी के शब्द आ मुहावरा छपत चलि आवत बाटे। हम पहिले ही अंक में निवेदन कइले रहीं कि भोजपुरी क्षेत्र के कोना-कोना से सब लोग ओह में अपना तरफ के शब्द आ मुहावरा भेजसु। एके शब्द के कई गो अर्थ अलग-अलग क्षेत्र में प्रचलित बाटे। कोश अइसन चीज ना हउए कि एके आदमी तैयार करे। अबहीं नया-नया कोश बनावे के बा। एह से सब लोग ओकरा में हाथ बँटावे। मगर 'अँजोर' के पाँच-छव अंक निकसि गइल, अबहीं ले केहू कहीं से एको शब्द या मुहावरा भेजे के किरपा ना कइल। जवन शब्द आ मुहावरा अर्थ-सहित छपत बा तवनों में केहू नइखे बतावत कि कहाँ कौन गलती बा आ कहाँ कौन नया अर्थ जोड़े के चाहीं। हम फिर अपना पाठक आ ग्राहक लोग से बिनती करत बानी कि शब्द आ मुहावरा के संग्रह करे आ अर्थ लीखे में सहायता देवे के किरपा करीं। एह काम में जेकरा से जइसन सहायता मिली ओकर नाम 'अँजोर' में प्रकाशित कर दीहल जाई। हमरा बिसवास बाटे कि एह बिनती पर सभे केहू जरूर ध्यान दीही। भोजपुरी शब्द आ मुहावरा के कोश बनि गइला पर हिन्दी के भी बड़ा उपकार होखी। अबहीं शब्द आ मुहावरा के खाली अर्थ लिखात बाटे, जब ग्रन्थ का रूप में छपावे के होई त सभ के प्रयोग बतावे खातिर उदाहरण के वाक्य भी बनावल जाई।

भोजपुरी इलाका के प्राचीन ऐतिहासिक स्थान

भोजपुरी भाषा के क्षेत्र बहुत विस्तृत बाटे। ओह में बहुत सा पुरान खँड़हर, तालाब, मन्दिर, गढ़ आ टीला पड़ल बाड़ेसनि। ओन्हनी का बारे में ओही आसपास के लिखल-पढ़ल लोगन का खोज करत रहे के चाहीं। कतना पुराना घाट आ तीरथ आ मेला भी एह क्षेत्र में प्रसिद्ध बा। ओह सभनि के वर्णन भी लीखे के जरूरत बा। 'अँजोर' में अइसन चीजन के हम छापे के चाहत बानी। मगर एह विषय के लेख खूब प्रामाणिक होखे के चाहीं। लेख तैयार करे खातिर बहुत छानबीन करे के होई। दौड़धूप भी करे के पड़ी। सबूत जुटावे वास्ते कतना ग्रन्थों के टटोले के परिश्रम करना पड़ी। लेकिन अइसन लेख से लेखक के जस तऽ बढ़बे करी, भोजपुरी के गौरव भी बढ़ी। भोजपुरी-साहित्य के उन्नति तबे होई जब ओह में दोसर भाषा के विद्वानन के आकर्षित करे के मसाला रही।

इतिहास आ पुरातत्त्व के काफी मसाला भोजपुरी क्षेत्र में बिखरल पड़ल बा। ओह सभनि के बटोरल बहुत जरूरी बा। एह काम में सुशिक्षित लोगन का तन-मन-धन से लागे के परी। अगर सचमुच भोजपुरी के प्रतिष्ठा बढ़ावे के बा तऽ अइसन कामन्हि पर तत्परता से जुटि जाये के चाहीं। 'अँजोर' के पाठक आ ग्राहक अपना-अपना इलाका में एह बात के प्रचार करसु आ अधिकारी लोगन से लिखवावसु तऽ भोजपुरी के असली सेवा होखी।

—पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय

भोजपुरी में फिलिम

लच्छन बुझात बा कि अब भोजपुरियो में फिलिम बन के रही। अभी हाले फिलमी दुनिया के मसहूर अभिनेता रामायन तिवारी जी आउर भगवान जी लोग बम्बई से पटना आइल रहे। ई लोग से जे बतकही भइल ओकरा से इहे पता चलल कि ई लोग छपरा के मूसाकलीम साहेब (जे आजकल बम्बइए में बाड़न) से भोजपुरी फिलिम खातिर एगो कथा लिखवा के तइयार भी करवा लेले बा लोग। भगवान जी हमरा के ई कथा सुनवलन भी आउर बतवलन जे एकर काम गया जिला के एगो गाँव से जल्दिए सुरू होई।

तिवारी जी से हमरा मालूम भइल जे ई फिलिम से छुट्टी भइला पर ऊ लोग बाबू कुँवर सिंह पर भोजपुरी में फिलिम बनावे में लाग जाई।

तिवारी जी, भगवान जी आउर मूसाकलीम साहब तीनों आदमी बम्बई के फिलमी दुनियाँ में जाके बिहार के नाम उजागर कइले बा लोग। ई लोग भोजपुरी में फिलिम बनावे के काम उठवले बा एही से उमेद बुझात बा कि ई काम जरूरे पूरा होई। लेकिन ई लोग से हमारा एगो बात कहे के बा। ऊ ई जे भोजपुरी में फिलिम बम्बइया हिन्दी-फिलिम का लाइन पर ना बने के चाहीं। बंगला में जइसन सीधा सपाटा फिलिम बनेला वइसे अगर भोजपुरियो में बने त खरचो कम लागी आ चीजो नीमन होई।

भोजपुरी में फिलिम तइयार होय, एकर बेचैनी हम फिल्मी दुनियाँ के एगो आउर बड़ अभिनेता में देखनी। ओह अभिनेता के नाम ह नजीर हुसेन साहब। ऊ आरा के सिवान पर बलिया जिला के एगो गाँव के रहेवाला हउअन आउर हिन्दी के पचासो फिलिम में काम कइले बाड़न। अबकी जून महीना में खगौल (दानापुर) सिनेमा में हिन्दी फिलिम 'अनुराधा' (जेमें ऊ अपने भी काम कइले बाड़न) फिलिम के उद्घाटन करे आइल रहलन। बतकही में ऊ कहलन जे भोजपुरी में अब जेतना जल्दी होय फिलिम बन जाय के चाहीं। ऊ बतवलन जे एगो नीमन भोजपुरी फिलिम बनावे में कम-से-कम एक-सावा लाख के खरच बा एह से जबले केहू मोट रुपयगर आदमी खड़ा ना होई तबले फिलिम बनल मुसकिल बा। ऊ आदमी के भी रुपया लेकर के कुछ दिन बम्बई में बइठे के पड़ी, तबे काम फरिआई। हमनी के भोजपुरी इलाका में रुपयगर आदमी के कवनो कमी नइखे। ओह में अगर एगो आदमी भी एकरा बारे में सोचे त भोजपुरी के काम बन जाय।

भोजपुरी फिलिम में घाटा के सवाले नइखे। भोजपुरिया लोग अपना देश में कहँवा नइखे? उत्तर प्रदेश आउर बिहार के त नामें मत लीं। अइसे अपना देस में कलकत्ता आउर देस का बाहर मारिशस, फिजीलैण्ड, आउर बरमा में भी भोजपुरी फिलिम कम ना चली।

भोजपुरी में जेतना फिलिम बने ओतने अच्छा। सरकार आउर हमनीं के चाहीं जे एह शुभ काम में सहायता करीं जा।

—बजरंग वर्मा

निबंध (हिन्दी)

लोक-गीतों में जीवन का यथार्थ-चित्रण

प्रो० श्रीधर मिश्र, एम० ए०
(हिन्दी विभाग, खालसा कालेज, बम्बई १६)

लोकगीत, लोक-कंठ-निःसृत प्राकृतिक गान है, जिसमें लोकका उल्लास, उसकी पीड़ा, उसका हृदय एवं समस्त जीवन व्यक्त हुआ है। इन लोकगीतों का चित्र-फलक इन्द्रधनुषी है, जो क्षितिज के एक छोर से उठता है और दूसरे छोर पर समाप्त होता है। वह अपने वितान में बहुरंगे चित्र छिपाये रहता है। इन लोकगीतों में जीवन का यथार्थ चित्रण हुआ है क्योंकि लोक-कवि सच्चे अर्थ में पृथ्वी-पुत्र है और ये गीत हैं पृथ्वी की उसाँस।

यों तो जीवन के सत्यों को ज्यों-का-त्यों, बिना कल्पना का रंग चढ़ाये, यथातथ्य चित्रण को यथार्थवाद कहते हैं; किन्तु पश्चिमी समीक्षकों के अनुसार जीवन में जो प्रत्यक्ष है, वही यथार्थ है। प्रत्यक्ष से तात्पर्य केवल चक्षु-ग्राह्य पदार्थ ही नहीं, प्रत्युत अन्य इन्द्रियों से ग्राह्य पदार्थ भी यथार्थ ही हैं। फ्रांसीसी उपन्यासकार जोला के मत से यथार्थवाद में "कल्पना और आदर्श का निषेध होना चाहिए। यथार्थवाद में वैसी ही वस्तुओं का ग्रहण हो सकता है जो सामान्य जीवन में आ सकती हों; क्योंकि सामान्य जीवन में पायी जानेवाली और अनुभव से सिद्ध वास्तविक वस्तुओं या भावनाओं को पाठक तक पहुँचा देने की बलवती प्रवृत्ति ही यथार्थवाद है।"

आर्थर केस्टलर इसका खण्डन करते हैं। इस भाँति यथार्थवाद के कई रूप हो गये —प्रकृतिवादी यथार्थवाद, मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद, ऐतिहासिक यथार्थवाद, आदर्शोन्मुख यथार्थवाद और समाजवादी यथार्थवाद आदि। प्रकृतिवाद के अनुसार मनुष्य प्रकृति का उसी प्रकार से विकसित जीव है, जिस प्रकार संसार के अन्य प्राणी। वह काम, क्रोध, लोभ आदि मनोरागों का पिंड-मात्र है।

निम्नांकित लोकगीत में यह दिखलाया गया है कि मनुष्य कितना स्वार्थी होता है। सुखिया दुखिया दो बहनें थीं। उनके भाई के लड़का हुआ था। उत्सव में सम्मिलित होने के लिये दोनों गयीं। सुखिया अपने साथ बच्चे के लिये गहने, कपड़े इत्यादि लायी थी इसलिये भाभी बड़ी प्रसन्न हुई। सुखिया का खूब आदर-सत्कार हुआ और आते जाते समय उसे कोंछ-भर मोती दिया गया और उसके पति को घोड़ा। बेचारी दुखिया अपने आँचल में केवल दूब लायी थी। उस गरीब बहन को कौन पूछता है? जब बेचारी जाने लगी तो इसकी कोंछ में कोदो और दूब डाली गयी। बेचारी दुखिया अपने घर की ओर चली, किन्तु अभी वह गाँव की सीमा से बाहर भी नहीं जा पायी थी कि उसके आँचल से मोती झड़ने लगे। उसकी भाभी छत से उसका जाना देख रही थी। वह पुकार उठी—मेरी ननद रूठकर जा रही है। उसे मना लाओ—

सुखिया दुखिया दोनों बहिनियाँ।
दूनों बधइया ले अइलीं, हरे राजा बीरन।

सुखिया जे लाई गुँजहरा गोड़हरा।
दुखिया त दूध के पोंडा, हरे राजा वीरन।
सुखिया जे पूछेली अपने वीरन से।
बिदा करहु घर जाई, हरे राजा बीरन।
लेहु न बहिनी खोइँछ भरी मोतिया।
सैयाँ चढ़न के घोड़वा, हरे राजा बीरन।
दुखिया जे पूछे ले अपना वीरन से।
बिदा करहु घर जाई, हरे राजा वीरन।
लेहु ना बहिनी खोंइँछ भरि कोदो।
ऊहे दूब के पोंडा, हरे राजा वीरन।
गउँआँ गोयँड़वा लँघहीं ना पवलीं।
दुबिया झरन लागे मोती, हरे राजा बीरन।
कोठवा जे चढ़ि के त भउजी पुकारेली।
ननदी रूठल घरवा लावहु, हरे मोरे वालम।[१]

मानव कितना स्वार्थी है। जब बेचारी दुखिया केवल दूब लेकर आई थी, तब तो उसका स्वागत नहीं हुआ, भले ही उसके हृदय में अपने भाई के प्रति, अपने नये भतीजे के प्रति सच्चा स्नेह था। उस समय तो सुखिया का आदर-सत्कार हुआ, क्योंकि वह भतीजे के लिये कपड़े और गहने लेकर आई थी, किन्तु जब इसके आँचल से मोती झड़ने लगे तो उसकी पुकार होने लगी। दुनिया का यही यथार्थ रूप है। उस बहन के हृदय में अपने भाई और भतीजे के प्रति सच्चा प्यार था, स्नेह था, अपनापन था, इस लिये भले ही प्रारम्भ में इसका निरापद हुआ हो, किन्तु अन्त में इसी की विजय होती है। यह उस प्रकृतिवादी यथार्थवाद के साथ आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद है।

जो रचनाएँ ऐतिहासिक सत्यों के आधार पर की जाती हैं, वे ऐतिहासिक यथार्थवाद की कोटि में आती हैं। इतिहास क्या है? आज के जो प्रश्न हैं, यथार्थ हैं, वे ही कल इतिहास हो जाते हैं। भोजपुरी लोक-गीतों में मुसलमानी काल के अत्याचार, उनकी विषय-लोलुपता और सन् १८५७ के प्रथम स्वतन्त्रता-संग्राम के अमर सेनानी स्वर्गीय कुँवर सिंह का वर्णन मिलता है, जो ऐतिहासिक यथार्थ है। एक मुसलमान एक हिन्दू स्त्री को बलात् अपनी पत्नी बनाना चाहता था। कुसुमा देवी, मिरजा के सभी अत्याचारों को सहते हुए अपने सतीत्व की रक्षा करती है। यह कहकर कि मुझे प्यास लगी है, तालाब से पानी पीकर आती हूँ, बेचारी जाती है और उसी में डूब कर प्राण दे देती है। अन्त में मिरजा मुँह में रूमाल देकर रोते हैं। कुसुमा के भाई और पिता अपने सिर की पगड़ी बाँध कर हँसते हैं। भाई कहता है—हे बहन, तूने दोनों कुलों की लाज रख ली—

मुँहवा पटुका देके रोवे राजा मिरजा, मोरे मुँह करिखा लगाइब हो ना।
सिर पे पगड़िया बाँधि हँसे भैया बाबा, दूनों कुल राखेउ बहिनी कुसुमा हो ना।

---

[१] —'भोजपुरी लोक-गीतों में करुण-रस'—दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह
(हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, पृष्ठ ५३।)

वीर कुँवर सिंह ने डटकर अंग्रेजों का सामना किया। अंग्रेज वार-वार कुँवर सिंह के यहाँ संदेश भेजते थे कि आइये, हमलोग सन्धि कर लें। वे कहते थे कि हम लोग आपको एक राज्य भी देंगे; किन्तु कुँवर सिंह का यही कहना था कि जव तक शरीर में प्राण है, रहेगा, मैं अपने प्रण से नहीं टलूँगा—

वावू कुँवर सिंह तेगवा वहादुर, आरा में धूम मचाई रे।
मुट्ठी भरि सेना लेके कुँवर सिंह, फिरंगिया पर छापा गिराई रे।
कप्तान लिखे मिलऽ कुँवर सिंह, आरा के सूवा वनाइव रे।
तोहफा मे देवो, इनाम देवों, तोहके राजा वनाइव रे।
वावू कुँवर सिंह भेजले सनेसवा, मोसे ना चली चतुराई रे।
जव तक प्रान रही तन भीतर, मारग नाहीं वदलाई रे।

अन्त तक कुँवर सिंह अपने प्रग पर दृढ़ रहे। आज उन्हीं शहीदों के त्याग और तपस्या के फलस्वरूप भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त हुई है।

वास्तव में जीवन के मूलभूत यथार्थ दो हैं—भोजन और भोग, जिनके हल करने में मनुष्य निरन्तर संघर्षशील है। जीवन की लगभग सभी समस्याएँ इन्हीं दो संघर्षों से किसी न किसी प्रकार संलग्न हैं। यथार्थवाद के जितने भी रूप हैं या हो सकते हैं, सभी इन्हीं यथार्थ के अन्तर्गत हैं।

फ्रायड आदि सामाजिक प्रतिवन्धों के विरुद्ध अपनी अन्तर्मुखी वृत्तियों का प्रकाशन ही यथार्थ समझते हैं। इसे मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद कहते हैं, जो विशेषतः यौन से सम्वन्धित हैं। हमारे समाज में मर्यादा का बड़ा ही कड़ा बन्धन है जिससे सवकी भावनाएँ मन में दवी रहती हैं। गोपनीयता के साथ हमेशा उसके उभाड़ने की एक स्वाभाविक जिज्ञासा रहती है। सामाजिक दृष्टि से जो गोपनीय है, वह व्यक्तिगत रूप से स्पष्ट है, उन्मुक्त है, कठिनाई केवल इतनी है कि उस उन्मुक्त और स्पष्ट व्यापार की चर्चा असामाजिक है। जीवन की एक महत्त्वपूर्ण जिज्ञासा, वलवती आकांक्षा और तीव्र लालसा सामाजिक अभिव्यक्ति पाकर लांछित हो जाती है, परन्तु वह जीवन का प्रमुख यथार्थ है जिसे सामाजिक रूप से अस्वीकार कर दिया जाता है। व्यवहार की इसी विषमता के कारण प्रत्येक मनुष्य के मन में सामाजिक दृष्टि से वर्जित, अवांछनीय और अश्लील को व्यक्त करने की हमेशा एक इच्छा बनी रहती है। यही कारण है कि इस प्रकार के अश्लील और असामाजिक चर्चाएँ कुछ अभिन्न मित्रों और सहेलियों के वीच में होती हैं, इसके अतिरिक्त जहाँ कहीं भी अश्लील और अभद्र होने का फतवा मिलने की आकांक्षा रहती है, कंठावरोध हो जाता है और फिर वह सब जो कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का घोर यथार्थ है ऐसे अवसरों पर खुलकर अभिव्यक्त होता है, जव समाज उसे असामाजिक, अश्लील मानते हुए भी उसकी अभिव्यक्ति की छूट देता है।

होली का ऐसा ही अवसर है। उस समय सामाजिक मार्यादा का बाँध ढीला पड़ जाता है। युवक, बच्चे और बूढ़े सभी एक स्वर से कवीर वोलते हैं—सुन लऽ भइया मोर कवीर, भले जी भले। इनको एक अच्छा मौका मिला। आज वे अपने मन की कसक निकाल रहे हैं—"आओ, इस सुन्दरी को लेकर कलकत्ते भाग चलें। हलवाई की लड़की

हलवे के समान है। तुम्हारे गाल मालपुआ के समान हैं और स्तन लड्डू के समान। गाहक उधार माँग रहे हैं'—

जानी कै ले भागो कलकतवा हो बाजार।
हलुआ नियर हलुआइनि बिटिया।
पुआ निअर तोरे गाल हो।
लडुआ नियर बाला जोबनवा
गँहकी माँगे उधार जानी के ले भागो।

आज इनके अर्थ और काम—दोनों पुरुषार्थ—की उपलब्धि हुई।

स्त्रियों के लिए भी कुछ इसी प्रकार के अवसर है जिनमें वे लोक-लाज, स्त्री-सुलभ संकोच और सामाजिक मर्यादा को भूलकर दबी हुई और कुंठित यौन-भावना को अभिव्यक्त करने में नहीं झिझकतीं। विवाह और जनेऊ में एक विधि 'मटिकोड़ा' की है, जिसमें स्त्रियाँ घर से बाहर जाकर समीप के किसी खेत से मिट्टी खोदकर ले आती हैं। उस समय वे बड़ा ही अश्लील गीत गाती हैं। उस समय पता नहीं, उनकी लज्जा, उनकी मर्यादा कहाँ चली जाती है। उन्हें उन गीतों में बड़ा आनन्द आता है। प्रारम्भ में वे गाती हैं कि 'मैं मिट्टी खोदने गयी थी कि देवर पापी ने हमारी कलाई पकड़ ली। हे देवर! हमारी कलाई छोड़ दे, नहीं तो हमारी सुन्दर चूड़ी टूट जायगी—

माटी खोने गइली रे ओही मटिखनवा, देवरवा पापी, धइले मोरी बहियाँ।
छोड़ छोड़ देवरा रे हमर रे कलइया,
से फूटि जइहें ना, सोहानी रंग की चूरिया।

ऊपर के गीत के बाद जो गीत वे गाती हैं, वह बड़ा ही अश्लील होता है। उसमें बकरे को लगाकर एक दूसरे को सविस्तार गाली देती हैं। उन गीतों में अश्लीलता की मात्रा और कोटि उन्हीं अंशों में बढ़ती जाती है कि जिन अंशों में श्लीलता और भद्रता की मर्यादाएँ कठोर होती जाती हैं।

जीवन का प्रथम और सर्वप्रधान यथार्थ है—रोटी, जिसका हल करने में मनुष्य निरन्तर संघर्षशील है। इसे मैं यथार्थवाद की चरम सीमा मानता हूँ जिसका विशेष सम्बन्ध समाजवादी यथार्थवाद से है, जो समाज-विरोधी तत्त्वों के त्याग और गतिमान तत्वों के चयन तथा उपयोग पर बल देता है। साथ ही, यह सर्वहारा-क्रान्ति के लिए वातावरण प्रस्तुत करता है। जीवन के इस यथार्थ रूप को अनेक माध्यमों से अभिव्यक्त किया गया है। यथार्थवादी लोकगीत मजदूरों और किसानों के लिए उत्तेजना और उद्बोधन के गीत हैं, जिनके द्वारा वे अपनी भावना प्रगट करते हैं।

अंग्रेज यहाँ रोटी की खोज में ही तो आये थे, किन्तु अपनी माया से यहाँ के शासक बन गये। भारत उनके चंगुल में फँस गया था। वे भारत का शोषण कर रहे थे। जब वे यहाँ से धन दौलत लन्दन लेकर चले गये, देश को बरबाद कर दिया, तब सन् १९४७ में यहाँ से गये। जनता अंग्रेजों से पूछती है—हे ब्रिटिश! भारत को मिट्टी में मिलाकर तुमको क्या मिला? पहले तुमने इस देश को बरबाद कर दिया, हजारों वीरों की गर्दन कटवाई, अन्त में तुमको इंग्लैंड जाना ही पड़ा—

ब्रिटिश का तूँ पवलऽ, भारत माटी में मिला के, अपने लन्दन जाके ना।
पहले कइलऽ बरबादी, पीछे दिहलऽ अजादी, बाकी बीर लोके गरदन कटवा के।

ऊपर का लोक-गीत कितना यथार्थपूर्ण है। अंग्रेज भी जानते थे कि हमलोग अधिक दिन तक भारन में नहीं रह सकते, किन्तु उन्होंने देश को वरवाद करके छोड़ दिया। एक दूसरे गीत में जनता कह रही है कि हे विदेशियो, तुम्हारे शासन में भारत तबाह हो गया। जौ-चना महँगा हो गया, चावल मिलता ही नहीं, अव तो 'जनेरे' (मकई) के लिए भी लड़ाई हो रही है। तुम्हारे शासन में साड़ी धोती आदि महँगे ही गये। कुर्त्ता मिलता ही नहीं, यहाँ तक कि मारकीन पर भी कन्ट्रोल है--

भारत हो गइल वेहाल से विदेसी तोरे रजवा में।
जव चना महँग भइले, चउरा मिलत नइखे,
जनेरवा पर भइले मारा-मारी, हो विदेसी तोरे रजवा।
भारत हो गइल वेहाल हो विदेसी तोरे रजवा में।
लूगा धोती महँग भइले, कुरता मिलत नइखे।
मोटिया पर भइले कंट्रोलवा, हो विदेसी तोरे रजवा में।
भारत हो गइल वेहाल, हो विदेसी तोरे रजवा में।

एक सोहर में कहा गया है कि हरे-भरे ढाक के नीचे अनमनी-सी एक हिरनी खड़ी है। हिरन ने जव उसे उदास देखा तो पूछा कि तुम क्यों इतनी दुखी हो? क्या तेरा चारागाह सूख गया या पीने के लिए पानी नहीं मिला? वेचारी हिरनी कहती है कि "न तो चारागाह सूख गया है और न पानी की ही कमी है। आज राजा जी के यहाँ छठी का उत्सव है। आज वे तुम्हारा वध कर डालेंगे।" अव क्या था, हिरन का वध हो गया। कौसल्या रानी मचिया पर वैठी हुई थीं। हिरनी जाकर उनसे प्रार्थना करती है "हे रानी! माँस को तो कड़ाही में सिझाया जा रहा है। अव मैं आपसे भीख माँग रही हूँ कि आप मेरे हिरन का चमड़ा ही दे दें। मैं उसे पेड़ पर टाँग कर बार-बार देखती रहूँगी और अपने मन को समझा लूँगी--मेरा हिरन मानों अभी जीवित ही है।" पत्थर-हृदया-रानी कहती है कि हे हिरनी! तू अपने घर जा। मैं तुझे चमड़ा भी नहीं दूँगी। मैं इस चमड़े से खँजड़ी मढ़ाऊँगी, जिससे मेरे राम खेलेंगे --

छांपक पेड़ छिउकिया त पतवन गहवर हो।
ताहि तर ठाढ़ी हरिनिया त मन अति अनमन हो।
चरत-चरत हरिनवा त हरिनी से पूछे ले हो।
हरिनी! की तोर चरहा झुरान कि पानी विनु मुरझीले हो।
नाहीं मोर चरहा तुरान ना पानी विनु मुरझीले हो।
हरिना! आजु राजा के छठियार तुइ मारि डरिहउ हो।
मचियहिं वइठेली कोसिला रानी हरिनी अरज करे हो।
रानी! मासू त सीझेला रसोइया, खलरिया हमें दीतू नु हो।
पेड़वा से टाँगवि खलरिया त मनवा समुझाइबि हो।
रानी! हरि-फिरि देखवि खलरिया जनुक हरिना जीअतहिं हो।
जाहु हरिनि! घर अपना खलरिया नाहीं देवइ हो।
हरिनि! खलरी क खँजड़ी मढ़ाइबि, राम मोरा खेलिहइँ हो १।

---

१ "भोजपुरी लोकगीत में करुण रस" : दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह,, (वही) पृ०—२६

ये हैं कौसिल्या रानी, जो अपने राम की छठी के लिए, खेलने लिए और खुशी के लिए उस हिरनी को विधवा बनाती हैं। हम यह न समझें कि यह कौसिल्या राजा दशरथ की पत्नी हैं, राम की माँ है, वरन् यह स्वतन्त्रता मिलने के पूर्व की हमारे गाँवों में बसनेवाली सामन्ती युग की स्त्रियाँ हैं, जो अपने आनन्द का महल गरीबों की लाश पर बनवाती थीं, अपनी फुलवारी उनके खून से सींचती थीं।

एक सोहर में भी इसी प्रकार का भाव व्यक्त हुआ है। हरिनी ढाक के नीचे खड़ी होकर हिरन की राह देख रही है। उसका मुँह पीला पड़ गया है। जब हिरन वन से आता है तो उसे उदास देखकर पूछता है, तुम क्यों इतनी उदास हो? वह बतलाती है कि मैं राजा के द्वार पर गयी थी। वहाँ मैंने सुना कि आज छोटे राजा अपने बहेलिये से तुम्हें मरवायेंगे। राम की स्त्री सीता गर्भवती है। उन्हीं के लिए हिरन मारा जायेगा। बेचारी हरिनी क्या करे, वह कौसल्या के यहाँ जाती है और हाथ जोड़कर विनती करती है—"हे रानी! आज सीता के पुत्र होगा। हमें कुछ नेग दीजिए।" इस गीत की कौसल्या विवेकी जमींदारिन है। वह हरिनी का अभिप्राय समझ जाती है। कहती है—"हे हरिनी! मैं हरिन के दोनों सींगों को सोने से मढ़वाऊँगी और तिल चाउर (गुड़ मिला हुआ भिगोया चावल) खाने के लिए दूँगी—तुम अयोध्या में सुख भोगो और निर्भय होकर वन में विहार करो—

कर जोरि हरिनि अरज करे सुनी ना कोसिला रानी हो।
रानी! सीता के होइहैं नन्दलाल हमहिं कछु दीहवि हो।
सोनवा मढ़इबों दूनो सिंधिया भोजनवा तिल चाउर हो।
हरिनी! भुगतहु अजोधा के राज अभय बन विचरहु हो।

विवेकी जमींदारिन की कृपा से बेचारा हिरन बच जाता है, अथवा छोटे राजा अपने बहेलिये से उसका वध करवा डालते।

एक अन्य भोजपुरी लोकगीत में जनता की गरीबी का बड़ा ही मार्मिक चित्रण हुआ है। शोषक और शोषित वर्ग का वास्तविक रूप हमारे सम्मुख आ जाता है। चिन्ता से मरा जा रहा है, बुरे दिनों से परेशान है। कर्जा लेकर तो खेती की, धान भी सूख गया। बैल को बेच कर साहु के रुपये दिये। यों ही रातें काटीं। बच्चे नंगे हैं, पत्नी की फटी हुई साड़ी और भी फटती जा रही है। साहु और जमींदार लोग चैन से सो रहे हैं, मेरा कोई ठिकाना नहीं। कभी लपसी खायी, कभी इसी तरह सो गया—

फिकिरिया मरलसि जान रे दुरदिनवा कइलसि हैरान।
करजा काढ़ि के खेती कइलीं मरि गइल सब धान॥
बैला बेचि के सहुआ के दिहली, रतिया कइलीं बिहान।
लड़िका लड़की के लँगटे देखलीं, मेहरी के लुगरी पुरान॥
सहुआ रजवा चैन से सोवें, हमरे नाहीं ठिकान।
कबहूँ के लपसी लाटा खइलीं, कबहूँ के साँझ बिहान॥
फिकिरिया मरलसि जान रे दुरदिनवा कइलसि हैरान॥

'फिकिरिया मरलसि जान' सत्य है, यथार्थ है। वेचारे किसान, मजदूर आदि गरीबी में पैदा होते हैं। दिन-रात परिश्रम करते हैं, किन्तु पेट नहीं भरता। उनके दादा परदादा ने साहु जी से जो कर्ज लिया था उसी को भरते-भरते वे एक दिन इस संसार से चले भी जाते हैं। यह है हमारा समाज—जहाँ एक व्यक्ति खाते खाते मरता है तो दूसरा अन्न विना मर जाता है।

लोकगीत जनमन की उपज है। लोक जो कुछ अनुभव करता है, उसे छिपा नहीं पाता। इसलिए उसके हास–विषाद, क्रोध, चोभ आदि सभी लोक गीतों में प्रगट हुए हैं। मिल-मालिक और पूँजीपति किस तरह से जनता का शोषण करते हैं। यह यथार्थ भी लोक गीतों में प्रगट हुआ है। यदि अधिक जाड़ा या वर्षा हो तो सेठ जी घर से वाहर नहीं निकलेंगे—कहीं सर्दी न लग जाय! वेचारा नौकर यदि तनिक देर से आता है तो उससे प्रश्न होता है, वेतन काट लिया जाता है। परिश्रम तो ये करते हैं, रुपया पैदा करने वाले मजदूर हैं किन्तु सेठ जी की तोंद वढ़ती है, इन वेचारों का पेट-पीठ वरावर। एक कजली के गीत में कोई प्रिया अपने पति से कह रही है कि हे प्रियतम! बड़े जोरों की वर्षा हो रही है, नौकरी पर कैसे जायेंगे, मत जाइये।' किन्तु वह पति कहता है कि हे रानी! पैर में जूता, हाथ में छाता और मुँह में रूमाल दवाकर किसी तरह धीरे-धीरे चला जाऊंगा, नहीं तो साहव वेतन काट लेंगे—

राजा हो, वड़ा कड़ा जल वरिसे, नौकरी कइसे जाइव ना।
रानी हो, पावें पनहिया, हाथ में छाता, मुखे रूमलिया ना।
धीरे-धीरे चलि जइवो, साहव तलव कटिहें ना।

वेचारा नौकरी पर नहीं जायेगा तो साहव वेतन काट लेंगे। पैसा नहीं मिलेगा तो भोजन कहाँ से होगा? लोक गीतों में जो यथार्थ वर्णित है, वे वास्तव में यथार्थ हैं, उनमें अतिरंजना नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति का बेटा, वेटा ही है, चाहे वह राजा का हो या एक रंक का। सभी मानव समान हैं, फिर यह मानव में भेद कैसा? इन सभी भेद-भावों को मिटाना होगा।

कहा जाता है कि भारत में दूध और दही की नदियाँ वहती थीं, किन्तु आज क्या है? दूध-दही के दर्शन भी दुर्लभ हैं। महँगी की वजह से दोनों समय भर-पेट अन्न भी नहीं मिलता। इन सब का बड़ा ही यथार्थ वर्णन एक लोकगीत में हुआ है। कोई कहता है कि महँगी के कारण विरहा विस्मरण हो गया, कजली और कवीर भूल गये। अब तो प्रिया के उन्नत स्तन देखकर भी हृदय में टीस नहीं उठती—

महँगी के मारे बिरहा बिसरल भूलि गइल कजरी कवीर।
गोरी के देखि के उठल जोबनवा अव उठे ना करेजवा में पीर।

सोलहो आने सही है। जब पेट भरता है तभी गीत, खेल-कूद और किलोल आदि अच्छे लगते हैं। जब पेट खाली रहता है, तव कुछ अच्छा नहीं लगता। भूखे व्यक्ति से भजन भी नहीं होता। यही है जीवन का यथार्थ और यथार्थवाद।

[पिछला अंक से आगे]

बउध-लीला

स्वामी विमलानन्द सरस्वती

(पश्चिमी शाहाबाद)

बिंबीसार बहुत बल कइलन,
धन दउलतिया माल खजाना,
राजपाट के लोभ देखवलनि।
जल ठहरे पुरइनि का पाते ?
सतरंगी मनमोहेवाली-
दुनियाँ के ई चाल दुरंगी,
योगिराज के भरमवलसि ना।
गउतम जी फटकरलनि-
कहलनि बाति बेदाग——
"सभ समाज के बागडोरि बा-
रउरा हाथे।
राजा होके इहे सिखाइबि ?
राजा हऽ समाज के अगुवा-
सभके डहरि देखावेवाला !
जनता के सुख-दुख के संगी,
काँट-कूस गड़हा खंधक से
हाथ लगा निबुकावे वाला !
राजा गुरू, साधु अगुवा बनि
जे समाज का अझुराहटि के
सहज बोध दे सझुरावे ना;
उलटे झोंटनि आगि लगावे,
अचके आँखिन धूरि झोंकि के
दे ढकेलि बइरि कंटी में——
ओकर बात सुनी के ?"
डहरि सुगति के धइले।
जे खोजत अमिरित के झरना,
अमरपुरी के डेग बढ़ावल,
ऊ राही का पाछे ताके ?

× × ×

नीर-छीर बिलगावे वाली,

निरगुन अमर आतमा चेतगर,
कब फंदा में बाझी ?
लाते कचटि लोभ के अँखुवा
झट गउतम जी आगे बढ़लनि,
लाँघि पहाड़, गया का——
महाखोह में गइलन।
साधे जोग
समाधि लगावे,
कौस्तुभ मणि के खोजें
कोहनूर के जोहे।
उरुवेला में तप कइलन ऊ
कठिन कलेस उठवलनि।
करत-साधना
साधत मन के
देहियाँ जर-जर भइलि
सूखि के।
गोताखोर बुड़ुकिया मरलसि
थाहत गइल अथाहा जल में
डूबि डूबि ऊ मोती खोजलसि
पर अबकी त ऊपर आइल
खाली हाथे !
उरुवेला का गुफाखोह से
पवनदेव का दया छोह से
गुनगुनात गँठिया के खोलत
मन के बोधत आइलि,
मीठ सुरीली तान सुनाइलि !
कई नचनियाँ, चमकत झमकत—
चलत घुघुर घँहरावति,
बीन बजावति,
रस छलकावति,

सुघर नाच दिखलावति
छूम छनन-झन-झन
झमकावति——
सुरस सवदगंर गीति सुनवलिन ।
"तार बीन के
ढील वहुत मति,
ना त ई तनिको ना बाजी
बहुत कड़ेर करहु जनि भाई,
टूटी बीना,
छूटी सभ चतुराई"
मरम ग्यान के
बुझलनि गउतम
बिचिली डहरि पकड़लनि ।
इहँवें उनका धरम-भीति के
नेव जँताइलि ।
पाछे ले कुल्हि लेवरक लागल
गोवरी भइल, पोताइल ।
भासल मनवा में गउतम का——
"तन के साधल——
कठिन कलेस उठावल
सीदति सासति——
बे मतलब कऽ !
माथ मुड़ाइल
चेला भइलन
लिहलन
कूदि-छउकि के
कंठी, मंतर, माला
दया धरम तप
सधुवाई के
सनदि दियाइलि ।
जाड़ा में जलशयन
जेठ में,
अगिनि तपाइलि ।
पर मनवा के मोड़ि सकल के
सीदति-सासति वरियाई से ?
मुड़रिन मारिके भइल के साधु
कब बालू से भीति उठलि बा ?
उगलि रेत में बीया,
के अकास कऽ तरई तोरल
बारल चढ़ि के दीया ?
कब पड़ँउस कऽ डोरि बराइलि ?
चलनी में जल कहाँ भराइल ?
अइसे काम चली ना,
जब ले मन में बोध भइल ना,
कंठी माला काम करी ना !!"

× × ×

एतने में आ गइलि सुजाता,
चंदन-रोरी धूप-दीप ले,
मेवा मिसिरी दूध डालि के-
केसर कस्तूरी से छौंकल
सजगर ज़ाउरि ले के
बिरिछ देवता का पूजा के
सुवरन थार सजवले !!
ईहे ओकर——
रहल मनवती——
'जब हम सफल मनोरथ होइबि
हूम कराइब बर बाबा के,
कुछ परसाद चढ़ाइबि' ।।
लिहले ई परसाद सुजाता
गुनगुनात सोचत मुसकात,
जइसे गइलि चहुँपि
बरवा तर——
देखलसि बइठल
सुघर गाँछ तर,
महा बिरागी——
तपेसरी के,
तप-समाधि में
डूबल——
कल से पलथी मरले ।
अँखिया ओकर
गील भइलि तब,
बहलि हृदय से
नेह-छोह भगती के छल-छल
गंगा जमुना-सुरसति धार !
ऊ जनलसि कि

जागलि भागि हमार;
परगट देव भेंटइलन !
साचो दइब पलक-दरियाई
सखी सुजाता--
बाति कहत में
पलकि गिरत में
सत सरधा का तिरबेनी में
करम-बचन-मन
चित बटोरि के
बुड़की मरलनि आगे बढ़ि के !!
ऊ सरधा के
थार बढ़वलसि ।
सुरस सवदगर—
मधुर—
प्रेम-रस सींझल
खइलनि खीर
बिहँसि गउतम जी,
कले कले ओनचास कवर में,
बइठि निलाजन का तिरवा पर !
गुनत-मथत—
माँठत मनवा के
गयान गाँछ पीपर का नीचे
पलथी मारि
बइठलन तुरते ।
सात दिनन ले देखलनि गउतम
आँखि खोलि टकटकी लगा के;
खड़ा भइल अँगुठा का बल पर
चित बटोरि पीपर का पुलँगी !
पीपर ले कुछ फरका हटि के
सात दिनन ले बायें करवट
ओठँघि भूँइ पर
ओही गाँछवा दीठि गड़वलन !
किसिम किसिम का जोगासन में
बीतल दिन ओनचास

× × ×

आखिर थेघ भेंटाइल
जे डूबल से पावल;
"कइसन सुन्दर रथ देहियाँ के
जेहि पर चढ़े आतमा राजा
अकिलि सारथी नटखट चंचल
मनवा सुघर लगामि,
दसों इन्द्रियाँ मुन्टिया घोड़ा
सबद रूप रस बिसयहिं जाहिं ।
एहि चोला का भीतर भइया
कुरुक्षेत्र का समर भूँइ सम
देव असुर के कठिन लड़ाई
हरदम मचलि रहेले ।
जे हारल से गइल रसातल
जे जीतल ऊ भइल अमर बा ।"

× × ×

तपेसरी गउतम का साथे,
पाँच बरम्हचारी मुनि पण्डित
रहि के ध्यान लगावत रहलनि,
तप समाधि अरचा-पूजा से
मनवाँ के समुझावत सज से,
पगहा छान लगामि चढ़ा के
जोग जुगुति से बान्हत रहलन ।
उहे लोग जंगल झाड़िन से
सभकर जीव जियावे—
भूखि मेटावे खातिर,
कंद मूल ले आवसु जा ।
कवे समय से पाँचो पण्डित
घूमि लवटि जंगल से
हाथ डुमावत, कुछ बतियावत
कले-कले चलि आवत रहलन ।
इतने में ऊ सखी सुजाता
खीर खियावत लउकलि ।

× × ×

(अधकपढे)

धारावाहिक उपन्यास

सुरमा सगुन बिचारे ना

रमेशचंद्र झा (चंपारन)

बेतिया राज के सीसमहल। दरबारी लोग अपना-अपना जगह पर बइठल, केहू केहू से बात ना करे। अजब तरह के गुमसुम दरबार। सबकर आँख सामने का बड़का फाटक पर अटकल, महाराज दलीप सिंह के राह तकात। राजा का सिंहासन का ठीक बगल से कुछ हट के एगो दोसर सुन्नर सिंहासन लागल रहे। दुआरपालिक के आवत देख के चारू ओर कनफुसकी चले लागल। तनिके देर का बाद राजा दलीप सिंह के कदम दरबार का भीतर आइल। राजा के देख के दरबारी लोग अपना-अपना आसन पर खड़ा हो गइल। राजा आके अपना आसन पर बइठलन। आसन पर बइठते-बइठते उनकर नजर एक बेर चारू ओर दउर गइल जइसे उनहत बदरा का बीच कबो-कबो बिजली चमक जाला। राजा कहलन—'पान के बीड़ा ?' तुरन्त उतारा मिलल—"अपने का सामने राखल बा।" राजा एक-टक से चानी के तबक से लपेटल बनारसी पान के बीड़ा का ओर देखे लगलन। बहुत बात उनका मन का भीतर उठल, बहुत बात उनका मन से निकल गइल बाकी पान के बीड़ा उनका ओर टुकुर-टुकुर ताकत रह गइल, अइसन बुझाय जइसे कि अब बोली तब बोली। बाकी पान के बीड़ा बोलो त का ? राजा बोललन—"आज सीसमहल का दरबारी लोग का सामने पान के बीड़ा राखल बा।" भरल दरबार का एगो कोना से एक आदमी बोलल—"जे कहल जाय सरकार, हमनी बेतिया राज के बड़ा नीमक-पानी खइले बानी।"

पहिले पढ़ीं :

बेतिया राज के आपन सान रहे आपन मरजाद। बात तब के ह जब बेतिया राज का गादी पर राजा दलीप सिंह के सितारा चमकत रहे। राजा दलीप सिंह के पाँच बेटा-ध्रुव सिंह, शिवनाथ सिंह, चैना सिंह, सुमेश्वर सिंह आ पहाड़ सिंह। बात सन् १६९४-१७१५ ई० का आस-पास के ह। कहानी बाबू चैना सिंह के कहल जा रहल बा। एह कहानी के कवनो इतिहासिक परमान देहल कठिन काम बा बाकी एह बात के सही बतावल आसान। कहे के मतलब—ई कहानी बेतिया राज के एगो दरबारी पँवरिया 'खक्खन मियाँ' के लिखल-गावल 'बाबू चैना सिंह के पँवारा' से लेहल गइल बा। कहानी अपने सभ का सामने बा—

राजा दलीप सिंह एक बेर फेर दरबारी लोग का ओर धेआन लगा के देखलन। दरबारी लोग राजा का ओर गटर-गटर देखे लागल, केहू का कुछ बोले के हियाव ना करे। राजा का कहे के परल—"तुरकी के भीखम खाँ के अपने सभन जानत बानी, जिनका नामे तीस हजार से अधिका लगान बाकी पड़ गइल बा। ओहदी पियादा मुंसी सभे जाके लौट आइल। एतने बात रहित त एगो बात रहित ओकर टेढ़ बोली हमरा के अकुला देले बा। कुछ लोग कहत बा कि भीखम खाँ बेतिया से लोहा बजा देवे के भी तइयारी कर रहल बा। बात सोरह गंडा सही बा। एह पान का बीड़ा के उहे आदमी उठावे जे भीखम खाँ से तीस हजार असूल क के ले आवे "चाहे ओकरा के लोहा मनवा दे।"

राजा का कहते चारू ओर सनाटा छा गइल। केहू कुछ ना बोले, काटल जाय त खून ना। केनहू से कवनो सुनगुनी ना बुझाय। सब लोग एक-दोसरा का ओर देखे लागल। राजा का चेहरा पर उदासी छा गइल। राजा का मन के आस टूट गइल। उदास हो के ऊपर आसमान का ओर देखे लगलन। केतना रंग के सपना उनका आँख से बनल-मिटल। अचानक उनकर नजर नीचा आइल तब तक चानी का परात से पान के बीड़ा उठ चुकल रहे। राजा के गइल साहस लौट आइल, टूटल आस जुट गइल। राजा पुछलन—"के उठवलस बीड़ा? हम ओह बहादुर के अपना आँख से देखे के चाहत बानी एक बेर।" दरबारी लोग एने-ओने ताके लागल, सब लोग चकरा गइल। देखत-देखत में चौदह बरीस के एगो चढ़ल जवान सामने आ गइल। ओकर गठल बदन, कसल देह, चमकत लिलार, दमकत चेहरा चमक उठल सीसमहल का भीतर। राजा दलीप सिंह ओकरा ओर देखलन त उनको माथा चकरा के रह गइल। दलीप सिंह कहलन—"बेटा, चैना सिंह"...चैना सिंह भी अपना के रोक ना सकल, बोलल—

"नुनुआ...."

"पान के बीड़ा तू उठवले?" राजा दलीप सिंह भर आँख निहारत कहलन।

"नुनुआ...अपने के असीस... अपने के खून..."

"कवनो बात ना, जेकर देह राजसाही खून का बून से बनल बा, ओकरा खातिर कवनो बात नइखे, बाकी तू त अबके गोदी से धरती पर अइले ह?"

"नुनुआजी, बाँस के जर तर बाँस जामेला, शेर का घरे शेर। अपने का जानत बानी कि शेर के लइका जनमते उछल जाला...।"

"मान गइनी बेटा, मान गइनी।"

राजा दलीप सिंह अचरज भरल आँख से अपना दरबारी लोग के देखे लगले, कुछ बोलले ना। केहू दरबारी कह बैठल कि—"पहिले कवनो ओहदी के तुरकी भेजल जाय कि सही-सही बात के पता लगावे, चाहे मालगुजारी असूल कर सके। अगर एतना पर ना दे, त जे समझल जाय, कइल जाय।"

राजा दलीप सिंह का ई बात मान जाय के परल। तुरकी ओहदी भेज देल गइल। चाहे जे भी होखे, बाकी भीखम खाँ आसानी से हाथ आवेवाला आदमी ना रहे। भीखम खाँ रहे बदन के सोझ आ मन के टेढ़। फेर ओही लेखा उलटा-पुलटा उतारा देलक। एतने ना राजा का ओहदी के भी नीमन-बेजाय कहलक। बात बढ़त गइल, जइसे बाढ़ के पानी बढ़ेला। बेतिया के सब लोग चरचा करे लागल चैना सिंह के। सभे एके बात कहे—छोट

लइका, जेकरा अभी रेघारी तक नइखे आवत, एतना बड़ा काम कइसे कर सकी, भीखम खाँ भी कवनो अइली-गइली आदमी नइखे। बात जे होखे बाकी राजा दलीप सिंह के राखल पान के बीड़ा उठ गइल।

चैना सिंह माथा झुकवले राजा का सामने खड़ा रहे। कबो ओकर आँख राजा का सिंहासन का ओर जाय, कबो अपना तेज तरुआर का ओर।

२

चैना सिंह के मन हलचल से भर गइल रहे। ओकरा चेहरा पर लाली छा गइल रहे, जइसे भोर के किरिन पेड़न का फुनगी से उतर के धरती पर छा गइल होखे। सीस-महल से निकल के बड़ा तेजी का साथ रनिवास का भीतर गइल। माई देखली त छाती से लगा लिहली, आ कहली—"तू अपना परभूता के कइसे जोख लिहले बेटा? बीड़ा कइसे उठा लिहले? का बेतिया राज में अइसन केहू पट्ठा ना रहे?" माई के बोली सुनके चैना सिंह का कहे के परल—"माई का कोख से बाहर आवते बालक आपन परभूता जोख लेला। तोहरा हमरा ताकत पर भरोसा राखे के चाहीं। कवनो भी बहादुर बेटा अपना माई से इहे उमेद राखेला!"

माई के आँख ऊपर उठल त उठले रह गइल, गरब से चेहरा खिल उठल। बाकी उनका मन के हलचल मचल गइल बाहर निकल आवे खातिर। चैना सिंह के माई फेर कहली—"तू हमर एकलौता बेटा, तू चाहऽ त बेतिया राज नुनुआ से अधिया के अपन जिनगी चैन से काट सकेलऽ। तोहरा कवनो बात के कमी ना होई। एह पान का बीड़ा का भीतर कवनो चाल बुझात बा, तू जे सोच···"चैना सिंह अपना जिद पर अड़ल रहले—"अइसन कवनो बात अपना मन का भीतर मत ले अइह, जवना से हमरा मन का चोट लागे, भरल दरबार का बीच से पान के बीड़ा उठा के, रनिवास का भीतर घुस गइल, हमरा ईमान-धरम पर करीका सिआही लगा दी। एतने ना, हमरा तोहरा लहू के लाजो त बचावे के बा।"

माई बहुत-कुछ कहली-सुनली बाकी सब बेकार हो गइल। चैना सिंह का आपन जे कुछ सोचे-विचारे के रहे, विचार चुकल रहे। चैना सिंह के माई अपना बेटा का ओर आँख उठा के देखली आ एक बीड़ा पान, अपना हाथे बेटा के खिआ देली, पीठ ठोक देली। एह से अधिका कवनो बहादुर माई अपना बेटा के कर का सकेले? माई कहली—"जुग-जुग जिअत रह बेटा, जीत तोहरा चरन पर लोट जाई, इहे हमर मनकामना बा। एगो बात हरदम इयाद रहे—लड़ाई से हरदम अलगे रहनी बाकी लड़ाई ठन गइला पर कबो पीठ ना देखवनी।"

माई अपना बेटा चैना सिंह के आसन पर बइठवली, पानी मँगा के अपना हाथ से असनान करवली, कपड़ा पहिना के कालीजी के पूजा करा दिहली। भोजन करा के माथा पर तिलक लगा दिहली। पाट के जमा-मिरजई पहिना के सुरवाल पहिना देली, झिलमिली आ लोहा के टोपी पहिना के कमर से चमकत दुधारी लटका दिहली। चैना सिंह अपना माई के चरन छू के, तुरन्त रनिवास से बाहर निकले लगले। माई उनका पीठी पर हाथ धरली कुछ कहे खातिर बाकी बहुत कुछ कहके भी कुछ कह ना सकली।

चैना सिंह, छोट लड़िका, जे जवानी का देहरी पर चरन तक ना धइले रहे, जेकर लड़िकपन खेलत-कूदत बीत गइल, तेरुआर से खेलले रहे बाकी तेरुआर का पानी से ना खेलले रहे, अपना मौलेसरी अगनाई में लड़ाई के नकल उतरले रहे, कबो लड़ले ना रहे, जब

लड़ाई के पोसाक पहिन के रनिवास से वाहर भइलन ओकरा के देखे खातिर लमहर भीड़ जमा हो गइल।

एक वात जरूर रहे कि चैना सिंह के उमिर कम वाकी देखला से वड़का सेसर जवान बुझाय। लड़कपने से घुड़सवारी करे, तलवार चलावे, कवो-कवो तोप चलावे के भी सीखे के चाहे। कुछ लोग त जानत रहे कि चैना सिंह तलवार चलावे में धुंधकाल हो गइल वाड़े। वात जे भी होखे वाकी वेतिया के लोग चैना सिंह का नाँव पर जान दे देवे के तइयार रहे।

चैना सिंह के आपन घोड़ा, जे देह से कोड़ा सटते वारूद हो जाय, सामने ले आइल गइल। घोड़ा पर सवार भइल। जइसे राणा परताप सिंह का अपना चेतक पर भरोसा रहे, चैना सिंह का अपना कुमैत घोड़ा पर विसवास रहे। लड़ाई के बिगुल वाज गइल। गाड़ी पर सरजाम लदाय लागल। तनके देर का वाद अनगिनित गाड़ी एक साथ तइयार हो गइल। तोप का साथे ओकर जरूरी सामान वारूद-उरूद सहेज के लाद देहल गइल। राजा दलीप सिंह आके देख गइलन।

हजारी वगीचा में खीमा गड़ गइल। इलाका के वहादुर जवान लोग जुटे लागल। रात वितला फेर कूच के नगाड़ा वाजल। राज के फौज आ जवान लोग तुरकी का ओर चल पड़ल। चलते-चलते भोर हो गइल, भोर के पहिलकी किरिन फूटल, दिन चढ़ल, दुपहरिया गइल, साँझ होते-होते एगो वड़का वगीचा देख के डेरा डाल दिहल गइल। निअरा के गाँव, जे वेतिये राज के रहे, ओह गाँव के लोग चैना सिंह का आवे के खवर सुनके जमा हो गइल।

ओह गाँव के दू आदमी, ऊधो आ माधो, चैना सिंह से मिलल लोग। तुरकी के भीखम खाँ का वारे में, वहुत वात-वतकही भइल। चैना सिंह कहलन—“अगर तुरकी जीत के आ गइनी त वेतिया राज के मालगुजारी दू आना विगहा क देव।” गाँव के लोग बाबू चैना सिंह के जैकार मनवलक। भर रात आराम कइला का वाद, अपना दल-वल का साथ चैना सिंह आगा वढ़लन। अपना सरजाम-सामान का साथ चैना सिंह धनौती नदी पार क के लोहियार मठ पर डेरा डाल दिहले। लोहियार मठ के महंथ जी का भिरी गइले। महंथ नारायण नाथ वाबू साहेब के खूब आव-भगत कइले। कुशल-छेम पूछले। चैना सिंह उतारा का देस, असीस खातिर माथा झुका दिहले। महंथ जी कुछ पढ़ले मने-मने आ आपन दहिना हाथ उनका माथा पर रख दिहले।

कुछ देर का वाद महंथ जी एह कूच के कारन जाने के चहले। चैना सिंह आपन हाल कह सुनवले। महंथ जी हाल-चाल सुन के चुपी साध लिहले आ वाबू साहेव का ओर अचरज से देखे लगले। महंथ जी जोतखी भी रहस। वेतिया राज दरवार में कवो-कवो आवत-जात रहस। वाबू साहेब आपन दहिना हाथ महंथ जी का आगा वढ़ा दिहले। महंथ जी सोचत-विचारत कहले—“सगुन ठीक नइखे बुझात, वाबू साहेव, अपने सब देवता के पूजा कइले वानी, वाकी एगो देवी के पूजा भुला गइनी। दसहरा निअरा गइल बा, अपने वेतिया लौट जाइल जाव आ दुरगा माई के पूजा कइल जाव फेर कूच के विगुल बजावल जाव। हमर सगुन सही उतरेला।”

वाबू साहेव का त सुनते जइसे काठ मार गइल। अपना के समेट के कहले—“कवनो कीमत पर हम वेतिया जा नइखीं सकत। लोग कही जे वाबू डरे भाग अइले। हम तुरकी पर पान के वीड़ा उठवले वानी, जे होई देखल जाई। सुरमा लोग सगुन ना विचारे”

महंथ जी बाबू साहेब के पीठ ठोकले आ सात गो नागा पहलवान के साथ लगा दिहले । लोहियार मठ से खीमा उखड़ल त जाके कोटवा टिकल । कोटवा के देवी बड़ा जगता, बाबू साहब देवी के पूजा चढ़ा के आगा बढ़ले, दोसरा दिन जाके सुरुजपुर ठहर गइले । रात भर सुरुजपुर रह जाये के पड़ल ।

बाब साहेब के लसकर सुरुजपुर से मेहसी गइल । बाबू साहेब मिरजा हलीम शाह का कब्र पर चादर चढ़वले । नगीनाबारी का भीतर डेरा पड़ गइल । खीमा गड़ल, समेयाना तनल । पलटनिया लोग आराम करे लागल । चैना सिंह का साथ ओझा जी मंतरी रहस, जे बेर-कुबेर आपन राय-बात देल करस । ओझा जी राय दिहलन कि तुरकी पर चढ़े के बा त बरूराज के बाबू बेचू राय के बोलावल जरूरी बा । ओझा जी कहलन—"बाबू बेचू राय, निअरे बरूराज के रहनिहार हवन जे हर-हमेसा बेतिया आवत-जात रहेलन । तुरकी के घाटी-पानी जानेले··· ।"

ओझा जी का कहे भर के देर रहे, तुरन्त ओहदी भेज दिहल गइल । बाबू बेचू राय अपना दुआर पर बइठल रहलन । ओहदी बाबू साहेब के परवाना बेचू राय का आगा रख के सलामी दगलस । ओहदी के खातिर बात कइल गइल । बेचू राय अपना भाई लोग के बोलवलन । भाई लोग राय देलक—'सिवाना पर के बाजी लागल बा, सवाल बाटे बेतिया राज के । के कह सकेला कि बाजी कवना करवट गिरे बाकी हमनों का साथ देहल जरूरी बा ।' बेचू राय अपना घोड़ा पर सवार भइले । बाबू साहब का पास गइले, रमरमी भइल । बाबू साहब बेचू राय के अपना दहिना बगल बइठा के कुसल-छेम बतिअवलन । बेचू राय कहले—"अपने हमरा के एह मोका पर इयाद कइनी, हमर भाग । हम कवना जोग बानी बाकी जौना जगह अपने के पसेना गिरी ओह जगह हमरा देह से लहू··· ।" बाबू साहब फेर कहलन—"कारन त अपनेका जान गइल होखब । अपने के बोलावे के मतलब एतने बा जे हम तुरकी कबो गइनी ना, तुरकी देखनी ना, अनजान जगह, अनजान डगर । एह से अपने के साथ जरूरी बा, बहुत जरूरी ।" बेचू राय कहलन—"हम त अपने के सेवक ठहरनी, अपने के हुकुम कहाँ पाईं । बेतिया सै कोस के राज, सै कोस के भीतर रहेवाला के अइसन बा जे बेतिया राज के दिहल ना खाय, भला कहे के बात बा ई ?"

बेचू राय के देख के उनकर बात सुन के बाबू चैना सिंह के साहस दूना हो गइल । कठिनाई सामने आ गइल रहे, सब दूर हो गइल । बेचू राय, बाबू साहेब का आगा हाथ पटक के कहलन—"तुरकी दरबार के जीतल कठिन काम नइखे । एक ओर गालिमपुर गाँव बा, एक ओर नदी बहेले । तुरकी के भीखम खां के ताक़त हमरा से कवनो छिपल थोड़े बा । एक हजार सिपाही उनका पास बा । अपने का पास एतना आदमी बा जे चाहे त उनका के चिटकी से मसल के बीग दे ।"

बाबू साहेब के दिमाग जम गइल । बेचू राय का ओर देखे लगले बाबू साहब । बाबू बेचू राय अपन मुरेठा सीट के ठीक कइले, अपना तेरुआर पर हाथ फेरे लगले । बाबू चैना सिंह कहलन—"बाकी अइसे काम ना चली, बेचू राय जी, जइसे हम भरल दरबार का बीच खड़ा हो के अपना नुनुआ का सामने से बीड़ा उठा के खइले बानी, ओइसही अपने का भी हमरा हाथ से बीड़ा खाये के परी ।" बाबू साहेब चट पान के बीड़ा बेचू राय का सामने बढ़ा दिहले । बेचू राय पान के बीड़ा उठा के खइलन आ साथ देवे के बिसवास जमा दिहले ।

(क्रमशः)

कविता-कुंज

आवै जब सुधिया तोहार

आवै जब सुधिया तोहार हो सनेहिया !
मोरे जियरा में उठेला जुआर !

घेरि लागे बदरा झरन लागे पानी,
भींजी भींजी धोतिया कमर में सुखानी
बिरहा जगावै बिरहा क कुछु बानी;
तनवा क बनवाँ चलावै देवरानी
निदिया न लागै राति चदरा जौ तानी
मोरि खोलि जाला पुरुआ केवार !

पनिया के धरिया से चूवै लागी ओरी;
बढ़िया आइल मोरे गउआँ की खोरी
लागि वा सरगवा से धरिया क डोरी;
तोहरे विना भइ साँवर देहियाँ गोरी
मानि जाउ बदरी मइँ हाथ पाउँ जोरी
मोर टूटि जाये अँसुआ क धार !

आँखिया के पुतरी पै नाचेली सुरतिया
बिजुरी के चमके से काँपि उठै छतिया
दियना में जोति नाहीं आवै बिनु बतिया
गइल्य बिदेसवाँ पठाये नहीं पतिया
बइठि गँवावों पिया मइँ सारी रतिया
तोहरी डगरिया निहार

धोइ गइले कजरा नयनवाँ के पानी
देहिया में तेलिया चलावै जइसे घानी
उड़ि उड़ि बदरी एकास घहरानी
काढ़ेला करेजवा धनुहियाँ के तानी
रहि रहि सुधि आवै बितली कहानी
जब मिला रहा मोर दिलदार !

जगदीशचन्द्र मिश्र
(मीरजापुर)

कुहिलि-कुहिलि छतिया बिहरलि हो

अगिया लगाइ बूड़ें सूरूज हो, डेरा डालेला अन्हार।
पुरुब-तरइया पछिम गइली हो, ठाढ़ि भइली कारा राति ॥
झेंङुर सितार धइ दीहलनि हो, सूतल गँछिया के पात।
गउवाँ नगरि मरघट अइसन हो, खोंतवा चिरई उँघाति ॥
तातल जेवना परोसल हो, जेवला विनु अरुआत।
अँखिया समाइल सवनवाँ हो, नाहीं अँचरा झुरात ॥

तिरवा मलाह नइया बान्हि दिहलें हो, लिहलें गोड़वा पसार।
लहरि बटोरि गोदिया गंगा माई हो, ओठङ्हे धरवा मझार ॥
अङना लागेला भकसावन हो, मारे सुसुकी बयारि।
निनियाँ महङ बिरहिनियाँ के हो, "प्रेमी" गइलें बिसारि ॥
गहना गड़ेला जइसे सूआ खोभे हो, छूटल कुल्हि तिहुआर।
सासु ननदि मूहें माटी लेली हो, मूड़ी तोरें वार-वार ॥

सेजिया के ताग-ताग नाग भइलें हो फन कढ़ले हजार।
लहरति देहिं वढ़ि आइलि हो, कुहुकीला हियरा फार ॥
अपई नियर देहिया थाकल हो, दूभर वियोग के भार।
कोरवा में धरती उठाव मैया हो, फाटि बनिजा दरार ॥
छछो पाती रोवे विरहिनियाँ हो, आपन धूनेले कपार।
कुहिलि-कुहिलि छतिया बिहरलि हो, आँखि रकत के धार ॥

—रामवचनसिंह यादव "प्रेमी"
नौली, (पूर्वी गाजीपुर)

घेरि घेरि घन घहराये गगन में

बहे चउआई घटा घेरि आइल, चमचम चमके बिजुरिया।
पिया परदेसिया दरदियो न बूझे, राति बरसाती अन्हरिया।

कारी बदरिया उमड़ि घुमड़ि के, रिमिझिमि बुँद झरि लाए गगन में।
धधकल धरतिया के जिअरा जुड़ाइल, ऊगल सगरो सरेहिया।
गइया चरवहवा बंसिया बजावे, रहि रहि जिया तरसाये गगन में।

रिमझिम के साज पर, मेघवा मलार छेड़े, थेई थेई नाचे मोरवा।
दादुर पपिहा, सूरवा मिलावे, झिली झनकारे झेंगुरवा।

कवो कवो, अमवा पर कुहुके कोइलिया, कुहुकि कुहुकि कुहुकावे गगन में।
देशवा के राजा भइया हउवे किसनवा, घूमेलन आपन बधरिया।
कन्हिया पर लठिया, हाथ के कुदरिया, नयि-नयि बान्हेले मोहरिया।
हरियर धनवा हलरि हलरि के, हियरा हिलोरि हलरावे गगन में।

शिवनारायण सिंह
(राजपुर, शाहाबाद)

प्यारो बिरहिनिया के देस

चढ़ते अदरवा बदरवा लवटि आइल प्यारी विरहिनिया के देस।
तपलऽधरतिया के छतिया सितल करे, हरे हाली काठिन कलेस॥
छितिजऽके जरिए मघन घन धरती के भेंटि ले ले भरि अँकवार।
हरऽहर झरऽझर उनकर अँखिया से लोर बनि ढरके दुलार॥
बिहँसि-विहँसि फेरूँ कहसु कि तहरा पऽ राखबि खियालऽ हरमेस।
प्यारी बिरहिनिया के देस॥

अदरा के सितलऽ सितलऽ रस बजिया में धरती कइली असनान।
चमकि उठल जल चारों ओरी खेतवा में झूमि-झूमि उठलें किसान॥
धानी रँग चुनरी पहिनि लेली धरती आ करै लगली सोरहो सिंगार।
अमवाँ पऽ कुहँकि कोइलिया पुकार उठे धनि भाग धरती तहार॥
फुललऽ कदमिया के झुमुका पहिनि लेली काने कनइलिया के फूल।
निरखे भँवरवा जे छवि कनफुलवा के आपनऽ ऊ जाला सुधि भूल॥
भोरे-भोरे देखेला किसान के वेटवना जे खेतवा में रानी लाले लाल।
सोचेला कि सावने में फाग के खेलल राति झरलवा अविर गुलाल॥
कवनो बहुरिया के किदो ई छिटाइलवा हरवा के नग वेसुमार।
अपना गमछिया में टपऽ टपऽ बिनि लेला खुस होइ होइ के अपार॥
सोन्ह-सोन्ह ढेलवा गमकि उठे खेतवा के, पुरवा के जब लागे ठेस।
प्यारी बिरहिनिया के देस॥

अइसनऽए सुघरऽमिलन से ए धरती के मगन भइलऽ परिवार।
लहऽ लहऽ गहऽ गहऽ मँहऽ मँहऽ जग भइल छा गइल सीवान पऽ बहार।
डढ़िया पऽ डोलि डोलि हियरा के खोलि खोलि पपिहा सुनावे लागल बोल।
गुला उ पुकारि के कहेला 'शैदा' दुनिया में मिलन के फल अनमोल॥
धरती के छवि देखि सरगो चिहाइ गइल चकितऽ हो गइले सुरेस।
प्यारी बिरहिनिया के देस॥

विश्वनाथ प्रसाद 'शैदा'
डुमराँव (शाहाबाद)

सावन आवे ना

फेरि - फेरि जाला रे नजरिया
घेरि घेरि सावन आवे ना !
जनम - जनम के साध जोगावत
तोप - झाँप के आग लगावत
—मन भरमावे ना !

केने दुनि बाजे रे बँसुरिया
घेरि घेरि सावन आवे ना !
अँखिया घुरमत, पाँख वन्हाइल,
टभकत घाव, दाव सरियाइल
—तीर चलावे ना !

रहि - रहि चमके रे बिजुरिया
घेरि - घेरि सावन आवे ना !
जोहत बाट नैन भरमाइल
अपने मन में मन अझुराइल
—कुछुओ भावे ना !

तरसे बारी रे उमिरिया
घेरि - घेरि सावन आवे ना !

पाण्डेय कपिल एम० ए० (सारन)

तनो इहँवो बरसऽना (कजरो)

कहँवा घेरले जालू बदरी, तनी इहँवो बरसऽना ॥
कइले बरखा के सींगार, कहँवा जालू धूँआधार;
करिया बदरा के कजरा कइके इहँवे हरषऽना ॥कहँवा॥
इहँवों सूखऽता हो धान, जाता तीसूनासे प्रान;
नेह जलवा के दान करऽ बरसऽ सरसऽ ना ॥कहँवा ॥
ठहरे अँखिया ना मोर, बिजली अँखियो में तोर;
इहँवो करऽना अँजोर, चमकऽ दमकऽ बरसऽना ॥कहँवा ॥
जल झारी अँकवारी, कइले एतना तेयारी;
कहँवा दरबू नेह बारी, तनी इहँवो झरसऽना ॥कहँवा॥
अपना अँखिया के लोर, तनी डालऽ एहू ओर;
तरसवलू तूहों दुनिया, तनी तूहूँ तरसऽना ॥कहँवा॥
कौना देसवा के ओर, तोर बसे चीत-चोर;
कहँवा जालू तूँ उड़ल, इहँवो ठहर सरसऽना ॥कहँवा॥

—सत्यनारायण केशरी "सौरभ"
डुमरांव (शाहाबाद)

आइल रितु बरसात

चिहुँकि उठेले आधीरात
वलम मोरा पास नहीं हो.
आइल रितु वरसात
कारे वदर सङ नयना वरसत
रहि-रहि वायाँ अङ मोरा फरकत
पुरवा से देहिया टटात
वलम मोरा पास नहीं हो
आइल रितु वरसात

खुलल झरोखवा, झटके फुहरवा
हम जानी पिया अइले दुअरवा
सुधिया लगवलसि मीठे गात
वलम मोरा पास नहीं हो
आइल रितु वरसात
सहि सहि सेजिया सहके समीरवा
पपिया उड़ाके भागे मोरा रे अँचरवा
छतिया दरदिया दुखात
वलुम मोरा पास नहीं हो
आइल रितु वरसात

सतीश्वर सहाय वर्मा, नवीगंज, छपरा

गीत

पूरवी खिरिकिया से झाँकेली वहुरिया
घरती से भागेला अन्हार !
झाँकेली त सोना बरसे,
गावेली त चानी बरसे,
इंगुरी से टह - टह टहके संतरिया
जिनगी में लावेली बहार !
पनघट पर मेला जूटे,
गीतिया के रेला टूटे,
पतरी कमरिया पर सोभेली घइलिया,
धरती के करेली सिंगार !
खेत खरिहान जागे,
दुनियाँ जहान जागे,
रसे-रसे गूँजे लागे बन - बन घुलई
मेहनत के बाजेला सितार।

आशा सहाय (सारन)

अइसन जवानी के रांत

सजनी, अइसन जवानी के रात
नइहर के पोसल जिनिगिया के साध पर
हियरा में फूलेला फूल
ससुरा में बीतल उमिरिया के वचपन
साले करेजवा में सूल
दूर कहीं वनवाँ में विहरे पपिहारा
उकसे बिरह के रात
पहिल जवानी के रात
अइसन जवानी के रात
हहर हहर चले पछेया पवनवाँ
आँधी टूट उधिआइल पवनवाँ
तलफे भुँभुरिया में भभूति रमा के
अइसन अनेत पर ठठाला मदनवाँ
देखि देखि दिनवाँ के दरकेला छतिया
सुनगे बैरागी के रात
सजनी
दोसर जवानी के रात
सावन के बेदरदी बदरिया
घहर घहर घहरावे
टपर टपर टप जइसे जवानी के
काया माटी में मिलावे
मारे दरदिया के तड़पे विजुरिया
सिसिके सोहागिनि के रात
सजनी
तीसर जवानी के रात

रमेश पाण्डेय (वर्णपुरा, सारन)
C/o त्रिवेदी स्टूडियो, बम्बई

घरवा अइलन हो मेहमान

(बारहमासा)

सावन सबद सुहावन सगरे सोभत बा असमान
बरखा बरसत बिजली चमकत चमक उठल अरमान
बियरा बंधले बढ़ल किसान
छलकत छोरी रोपत धान
मेड़ भीतर मनहर मुखरा से मारत बाड़ी तान
झूमर में झुम गइल बदरिया गुँज उठल असमान
बरमासा सोहर सब गावे
झूला पर कजरी छोर नयान
भादों भरल अब मन के दोना
आसीन में आशा के नाच उठल अरमान
कातिक कन्त कहल ना कइलन
पुरुख के कइलन पेयान
अगहन में अगराइल मनवाँ
सब मिलि काटे धान
पूस पहरुआ पल ना आवे
पिया में लागल प्रान
सिहर सिहर सिहरावत सर्दी कँकुरी करत विहान
माघ मदन मन मातल मनुआँ
होखे चाहत बेजान
बैरी बसल बिदेस बलमुआँ, विरह के लागे वान
फागुन फाग रँगाइल सब जग
मड़ई महल समान
चइत चले दोरस पुरवइया
कुहके निपट नादान
बढ़ल लहर बैसाख वियोगिन के
पी पी पपीहा के सुनि कान
झहर झहर पछुआ झकझोरे
सूगा घर खलिहान
जहर जेठ जीव पानी बिन
लहलह लूक तूफान
थकल बटोही पीपर छाँह में
लउकल दूर मकान
आस आषाढ़ सखी नाथ मिलन से
सेजिया स्वर्ग समान
घर अइलन हो मेहमान।

नाथनारायण सिंह 'भोजपुरी' (दक्षिणी सारन)

मन बहलावेला

केहूना केहू के मन के आगि बुतावेला,
दोसरा का पीरा से दोसर मन वहलावेला।
केहू के अँसुवन के रिमझिम बरिसत पानी में,
मगन होइ हँसि हँसि के केहू कजरी गावेला।
भइल मतलवी जुग, दोसर के गरज न जानेला,
हरज होइ केतनो दुखिया के अरज न मानेला।
आगि लगे दुनिया में आपन रहे हमेशा चानी,
केहू डहकत केहू बइठल भाँगे छानेला।
केहू का छाती पर केहू महल उठावेला,
दोसरा का पीरा से दोसर मन वहलावेला।
केहू के दिन राति अन्हरिया राह न सूझेला,
सुखी परोसी लगहीं वाकिर दरद न बूझेला।
धरम-करम के बात होई खाली मंदिर मसजिद में,
कइसन बात सजीव छोड़ि के दुनिया पत्थर पूजेला।
सइ के पइसा एक छीनि के लाख बनावेला,
केहूना केहू के मन के आगि बुतावेला।
केहू फूलन का सेजिया पर पाँव धरत डेराला,
केहू पुअरा-पतई के विसतर पाके अगराला।
किस्मत के ई फेर वतावे पंडित पतरा देखे,
घर घर ग्रह के पूजा खातिर रोजे करज कढ़ाला।
पढ़वा तऽ अवरी अनपढ़ के पाठ पढ़ावेला,
दोसरा का पीरा से दोसर मन वहलावेला।

—जगदीश ओझा 'सुन्दर' (बलिया)

कहानी

महँगू

श्री रामवृत्त राय 'विधुर' (उत्तर-पूरबी गाजीपुर)

महँगू हर जोति के लवटलनि। शरीर पसेना से थक्-बक् हो गइल रहे। आँखि इँगुर नियर लालि-लाल हो गइल रहली सनि। करिहाँइ में एगो फटही बिहिटी लपेटले रहलनि। पेट में भूखन सियार कूदत रहे। फाल आगा ना बढ़े।

जब महँगू घरे पहुचलनि त उनकर मेहरारू सुखिया भरि लोटा पानी आ कउड़ी भर मीठा लेके उनका पजराँ आके खड़ा हो गइलि। महँगू एक बेर खिसिअइला बाघ नियर ओकरा ओरि घूरि के देखलनि। फेनु मुँह नीचे लटका के बइठि गइलनि। थोरी घरी के बाद आँखि तरेरि के कहलनि—"सोनिया, आज दुपहरिया में तें कलेवा काहें ना ले अइलिसि हा?"

"बाबू जी, कलेवा······।" एतना कहि के सोनिया के जइसे कण्ठे रुँधा गइल। आगे कुछु ना बोललि। कठपुतरी नियर ओही जे खड़ा रहि गइलि।

महँगू तीनि जून के ना खइले रहलनि। भूखन पेट में डाढ़ा लागि गइल रहे। छतरू बाबू कीहें तीनि दिन क कमाइलि बनि परलि रहे। बाबू साहेब देबेके कहले रहलनि बाकिर मलिकाइनि 'हाथ बाझल बा' कहि के टरकाइ दिहली। गरीबन क गोहारि ए दुनिया में के करेला? ओनी मलिकाइनि क हाथ बाझल बा, आ एनी महँगू का जीव पर गरहन लागल बा।

सोनिया आ ओकरि माई ओही जे बइठल सुसकति रहली सनि। महँगू फेनु डपटि के कहलनि "तोहनीका खाली अपना पेट के सवारथी बाड़ू सनि। हमरा जिअला-मुआला क केवन फिकिर बाटे? घामा में परिहथ धइले-धइले कचुमर निकलि जात बाटे आ घरे अइला पर भरि पेट सतुओ के ठेकान नइखे।"

सोनिया आँखि में लोर भर के कहलसि "कई घरे घूमि अइलों हँ। सेर भर लतरिओ क ठेकान ना लागल हवे। का करीं! मूँड़ी पटकि के रहि गइली हँ।"

"अरे, अबहीं त छतरू बाबू कीहें तीनि गो कमाइलि बनि परलि बाटे?"

"ना दीहलनि हँ।"

"काहें?"

कहलनि हँ कि अबहीं मलिकाइनि क हाथ खाली नइखे।"

"धत्तेरी जमाना के। काम करत-करत हाड़ खिया जात बाटें आ मजूरी देबे का बेरि लोग के नानी मरे लागति बाटे। केहू के लरिका भूखन छिछिआत बाड़नि स आ केहू के सँवसे नइखे मिलत। बाह रे जबाना! अच्छा जात बानीं।"

महँगू छतरू बाबू का दुआर पर पहुंचलनि त बाबू साहेब क दुआर अदिमी का मारे ठसाठस भरल रहे। गप-सड़ाका होत रहे। ठेहुना भर ऊँच-ऊँच तोसकि परलि रहली सनि। सभ केहू आपन सेंखी हाँकत रहे। छतरू बाबू मुँह से गुड़गुड़ी हटा के धुवाँ आकाश का ओरि फेंकि के कहलनि "जानी सभे जे मर-मोकदिमा के त हम कुछु समझबे ना करीलें।

आ ऊहो आजु कालिह का जमाना में। आरे, जे के दूगो देवे के ओके चारि गो फेंकि देईं, काम वनले वाटे। रुपया क खेलि वाटे। अमला जे ही कवरा देई ओकरे कींहे जइहें सनि।"

अवहीं छतरू वाबू बोलते रहलनि कि वीचे में वाति काटि के एक आदमी कहल "अव ई कुल्हि वाति ओरवाईं। १० वजत वाटे, रेडियो के समय हो गइल वाटे, थोरे घरी वाजे देईं कि मनवहलाव होखे।"

रेडियो वाजे लागलि। गीति क लुफ्त वाबू लोग लूटे लागल। आ वेचारू महँगू दलानि का पटडेहरी पर पेट दवा के चुपचाप वइठल रहलनि। ई केहू ना पूछे कि हँ रे महँगू, तूँ का वइठल वाड़े?

महँगू वाड़ा हिम्मति वान्हि के अइलनि, वाकिर छतरू वाबू का सोझा वोलत उनुकर सँसरी फूले लागलि। फेरू हिम्मति वान्हि के कहलनि "वाबू हमारि वनिया मीलि जाइति।"

एतना सुनि के छतरू वाबू का देहि में आगि लागि गइलि—"वाह, एतना ढिठई?" का तोहरा आँखि में काचा वइठल वाटे? लउकत नइखे कि आजु दुआर पर तिलकहरू आइल वाड़नि स।"

"वाबू आजु तीनि जूनि से लरिका उपास करत वाड़नि सऽ।" महँगू रोवाँ गिरा के कहलनि।

"अवहीं फेनु मुँह सँभारि के नइखे वोलत? काँच कइनि से खाल उतार लेइबि।"

महँगू चुपचाप उठि के चलि दीहलनि। अवहीं घर ले वहरे रहलनि कि सोनिया के छाती पीटि-पीटि रोवत देखलनि। महँगू जइसे एकदम काठ हो गइलनि। सव गाइ नियर डेकरत रहे। सोनिया के अँकवारी में दावि के कहले "वेटी, का हो गइल?"

सोनिया छाती पीटि के जमीन पर लोटे लागलि।

महँगू जव आँख फेरि के देखलनि त उनुकर छोटका लइका रोटी-रोटी चिचिंआत रहे। अपना आँखि का सामने अपना लरिकन के रोटी खातिर छछनत देखि के महँगू खून के घोंट पीके रहि गइलनि। ओह!

निवंध

भोजपुरी लोक गीत में भरथरी-चरित

तारकेश्वर प्रसाद, मोतिहारी

लोक गीत के अक्षय भंडार बा। खोज कइला पर वहुत सा रतन ओह में से निकल रहल बा आ अभी और निकली। अइसे त भोजपुरी लोक साहित्य में वहुत सा गीत परचलित बा लेकिन एकर कुछ विशेषता बा कि वहुत सा अइसन गीत भी परचलित बा जे लोक-साहित्य के माथा आज तकले ऊँचा कइले बा। अइसने गीत में भरथरी चरित भी बा। अइसे त भरथरी चरित के हिन्दी साहित्य में भी वहुत वरनन भइल वा आ एह पर केतना किताब भी परकासित हो चुकल बा लेकिन लोकगीत के रूप में जे ई चरित के वर्णन आइल

बा ओकर अपन अलग महत्व वा। लोक गीत में भी भरथरी चरित कई तरह के वा। केतना भीख मागेवाला लोग देहातन में गा-गा के जनता के मनोरंजन करेला लेकिन जवना गीत के बरनन नीचे दिहल जा रहल वा उ सव गीतन में ज्यादे मशहूर वा। पूरा गीत वहुत लम्बा बा एह से जहाँ तहाँ से ओकर जरूरी भाग दिया रहल वा—

जन्म—

बोलत रानी रंग महल में सुन लउरी मोरी वात,
हमरा किला में बालक भइले डगरिन बोलाव,
एतना वचन सुन लउरी खुश होइ जाय,
अगर चन्दनवा के चीर पहिरे बार वार मोतिया गूँथाय.
अगम अगम लउरी चल होनी आइल डगरिन पास,
हाथ जोर लउरी अब वोले डगरिन सुन मोरि वात,
राजा किलवा में वालक भइले चल डगरिन राज दुआर,
अगम अगम डगरिन चलली आइल किलवे पास,
करत खोज जाकर रानी के सुन रानी मोरि वात,
बबुआ के देहु वधइया तव काटव नार,
हुकुम देहू रानी सुन लउरी मोरि वात,
डगरिन के खोइछा देहु मोतिअन से भराय,
अवर पांच ही गान रानी लिख देली डगरिन खुस होइ जाय,
चार दिन के वालक भइले लउरी रंग वंगले पर खवर जनाव
अतना बचन सुन लउरी चल भइली खुस होइ जाय,
हाथ जोरि लउरी अव बोले राजा सुन मोरि वात,
तोहरा किलवा वालक भइले राजा पन्डित वोलाव,
अतना वचन सुन राजा खुस होइ जाय,
राजा करन विचार छुट गइले चारो ओर हलकार,
कासी नगर के पन्डित अइले राज दुआर,
किलवे के बीच पन्डित पोथी ले ले लगले करे विचार,
पोथी देखि देखि पन्डित कइलन विचार,
वारही बरिस वालक राज करिहें फिर जोगी. होइ जाय
बालक के नाम भरथरी होखी होइहें वीर बकुराय,
अतना वचन सुन राजा होइ गइले उदास,
जोगिया के नाम बा सुनि ए पन्डित विहरल मोर करेज,
इहे न एक बालक भइले कहो करिहे जग अन्धिआर,
तोहरो त पोथिआ फड़वाइ देवों नगर से देवों निकार,
अतना बचन राजा के सुन पन्डित दिहले जबाव,
राजा लिखनवाला जे लिख दिहे जग में के मेटनहार,
जव खवर पहुँचल रानी महल में रानी देइ मारे माथ,
इहो बालक मोरा जोगी होइहें के करिहें किलश के राज।”

अब राजा भरथरी जब कुछ वढ़लन तब पढ़े गइलन आ पढ़ि लिख कर के जब तइयार भइलन तब राजा रानी का उनकर बिआह करे के चिन्ता भइल। बिआह भी भइल। ओकर प्रसंग देखीं—

बिआह—

"जब बारही वरिस के भरथरी भइले पन्डित बोलाव
कासी नगर के पन्डित अइले सुन पन्डित मोरि बात,
सदिया के दिनवां पन्डित सोंचि देहु भरथरी के होखी बिआह
पोथिआ खोलि पन्डित सदिया के दिनवा दिहले बनाय,
सदिया रचइले नव रंग बाग में वड़ि धुम होइ जाय,
भुइया के खोहवा आकासे लागे अंजुरि भरि भरि मोतिअन
मंड़वा के नीचे जब पन्डित बइठले करावे लगले बिआह,
तभी कहले बारहे वरिस भरथरी राज करिहें फिर जोगी होइ जाय
अतना वचन जब सुनली सामदेई हाथे ठोकली कपार।
पन्डित कहले सोंच मत कर कुअरी जी विधि इहे लिखले कपार
सोरह सवऽरिया बनाव मोरे सामी हम चलबो तोरे साथ,
रानी अइली रंग महल में लेइ सोरह सब लउरी साथ।"

मिलन के प्रसंग—

"छव महिना जब बीति गइले रानी चिठी पेठाय,
लउरी चिठी लेइ राजा के महल में जाइ पहुँचाय,
राजा चिठी पढ़ि के तुरत लिख भेजले जवाब,
चिठिया उठाइ लउरी चलि भइली रानी सामदेई के पास,
सोने के मचिया बइठल रानी सामदेई चिठी लेली उठाय,
आधी रात के जइहें राजा भरथरी रानी खुस होइ जाय,
अगर चन्दनवां के चीर पहिरि बार-बार मोनिया गुँथाय,
गहना पहिरि जराव के रानी बार - बार करत सिंगार,
सब सिंगार करि रानी चले राजा भरथरी के पास,
आठो अंग छिपाइ रानी बइठी सेज पर जाय,
अपने हाथ से बीरा लगा के सोने के थाली साजि रखाय,
सोने के खड़उआ पहिरि राजा भरथरी रानी के पास आय,
पहिल पांव राजा पलंगो पर धइले दोसर धरती न जाय,
हँसत रानी मुँह फेर के ताकि - ताकि के मुसकाय,
किया हम आंधर लूंगा किया हम बदन मलीन,
किया हमरे किला छोटा किया हम दरबे के हीन,
आठो अंग छिपा के रानी तब देत जवाब,
ना देखों सामी आंधर लुंगा नांहि बदन के मलीन,
ना देखों सामी किला छोटा नांहि दरब के हीन,
एक सुगा जे बाटे से ही बोले मानुख के बोल,
तिरिया के जात हमरा अचरज भइले का हमबोलों बोल,

मोरा करम में जोग लिखलवा हम त जोगी होइ जाय,
चिरवा उतारि हम फेंकव रानी देहु अब गुदरी सिलाय,
अतना बचन सुन रानी सामदेई धइली हाथ कपार,
नइया जे खेवे मलहवा ओइसहीं तुहुं हमरा उमरिया के खेवनिहार,
छोटे भइया मोरे विकरम जनीह उहे पुरुष तोहार,
उनहीं के लेके राज करीह किलवा में करिह वहार,
अतना बचन सुन रानी सामदेई देत जवाव,
जाहि दिन रामचन्द्र बने गइले सीता लगली संगे साथ,
राह चलत सामी पानी देवों चरन देवों दवाय,
सीता संग लेउ रानी रामचन्द्र के सोंच दवाय,
गुदरी में दाग लागि जइहें रानी करवो कवन उपाय,
तोहरो सुरती देखि के रानी लोग कहिहें ठग जोगी भेसवनाय,
जोगिया के भरोस रानी छोड़ि देहु लेहु राम के नाम,
अतना बचन राजा के सुन रानी देइ मोर माथ,
लपकि झपकि चीखा धइ लेली सामी सुन मोरि वात,
मोरा जिअरा कभी ना मनिहें करव कवन उपाय,
पहिरि गुदरी जोगी रथ चढ़े पहुंचे नवरंग बाग में जाय,
हांथ जोरि रानी बोले सुन सामी मोरि वात,
कवने कारने सामी जोगी भइले से देहु वतलाय,
अतना वचन सुन राजा भरथरी देत जवाव,
जोगी होइ तीरथ करवों प्रात करवों गंगा असनान।"

× × ×

एकरा वाद रानी सामदेई गंगा जी के विनती कर के पास बुला देली और किले के पास सब तीरथ भी मंगा देली मगर राजा भरथरी कहलन कि घर के पास के गंगा में हम ना नेहायव आ ना घर के पास के तीरथ में हम पूजा करव। रानी, राजा भरथरी के रोके के वास्ते बहुत उपाय कइली। उनका साथे आखरी दाव रखली कि पासा खेलल जाय अगर हम जीत जाईं तव राजा जोगी ना होखस अगर हार जाईं तव चल जास। एह में उ इन्दर लोक में जाकर के राजा इन्दर से भी मदद लेली मगर राजा भरथरी गोरखनाथ के सुमिर के पासा खेललन आ जीत गइलन। अव रानी का दोसर रास्ता ना रह गइल। आखिर में रानी चिता रचवली आ जल के मर गइली। तव राजा भरथरी राज पाट छोड़ि के जोगी होइ के चल गइलन।

अन्तिम दृश्य के झांकी तनी देखीः—

"हाथ जोड़ि रानी अब बोले सामी सुन मोरि बात,
भर मुहि खढ़वा सामी फुंक देहु मैं पापी तरि जांव,
अपने सकत रानी जरि जाहु हम ना करव अपराध,
सगरे गतर रानी के जरि जात नएना से कइली गुहार,
जिअह सामी तुम लाख बरिस जोग पुरा होइ जाय,
अतना बचन बोलि के रानी जरि के खाक होइ जाय,

अंजुरियन रखवा उठाइ राजा भरथरी बुन्डी ले भखाए,
बुन्डीन रखवा उठाय राजा गंगा देले दहवाए,
किरिया करम राजा करि पहुंचे किलवे के पास,
हंथिया रोए हंथिसरवा में घोड़वा रोए घोड़सार,
लपकि झपकि विकरम धइ लेले भाई सुन मोरि बात,
किलवा के राज सुन होइ जइहें अब के करिहें राज,
अब भाई विकरम तूहीं करिह किलवा के राज,
पहिर गुदर राजा भरथरी चलले हथवा उपर उठाय,
धुइँया लागल बाबा गोरख नाथ के राजा पहुंचे जाय,
करहु किरपा बाबा गोरखनाथ जोग पुरा होइ जाय।"

आखिर में राजा भरथरी जोगी हो गइलन। इहाँ कहानी के अन्त हो जाता। राजा भरथरी के चरित भोजपुरी में बहुत मार्मिक ढंग से गावल जाला आ सुनत-सुनत आंख में लोर आ जाला।

कहानी

सुधा के सेनुरबंध

—घनश्याम मिश्र (पच्छिमी शाहाबाद)

गाँव घर आ हीत परीत किहाँ महीना भर भटकला का बाद मुरली बाबू मुँह लटकवले दिल्ली पहुँचलनि। मलिकाइनि मालिक के मुँह देखत मातर मुरछाइ के रह गइली। बेचारी चटपट चुहानी में पइठि के चाहदानी में चाह ढारि के मालिक का सोझा खड़ा भइली। चाह सेराइ के सोरा हो गइल बाकी मुरली बाबू आँखि उठाइ के चाह का ओरि इचिको तकबो ना कइलनि। चमेली का चार तगादा पर त कसहूँ जीवे ढाठी देइके मुरली बाबू दुइ घोंट दूध माहुर का घोंटे घोंटलन। थकला थहरइला से दुइ दिन त मुरली बाबू मधुअइले रहलन, तीसरा दिन तीहा वान्हि के तनिका टाँठ भइला पर महीना भर के चरचा चमेली से सुना दिहलन। सब हाल सुनला का बाद चमेली लमहर साँस लेइ के सुसुके लगली एही बीच में बेनी बाबू आइ परलन।

बेनी बाबू का अइला पर पहिले उनुकर ममिआउत भाई मुरली बाबू आ चमेली लाख पाँत्र हो जात रहे लोग। ओह दिन दूनो बेकति के दसा देखि के बेनी बाबू बड़ अभीभो में परलनि। भाई-भउजाई के ना बोलल ओतना ना अखड़ल जतना दूनो बेकति का आँखिन में उमड़ल लोर। आखिरकार बेनिए बाबू का एह असकस के कारन ओटिआवे के परल। मुरली बाबू भा चमेली चाहत ना रहे लोग जे हीत का सोझा परिवार आ हीत नात के कइल धइल ओटल जाउ बाकी बेनी बाबू भी तऽ रहलनि अपना धुन के धुरंधरे नू। चमेली त चूपे रहली, हँ मुरली बाबू लोर पोंछत कहे लगलनि।

"सुधा का बिआह खातिर गाँव घर आ हीत परीत सब केहू पराया हो गइल। परियार साल जोधपुर में जातीय सम्मेलन भइल रहे तवना के सभापति रहन सोना बाबू।

ओह सभा में तय भइल जे एकावन रुपया से अधिका तिलक दहेज ना दिहल जाई। उनुका के आ उनुका लड़िका के जोग जानि के बरच्छा धराइल। बसंत पंचमी बाद उनुका किहाँ से बरच्छा पलटल हा जे लड़िका का बिदेस जाए के खरचा तवना पर से एगो कार चाहीं। परसाल चाचा जी मिरजई, मुरेठा त्था चमउधा पहिरले अवरू सोटा में लोटा लटकवले सचिवालय में समइलीं। साथी लोग का पुछला पर सकोचवस हमरा मुँह से निकलल जे--इहाँ का हमरा घर के ना हईं। अपने कहल काल हो गइल बा। खाइ खधारि के महीना में चालीस रुपया घरे भेजते गइल बानीं तवना पर एह पारी ऊहाँ का नोकर से साफ कहवा देलीं हा कि एहिजा उनुकर के बाइ जे सुधा के बर खोजवइहन, इहाँ तक ले जे प्रनाम पाती के उत्तर तक परिवार से ना मिलल हा। हीतगन आ परोस मुँह ओरमवले बा जे कबो नेवता हँकारी पर ना अइलन आ ना त हमन का बाल बच्चा के रोजिए धरवलनि। एहिजा लाल बाबू साथ ही सचिवालय में बहाल भइलन आ एगो बिभाग के ऊ निबंधक बाड़नि आ एगो बिभाग के हम। बाएन पेहान आ प्रेम भाव भरपूरे बा। सादी के बात चलवला पर अपना चारू लइकनि के तिलक हरेन्दरे बाव पर हिलोर लेवे के चाहत बाड़नि।"

घंटनि मुरली बाबू के बिपति सुनला का बाद बेनी बाबू बतवलनि जे सुधा के बिआह प्रेम बाबू का साथ कइल जाइ। चमेली त ओंठ चमकाइ के चूप लगा गइली बाकी मुरली बाबू कहसनि जे प्रेम बाबू बी० ए० भी ना पास कर सकलनि आ सुधा एम० ए०.....। बात काटि के बेनी बाबू कहलनि जे बढ़ियाँ तरह से जे पास नइखे करत ओकरा सनद के कवन मोल बा? आज का जुग में कालेज के सनद डाकघर के लिफाफ पोस्काट हो गइल बा। पढ़ला के माने जब नोकरी आ उपरे झापर तक हद बा त एह पर कहाँ तक सन्तोख कइल जा सकेला सोचे के बात बा। एक त मुरली बाबू परिवार पोसन का अलावे तीन बेटी आ पाँच बेटनि का पढ़ाई का चलते हाथ खाली दोसरे साथिन के असहजोग तिसरे नोकरी के चिन्ता चउथे समय के अभाव आ पँचवे जे सुधा आ प्रेम दुइ साल साथ ही कालेज में पढ़ल भी रहन। एही से सुधा के बिआह प्रेम बाबू से करे के तेआर हो गइलनि।

× × × ×

सादी का बाद दिल्ली से दलीपपुर अइला पर सुधा दुनों जगह का दुनिया का बीच सागर में बराबर बुड़ति उतराति रहसु। दुनों दुनियाँ में अन्तर भी सहज ना रहे।

दिल्ली में मोटर के निखार आ दलीपपुर में बैलगाड़ी के ढकचन, ओहिजा स्टोभ आ बिजुली के इहाँ लकड़ी गोइठा गपके वाली बड़की चूल्हि आ दूध बइठावे के भोकास मतिन गाड़ा, उहाँ कतरल कनहतर में आटा अवरू चाउर आ इहाँ चाउर से चरकत क़ोठिला आ मोटहन से मरमरात बँड़ेरि ठेकल बखार। उहाँ चँगेली में चारिगो टटका टमाटर अवरू चार सेर अलुआ इहाँ साले में के कनसिया घर में के अँठवटल अपना खेत के आलू। ओहिजा सिआई के कल, कुरुस, अवरू कसीदा के कल एहिजा ओखरि, मूसर जाँत अवरू ढेंका। दिल्ली के चूना से चहबोथलि चमचम देवालि पर देस बिदेस के फूल पत्ता अवरू चित्र आ दलीपथुर के धुँवठलि देवालि पर झूलत झोल।

दलीपपुर अइला का तीन मास बाद एक दिन रात का बेरा अकेले बइठलि सुधा कुछ सोचत रहली। प्रेम बाबू के अपना आगा देखि के सुधा के सोच समाधि कुछ ढील भइलि। प्रेम बाबू पुछलनि—"दिल में दिल्ली का उतरि आइल बा सुधा?" सुधा,

प्रेम वाबू के वात सुन के कहली —'दिल्ली दूरि होइ भा नियरा हम त वानी दलीपपुर में !" प्रेम वाबू सोरहोघरी एह काम में सजग रहसु जे सुधा का दिल्ली के सुधि विसरि जाइ वाकी कहाँ दलीपपुर आ कहाँ दिल्ली !

छव मास वाद एक दिन प्रेम वाबू का हाथ गोड़ में पटवन के पाँक लागल देखि के सुधा अधमारल साँप मतिन मुरछाइ के रहि गइली । वेचारी अपना के रोके से खोटी ना कइली वाकी उनका विना वोलले ना रहि गइल । ऊ प्रेम वाबू से कहली जे जब साधारन पढ़ल लिखल भी तलव तनखाह का वाद ऊपर झापर से दस पाँच अरजि के आपन दिन आनन्द से वितावत वा त का रउवा चाहे हमरा के कतहीं सरन ना मिली ? प्रेम वाबू कहलनि—"रंगभूइँ में पधारे वाली सीता जी में जवनि सुघराई रहे ओह से कम सोभा असोक-वाटिका में वइठि के आकास से आगि माँगे वाली जानकी में ना रहे सुधा, हँ, निहारे खातिर ओइसनि उजियारि आँख चाहीं । एकरा पहिला जुग में देस का गुलामी के वेरिया काटे के पुकार रहे आ आज पुकार वा अपना गोड़ पर खड़ा होइ के देस के जगतगुरू का आसन पर वइठाइ के अरचन करे के । ई काम कालेज में पढ़ि के वाबूगिरी ओटिअवला से……।" सुधा गम्भीर होइ के कहली—"वस करीं ! हमहूँ मानुस जोनि में जनमल वानीं । रउवा राम मतिन संसार में विचरन कइल चाहत वानीं त सुधा के भी आज से सीता अइसन अवल समझि लीं । राउर टेक वाइ जे अपने से उपराजि के खाइवि आ जनता के भी खिआइ के हर तरह से देश आ समाज के सँवारवि, अत्याचार आ भ्रष्टाचार के भुरकुस उड़ाइ के छोड़वि त हम खाली देवाल के झोले भरि ना झारवि वलुक महिला-समाज का अलावे जनमतुअन का जिनिगी में भी जान डाले में कवो पाछा ना रहवि ।

प्रेम आ सुधा के सुधार आ सेवा पर आज कालेज के लाखनि छात्र आ छात्रा आँखि उठा के देख रहल वाड़ने । आज सुधार आ सेवा के नेंवता भी वा जे अपने सब अपना देस मरजाद के जोगवे खातिर सेनुरवंध का वाद सहर का पहिले देहाति का ओर देखीं ।

यदि आप शीघ्र आरोग्य के लिए
सस्ते दर पर
प्रामाणिक, शुद्ध तथा ताजी
दवाएँ
चाहते हैं तो कृपया एक बार
कण्टिनेण्टल मेडिकल हॉल
(पटना हॉस्पिटल के सामने)
में
अवश्य पधारें

लोकगीत

संकलयिता—पं० गणेश चौबे

(१)

फुलवा फुलाइ गइले फूल कुम्हिलाइ गइले,
फुलवा गमके देवरा लोभेला हो राम।
मोरा पछुआरवा रे लोहरा भइआ हितवा
देवरा जोगे हरिआ गर्हिं देहु हो राम।
काथी के जे किलिया काथिअ के रे बन्हना
कवने बान्हे बन्हब देवरा नाजुक हो राम।
सोने के जे किलिआ रेसमवा के बन्हना
हलके बन्हवा बन्हिहऽ देवरा नाजुक हो राम।
बाट रे बटोहिआ की तूँही मोरा भइआ
हमरो समधिआ ले ले जइहऽ हो राम।
हमरो समधिआ भइआ भउजी आगु कहिहऽ
बान्हल देवरवा सेहु पनिआ माङ्ले हो राम।
पनिआ पिअवलु हे भउजो कवल जुड़वलु
तोहरे आँचरवा निनिआ सोअब हो राम।
एक त कसूर कइलऽ हरी में ठोकायेल बाड़ऽ
अपरि कसुरवा माफ ना करब हो राम।

(पूर्व चम्पारन)

(२)

सागर में दुइ खंभ गड़लु हैं, रेसम लागले डोरी रे गोइआ।
झूलन चलली दुइ रे बिटिउआ, एक सांवर एक गोरी रे गोइँआ।
गोरी का लिलरा रोरी सोभेला, सँवरो का मुख पर पान रे गोइँआ।
गोरी का भइले गोरी बिटिउआ, सँवरो का भइले नन्दलाल रे गोइँआ।
गोरी बिढिउआ रे मरि हरि गइली, जुग जुग ज़िये नन्दलाल रे गोइँआ।

(पश्चिम चम्पारन)

पाहुर (बायन)

(बज्जिका)

माँझी-गीत

लहर उठल, गिरल लहर, आन्हीं हइ आर-पार
उबडुब में नाव पड़ल, जाए के हइ किनार
आन्हीं हइ आर-पार
लहर उठल !
ई हहास, ऊ हू-हू, बचतइ न अब जहान
पानी हइ खउल उठल, गरज रहल आसमान
आन्हीं हइ आर-पार
लहर उठल !
कँप रहल करेजा हइ, हिम्मत दम तोड़ रहल
साँसत में साँस पड़ल, जोर लगा भइया,
'कातिक में पठरू चढ़ाएब गंगा मइया,
पार करू, करू पार, मइया, एह से उबार,
उब-डुब में नाव पड़ल
लहर उठल !
उलट गेल नागिन हइ, ठनका हइ ठनक रहल
पहचानऽ एकरा तू , साहस हइ चनक रहल
सी सी सी
सों सों सों
मन्नत का ? पूजा का ?
दूर कर, कर दूर, भरम अपन के
ठनका हइ ठनक रहल
लहर उठल !
अब अपन जय बोल, ताकत के तू तोल
अपन विसवासन के बन्धन के तू खोल
चेत तू., जूझ तू , लहरन से खेल तू
जल न जाए, थम न जाए
पुरबा के पँइयाँ
जोर लगा, लगा जोर, नैया आगे बढ़ा
जोर लगा, लगा जोर.
जाए के हइ किनार
लहर उठल !

—सत्यदेव नारायण अष्ठाना
(मुजफ्फरपुर)

भोजपुरी शब्दकोश

(गतांक से आगे)

संज्ञा शब्द

कुटुकी—(स्त्री॰) एक प्रकार का वहुत छोटा कीड़ा जो रात में सोने पर मनुष्य अथवा पशु के शरीर में वहुत तीखा काटता है। गुड़ या चीनी की वनी हुई वहुत छोटी देहाती मिठाई।

—**छोड़ल**—(पु॰) वातचीत के वीच में कूटि करना, व्यंग-विनोद की वात कहना, हँसी पैदा करने वाली वात कहना।

कुटुमइती—(स्त्री॰) नातेदारी, रिश्तेदारी, कुटुम्वी सम्वन्ध। आपसी मेलजोल का व्यवहार।

कुठाँव—(पु॰) कुठौर, वेठौर, वेजगह, मर्मस्थल। शरीर का ऐसा स्थान जहाँ का घाव घातक हो।

कुडीठि—(स्त्री॰) बुरी नजर, कुदृष्टि। टोने की निगाह। घटिहाई की निगाह।

कुतार—(पु॰) परिस्थिति के प्रतिकूल अवसर; असुविधा; असुविधाजनक परिस्थिति।

कुदरवेंट—(पु॰) कुदाल का वेंट। स्त्रियों अथवा नौसिखुओं द्वारा वजाये गये ढोल का एकताल।

कुदरुम—(पु॰) एक प्रकार का शाक-फल जो परवल के प्रकार का होता है।

कुदार—(पु॰) कुदारी।

कुदारा—(पु॰) कुदाल, छोटा कुदाल जिसका वेंट लम्वा होता है।

कुदिन—(पु॰) दुर्दिन, दुखड़े के दिन, असमय, अनवसर।

कुनह—(पु॰) दिल का कीना या वोझ, हृदय की कुटिलता।

कुनाई—(पु॰) काठ का बुरादा। चीरे गये काठ से निकला हुआ चूरन।

कुनेति—(पु॰) अनाचार; कुनीति; अनीति; कदाचार।

कुपथ—(पु॰) कुमार्ग; बुराई का रास्ता।

कुपद—(पु॰) अप्रतिष्ठा। निम्न स्तर का स्थान। दुराचार। निन्दनीय या लज्जाजनक आचरण।

कुपदी—(पु॰) व्यभिचारी।

कुपेच—(पु॰) धोखाधड़ी; चालवाजी; कुटिलता। षड़यंत्र।

कुफुति—(स्त्री॰) कुफ्त; विपत्ति; संकट; परेशानी। चिंता और दुःख से उत्पन्न परिस्थिति।

कुवाजा—(पु॰) खराव वाजा। अशांति पैदा करनेवाली कोलाहलपूर्ण ध्वनि। कोई सर्वनाशी काम।

कुवानि—(स्त्री॰) खराब आदत; बुरी लत। निन्दनीय प्रकृति।

कुवोली—(स्त्री॰) खराब वोली; दुर्वचन; ताना (गाभी); मर्मभेदी वात।

कुवंस—(पु॰) अयोग्य संतान; कपूत; नालायक औलाद।

कुभाग—(पु॰) दुर्भाग्य; अभाग; वदकिस्मती।

कुभाव—(पु॰) दुर्भाव; अनादर या उपेक्षा का भाव; वदनीयती। कुआदर।

कुभेख—(पु॰) मलिन वेश, भयावना भेष, अच्छा न लगने वाला भेष।

कुभेव—(पु॰) निन्दनीय भेद या रहस्य।

भोजपुरी मुहावरे

(क्रमशः)

१ छ छ पाती लोर ढारल—अत्यंत विह्वल होकर रोना।

२ छठिके घाट अगोरल—असह्य कष्ट देनेवाली प्रतीक्षा करना।

३ छठी के दूध याद करावल—भयंकर दण्ड देने की धमकी देना।

४ छतर छाँह कइल—किसी का पक्ष करना; तरफदारी करना; छत्रछाया में आश्रय देना।

५ छने में आन छने में आन भइल—घड़ी-घड़ी बुद्धि या विचार बदलने की मनोवृत्ति।

६ छरपट छूटल—छक्का छूटना। नस तोड़नेवाली या मद झारनेवाली परेशानी में पड़ जाना।

७ छव पाँच में पड़ल—दुविधा में पड़ना।

८ छाक दीहल—किसी देवता या इष्ट को गुड़ और लौंग के साथ जल का अर्घ्य देना। धोबी आदि पवनियों को विशेष मजदूरी देना।

९ छाँछ पर चढ़ल—फड़ पर चढ़ना; दाँव-पेंच के भीतर आ जाना।

१० छाती पर वाती वरल - घोर ईर्ष्या से जलना। सौतियाडाह में पड़ना।

११ छाती पर मुक्का मारल—हाय-हाय करके सन्तोष कर जाना।

१२ छान्हि फारिके दीहल—अप्रत्याशित रूप में भगवान की अनायास देन। किसी वस्तु की प्रचुर मात्रा में अचानक उपलब्धि।

१३ छाती पर मूँगि दरल—अत्याचार करना।

१४ छान्ही पर दँवरी कइल—अनीति पूर्ण आचरण करना; लोकप्रथा के विपरीत हास्यास्पद आचरण करना।

१५ छान्ही पर दीया वारल—छप्पर पर दिया जलाना; हानिकारक और सर्वनाशी काम करना।

१६ छान्ही पर होरहा झोलल—अपने साथ दूसरों को भी भयंकर क्षति पहुंचाने का काम करना।

१७ छान पगहा तुरावल—बन्धन से मुक्त होने की चेष्टा। किसी काम से पिंड छुड़ाने की चेष्टा करना।

१८ छानल कउड़ी मारल - धूर्तता से लाभ उठाना।

१९ छापा परल—अचानक आक्रमण होना।

२० छापि लीहल—किसी को चारो ओर से ढँक लेना।

२१ छाम छूम कइल—नखरा तिल्ला करना।

२२ छाल्ही चाटल—दो आदमियों की वातचीत के बीच में चाटुकारिता पूर्ण छेड़खानी करना।

२३ छाव धइल—नखरा करना; भावभंगी दिखाना।

२४ छाहीं परल—छाया पड़ना; प्रभाव पड़ना; चेहरे पर दाग पड़ जाना।

२५ छिउकी काटल—किसी को उकसाना; चंचलता की स्थिति में अस्त व्यस्त होना।

२६ छिटिका लगावल—दोषारोप करना; लांछन लगाना।

२७ छीपा तिरिथ कइल—परिचितों और सम्बन्धयों के घर घूम-घूम कर निष्प्रयोजन डेरा डालते फिरना।

सवनवाँ रिमझिम गावेला

उमड़त मेघवा अइले,
करिया अकसवा भइले,
बरसेला रसवा के धार हो सवनवाँ मनवाँ भावेला
सवनवाँ रिमझिम गावेला
माथ प बिजुलिया चमके,
हाथ में कँगनवाँ झलके,
चूनरी के हरियर बहार हो सवनवाँ मनवाँ भावेला
सवनवाँ रिमझिम गावेला
थिर-थिर थिरिके मोरवा,
पपिहा मचावे शोरवा,
घहरेला गंगा के अरार हो सवनवाँ मनवाँ भावेला
सवनवाँ रिमझिम गावेला
प्रेम के नगरिया में,
गोकुला-डगरिया में,
झुलुहा कदमियाँ के डार हो सवनवाँ मनवाँ भावेला
सवनवाँ रिमझिम गावेला

—'प्रणयी' (शाहाबाद।

बरसात के पानी-बयार

बरसाती पानी - बयार ई, धूप धुलाई, रूप हँसायी
जरत-मरत जिनगी का भीतर, आस बँधायी, आस जगायी
चँवर-बँवर के रूप निखर के धरती में सोना उपजायी
कूँआ-खाभर, नदिया - नारा - गोद उमँग के अब मुसकायी
दहकल काठ में जिनगी पनपी, हरषी, हरियर गदरायी
ई 'अँजोर' का अँखियन के बिच, झलमल - झलमल लहरायी
टूटल मरद चैत के हरषी, धोबिया बिरहा में मुसकायी
मुँह दुबरन के भाग जगी अब, घाट जिनिगिया के नियरायी
कंठ-कंठ में कजरी कुहुकी, पिया पिरितिया अपने लहकी
माह अन्हरिया राह देखावत, दूर देश में बिजुरी चमकी
पाँव महावर, हाथे मेहदी, आज सजनिया अपने सहकी
बरस-बरस के रूठल रतिया सटके सिहरी, मन में चहकी
सूतल दरद प्यार के पिहकी, हरियर चुनरी लहरायी
बरस-बरस के साथी मिलिहें, रात आँख में टँग-टँग जायी
आज पहरुआ मेघा ठनके, चोर घोर दहसत में परिहें
बिजुरी बरजी, ठनका ठनकी, शोर भोर के नाँचत होईहें
आज पिया के संग पियरिया, जग बैरी अब कुछ ना करिहें
रात अन्हरिया, जगल अँजोरिया, दिल के दियरी टिमटिम जरिहें
गिरहथ्थन के भाग जगी अब, हर के मनवा हरषायी
बरद पूजइहें घर-घर अइहें, खेतन के मन मुसकायी

—शैलेश छपरहिया

बिहार में ग्राम स्वराज्य का आयोजन

बिहार पंचायत राज कानून १९४७ ई० के अनुसार, प्रथम तथा द्वितीय पंचवर्षीय योजनाओं की अवधि में बिहार राज्य के अन्तर्गत बड़े पैमाने पर ग्राम पंचायतों की स्थापना की गई। प्रथम पंचवर्षीय योजना काल (१९५१-५६ ई०) के अन्त तक ७,३९२ ग्राम पंचायतें स्थापित की गयी थीं, जिनसे ४६९८९ गाँव तथा २,४७,६०० व्यक्ति लाभान्वित हुए। द्वितीय पंचवर्षीय योजना काल १९५६-६१ ई० में ३३६९ अन्य ग्राम पंचायतें स्थापित हुईं, जिससे ९८९९ गाँव तथा ११४९०००० व्यक्ति लाभान्वित हुए हैं। उक्त ग्राम पंचायतों को सिंचाई, सफाई तथा जलापूर्ति के लिये कतिपय अनिवार्य काम सौंपे गये हैं। पंचायतों को यह अधिकार दिया गया है कि सामुदायिक निर्माण कार्य सम्पन्न करने के लिये वे अपने क्षेत्र की जनता पर श्रम-कर भी लगा सकती हैं। मालगुजारी वसूल करने का काम भी बहुत सी पंचायतों को दिया गया है। सरपंचों को कुछ कानूनी अधिकार भी दिये गये हैं और ऐसी व्यवस्था की गयी है कि कुछ निर्दिष्ट अवरोधों के मामले तो सर्वप्रथम ग्राम पंचायतों को छोड़कर किसी अन्य न्यायालय में लाए ही नहीं जा सकते हैं।

मुखियों, सरपंचों तथा अन्य व्यक्तियों के लिये प्रशिक्षण शिविर, विचार-विमर्श तथा पाठ्य-क्रम समय-समय पर आयोजित किये जाते हैं। सरकार की विभिन्न विकासात्मक तथा सहायता संबंधी योजनाओं की कार्यान्विति पंचायतों द्वारा ही होती है। इन योजनाओं के कार्यान्वयन में पंचायतों को प्राथमिकता दी जाती है। सार्वजनिक शान्ति और व्यवस्था कायम रखने तथा सुरक्षा बनाये रखने के लिए ग्राम पंचायतें ग्रामीण स्वयं सेवक दलों का संगठन करती हैं।

जन-सम्पर्क विभाग, बिहार द्वारा प्रसारित

(प्रतिलिपि)

पत्र संख्या ६५६६

प्रेषक—जयदेव मिश्र, एम० ए०,
पुस्तकालय अधीक्षक, बिहार, पटना

सेवा में व्यवस्थापक,
अँजोर, सालीमपुर अहरा, पटना–३

पटना, दिनांक २७वीं सितम्बर, १९६१

महोदय,

आपके पत्रांक ११८ दिनांक १४-७-१९६० के प्रसंग में कहना है कि आपकी त्रैमासिक भोजपुरी पत्रिका 'अँजोर', इस कार्यालय द्वारा विद्यालयों एवं पुस्तकालयों के लिए प्रकाशित होनेवाली ग्रन्थ-सूची में संकलन के लिये स्वीकृत की गई है।

आपका विश्वस्त
ह० जयदेव मिश्र

"अँजोर" के नियम

१ "अँजोर" में छपे खातिर जे भी रचना भेजल जाय ओकर प्रतिलिपि अपना पास जरूर राख लिहल जाय। प्रकाशित रचना भेजे के कृपा मत कइल जाय।

२ कवनो लेख, कविता, प्रश्न, चित्र आदि के छापे भा ना छापे के आ काटे छाँटे के पूरा अधिकार सम्पादक के रही।

३ "अँजोर" में विना नाँव गाँव के मुलाहिजा कइले, रचनन के उत्तमता पर अधिक ध्यान दीहल जाई।

४ पन्ना के एक ओर लेख लिखाये के चाहीं, भाव आ भाषा पर ध्यान त राखहीं के चाहीं। जहाँ तक होखे लेखन के काया छोटे होखे के चाहीं।

५ रचनाके साथ लेखक के वर्त्तमान पता आ जन्म-स्थान के पता दूनो भेजेके चाहीं।

६ "अँजोर" के गाहक कवनो अंक से वनावल जा सकेला। जवना महीना में दाम आ जाई ओही महीना से गाहक समझल जाई।

७ स्थायी गाहक भाई चिट्ठी-पत्री लिखत खानी आपन गाहक संख्या जरूर लिखसु। एक वरिस के चन्दा भेजि के जे गाहक बनिहें उहे भाई स्थायी गाहक कहइहें।

८ रचना, मनीआर्डर, व्यवस्था सम्बन्धी पूछताछ के पत्र सम्पादक के पता से भेजे के चाहीं।

९ आलोचना खातिर पुस्तक के दू प्रति भेजेके चाहीं।

अँजोर के विज्ञापन दर

कभर के चौथा पन्ना —१५०)
,, तीसरा पन्ना —१२५)
साधारण पन्ना— १००)
,, आधा पन्ना—५५)
,, चौथाई पन्ना—३५)

सालाना स्थानीय तीन रुपया
बाहर साढ़े तीन रुपया

एक प्रति के ७५ नया पैसा

ोषांक

[बिहार सरकार द्वारा विद्यालयों एवं पुस्तकालयों के लिए स्वीकृत]

अँजोर

[भोजपुरी परिवार (पटना) के त्रैमासिक मुख-पत्र]

जामें रस कछु होत है ताहि पढ़त सब कोय
भाव अनूठो चाहिए भाषा कोऊ होय

—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

प्रधान सम्पादक
पाण्डेय नर्म्मदेश्वर सहाय

कला-२ किरिनि-३-४
अक्तूबर १९६१ ई०
जनवरी १९६२ ई०

संपादक-मंडल
गणेश चौबे : रास बिहारी राय शर्मा
रामवचन द्विवेदी 'अरविन्द' : प्रो० बसंत कुमार : बजरंग वर्मा
सहायक संपादक
अविनाश चन्द्र विद्यार्थी

एह अंक में पढ़ीं—

१ पीरके सरगम (कविता)—अर्जुन कुमार 'अशांत'
२ संपादक के विचार
३ बिहार में भोजपुरी का प्रारंभिक रूप—बजरंग वर्मा
४ रितु-रंग (संगीत-रूपक)—रामनाथ पाठक 'प्रणयी'
५ विष्णुध्वज या कुत्बमनार (निबंध)—डा० देव सहाय त्रिवेद
६ हम काहे अलग (कहानी)—विवेकी राय
७ बुद्ध-लीला (प्रबंध-काव्य)—स्वामी विमलानन्द सरस्वती
८ गजल (कविता)—पाण्डेय आशुतोष
९ भइँसी के दूध (हास्य-कथा)—मुक्तेश्वर तिवारी (चतुरी चाचा)
१० गीत—बलदेव प्रसाद श्रीवास्तव
११ सुरमा सगुन विचारे ना (धारावाहिक उपन्यास)—रमेश चंद्र झा
१२ भोजपुर के प्रथम राजा भोज (निबंध)—रासबिहारी राय शर्मा
१३ जनकवि शिवनन्दन—महेश्वर प्रसाद
१४ लात के देवता (निबंध)—सिपाही सिंह
१५ पिंड़िया के गीत—विश्वनाथ
१६ रुबाई (कविता—दिनेश 'भ्रमर'
१७ अतिथि देवता (कहानी)—बाबूलाल शर्मा
१८ गजल (कविता)—दिनेश 'भ्रमर'
१९ दुख सुख के बयार (कहानी)—आशा सहाय
२० आइल मधुर बसंत (कविता)—कुमार शैलेन्द्र
२१ बसंत (कविता)—चौधरी कन्हैया प्रसाद
२२ चार मूरुख (लोक कथा)—महेश्वर नाथ मिश्र
२३ जम्हु के दूत (कहानी)—रामवृक्षराय 'विधुर'
२४ पेटू पाँड़े (लोक कथा)—नागेश्वर गिरि 'नागेश'
२५ सिकरी बजाई ना (कविता)—सत्यनारायण केशरी 'सौरभ'
२६ चंपारण के अशोक-स्तंभ—हरिश्चंद्र प्रसाद
२७ कुल्हि एके हऽ—(गद्यगीत) सिंहवाहिनी प्रसाद
२८ पाहुर—मुंडारी गीत—श्री रमण
२९ भोजपुरी शब्दकोश
३० भोजपुरी मुहावरे
३१ पुस्तक-परिचय

प्रकाशक—भोजपुरी परिवार, पटना—३

'तमसो मा ज्योतिर्गमय'

अँजोर

धरती के लोर बाट जोहि रहल भोर के,
पह फाटल, बिहँसी अब किरिनियाँ 'अँजोर' के।

कला—२ | अक्तूबर १९६१ आ जनवरी १९६२ | किरिनि-३-४

पीर के सरगम

साज के सरगम बजा के का करब हम
रागिनी के रूप जब लहरात नइखे

तार बा सुर में मगर झंकार नइखे
स्वप्न बा हरियर मगर संसार नइखे
रेत पर अँखिया बिछा के का करब हम
धार के तनिको लहर इठलात नइखे

कल्पना के फूल खिल-खिल के झरत बा
साधना के दीप बुझ-बुझ के बरत बा
ई दिया दिल में जला के का करब हम
ज्योति के तनिको किरिन मुस्कात नइखे

आँख से बरसत बिरह के फुलझरी में
आरती कइसे उतारीं एह घरी में
रूप के चर्चा चला के का करब हम
चित्र तनिको आँख में उतरात नइखे

उठ रहल विश्वास पत्थर से पुराना
का करब हम गूँथ के ई दर्द दाना
बाँसुरी अइसन बजा के का करब हम
तृप्ति के जब कंठ कुछ सरसात नइखे।

—अशान्त

संपादक के विचार

आचार्य नलिनविलोचन शर्मा

बिहार के भोजपुरी-भाषी विद्वानन में आचार्य नलिनविलोचन शर्मा के स्थान बहुत ऊँचा रहवे कइलहा, हिन्दी-संसार के साहित्य सेवी विद्वानन में भी उन्हकर नाम बड़ा आदर से लिहल जात रहलहा। समालोचना का क्षेत्र में त उन्हकर प्रतिष्ठा अतना बढ़ि गइल रहलहा कि उन्हकर लिखल आलोचना बड़ा प्रामाणिक मानल जात रहलहा अ समालोचक का रूप में उन्हकर बड़ा धाक जमल जात रहलहा। खास करके उपन्यास, कहानी, निबन्ध, कविता आ नाटक के समालोचना में उन्हकर सूझबूझ बड़ा निराल रहलहा। उन्हुका अइसन शीलवान आ विनयी साहित्यकार केहू नइखे देखि परत। १२ सितम्बर (१६६१) मंगलवार के दू-अढ़ाई बजे दिन में ४४ बरिस का उमिर में अचान उन्हकर देहान्त हो गइल जेह से समूचे हिन्दी जगत में तहलका मचि गइल। पटना-विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के ऊहे अध्यक्ष रहले आ उन्हुका मरला से विश्वविद्याल के छात्रन के बहुत निराशा भइल। साहित्यिक शोध के काम में उन्हकर बड़ा गहरा पै रहलहा। बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के अनुसन्धान-विभाग के निर्देशक उहे रहले अ बिहार-हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के प्रधान मंत्री भी। उन्हुका बिना हिन्दी के बहुत-स साहित्यिक काम जहाँ के तहाँ रहि गइल। हिन्दी-कविता के नई धारा ऊहे चलवले उन्हकर अभाव अब जल्दी पूरा होखे के कवनो आशा नइखे। 'अँजोर' पर उन्हकर बहुत ने रहल हा। भगवान उन्हुका आत्मा के शान्ति आ उन्हुका परिवार के धीरज देसु।

महाकवि 'निराला'

प्रयाग में १५ अक्तूबर के सवेरे लगभग साढ़े नौ बजे हिन्दी के युग-प्रवर्त्तक क्रान्तिका महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ६५ बरिस का उमिरमें एह दुनिया से उठि गइले। उन्हु मरला से भी देश में सगरे शोक छा गइल। उनका अइसन त्यागी, परोपकारी आ दीन-दुखिया के सहायक अब केहू कवि नजर नइखे आवत। कहानी, उपन्यास, आलोचना, निबन्ध आदि लिखे में त उन्हुकर यश फैलले रहलहा, बँगला से हिन्दी-अनुवाद करे में उन्हुका जोड़ के केहू नइखे लउकत। बंगाले में उन्हुकर जनम भइल रहे आ अपना मातृभाषा अइसन बँगला लिखत-बोलत रहले हा। उन्हुकर घर उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिल में रहलहा आ मातृभाषा रहलहा बैसवाड़ी बोली। उन्हका मरला से हिन्दी के ए बड़ा भारी स्तम्भ टूटि गइल। भगवान उन्हुका आत्मा के शान्ति आ उन्हुका परिवा के ढाढ़स देसु।

'अँजोर' के नया साल

एह अंक के साथ 'अँजोर' के दोसर लाल खतम हो गइल। एह अंक में दोसरा साल तीसरा आ चउथा अंक दूनो शामिल बाटे। समय पर अच्छा-अच्छा लेख-कविता ना मिल आ संपादक आ सहायक संपादक दूनों जने बीमार परि गइले। भोजपुरी-प्रेमी लोग 'अँजो का ओर तनिको निगाह नइखे फेरत। रचना के अभाव, रुपया-पैसा के अभाव, सहाय आ सहानुभूति के अभाव, ग्राहक के अभाव, नाना प्रकार के अभावन के बीचबड़ा बड़ा कठिनाई से 'अँजोर' के चलावे के परत बा। तबो आपन समय आ पइसा लगाके कइ एकराके जियावल जाता। भोजपुरी भाई लोगन खातिर बड़ा लाज के बात बाटे कि 'अँजो

के साहस आ सेवा पर केहू तनिको ध्यान नइखे देत। बँगरी (चम्पारन) के पंडित गणेश चौबे आ डुमराँव (शाहाबाद) के श्री रास विहारी राय शर्मा एम० ए० के सहानुभूति आ सहायता खातिर 'अँजोर' बहुत कृतज्ञ बाटे। अइसन दस-बीस सहायक भी हो जइते त बड़ा ढाढ़स रहित, मगर केहू जवानी मदद करेवाला भी आगे नइखे लउकत। अब आगा साल से एकर रूप कइसन होई, एह बात पर विचार हो रहल बा। कवनो तरह से हम एकरा के बराबर चलावत रहे के चाहत बानी।

भोजपुरी का बारे में 'अँजोर' के नीति

पिछली दफा हम 'अँजोर' में लिखले रहीं कि प्रारम्भिक शिक्षा के माध्यम हिन्दी प्रधान क्षेत्रन में सगरे हिन्दीए रहे के चाहीं, भोजपुरी भा कौनो क्षेत्रीय भाषा ना। एह बात पर बहुत भोजपुरी भाई लोगन का भ्रम आ सन्देह हो गइल, हमरा पास चिट्ठी आवे लागल, केहू खिसियाइ के लिखल, केहू समुझाइके। मगर हम ओही में ईहो लिखले रहलीं कि भोजपुरी हमेशा हिन्दी के सहायक बनिके रही, हिन्दी का राह के रोड़ा ना बनी, लेकिन जनपदीय भाषा के पक्ष के आग्रह लेके कवनो आन्दोलन कतहीं से केहू उठाई त भोजपुरी भाषी भी ताल ठोकि के मैदान में उतरि जइहें। एहं घरी हमरा राष्ट्र के सामने बहुत तरह के समस्या उलझल बाड़ीसऽ, भाषा के समस्या त सबसे जटिल आ खतरनाक हो गइल बा। भोजपुरी भाषी ओकरा के अउरी जटिल बनावे के नइखन चाहत। आगे जब समय आई तब देखल जाई। अबहीं त भोजपुरी के पुरान साहित्य के खोज करके उद्धार करेके बा आ नया साहित्य के निर्माणे करत चले के बा। ईहो दूनो काम भविष्य के बनावे खातिर करेके परी। एही काम में सबका जुट जाये के चाहीं। हम भोजपुरी के पक्षपाती केहू से कम नइखीं, मगर हमं राष्ट्रभाषा हिन्दी के साथ ही ओकरो के ले चले के चाहत बानी, एही में देश के कल्यान बा। एह बारे में केहू का कवनो भ्रम आ शंका ना होखे के चाहीं। 'अँजोर' कबहीं देखा देखी हड़बड़ी में कवनो काम ना करी। जब समय आई तब धार पर डटे में पीछे ना रही।

भोजपुरी के व्याकरण

उपर्युक्त विद्वान श्रीरासबिहारी राय शर्मा बड़ा परिश्रम से भोजपुरी व्याकरण लिखिके तैयार कइले बाड़े। 'अँजोर' के कार्यालय से ओकरा के प्रकाशित करेके निश्चय कइल गइलहा। ओकरा बाद भोजपुरी शब्दकोश निकाले के भी इरादा बाटे। 'अँजोर' में शब्दकोश आ मुहावरा कोश लगातार छपि रहल बा। ओह में केहू भाई कवनो सलाह आ मदत आज ले ना दीहल। भोजपुरी के क्षेत्र बहुत विस्तृत बाटे। एक कोना से शब्द आ मुहावरा चुनाई त समूचे क्षेत्र के लोग नाना प्रकार के दोष निकाले लागी। मगर जब चारू ओर से सहायता आ सलाह नइखे मिलत आ सगरे घूमि के शब्द आ मुहावरा संग्रह करेके सुविधा नइखे तब जतना काम अकेले होखे जोग बाटे ओतने कइल जात बा। जब कोश तैयार हो जाई तब जेकरा सुधार करेके होई से करत रही। हम आशा करत बानी कि भोजपुरी के प्रेमी भाई लोग व्याकरण प्रकाशित भइला पर ओकरा के अपनावे के कृपा करी।

भोजपुरी के प्रकाशित साहित्य के लेखा-जोखा

हमार विचार बाटे कि अब तक जतना भोजपुरी-साहित्य प्रकाशित हो चुकल बाटे ओतना के लेखा-जोखा दुरुस्त करके 'अँजोर' में छाप दीहल जाय एह काम में जानकार

भाई लोग के मदत जरूरी बाटे। एक आदमी से ई काम पार ना लागी। पुस्तक अ लेखक-प्रकाशक के नाम-पता आ दाम त छपना जरूरी वड़लेवा, पत्र-पत्रिका में छप भोजपुरी-विषयक लेखन के सूची भी पूरा-पूरा विवरण के साथ छपे के चाहीं कि कव पत्र-पत्रिका में कब केकर लेख छपल। एह से भोजपुरी का विषय में खोज करेवाल लोगन के बड़ा सहायता मिली। एह काम में समय आ परिश्रम त लागी जरूर, मग एह से साहित्यिक शोध के काम करे में बड़ा आसानी होखी। एह में जे केहू मदत क ओकर नाम-धाम 'अँजोर' में छपी। हमरा आसा बाटे कि भोजपुरी प्रेमी विद्वा यथाशक्ति एह काम में हाथ बँटइहें।

भारत के राष्ट्रपति

पिछला महीना ता० ३-१२-६१ के देश बड़ा धूमधाम से पूज्य डा० राजेन्द्र प्रसाद के वर्षगाँठ मनावल हा। अपने बिमारी से निरोग होके फिर राष्ट्रपति के पद सम्हाल रहल बानी। सारा देश अपने के जयजयकार मनावता आ भगवान से विनती क कि अपने अमर होके देश के रास्ता देखाईं। भोजपुरी परिवार आ 'अँजोर' अपने युग-युग जिये के भीख भगवान से माँगता।

गोआ के मुक्ति

गोआ भारत के एगो अंग ह। एह पर पुर्तगाली लोग साढ़े चार सौ बरि जबरदस्ती आपन कब्जा कइले रहल हा। शान्ति से देश छोड़ि देवे के मनावन जब साला ठुकरा दिहले त पिछला दिसम्बर का महीना में भारतीय सेना गोआ के पुर्तगाली हु से मुक्त कइ दिहलसि। केन्द्रीय सरकार के एह काम खातिर चारू ओर से बधाई मिल सारा दुनिया के लोग एकर सराहना कइल हा। अमेरिका आ इंगलैंड का काहें द काम पसन्द ना परल हा। रूस त ताल ठोकि के एह काम के सरहलसि। बहुत दिन गुलामी के जंजीर गोआ से तूरि के फेंकाइल। अब गोआ मातृभूमि के गोद में आ गइ

कांग्रेस के सतसठवाँ अधिवेशन

पटना में एह साल अखिल भारतीय कांग्रेस के सतसठवाँ अधिवेशन भइ सभापति रहीं श्री संजीव रेड्डी। पोलो ग्राउण्ड में कांग्रेस के बड़ा शानदार पंडाल बना गइल रहे। खादी ग्रामोद्योग के हर प्रान्त के दूकान प्रदर्शनी में आइल रहे। लो छूटि के गरम आ सूती कपड़ा किनले। श्री नेहरू जी अउर भारत के कांग्रेसी ने लोग आ विदेशन के कुछ राजदूत भी एह सभा में सामिल भइले। एह कांग्रेस में ब महत्वपूर्ण प्रस्ताव पास भइल। लाखन आदमी देश का कोना कोना से कांग्रेस के देखे खाति आ अधिबेशन में भाग लेबे खातिर बटुराइल रहले। राजधानी में एक हफ्ता जवन हलच आ चहल पहल रहे कि का कहे के। कई विचार से पटना के ई कांग्रेस के अधिवेसन भा का इतिहास में आपन एगो विशेष स्थान राखी एह में कवनो सन्देह नइखे। एक सफलता खातिर स्वागत समिति के भाई लोग खास कइके श्री जगजीवन रा श्री विनोदानन्द झा आ कृष्णबल्लभ बाबू बधाई के पात्र बानीं।

—पाण्डेय नर्म्मदेश्वर सहाय

बिहारमें भोजपुरीका प्रारम्भिक रूप

—बजरंग वर्मा

हिन्दी-साहित्य के विकास में बिहार का वड़ा ही महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आधुनिक अनुसंधानों के परिणाम स्वरूप ज्यों-ज्यों साहित्य के अज्ञात पृष्ठ प्रकाश पाते जा रहे हैं, त्यों-त्यों इस उक्ति की सार्थकता चरितार्थ होती जा रही है।

बिहार में लिखित-साहित्य की प्राचीन परम्परा की खोज सबसे पहले मिथिला में आरम्भ हुई जिसके कारण मैथिली की प्राचीन रचनाएँ साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान पा चुकी हैं। गत दो दशकों से बिहार के भोजपुरी-भाषी क्षेत्रों में भी प्राचीन साहित्य की खोज एवं रक्षा के प्रयत्न होने लगे हैं।

अबतक हिन्दी के जिस सबसे प्राचीन साहित्यकार का हमें पता चला है वे हैं ईशानचन्द्र, जो सातवीं शती में हुए थे। वाणभट्ट के परम मित्र होने के कारण ये शाहाबाद के सोन नदी के पश्चिमी तट-पर 'प्रीतिकूट' नामक ग्राम के आसपास किसी ग्राम के निवासी होंगे ऐसा अनुमान किया जाता है। ईशान चन्द्र की काव्य-रचनाएँ हमें अभीतक देखने को नहीं मिलीं। किन्तु यह निश्चित-रूप से ज्ञात हुआ है कि इन्होंने लोक-भाषा में अपनी रचनाएँ की थीं। हम उस दिन की प्रतीक्षा में हैं कि शाहाबाद की तत्कालीन लोकभाषा में लिखित ये रचनाएँ हमें उपलब्ध हो जायँ। वस्तुतः उनकी उपलब्धि के पश्चात ही बिहार में भोजपुरी-साहित्य की प्राचीनता की वास्तविक सीमा निर्धारित की जा सकेगी।

हिन्दी में जो सबसे प्राचीन साहित्य उपलब्ध होता है, वह है वज्रयानी वौद्धसिद्धों का साहित्य। इन सिद्धों में भी अधिकांश बिहार के ही निवासी थे—कई तो भोजपुरी-क्षेत्र के। उदाहरणार्थ, नवीं शती के 'चर्यटीपा' और ग्यारहवीं शती के 'चम्पकपा' चम्पा नामक स्थान के निवासी वतलाये गये हैं। राहुलजी ने 'चम्पा' को भागलपुर के अन्तर्गत स्थिर किया है। किन्तु पं० हजारी प्रसाद द्विवेदी ने उस शहर को आधुनिक चम्पारन का प्राचीन रूप माना है। यदि द्विवेदी जी का अनुमान ठीक है तब ये सिद्ध भी भोजपुरी-क्षेत्र के ही सिद्ध होते हैं। नवीं शती के ही एक सिद्ध थे चौरंगीपा जो शालिवाहन के पुत्र कहे गये हैं। राहुलजी ने इन्हें मगह का निवासी बतलाया है। डा० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल और आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी इन्हें स्यालकोट, पंजाब का निवासी बतलाते हैं। किन्तु शाहाबाद जिला के 'भभुआ' के निकट चैनपुर-ग्राम में राजा शालिवाहन के महल के भग्नावशेष अभीतक वर्त्तमान हैं। उसके 'सिंहद्वार' पर उक्त राजा के पुरोहित 'हरसूब्रह्म' का प्रसिद्ध मंदिर आज भी खड़ा है। चौरंगीपा इसी शालिवाहन के पुत्र थे। कहते हैं, चौरंगीपा की दूसरी माँ ने उनके हाथ-पाँव कटवा डाले थे। इसी कारण, ये चौरंगीपा कहलाने लगे। यों पहले इनका नाम था 'पूरन भगत'। भोजपुरी में आज भी लूले-लंगड़े को 'चौरंगी' ही कहते हैं। अतः यह अनुमान दृढ़ होता है कि ये भी भोजपुरी-क्षेत्र के ही निवासी रहे होंगे। इनकी रचनाएँ जो प्राप्त हुई हैं,

उनमें भी भोजपुरी का ही रंग गाढ़ा है। आचार्य द्विवेदीजी ने पिण्डी के जैनग्रंथ भाण्डार में सुरक्षित 'प्राणसंकली' नामक इनकी एक पुस्तक की चर्चा की है। यदि वास्तव में यह इनकी ही पुस्तक है तब तो स्पष्ट ही इन्होंने भोजपुरी शब्दों का खुलकर प्रयोग किया है। 'बोलीला', 'भइला सनमुख', 'देखीला', 'नमाइला माथा', आसिरवाद पाइला', 'भइला हरखित', 'पुछीला' आदि प्रयोग तो भोजपुरी में आज भी प्रचलित हैं।

इसी प्रकार, बारहवीं शती के 'कोकालिपा' भी चम्पारन के निवासी बतलाये गये हैं।

जो हो, अपभ्रंश-भाषा में सिद्धों की जो प्रामाणिक रचनाएँ मिली हैं, उनमें भोजपुरी के अनेक ऐसे शब्द बिखरे पड़े हैं जिनका प्रयोग भोजपुरी-भाषी जनता आज भी उसी रूप में करती है। वास्तव में भोजपुरी, मैथिली, मगही आदि में आज जितना भाषागत् भेद दीखता है, उतना प्राचीन-काल में नहीं था। अब दिन-पर-दिन यह भेद और बढ़ता ही जायगा; क्योंकि वर्त्तमान वैज्ञानिक-युग में नवीन अनुसंधानों के परिणाम स्वरूप सभी भाषायें अपना-अपना रूप सँवारने में तत्पर हो रही हैं। चौदहवीं शती में मिथिला के ज्योतिरीश्वर कृत 'वर्ण-रत्नाकर' और उमापति उपाध्याय एवं महाकवि विद्यापति के पदों तक यह प्रवृत्ति स्पष्ट दीख पड़ती है। उक्त रचनाओं में अन्य बिहारी-भाषाओं के शब्दों के साथ भोजपुरी के भी अनेक शब्द प्रयुक्त हुए हैं। उदाहरण के लिए ज्योतिरीश्वर-कृत वर्ण-रत्नाकार ही ले लीजिए। सरोवर कैसा है? लेखक कहता है—

"शरतक चाँद अइसन निर्म्मल-बौद्धपक्ष अइसन आगात भीषण-उदयनक सिद्धान्त अइसन प्रसन्न-यौगीक चित्त अइसन सौम्य-हरिश्चन्द्रक त्याग अइसन अगाध सरोवर देषु।"

इसके पश्चात् सोलहवीं शती में सारन जिले के 'नैनी'-ग्राम निवासी 'सविता' और 'कविता' नामक कवियों का पता चलता है जिन्होंने भोजपुरी में काव्य-रचनाएँ की थीं। दुर्भाग्यवश हमें इनकी रचनाएँ उपलब्ध नहीं होतीं। कहते हैं गोरखपुर के मझौली राज्य में अपनी भोजपुरी-कविताओं के चलते सविता का बड़ा आदर था। उक्त मझौली के राजा भीमक ने इन्हें सारन जिले में 'नैनी' नामक एक ग्राम दे दिया था, जहाँ ये बस गये थे।

सत्रहवीं शती बिहार में भोजपुरी-साहित्य के लिए बड़ा महत्त्वपूर्ण काल है। इसमें एक ओर जहाँ अक्स्मात् भोजपुरी-गद्य का पूर्ण विकसि रूप देखने को मिलता है, वहाँ दूसरी ओर प्रौढ़ काव्य साहित्य के भी दर्शन हमें होते हैं। शाहाबाद के परमार उज्जैन राजाओं द्वारा विभिन्न अवसरों पर प्रकाशित राज्याज्ञाओं, सनदों, दानपत्रों और दस्तावेजों में कुछ जो उपलब्ध हुए हैं. उनमें पूर्ण विकसित विशुद्ध भोजपुरी-गद्य का प्रयोग मिलता है। इस काल के काव्य-साहित्य में तो भोजपुरी की प्रौढ़ता एवं उसके परिष्कार को देखकर आश्चर्य-चकित रह जाना पड़ता है। शाहाबाद के धरकंधा-ग्राम-निवासी दरिया-साहब और सारन-जिले के माँझी ग्राम-निवासी धरणीदास जी, इन दो प्रसिद्ध संत-कवियों का आविर्भाव इसी काल में हुआ था। इन दोनों की खड़ी बोली-मिश्रित सधुक्कड़ी-भाषा में जो जो रचनाएँ मिली हैं, उनमें भोजपुरी का रंग बहुत गहरा है। विशुद्ध भोजपुरी में रचित इनकी जो रचनाएँ उपलब्ध हुई हैं, उनमें तो पर्याप्त प्रौढ़ता एवं परिष्कार के दर्शन होते हैं। देखिए, धरणीदास जी की निम्नांकित पंक्तियों में भोजपुरी का कितना प्रौढ़ एवं विकसित-रूप देखने को मिलता है—

'पाव दुबी पउआ परम झलकार।
दुरहुर श्याम तन लाम लहकार।
लँमहरि केसिया पतरि करिहाँव।
पिअरि पिछौरी करि करते न आव।
चंदन खोरिया भरेला सब अंग।
धारा अनगनित बहेला जनु गंग।
माथे मनि मुकुट लकुट सुठि लाल।
झीनवा तीलक सोभे तुलसी के माल।
नोंक नाक पतरि ललौहिं बड़ि आँखि।
मुकुट मझोर एक मोरवा के पाँखि।
कान दूनों कुंडल लटक लट झूल।
दार्ही मोछ नूतन जैसन मखतूल।
परफुलित बदन मधुर मुसुकाहिं।
ताहि छवि उपर धरनि बलि जाहिं।
मन कैला दंडवत भुइयाँ धरि सीस।
माथे हाथ धरि प्रभु देलन्हि असीस॥

सत्रहवीं शती तक जिन बिहारी साहित्यकारों का हमें ज्ञान है, उनमें धरणीदास जी ही प्रथम साहित्यकार हैं जिनकी भोजपुरी कविताओं में इतनी प्रौढ़ता के दर्शन हमें होते हैं। उनकी इस कोटि की रचनाओं से यह स्पष्ट हो जाता है कि उनके पूर्व भी बिहार में बहुत दिनों से भोजपुरी में काव्य-रचनाएँ होती थीं अन्यथा उसमें अकस्मात इतनी प्रौढ़ता, इतना निखार और परिष्कार क्योंकर पाया जाता। व्रजभाषा में सूरदास और मैथिली में उमापति तथा विद्यापति के पदों को देखकर विद्वानों ने ऐसा ही अनुमान किया है।

सत्रहवीं शती के पश्चात् बिहार में भोजपुरी-साहित्य की एक प्रकार से क्रमबद्ध परम्परा उपलब्ध होती है।

('आकाशवाणी' के सौजन्य से)

संगीत रूपक

: रितु-रंग :

रामनाथ पाठक 'प्रणायी'

वाचक

आसमान के उड़ल चदरिया
चम-चम चमकल चान,
आइल शरद सुहागिन सज-धज,
हुलसल देह-परान।

गायिका

लदरल धान, देखिके किसान, बिहँसि-बिहँसि उठे सँझिया बिहान
अँखिया में उतरल रतिया के सपना
धाइ के सुनावे पिया बतिया के अपना,
खेत में धेयान, खेते में परान, खेतवे के गीतिया से गूँजे आसमान
लदरल धान, देखिके किसान, बिहँसि-बिहँसि उठे सँझिया-बिहान
असों ना उपास परी एको दिन थरिया,
असों के जिनिगिया में आई ना अन्हरिया,
लोग से दलान, गरू से बथान, अनवाँ से चमकेला खर-खरिहान
लदरल धान, देखि के किसान, बिहँसि-बिहँसि उठे सँझिया-बिहान
भरि-भरि, धरि-धरि नेह के गगरिया,
शरद सजावे रस-रासि से नगरिया,
लरिका-सेयान, मगन जहान, अँजुरिन धरती लुटावे वरदान
लदरल धान, देखि के किसान, बिहँसि-बिहँसि उठे सँझिया-बिहान

वाचक

रात-रात, दिन-दिन जाड़ा से
ठिठुर रहल बा देह,
माटी के पुतला में कतना
तबो छिपल बा नेह।

गायक

ई जाड़ा के भोर सजनी
चकमकात मोती के ढिलुहा
लाल किरन के डोर सजनी
ई जाड़ा के भोर सजनी
ढूल रहल गाँवन के रानी
रंग-रूप पर चढ़ल जवानी

ठाँव-ठाँव पर नाच रहल बा—
छवि के नन्द-किशोर सजनी
ई जाड़ा के भोर सजनी
उठा कुहा के घूँघ लजाइल
उषा प्यार-पनघट पर आइल
पात-पात पर रात गँवावत—
निकसल सरस अँजोर सजनी
ई जाड़ा के भोर सजनी

वाचक—

केकर लोर गिरल धरती पर,
केकर बिछुड़ल प्यार ?
के पहिरी रे? शिशिर सलोना
गाँथ रहल बा हार ।

गायिका—

शिशिर से सिहरल देह-परान
गतर-गतर में लहर जगावे
सखि, बेयार के बान
शिशिर से सिहरल देह-परान
दिन भर ठिठुरल रहे अँगुरिया,
झनकि-झनकि के बोले चुरिया,
हाय पिया परदेशी जेकर,
सेकर कवन ठिकान
शिशिर से सिहरल देह-परान
घर-घर बिखरल सुधि के मोती,
कब नयना में लवटी जोती,
लागल आस हिया में हरदम
कब बिहँसी सुनसान
शिशिर से सिहरल देह-परान

वाचक—

धरती के रंगीन चुनरिया,
हवा बसन्ती डोलल,
बइठल करे गुनावन गोरिया,
मन के कोइल बोलल ।

गायक—

अमवाँ में मोंजर लागल,
देखि लोग भइले पागल,
लहसि उठल कचनार हो—
कोइलिया डाले डाल बोलेली
कोइलिया डाले डाल डोलेली

कलियां प भँवरा झूमल,
फुलवा प नयना घूमल,
बहि के चलल रसधार हो—
कोइलिया डाले डाल डोलेली
कोइलिया डाले डाल डोलेली
सुध बुध बिसरल देहिया
जियरा में जागल नेहिया,
लचकेला नेमुआँ अनार हो—
कोइलिया डाले डाल बोलेली
कोइलिया डाले डाल डोलेली
शिव के समधिया टूटल,
नयना से बनवाँ छूटल,
कमवाँ भईले जरि के छार हो—
कोइलिया डाले डाल बोलेली
कोइलिया डाले डाल डोलेली

वाचक—

उगिलत लूक-लहर धरती पर
आइल गरमी - धूप,
का जाने दो कहाँ लुकाइल
अब रितुअन के भूप ।

गायिका—

ठीक दुपहरिया में,
लोगवा बधरिया में,
तलफि उठेला आसमान हो
बेयरिया अगिया लावेली
बेयरिया बगिया जारेली
अंग ना अँगरखा बा,
धुपवा के बरखा बा,
धोतिया बा फटही पुरान हो—
बेयरिया अगिया लावेली
बेयरिया बगिया जारेली
चिरईं चुरुंग छीपल,
पतई - पतेल धीपल,
कहर करेला आसमान हो—
बेयरिया अगिया लावेली
बेयरिया बगिया जारेली
जिनिगी भईल बोझा,
लउके ना केहू सोझा,
धन-धन बड़ुए किसान हो—

बेयरिया अगिया लावेली
बेयरिया बगिया जारेली

वाचक—

नाचत मोर पपीहा बोले,
देखि घटा के प्रीत,
आसमान से भुइयाँ उतरल
'रिमझिम रिमझिम'-गीत।

मिलल जुलल गीत—(गायक गायिका)

आइल बरसात रे
रिमझिम रस-बुनियाँ, भींज रहल दुनियाँ,
इन्द्र धनुस-प्रात रे, आइल बरसात रे
माने ना अँखियाँ, उभरे ना पँखियाँ,
हरियर खढ़-पात रे, आइल बरसात रे
नाच रहल मनवाँ, नाचे सवनवाँ
भादो के रात रे, आइल बरसात रे
जिनिगी के रहिया, बीतल बिरहिया,
तिरपित अहिवात रे, आइल

यदि आप शीघ्र आरोग्य के लिए
सस्ते दर पर
प्रामाणिक, शुद्ध तथा ताजो
दवाएँ
चाहते हैं तो कृपया एक बार
कण्टिनेण्टल मेडिकल हॉल
पटना हॉस्पिटल के सामने
में
अवश्य पधार

विष्णुध्वज या कुत्वमनार

डाक्टर देवसहाय त्रिवेद

दिल्ली के पास मेहरौली में एक वड़ा भारी मनार वा। स्टेशन से उतरते ताँगावाला पुकारेलनस कुतुब चलबऽ, कुतुब? कुछ लोग एकरा के कुत्वमीनार भी कहेला। किन्तु मीनार शब्द असुद्ध ह। शुद्ध शब्द मनार ह।

कुत्वमनार नाम भइला से बहुत लोग समझेला कि कुतुबुदीन वादशाह के वनावल ह। किन्तु ई वात भ्रम-पूर्ण वा। मनार के वनावल ई झगड़ा के वात वा, न ठीक से न कहल जा सकेला। किन्तु एह मनार से कुतुबुदीन से कौनो वास्ता नइखे।

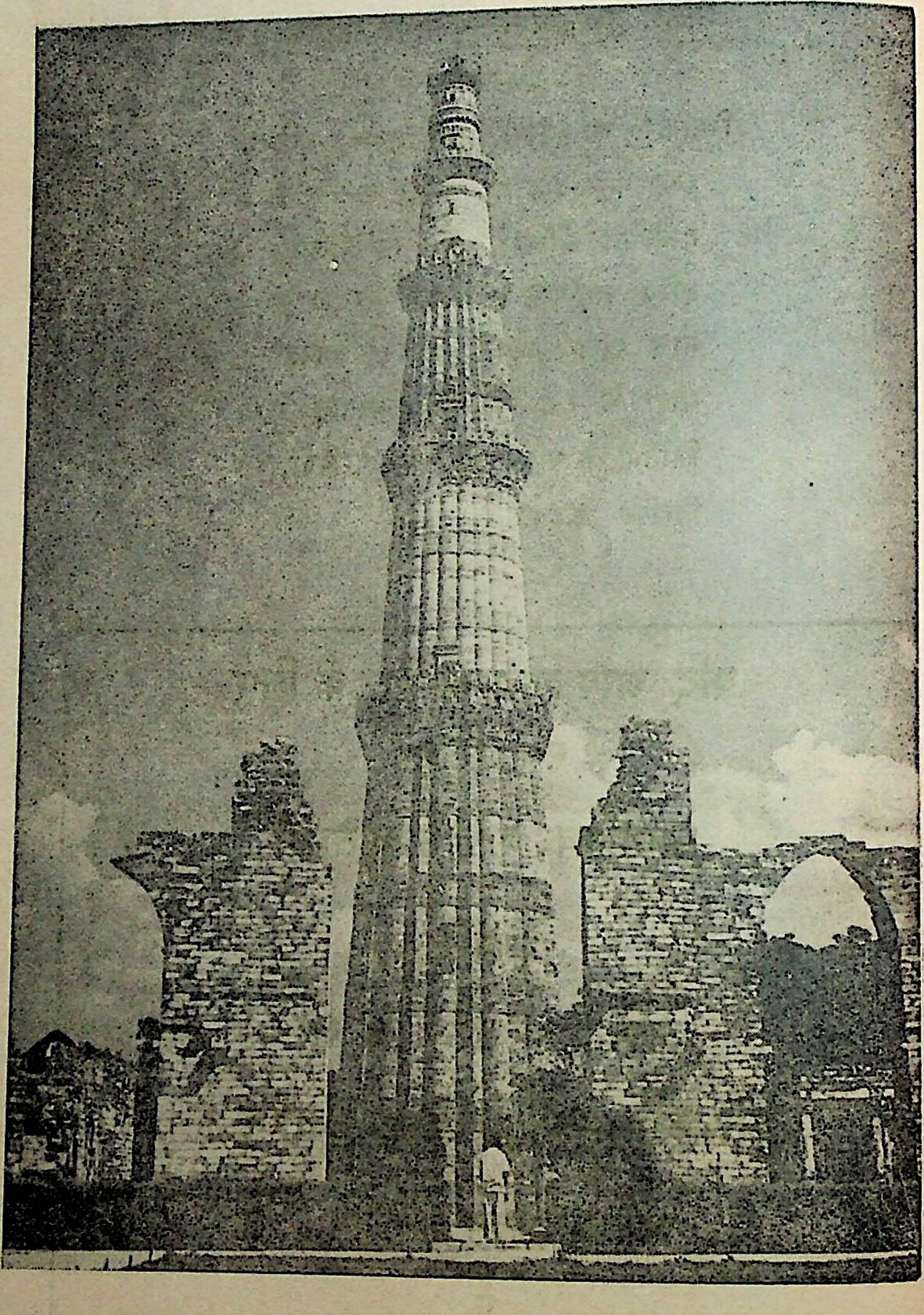

विष्णुध्ज, जवना के समुद्रगुप्त ईसा पूर्व २८० में बनवलन।
एह मनार पर अरबी में मोहम्मद गोरी के दूठे, कुतुबुदीन के एकठे।

अलतमश के चारठे अमिलेख वा। एकरा अलावा अल्लाउद्दीन खिल्जी, फिरोजशाह तुगलक और सिकन्दर लोदी के भी एक-एक गो अभिलेख वा।

फारसी के इतिहासकार लोग के मत में विभिन्नता वा। कुछ लोग कहेला कि बलवन के पोता कैकुवाद एकरा के बनवलक। अधिकांश इतिहासकार लोग एह मत के वा एकरा के अलतमश बनवलक। किन्तु फिरोजशाह के अनुसार ई मोहम्मद गोरी के वनावल वा।

कुछ आधुनिक इतिहासकार लोग के मत वा कि एकरा के कुतुबुदीम वनवलक। एही से आपन और आपन मालिक के नाम लिखवलक। कुछ लोग कहेला कि एकर नीचे के हिस्सा कुतुबदीन के बनावल बा। और उपर के हिस्सा एकर दमाद अलतमश वनवलक। कुछ लोग के मत वा कि अफगानिस्तान में एक फकीर रहत रहले। उनुकर नाम रहे खाजा कुतुबदीन बखतीयार काकी। अलतमश उनुकर चेला रहे और उन्हके नाम पर अलतमश एकरा के वनवलक। किन्तु अलतमश उनकर चेला भइवे ना कइल।

ई सब पढ़ला से मालुम हो जाला कि एह मनार के वारे में गलत फहमी वा। कुल लोग कहेला कि पृथ्वीराज के वनावल ह। किन्तु पृथ्वीराजरासो में कहीं भी नइखे लिखल कि पृथ्वीराज अइसन मनार के वनवलन। एकरा अलावा पृथ्वीराज अजमेर के राजा रहले दिल्ली के ना एहसे पृथ्वीराज कें बनावल भी ना हो सके। तव सवाल उठत बा कि ई केकर वनावल ह। कुछ लोग कहेला कि मस्जिद के गुम्वज ह जवना पर चढ़के अजान देल जा ला। एहसे इ मजिना ह। किन्तु में दुगो ना तो चारगो मनार होला एकगो या तिन गो ना। एह से ई मजिना भी ना हो सके। कुतुवदीन त हिन्दुस्तान में चारे वर्ष राज्य कइलक (१२०६ से १२१० ई० तक)। अतना थोड़ा समयमें अतना भारी मनार न बन सकेला। यदि अपना मालिक के समय में वनवौले रहीत तो अपने मालिक के नाम पर एकर नाम राखित।

ई समस्या वड़ा जटिल बा। कौनो चीज के जाँच परताल अच्छी तरह करना चाहीं और आँख फाड़ के देखे के चाहीं। मनार के पासे में एक वड़ा भारी मस्जिद वा। ई मस्जिद में भीतर में पत्थर पर फारसी में लिखल वा कि कुतुवदीन ई मस्जिद के सन् ११९२ में बनवलक। उहाँ के सताइस (२७) मन्दिर के तोड़ दिहलस। और वहीं के ईटा वो चूना गारा से ई मस्जिद के बनवलक। एक-एक मन्दिर के ऊपर (२०) वीस-वीस लाख रुपया खर्च भइलरहे। ताज-उल माशीर (फारसी किताब) में भी लिखल बा कि कुतुबुद्दीन २७ मन्दिरन के तोड़ के इ मस्सिजद कुब्वत-उल-इस्लाम वनवलक।

अवही तक कुतुवमनार के पहला खण्ड में (२७) सताइस गो खिड़की वा जेकरा मे धूा और हवा जाला। और सताइस नक्षत्र हिन्दुअन के प्रसिद्ध बा। एहसे सिद्ध होता कि उहाँ पर सताइस नक्षत्रन के वड़ा भारी मन्दिर या बेधशाला रहे। अव ही तक भी ई मनार दक्षिन के ओर झुकल वा। और जंतर मंतर में मिश्र यन्त्र के दिवाल के समान पाँच अंश के कोण दक्षिन दिशा के ओर बनावल वा। इटली में भी पिस्सा के बुरज पाँच अंश दक्षिन पर झुकल बा। दिल्ली कर्क रेखा से पाँच डिगरी उत्तर के ओर बा। एही से तेइस जून के बारह बजे दिन में एकर तनिको छाया न होला। मनार में बारह राशि के बारह पहलूबा और एकर सात खण्ड वा जे सात स्वर्ग के संकेत करत बा। एसे ई सिद्ध होता कि ई बेधशाला के प्रधान मनार रहे।

तब एकरा के कुतुब मनार काहे कहल जाला और एकर प्राचीन नाम का ह। एह पर तनी विचार करेके चाहीं। कुतुबनुमा अपने सभे सुनले होखब। एहसे दिशा के ज्ञान

होला। एकर सुई हमेशा उत्तर के ओर रहेला। एही से ई मीनार के नाम कुतुबमीनार पड़ल। कुत्ब और कुतुब शब्द मिलत बा।

ई मनार मेहरौली में बा। मेहरौली शब्द के शुद्ध संस्कृत रूप ह मिहिरावली मिहिर के माने संस्कृत में सूर्य होला और फारसी में भी मेहर के सूर्य कहल जाला। एहसे मिहरावाली के अर्थ होला सूर्यमण्डल या तारा-समूह। मनार शब्द के अर्थ ह दियट जौना पर दिया रखल जाला (रोशनी का स्थान)। कुत्ब शब्द के अर्थ ह ध्रुवतारा या धूरी जेकरा पर चक्का घूमेला।

एह मनार के पुराना नाम विष्णुध्वज ह। मनार के पास ही एक बड़ा भारी लोहा के किल्ली बा। एकर वजन १७० एक सौ सतर मन बा। एकर ऊँचाई करीब २४ फीट बा। एकरा अइसन आज तक कौनो लोहा के किल्ली बनवे ना कइल। एकरा में आज तक तनिको मुर्चा न लागल। लोग के मालूमें न होला कि अइसन लोहा कैसे बन सकल।

एह लोहा के किल्ली पर ब्राह्मी लिपि आ संस्कृत भाषा में शार्दूल विक्रिड़ित छन्द में तीन गो श्लोक बा और सात पाँती में लिखल बा। एह पर लिखल बा कि जे एह लम्बा विष्णुध्वज के बनाउलक ऊ अब एह दुनियाँ में नइखे। ऊ सिन्धु के सात मुहाना पार करके बलख जितलक। बंगाल और दक्खिन समुद्र ओकर कीर्ति से लहरात बा। ऊ शरीर छोड़ के चल गइल किन्तु ओकर कीर्ति जमीन पर बा। ऊ आग के समान आपन सब शत्रु के भूंज देलक। अपना कलाई के बल से राज्य दखल कइलक और बहुत दिन तक एकछत्र राज्य कइलक। ओकरा अइसन प्रतापी दुनिया में कोई ना रहे। इतिहासकार लोगन के मोताबिक अइसन राजा केवल समुद्रगुप्त भइल। हिन्दुस्तान के इतिहास में अइसन राजा और कोई नइखे। जैसे कोई मकान, तलाब, इमारत, कुआँ बनावल जाला तथा ऊपर ओकरा बनावे वाला के नाम भी लिखल जाला। एहसे मालूम होत बा कि ऊ जगह सताइस नक्षत्रन के बड़ा भारी वेधशाला रहे। और एह लोहा पर जे ई बेधशाला में बनवलक ओकर कीर्ति-यश के प्रशंसा लिखल बा। समुद्र गुप्त के समय ना मिलल कि वेधशाला बनवला के बाद अपना यश के भी पूरा वर्णन लिखवावे। ई भार ओकर बेटा चन्द्रगुप्त द्वितीय के कंधा पर पड़ल। चन्द्रगुप्त द्वितीय के नाम एह में राजा चन्द्र लिखल बा जे भूमिपति रहे, सम्राट ना। ओकर मुँह पूर्णिमा के चन्द्रमा के समान बा आ विष्णु के भक्त बा। मरल आदमी के मुँहके उपमा चन्द्रमा से न देल जाला। एहसे ई चन्द्र चन्द्रगुप्त द्वितीय के सिवा दोसर ना हो सके।

संस्कृत में विष्णु शब्द के अर्थ सूर्य होला। एहसे सिद्ध होता कि एह कुतुबमनार के पहिला नाम विष्णुध्वज रहे और मुसलमान लोग नाम के फारसी में अनुवाद कर देलक। कुत्ब मनार के प्रवेश द्वार उत्तर के ओर बा। मुसलमानन के इमारतन के दरवाजा कावा के ओर होला। एहसे इ मनार मुसलमानन के बनावल न हो सके।

ई समुद्रगुप्त मगह भोजपुर या सारा भारत के बादशाह रहे। एकर प्रताप दूर दूर तक फैलल रहे। उहे ई विष्णुध्वज के ईसा से २८० बरिस पहले बनवावल सुरू कइलक आ सबसे पहले एकर लम्बा गुम्बज विष्णुध्वज बनवलक जेकर लम्बाई अब भी २३४ फी० १ इं० बा। वहाँ इर्द-गीर्द सताईस गो नक्षत्र के बेधशाला बनल। सबसे आखिर में लोहा के किल्ली पर प्रशस्ति लिखाइल २६८ बरिस ईसा से पहले। एह सम्बन्ध में समालोचना के उत्तर देल जाई। जेकरा हिम्मत होय से काटे।

हम काहे अभग?

विवेकी रांय (उत्तरी गाजीपुर)

हड़······हड़······भड़······भड़······घऽड़······घऽड़ करति मोटर बरसाती सड़कि पर छार-छार छारका खेवति चलि जाति रहे। हरियर-हरियर खेत, काई लागल नरिया-थपुवा वाला गाँव, कान में अँगुरी डालि के विरहा गावत चरवाह सड़कि पर आवत-जात लोग सभ पाछा छूटल जात रहे

पाछा बइठल एगो बाबू साहेब कहले "जनात बा जे आजु दुनियाँ भर क लोग एहीं ठावें चलि अइहें! बामन दुवादसो क आजु मेला हवे।" एगो टीसन पर मोटर रुकलि त खिरिकी मुँहें झाँकि के देखलीं कि मेला में त रंग झरत बा! कान्हि पर सीसा नियरि चमचमाति लउरि धइके छाती उतान कइके मोंछि अँइठत, देंहि भाँजत हेनी-होनी टहरत नवहन के दल, पान के दोकानि, केहू पर आँखि गड़वले सान-मटकी मारत बाबू लोगन के चेहरा एक दम साफ-साफ लउकत बाटे। करू का तेल में सउनल करिया-बार! गँवई का धोबी का पाट पर पटकल, लोलि में रंगल मल-मल क कुरुता आ ओकरा नीचे चरखाना क कमोजि जेकर कालरि कुरुता का ऊपर बाछी का कान नीयरि लटकलि बा। रंग-रंग क चेहरा छने भर में आँखि का दुआरि पर फिरिकी नियर नाचि के चलि जात बा। मस्ती भरलि चालि! कुरुता पर पान क पीति, गर में करिया डोरा में गूहलि तँइती आ पीठि पर एगो अँगोछी का खूँटा बान्हलि अनाज के गठरी। कपार पर धोती क वड़हन पगरी आ गोड़ में अँगरेजी पनही—बूट जेकर मुँह लूगा का अँवठि से चमोखि के बान्हलवा। लूगा का पाढ़ि क बनल मइल झोरा आ लउरि का ऊपर सूखे खातिर टाँगलि भींजलि धोती।

दूसरा ओर मेहरारुन के दल। बूढ़ि, लइकी, जवानि, लालि-लालि झँझाऊँ सारी आ रंग-बिरंग के गहना, गीति क मिसिरी नियरि मीठि आवाज आँखि का रहता से दिल का घर में पइसि गइलि, चारू ओरि छितरा गइलि। बाकिर अचरज ई कि केवनों तरह क मन में हलचल ना भइलि। मोटर उछलति, कूदति, सरकति, पटकाति, आ गरजति चलि जाति रहे।

सड़कि का दूनो ओरि दोकानि सजावलि। फजीर क बेरा जइसे-जइसे मोटर मेला में धसे लागलि, चालि मधीम होखे लागलि। बाड़ा भीड़ि रहे। वड़ मनई नियर गवेँ-गवेँ मोटर आगे बढ़े लागलि। घरी-घरी भोंभा बजावे के परे। लइका एनी-ओनी बरकि जात रहले। मेहारारू आँखिफारि के चिहा-चिहा के चितवे लगलीसऽ आ लूगा से मुँह तोपि के "आरे, एतना वड़ि मोटर?". कहि के मुँह फेरि ल स।

आँखि मेला का भीड़ि पर एक बेर दउरि गइलि। देखलीं कि कपार पर मोटरी आ पीठि पर बनरी नीयर लइका लदले मेहरारू हेनी-होनी फुदुकतिफिरति रहली सनि। लइका गोलकी मिठाई खातिर हाफ धुनले रहले स। अजुवे नूँ धराऊँ सारी आ चोली निकललि बाड़ी स! सुघराई क, रूप क, आ सिंगार पटार क ई का रसदार मेलावा! कबों कबो नाचत, कूदत, हल्ला मचावत लाल-लाल भगई पहिरले लइका आँखि का सोंझा ले सर से सरकि जात बाड़े त अइसन लागत बा जे ई सचहूँ क भगवान क मेला हवे। जरूर उतरि चले के चाहीँ। मन में आइल।

बाकी गम्भीर होके सोचे लगलीं कि गलत, एकदम गलत। का एकहू नीमन अदिमी आइल बाड़े? कोरा लुच्चा, लुहेड़ा, गुंडा आ सोहदा बिटुराइल बाड़ेन। नवहिन में देखे देखावे क चाह बा। हमरा में का बा? हमके ई मेला ना सोहाई।

ई एतना अदिमी तऽ आजु बेकार घूमत बाड़े। न केवनों काम, न धाम। आजु क दिन मेला-घुमाई में बीतलआ काल्हि थकला मुँहे बीती। साचि बाति त ई वा कि ई खाली बेकारनें क मेला लागल बाटे। जेकर थइली काटल, गारी बकल, चोरी कइल, मेहरारुन से धक्का खेजल काम बा। मोटर में बइठल कुछु मनई आपुस में बतिआवत रहले "हिनुस्तान हवे। कमनिस्ट लोग देश से धरम के भगा दिहल चाहत बा। बाकिर ई करिया कमरा पर लाल रंग चढ़ावे क कोशिश बेकार बा। एकदम बेकार! मेला, तिरिथि, परब, तिहवार जब-जब आवेला धरम के भाव जागि जाला। भगवान वामन का नाँव पर ई कइसन मेला धरम धक्का भइल बा!"

मोटर गवें-गवें सरकति चलि जाति रहे। छने भर में एगो फुलौना का दोकानि पर हचकि के ठाढ़ हो गइलि। लइका फुलौना कीने का धुनि में एतना मस्त रहलेस कि मोटर क खबरे ना रहे। सड़कि पर टुटल रहले स। उन्हनीं के पते ना रहे कि मोटर आवति बा। रंग-बिरंग क लुगा पहिरि के फूल नियर सुघर, मोलायम, चिकन, हँसमुख लइका चिरई नियर चहकत फिरत रहले स। लइकन के देखि के लरिकाईं क बाति यादि आवे लागलि। यादि परल कि ओह घरी मेला में सभ से नीमन बतुस फुलौने लागे। एकरा बाद एगो लाल रंग का मिठाई जेकर नाँव भुला गइल बा, बाकिर रंग-रूप यादि बा। सीसा लगावल कनहतरं में घन्टी बजा बजा के बेचे लेस। हाथ में लिहला पर गेना नीयर गोल-गोल, हावा नियर हलुक। मुँह में डलला पर बस! सुविधान एको कवर ना। मन लुलुवा के रहि जाला। वाकी वाहरे मिठाई!

कुछु अउरी आगे बढ़ला पर पूरी क दोकानि छानलि लउकलि। सोचलों मेला में जाके हलुवाई का हाथ क फुलुकी नियर सोन्ह-सोन्ह पूरी ना मिललि त का मिलल! एही बिचार में डूबत उतिरात रहलों कि मोटर आगे सचहूँ क एगो पूरी का दोकानि पर जाके खाड़ा होगइलि। का भीड़ि लागलि रहे! ऊ सोन्हि-सोन्हि गमक आवे कि जीभि से पानी टपके लागे। मन करे मोटर से उतरि के पत्तल पर डटि जाईं। बाकिर मने में सोचिके रहि गइलों। मोटर का सीट परले एको चावा ना हिललीं डोललीं।

बाजा बाजत रहे। चरखी नाचति रहे। जयकार होति रहे। बिरहा अपना मन क जमकल रहे। लोग एके पर एक तरई नियर गँजाइल रहले। भेंड़ा लड़त रहले स। तिन तसवा फेटात रहे। नाचि होति रहे। कुछु सफइल मोटे-मोटे आदिमी हाथी पर बइठल मेला क लहरि लूटत रहले।

फेरु मोटर आगा बढ़लि त मेला का एगो दूसरा किनार पर आ गइलि। एगो छोटी मुकी दोकानि पर घामा में काठ का पटरा पर सजा के थोरे मिठाई धइलि रहे। मिठाई में जिलेबी। रँग एक दम लाल। तरहथी नियर छत्ता। रस में एक दम सराबोर। दोकानि पर माँछी नियर भिनभिनात कुछु अइसन आदमी ठाढ़ रहले जे मेलों में फटही भगई पहिरि के उबेने गोड़े आइल रहले आ चोटही जिलेबी आना-दू आना क कीनि के खात रहले। ऊ मिठाई जेकर रंग एकदम लाल लाल। आ खाये में एक दम सोन्हि होले हमरोके अपना ओरि खोंचे लागलि। जेवन विचार हमरा के मेला में जाये से रोकत रहले स छने भर में ऊ धुआँ नियर जहें से तहें छितरा गइलेस। सोचलों कि जेवन चीजु सोम्हाँ बा ओमें बहस क का जरूरति बा। अगर ई सभ आदमी बुरुबक आ गँवार बा त हमहूँ मुरुखे बनिके रहबि। हम एह आदिमी से अलगा रहि के ना जी सकीलें। जनता से लामा रहि के केवनों सुख ना पा सकीलें। अब आजु एही गँवार-भाइन का संगे रहि के कुछु सीखबि, दुनियाँ चाहे जेवन कहो।

फेरु ड्राइवर साहेब से कहलीं "हे भाई, एक मिनट खातिर गाड़ी रोकि दऽ।"

बउध-लीला

स्वामी विमलानन्द सरस्वती

(पिछला अंक से आगे)

स्वस्तिक बाभन डहरि पकड़ले,
कुश के बोझ माथ पर लिहले,
टहरत सगरे जंगल-झार,
घूमि-घामि के खेत बधार,
गुनत मथत जोहत कुछ थाहत,
कुश के आठ अवाँसी चाहत,
पलथी मारि ध्यान में बइठल
महापुरुस के दरसन पा के,
चट कुश दिहलन माथ नवा के,
सुघर बना के कुश के आसन
तपेसरी गौतम मुनि ज्ञानी—
बोधि-बिरिछतर दिहलन आसन ।
धरते झाँपी उठल बवंडर-
किसिम किसिम के विघिन भइल ।
टिसुना काम पाप के अगुवा
'मार' फउदि ले पहुँचि गइल ।
डेरवावे ललचावे खातिर-
भुलवावे फुसिलावे खातिर ।
बहुते बान चलल असुरन के,
आखिर थाकि मार-दल हारल-
हाथ जोरि के गिरल सरन में ।
महापुरुस का कमल चरन में !!

× × ×

नदी तीर पर सुघर शाल-वन,
कहीं उगलि कंचन फुलवारी ।
चंपा जूही चटक चमेली,
अलबेली बेइलि के क्यारी ।।
हरत अशोक शोक चित-चिंता,
कतहीं तेन पियार पकल बा,
अमलताश कचनार फुलाइल,
पनसेना-पलाश गदराइल -
धरती ऊपर चउक पुराइल !
धन्य मधुर बइसाख महीना
पाख अँजोर पुरनवासी शुभ
सुघर चांदनी उगलि टहाटह
सोलह कला साजि आज दिन
चांद देवता अति ही खुश हो-
अमिरित बरिसावत धरती पर

× × ×

जेकर जड़ ऊपर अकाश में—
डाढ़ि पुलुंगिया फइलल नीचे,
वेद विदित पत्ता अनमोल,
सघन सुखद छाया में जेकरा—
कायम बा भूगोल-खगोल ।
ओही ज्ञान-बिरिछ का नीचे,
बोधि-ज्ञान के जोति मिललि ।
जेकर मनवा बुड़की मरलसि,
गइल छीर-सागर का भीतर—
पियलसि ऊ अमिरित के घरिया
ओकरे रतन भेंटाइल ।।
आखिर पिपरे बोध करवलसि
गउतम जी के डहरि भेंटाइल !
भइल अँजोर हिया मंदिरवा—
लउकि गइल गहगह फुलवारी !!
सुरसति के दरबार विचित्तर
ओइसन चट लिखवइया,
सुघर कलमिया कलप बिरिछ के
सातो सागर बनलि दुवाति,
धरती अइसन कागद लमहर
तबहूँ ना उजियाइल
बोधि बिरिछ के कथा लिखे में-
उनको हाथ दुखाइल ।
आखिर कलमि धराइलि ।
बउध देव भगवान,
उनकर कथा अपार,
के करि सके बखान ?
कवि का करे कगदही भइया
ओकर कहाँ खेमाता ?

बसी बनल आदति का अपना,
गोदना गोदि रहल बा !
ऊ का जाने—
कवन धान के होरहा होई
कवन धान के पइया ?

× × ×

बोधि-ज्ञान के डहरि पकड़ले,
जिनिगी का पैंतीस बरिसवाँ;
गइलन गौतम नयी नगरिया—
जहाँ टँगाइलि किसिम-किसिम के
नयी नयी तसबीरि !
कूँची कलमि उठाके
समय भीति पर रंग चढ़ा के
ई तसवीरि उरेहेवाला
बउधदेव भगवान ।
जग के सरग बनवलन
दुख कलेस भागल धरती से
चुप्पे पोंछि दबा के ।
गउतम जी के माली पाके
चहकि उठलि फुलवारी ।
नन्दन बन उतरल धरती पर
किसिम किसिम के फूल रंगीला
सत्त अहिंसा दया धरम के
बेइलि चंपा चटक चमेली
जूही-कुंद-गुलाब
समय पाइ मुसकाइल !
बउध देव का मन मंदिर में
बंसी बाजलि सबद सुनाइल
"अरे चतुर अगुवा धरती के
तोरि उँघाई जागऽ !
हाय धरम के पहिया कब ले
धँसलि पाँक हवसा में !!
जोर लगा के ऊपर घींचऽ
अब एके डगरावऽ !!"
बोध-गया से
बोध--ग्यान के
सुवरन दिया तरहथी धइले
बउधदेव जी डेग बढ़वलन—
विद्या-ग्यान-धरम का नगरी
काशी जा के अलख जगवलन ।
पँजरे 'मिरिगदाव' में आपन
पहिला शंख बजवलन !!

× × ×

अइसन लाल उगल पुरुब में
दसो दिसा भइलि उजियार !
हँसल अकास ठठा के
बरिसल देव लोक से फूल !
पतझड़ भागल मुँह लुकववले
रितु बसंत लहराइल ।
सन सन सरकि सरिक के
कले कले कुछ गोड़ दबा के
पइठल चोर पवन फुलवरिया ।
चट से आँखि बचाके,
ललकि सुवास चोरा के,
निकलि गइल ऊ—
दूर देस में
गुन गुनात गउचत कुछ गावत
मउज मनावत
सभई के ललचावत !!
उरुवेला के पाँचो संगी
जिनका अँखिया छोपनी लागलि,
चरबी छवलसि अकिलि हेराइलि,
बरिसल जहाँ ग्यान के अमिरित
बोधि-विरिछ के ठंढी छँहियाँ ।
उनुको चित्त चोरवलसि ईहे
एकर लतिया छूटो कइसे ?
कसतूरी के गमक पाइ के
जइसे भइल मिरिगवा बेकल,
बास सुबास पवन से पाके,
तइसे पाँचों पागल भइलन
जोहे लगलनि घूमि टहरिके
अइसन गमकि कहाँ से आइल ?
उनुका के का पता रहे कि
उहे मिरिगवा अपनानामी
कसतूरी के खानि लुकवले
ना जनला से
छउकि रहल बा।
दसो-दिशा में

गाँव नगर में
महल अँटारी झोंपड़ियन में
कुटी खोह जंगल में
डंका बाजल बउधदेव के
गमकल कुछ उधियाइल चहुँपल
ग्यान सुवास पवित्तर।
ढिढुँकी टोवे लजाइल लइका,
अब पाँचो पछताये लगलनि,
हथवा मले लजाये लगईलनि,
कइसे छुटी हमन के करिखा,
मुहँवाँ कवन देखाइबि जा ?
कवन डहरि धइ जाइबि जा ?
बोधि ग्यान कब पाइब जा ?
समय पाइ पाँचों पंडित का
मन में इहे बूझाइल कि
जे आगे बढ़ि गउतम जी के
गुरु मानि अपनाईं,
उनका सरन समाईं,
बउध धरम के गमकि पवित्तर
देस-देस पहुँचाईं,
बोध-ग्यान के सुघर सोनहुला
घर-घर दिया जलाईं।
उहे सुजस-सुख पाई
सभके सुखी बनाई
सच्चा साधु कहाई
ओकर नावँ अमर हो जाई।

× × ×

मिरिगदाव में गइलन पाँचों
बउधदेव का चरन कमल में
झट से आपन माथ नववलनि
माफी मँगलनि भूल चूक के
विनती कइलन भिक्खु बने के।

× × ×

सत्त-अहिंसा-दया-शील का,
चउरस पीच सड़कि पर
पहिला चक्का घुमल धरम के
गज भर छाती भइल खुशी से
भारत माई हँसलि ठठा के !
धन्नि धरतिया ई भारत के
जहँवा जनम पाइ मानुस के
ग्यान सोहारी अगती पूवा—
भगवत सेवा काजू-किसमिस,
भजन भाव सजगरें अँगूर।
तरसे सभई खाये खातिर,
देवतो लोग सिहकते बाड़न !!
ग्यान नगर काशी में अवले
छवले रहलि अन्हरिया राति।
दिनवा फिरल आजुवे ओकर,
शरदरीतु के सुघर अँजोरिया—
अवसर पाइ टहाटह ऊगलि,
खिलखिलाति मुसकाति !!

× × ×

पाँचों माँथ मुड़वलनि
सत्त-अहिंसा-'चीवर' पवलन।
दया-शील 'संघाटी';
कनँवाँ में ई सुघर सिखावन—
"बहुमत जनता का सुख खातिर–
सदा भलाई खातिर;
धुनि के पक्की डहरि पकड़ले
भिक्खु भाइयो ! चलते रहिहऽ"
"तोहके लउकी दूइ डहरिया
दूनो में दुख भाई !
पहिल डहरिया भारी तप के,
दूसरि अनघा सुख-सिंगार के;
तीसरि डहरि बतावत बानी
ना अति दुख के
ना अति सुख के
समुझि-बूझि जे डेग बढ़ाई,
ऊहे विजय-धजा फहराई !"

× × ×

मगध देस का पूरुब पच्छिम
उत्तर-दक्खिन आस पास में।
दसो दिसा में देस-देस में !!
पाँच बरिस अधिका चालिस ले,
मानुस का देहियाँ में देवता–
शाक्यवंश के हंस नगीना–
कपिलवस्तु के सिंह सानियल
रहे दहाड़त घूमि-घूमि के !!
सबसे मजिगर बाति भइलि कि–
सहज रूप हो गइल ग्यान के !

संसकीरत के बन्हुआ पानी
जब लोगन का भावे ना,
कवनो बाति धरमपोथिन के—
तनिको समुझ में आवे ना !
बउध देव जी तुरते सभ के,
चिक्कनि डहरि देखवलनि,
झोंपड़ियन में पालल-पोसल,
सभकर सजल-सवाँरल —
चुचकारल-पुचकारल
गवँईं जनता के मुँहलगुवी
सदा दुलरुवी,
परम पवित्तर पाली भासा,
अपनवलनि चट आँखि मूँदि के !

× × ×

अपने दोस करम अवगुन से ;
बाभन धरम भइल कमजोर ।
ओकर अकिलि गइलि भरसाईं,
सूरज चमकल बउध-धरम के,
लउकल जग उजियार !
बिसुकलि गइया-धरम-ग्यान के
लयरू सुघर बिआइलि ।
लेहना सुरस पाइके अनघा
तुरते भइलि बहाल ।
बउध देव का निगरानी से—
भंडा भरलसि दूध-दही से !!

× × +

रोवाँ जुड़ाइल सभ जीवनि के
दुख चहेटि के दूर खेदाइल ।
घर-घर चैन मथनियाँ बाजलि
चीखल सभई समय पाइ के—
लयनू माखन भाई !!
राजा-रंक-फकीर अउलिया
सभई मानल बउध-धरम के,
धजा अहिंसा के फहराइल—
ऊँच हिमालय का पुलुंगी पर !!
जीति प्रेम के भइलि अन्त में !
सादा चालि-चलन से
दया सील समता से—
ओके एड़जमा दिहला से—
सभके मोहलन बउध देवजी
छोह दुलार देखा के !

× × +

सभके गूढ़ बात समझवलनि
झाँपी मोन्हा खोलि धरम के—
हीरा खोजि निकललनि ।
तुरत हँथउरी-छेनी लेके
अकिलि मसीन चला के—
काटि-छाँटि के माँजि-पोछि के—
नया चमक दिहलन हीरा के ।
सभई सुघर ताल-सुर-लय में
नया सनेस सुनल कि—
जग में लिहल जनम फिरि फिरि के
सभ दुखवा के जरि बा ।
उनका चित में बहुत दिनन ले,
दुख के ई कुस गड़ल रहे ।
एही से कुछ जोर लगा के
ओकर सोरि कबरलनि पहिले ।

× × ×

सुघर सोन्हाइल मन-मेटुकी में,
दुहलनि कामधेनु गइया के
बउधदेव अब नेह लगा के।
चारो चुँचियन चार धार से
चारो आरज-सत्त भेंटाइल ।
आरज-सत्त चारि गो का हऽ
आगे इहे बतावत बानीं ।
बउध-धरम के सेंही बतिया
बिलग-बिलग समुझावत बानीं ।
पहिला त दुखवे हऽ भाई ;
दूसर दुख के कारन ;
तीसर बान्ह अड़कवा दुख के ;
बान्ह अड़क के जतन-डहरिया चउथी !
जेतना दुख कलेश दुनियाँ में
सभकर जरि टिशुना बा ।
जहँवा ओकर नास भइल कि-
सोरिया कबरी दुख-कलेस के ।

× × ×

टिसुना-हथिनी बहुत जोर बलवाली
रहि रहि ई सनके ले बहुताँ;—
चढ़ल सनक कि सिक्कर तोरलसि
सूँढ़ लपेटि बहुत लोगन के—

तनिके में जमपुर पहुँचवलसि।
वहुते चतुर महाउत होई–
ऊहे वइठी एकरा पीठी
कसि के आँकुस देई !
अइसन लत्तर ह टिसुना के–
जेकरि सोरि पताले ठेकलि।
केतनो खोद-खाद कइला पर
जनम-जनम ले एकर अमर रहेला !
मउवति दुख के अंत करी ना
काहें कि टिसुना के वीया–
आइल-गइल देहि धइ भोगल–
जनम-मरन दुख हलकानी के
कब लटका ओरियाये देई ?
अइसन किला वनल टिसुना के
जेकरा भीतर फउदि भरल वा
लालच खीसि मोह-माया के
जामल महँतारी के लाल–
विरले अइसन वीर ववेला
आगे वढ़ि के जे एकरा के
हुरपेटल धकियावल–
कमर वान्हि के लड़ल समर में।
इहे लड़इया लड़ल कठिन वा,
केतने लाल जुझवलसि ई,
पहिल काम वा एकर जीतल !
कौन लँगोटा जँघिया पहिरवि
कइसे मुरुचा वान्हवि ?
धरवि कवन हथियार हाथ में
कौन जतन से जीतवि ?
मुसुक वान्हि पाजी टिसुना के
ओकर मोंछि उखारवि
आगे इहे वताइवि–
वउध धरम के गहगह लउकत–
आठ डँहगियन वाला–
कलप-विरिछ के
कुछ तसवीरि देखाइवि ?

(अधकपटे)

गजल

रात के वाद निहिचित बा, दिन होई !
हो सकेला कि उगतो किरिन होई !!

साथ देहल कठिन हऽ अन्हरिया में !
ऊ टहाटह अँजोरिया तऽ फिन होई !!

देखिलऽ सीत अरुइन के पत्तिन पर !
लोर का हऽ इ वतिया अकिन होई !!

गीत सुनला सुनवला से होला दरद !
बिनु दरद के तऽ जीअल कठिन होई !!

कौनो-कौनो तरह चल रहल सँसवा !
के बताई कि कव ई उरिन होई !!

पाण्डेय 'आशुतोष' (चंपारण)

हास्य कथा।

भँइसी के दूध

(ले०—चतुरी चाचा)

सात भँइस के सात चभक्का,
सोरह सेर घीव खाऊं रे।
कहां बाड़े तोर बाघ मामा,
एक पकड़ लड़ि जाउं रे॥

'भँइसी का दूध में काबू वा कि जेवन पाड़ा खाली बैलन का हुरपेटि दिहला पर खून मूते लागेलन ऊहो बाघ से लड़े के समाती राखत बाटे।' इहे सोचि के दूबर करज गुलाम काढ़ि के भँइस कीने के ठानि लिहलन। मेहरारू हाले के मूअल रहे। दूअर लइका के पोसे के रहे। लमहर चाकर परिवार रहे। सोचलन कि घीव बेंचा जाइल करी। माठा पानी से लरिका मोट अनजो मजे से खा लिहल करिहन। गोरस पताई से सभे बेकती के गुजर हो जाई। लरिका के नाँव भीम एह खातिर धइलन कि का जाने नाँवो के असर परत होखो। उनुकर माई-बाबू उनुकर नाँव 'दूबर' धइ दीहलन, तेवन जिनिगी भर केतनों धूरि लगलवन दूबर उधरेगवा ना भइलन। दूबर के कोसिस त अइसने रहे कि 'भीम' का महतारी केमूअल ना बुझाउ। घीव दूध के अलमगंज रहो। भीम का जेवने मन करो तेवने खात रहसु, आ देहि बनावसु। भँइसि ठीक-ठाक भइलि सवा तीन सौ में। तोड़ा के रुपया सहेजलन त कुल्ही आठ वीस आ पाँच गो भइल। बुटुखुरी रासे जोरववलन त पैंतीस कम दू सौ भइल। अवहीं आठ वीस अउरी रुपया रहित तब जा के त ममिला फरिआइत।

अबकी दूबर सोचि लेले रहलन कि असों गूर बेचि के सेठ फटकचन के लहना तगादा साफ कइ देइबि। करज गुलाम अदिमी इज्जती खातिर खाला। एगो त सूदि देत-देत नाकि में पानी हो गइल बाटे। उनका रुपया के सूदि हनुमानजी का पोंछि नीयर बढ़ते जाति बाटे। हर साल साफ कइल जाला, बाकिर साल का आखिर में हिसाब होला त जस के तस फेनू हो जाला। करजा देबे खातिर दूबर दसों नोंह जोरिके तेयार रहेलन बाकिर तबो उहरी घाटे जबे सेठ फटकचन से भेंट हो जाला माहुर नीयर बोले लागेलंन। हीतनात केहू दुआर पर आइल रही उनुकर तगदिहा चोंहपि जाई आ लागी माहुर उगिले। बेचारु दूबर चिरइता के घोंट पीके रहि जालन। बेचारु दूबर साहु से अपना समाती मोताबिक हाजिर रहेलन। हर तिहवार के दही दूध चोंहपावेलन, एकादशी के कचरस आ ऊखि चोहपावेलन, जबसे खेत में गदरा हो जाई गदरा चोंहपावेलन, ई दूबर के धरम हो जाला। दूबर कहबो करेलन—

'गुरु से कपट साहु से चोरी।
की हो निरधन की हो कोढ़ी॥'

एतना कइलो पर दूबर के साहु सोझ मुँहसे ना बोलसु एही से दूबर मन में ठानि लेले रहलन कि अब आगे करजा ना लेइबि। जेवन करजा हो गइल बाटे, ओहि के साग सातू खाइके कइसहूँ साफ करबि। बाकिर अचके में मेहरारु मरि गईल। कामों किरिया ना करितन त गाँव-घर गारी देइत। नाहियों नाहीं त दस गो भाई बाँभन खिय वही, के परल। देखते देखत नगद रुपया लागि गइल। बाजार में गइला पर नू आँखी के पट्टर खुलि जात बा। खाली कंइया नीयर रुपये के नू लउके के बाटे। केवनो सउदा थोरे लउके के बाटे।

एही कुल्हि भीरि में दूबर बूड़त उतरात रहलन कि मन आइल कि दूअर भीम के जियावे के बाटे। बिना गोर पताई के काम ना चली। भँइसियो डांगर लेके का होई। जबले थान चूंचीआ दूध ना रही तब ले साहुओ त नानू खाड़ा रही। एही से सवा तीन सौ में एगो खूब गभिना थलथलाइल भंइसि ठीक कइलन। विकास के नोटिस में सुनले रहलन कि सरकार जगहे जगह सोसाइटी खोले जाति बाटे जे गिरहत्तन के कम सूदि पर रुपया दीहल करी। आजु से ६ महीना पहिले, २० रुपया देके दूबर दूगो हिस्सा कीनि के मेंमर बनलनकि तनी एहू के घटी मोनाफा देखल जाउ। आजु ६ महीना हो गइल। सुपरवाइजर कीहाँ धउरत-धउरत एड़ी खियाइ, गइल। मीटिन में त सुपरवाइजर साहेब बतसफेनी नीयर मीठ चीकन चाकन अइसन बतिअवलन कि आज हिस्सा किनाई काल्हिये रुपया मिलि जाई। बाकिर अब गइला पर सोझ सलामों नइखन लेत। चिरौरी मिनती कइला पर ठोठिया के चढ़ि बइठत बाड़न कि का करी, हम घर से रुपया देई ? जब बंक में रुपया आई त लीहजा। दूबर सोचले रहलन कि कमसूदि पर रुपया लेके सेठ फटकचंद के हिसाब साफ कइ देइबि। बिना हरे फिटिकिरी करजा से जान बाची, बाकिर ईत घरो के आटा गील हो गइल। सोसाइटी के लेमर भइल जब सेठ फटकचन्द सुनलन त लालपीयर होखे लगलन। कहलन कि काहो दूबर तोहरो पाँखि जामे लागल। हमार करजा देबे के तोहरा रुपया नइखे आ हेइजा सोसाइटी के लेमर होखे खातिर तोहरा रुपया फरकति बाटे। दूबर दाँत चियारि के रहि गइलन आ मन में सोचलन कि जरूर एही रुपया से सेठ के करजा साफ कइ देइबि। बाकिर मन के गुनल मने में रहि गइल। भँइसि कीने खातिर अब कहाँ जासु उनुका आगे ई एगो लमहर चाकर सवाल रहे। बहुत सोचला बिचरला का बाद दूबर थेथर होके अपना मन में कहलन कि चाहे सेठ मरिहन भा गरिअइहन उनही का गोड़ हाथ पर गीरि के आपन काम निकासबि। साहु जे ह माई बाप हवे,। ओकरा गारी के अनमुख ना माने के चाहीं।

दूबर जब सेठ फटकन्द कीहें चोंहपलन आ आपन अरज गरज कहलन त पहिले त सेठ छान पगहा तुरवलन बाकिर बाद में कहलन कि पहिले सूदि के हिसाब कर। मूर ना देबऽ त कमसे कम रुपयवा के मइलिया त साले साल साफ कइल करऽ। पांच सौ रुपया के सालभर के पाई रुपया का हिसाब से कुल्ही पौने चौरानबे रुपया भइल। तू पुरान असामी हउव। उपरा के पौने चारि त छोड़ि देत बानि। ले आ के सोझ-सोझ नबे गो दे द,। फेनु आगे के करजा के बातचीत करऽ।'

'रोजा के गइलीं नमाज परल बखरा'।—बेचारु दूबर बड़ा सकेता परलन। बीस रुपया ओने सोसाइटी में फँसवलन। एने नब्बे रुपया सेठ के देसु। फेनु नगद भँइसि किनाई। केतनों हाथ गोड़ पटकलन बाकिर सेठ ना सुनलन। झख मारि के

दूबर घरे अइलन आ नव्वे गो रुपया जवे सेठ के दीहलन तवे उनुकर मुँह सोझ भइल। सेठ जी अगराइ के कहलन—'देखऽ दूबर, असामी जेहऽ लरिका हवे। एके पोसले के हवे। देवे लेवेसे अदिनो के सविता बने ले। अब तू अधो राति खानी अइबऽ त जेतना के काम होई हम नाहीं थोरे करबि। ले जा जेतना के काम होखो।'

चट देने तिजोरी में से तीन सौ रुपया निकासि के गनि दीहलन। दूबर कहते रहि गइलन कि अधिका का होई कामे भर के देईं बाकिर सेठ जी कहलन कि लेजा जवन लागी तवन लगइहऽ कुल्हि सोझ-सोझ आठ सौ रुपया हो गइल। जब दूबर चले लगलन, त बोला के सेठि जी कहलन कि तनी हेइजा हमरा बहिया पर दसखत कइले जा। तनी जल्दी में बानी सूचिता बइठि के लीखि लेइबि।'

दूबर घरे अइलन। जाके भँइसि ले अइलन। ले आके खूँटा पर बान्हि दिहलन। रुपया कहाँ से आ कइसे-कइसे आइल हवे केवनों बेकतीन से ना कहलन। कहवे का करसु। घर के मालिक मुख्तार ठहरलन दूबर। घर का अउरी बेकती के फीकिरि में डलला के कामे केवन बाटे। दूबर लाख से लीखि करसु तवो केहू साँस ढेकार नइखे लेवेवाला। टोला परोसा के लोग अचंभा में परल कि दूबर का मेहरारू के मुअते ना जाने कहाँ से माया टूटि परलि कि दुआर पर मथुरही बन्हाइ गइलि। दूबर का रामजी पाँच गो बेटा देले बाड़न। चारि गो के वियाह हो गइल बाटे। तीन गो पतोहि आ गइलि बाड़ीस। एगो के अबकी फागुन में गवना होई। एगो कुँवार भीम बाड़न। जेठका लरिका के लरिकनी सेयान भइली चाहत बाटे। धीय आ धमोइ के उपजत देरी ना लागे ले। दुई एक साल में ओकरो शादी करे के परी। बाकी दूनो पतोहुन का कोरा में एक-एक गो लरिका बाड़न स। घरसे लेके बाहर ले रामजी दूबर के बुझते बाड़न। खेत में नीक जजाति होखति बाटे। मुदई मुँह बिजुकावत बाड़न स। बाकिर ओसे का, रामजी का मुँह बिजुकावल ना चाहीं।

भँइसि आइलि। सब बेकती के सुतार हो गइल। खूँटा पर अइला का अठवें दिने भँइसि पाड़ा वियाइल। दूबर कउड़ा बइठि के आगी तापत रहलन। जब उनकर छोटका नाती भइँसि बिअइला के लोचना सुनवलस त दूबर मोंछि पर ताव देत उठलन आ कहलन—

'भइँसि बिआइल पाड़ा। त साहु भइल खाड़ा॥'

यानी अगर पाड़ी बिआइल रहिति त ओके जिआवे खातिर आधा दूध कई महीना ले पियावे के परित। बाकिर पाड़ा बिआइल त केवनों फिकिरि नइखे। खूब कचरि के दुहला के काम बाटे। पाड़ा राम मुइबे करिहन त का करीं। एह लोगन के अरदुआइ तं अपनहीं थोर हवे। दू एक महीना में केंचु अटि जालन आ फेनु केतनों दबा बीरो होखो घुलटि जइहन।

दूबर धार फोरलन। फेनुस दुहाइल। पाकल। कुल्ही लरिका फरिका एक जूनि खूबे छउकि-छउकि के खइलन। दूबरो खइलन। रतौन्ही के दवा हवे फेनुस। फेनुस खाते दूबर के रतौन्हो नीक हो गइल आँखि के पट्टर त खुलिये गइल, संगे-संगे दूबर के कुल्ही बेकति अँखफोरू हो गइलन। सबके आँखि खुलि गइल। बिना दूध के अब तीनों पतोहि के लरिका दुबराये लगलन।

छोटका नाती नधियाइल त थाने तर बोला के दूबर चोंका पिया दिहलन। भीम का गिलासि में थोरकी भर गाज आ दूध दरका के बड़की पतोहु के दही जमावे के दे

दिहलन। सबका लरिका बाटे त केवनों कामें आई। जेठकी का लरिकनिये बाटे तकों ऊहे नू ओकरा दीना राती के बाटे। ओकरा अब क दिन अपना घरे रहहीं के बाटे। एक द्व बरिस के मेहमान विआ। फेनु त आनका घरे बाछी चली जइहन। जइदिन बाछी खाइ खदरि लेसु। जेठकी पतोहि अपना लरिकनी के बोलाइ के छिपुली में बसिया भात आ दूव उभिलि दिहलसि। कोठिला का आड़ा बइठि के लरिकनी मजे से अरपि लिहलसि। ओके दूव भात खात मंभिला नाती देखलस त ऊ काहे के कल लेउ। ऊ भुइंया लोटियाये लागल। ओकरा के जब दियाइल तब जाके दूव अहरा पर बइठे पावल। विहान भइला जब दही महाये लागल त केहू का खराई मारे लागल। तनी सढ़िये ले के केहू खराई मेटावल। केहू का मनरसा जाये के कुजुनि होखे लागल। ऊ छिनुई दही सँगे लीटी खाके जाये खातिर अकुताये लगलन। लैनू खातिर कोरा के लरिका नधियाये लागल।

सभका मंहतारी रहे अपना-अपना हिस्सा परता पर सभे अपना-अपना लरिकन के दूध दही आ घीव खियावे। बेचारू भीम का त महतारी रहे ना। उनुके के देउ। ऊ आपन हाथ गोड़ चलावल शुरु कइलन आ सुनाये लागल कि आजु के दूध सगरे बिलरिये पीघललसि हवे, त आजु के लैनू सगरे मूसे चाटि घललन हाँ स। कबों-कबों त अइसनों भइल कि नादी तर तोपल दूध साढ़ी ओही तरे बाटे आ दूध गायब बाटे। मन कई कोठिला जाये लागल। कंहतरी फूटल नइखे जे दूध चू जाई। फंफाइलो के केवनो दागी नइखे। उभिललो के केवनों निसान लउकत नइखे। फेनु त दूध का भइल। जरूर केवनों भूत प्रेत आवत बाटे। दोसरा जगह दूव अंवटाये लागल। बाकिर परिकल भूत थोरे मानी। घर के मेहरारू टाही में लगली स। आ एक दिन भीम रेंड़ का फोफी से दूध सुरुकत पकड़ाई त गइलन। ओह दिन भउजाइन का गोड़ हाथ पर परलन त मोकदिमा ओही-जा खारिज हो गइल आगे ना वढ़े पावल।

भइंसि के दूध आ घीव देखि के दूवर हिसाव जोरत रहलन कि सालभर में भइंसि के दाम निकसि आई। ना होई त सेठि जी के रुपया दे दीहल जाई। ना त सूदि वढ़ल जात बाटे। एने एक दिन सुनाइल कि भइंसि टंगरी उठा दिहलस। से त खूब हरियर दिशात बाटे। आखिर एतना जल्दी काहें विसुकी। अनगुतहां दूध नीके देति बाटे बाकिर चरि के अइला पर सांझि खानि एको चिरुआ दूध नइखे देन। नेटुआ बाबा के दूध बताशा चढ़ावल गइल, तबो ना भराइल। आखिर भइंसि का का भइ गइल। केहू के नजरि त ना लागि गइलि। साधू बाबा के एक कंहतरी दही दे के नजरू झरवावल गइल तबो किछु ना उजियाइल। दूवर बड़ा संकेता परलन। कतों भंइसि के दूध धामिनि नइखे पी घालति। अगोरे खातिर जेठका बेटा बन में भइंसि चरावे खातिर ले गइल। चरवाहन से पता लागि गइल कि धामिन ना बड़की धामिन दूध घालति बाटे। बर के पतई के खदोना बनाइ के भीम चरवाहिये में दूध सुरुकि लेसु। घरे अइला पर डांट-डपट भइल। भीम मुँहे लागे ना देसु। भइंसि के दूध वढ़ि गइल। दूअर टूअर लरिका के का बोलसु। इरखा आई कतों भागि परा जाई त वह से बूड़ा होई।

एने पतोहु मनहीं मने गुरमुसास। 'अपना पुतरइला के नइखन बोलत हमनी का अपना लरिकन का मुंहें जाबि देले बानी जा। आ भीम सगरे दूध घीव सहोथि लेत बाड़न।'

देखते देखते सभे छूटि के लकड़ी खेले लागल। जे जहें पावे त तहें सहोथे लागे। अपना-अपना लरिकन कें आँखि बराइ के दे घाले। लरिका ना रहस त झांपी में चोरा घालल जा; चोरी-चोरी घीव बेंचहू लागल। आ एने दूवर हिसाब जोरसु कि एके

बेरि घीव बेंचला पर कुछ लजत भेंटाई। खुचर-खुचुर बेंचला से किछु ना होई। ए तरे दस रुपया हाथ में होई त केवनो कोन साफ होई।

गते-गते कलह के आगि सुनगे लागल। आ दूबर का अंगना में दुनों बेरा सुनाये लागल—

'तोरा पूत के खटिया निकसो।'
'तोरा पूत के माटी लागो।'
'कइसे सगरे दूध अपना लइका के पिया घललसि हवे।'
'पियवलीं हाँ त का? हम अपना भतार के कमाई।'
'त हमार भतार केवनों बइठल खाता?'

आ एक दिन सांझि खानी टोला भर का लोगन के बटोरि के जेठका लरिका का कहही के परल कि हमार बखरा बाँटि द। हमार गुजर तोहरा में ना होई। दूबर माथे हाथ दे दीहलन। आपन जेवन इज्जति दूबर तोपि ढांकि के चलावत रहलन ऊ अब पंच का आगा पियाजु का बोकला नीयर बितिक-बितिक फरियावे के परी। सेठ फठकचन्द के आठ सौ रुपया सुनि के कुल्ही लरिका कूदे लगलन। जेठका लरिका कहलसि—'हमनीं का जिनगी भर जांगर ठेंठाइ के मरि गइलीं जा। कुल्हि कमाई का भइल जे करजा लिहला जा।'

'करजा लेके केवनों हम रेवड़ी मिठाई थोरे खइले बानी। केवनो आपन बियाह-शादी थोरे कइले बानी। तोहने लोगन पर नू लगवले बानीं।'—दूबर कहलन।

पंच लोग दूबर से हिसाब मांगल त ऊ हिसाब कहां से देसु। केवनों लीखल पढ़ल थोरे रहें। केहूं से केहू का छका पांयच थोरे रहे कि हिसाब लिखल जाऊ। हाँ हिसाबो होई त सेठि का घरे। सेठि जी बोलावल गइलन। ऊ सरखत ले आके पंच लोगन का आगा पटकि दिहलन। 'के कहत बाटे कि आठ सौ रुपया बाटे। सोलह सौ के सरखत ह ई देखि लेईं सभे।'—सेठि जी कहलन। दूबर कबों पंच लोगन के कबो सेठि जी के आ कबों लरिकन के मुँह देखसु।

सेठ जी कहलन—'दूबर का घरे बांट बखरा आगे पीछे होई। हमार सोरह सौ रुपया ले ले बाड़न। साल भर के अठारह रुपया सैकड़ा का हिसाब से दू सौ अठासी रुपया सूदि भइल। सवा तीन सौ रुपया के भइंसि ले अइलन दूबर। साल भर मजे से दुहलन। अब ठठरा भइंसि सूदि मुँहे बइला ले जात बानी। पंच लोग सुनले रहीं अब हमार खाली सोरह सौ रुपया दूबर कीहें रहि जात बाटे।'

सेठि जी भँइसि बइला के चललन। दूबर दउरल घरे गइलन कि सालभर घीव बिटुराइल बाटे ओहू के बेचि के कुछ अउरी दे देईं। घरे जासु त घीव के बेंहुड़ा झांपी में से निकासि के बहरा फेकल रहे। बिलारि चाटति रहे।

दूबर बहरा अइलन आ कहलन—'अच्छा भइल सेठ जी भँइसि ले गइलन। बिना भँइसि का दूधे के लरिका नीके रहलन हां स। भँइसि का दूध से त दुबर ही के नौबत लागत बाटे।'

'हमनी का भँइसि के नइखे काम'—जेठका लरिका कहलसि।

भीम भँइसि का ओर टुकुर-टुकुर तिकवत रहलन। दूबरो का आंखि में से द ठोप लोर गिरि परल। का जाने लहू रहे कि पानी भगवान जानसु।

दूबर के चित्त आ भँइसी के दूध दुनों फाटि चलल रहे

गीत

लमहर सहरिया का ऊँची अँटरिया से डर लागे।
अमवाँ का बगिया में नन्हकी मड़इया सुघर लागे।
मोरा नन्हकी मड़इया सुघर लागे।
अपना अटरिया से उतरेली धनिया, रंगलेली रँगवा से ठोर।
चारू ओरि चितवेली तिरछी नजरिया, अँइठेली अँगुरी के पोर।
अपना झरोखवा से निरखे सजनवाँ, बाँधे पिरितिया के डोर।
अँखियाँ के बतिया करेजवे समाइल, चलली सिनेमवाँ के ओर।
हरिन अइसन अँखिया, गंगाजल पानी, गाँव के तिरिअवा सुनर लागे।
मोरा गाँव के तिरिअवा सुनर लागे।
छनियाँ पर लतरल झिंगुनी तरोइया, दुअरा बरधिया के जोड़।
ओरिया बँड़ेरिया गुटरूँ गूँ परेउवा, बचवा भइल अँखफोर।
काँख तर जाँत लेली सुपुली मउनियाँ, खोंस लेलीं अँचरा बटोर।
पाछा-पाछा ठुनुकत चलेला बलकवा, कहलो ना माने मुँहजोर।
बाबा के धिअरिया, पिअरिया पिया के, मँगिया के सेनुरा डगर लागे।
मोरा मँगिया के सेनुरा डगर लागे।
दिग मिग दिग मिग सरसों फुलाइल, धरती के बदलल चीर।
भादो के हहाइल नदिया लजइली, दुरबल भइल सरीर।
सँझिया के बिछुरल चकवा चकइया चरे चुरे नदिया के तीर।
गोरकी, सँवरकी पतरकी बिटिउआ के तीरे तीरे लागल बाटे भीर।
चनवा, सुरुजवा लिलार के टिकुलिया, पलभर ताकी त पहर लागे।
मोरा पल भर ताकी त पहर लागे।
सिंकिया जे चिरि चिरि बिनेली डलिअवा, कातिके में बाटे भइया दूज।
झारि झुरि केसिया मथवा बन्हवली रँगलेली सड़िया सबूज।
अबकी दसहरा में सइयाँ न अइले, बतिया ना बूझे अबूझ।
भइया जिआवेली, भइआ मुआवेली, गाइ गाइ गोधन पूज।
भँइसी पर बइठल अहिरा जे गावे, बिरहा के बोलिआ जहर लागे।
मोरा बिरहा के बोलिया जहर लागे।
गछिया का पाछा पाछा झँकले गोंसइयाँ, हथवा में सोनवा के थाल।
खाले खाले खेतवा के ऊँची रे डँरेरिया रहिला, भइल छछकाल।
सगवा जे खोंटि खोंटि भरेली खोंइछवा, झुकिझुकि अँचरा सम्हाल।
साँईं के सुरतिये बटोहिया पूछेला, धनि! रहिया बतावऽ तत्काल।
हम नाहीं जानी, जाइ गँइये में पूछले ही, इँहवा से भुँयें पावभर लागे।
मोरा गाँव के तिरिअवा सुघर लागे।
लमहर सहरिया के ऊँची अटरिया से डर लागे।
अँमवा का बगिया में नन्हकी मड़इया सुघर लागे।

बलदेव प्रसाद श्रीवास्तव (चंपारण)

सुरमा सगुन बिचारे ना

—रमेशचंद्र झा (चंपारण)

३

धरती सूत गइल, आसमान के आँख भरमे लागल बाकी जागत रहल चकमक तरेगन। रात पर रात बीत गइल बाकी चैना सिंह का आँख के सपना ना सूतल। कवनो-कवनो बात हरदम सामने आवत जात रहल। बेचू राय ओही खीमा का भीतर सूतल रहस जवना का भीतर चैन सिंह। लोही लागे के बेरा भइल त बेतिया का बाबू के आँख लाग गइल, आँख का लागल जइसे नदिया के उमड़ल पानी समुन्दर से मिल के ठंढा हो गइल। बेचू राय का कवनो सुनगुनी बुझाइल, अकचका के जाग उठलन!

बाबू साहब का आँख पर सपना चलत-फिरत रहे, भोर भइल त आँख खुलल, उठके बइठ गइले। उनका चेहरा पर लाली छिटकत रहे, भोर के लाली, जइसे सुरुज का उगले किरिन बिखरि जाले। खीमा का भीतर कवनो हलचल ना रहे। बगीचा के चिरई चुरुंग चहकत रहे। बाबू साहब, बेचू राय के अपना पास बुला के कहलन—"तुरकी का बारे में और कुछ बतावल जाय, बेंचू राय जी!" बेचू राय, बाबू चैना सिंह का ओर एक बेर भर आँख देख के बतवलन—"तुरकी दखल कइल आसान काम बा, दरबार का चारु ओर चाहरदीवारी बा, बावन दरवाजा आ सात गो गढ़ बा। चाहरदीवारी, दरवाजा आ गढ़ बड़ा मजबूती से बनावल गइल बा। हर गढ़ के फाटक लकड़ी के बनल बा, बाकी ऊपर से मोट लोहा के चदरा जड़ल बा। सातो गढ़ पर एक दफे हमला बोले के होई। एक साथ हमला कइला से भीखम खाँ के आदमी लोग कवनों राहे निकल के भागे जोग ना रह जाई आ एक जगह बिटोर क के जो सामना करे के चाही, ना कर सकी लोग, ताकत तहस-नहस हो जाई। हमनी का चालाकी से काम लेवे के बा। कवनो काम जे हड़बड़ा के कइल जाला, खराब हो जाला। का हम गलती कहत बानी?" ओझा जी मंतरी बेचू राय के बात सुनत रहस। आपन आँख मलत उठले आ कहले—"अपने कइसे गलती कहब भला, इहे सब करत-धरत देखत-सुनत लरिका से जवान आ जवान से जईफी का राह पर आ गइनी।"

बेचूराय फेर कहे लगले—"हम तुरकी के हीरे-हीर जानत बानी, जे हम अलगा बइठल-बइठल कह देब से केहू देखिओ के ना कही। एतने ना, आगा सुनल जाव—सातो गढ़ में एगो जे सबसे बड़का गढ़ बा ओह पर गोपी राय देवान के पहरा बा। गोपी राय देवान अपना ईमान का आन पर मर-मिटे वाला आदमी बा। गोपी राय के छोट भाई छेदी राय बहुत बहादुर आदमी, हरदम अपना भाई का साथे रहे वाला। हमला त सातो गढ़ पर एके साथ करे के बा, तबो गोपी राय वाला गढ़ पर जम के जमावड़ा होय के चाहीं। ओह गढ़ पर बड़ा जनबल के जरूरत पड़ी। पहिलके गढ़ पर दखल कइल जरूरी बा, ओकरा बाद कवनो फिकिर ना रही।"

बाबू चैना सिंह का सामने नाच उठल तुरकी। आँख पर जीत के सपना छा गइल। बाबू साहब पुकरलन—"बलिआ!" एगो मोटा-तगड़ा जवान सामने आ रहल। बलिआ बाबू साहेब का आगा आपन माथा झुका के कहलक—"सरकार……"

बलिआ। बाबू साहेब कें अपन खास आदमी, अखाड़ा के खेलल, नया उठान के सेसर जवान। बलिया के जवानी बाबू साहेब का साथ बीतल। बलिआ तेरुवार चलावे वाला, घुड़सवारी करे वाला, आ तोप चलावे वाला। रन पर डट जाय वाला, मौका

पड़ला पर कट जाय वाला, वहुत ईमानदार, वहुत वहादुर, आन के आदमी, शान के मरद। वलिआ के खानदान वेतिया राज का जागीर पर जियेवाला। एतने ना, वेतिया राज दरवार का लोग का मालूम वा कि वलिआ निपढ़ आदमी हो के जे राय देवेला ओह राय के जाइज मानल जाला। अपना वावू साहेव खातिर जे भी राय देला, खूव सूझ-बूझ से देवेला। गाढ़ से गाढ़ मौका अइला पर वलिआ वावू चैन सिंह खातिर आपन जान जोखिम का जूआ पर परस देला। एक वेर वाघ के शिकार में जव एगो वाघ वावू साहेव पर टूट गइल त आगा वढ़के वलिआ ओके अपना हाथ पर थाम लेलक। लड़त-भिड़त लोहू-लेहुआन हो गइल वाकी वाघ राम के पछार के दम लेलक। सचकी कहल जाय त तवे से वलिआ के धाक राज दरवार पर जम गइल। वलिआ का माथा पर आदर के पगड़ी वान्हल गइल, इनाम मिलल, वखसीस देहल गइल। तवे से वलिआ एगो मामूली आदमी होके, आदमी वन गइल।

हँ, त वलिआ वावू साहेव का सामने खड़ा भइल रहे। ओकरा वगल में तरुवार लटकत रहे, आँख से लहू के लाली छलकत रहे। वावू साहेव एक वेर वलिआ का ओर देख के कहलन—

"घोड़ा के दाना दिआ गइल?"

"जी सरकार दिआ रहल वा।"

"दाना का वाद खरहरा मालिस भी होय के चाही।"

"छोट-छोट वात के फिकिर अपने मत कइल जाव, अपने का किरपा से सव ठीक वा······"

"आज दिन रात एतही वीती। एसे कि हमला वोले का पहिले अपना दल-वल के पूरा तइयार कर लेवे के वा।"

"सरकार···।"

दिन वीतल, रात आइल। वलिआ अपना सामने. अपना देख-रेख में तरुआर भाला पर सान चढ़वावे लागल। माल-असवाव रसद ठीक कइल गइल। जगिरहा-सिसवा के वहुत खलीफा लोग वावू साहेव के साथ देवे खातिर जुमल। जव सव सिपाही लोग खा-पी के सूत गइल, त वलिआ तोप के चरखी-वाल साफ करे लागल। तोप के सरजाम ठीक-ठाक कइला का वाद वलिआ खीमा का आस-पास घूम के पहरा वजावे लागल।

वाबू साहेव अपना खीमा का भीतर बेचू राय से बतियात रहस। बातचीत चलत बहुत रात बीत गइल बलिआ का ई बात नीमन ना लागल। पहिले बेर जब बलिआ बेचूराय के देखलक ओकरा कुछ अन्देसा हो गइल रहे आ बाद में ओकर अन्देसा शक में बदल गइल। बलिआ मने-मने कहलक—बेचू राय के ऊपर-नीचा के बतकही हमरा पसन नइखे परत। अइसन आदमी से हरदम खतरे बुझाला। बलिआ बेर-बेर चाहे कि अपना मन के वात बाबूसाहब से पसगैबत में बतिआ के खोल दे, बाकी ओकरा मौका ना मिलल। आज वलिआ एह वात पर अड़ गइल कि अपना मन के बात खोल देला में भलाई वा बाकी सोचलक कि बाबू साहेब ना जाने का सोचे लागस। लमहर आदमी के बात बा। एह से बलिआ कह ना सकल अपना मन के बात। मन के मन का भितरे रह गइल। चार पहर के रात, जइसे आठ पहर हो गइल, कटले ना कटे।

(अधकपटे)

भोजपुर के प्रथम राजा भोज

रासबिहारी राय शर्मा (डुमराँव, शाहाबाद)

भोजपुर के पुराना नाम मल्ल अउर करुष देश रहे। ई प्रदेश जंगल-झाड़ से घिराइल रहे। तमाम जंगले जंगल का भइला से इहाँ समय-समय पर बरखा अउर मौसिम होत रहे। एकर नाम भोजपुर कैसे भइल अउर एइजा के भाषा भोजपुरी कैसे कहाइल अउर कब कहाइल एकरो कथा कुछ जाने के चाहीं। सबसे प्रसिद्ध कथा इहे ह कि इहां के बसावेवाला राजा भोज रहलन। ई राजा परमारवंशी धारा नगरी के अधिपति रहलन। राजा भोज के कनौज के गद्दी पर बैठते कनौज के भाग चमकि गइल। राजा भोज सबसे पहिले कनौज के पराधीनता का बेड़ी से मुक्त कइलन। तब दिग्विजय करे खातिर पछिम का ओर आपन पाँव बढ़वलन। व्यासनदी पार कइलन। चेनाब झेलम, सतलज रावी के पार कइलन। कसमीर के जीति के वहाँ आपन आधिपत्य जमवलन। मुल्तान से मालगुजारी वसूल कइलन। ओ तरफ आपन दबदबा जमा के बुन्देलखंड, राजपुताना अउर नर्मदा तक जमींन रौंद डललन। इहाँ से लौटि के पूरब का ओर आपन पाँव बढ़वलन। पूरब बढ़त प्रयाग काशी होत बक्सर सहसराम अउर पटना तक पहुँच गइलन। पटना में कुछ रोकथाम भइल बाकी सब लोगन का मुह की

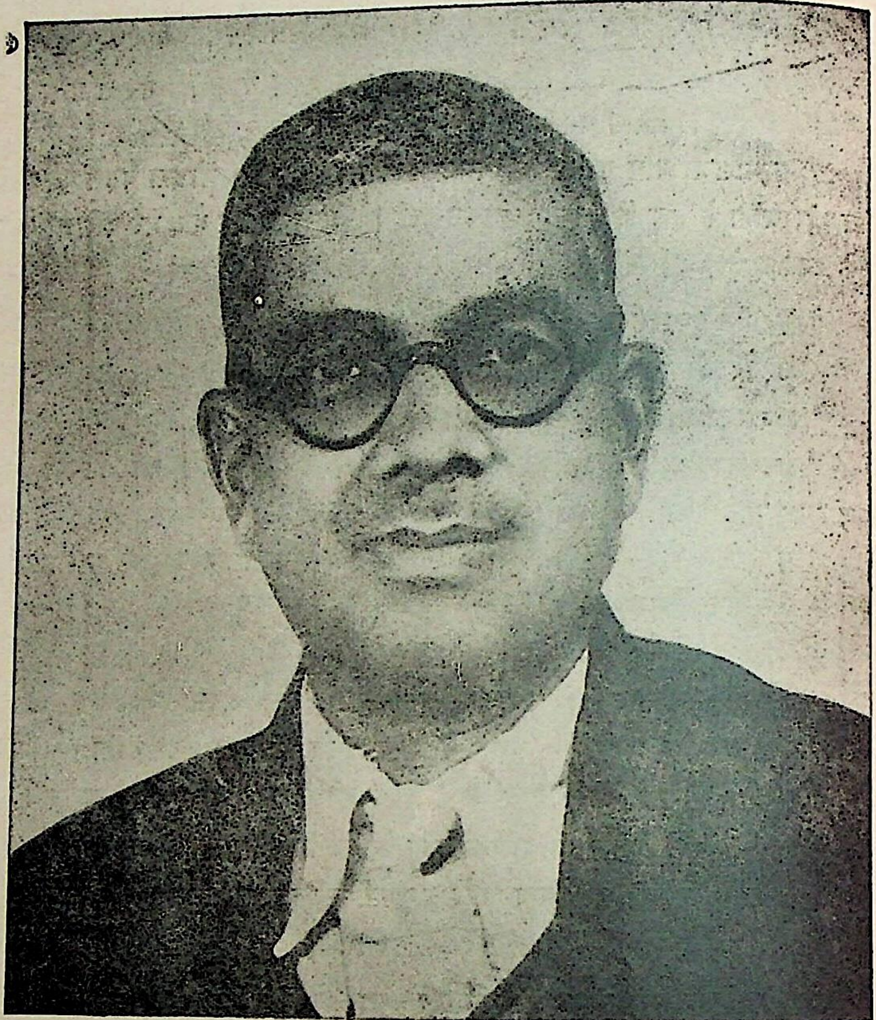

लेखक

खाय के पड़ल। केहू उनका प्रताप के सामने न ठहरल। मगध के पाल राजा के एक दम छक्का छुट गइल। पटना में रहि के कुछ दिन राज कइलीं। पटना में धाक जमा के उहां का आरा अउर बक्सर के बीच एगो बड़ाभारी किला गंगाजी का किनारा बनववलीं। आपन कर्मचारी करग्राही नियत करके उहाँ का उज्जैन लौट गइलीं। किला के नाम भोजगढ़ परल। फिर ऊ स्थान भोजपुर कहाइल। भोज=कर। पुर=स्थान। भोजपुर पीछे गाँव हो गइल। पाछे गाँव से परगना इलाका, करकेन्द्र हो गइल। भोजपुर के प्रसिद्धि ओही समय से बढ़ल से आजु तक बढ़त चलि जात बा।

ई प्रदेश में राजा भोज का आवे के पहिले मगध में पालवंशी राजा भोज के राज रहे। ऊ लोग बहुत निर्बल हो चलल रहे। मल्लदेश में हैहयवंशी राजा लोग राज करत रहे। करुष में भर अउर चेरो खरवार के आधिपत्य रहे। मगध के पाल, मल्ल के हैहय अउर करुष के चेरो खरवार के वंश में करिके राजाभोज उज्जैन लौट गइलन। इहां उनकर किला अभी भोजपुर में बा। मल्ल के शासक हैहय लोग का किला मसाढ़ में अभी विराजमान बा। ई सब किला भग्नावशेष खँड़हर के रूप में विराजमान बा।

राजाभोज के नाम से ई प्रदेश भोजपुर कहाइल। इहाँ के बोली भोजपुरी भइल। भोजपुरी के विस्तार बहुत दूर तक होगइल बा। काशिका, मल्लिका अउर कारुषी तीनू बोली के अन्तर्भाव एही भोजपुर में भ गइल बा। अर्द्ध मागधी अउर मागधी अपभ्रंस के प्रतिनिधि के रूप में ई तमाम आरा, छपरा, काशी, आजमगढ़, बस्ती, गोरखपुर, बलिया गाजीपुर, मिर्जापुर, पलामू में इहे बोली बोलल जात बा। भोजपुरी बोली भृगुक्षेत्री बोली एकदम एके बोली बा। भृगुक्षेत्र बलिया के नाम ह। भोजपुर के खाँटी बोली भृगुक्षेत्र में अउर भोजपुर में बोलल जाला। विश्वामित्र के आश्रम, दरदर क्षेत्र, भृगुक्षेत्र, राजा गाधि के राजधानी (गाजीपुर च्यवनाश्रम चौसा, परशुरामगढ़ जमानिया आदि भोजपुरी के गढ़ ह। भोजपुरी के क्षेत्र में काशी शिवजी का त्रिशूल पर बिराज मान बा।

चलऽ चलऽ चलऽ भाई चलऽ विश्वनाथ पुरी।
शिवजी के मन्दिर के चलऽ देखि आईं जा।

भोजपुर के प्रथम राजा भोज बहुत बड़ विद्वान अउर न्यायी रहलन। अरबी जाति के ओह समय के जात्री लिखले बा कि भोज के पास बहुत बड़ी सेना है। उसके जैसे चुस्त घुड़सवार अन्य किसी देशी नरेश के पास नहीं हैं। अरबों से उसे शत्रुता है। इसलाम का वह कट्टर विरोधी है। उसका राज्य बहुत विशाल है। उसके पास अतुल धन राशि है। असंख्य अश्व और ऊँट हैं। उसके राज्य में चाँदी के सिक्के हैं। उसके राज्य में खानें भी हैं। भारत का वह भाग लुटेरों से जितना सुरक्षित है उतना अन्य भाग नहीं।

अइसन राजा भोज रहलन। उनका नाम पर ई प्रदेश भइल। उन्हीं के नाम पर भोजपुरी भाषा भइल। ऊ राजा भोज बड़ा दानी, बड़ा विद्वान अउर बड़ा वीर भइलन। ऊ ना रहितन त न भोजपुर होइत और ना भोजपुरी के नाम रहित। पचपन बरिस का अवस्था में ऊ स्वर्ग लोक सिधरलन। लिखलबा—

पञ्चाशत् पञ्चवर्षाणि सप्तमास दिनत्रयं।
भोज राजेन भोक्तव्यं सगौड़दक्षिणापथः॥
पचपम बरीस, सात महीना तीन दिन राजा
भोज उज्जैन में राज करके स्वर्ग चलि गइलें॥

जन-कवि शिवनन्दन

—महेश्वर प्रसाद (भरौली, शाहाबाद)

शाहाबाद जिले में एक छोटा-सा गाँव है मौजमपुर। मौजमपुर सिनहा का समीपवर्ती गाँव है और आरा से सात मील की दूरी पर गंगा के पावन तट पर अवस्थित है। मौजमपुर में विशेषतः राजपूतों का निवास है। आज से लगभग चालीस वर्ष पूर्व एक कुलीन राजपूत दम्पति के घर शिवनन्दन का जन्म हुआ था। शिवनन्दन के माता-पिता बिलकुल साधारण गृहस्थ थे। लेकिन बालक शिवनन्दन के लिए किसी वस्तु की कमी नहीं थी। माता-पिता का वात्सल्य शिवनन्दन को अहर्निश प्राप्त था। अतः शिवनन्दन का शैशव बहुत ही लाड़-प्यार में बीता था।

कुछ दिनों के अनन्तर शिवनन्दन की माता चल बसीं। पिता ने उन्हें विद्या की ओर प्रवृत्त करना चाहा। मगर दिहाती निर्धन बालक के भाग्य में विद्या थी ही नहीं। सुतरां पिता चाहकर भी शिवनन्दन को नहीं पढ़ा सके! अन्ततः हुआ वही जो ऐसों के साथ होता है। शिवनन्द अपढ़ के अपढ़ ही रहे। तिस पर मिल गई ग्रामीण युवकों की सोहबत। आवारागर्दी का सारा सामान जुट गया। दिन भर घूमने के सिवा अब उनके लिए दूसरा कोई कार्य नहीं रह गया। गृहस्थी के काम-काज से शिवनन्दन का कोई मतलब नहीं रह गया। ऐसे युवक को बाँधने के लिए पिता के सामने सिर्फ एक ही रास्ता था। वह था विवाह। विवाह भी सम्पन्न हो गया और शिवनन्दन विवाहित जीवन व्यतीत करने लगे।

सब कुछ हो लेने पर भी शिवनन्दन के अन्दर जो विभूति थी, वह दबी नहीं। वह ईश्वर-प्रदत्त प्रतिभा उनकी उम्र के साथ ही बढ़ने लगी। दिहात के कोमल वातावरण ने उनकी सोई हुई कवित्व-शक्ति को जाग्रत कर दिया। शिवनन्दन अपनी मातृभाषा 'भोजपुरी' में ही कविता करने लगे। वह कविता करते थे चाव से और गा-गा कर रिझाते थे लोगों को। कवि और गायक दोनों रूपो में उनका दर्शन होता है। कविता गाने का उनका एक प्रकार का नियम था। वह था कि वह एक हाथ में लोटा लेते थे और दूसरे हाथ में डंडा। बस, लोटे और डंडे पर ही ताल दे-दे कर वह कविता गाने लगते थे। कहते हैं, महात्मा कबीरदासजीभी अपनी डफली लेकर 'साखी' 'शब्दी' और 'दोहरे' गाया करते थे। डफली के ताल-स्वर में जो शब्द बैठ जाते थे, ठीक थे, वरना नहीं बैठने वाले शब्दों के लिए कोई चिन्ता भी नहीं थी। इधर शिवनन्दन के लोटे और डंडे में वह शक्ति भरी थी, जो किसी शब्द को अपने अनुरूप ढाल लेती थी। उनका वह लोटा और डंडा उनके साथ शाश्वत रहता था। उसके बल पर वह बड़े-बड़े जंग मारा करते थे। अपना लोटा और डंडा लेकर वह हजारो की भीड़ में बैठ जाते थे और ललकार कर कविता गाने लगते थे—बिलकुल नूतन कविता, नई कविता। उनकी यह विशेषता थी कि वह पहले से कविता बनाकर नहीं रखते थे। जो कुछ होता था वह चट बना देते थे। अतः उनके श्रोता नित्य नवीन कविता सुनते थे।

लेकिन हाँ, आगे की कविता बनाने के लिए शिवनन्दन कुछ थोड़ा-सा समय अवश्य ले लेते थे। उसे कोई लख नहीं पाता था अपितु सभी लोग शिवनन्दन के उस लिए हुए

समय में मग्न हो जाते थे। लोगों को फँसाने के लिए अथवा हँसाने के लिए शिवनन्दन अपनी कविताओं में 'दादा' शब्द फेंक दिया करते थे। जब तक लोग 'अरे दादा !' दादा हो दादा' के चक्रमें में पड़े रहते थे तब तक शिवनन्दन मन ही मन आगे की कविता तैयार कर लेते थे। शायद व्यासने भी गणेश को दृष्टि कूट के फेर में डालकर 'महाभारत' की रचना की थी। वस्तुतः शिवनन्दन को कविता रचने में प्रयास नहीं करना पड़ता था। उनके हृदय-से कविता स्वतः स्वयमेव फूट पड़ती थी। तारीफ तो यह थी कि उन्हें लिपिबद्ध करने के लिए उनके पास कागज व पेंसिल भी नहीं होती थी। जिस कविताको शिवनन्दन बना जाते थे वह स्वप्नमें भी उन्हें भूलती न थी। उनकी विलक्षण कवित्व-शक्ति तथा अमोघ स्मरण-शक्तिको देखकर दंग रह जाना पड़ता था। एक बार प्रो० 'केसरी' उन्हें कानपुर या लखनऊ कवि-सम्मेलन में लिए जा रहे थे। रास्ते में केसरीजी ने कोई अच्छी-सी कविता सुननी चाही और फलतः शिवनन्दन ने अपनी सारी कृतियाँ उन्हें सुना दीं। उधर सम्मेलन में तो जन-कवि शिवनन्दन के गले में स्वयं सभापति स्व० पं० अयोध्या सिंह उपाध्यायने अपने हाथों से माला पहनायी थी।

शिवनन्दन का रंग साँवला था 'रूप कउआके छवि'। दुबला-पतला शरीर, ऐसा शरीर कि एक-एक हड्डी गिन लीजिए। उनके साथ में दो कोपीन रहते थे और एक मैला-फटा कुरता, जिसे पहन लेने पर उनका एक अजीब ढाँचा तैयार हो जाता था। उनकी लड़खड़ाती हुई मादक तस्वीर आज भी आँखों के सामने बरबस आ जाती है। साहित्य की भाषा में तो हम यही कहेंगे कि अष्टावक्र, चाणक्य और जायसी के पश्चात् शिवनन्दन का अपरूप रूप इस बीसवीं शतीमें भी आ गया था। अपनी कुरूपता के ही कारण शिवनन्दन एक बार अपमानित किए गए थे। शाहपुर (शाहाबाद) के दारोगा के यहाँ एक नाटक-मण्डली का निमन्त्रण आयोजित था। उस मण्डलीमें शिवनन्दन भी शामिल थे। खिलाने के समय लोगोंने उन्हें नहीं पहचाना। औरों से निम्नतर समझकर उन्हें दूर बैठा दिया। आलू और गोभी की तरकारी बनी थी। लेकिन भोजकी बात थी। सो गोभी के छिलके भी, पत्ते भी उसमें काफी रह गए। खिलाने वाले ने शिवनन्दन के स्वरूप को देखकर चुन चुनकर गोभीके पत्ते ही उनके पत्तलमें डाल दिए। अस्तु शिवनन्दन ने उस समय भोजन तो किसी प्रकार कर लिया; मगर जब नाटक प्रारम्भ हुआ तो उन्होंने दारोगाकी खबर ली। उस दिनका भोज-वर्णन वह करने लगे जिसकी एक अर्द्धाली भर मुझे याद रह गई है—'आलू में परल बेछिलले कोबी'।

शिवनन्दन को पैसे का कोई खास लोभ नहीं था। मगर कीर्तिसे वह उदासीन न थे। आवश्यकताएँ कम थीं। जीवन सादा था। घर-बारकी तनिक भी परवा नहीं थी। जहाँ रहते थे, मस्त रहते थे। एकान्त-प्रिय वह अधिक थे। दुनिया से दूर हटकर पागलों की तरह गाछ-वृक्ष अथवा काँट-कुश पर वह अधिक वास करते थे। जिस किसी समारोह में वह जाते थे, वहाँ गुम हो जाते थे। समयके पहले उन्हें पा जाना मुश्किल ही नहीं, असम्भवप्राय था। तब तक वह छिपकर बीहड़से बीहड़ स्थानमें रहते थे और वहींसे अपने खोजने वालों की वह लीला देखा करते थे। पता नहीं इसमें उनका क्या रहस्य था। जीवन की अव्यवस्थाएँ और वातावरणकी असुविधाएँ तो इतनी रहीं कि उनकी एक पुस्तिका तक प्रकाशमें नहीं आ सकी। समस्त रचनाएँ योंही आकाशमें शब्द रूपसे गूँजती रह गईं। हो सका तो कालेज अथवा स्कूल के किसी छात्र ने एक-आध सरस गीत नोट कर लिया किम्बहुना नाच-बाजेवालोंने आग्रह पूर्वक शिवनन्दनसे

पूछकर कोई रोचक पद कण्ठस्थ कर लिया। विज्ञापनके बाजारमें न शिवनन्दनने ही अपनेको बेंचा न कोई सहृदय उन्हें ग्राहक रूपसे खरीद ही सका।

शिवनन्दन उतने पढ़े-लिखे तो नहीं थे, किन्तु कविता विद्वानों की तरह करते थे। शैली अपूर्व थी और सूझ अनोखी। तुकान्त बिलकुल दुरुस्त और शब्द अत्यन्त कोमल। भाषा परिमार्जित और भाव परमोज्वल होते थे। यह उनकी दैवी देन थी। किसी विषय पर वह कविता करते थे और कलाकारकी तरह करते थे। उनकी दृष्टि पैनी थी वह सर्वत्र प्रवेश कर जाती थी। सूक्ष्म-निरीक्षण और सूक्ष्म वर्णनके वह अत्यधिक प्रेमी थे। उनकी कविताकी शैली Lyrical थी। प्रधान रूप से वह गीत ही लिखा करते, नहीं-नहीं, बनाया करते थे। गाँव-जवार या देश-दुनियामें कोई भी नई घटना घटती थी कि शिवनन्दन चट उसे गीतका रूप दे देते थे। इस प्रकार अल्प समयमें ही कोई भी घटना शिवनन्दन की बाणी पर चढ़ कर लोक-प्रिय बन जाती थी। १९४२ की फरवरीमें बड़े जोरोंका ओला समस्त शाहाबाद जिलेमें गंगाके किनारेके गाँवों पर पड़ा था। उससे पेड़-पौधों, अन्न और छप्पर तथा अनेक प्रकारके जीवोंकी काफी बरबादी हुई थी। समाचार पत्रोंमें तो इसकी चर्चा पीछे से हुई थी मगर सबसे पहले जो आवाज़ कानोंमें आई वह शिवनन्दन की आवाज़ थी। मुझे आश्चर्य हुआ कि इतना ठीक-ठीक वर्णन, हर स्थानका वास्तविक चित्र किस प्रकार कविने देखा और समझा। यदि मैं भूल नहीं करता तो यही कहूँगा कि पत्थल पड़नेके दूसरे ही दिन लोग गाने लगे।

ओनइससऽ बेआलिस साल, अचकेमें आइल काल; हर हर दरसन दे गइले पथलवा।
तीसी कहे कवना खीसी, हमराके देले पीसी, रहरीके बहरी निकलले पथलवा।
नरियाके कइले चूर, खपड़ाके कइले धूर, मँगरा के लँगरा बनवले पथलवा।

कुछ इसी प्रकारकी घटना उस समय घटी थी जब कि पंजाबमेल (सीक्स डाउन) बिहिआ स्टेशनसे आगे जाकर उलट गई थी। यही गाड़ी एक बार इससे पूर्व बिहटामें भी जाकर गिरी थी। रेलवेके इतिहासमें ये दोनों काण्ड सहसा भुलाये नहीं जा सकते। इतना नरसंहार शायद ही कभी रेलवेके इतिहासमें हुआ हो। दूसरी घटना देखकर शिवनन्दन को बर्दाश्त नहीं हुआ और उन्होंने पंजाब मेल की अभ्यर्थना की।

पंजाब मेल चलली बँगाला—कि गाड़ी गिरल।
बिहिआ से पूरब भर, कउड़िया के पुल पर:—
लाइन में चाका धसि जाला-कि गाड़ी गिरल।
आगा से ड्राइवर चिचिआला-कि गाड़ी गिरल।

'चिचिआला' 'भोजपुरी' का अपना खास शब्द है, जो 'चिल्लाहट' का द्योतक है। मुसाफिरोंको सावधान करनेके लिए उक्त शब्द ड्राइवरके मुखसे निनादित हो रहा है। किसीको पुकारने लिए और दूरसे ध्यान अकर्षित करनेके लिए भोजपुरी भाषा-भाषी 'चिचिआया' करते हैं। असलमें शिवनन्दनका दिहाती घूमता-फिरता जीवन था और दिहाती भाषाकी जानकारी थी। नशासे वह तटस्थ नहीं थे और खाने पीनेकी कोई कमी नहीं थी। विशेषतः उन्हें नाचवाले का नाटक-मण्डली वाले रखा करते थे। फिर भी जहाँ तनिक-सी आत्म-सम्मान पर चोट लगती थी कि शिवनन्दन वहाँ से चलते बनते थे। भरसक शिवनन्दन किसी पर बोझ नहीं बनना चाहते थे। एक समयकी बात है कि वह कहींसे गाकर आ रहे थे। जेठकी दुपहरी थी। भूख और प्यास से उनका

जी बेचैन हो रहा था। खाने के लिए उनके पास सत्तू था, मगर थाली नहीं थी। वह थाली लेनेके लिए समीपके एक गाँवमें पधारे। एक सज्जनसे उन्होंने थाली माँगी। वह सज्जन यह कह कर भीतर गए कि शीघ्र ही वह थाली ले आ रहे हैं। उनका नाम था बसरोपन। उनके परिवारमें जितने भी सदस्य थे सभी एक-एक से बढ़कर थे। अतः भीतर उनलोगोंने सम्भवतः, यही तै किया कि वे परस्पर लड़ाई कर दें ताकि शिवनन्दनको थाली नहीं देनी पड़े। शिवनन्दन यह सब मामला क्या जानते? वह तो भूखसे व्याकुल थाली का इन्तजार कर रहे थे। इधर हुई लड़ाई। थालीका प्रतीक्षक लड़ाईका दुःखद दृश्य देखकर अवाक रह गया और गाता हुआ भाग चला—

धनि बसरोपनके महिमा बा भारी।
थाली माँगे गइलीं त कइले मारा मारी;
डरके मारे फानीं कियारीके कियारी। धनि०।

इसका मतलब कदापि यह नहीं कि शिवनन्दन डरनेवाले कवि थे। डर-भय तो उनको छू तक नहीं गया था। मगर वह मुर्दे की मौत नहीं मरना चाहते थे। कलकत्ते का प्रसिद्ध, बंब काण्ड देख कर सभी लोग वहाँ से बेतहाश भागे जा रहे थे और शिवनन्दन वहाँ का वीभत्स काण्ड देखने के लिए मौत के मुँह में जा रहे थे। आरा स्टेशन में उन्होंने हबड़े का टिकट कटाया। संयोग वश वहीं पर एक मुसलमान भी खड़ा था तथा वह भी वहीं जाने वाला था। अतः टिकट कटाने के लिए उसने शिवनन्दन को एक दस रुपए का जाली नोट दे दिया। शिवनन्दन दयालु स्वभाव के थे। उन्होंने उसके हाथ से नोट थाम लिया और ज्योंही खिड़की के भीतर नोट लेकर उन्होंने हाथ बढ़ाया कि—

.. .., भीतरे से गाटा पकड़ाता, विधाता सुनलऽ।
उड़िया वो नैपाली, छोड़िके भागे भुजाली; धोबी छोड़े गदहा, डोम काता, विधाता सुनलऽ

विशेषता है कि 'गदहा' और 'काता' दोनों 'छोड़े'। इसमें चमत्कार दोनों वस्तुओं के अत्यन्त विजातीय होने के कारण है। अँगरेज उपन्यासकार Dickens को ऐसे प्रयोग बहुत ही अच्छे लगते थे। जैसे—This drew tears from her eyes and handker-cheif from her pockets.' उपदेशात्मक कविता भी शिवनन्दन खूब लिखते थे। वह चाहते थे कि देश का वास्तविक सुधार हो और लोक का कल्याण हो। समाज में घुसी हुई कुरीतियों की बड़ी आलोचना किया करते थे। छोटे-छोटे बच्चों को बीड़ी पीते शिवनन्दन ने देखा तो उनकी आत्मा क्षुब्ध हो उठी। उन्होंने डंके की चोट बीड़ी की चुनौती दी—

भारत के कइलू तूँ उजार, ए मोर बीड़ी दुश्मन!
कहे शिवनन्दन कवि, गोरकउआकें छवि;
मौजमपुर गाँव, डाक सिनहा बजार, ए मोर बीड़ी दुश्मन!

जीवन के अन्तिम पक्ष में शिवनन्दन ने कमाने-खाने के लिए एक गिरोह की व्यवस्था की थी। पर सफल न हो सके। पिता का तब तक देहान्त हो चुका था। रह गई थी उनकी भार्या और उनका एक छोटा-सा शिशु। उन्हीं लोगों का भरण-पोषण करना एक मात्र उनका कार्य रह गया था। वह कहीं से भी कुछ कमाकर लाते, उसे अपनी पत्नी और बच्चे के लिए घर छोड़ जाते। घर पर रहने का मौका उन्हें कम मिलता था। उनका जीवन कवितामय बन गया था। बात-बात में वह कविता बोलते थे। साधारण से साधारण बात में भी उनके मुख से कविता सुनने को मिलती थी जैसे कि

उनके घर के शगल के विषय में पूछने पर वह कहने लगते थे—'दुआर प बाटे नीमके गाँछी ; पोसले बानी पाड़ा बाछी।' इत्यादि। मालूम नहीं इस 'पाड़ा बाछी' में उनको कौन-सा लाभ था। 'पाड़ा बाछी' पोसना ही गृहस्थ के लिए हानिकर सौदा है। खैर ये सब कविता और गीत तो उनके मुँह से राह चलते बनते जाते, मगर जिन गीतों के लिए हृदय आज भी ललक रह रहा है, उनकी एक-आध बानगी लीजिए। एक प्रवत्स्यत्पतिका अपने पति से गीले शब्दों में निवेदन करती है—

हाली से लवटिहऽ राजा! जाड़वा के रात हो।
साड़ी ले अइहऽ राजा! बँगला के पाढ़ हो।
चोलिया ले अइहऽ राजा! जोबना के सिंगार हो॥
सेंदुरा ले अइहऽ राजा! ईगुंरा गुलाल हो।
बिंदुली ले अइहऽ राजा! चमके लिलार हो॥

तनिक 'भोजपुरी' के 'हाली' शब्द पर ध्यान दीजिए। 'हाली' कहते ही हृदय हलका हो जाता है। लगता है, जैसे हृदय का कोई बोझ उतर गया। 'हाली' से मानों हृदय लिपट जाता है और लिपटने का तारतम्य हृदय से लेकर मुँह तक बँध जाता है जिससे अनायास ही आवृत्ति होने लगती है—'हाली-हाली'। 'हाली' हौले' का ही रूप है। इसके समान सुन्दर, मधुर चुस्त और चुलबुला शब्द किसी और भाषा में भी है, शक है। 'हाली' की बराबरी 'जल्द' और 'शीघ्र' कदापि नहीं कर सकते।' तिस पर कैसी है ग्रामीण बधू की माँग! कुछ पूछिए मत। सुहाग की इन चीजों की कीमत नहीं लगाई जा सकती। हाँ 'बल हो तो सिंदूर विन्दु यह, हर नेत्र निहारो।' इसी बल पर प्रोषित-पत्रिका विरह का महान अर्णव तैर जाती है। शिवनन्दन की ग्रामीण भोली-भाली नायिका विरह के दिनों में किस प्रकार अपना जीवन खे रही है—दृष्टान्त लीजिए—

सनन-सनन रात करे, बहेला पवनवाँ हे।
जो सइयाँ रहिते मोरा, सुतर्तीं अँगनवाँ हे॥
सावन बीतल भादो बीतल, बीतल अगहनवाँ हे।
पूस माघ जाड़ा बीतल, पहुँचल फगुनवाँ हे॥

विरहिणी के लिए जैसी रात जाड़े की वैसी ही गर्मी की और वैसी वर्षा की भी। गोपियों ने तो खुल कर कह दिया है—'पिया बिनु साँपिनि कारी रात।" जबकि सारा चराचर प्रकृति की गोद में बेसुध सो रहा है, एक मात्र विरहिणी जागती है। जागती है और रात्रि के मधुर झंकार में अपनी विरह-वेदना उँड़ेलती है। क्या आपने रात्रि के उस मधुर झँकार को कभी नहीं सुना है? यदि सुना है, तो आपको अपनी प्रिय वस्तु की याद नहीं आई है? उस समय आप 'उसे पाने के लिए व्यग्र नहीं' हो उठे हैं? और, यहाँ तो दिन पर दिन बीत रहा है और रात पर रात। सदा एक समान। एक ओर सावनका रिमझिम दूसरी ओर नयनों से अजस्त्र अश्रु-प्रवाह। भादो की भयानक रात का क्या पूछना! और, फिर' पूस-माघ' में जाड़े की रात जिससे तंग आकर उर्मिला सिमिट जाती है और 'सी-सी करती हुई' देखकर तो यही कहना पड़ता है कि सी सी करने में' सुधा सीसी-सी ढरकि जात। 'अगहनवा' तो 'मासानां मार्गशीष' है ही मगर विरहिणी के लिए फागुन का महत्व भी कम नहीं। जब कि समस्त वसुन्धरा हरे रंग की साड़ी पहनती है और वासन्ती रंग की चोली से तो अनायास ही विरहिणी का विरह प्रदीप्त हो हो उठता है। अस्तु

देश-प्रेमी और राष्ट्र-प्रेमी तो शिवनन्दन ऐसे थे कि कई बार जेल की हवा खा चुके थे। जेल से मुक्त होने पर भी उनकी वाणी वन्द नहीं होती थी। देश के ताजे समाचार न मालूम उन्हें कैसे ज्ञात हो जाते थे; क्योंकि जब सुनिए वह कुछ न कुछ बिलकुल ताज़ी खबरों को लेकर ही गुनगुना रहे हैं। लाखों की भीड़ में भी शिवनन्दन दबते न थे। दारोगा, मजिस्ट्रेट अथवा किसी भी पुलिस अफसर के सामने वह डंके की चोट सरकार को गाली गाया करते थे। एक बार उन्होंने गाँधीजी के विवाह का 'रूपक' भी तैयार किया था—'बुढ़ऊवा के शादी के विचार विलाइत में'। जब बृटिश सरकार ने चाँदी के रुपयों की जगह गिल्टी के रुपए चलाए, नोटों की भरमार की और छेदी हुई पाइयाँ चलीं तो शिवनन्दन बौखला उठे थे। उन्होंने निर्भीकतापूर्वक सरकार के विरुद्ध क्रान्तिकी आवाज बुलन्द की थी। 'भोजपुरी' के लोक कवि ने लोक के सामने डट कर गाया था, चेताया था और अंधों की आँखों में भी उगँली डालकर जगाने का प्रयत्न किया था जैसे—

जानी! ताकऽ तनि नजर उठाइ के।
अबकी चलल बाटे पाई छेदवाइ के॥

शिवनन्दन डरने वाले कवि थोड़े थे। वह तो जानकी वाजी लगाकर दुनिया के सामने डटे थे। देश और राष्ट्र के लिए मर जाना वह हितकर समझते थे। देश के लिए उन्हें यदि लाखों बार जेल जाना पड़े तो वह सहर्ष उसके लिए तत्पर थे। उनकी अमराकांक्षा तो बार-बार हृदय को मथ रही थी—

जइबे करबि हम जइबे करबि!
देश लागि जेलवा में जइबे करबि!
जिन्ना के नाच नचइबे करबि!
जवाहिर के लाट वनइबे करबि।

अफसोस कि जिन्ना को नाच नचाने वाला कवि नोआखाली आदि का दृश्य नहीं देख सका और उसके पूर्व ही वह चल बसा। उन्हें कुछ दम्मा की शिकायत थी और अचानक एक दिन पेट में बीहड़ दर्द उठने के कारण उनके प्राण-पखेरू उड़ गए। सब कुछ होने पर भी शिवनन्दन के जीवन में कभी शान्ति के दर्शन नहीं हुए। इस बीसवीं शताब्दी में शिवनन्दन चाहते तो बहुत कुछ हमारे लिए छोड़ जा सकते थे। लेकिन विचार से उन्होंने काम लिया नहीं। यदि विचार से उन्होंने काम लिया होता तो उनकी गणना हम महाकवियों में करते। यदि उन्होंने अपने शरीर पर ध्यान दिया होता तो वह हमारे बीच आज भी वर्तमान होते। यदि नाच-बाजे से दूर रहकर वह जीवन-यापन करते तो आज हम उनकी पूजा करते।

तो हम कहेंगे कि शिवनन्दन ने कवि-हृदय पाया था। उनका हृदय-विशाल था—जो वज्र से भी कठोर और पुष्प से भी कोमल था। उनका चरित्र उलझा हुआ था और उनकी प्रकृति रूखी थी। वह क्षत्रिय थे, योद्धा थे वीर थे, मगर जूझ न सके। सबके हृदय में रमकर भी उन्होंने अपनी जगह नहीं बनाई। उलझनों के कारण वह समाज में खटकते ही रहे। जन-प्रियता पाकर भी वह सुयश न ले सके। जीवन की पहेली हल न हो सकी। गृहस्थी सफल न हो सकी। कविता की पिपसा मिट न सकी। विभूति पनप न सकी। अपूर्व शक्ति नष्ट हो गई। अलौकिक प्रतिभा दब गई। शिवनन्दन हमारे लिए अन्ततः एक रहस्य रह गए। फिर भी उनकी रचनाएँ आज भी जनता के हृदय में ज्यों की त्यों बोल रही हैं।

लात के देवता:

श्री सिपाही सिंह एम० एड०

जतने किसिम के देवता ओतने किसिम के पूजा। केहू का तुलसीदल चाहीं, केहू का बेलपत्तर; केहू का पुंगीफल चाहीं, केहू का नैवेद। केहू खाली जल ढारला से गदगद हो जाला, त केहू बिना दरब के बाते ना सुने के चाहे। केहू लड्डू पर जोर मारेला, त केहू पूरी पर। केहू चन्दन छिड़िकला से खुश होई, त केहू फूल चढ़वला से। केहू के मनावे खातिर मंत्र के जरूरत पड़ी, त केहू खातिर कुछ तंत्र के भी। ठीके बात ह कि जतने देव, ओतने पूजा।

एगो हईं ढेलही देवी। उनका ना मंत्र पसन्द ह, ना तंत्र, उनका ना पूजा भावे, ना पाठ। उनका के मनावे के तरीका ई बा कि ढेला उठा-उठा के मारल शुरू कर दीं। जतने ढेला उनका पर बरसी, ओतने कीरिपा उ मरनिहार पर बरसइहें।

सारन जिला के चतरा गाँव में एगो पुरान खंडहर पर पथल के एगो देवी बारी। उ गाय-भइँस के देवी कहाली। राउर गाय-भइँस के देवी कहाली। राउर गाय-भइँस बिसुक जाय, त जाके उनका सिर पर दस लाठी जमां दीं। विश्वास करीं, जे राउर गाय-भइंस के बिसुकल छूट जाई। कतना लोग उहाँ आवेला, वो लाठी मार के फायदा उठा-वेला। एह देवी के सिर पर लाठी का मार से ना मालूम कि कतना वहिला गाय भँइस बिआ गइल होई। ओह देवी जी का मूड़ी पर लाठिए खाए में आनन्द मिलेला। ठीके बात ह कि जतने देव, ओतने पूजा।

कहीं-कहीं गछही देवी बाड़ी। उनका लत्ता-चिथरा से प्रेम ह। जे औरत के लइका ना होत होखे उ अपना साड़ी के आंचल में से एक बीत्ता कपड़ा फाड़ के गछही देवी का डाल में बान्ध दे त ओकर गोद भर जाई। अइसन देवी कहीं रउरा लउक जइहें त राउर आँख जुड़ा जाई। उनका हर डाल में लाल-पीयर हरियर-उजर तरह-तरह के चिथड़ा बान्हल देख के रउआ निहाल हो जाइबि।

एगो होले बढ़म पिचास बाबा। उनका के खुश करे खातिर दारू-शराब जुटावे के पड़ेला। बलखंडी बाबा बिना गांजा के बाते ना सुनिहें। पहिलहीं कहलीं हँ जे जतने देव, ओतने पूजा।

इहे बात आदमी का ऊपर भी लागू बा। तरह-तरह के आदमी के खुश करे के तरह-तरह के तरीका बा।

केहू प्रार्थना से खुश होई, केहू दया के भीख मांगला से। केहू गलती कबूल लेला पर बरदान बाँटे लागी त केहू रोअला-गिरगिरवला पर। केहू मानी पकवान से, त केहू शराब से।

अतने ले ना। कुछ लोग अइसन बा जे बिना लात खइले बाते ना मानी। उ लोग निहोरा से बिगड़ जाला, डाँट से सुधर जाला, गिड़गिड़वला से सिकहरा चढ़ जाला, मारला से चट राह पर आजाला।

का करेब, आपन-आपन आदत बा। मनाई लात से अगर बात से काम ना चलेतऽ। लात के देवता बात से मनिहें ना, बात के देवता लात मगिहें ना पूजा त रउरा करहीं के पड़ी, चाहे लात से करीं, चाहे बात से। चीन्हे के अतने बा जे के ह लात के देवता आ के ह बात के।

पिंड़िया

विश्वनाथ (शाहाबाद)

पिंड़िया बहिनिन के परब ह। एकर सिरी गनेस गोधन कूटला के बादे हो जाला। गोधन कूटला के बाद, जवना गोबर से गोधन बनल रहेलन ओही गोबर से, पिंड़ियाँ लगावल जाला। पिंड़िया निखालिस बहिन के ह, दोसर औरत बहिन के मदत भले करसु, पिंड़िया ना लगा सकसु। अगर कवनो बहिन बहुत छोट रहेली त आकर सती पिंड़िया दोसर बहिन लगा देलीं।

पिंड़िया गोधन के दिन (अन्नकूट) के लगावल जाला—गोबर के छोटी-छोटी पिंड़िया (पिंड़ा के छोट रूप) एक सिलसिला से देवाल पर सजा दियाला। देवाल पर पिंड़िया सट जाली स। पहिला दिन एक बहिन पाँच गो पिंड़िया लगावेली।

पिंड़िया लगावे वाली बहिन रोज पिंड़िया के कहनी सुनि लेला के बादे मुँह में अन्न-जल डालेली सन। पिंड़िया दोहरावे के पहिले छोटकी कहनी, आ दोहरवला के बाद बड़की कहनी सुनल जाला। पिंड़िया ह त बहिन के परब बाकी कहनी मतारी के हई सन। एहनी में बतावल गइलबा कि पिंड़िया करे वाली मतारी के संतान बढ़ेला आ ना करे वाली के संतान के कमी रहेला।

पिंड़िया के छोटकी कहनी

परिबा के दिन सोहराई के रात ह
गाई डाढ़ लागेला, भँइस पखेवेले
चेरिया मउवरिनिया पिंड़िया लावेली
केहु लावल सारि कोन केहु भण्डार कोन।
चेरिया के भइल से जियते रहल
रनिया के भइल से मरि हरि गइल।
रानी के मन में खीस दीक भइल
चेरिया के पुतवा चीर चार दीहली
बछिया के खूँटवा तूर तार लवली
पिंड़िया उसिनली अपने खइली
चेरिया के बखरा तोप तापि दीहली
रखिया छइया घूर ला दीहली
बजर केवर देइ परिहरि रहली।
चेरिया आइलि रन में से बन में से
देखे त मोर पूत घूरा पलोटत बा पोटत बा
झारि के झुरिके कोरा उठा लेलसि कहसि
रानिके गेयान देखऽरानी के सेयान देखऽ
बाघ सिंघ आइल त फार फूर खाइत
गोरू बछरू आइत त धाँग धूँग दीहित
भगई के भाग जागल हमही अइलीं

झारि के झुरि के कोरा उठवलीं।
रानी हो रानी खोल केवार।
कइसे में खोलों बजर केवार
चेरिया रे तें टेलि के आउ।
माचे ओड़ा काँगे बेटा
कइसे में रानी टेलि फेलि आईं
वेटा के नाव जब रानी सुनली
चेरिया के गोड़ सोहरि के लगली
चेरिया रे चेरिया काहे तोरा जीअँछ भइल
काहे हमार मर मराछ भइल।
तूँ त हऊ रजवा के रनिया
खटिया उठलू मँचिया वइठलू
पान फूल खइलू मुँह जूठिअवलू
घीव दूध कढ़लू मुँह जूठिअवलू
हम त हईं चेरिया चपाट
गोबरा के गइलीं तँहवों कहनी सुनलीं
पनियाँ के गइलीं तँहवो कहनी सुनलीं
एही से हमार जीअँछ भइल
ऐही से तोहार मराछ भइल
सोग परो घूरा में मूत मोरा कोरा में

पिंड़िया के बड़की कहनी

बड़की कहनी में भी एही शैली में पिंड़िया लावेवाली मतारी के परताप गावल बा। राजा आ भाँट के बेटी-दूनो जनी पिंड़िया लगवली। दोसरा जनम में दूनो दू घरे एके जगहि पर जुटली ; एगो राजा घरे-दोसरकी महंथ घरे। राजा के सात वेटा भइल बाकी सब मरि गइलन, महँथ के सातो जिअते रहले। महँथ के घर में परेवाली भाँट के वेटी का, सोक कइसन होखेला, एकर अनुभवे ना भइल। रानीके सलाह पर ऊ विकट-विकट उतजोग कइली बाकी उनकर लइका अजर-अमर रहले—उनकर रोवे नेहाये के साध ना पूजल। अन्त में ऊ आपन सरधा पूजावे खातिर चिलारि पर जाके रोवे लगली—जइसे-जइसे रोवली रानी के सातो बेटा उठि के बइठि गइलन स।

कहानी के इ एक कड़ी बानगी रूप में देखीं—

परिवा के दिन सोहराई के राति ह
गाइ डाढ़ि लाहिले भँइस पखेइँले
राजा के बिटिया भाँट के बिटिया
पिंड़यिा लगवली हा
दूनो जानी मरिहरि गइली हा
ऊपरली राजा घरे
ऊपरली महँथ घरे
इनका सात बेटा भइल हा
सातो मरि गइल हा

उनका सात बेटा भइल हा;
सातो जीअल हा ।

× × ×

बहिनी हो बहनी हमरा त रोवे नेहाये के बड़ साध बड़ुवे
चलि जइह साँप सँपहेरिया घर से कारी नगिनिया ले अइह
चूल्ही का पाछा घोंचा में पेश के धइ दीह
सातो बेटा के काट दी ही, मरि जइहें हरिजइहें
रोवेके नेहाये के साध पूजि जाई ।
गइली साँप सँपहेरिया घर से करिया नगिनिया ले अइली हा
चूल्ही का पाछा पेश के ध देली हा ।
माइ घोंचा दे, माई घोंचा दे ।
कापूत घोंचा दीं, चूल्हा का पाछा बा
हाथ लाइ झारिल, मूँह लाइ फूँकिल ।
सोने के हार हो गइल ।
माई रे माई तें त बड़ बउराहिन बाड़िसि
बेटी पतोह पाइत त नइहर सासुर पठाइत
चेरि चापर पाइत तबें चिखों चिखाइत
भगई के भाग जागल हमहीं देखलीं हाँ
झारि झुरि के गाला में लगा लेलीं हाँ ।
देखि आउ रे चेरिया बहिनी के घरवा ।
कवन पूत मरले कवन पूत हरले ।
ना पूत मरले ना पूत हरले
भाँट बरम्हावत बा, भाँटिन गीत गावत बिया
बेटी पतोहि काजर टिकुली करत बाड़ीसन् !

× × ×

बन में से निकले ले इसर महादेव
कसरे पापिन कवन लीला करेंलिसि
कवन तमाशा करे लिसि
अपने जामल अपने कटलिस बँटलिस
तेल में जँतलिस ।

× × ×

जो तोरे पापिन रोवे नेहाये के बड़ साध बड़ुवे
चलि जो सेठ के चिलारी पर
अहि के रोइहे महिके रोइहे ।
गइली हा राजा सेठ के चिलारी
अहिके रोवली हा महिके रोवली हा
जस जस लार परल हा तस तस साँस परल हा
जस जस लोर गिरल तस तस उठि के बइठि गइले सन ।
मौसी रे मौसी हम त बड़ सुतलीं ।

बबुआ हो जइसन तू सूतल तइसन तोहार
ऐरी सूतो बैरी सूतो ।
सोग परो धूरा में पूत आवसु कोरा में ।
सातो बेटा के घोड़ा कइली हा
सातो पतोहि के डोला कइली हा
अइसन भगगर रहली हा
कि अपनो लवटली हा
अनकरो लवटवली हा

तीनो कहनी के चुस्ती आ रवानगी सराहहीं लायक बा ।

पिंड़िया दोहरावल

पिंड़िया कातिक पुरनवासी के दोहरावल जाला । पहिले के पिंड़िया के साथे अवरु पिंड़िया लगवला के दोहरावल कहल जाला । जवना बहिन के जतना भाई रहेला, ओहसे एक सोरही अधिका, भाई पीछे एक सोरही के हिसाब से, पिंड़िया दोहरावे के बेर लगावल जाला । सोरह पिंड़या के एक सोरही कहल जाला ।

गीत रोज-रोज गावल जाला—दोहरावे दिन ढेर देरी तक सब बहिनी साथे रहेली एहसे गीत के रंग खूब जमेला ।

पिंड़िया छोड़ावल

अगहन बदी परिवा के जब दूइ घरी रात रहेला, पिंड़िया छोड़ावल जाला । छोड़ावे के दिन पाँच गो पिंड़िया पहिले लगा दियाला, आ सूखे के पहिलही छोड़ा लियाला। एही घरी पहिले के पिंड़िया भी छोड़ा लिहल जाला । छोड़ा लेला के वाद ओह जगहि के (देवाल के ओतना स्थान जहाँ पिंड़िया लगावल रहे) लइकी सब अपना आँचर से लीप-पोत के चिकन बना देली सन । पिंड़िया छोड़ा के वाँस के चेंगेली में रखल जाला ।

सोरही लिखल

पिंड़िया लगावेवाली लड़की सब परिवा के उपास रहेली सन । रसोइ घर के (आ देवता वाला घर भी, पूजा-वाला घर, आ कवनो दोसर घर जवन पवित्र समझल जात होखे) दूआरी के बगल में दूनो ओर देवाल पर सोरही लिखल जाला । ई सोरही एक तरह के गवईं के शैली में चित्रकारी ह । पहिले देवाल के, सेम के पतई के रंग से रंगल जाला—देवाल के ओतना अंश जतना पर सोरही लिखे के रहेला । इ आधार के काम करेला । एही पर चउर, अएपन, घीव, आ सेनुर से चित्र वनावल जाला, रंग भरल जाला। रंगे में बड़ सावधानी आ लगन के जरूरत होखेला । उपास के दिन रंग में सहजे बीत जाला ।

रात में खीर बना के उपास रहल बहिन खालीसन् । खाये के पहिले पिंड़िया लगावे वाली बहिन के जगो भाई रहेला ओतना सोरही । (सोरह दाना के सोरही)। चाउर ली ले लीसँ । खाये के बेरी इचिको हर हर पट पट ना रहे, तनिको खुटका भइला पर चाहे केहू के सद वस मिलला पर खाइल रोकि देबे के परेला आ रात भर निराहारे रहेके पड़ जाला ।

पिंड़िया दहवावल

दोसरका दिन (दूज के) भिनुसहरे पिंड़िया दहवावल जाला । सब बहिन भाई के साथे, मिल-जुलके गावत बजावत पासके तलाव, आहर भा नदीके किनारा जाके

छोड़ावल पिंड़िया के आदर के साथ दहवादेली सन्। दहवचला के बाद आपुस में चूरा, मिठाई, फर-फरहरी, मेवा मिष्ठान बाँटल जाला जवना के मुठिया बाँटल कहल जाला। एकरा बाद गावत बजावत सब अपना-अपना घरे लौट जाला।

पिंड़िया परबके आत्मा 'भइया दूज' चाहे उत्तर विहार के 'सामा-चकेवा' के आत्माके बहुत नियरे पड़ी।

पिंड़िया के गीत

पिंड़िया के गीतनके संख्या बहुत कम बा। बहुत खोज कइला पर भी अब ही तक हमरा केवल छव गीत मिल सकल। एह तरह तऽ पिंड़िया में झूमर बहुत अधिक गावल जाला आ झूमर के संख्या वेशुमार बा। लेकिन निखालिस पिंड़िया के गीतन के कभी इनकार न कइल जा सके।

(१)

कवनि बहिनी लावे ली।
गोबर वा केइरे पिंड़िया॥
सोरहिया के इरे पिंड़िया।
भइया लावे नवरँगिया कवन ए हरी॥

ई गीत हर बहिन आ हर भाई के नाँव ले-ले के गावल जाला। ई पहिला दिन के परधान गीत ह।

दोसरका गीत पिंड़िया छोड़ावे के दिन गावल जाला। एह में दर्द भी पुरहर बा।

(२)

लावे के लवलों पिंड़ियवा ए राम छोड़ावही के वेरिया।
ससुर पापी भेजे ले निआरवा ए राम छोड़ावही के वेरिया॥
बाबा मोरे धरे ले निआरवा ए राम छोड़ावही के वेरिया।
आमा मोरी साजे ली पीउँतिया ए राम छोड़ावही के वेरिया॥
भउजी मोरी लावेली खोंइँछवा ए राम छोड़ावही के वेरिया।
सँइयाँ लेके अइले डोली बाँसवा ए राम छोड़ावही के बेरिया॥
भइया मोर लावे ले ओहरवा ए राम छोड़ावही के बेरिया।

(३)

सूतल बाड़ऽ कि जागल ए शेखर भइया।
बहिन के दऽना जगाई ए हरी॥
सूतलि बाड़ू कि जागलि ए चन्द्रा बहिनी।
चलऽ बहिनी पिंड़िया दहवावे ए हरी॥
एक बहिनी पातरि दो सरे सुकुवारी।
बटिया उढ़ कवा जनि लागो ए हरी॥

ई गीत पिंड़िया दहवावे के दिन गावल जाला।

अगिला गीतन के रोज-रोज (पिंड़िया के दिन में) गावल जाला।

(४)

कवन फुलवा फूले रामा रतिया बिरतिया से अधि-अधि रतिया।
कवन फूलवा फूले भिनुसरवा ए हरी॥
चम्पा फूलवा फूलेला रतिया बिरतिया से अधि-अधि रतिया।

ओड़हुल फुलवा फूले भिनुसरवा ए हरी ॥
ऊहो फूलवा बन्हबों शेखर (भइया के पगिया विजय भइया के पगिया ।
गमकत जइहें कचहरिया ए हरी ॥

(५)

पूरूब जइहऽ भइया पछिम जइहऽ पछिम जइहऽ ।
ले अइह ए भइया घीवही लड़ुइया ॥
ले अइह ए भइया बाँसके चँगेलिया ।
घीवही लड़इया मँहँग भइले बहिनी मँहँग भइले बहिनी ॥
छोड़ि द ना ए बहिनी पिंड़िया बरतिया ।
छोड़ि द ना ए बहिनी पिंड़िया बरतिया ॥
बाँस के चँगेलिया मँहँग भइले बहिनी मँहँग भइले बहिनी ।
छोड़ि द ना ए बहिनी पिंड़िया बरतिया ॥
छोड़ि न ना ए बहिनी पिंड़िया बरतिया ।
कइसे में छोड़ूँ भइया पिंड़िया बरतियि पिंड़िया बरतिया ।
तोहरे बधइया भइया पिंड़िया बरतिया ॥
तोहरे बधइया भइया पिंड़िया बरतिया ।

एही तरह से बिलग-बिलग फल चाहे मिठाई के नाम ले-ले के गीत के कड़ी बढ़ि जाला ।

(६)

कवन भइया जागे ले रतिया बिरतिया अवरू अधिरतिया ।
कवन बहिनी जागेली भिनुसरवा ए हरी ॥
शेखर भइया जागे ले रतिया बिरतिया अवरू अधिरतिया ।
सीता बहिनी जागे भिनुसरवा ए हरी ॥
कवन बहिनी लावेली गोबरवा के इरे पिंड़िया सोरहिया के इरे पिंड़िया ।
कवन भइया लावे नवरँगिया ए हरी ॥
सीता बहिनी लावेली गोबरवा के इरे पिंडिया सोरहिया के इरे पिंडिया ॥
शेखर भइया लावे नवरँगिया ए हरी ।

रूबाई

मन के बछरू भरक गइल वइसे ।
नयन-गगरी ढरक गइल कइसे ॥
हम ना कहनी कुछु बेयरिया से—
उनके अँचरा सरक गइल कइसे ॥

दिनेश 'भ्रमर' एम०ए०

कहानी

अतिथि देव

बाबू लाल शर्मा (पूरबी सारन)

अतिथि देवता लेखन होलन एसे उनका के भगवान जाने के चाहीं आ भगवान के मन्दिर में जैसन प्रेम से पूजा कएल जाला ओही लेखा दुआर पर अतिथि अइला पर उनकरो सेवा सत्कार होखे के चाहीं। पंडितजी वहुत लरिकाई में ई उपदेस देहले रहस। गाँव पर केहू अभ्यागत आवे त हम खूब प्रेम से उनकर सेवा सतकार में लाग जाईं। ओ लोग ला पानी ले आईं जलपान ले आईं, भोजन ले आईं कहे के मतलब ईवा जे दशरथजी का "राजन राउर नाम जस सब अभिमत दातार, फल अनुगामी महिषमनि मन अभिलाष तुम्हार, लेखा ओ लोग का हुकुम का पहिले ही हम ओ लोग के सब काम बजा दीं। हमरा सेवा से अतिथि लोग गद्गद् होके हमरा मुँहो-पर आ पछो में हमरा बड़ाई के पूल बाँध देवे। अपन बड़ाई सुन के हमहूँ कुछ बोली त ना बाकी मन हमरो खूब फुला जाय।

अतिथि अएला पर आँटा-दाल, दही-चीनी के हिसाब गार्जियन लोग पर रहे, एहसे ओ लोग के देखीं कि कबहीं-कबहीं लोग अगुता जाए आ अतिथि-देवता के पाछा में कबहीं-कबहीं गोत्रोचार भी करे लागे। काहें कि कै जना अइसनके थेथर देवता रहन जे अंगद लेखा गोड़ी रोप देस आ हापता पखवारा पर बिदाई मांगस। बाघ-भाई के जबले खाली भूँजल जव के रोटी आ पनिगर माठा से सत्कार ने होखे तबले हटे के नावँ ना लेस।

ई सब हम अपना-घरे रहला के कथा सुनवलीं अब पढ़ला लिखला पर जब नौकरी करे गइली तब के एगो हाल सुनीं। नौकरी घर से तीन सौ माइल पर लागल। अबहीं ले घर से दस बीस कोस से बाहर ना कबहीं गइल रहीं। अतना दूर एके बेर गइला पर हमरा बुझाय जे हमर लन्दने चल गइल बानी सात समुन्दर पार—गाँव-जवार जनि-पहचान के केहूना उहाँ भेटायल। चार बरिस हो गएल उहाँ हमरा पुण्य के एको दिन उदय ना भएल—केहू अभागत ने आइल जेकर सेवा कके हम अपना भाग्य के सराहीं। जनवरी से जून बीत गयल।

जुलाई के कवनो तारीख होई, साँझ के आफिस से अइला पर पानी पी के टहले निकललीं। सड़क पर जैसे ही जातानी कि शर्माजी के पुरान परिचित आवाज कान में परल। कान खड़ा हो गएल—ठमक गइलीं आवाज के आहट लेत रहीं तले बजर भाई हमर आगा खड़ा हो गइलन आ बड़ा विनीत स्वर में नमस्कार कइलन। हमरा बजर भाई के देखके खुशी के कवनो ठेकान ना रहे। हमरा समुझ में आएल आज हमर सब पहिला जिनिगी के पुण्य उदयमान हो गयल जे एह विरान में बजर भाई अपन दर्शन देलन। बजर भाई से आवास-निवास पुछलीं त पता चलल कि उहाँ का सरकारिए करमचारी बानी आ सरकारी काम से इहाँ आएल बानी। शहर का सेठानी धर्मशाला में उहाँ का ठहरल बानी। हम कहनी बजरा भाई धर्मशाला में बड़ा तकलीफ होई निमन होइत कि हमरे यहाँ रउरा चल आईं। बजर भाई एह पर कुछ आना कानी कएलन आ

धर्मशले के सुख-आराम के बखान करे लगल, हमरा समझ में आ गएल कि जेहू एक देवता के सेवा करे के मोका मिलल रहलख से भगवान ऐसन नाराज जे उनके हाथ में से छीन के ले जाये के चाहत बाड़न। अतने बात हमरा आ वजर भाई का भयल रहे तबले वजर भाई के सात जाना साथी जे जवरे रहलन धमक अइलन। वजर भाई उहाँ सबन से हमर परिचय करवलन। आ हमरा मुँहे पर हमार प्रशंसा करे लगलन।

अपन बड़ाई सुनके चेहरा पर त हम कवनो खुशी के चिन्ह ना देखवनी बाकी भीतरे-भीतरे मन एक दम बाग-बाग हो गयल। आठो जना के हम होटल में ले गईलीं। होटल वाला से कहनी कि दू-दूगो सिंघाड़ा-आ दू-दूगों कचौड़ी एक-एक आदमी पर ले आव। दू-दूगों सिंघाड़-आ दू-दूगों कचौड़ी-फोरन के काम कइलक। आवत देरी भयल कब लोग का पेट में चल गएल पतो ना चलल। लोग का मुँह का ओर देखलों। बात समझ में आ गएल। हमरा आज फेठा कसे के पड़ी-दू-दूगो लाल मोहन आ दू-दूगो उजरका रसगुल्ला के फेर आडर देलों। फेर चाय के आडर देवहीं वाला रहीं कि वजर भाई बीचे में बोल उठलन-शर्माजी हमनी का नास्ता के रउरा अँटकर नइखे, जतना के आडर देले बानी ओकरा के दोहरा दीहीं आ ऊपर से दू-दूगो मलाई चप रहे दीही तब हमनी के सँझिया के हलुक पनपियाइ हो जाई। फेन बोललन अपने आडर देवे के तकलीफ मत करीं, खुद हमहीं आडर देत बानी। हम समझलीं वजर भाई आज शायद अपने पाकेट खाली करिहें-हम खूब खुशी से कहली वजर भाई-एह होटल मे सब चीज मीलेले-जे रुचि होखे-हमरा के अपन साँच दोस्त-समझ-के हमरा तरफ से अपने सभन आडर दीहीं हमरा खूब खुशी होईं, संकोच तनिको मत कयल जाय।

बजर भाई के छाती पहिले ३२ इंच रहे त हमार बात सुन के ऊ चौगुना हो गएल आ रुचि के भोजन ऊ करे लागल अपना साथी लोग का साथ। निमन होटल रहे खाये वाला लोग भी अपना रुचि के चीज खूब उत्साह से खइलक। जमाना भी मँहगी के रहल पूरा बिल पचपन रुपया साढ़े सात आना के भएल। बेहरा बिल लेके आयल बिल देख के बजर भाई आ उनकर साथी लोग बेसिन का तरफ मुँह-हाथ धोये चल देलक। बिल देख के हमार त मथा ठनके लागल। का करीं। पाकिट टोअलीं पाकिट में सात रुपया ठहरल। होटल वाला परिचित रहे, बात मान गएल। पान खएला का बाद हमनी का बजर भाई का धर्मशाला का ओर चललों। उनकर पाँच जना साथी त राह में अपना-अपना मोकाम पर चल गइलन। बाकी रह गइलन बजर भाई आ उनकर दूगो साथी लोग रामफल बाबू, उर्फ सेंतमेंत जी आ चिन्तामन ठाकुर उर्फ फटेहाल जी। घूमते-घामते फेन हमनी का चारो जना होटल में पहुँच गईलीं रात के लोग हमरे अतिथि हो के होटले में खयलक। चले का बेर लोग होटल में घूम-घाम के जगहा देख सुन के धर्मशाला चलि गएल। ओह दिन त हमरा मन में इहे खियाल भइल अतिथि देवो भव ना अतिथि राक्षस लोग ई कबहूँ-कबहूँ घाटा देवेले।

अब हम सोचलीं, जान बचल त लाखो पवलीं। मन में सोचलीं जे एह लोग के दोष लगावल भी ठीक ना बा। साँझ के ए लोग का साथे हम घूमेला ने अइतीं त बेजइँहा कहइतीं। ६५ रुपया खर्चा भएल त आखिर लोग हितहे अनहित लोग रहलख। आ हित अनहित का अएला पर खर्च हो जाले। फेन दोहरा के इ लोग त ना आईं। मन के कतनो मनवलीं, समझवलीं, बाकी रात भर नीन ना आएल। दू बजे नीन आएल आ आ सबेरे जैसे ही आँख मींचत कमरा से बाहर निकललीं कि देखलीं जे बजर भाई फटेहाल

जी, आ संतमेंत जी एक-एक गो खुदसर रेकसा पर अपन-अपन पूरा मोटरी गठरी ले के लोग आ गएल बा। होटल में रहे के जगह लोग राते पूछ ले ले रहे। बजर भाई अलगे हमरा के बोलवलन आ कहलन जे हम त राउर अतिथि होके रहब बाकी फटेहाल आ संतमेंत ने भलहिं आपन-आपन खर्च होटल में दीहें। हमर मुँह से निकल गएल, रउरा लोगनी हमर बानी, कवनो बात के हरज नइखे। लोग होटल में पाँच दिन ठहर गएल। दिन में लोग घूम-घाम के जब जे रुचि होखे होटल से ले के लोग खाय। हम जानत रही, ऊ लोग आपन खाता, होटल के मनेजर जानत रहे उ लोग हमर अभ्यागत बा। आ अभ्यागत लोग बेदर्द होके मन पसन्द चीज होटल से आडर दे के खात रहें काहे कि ऊ लोग केहू के अतिथि रहे। छटा रोज ओ लोग का जाये के रहे। भोरहीं बजर भाई हमरा लगे अइलन। कहलन, शर्मा जी, हम तो राउर मित्र बानी। देवे लेवे के कवनो सवाले नइखे उठत बाकी फटेहाल आ संतमेंत होटल के चारज दे देवे के चाहत बाड़न। एह में राउर विचार का बा। हमरा मुँह से निकल गएल ऊ लोग भी त मित्र के मित्र बा लोग में से ऊ लोग भी हमार मित्रे भयल। रउरा जानी ना कि सम-द्विबाहु त्रिभुज के आधार पर के कोण बराबर होखले। हमरा दृष्टिकोण में ऊ लोग भी रउरे समान बा। बजर भाई अतना सुन के उछल पढ़लन आ कहल शुरू कइलन, रउरा अइसन सतजुगी आदमी से हम अइसने उम्मीद राखत रहली हा। हमरा रउरा से ई सवाले कइला खातिर लजायल बानी। बजर भाई उछलत-कूदत चल गइलन अपना मित्र लोग के इ आनन्द सनेस सुनावेला आ हम येहीं उधेड़बुन में परल रहीं जे केकर मुँह देख के आज उठल रहीं कि तीनो जना हमरा लगे पहुँच गइलन आ हमरा के धन्यवाद देवे लगले। हम बनावटी मुसुकी छोड़त लेहाजन कहते रहीं कि रउरा लोगन अभ्यागत बानी, घटी-बढ़ी माफ करब कि बजर भाई बोल उठलन रउरा थोडका सा अउरो तकलीफ करे के होई। हमनी का जाये के खर्चा घट गइल बा, खर्चा इहाँ ना कटिहारे में घटल त इहाँ मनभारी भाई से ४०) रुपया लेलीं लेकिन इहाँ आवत ऊहो खर्च हो गइल। अब रउरा तकलीफ करहीं के पड़ी। रोपेआ हमनी के जात-जात में तार मनीआडर से भेज देब। लाचारी रुपेआ के इन्तजाम करके देवे के परल बरिस बीत गइल तार मनीआडर के पैंडा ताकत। अब जादा समय बीत गएला पर सन्तोष हो गएल बा। ना मालूम बजर भाई तार मनीआडर कवनो गलती पता से भेज देलन।

गजल

नजरिया के बतिया नजरिया से कहि द।
न चमके सोनहुला किनरिया से कहि द॥
नयन में सवनमा बनल बाटे पाहुन।
सनेसवा जमुनिया बदरिया से कहि द॥
लिलारे चनरमा के टिकुली बा चम-चम।
लुका जाय कतहूँ अँजोरिया से कहि द॥
न आवेले सब दिन सुहागिन ई रतिया;
तनी कोइनाइल उमिरिया से कहि द॥
नयन के पोखरिया भइल बाटे लब-लब।
न छलके भरलकी गंगरिया से कहि द॥

दुख सुख के बयार

—आशा सहाय

हवा के झोंक तेजी से चलत रहे। बिहान होके दिवाली आई। सब जगह लड़िकन स प्रसन्न बाड़े। लड़िकन खातिर त १ महीना, १५ दिन से पहिले से ही दिवाली के त्योहार आ जाला। काहे के पहिले से ही पटाखा आं अतीशबाजी छूटे लागेला। गाँव में सबे जगह खुशी बयार बहता। सबके मन दिवाली के नामे से प्रफुल्लित हो जाला। घर घर में लड़िकन गुड़िया के घेरवंदा कुलिया चुकिया भरे खातिर बनावतारे। कहीं कोनों पटाखा छोड़त बा। आ मेला त २-४ दिन पहिले से ही लग जाला। पूछे के का बात ह दिवाली आ रहल बा।

रमुआ उहो बड़ा खुश बा और लड़िकन सबके खुशी देखके। उहो सोचत वा कि काल्ह ओकर बाबू अइहन तव अपना साथे ओकरा खातिर ढेर सा पटाखा आ खेलौना लइहन। उहो तब सब लड़िकन के संग जा के खेली। रमुआ देखे में गोरा आ इकहरा शरीर के बा। नाक लम्बा आ ठोर ना जादे पातर न मोट बाटे। उमिर ओकर ७ बरीस होखी। बाकिर उ अपना उमिर से जादे अकिलमन्द लागेला। रमुआ आ रमुआ के माई इहे दु आदमी उ परिवार में रहेले सन। रमुआ के बाबू कलकत्ता गइले कमाए खातिर से उँहे रह गइले। बेचारी रमुआ के माई गाँव में केहू केहू के "कूट पीस" के आपन औरी बेटा रमुआ के पेट चलावेले। आपन ना खाके बेटा के खिला देली। केहू तरह से आपन दिन गुजारत बाड़ी। बड़ी मुद्दत के बाद रमुआ के बाबू के चिठ्ठी आइल की उ आवता। रमुआ और सोना दुनों के खुशी के त ठेकाने ना। रमुआ आपन पितृ स्नेह के कल्पना में डूबल रहे जबसे ओकरा बाबू के चिठ्ठी आइल, आ सोना भी आपन कल्पना में डूबल रहली।

दिवाली के दिन आ गइल। आज के में घर-घर दिया से शोभायमान होखी। चारों तरफ दिवाली अपन खुशी बिखेरले आ गइल। रमुआ आपन खेलौना आ पटाखा के बातो भी बाबू के आवे खुशी में बिसर गइल। भोरे से ही सोना आ रमुआ दूनों मिल के घर के सफाई आदि में जुट गइलन। ओकरा बाद जे कुछ घर में रहे पहिले दिन के कमाइ के ओकरा से सोना हलुआ बनइली। काल्हे बाजार से चीनी आ घी और आटा लाके रखली कि भोरे ही उठके बनायेब।

दुपहर तक त दुनो काम में बाझल रहले दुनो माई आ बेटा। साँझ हो गइल और रमुआ के बाबू ना अइलन उ भोरही आवे के रहलन। अब दुनो के मुह पर कुछ उदासी छा गइल। रमुआ लड़िके ठहरल ह थोड़ा देर के बाद खेलना आ पटाखा खातिर अपना महतारी से पैसा मगलख। पर पैसा त जे रहे ओकर हलुआ बन गइल। अब पास में एक धेला भी ना रहे. जे सोना रमुआ के देती। सोना के मन भी मसोस के रह गइल। रमुआ तब सब लड़िकन सब के ललचाइल आंख से देखत रहे। वोही अफसोस में रमुआ के घर में दीयो तक ना जलल जबकि पूरा गाँव में दिवाली के खेल तमाशा होत रहे। घर घर दिया बरत रहे। रमुआ के घर में एको फूटल दिया भी ना जलत रहे। जब आधा रात बीत गइल, गांव के कुछ लोग कहलन कि कोई आदमी रेल के लाइन के पास मरल पड़ल बा।

उहां जाके देखल गइल त उ रमुआ के बाबू रहे। ओकरा पास टिकट ना रहे। एही खातिर जब गाँव नजदीक अइल त उ सोचलख कि इहें ट्रेन से कूद जाई। जइसे उ चलत ट्रेन से कुदलक आ चोट एतना जोर से लागल कि उहे दम उ प्राण आपन छोड़ देहलस। सोना त सुनके अवाक रह गइली। सोना आ रमुआ दुनो के आस आ दिवाली पर पानी फिर गइल।

आइल मधुर बसंत

सजधज के संसार सजावे, आइल मधुर बसंत।
सजनी ! भइल शिशिर के अन्त।
फगुनी लय में गीत सुनावे, सनन-सनन पुरवाई
डाल-डाल पर मन भरमाइल, मिलल नया पहुनाई।
मस्ती के मधुपान करावे लागल मस्त वसन्त।
सजनी ! भइल शिशिर के अन्त,
आइल मधुर बसन्त।
बिरहिन कोयलिया के कुहुकल, मन में टीस जगा।।
पिया बिना पपिहा के पिहकल, मन में अगिन लगावे।
पुरवा में हलके गूँजे, बिरहा के टेर अनन्त।
सजनी ! भइल शिशिर के अन्त,
आइल मधुर बसन्त।
आसमान के अंगना चमकल, चुपके चाँद सलोना।
के लूटे मधु-भरल कटोरा, करके जादू-टोना।
चोर भँवरवा सुधि बिसरा के भइल पाट में बन्द।
सजनी ! भइल शिशिर केअन्त,
आइल मधुर बसन्त।

कुमार शैलेन्द्र

बसन्त

आइल मस्त महीना सजनी धरती पर मुसुकात रे !
झुकल आम के डाढ़ि बौर से
भीतर कोइलि बोलल
साँझ समीरन बहल मस्त हो।
विरहिनि के मन डोलल
महुआ के डाढ़ी पर उतरल हारिल लेइ जमात रे !
लाल सुनर पतई फेंड़न के
फुलुँगी पर लहराइल
मारि मारि ठोकर राहिनके
नीलकंठ मंडराइल
भइल पलास लाल अब टुहु टुहु रहल एक ना पात रे !
चढ़ल गोराई बा गेहूँ पर
कतो बूँट कइलाइल
ऊगल चमचम चान गगन में
गोरिया देखि मुसुकाइल
एही अँजोरा में आवे के रहे पिया से बात रे !

चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह

लोककथा

चार मूरुख

श्री मंकेश्वर नाथ मिश्र (दखिनी चंपारन)

एक गाँव में चार संघतिआ रहले। ऊ लोग एक दिन आपुस में विचार कइल कि हमनी कहीं बाहर कमाए चलल जाय। विचार पाका हो गइला पर चारू जने एक साथ घर से चलले। जवना राहे ई लोग जात रहे, ओही राह से एगो राही आवत रहे। ऊ बूढ़ रहे आ बहुत गरीब रहे। ऊ जात के चमार रहे आ ओही दिन ओह बुढ़वा के कोई बाबू बेगारी धइले रहस। जब ऊ एह बाबू लोग के देखलस त बहुत उदास हो गइल आ ओकरा दिल में डर समा गइल। ऊ अपना मन में सोचलस कि अब कवन उपाय करीं कि एह बाबू लोग से जान बाँचो। अगर आज फेर बेगारी धरइनी तब त प्राने ना बाँची। लेकिन बुढ़वा बड़ा चालाक रहे। जब निकचा आइल त झूक के सलाम कइलस आ मरलस एँड़, डेगारे निकल गइल।

ई चारू जना चार जात रहले। एक जने बाबाजी रहले, एक जने सोनार रहले, एक जने बनिआ रहले आ एक जने लोहार। बुढ़वा के सलाम करत देख के बाबाजी कहले—'ई हमार जजिमान ह आ ई हमारा के एही से सलाम कइलस ह कि एकरा बिहाने पूजा बा।' ई बात सुन के बनिआ कह ले-'ना ई त हमार बनिऔटा हवे आ हमार केतना सौदा एकरा इहाँ उधारे परल बा। एही डर से ई हमरा के सलाम कइलस ह।' तब सोनार कहले—'ना ना, ई त हमार खदुका हवे आ एसवें अपना लरिका का सादी में हमरा से गहना ले गइल आ अभी तक एको पइसा न देलस ह। ई एही डर से हमरा के सलाम कइलस ह जे में हम एकरा से गहना के दाम ना मांगी।' एह पर लोहार कहले—'ई त हमार गिरहथ हवेन। नित दिन हम इनकर खुरपी, फार, कोदार, गड़ासी पीटीले। ना इनका से जवरा मांगी, ना हँसुआ-बोसुआ के दाम मांगी। एही वोजेह से ई हमरा के सलाम कइले ह। तोहनी त नाहक में अपन-अपन नाँव ले तारऽ।' ई सुन के बाबाजी बिगड़ले। ब्राह्मन के जात, तनी एक में नाक पर बिख ठहरल। एह पर सोनारो बिगड़ले, बनिओ बिगड़ले। भइल हल्ला सभे अपने बात कहे, केहू केहू के बाते ना सुने। ज़ब कुछ देर तक हल्ला होत रहल त बाबाजी कहले—'बेकार हल्ला कइला में का बा। चलऽ लोगनि बुढ़वे से पूछल जाव कि ऊ केकरा के सलाम कइलस ह।' ऊ लोग बुढ़वा से पूछे खातिर दउरल। जब बुढ़वा ई लोग के दउरत देखलस त भागल। लेकिन ऊ त बूढ़ आदमी रहे। ऊ तुरंते हार गइल आ कुछ दूर पर धरा गइल। बुढ़वा ड़र का मारे थर-थर काँपे लागल आउर कर जोर के खड़ा हो गइल। बाबाजी हांफते-हांफते ओकरा से कहले—'तूं डेरा मत। हमनी तोहरा से इहे पूछे खातिर अइनी ह कि तूं केकरा के सलाम कइल ह।' जब बुढ़वा ई बात सुनलस त चतुर चिन्हत ओकरा देरीना लागल। ऊ तुरते जबाव देलस कि रउरा सभनि में जे सब से बड़का बुरबक बा ओकरे के हम सलाम कइनी ह। ई सुन के बाबाजी कहले—हमही सबका से बड़का बुरबक बानी।' एह पर बाकी तीनू जना कहे लगले—हमरी सब से बड़का बुरबक बानी, हमहीं सबका से बड़का बुरबक बानी। फेर हल्ला भइल, केहू मनबे ना करे। आखिर में ई लोग आपुस में तय कइलस कि काजी से पंचाइती करावल जाय के सब से बढ़ के बुरबक बाड़े। ई लोग काजी का दुआर पर गइल आ सब बात कह सुनावल। काजी सब बात सुनके हंसले आ बाबाजी से कहले—पहिले रउरे बताईं कि रउरा कइसे सब से बड़का बुरबक हईं। एह पर बाबाजी कहे के सुरु कइले।

"हमार दू गो सादी भइल वा। ऊ दूनू जनी एक से एक वढ़के मुँहजोर हईं। एक दिन के जिकिर ह। जेठ के महीना रहे, आ बड़ा घाम रहे लूह चलत रहे। हम ओही घाम में दूपहर के थकल—खेदाइल, पिआसे लह-लह करत जजिमनिका में से घरे अइनी। हम पसेना से थक-वक भइल रहनी आ ठेहुना परले धूरा चढ़ल रहे। हम थहरा के अङना में वइठ गइनी। ओह घरी वड़की खाएक वनावत रहे आ छोटकी वइठल रहे। जब छोटकी हमार ई दसा देखलस त ओकरा माया लागल। ऊ पानी ले के हमार गोड़ धोए लागल, तव ले वड़की के नजर परल। ऊ ओही भइल कहलस 'देख, तूऽ अपना हिसा के गोड़ धोइहऽ, जो हमरा हिसा में धोअबू त ठीक ना होई।' ई सुन के छोटकी मुँह विचका के कहलस—काहे ना धोंई। कवनो हिसा लागल वा जे तोहार हिसा छोड़ दीं? एह पर बड़की कहलस—'आछा, रहऽ। अब हम हिसा लगा दे तानी। काहे खातिर रोज रोज के झगरा लागल रही। एतना करते-करते बड़की का एगो अकिल सूझल। ऊ कइलस का कि करछुल धीका के लाल कइलस आ ओके ले के हमरा टीक पर से चूतर तक ले पीठ पर एगो सोझ साटी खींच के हमरा देह के दू गो बाँटी कइलस। हम दरद का मारे बाप-बाप करे लगनी लेकिन बड़की का डर से हम ओकरा के मना ना कइनी। एकरा बाद वड़की कहलस—'एह पर से आधा तोहार वा आ आधा हमार वा। अव तूँ अपना हिसा के इनकर गोड़ धोअऽ'। एतना कथा सुना के वावाजी कहले—'देखीं पंचे। हमरा से लमहर बुरबक के वा जे आपन देह दगवा के अइसन सेवा करवले वा?'

वावाजी जव अपन कथा कह चुकले त काजी वनिआ से कहले—अब रउरा अपना बुरवकई के कथा कहीं। एकरा वाद बनिया आपन कथा सुरू कइले—

"हमरो दू गो सादी भइल वा। एक दिन के वात ह कि दूनू में कवनो खाएक ना वनवली स। एने भूख से हम टेम्हुआइल रहीं। खाये के वेरा जोहते-जोहते हम अँउघाँ गइनी। एतने में दूनू आ के हमरा लगे सूत गइली स। हम चित्ते पटाइल रहीं आ हमरा दूनू बाँह पर ई दूनू आपन-आपन मूँड़ी धइले रहऽ स। हमरा सिरवां दीअठ पर दिया वरत रहे। तव का भइल कि दिया के टेम चू के सीधे हमरा वायाँ आँख में आ परल। हम राह डर से आपन वाँह ना खींचनी आ करवट ना वदलनी कि पहिले जवना का मूँड़ी तर से आपन वाँह खींचव ऊ हमरा से रंज हो जाई। हम एही सोच में परल रहीं तवले हमर आँख भड़क गइल। अव अपनहीं वताईं ए सरकार, कि हमरा से लमहर बुरवक के होई जे आपन आँख गँवा देलस, मगर अपना मेहरारू का रंज होखे का डरे आपन हाथ ना खींचलस। एह लोग में अइसन के वा जेकर अपन बुरवकई से कनहा नाँव परल होखे।"

एकरा बाद काजी लोहार से पूछले, 'कह ना तूं कइसे सबसे लमहर बुरबक बाड़?' लोहार जबाव देले—"हे सरकार! हमरो दूगो सादी भइल वा। एक बेर के बात ह कि माघ के महीना रहे आ झपसा लागल रहे। हम सरेह से साँझ का बेरा भींजते भींजत आ जाड़े थर-थर काँपत घरे अइनी। हमार दूनू जनाना अपना-अपना घर में सूतल रहस। हम जा के वड़की से आगी बारे के कहनी त ऊ कहलस 'हमहीं काहे आगी बारीं आ ऊ सूतल रहस। तूँ जा आ उनहूँ के बोला लेआवऽ।' तब हम छोटकी का लगे गइनी त ऊ कहलस 'हम अपना गोर में महावर लगवले बानी, अगर भुइँआ उतरब त कँदई लग जाई। जा तूँ बड़की से कहऽ कि ऊ घानसारा से आगी आ न दस त हम बार देब।

त हम फेर बड़की का लगे जा के कहनी—'हम जाड़े ठेंठुआ रहल बानी आ तोहनी सूतल बाड़ू। छोटकी कहता जे ऊ घोनसारी से आगी आन देस त हम बार देब।' एतना सुन के बड़की कहलस कि हमहीं काहे जाईं, ऊ हो चलस। त हम फेर जड़ुआइले छोटकी का लगे गइनी। त ऊ कहलस कि हमरा के अपना कान्ह पर चढ़ा के घोनसारी ले चलऽ जे गोड़ के महावर मइल ना होय आ हम आगी आन दीं। हम ओकरा के अपना कान्ह पर चढ़ा लेनी आ ऊ आपन बोरसी हमरा मूँड़ी पर ध देलस आ कहलस—'चलऽ आ उनहूँ से कह कि ऊहो चलं के आगी ले आवस।' हम कान्ह पर छोटकी के चढ़वले आ मूँड़ी पर बोरसी धइले बड़की का दुआरी गइनी। त ऊ का कइलस कि ऊहो हमरा दोसरका कान्ह पर चढ़ गइल आ आपन बोरसी हमरा कान्ह पर लाद देलस। तब हम दूनू गोड़ा के ले ले घोनसारी चलनी। बीच में एगो नारा परल रहे आ ओ में डांड़ भर पानी रहे। हम आपन दुरगत का कहीं सरकार! माघ के रात ओ में बरखा बरसत आ बेआर बहत। हमर जाड़ का मारे देह कठुआ गइल रहे। तबहू अपना दूनू जनाना के कान्ह पर चढ़वले केहू तरेह पानी हेल के घोनसारी में गइनी। ऊहाँ ऊ दूनू उतर के अपना-अपना बोरसी में आग भरली स आ फेर ओही तरे हमरा कान्ह पर आसन जमवली स। हम ओकनी के कान्ह पर चढ़वले फेर पानी हेल के घरे अइनी। एतने में बड़की हमरा के चाल कइलस। हम जइसे बड़की का घर का ओर चलनी तइसहीं छोटकी आ के हमर बाँह धइलस। दूनू अपना-अपना ओरी खींचे लगली स। कबो बड़की खींच के अपना दुआरी कोरी ले जाव त कबो छोटकी। दूनू में छोटकी बरिआर रहे। ऊ केहू तरे खींच के अपना दुआरी ले गइल। बड़की दोसर कवनो उपाय ना देख के हमर टंगरी धइलस आ दूनू ओर से खींचा-खींची होखे लागल। एही बीच हम चौकठ पर गिर परनी आ हमर टँगरी टूट गइल आ तबे से हमर नाँव लङड़ा पर गइल। अब अपनहीं बताईं कि हमरा से बढ़के एह में के बुरबक बा?'

आखिर में सोनार कहले—"हम अपना बुरबकई के कवन कथा कहीं? एह लोग के त सादी भइला से दुरगत भइल, मगर हमार त बिना सादिए-बिआह के सब विधि भुगुत गइल आ नकटा नावों परल।'

एक बेर हम गहना बनावत रहीं कि एक आदमी आ के कहल कि जा तूँ अइसन भोंचड़ऽ बाड़ कि तोहरा अपना इजत-भरम के कवनों ठेकान नइखे। ई बात सुन के हम अकबका गइनी आ पूछनी कि हमरा कवना इजत-भरम के ठेकान नइखे, का बात ह? तब ऊ कहलस—'देखऽ, तूँ एतना सोना-चानी धइले बाड़ऽ आ तोहार जनाना दोसरा के धान कूटता आ तोहार लरिका भूखे ढिमलाता।' एतना सुनते हमरा सोसा चढ़ल आ हम कहनी जे चलऽ, देखावऽ कि हमार जनाना आ लरिका कहाँ बा? त ऊ हमरा के बोलवले-बोलवले ले गइल एगो दोसरा गाँव में, आ कहलस—देखऽ, ऊहे तोहार जनाना धान कूटता आ तोहार लड़िका घूरा में में पटाइल बा आ रोअता। हम ओह जनाना के धान कूटत देख के ओकर झोंटा धइनी आ कहनी—'हमरा एतना धन आ तू हमरे जनाना हो के दोसरा के धान कूटत बाड़ू आ लरिका भूखे रोअता।' तबले भइल हल्ला आ गाँव के लोग जूट गइल आ हमरा के पीटे लागल। ओही में हमार नाको कट गइल आ तब से हमार नकटा नावों पर गइल। अब अपनहीं बताईं कि हमरा से बढ़के के बुरबक बा?

चारू जने के बात के काजी फैसला कइले, रउरा सभनि में बनिये जी सलाम क। काबिल बानी।

जम्हु के दूत

रामवृक्ष राय 'विधुर' (उत्तरी गाजीपुर)

जाड़ि क दिन रहे। सभ केहू कउड़ा बइठल हाथ सेंकत रहल। बैल खिआ-पिआ के घामा हटा दीहल रहले स। आ अलगू अखाड़ा में लँगोटा कसि के मुँगरा फेरत रहले। सरीर से तर-तर पसेना चुवत रहे। गाँव भर क लइका, बूढ़ आ जवान चारु ओरि ले घेरि के बइठल रहले। मीठू खँखारि के कहले 'अलगू!"

"हँ, दादा।"

"आरे, कल्हिए महवीरी झण्डा उठत वा नूँ ?"

"हँ, मीठू दादा, कल्हिए त उठत वा"

"सुनत वानीं जे वाड़ा वोड़े-वोड़े पहलवान आवत वाड़े स।"

"... ... ... हँ, सुनात त अइसनें वा मीठू दादा। वाकिर जे-जे आ जा।"

"तोहार केकरा संगे जोड़ लिखल वा अलगू।

"जोड़ त हमार वाड़ा नीमन पहलवान का संगे लिखल वा मीठू दादा। वाकिर तोहन लोग का चरन क एकवाल वा!"

"एकवाले, एकवाल वा। केहू पीठी धूरि ना लगाई। नेटुअवा वावा के एक चिलमि गाँजा भाखि दीह।"

"अच्छा, मीठू दाद।"

अलगू फेनु मीठू दादा के चरन छू के छरकि के अखाड़ा में परि गइलनि। सभ केहू एक बेर जोर से बोलल "बोलु बजरंग बली की जय! जय!"

× × × ×

सभ केहू मारे उछाह के नाचे लागल। चारू ओरि खुशी छवले रहऽलि। एही बीच में लाल साफा बन्हले एगो चपरासी आके पूछलसि "एईंजा मीठू भगत बाड़े ?

"हँ हजूर! एहीं जे त बानीं। का हुकुम हटे, कहल जाउ।"

चपरासी नोंसा फुला के बोलल "निगिचा आव, तब बतावत बानीं। दउरत-दउरत टँगरी झुरा गइलि। का तहरे दुआर ठाकुर दुआरा भइल बाटे ?"

"आरे, सरकार खाली अपने बाति त ओटले बानीं। कुछु बताइबि तबे नूँ जानल जानल जाई।" मीठू दाँत चिआरि के कहलनि।

"अमीन साहेब आइल बाड़े। मये गाँव मलगुजारी दे दीहल आ तूँ जइसे नवाब भइल बाड़। का तोहरा के डोल-मोहफा भेंजे के परी ?"

"ना हजूर। हम त रउवाँ सभका खिजिमतिगिरी में चौबीसो घरी दसो नँह जोरि के तइयार रही लाँ। बाकिर आजु रुपया नइखे। काल्हि केवनो जोगाड़ कई देबि।"

"रुपया नइखे त घर-दुआर, बैल-बछरू बाटे नूँ।"

एतना कहि के चपरासी बैल का ओरि बढ़ल आ खूँटा पर से एगो बैल खोलि के बरबरात चलि गइल।

× × × ×

मीठू क उमिरि अधिआ गइलि रहे। बार सनकूट हो चलल रहे। दु-चारि गो दाँतों टूटि गइल रहले स। बाकिर एइसन बेपानी ना भइल रहले। मीठू का करेजा

में खून जमि गइल। एह कुल्हि गुनावंन में डूबत-उतिरात रहलनि। तबले गोबरी आके चिचिआये लगले "मीठू दाद! मीठू दाद!!"

"केह?" मीठू कल से पूछले।

"हम हईं, गोबरी। पाव लागत बानी।"

"जीअ। नीके रह। मजे में रहल ह नूँ?"

"हँ, मीठू दादा तोहरा छोह से केवनो बात के हरज नइखे।"

"अच्छा, इहे नूँ चाही। कह, का चलल बाड़?"

"आजु सोमारू काका का दुआर पर बटोर वा।"

"कइसन बटोर? केहू क खेत-ओत त नइखे न छुवल-छावल।"

"नाहीं।"

"तब?"

"अमीन साहब नूँ आइल बाड़े। मये गाँव का जमीदारन क बैल हाँकि के ले गइले। जइसे जनाता जे अन्हेर हो गइल बाटे। जमीदारन के केवनों साने-मान नइखे।"

"मति कह, भाई। ई त आदमी ना जम्हु के दूत बाड़ेस। इन्हनी का मारे त जीव आजीज आगइल बाटे।"

"अच्छा हाली चलीं। ओंइजा सभ अँउँजाइल होई।

मीठू कान्हि पर दोहर ध के आ हाथ में एगो सोटा लेके चलि दीहले। बटोर में पहुँच गइले। मीठू के लगे से देखि के सोमारू भगत कहले "आईं जेवन गुनले रहलीं हँ, तवन करा दीहलीं। अबहीं बापे-ददे ना भइल रहल ह। करेजा में खून जमि गइल बा। हाली एकर केवनों उपाय करीं।"

"...... एतना अँउजइला के काम नइखे सोमारू भगत। सभ दिन जमाना एक्क किसिम ना रहेला।" मीठू कुछु गंभीर होके कहले।

बहुत आदमीं एके बेर "अच्छा, सभ केहू चुप वा। रउवें बताईं अब का होई?"

"होई का, चलऽ जा। चिरउरी-मिनती करीं जा। जो सुनि जाई त सुनि जाई।"

"कहवाँ ले गइल होइहें स।"

"आरे, अब उ कचहरी निगिचवले होइहें स।" गोबरी मन मलिन कइके कहले।

"अच्छा, चलीं सभे का जाने भेंट होइ जा।"

मीठू कऽ बाति मानि के सभ केहू उठि परल। थोरे दूर जात जात भेंट हो गइल। अमीन साहेब का नियरा पहुंचि के उनुका गोड़ पर पगरी धके मीठू कहले "हजूर! एक बेर माफी दे दीं। फेनु अइसन गलती ना होई। दोहाई हजूर कऽ।"

"ना, ना, मीठू। अब ए तीसी में तेल नइखे। पानी चाह त कल से घरे चलि जा, ना त हाथ लगा देबि।"

मीठू बहुत चिरउरी कइले, बाकिर तबो अमीन साहेब ना सुनले। जइसे जना जे कान में अँगुरी डालि ले ले होखसु। लोग का करे। फँखि-पटिक के चलि दीहल।

गोबरी कहले "हूँ, भइसी का आगा बेनु बजावल, भइसि चले पगुराय।"

"ठीक कहत बाड़ गोबरी भइया, ई बाड़ा बे दरदी बाड़े स। बहुत आदमी एके सँगे "हमनीं क जीअल धीरिक बा।" गोबरी फेनु एगो लमहर साँसि लेके "अब का रोवत बानी सभे। इहे नूँ अपना राज के फल ह। आजु-कालिह एहा के 'राम-राज कहल जाता।"

आपुस में इहे-कुल्हि बतिआवत सभ केहू अपना-अपना घरे चलि गइल।

लोककथा

पेटू पाँड़े

नागेश्वर गिरि 'नागेश' (पूर्वी चंपारण)

एक वावाजी रहस। उनकर नाम रहे पेटू पाँड़े। पेटू-पाँड़े के पेट एतना न वड़ रहे कि चलले न जाये। इनकर जइसन नाम रहे वइसने करनी भी। पेटू-पाँड़े एतना न अधिक खास कि इनका के सब कोई पेटकर वावाजी कहे। लड़िका सो त इनका के नाकोदम क देवे। इ अपने पेट ले ले भागल फिरस चारू ओरी। लेकिन लडि़का सो इनकर जान न छोड़े। पाँड़े बहुत खिसिआये लागस। खीस के मारे थर-थर काँपे लागस। अदनी बात में पैजामा से बाहर हो जास। लेकिन पाँड़े इ नं जनलन कि इ खीस एक दिन हमार जान भी ले ली। पाँड़े के घर में दोसर केहु न रहे। अकेले अपन जनाना कें साथ रात-दिन वितावस। दोसरा २ गाँव से, वहुत लड्डू-पेडा ले आवस। एही बात से पाँडाइन इनका के वडा मानस। एक दिन के बात ह कि पाँड़े भोज खाके आइल रहस। एतवार के दिन रहे। अधिक खा लेला से हरज होत रहे। ए लेल पाड़े केवाड़ी वन क के खटिया पर सुतल रहस। पाडाइन गोड दवावत रहस। अधिक खयला से, गोड के दवावला से पाड़े के जल्दी नींन पर गेल। पाडाइन भी अउँघाये लगलोन। अभी इनका सुतला अधिक देर न भेल रहे कि एक आदमी आ के लगलक केवाढ़ी पीटे। इ एक सेठ रहस जे पाड़े के खायेला वोलावे आइल रहस। लेकिन ए लोग का भूत के डर हो गेल। केहू केवाड़ी न खोलल। दोसर बात इ रहे कि आज एतवार रहे। भोज के कवनो उमेद न रहे। सेठ बोललन "अरे! केवाड़ी खोल पाँड़े, आज एक भोज जागल बा।" भोज के नाम सुनते पाँडाइन हडवडा के केवाड़ी खोल लीन अउर पाड़े घडवडा के खटिया ले ले उठ दौड़लन। पाड़े सेठ से कहलन—"का सेठ, का बात ह। कवनो काम त नइखे। जरूरत होय त कह।" सेठ कहलन "ना, जी, जरूरत-वरूरत कुछ नइखे। एक जगह भोज खाये चले के वा। हम तोहे वोलावे आइल हईं।" भोज के नाम सुनते पाँड़े सोचे लगलन। लेकिन पाँड़ाइन से न रहल गेल। जल्दी से कहलीन "ए पाँड़े! जल्दी कर न त गाड़ी अब छूट जाई।" हाँ, जी, सेठ कहलन। अब पाँड़े के दम ऊपर नीचे होये लागल। काँख में झोरा, हाथ में लोटा ले के दउड के चल दीहलन। गाड़ी पर बिना टीकटे के चढ़ लीहलन। मोतिहारी से गाड़ी खुल गेल। उहाँ पाड़े त ठीक समय पर पचहुँलन। लेकिन कुछ न कुछ त देर हो ही गेल।

सब बाबा जी लोग खा रहल रहे। कहीं घट न जाये, ए डर से पाँड़े बिना हाथ-गोड धोये खाये बैठ गेलन। उनका संग के सब कोई खा के उठ गेल। लेकिन इनकर लर न टूटल। दू से चार बज गेल। खानाई के मारे पेट फूल गेल। तूमा जइसन हो गेल। अपना घर ओरी पाँड़े चललन। विदाई त पूरा मिलल। गाड़ी में बैठ गेलन। उनकर चिन्ता घर के ओर लागल रहे। गाड़ी तेज चाल में रहे। पाँड़े देखत आवत रहस। रास्ता में एक भारी जंगल पड़ल। चरवाहा सो गाय चरा रहल रहे। गाड़ी के आवाज सुन के दउड के आइल।

गाड़ी के आदमी के ओर लगलकं छाती ताने अउर लाठी वतावे। ओ डिब्बा के जेतना लोग रहे केहू कुछ न बोलल। लेकिन पाँड़े से रहल न गेल। इ त विद्वान आदमी ठहरलन। भला कइसे एके सहस। अब अपन काम जारी क दीहलन। अब इनका से न रहल गेल। पीत के मारे लगलन थर-थर काँपि। तव तइ एक दोसर भी वैस ही कइलक। इ पाँड़हु से भी मोट रहे। अब पाँड़े विगड़ गेलन। आव देखलन न ताव गाड़ी से कूद पड़लन ओके मारे खातिर। लेकिन बीच ही रास्ता में इनकर दम निकल गेल। अव इ तीनों तिरलोक देखे लगलन। इनका सीधे सरग लौके लगल। इनका सरग जाइत देरिओ ना लागल। लड्डू-पेड़ा के दम पर-पाँड़ाइन इनका के बहुत मानस। ओने त पाँड़े जी अपन राह सिधरलन अउर ये ने कातीर पाँड़ाइन घर से निकल के दुआर अगोरत रहस कि लड्डू-पेडा ले के पाड़े अब आवेलन।

सिकरी बजाईना

बजर केवार देल कहल खोलाई ना।
एक दिन आई कोई सिंकरी बजाई ना॥
रसके फगुनवाँ ई फिरि फिरि आईना।
कुहुँकि कोईलिया ई सव दिन गाई ना॥
कनखी के छूरिया ई चोख रहि जाई ना।
अँखिया के कजरा ई जहर लुटाई ना॥
चोटिया के नागीन ई, सदा बल खाईना।
फनवा उठीना, फुफुकार रहि जाईना॥
दुधिया अँजोरिया के रंगवा लोभाई ना।
हउआ के ठुनुकी ई सदा ठुनुकाई ना॥
हँसिया के फूलवा ई झरते हो जाई ना।
गलवा प बाते बाते आई ई ललाई ना॥
दँतवा के मोती-लरी टूटि गिरि जाई ना।
दाँत बिना एक दिन ओठवो कटाई ना॥
नेहके गुलबवा में गमक जो आई ना।
दिन चलि जाई कोई सिकरी बजाई ना॥
ताके के अकेले परी, रतिया ओराई ना।
एही से कहीला लहो, अबोले बोलाई ना॥
हारी जो पुकारि के, जबाब कुछ पाई ना।
दूर, चलि जाई त, मोसाफिर ई आई ना॥

सत्यनारायण केशरी, 'सौरभ' डुमराँव, (शाहावाद)

चम्पारन के अशोक-स्तम्भ

श्री हरिश्चन्द्र प्रसाद, बी० ए० (पूर्वी चम्पारन)

भारत के पढ़ल-लिखल समाज में केहु अइसन नइखे जे अशोक के नाम से परिचित न होए। उ अपना समय के बड़ा लोकप्रिय रहस। राजा भेला के थोड़के दिन के बाद उ कलिंग देश पर चढ़ाई कइले। घमसान लड़ाई के बाद हुनकर जीत भइल, लेकिन लड़ाई में एतना लोग मारल गेल कि युद्ध-भूमि में खून के नदी बह गेल। इ देख के हुनकर हृदय पिघल गेल। उ निश्चय कैलन कि उ अब कभी लड़ाई न लड़िहेन। ओकरा बाद उ बौद्ध-धर्म मान लेलन और ओकरा प्रचार वास्ते बहुत किसिम के काम शुरु कैलन। देश-विदेश में धर्म-प्रचार वास्ते आदमी भेजलन। जगह-जगह पत्थर और गुफा में धर्म-लेख खोदवएलन। जहाँ इ चीज न मिलल उहाँ पत्थर के स्तम्भ गड़वा के ओपर धर्म-लेख खोदवएल न। चम्पारन जिला में अइसन तीन गो स्तम्भ-लेख पायल जाला जेकर विवरण नीचे देल जाइत बा :—

(१) लउरिया नन्दनगढ़ :—

ई जगह बेतिया शहर से १६ मील उत्तर-पच्छिम में बा। इहाँ ३२ फुट ६॥ इंच ऊँचा एगो स्तम्भ बा। स्तम्भ के ऊपर एगो सिंह के मूर्ति बइठावल बा। सिंह के मुख-भाग टूटल बा। ई के तोरलक एकर पता ना चले। स्तम्भ चमकदार पत्थर के एगो कुंदा बा। ए पर पाली भासा के सुन्दर और साफ-साफ अच्छर में अशोक के धर्म-लेख खोदल बा। एकरा अलावे स्तम्भ पर तीन तरह के आउर खोदाई पायल जाले। एक जगह फारसी-लिपि में 'मोहिउद्दीन मुहम्मद औरगजेब पादशाह आलमगीर गाजी, सन् १०६१ लिखल बा। दोसर जगह देवनागरी लिपि में 'नृप नारायण सूत नृप अमर सिंह, खोदल बा। लेकिन ए पर कोई तारीख नइखे खोदल जेह से पता चलो कि ई कब खोदल गेल। सन् १७६२ ई० में र्यूबन बरों साहेब, जे बंगाल के अनुसंधान सोसाइटी के एगो सदस्य रहस, अपन नाम स्तम्भ पर खोदवा देहलन।

(२) लउरिया अरेराज :—

ई जगह मोतीहारी शहर से १६ मील दच्छिन-पच्छिम में बा। इहाँ भी प्रियदर्शी अशोक के द्वारा ई० पू० २४६ में बनवावल एगो स्तम्भ बा। जमीन से एकर ऊँचाई ३६॥ फुट बा। एकरा ऊपर के भाग नइखे। लेकिन अनुमान कैल जाला कि ए पर एगो सिंह के मूर्ति जरूर रहल होखी। एकरा उत्तर के भाग काल के प्रभाव से बिलकुल काला हो गेल बा। ए पर अशोक के धर्म-लेख दू जगह खोदल बा। एक जगह १८ पंक्ति बा और दोसरा जगह २३ पंक्ति। एहु स्तम्भ पर र्यूबन बरों साहेब अपन नाम सन् १७६२ ई० में खोद-वएले रहस।

(३) रमपुरवा-पिपरिया :—

ई जगह शिकारपुर थाना में गौनाहा रेल-स्टेशन से २ मील दच्छिन में बा। इहाँ भी अशोक के बनवावल एगो स्तम्भ रहे। लेकिन उ स्तम्भ के केहु चिढ़ से तोड़ देलक। अनुमान बा कि ई दुष्कर्म मीर जुमला, जे औरंगजेब के सेनापति रहस, शाह

सुजा के मार के बंगाल से लौटे के बेर कएलन। एकर पता कार्लेल साहेब लगौले रहस। एक दिन कुछ थारू लोग हुनका के कहलक कि लउरिया के स्तम्भ के अइसन एगो स्तम्भ रमपुरवा में बा जेकरा के उ लोग भीमसेन के लाठी कहेला। ए पर भी अशोक के धर्म-लेख खोदल बा जे लडरिया-नन्दनगढ़ और लडरिया-अरेराज से मिलता-जुलता बा। ई देख के बड़ा अचरज में पर जायल जाला कि ए स्तम्म के ऊपर साँढ़ के एगो मूर्ति र जब कि और सब स्तम्भ पर सिंह के मूर्ति पायल जाले। आजकल इ मूर्ति नई दिल्ली के राष्ट्रीय संग्रहालय में सुरचित बा।

हम ऊपर लिख अइलीं ह जे चम्पारन के तीनों स्तम्भ पर एके तरह के लेख खोदल बा। सब स्तम्भ पर छव गो धर्म-लेख लिखल बा जेकर विवरण नीचे देल जाइत बा:—

(१) पहिला स्तम्भ-लेख :—

"देवता के प्रिय प्रियदर्शी राजा अइसन कहइत वाड़न :—राज्याभिषेक के बरिस बाद हम ई धर्म-लेख लिखवइली। अत्यन्त धर्मानुराग के बिना, विशेष आत्म-परीचा के बिना, खूब सेवा के बिना, पाप से खूब भय के बिना और महान उत्साह के बिना ये लोक में और परलोक में सब जगह सुख दुर्लभ बा। लेकिन हमारा शिक्षा से (लोग के) धर्म में आदर और अनुराग बढ़ल ह और आगे और भी बढ़ी। हमर पुरुष (राजकर्मचारी) चाहे उच्च पद पर होखस या नीच पद पर या मध्यम पद पर (हमरा शिक्षा के मुताबिक) काम करेलन और अइसन उपाय करेलन कि चंचल बुद्धि के लोग (दुर्विनीत या पापी) भी धर्म के आचरन करेले। धर्म के मुताविक्र पालन कएल, धर्म के मुताबिक काम कएल, धर्म के मुताबिक सुख देहल और धर्म के मुताविक रच्चा कएल इहे कानून (शासन के सिद्धान्त) बा।

(२) दूसर स्तम्भ लेख :—

"देवता के प्रिय प्रियदर्शी राजा अइसन कहइत वाडन : धर्म कएल अच्छा ह। लेकिन धर्म का ह? धर्म इहे ह कि पाप से दूर रहे, बहुत-सा अच्छा काम करे, दया, दान, सत्य और शौच (पवित्रता) के पालन करे। हम कै तरह के आँख (चच्चु) के दान या आध्यात्मिक दृष्टि के दान भी लोग के देले बानी। दू पैर के जानवर, चार पैर के जानवर, चिरईं और पानी में जीव-जन्तु पर भी हम किरपा कैले बानी, हम ओकरा के प्रान के दान भी देले बानी। आउर भी बहुत किसिम के कल्यान के काम हम कैले बानी। इ लेख हम एला लिखवइली ह कि लोग एकरा मुताबिक्र आचरन करे और चिर स्थाई रहे। जे एकरा मुताबिक काम करी, उ पुन्य के काम करि।

(३) तीसर स्तम्भ-लेख :—

"देवता के प्रिय प्रियदर्शी राजा अइसन अहसन कहइत बाड़न :—मनुष्य अपना अच्छे काम के देखेला (और मन में कहेला कि) "हम अच्छा काम कइली ह।" लेकिन उ अपना पाप के ना देखेला (और मन में कभी न कहे कि) "ई पाप हम कइली ह या दोख हमरा में बा।" एह तरह के आत्म-परीचा बड़ा कठिन बा। तबहु आदमी के ई देखे के चाहि कि क्रूरता, निठुरता, क्रोध, मान, ईर्स्या, ई, सब पाप के कारन ह और ए वजह से आदमी अपन नाश न होए देव। ए बात के ओर खास करके ध्यान देवे के चाही कि ए (रास्ता) से हमरा ए लोक में सुख मिली और ए (दोसरा रास्ता) से हमर परलोक भी बनी।

(४) चउथा स्तम्भ-लेख :—

"देवता के प्रिय प्रियदर्शी राजा अइसन कहइत बाड़न :—राज्याभिषेक के २६ बरिस बाद हम ई लेख लिख वइली। हमर रज्जुक नाव के कर्मचारी लाखों आदमी के ऊपर बहाल वा। इनाम या दंड देवे के अधिकार हम ओकरे अधीन कर देले वानी, जे से कि उ निश्चिन्त और निर्भय हो के अपन कर्त्तव्य करस और लोग के हित और सुख के खेयाल रखस और लोग से अनुग्रह करस। (लोग के) सुख और दुख के कारन जाने के कोशिश करिहेन और धर्मशील आदमी लोग के साथे लोग के अइसन उपदेश दिहेन कि जे से उ लोग ए लोक में और परलोक में दूनु जगह सुख पाई। रज्जुक लोग भी हमरा आज्ञा के पालन करि। हमर 'पुरुख' (नाव के कर्मचारी) भी हमरा इच्छा और आज्ञा के मुताविक काम करी। उ (पुरुख) भी कभी कभी अइसन उपदेश दिहेन, जे से रज्जुक लोग हमरा के खुश करे के कोशिश करि। जे लेखा कौनो आदमी अपना बच्चा के निपुन धाय (लौड़ी) के हाथ सौंप के निश्चिन्त हो जाले (और सोचले) कि ई धाय हमरा बच्चा के सुख पहुँचावे के भरपूर कोशिश करि, ओहि लेखा लोग के हित और सुख पहुँचावेला हम रज्जुक नाव के कर्मचारी नियुक्त कैले वानी। ई लोग निर्भय, निश्चिन्त और शान्त-चित्त हो के काम करो, एह ला हम इनाम और दंड देवे के अधिकार ई लोग के अधीन कर देले वानी। हम चाहिले कि व्यवहार (न्याय के काम) में और दंड (सजाय) देवे में पच्छपात ना होए। उह से आज से हमर ई आज्ञा वा कि कारागार (जेल) में पड़ल जौन आदमी के फाँसी के दंड निश्चित हो गेल वा हुनका के तीन दिन के मुहलत देल जाय। (ए बीच में अर्थात् तीन दिन के मुहलत के भीतर) जे लोग के फाँसी के सजाय भेल बा हुनकर जाति परिवार के लोग हुनका ओर से हुनका जीवनदान ला (रज्जुक लोग से) पुनर्विचार ला प्रार्थना करी या उ आखिरी समय तक ध्यान में रख के परलोक ला दान दिहेन या उपवास करिहेन। काहे कि हमर इच्छा वा कि कारागार में रहते भी दंड पायल लोग परलोक के चिन्तन करो और वहुत प्रकार के धर्माचरण, संयम और दान करे के इच्छा लोग में वढ़ो।

(५) पाँचवा स्तम्भ-लेख :—

"देवता के प्रिय प्रियदर्शी राजा अइसन कहइत बाड़न :—राज्याभिषेक के २६ वरिस वाद हम नीचे लिखल प्राणी के वध वर्जित कर देली :—सुग्गा, मैना, अरुण, चकोर हंस नान्दीमुख गेलाट, जतुका (चमगीदड़), अम्बा कपीलिका (दीमत), दुड़ि (कछुवी), विना हड्डी के मछरी, वेदवेयेक, गंगापुपुटक, संकुज-मत्स्य, कछुआ, साही, पर्णशास (गिलहरी), स्टमर (बारहसिंगा), साँड, ओकपिंड, पलसत (गेंडा), खेत कबूतर, गाँव के कबूतर और सव तरह के ओइसन चार पैर वाला जे न त कौनो तरह के काम में आवले और न खायल जाले। गाभिन या दुधार वकरी, भेड़ी या सुअरी के और ओकर वच्चा के, जे छव महीना तक होए, न मारेल के चाहिं। मूर्गा के वध न करे के चाही। जीवित प्राणी के साथ भूसी के न जलावे के चाही। अनर्थ करेला या प्राणी के हिंसा करेला बन में आग न लगावे के चाही। एगों जीव के मार के मार के दोसरा जीव के न खिलावे के चाही। हर चार-चार महीना के तीन रीतु पूरनमासी के दिन, पूस महीना के पूरनमासी के दिन, चतुरदसी, अमावस और प्रतिदिन के दिन और हर उपवास के दिन, मछरी न मारे के चाही और न बेंचे के चाही। ए सब दिन हाथी के बन में और तालाब में कोई भी दोसरा तरह के जीव न मारे के चाही। हर

पख के अठमी, चतुरदसी, अमावस या पूरनमासी और पुनरबस नछत्र के दिन, तीन चतुरमासी के दिन और त्योहार के दिन बैल के बध न करे के चाही और बकरा, भेंड़ा, सुअर और एही तरह के दोसर प्राणी के जेकर बध होखले, बध न करे के चाही। पुख और पुनरबस नछत्र के दिन, हर चतुरमास के पूरनमासी के दिन और हर चतुरमास के इजोरिया पख में घोड़ा और बैल के न दागे के चाही। राज्याभिषेक के बाद २६ बरिस में हम २५ के कारागार से बन्दी लोग के मुक्त कइलीं।

(६) छठा स्वम्भ-लेख :—

"देवता के प्रिय प्रियदर्शीं राजा अशोक अइसन कहइत बाड़न :— राज्याभिषेक के बारह बरिस के बाद हम धर्म-लेख लोग के हित ला लिखवइली, जे से कि उ लोग (पाप के रास्ता के) छोड़े के भिन्न भिन्न प्रकार से धर्म के बढ़ावा देवे। एही लेखा हम हम लोग के हित और सुख के लक्ष्य में रख के इ देखीले कि न केवल हमर जाति कुटुम्ब के लोग बरन दूर के लोग और पास एके लोग भी के लेखा सुखी रह सकले। एही (उद्देश्य, के मुताबिक हम काम करिले। एही लेखा सब समाज के (हित और सुख के) हम ध्यान में रखिले। हम सब पाखंड (सम्प्रदाय) के भी अनेक प्रकार से सत्कार कैले बानी। लेकिन अपने आप खुद (लोग के पास) जाएल—ई हम (अपन) मुख्य (कर्त्तव्य) मानीले। राज्याभिषेक के २६ बरिस बाद हम ई धर्म-लेख लिखइली।"

——०——

कुल्हि एके हऽ

कागज पर लिखल करिया आखर,
बोलत मन के भाव,
खोलत पट जिनिगी के।
कबहूँ जोन्ही से बतिआवे
कबहूँ छूवे तह सागर के
कबहूँ, बने पात फुनगी के।।
कागद पर लिखल करिआ आखर
खोलत सहज दुआरि ब्रम्ह के।
कथी जोग हऽ, के योगी हऽ
सरग कहाँ बा, कइसन नरक
का आदि ह, के अनादिहऽ
झलके जइसे मोती कलँगी के।।
कागद पर लिखल करिया आखर,
नाद ब्रह्म के, हलचल जनम मरन के,
पहिला पहिल सबद डमरू के
खून से जामल फूल, साँचल धन जिनगी के
कुल्हि एके हऽ

सिंहबाहिनी, प्रसाद, पुराना भोजपुर

(पाहुर)

जादुर-गीत (मुण्डारी)

अढारह सौ निन्नानावेरे होको रकत्र लेन तेलेंगा चपरासी को ।
मारे होको ऊपर लेना बिरसा भगवान को ॥
मारे होको डेरा केदा सलगा सपरुम रे ।
मारे होको वासा केदा सोयको गुटुहातु रे ॥
मारे होको टोपोटेतन ठाले ठुले वन्दुकते
मारे होको तेपेरेतन हरे हुरे हुरुदांग ते ।
तारा होको राउडू जन डोम्बारी बुरु चेतन रे
तारा होको निरे जन सिंगी तुरो होराते ।

हिन्दी अनुवाद)

अढारह सौ निन्नानबे साल में अंग्रेजों का चपरासी यहाँ आया ।
उसी समय विरसा भगवान दल वाले भी आये ।
उन्होंने सलगा सपरुम में डेरा डाला ।
उन्होंने वन्दूक से ठांय-ठांय गोली चलाई,
उन्होंने ढेल कुसी से दनादन ढेले फेंके ।
आधे आदमी डुम्बारी पहाड़ के ऊपर ही गिर पड़े
आधे आदमी पूरब के रास्ते से भाग गये ।

जादुर-गीत (मुण्डारी)

छोटानागपुर बिरसा एकेला केदाया बिबसा
चुलु बुकुरा विरसा तायुर केदाया विरसा
कुन्दुरु गुटुरे लिरसा उकु केनाया विरसा ।
"बुदु बाबुवा" बिरसा लेल केद मेयाया विरसा
रांचो होराने विरसा को इदि केद मेयाया बिरसा
मेडेद गाड़ी रे बिरसा को लेने केद मेयाया बिरसा
अमगः मयोमा बिरसा को अकरिङः केदाया बिरसा
सनुम मेन्ते बिरसा को किरिङ केदाया बिरसा ॥

(हिन्दी अनुवाद)

हे बिरसा, तुमने छोटानागपुर को हिला दिया ।
हे विरसा, चुलु बुकुरा (गाँव को) हिला दिया ।
विरसा कुन्दुरु गुट्टू गांव में छिपा था ।
बुदु वाबू कहते हैं कि शत्रुओं ने विरसा को देख लिया ।
हे बिरसा, राँची के रास्ते पर तुमको वे ले गये ।
लोहे की गाड़ी से बिरसा को छिपे-छिपे मार डाला ।
हे विरसा, उन्होंने तुम्हारा खून बेच दिया ।
और तेल (समझकर) लोगों ने खरीद लिया ।

संकलयिता—श्री रमण, (राँची)

भोजपुरी शब्दकोश

(गतां कसे आगे)

संज्ञा शब्द

कुलार (पु०)—वह दुलार जिसका प्रभाव या उद्देश्य हानिकारक हो। दुलार का विपरीत।

कुल्हीया (स्त्री०)—बच्चों का मिट्टी का खिलौना जिसमें चार छोटी प्यालियाँ एक साथ जुड़ी होती हैं।

कुँवरथ—कौमार्य। विवाह होने के पहले की एक रस्म। दुलहा दुलहिन के क्वाँरपन उतारने की एक रस्म।

कुसँच—सम्यक रूप से किसी वस्तुका संयम न हो सकना।

कुसञ्जिम—असंयम। बदपरहेजी।

कुसाइत—खराब साइत। बुरी घड़ी या अशुभ क्षण।

कुसाज—बुरे साधनों का इकट्ठा होना।

कुसाट—बेमेल।

कुराग—खराब स्वभाव।

कुराह—कुमार्ग।

कुरुई—ताड़के पत्तों से बनी छोटी गहरी डलिया।

कुसाली—अकालका वर्ष। अत्यंत अभावका दुर्दिन।

कुसुम—बर्रें का फूल जिसके रंगसे कपड़े रँगे जाते हैं।

कुहेस—कुहासा, कुहरा। भ्रम।

कूँअर—कुमार। क्वाँरा लड़का।

कूँअरि—प्रौढ़ा या वृद्धा अथवा विधवा स्त्री के नाम के साथ व्यवहृत होने वाली उपाधि।

कूक—कोयलकी बोली। बालकोंकी किलकारी।

कूकुर—कुत्ता।

कूचा—झाड़ू। कच्चे आमको कुचलकर बनाया अँचार।

कुँची—छोटी झाड़। दातूनका दाँत से कुचला हुआ अंतिम छोर। ब्रश।

कुजा—मिट्टी या धातुका लंबा गिलास।

कूट—खलिहान में भूसा मिली हुई अन्नकी राशि। कागज की दफ्ती।

कूटी मसखरी, दिल्लगी। तफरीह, मजाक। व्यंग्य।

कूटी—कूट्टी, पशुओं के खाने के लिए पुआल, घास या हरियाली को काट कर बनाया हुआ चारा।

कूड़ी—कुए से (लट्ठे के सहारे) पानी निकालने के लिए बड़ा डोल।

कूदी—बंटने वाली वस्तु की छोटी-छोटी राशि।

कूनह—कुटिलता, कपट, वैमनश्य, मनोमालिन्य।

कूनी—लकड़ी का कुन्दा। काष्ट चूर्ण।

कूपी—तेल आदि रखने के लिए पतले चमड़े की गोल शीशी।

कूर—क्रूर, खल। बड़ी रशि। किसी वस्तु की ढेरी।

कूरी—छोटी राशि। जाती-विभाग। गोत्र-विभाग।

कूल्हा—जाँघ और कमर के बीच की गांठ वाली हड्डी।

भोजपुरी मुहावरे

(क्रमशः)

जग जीतल—बहुत बड़ी विजय पाना। कोई अभूतपूर्व कार्य करना। बहुत बड़ी सफलता के कारण समाज में प्रभावशाली होना।

जगह कइल —किसी स्त्रीका एक पति छोड़कर दूसरे नये पति से संबंध करना।

जगह जमीन कइल—कमाईसे भू संपति अर्जित करना।

जजी कइल—वेकार बैठे-बैठे कुरसी तोड़ना। गप-शप में आलस के दिन काटना। दूसरों की बातचीत में अनावश्यक दखल देकर विना समझे बुझे फैसला दे देना।

जतरा बनल—कार्य सिद्ध न हो। विगड़े काम का वन जाना। अचानक लाभ होना।

जनमतुआ बनल—दुधमुँहें बच्चे की तरह अनजान वनना। जान बुझ कर किसी जानी सुनी वात के न जानने का स्वाँग करना।

जबजबी लागल —किंकर्त्तव्य विमूढ होना। बुद्धि कुंठित होना। आगा पीछा न सूझना।

जबह कइल—क्रूरता से हत्या करना। किसी को असहह्य कष्ट देकर सताना।

जबाव दीहल —किसी को नौकरी से अलग करना। गुरूजनों की वात पर मुँह तोड़ वात कहना।

जरल निअन बात बोलल—दिल जलाने वाली वात कहना।

जरला पर नून दरल —जले पर नमक छिड़कना। किसी दुखिया के प्रति हृदयवेधी वात कहना

जरी काटल —जड़ काटना। किसीको समूल नष्ट करना। किसी की रोजी में खलल डालना।

जरिके फुटहा भइल—जलकर राख होना। डाहसे जल भुन जाना। असह्य वात सुन क्रुद्ध हो उठना।

जरी लागल—बुराई की नीयत से किसी के पीछे पड़ना।

जले में जल भइल—धनी के पास धन का आगमन होना।

जहर उगिलल—बिषाक्त वात बोलना।

जहर के घोंट घोंटल अत्यंत कड़वी बात को सहन शीलता या विवशता के कारण सह लेना

जाङर चलावल—शारीरिक परिश्रम करना। हाथ-पैर चलाकर कमाना।

जाङर में घुन लागल—अत्यंत आलसी होना। मिहनत से जी चुराना।

जाति के भात ना खाइल —स्वजातीय वर्ग में सम्मिलित न होना। किसी स्त्री का कुल मर्यादा न निवाहना।

जान के जान ना बूझल—जान पर खेलकर कोई काम करना। घातक खतरों से जूझना।

जान पर खेल गइल—प्राणों का मोह छोड़कर कोई दुस्साहसपूर्ण काम कर जाना। खतरों से खेलना।

जान पर गरहन लागल—प्राण संकट में फंसना। घोर विपति में पड़ना।

जान लड़ा दीहल —प्राणपण से तत्पर होकर कार्य सिद्धिका प्रयत्न करना।

जाह लागल—यथार्थ का निर्णय न हो पाना। आगा पीछा न सूझना।

जिअते माछी लीलल —जान बूझकर कोई अत्यंत घृणित काम करना। सत्य और धर्म की उपेक्षा करना।

जीट बघारल —शान बघारना। डींग हाँकना। बढ़ चढ़ कर बातें कहना।

जीभि काटल—अरुचिकर या अशोभन बात कह कर पश्चाताप करना और आगे फिर वैसी बात न कहने का मनमें संकल्प करना।

जिभि चलावल—चुगल खोरी करना। चापलूसी करना। इधर की बात उधर कहना सुनना।

पुस्तक-परिचय

'आत्मा'—रहस्य ब्यंग्य साप्ताहिक, सम्पादक आत्मानन्द सिंह, प्रकाशक श्री प्रेम प्रकाश सिंह। बोरिंग रोड पटना ३ से प्रकाशित, पन्ना १२, दाम ३६ नया पैसा।

आत्मा :—हँसी, मजाक, ब्यंग से सम्बन्ध राखेवाली साप्ताहिक पत्रिका ह। मशहूर ब्यंगकार आत्माजी से करीब-करीब समूचा पढ़ल-लिखल लोग परिचित बा। आपने का उपनाम पर इ पत्रिका निकलली हँ। एह में राजनीतिक, सामाजिक या अउर सामाजिक घटना पर चुनल-चुनल उच्च कोटिके, ब्यंग चित्र, हास्य ब्यंग से सराबोर कविता, कहानी, चिठ्ठी-पत्री काल्पनिक मुलाकात, डायरी. फूटकर टिप्पणी या अउर छोट-छोट चुभत चुटकुला विषय रहेला। हिन्दीएना बाहर के भी आ विदेश के कार्टून या हास्य-साहित्य भी रहेला। जीवन और सामाज के प्रत्येक अंगपर कार्टून, आ हिन्दी संसार के विद्वाननि के हास्य ब्यंग से भरल लेख रहेला। हिन्दी में अपना ढङ्ग के इ पत्र अनूठा बा। साप्ताहिक शंकर से कुछ मिलत-जुलत एह पत्रिका के सुन्दर कागज पर साफ छपाई बा। एह कमी के पूरा करे खातिर आत्माजी बधाई के पात्र बाड़े।

नर-नारी :—(काम मनोविज्ञान सम्बन्धी मासिक पत्रिका) सम्पादक द्वारका प्रसाद एम० ए० आ वीरेन्द्र वात्स्यायन, नर-नारी प्रकाशन पटना ६ से प्रकाशित, पन्ना ७५ दाम एक प्रति ७५ नया पैसा, सालाना आठ रुपया।

नर-नारी,—काम मनोविज्ञान सम्वन्धो एक वहुत उच्च कोटि के पत्रिका ह। काम सम्बन्धी ज्ञान थोर-बहुत सब में रहेला, बाकीर ओकर अच्छाई बुराई के वारीकी पर वहुत कम आदमी ध्यान देले। आदमी खातिर काम एक वहुत जरूरी और जाने योग्य विषय ह आजकल के नवयुवक-नवयुवती के वैज्ञानिक ढङ्ग से काम संबंधी शिक्षा मिले के चाहीं। नर-नारी के माध्यम से इ काम बहुत खूवी से हो रहल बा। नाना प्रकार के काम सम्बन्धी लेख, कहानी, चिठ्ठी-पत्री से पूरा इ पत्रिका समाज खातिर लाभदायक बा। उमिरगर लोग खातिर त इ पत्रिका वहुते उपयोगी बा। परिवार-नियोजन पर भी तरह-तरह के शिक्षा देवेवाली लेख एह में देखे के मिलल। इहो पत्रिका अपना रंग में एकेले विया सम्पादक मंडल एगो सराहनीय आ अभाव के पूरा करनेवाला काम कर रहल बाड़े। सव के एह पत्रिका पढ़े के चाहीं।

परिषद्-पत्रिका—(त्रैमासिक) सम्पादक मडल लक्ष्मी नारायण सिंह सुधांशु, रामधारी सिंह 'दिनकर', रामबृक्ष वेनीपुरी. मोहन लाल महतो 'वियोगी'—प्रबन्ध सम्पादक डा० भुवनेश्वर नाथ मिश्र 'माधव', सहायक सम्पादक हवलदार (निर्मोही), श्री रञ्जन सूरिदेव-प्रकाशक बिहार राष्ट्रभाषा परिषद पटना-६ पृष्ठ संख्या १२२ बरिस भरि के ६ रुपया एक अँक के डेढ़ रुपया।

राष्ट्रभाषा परिषद से प्रकाशित इ पत्रिका हर तरह से सुन्दर सुसज्जित आ सुव्यवस्थित बा। बड़े-बड़े विद्वानन के शोधपूर्ण लेख एह में रहता। हिन्दी के बड़े-बड़े विद्वानन के सहयोग एह पत्रिका का प्राप्त बा। हिन्दी साहित्य के एह पत्रिका से ऊँचा उठे में बहुत सहायता मिली। छात्रन खातिर, शोधपूर्ण काम करे वाला विद्वानन खातिर त इ पत्रिका निहायत जरूरी बा। ऐसन सर्वांग सुन्दर पत्रिका निकाले खातिर सम्पादक मंडल बधाई के पात्र बा।

खाद्य के विषय में आत्मनिर्भरता के लिये बिहार की योजनायें

कृषि के विकास पर ही सब प्रकार की उन्नति आश्रित है। बिहार में उद्योग के विकास के लिए कृषि का दृढ़ आधार अपेक्षित है, इसलिये कि प्रत्येक व्यक्ति को पर्याप्त अन्न अवश्य उपलब्ध रहे। जनसंख्या की वृद्धि की दर को देखते हुए, बिहार-राज्य में, प्रति व्यक्ति १७'५ औंस खाद्य-सामग्री के आधार पर, कुल ८६ लाख टन अन्न की जरूरत पड़ेगी। प्रथम और द्वितीय-पंचवर्षीय योजनाओं की अवधि में, बिहार में लगभग २० लाख टनकी अतिरिक्त उत्पादन-क्षमता बढ़ी। तृतीय योजना में २०'२७ लाख टन अतिरिक्त उत्पादन-क्षमता का लक्ष्यांक रखा गया है।

'अधिक अन्न उपजाइये' योजनाओं की सफलता लाखो-लाख कृषकों के ही प्रयास पर आश्रित है। रासायनिक उर्वरकों, सुधरे हुए बीज आदि का उपयोग ही योजना के लक्ष्यांक की सिद्धि का सूचक होगा।

किसानों के लड़कों को कृषि-शिक्षा देने के लिये सबौर, राँची और ढोली में कृषि-महाविद्यालय स्थापित किये गये हैं। कुल सत्रहों जिलों में कृषि-विद्यालय खोले गये हैं। ग्रामस्तरीय कार्यकर्त्ताओं के प्रशिक्षण के लिये दो वर्षों का डिप्लोमा कोर्स चालू किया गया है। प्रगतिशील किसानों को सुधरी कृषि-प्रणाली के आधुनिक तरीकों से परिचित कराने के लिये प्रशिक्षण की व्यवस्था की गयी है।

तृतीय योजना में खाद्योत्पादन के कार्यक्रम में ग्राम पंचायतों के माध्यम से लोगों का सहयोग प्रायः निश्चित है। किसानों के लिये ऋण की व्यवस्था करने के निमित्त सहकारिता संस्थाओं को और अधिक शक्तिसम्पन्न किया जा रहा है।

जन-सम्पर्क विभाग, बिहार, द्वारा प्रसारित।

'अँजोर' पर सम्मति !

'अँजोर' की प्रति यथासमय प्राप्त हुई। आप सबोंका यह प्रयत्न अत्यन्त सराहनीय है। इस पत्रिका द्वारा आप भोजपुरी साहित्य और संस्कृति के उत्थान और प्रसार में सफल होंगे ऐसी मेरी धारणा है।

परमेश्वरी लाल गुप्त एम० ए०, पी० एच-डी (बम्बई)

'अँजोर' की प्रति देखने को मिली। मेरा ऐसा विचार है कि किसी भी लोक भाषा में इतने उच्च कोटि की पत्रिका अब तक प्रकाशित नहीं हुई। इसके प्रकाशन से राष्ट्र भाषा हिन्दी को कितना बल मिलेगा उसे तो हिन्दी भाषा भाषी ही समझेंगे। यदि यह पत्रिका दस वर्षों तक भी निकलती रही तो भोजपुरी-साहित्य का वह भंडार तैयार होगा जो किसी भी अन्य लोक भाषा के साहित्य से टक्कर ले सकेगा। इसकी जिम्मेवारी भोजपुरी भाइयों पर है। आशा है वे इसकी उपयोगिता समझ कर इसके प्रकाशन में पूर्ण सहयोग देंगे। मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें।

डा० शीलभद्र (हैदराबाद)

"अँजोर" के नियम

१ "अँजोर" में छपे खातिर जे भी रचना भेजल जाय ओकर प्रतिलिपि अपना पास ज राख लिहल जाय। प्रकाशित रचना भेजे के कृपा मत कइल जाय।

२ कवनो लेख, कविता, प्रश्न, चित्र आदि के छापे भा ना छापे के आ काटे-छाँटे के पू अधिकार सम्पादक के रही।

३ "अँजोर" में बिना नाँव-गाँव के मुलाहिजा कइले, रचनन के उत्तमता पर अधिक ध्या दीहल जाई।

४ पन्ना के एक ओर लेख लिखाये के चाहीं, भाव आ भाषा पर ध्यान त राखहीं चाहीं। जहाँ तक होखे लेखन के काया छोटे होखे के चाहीं।

५ रचनाके साथ लेखक के वर्तमान पता आ जन्म-स्थान के पता दूनो भेजेके चाहीं।

६ "अँजोर" के गाहक कवनो अंक से बनावल जा सकेला। जवना महीना में दाम ज जाई ओही महीना से गाहक समझल जाईं।

७ स्थायी गाहक भाई चिट्ठी-पत्री लिखत खानी आपन गाहक-संख्या जरूर लिखसु। ए वरिस के चन्दा भेजि के जे गाहक बनिहें उहे भाई स्थायी गाहक कहइहें।

८ रचना, मनीआर्डर, व्यवस्था सम्बन्धी पूछताछ के पत्र सम्पादक के पता से भेजे के चाहीं

९ आलोचना खातिर पुस्तक के दू प्रति भेजेके चाहीं।

'अँजोर' के विज्ञापन-दर

कभर के चौथा पन्ना —१५०)
,, तीसरा पन्ना —१२५)
साधारण पन्ना— १००)
,, आधा पन्ना—५५)
,, चौथाई पन्ना—३५)

एक प्रति के ७५ नया पैसा **सालाना स्थानीय तीन रुपया**

एह अंक के एक रुपया **बाहर साढ़े तीन रुपया**

[बिहार सरकार द्वारा विद्यालयों एवं पुस्तकालयों के लिए स्वीकृत]

अँजोर

[भोजपुरी के एकमात्र त्रैमासिक मुख-पत्र]

※

जामें रस कछु होत है ताहि पढ़त सब कोय
भाव अनूठो चाहिए भाषा कोऊ होय

—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

※

प्रधान सम्पादक
पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय

कला—३
अप्रिल
जुलाई

किरिन—१—२
१९६९ ई०

संपादक-मंडल
गणेश चौबे : रास बिहारी राय शर्मा
रामवचन द्विवेदी 'अरविन्द' : प्रो० वसंत कुमार : बजरंग वर्मा
सहायक संपादक
अविनाश चन्द्र विद्यार्थी

एह अंक में पढ़ीं :—

पन्ना
१. कब तक सनेह के किरिन उतरी अँजोर के (कविता)—अशांत १
२. भोजपुरी के संत—साहित्यकार स्वामी योगेश्वराचार्य, श्री हरिश्चन्द्र प्रसाद २
३. गँवार गादह (कहानी)—श्री रामवृक्ष राय 'विधुर' ६
४. मल्लाह-गीत (कविता)—प्रो० उमाकांत वर्मा ८
५. गुजरात के लोक गीत—श्री जोरावर सिंह डॉ० यादव ९
६. पतझार (कविता)—श्री रामनाथ पाठक 'प्रणयी' १३
७. सुरमा सगुन बिचारे ना (धारावाहिक उपन्यास)—श्री रमेशचंन्द्र झा १३
८. चार गो रूबाई (कविता)—श्री जगन्नाथ १९
९. भोजपुरी कहाउति में बैल—प्रो० सत्यदेव ओझा १९
१०. उमर के थोरी गोरी अमवाँ अगोरे रे (कविता)—श्री नाथ नारायण सिंह २३
११. थारू लोक गीत के झाँकी—श्री तारकेश्वर प्रसाद २३
१२ बृक्षारोपण—श्री रास विहारी राय शर्मा २६
१३. हमनी के धन इहे गंगाजी के जल बा (कविता)—श्री कैलाश राय कमरपुरी २७
१४. जिउतिया के कथा—ईश्वरी प्रसाद गुप्त २८
१५ दमरी राउत (कहानी)—स्वामी विमलानन्द सरस्वती ३०
१६. पंच परमेश्वर (एकांकी)—श्री ब्रजकिशोर ३५
१७. माँ (कविता)—श्री ललित मोहन पाण्डेय ४२
१८. पनिहारिन (कविता)—श्री गजानन प्रसाद ४३
१९. भोजपुरी शब्दकोष ४५
२०. भोजपुरी मुहावरे ४५
२१. भोजपुरी कहावतें ४६
२२. बरतन लोग कें बतकही (कविता)—श्री मुहदुब्बर ४७
२३. बरखा-गीत—श्री रामवृक्ष राय 'विधुर' ४८
२४. तसलवा तोर की मोर (गीत-नाटक)—सत्यनारायण केसरी 'सौरभ' ४९
२५. बउध-लीला (प्रबंध काव्य)—स्वामी विमलानन्द सरस्वती ५२
२६. आजादी से (कविता)—श्री राजवली दुवे 'तरल', वाराणसी ५६
२७. लोक-कथा—श्री गणेश चौबे ५७
२८. पुस्तक परिचय — ६१
२९. संपादक के विचार— ६२

प्रकाशक—भोजपुरी परिवार, पटना—३

'तमसो मा ज्योतिर्गमय'

अँजोर

धरती के लोर बाट जोहि रहल भोर के,
पह फाटल, बिहँसी अब किरिनियाँ 'अँजोर' के।

कला-३ | अप्रिल १९६२ आ जुलाई १९६२ | किरिनि-१-२

कबतक सनेह के किरिन उतरी अँजोर के

कतना कदम के डार हम रहनी अगोर के
तबहूँ तहार बाँसुरी बाजल ना भोर के
कबतक घिरल अन्हार में कलपत रही करेज
कबतक सनेह के किरिन उतरी 'अँजोर' के
जबतक तहार प्रान में नइखे दरद के मोल
हम का करब ई आँखि में मोती बटोर के
अइसे तहार चाल ई बाटे बहुत पुरान
जलऽ छटक करेज के कनखा खँखोर के
खोंता हमार प्यार के दिहलऽ सदा उजाड़
दिहलऽ ढकेल पाँक में बँहिया ममोर के
तबहूँ दिया उमेद के बाटे जरत 'अशान्त'
कबहूँ त पंख प्रान ई थिरकी नूँ भोर के

अशान्त

भोजपुरी के सन्त-साहित्यकार स्वामी योगेश्वराचार्य

—हरिश्चन्द्र प्रसाद बी० ए० (पूर्वी चम्पारन)

चम्पारण के प्रमुख सरभंग सन्त कवि आत्मतत्त्वदर्शी स्वामी योगेश्वराचार्य के जन्म सन् १२९२ फसली ,लगभग १८८४ ई०) में पताही थाना के रुपौलिया गाँव के एगो पाराशर गोत्र के ब्राह्मण परिवार में भइल रहे। हुनका पिता के नाँव पं० नकछेद पांडेय रहे। उ अपना माता-पिता के तीसर सन्तान रहस। हुनका जन्म भेला के पहिले एगो बात प्रकाश में ले आएल बड़ा जरूरी मालूम होत बा। बात ई रहे कि घर में हुनका सबसे बड़ भाई के जन्म भइला के बाद हुनका माता-पिता के एकर बड़ा अभिलाषा रहे कि हुनका घर में आउर सन्तान के पैदाइस होखो। एक दिन सौभाग्य से सरभंग सन्त भिनक रामजी घुमइत-फिरइत हुनका दरवाजा पर पहुँचलन। हुनकर पिताजी भिनक रामजी के बड़ा आवभगत कएलन। आव-भगत से खुश होके भिनक रामजी आशीर्वाद देलन कि हुनका घरे दू गो आउर सन्तान के उत्पति होई। एही लेखा समय बीते लागल। साधु ओ महात्मा के बरदान कहीं झू होला ! सन् १२८८ फसली (लगभग १८८० ई०) में हुनका घरे एगो सन्तान के उत्पति भइल जेकर नाम 'साधु' परल। ठीक ओकरे चार बरिस के बाद एगो आउर सन्तान के उत्पति भइल जे आगे चलके स्वामी योगेश्वराचार्य भेलन।

जब उ तेरह बरिस के रहस तबहिए हुनकर विआह हो गइल। दुर्भाग्य से छव बरि के बाद हुनकर पत्नी के देहान्त हो गइल। फेरू दोसर विआह तुरन्ते हो गइल और ए लेखा फेरू सांसारिक जंजाल में उ फँस गइलन। लेकिन हुनकर मन सांसारिक मोह-माय में रमइत न रहे। उ हमेशा इहे सोचस कि ए दुनिया में भगवान के भजन के विना जिअ बेकार बा। ई सब पर विचार कैला के बाद एक दिन रात में घर छोड़ के वैराग्य धार करे के विचार निश्चय उ करिए लेलन। एह समय हुनकर हालत 'साँप-छुछुन्दर' के हो गइल रहे। एक ओर माता-पिता के ममता और पत्नी के प्यार रहे और दूसरा ओर वैराग के प्रबल भावना विकराल मुँह बौले खड़ा रहे। आखिर में वैराग्य के जीत भइल। शु में उ सगुण और निर्गुण के झगड़ा में पड़ गैलन। लेकिन उहाँ भी निर्गुणे के विज भइल। उ निर्गुणवादी सन्त हो गइलन।

उ सारन जिला के सरभंग-सन्त स्वामी अलखानन्द के इहाँ जा के हुनकर शिष्यत ग्रहण कएलन। हुनकर मृत्यु सन् १३५० फसली (लगभग सन् १९४४ ई०) में भइल।

उ सरभंग-सम्प्रदाय के एगो प्रमुख सन्त कवि भइलन। उ कै गो ग्रन्थ लिखलन में 'स्वरूप गीता', 'स्वरूप-प्रकाश', 'विज्ञान-सार', 'भूकम्प-रहस्य', 'भवानी-सम्बाद', 'विष् स्तुति' आदि बड़ा प्रसिद्ध बा। ए सब ग्रन्थ में 'स्वरूप-प्रकाश आ प्रथम विश्राम' के छोड़ आउर सब अभी हस्तलिखित हालत में बा और उ सब हस्तलिखित ग्रन्थ के प्रति ग्रा बारागोबिन्द, डा० चकिया, जिला—चम्पारण के बाबा बैजूदास 'देव' और ग्राम बर डा० महबल, जिला मुजफ्फर पुर के श्री राधा शरण प्रसाद श्रीवास्तव के इहाँ सुरक्षित बा बाणी सब के कुछ संकलन हमरो पास बा। सम्बत् २००७ में बाबा बैजूदास 'देव' 'स्वरू प्रकाश आ प्रथम विश्राम' के मुजफ्फरपुर के विद्यासागर प्रेस से मुद्रित कराके प्रकाशित कै रहस। एकरा अलावे आचार्यजी के धार्मिक भावना के प्रचार वास्ते बरजी ग्राम में 'स्वरू कार्यकारिणी समिति' नाम के एगो संस्था के नींव डालल गइल रहे जे आजकल गतिशी नइखे।

'स्वरूप-गीता' के शुरू में बाबा बैजूदास जी आचार्य जी के बारे में जे परिचयात्मक पद्य देले बारन ओह से पता चलले कि उ बहुत बड़ा विद्वान और साधक रहस। हुनका श्रौत, स्मार्त, वेद, उपनिषद् आदि के विशिष्ट ज्ञान रहे और उ बड़ा नियमपूर्वक रहइत रहस।

हुनका ग्रन्थन में कै जगह दरियादास, रविदास, कबीरदास, नाभादास, दादुल, भरथरी, गोरखनाथ, मलूकदास, नान्हक, धरणीदास आदि सन्त-कविअन के कै कै बेर चर्चा आएल बा। एकरा अलावे उ माधोपुर के भीखम राम, राजपुर के भिनकराम, पंडितपुर के छत्तर बाबा, बड़हरवा के बालखंडी दास, फ़ुवरा के मनसाराम, ढेकहा के कर्त्ताराम, धवलराम आदि चम्पारण के प्रसिद्ध सरभंग सन्तन के बड़ा श्रद्धापूर्वक वर्णन कएले बारन।

हुनका शिष्य लोग के नामावली नीचे देल जाइत बा जेकर विवरण बाबा बैजूदास 'देव' 'स्वरूप-प्रकाश' के पद-संख्या १३ में देले बारन —

जागल राम रुपौलिया नगरी ॥
जहाँ योगेश्वर जन्म लिया है, शोर भये चहुँ सगरी।
वीरभद्र, भदई शिष्य वाके, भरत गगन में गगरी ॥
सूरज, लाल बहादुर, लंगट, भगवान मर्म के रगरी।
रघुबर, युगल, तवक्कल, मंगल, नथुनी, नत्थू बौध सबरी ॥
ज्ञान गर्जना करत शिष्य सब, रिपु हेरत नित सगरी।
धाइ धरत कछु विलम्ब करत ना, छीनत विषय सिर पगरी ॥
इंगला, पिंगला, शोधन करि के, पकड़ा सुखमन डगरी।
पाँच के मारि, पच्चीस वश किन्हा, जीत लिए नव नगरी ॥
कामादि खल शत्रु महाभट, पाइ लिए तेहि खबरी।
शील, संतोष, दया अरु क्षमा, विवेक से न संग पकरी ॥
रघुनन्दन, अविलाख, बेदामी, यह षोडश शिष्य केहरि।
नित्य करत सद्गुरु का आगे, पहिरि प्रेम की चूनरी ॥
बनि शिष्यन के पीछे बैजू, पायो आत्म हूनरी।
शब्द मिला सद्गुरु के कृपा, सकल कामना बिसरी ॥

उ जौन ब्रह्म के उपासना कएलन, उ मौलिक रूप में अद्वैत और निर्गुण बा। हुनका मुताबिक आत्मा और परमात्मा में कौनो भेद नइखे अपितु दुनु एके बा। एकरे के पुष्टि करे वास्ते उ 'स्वरूप-प्रकाश' में लिखले बारन :—

हम सो विलग जग कौन कहानी ॥
हमहीं ध्यानी, हमहीं ज्ञानी, हमहीं जड़ अज्ञानी।
हमहीं पुण्य-पाप में व्यापें, हम रवि शशि असमानी ॥
हमहीं घड़ है हमहीं धरती, हमहीं पवन पानी।
हमहीं राजा रंक कहावें, हमहीं जीव जहानी ॥
हमहीं माता हमहीं पिता, हमहीं पुत्र कहानी।
हिन्दू तुरुक गुरु हम चेला, जाने विरला ज्ञानी ॥
हमहीं हम, हम कहे सबहीं में, लखु रे सज्जन जानी।
कहत योगेश्वर वेद हम माया, साहेब निराकार कहानी ॥

उ मन के 'ठग' के नाम से पुंकांरलन और सब के ओकरा से हमेशा संतर्क रहे के उपदेश देलन, काहे कि :—

मन से रहु चतुराई नहीं तो चलन बेर पछताई ।।
सौदा करन चले सौदागर, अमरपुर छोड़ी आई ।
यही सराय में सौदा परिगै, जाल दिए फैलाई ।।
तन सराय मन ठग बसत हैं, अपनी अदल चलाई ।
दस कोतवाल राह में राखे, सौदागर घेरवाई ।।
कपट प्रेम प्रीत से मोहे, सब अपनी ठहराई ।
जात समय सूद कौन बतावे, मूरो देत गँवाई ।।
बड़े-बड़े ज्ञानिन के मोहे, विरले माल वचाई ।
योगेश्वर दास मन ठग को बान्हो, सोऽहं स्वरूप लखाई ।।

उ परमात्मा के 'प्रियतम' और आत्मा के 'प्रियतमा' के संज्ञा दे के एगो विचित्र प्रेमलो के कल्पना कइलन। हुनका मुताबिक परमलोक 'ससुराल' वा और मर्त्य-लोक 'नैहर'। आत्मा रूपी युवती भगवान रूपी 'पिया' से मिलेला बेचैन बा काहे कि ससुराल जाए के ओकर दिन धरा गेल बा। जइसे-जइसे ओकर 'गवना' के दिन निअराइल जाइत बा तइसे-तइसे ओकरा कल नइखे पड़इत :—

दिन निअरइले गवनमाँ रे सजनी ।।
अपना पिया लागी पड़े न चएनवाँ, नाहीं भावे घरवा अँगनवाँ ।
छन-छन पल-पल-पल तरसनवाँ, कब होइहैं पिया से मिलनवाँ ।।
अब मोरा लागल हरि लगनवाँ, नैहर भैले सपनवाँ ।
योगेश्वर दास चले पिया मिलनवाँ, छुटि गैले बाबा के भवनवाँ ।।

अइसे त सगुण ब्रह्म के उपासक गुरु के महत्त्व देवेलन, लेकिन सन्त-मत के अनुयायी लोग एकरा के बहुत महत्त्व देवेला। ए मत के मुताबिक 'गोविन्द' से भी ज्यादे श्रेय 'गुरु' के देल जाले, काहे कि कबीर के शब्द में :—

गुरु गोविन्द दोनों खड़े, काके लागूँ पायँ ।
बलिहारी गुरु आपने, गोविन्द दिया बताय ।।

एहि से बिना गुरु के ज्ञान के एह लोक में कुछो न दिखाई देवे :—

अबरी अइले शुभ दिवस हमारे ।।
कायापुर शहर सोहावन, सुना देखन चित्र हमारे ।
माता पिता सुत भाई भार्या, ठाढ़ भये बटवारे ।।
पाँच पचीस दो शत्रु बत्तीस हैं, तातो युद्ध अपारे ।
काल समान भयानक गरजे, हम कह अकेला बेचारे ।।
ज्ञान सदा गुरु देव दिया है, तासो ढेल निवारे ।
जौन अनेक जीत भए वाके, अबकी बार हमारे ।।
कायापुर शहर के दश दरवजवा, ताला लागे गजारे ।
योगेश्वर सद्गुरु भेद कुंजी दिन्हे, खोली भवन पैसारे ।।

शरीर के क्षणभंगुरता के देख के हुनका बड़ा पछतावा भेल। उ 'स्वरूप-प्रकाश' में एक जह लिखले बारन :—

मोहि तजि कहाँ चलि गैले रघुबीरा ॥
खेलत खात फिरत आँगन घर, बोलत बचन गंभीरा।
जब-जब ख्याल परत लालन तोरे, लागत कलेजवा में तीरा॥
तुम्हरे रूप बिरह सागर में, भरा मोह के नीरा।
तृष्णा तरंग तरनी तन डोले, कैसे धरौं मन धीरा॥
गुण तुम्हार सुरति पर आवत, डस लेत काला कीरा।
रहतं बेहोस प्राण न छूटे, होत भयंकर पीरा॥
पल पल दुसह दुख दारुण, ढरत नयन से नीरा।
योगेश्वर जरत बिना आगि सो, का कैल हो रघुबीरा॥

ए वजह से संसार में मन के स्थिर करेला 'राम' के नाम लेवे के सिवा दोसर कौन उपाय बा :—

राम नाम चित्त लाई भजो रे मन, गै अवसर नहीं आई॥
पाके फल छूटे डाढ़िन से, लौटि डाढ़ नहीं जाई।
तैसे तन यह बीति जात जब, फिर न मनुज तन पाई॥
जैसे बुद बुद है पानी का, बीचे पवन समाई।
तैसे तन में स्वाँस भरी है, निकसत जात मेटाई॥
कच्चा तन को सच्चा मानत, सोई है मूर्खाई।
कबहीं अचानक में बीत जैहें, का करब पछताई॥
यह विचार को प्रथम ही चेतो, सबल भर्म बिसराई।
योगेश्वर दास सहज तरि जैहों, राखो एक सचाई॥
श्री हरि हरि गै अवसर नहीं आई॥

कबीर के लेखा उ भी सम्प्रदायवाद और जात-पाँत के बड़ा विरोध कएलन। हिन्दू और मुसलमान दुनू जाति के लोग के आपसी मतभेद भूल 'राम' और 'खुदा' के भजे के शिक्षा देलन जे से लोग के लोक परलोक दुनु बन जाओ :—

जागो हिन्दू-मुसलमान दौ, रटहु राम खोदाई॥
क्या झगड़ा आपस में ठाने, तू है दोनों भाई।
एके ब्रह्म व्याप है सब में का सूअर का गाई॥
कहँवा तू जनेऊ ले आया, कहँवा तू सुन्नत कराई।
जन्म समान भये दोनों का, ईहाँ भेष बनाई॥
भूख प्यास नींद है एके, रुधिर एक दिखाई।
झूठ बात में रगड़ा ठाने, दोऊ जात बोहाई॥
कहत योगेश्वर कहना मानो, जौं मैं देत लखाई।
सुषुप्ति में जा के देखो, कहाँ तुरुक हिन्दुआई॥

हुनकर सब कविता और वाणी में तत्सम शब्द के साथ मिलल भोजपुरी भाषा के प्रयोग भइल बा।

ए लेखा स्वामीजी से भोजपुरी भाषा और लोक दुनू के उपकार भेल बा।

गँवार गादह

—रामबृक्ष राय 'विधुर' (उत्तरी गाजीपुर)

फजीर क बेर। कुहेस छवले रहे। बँसवारि पिपिहिरी बजावति रहे। अ पुरुब क खिरिकी खोलि के झाँकति रहे। चिरई कचबच-कचबच कइले रह स। खूँटी, खेत, बाग-बगइचा, घर-दुआर चारू ओरि सोना जइसन अँजोर छित गइल रहे जइसे धरती सोना का पानी में बोरि के निकालि लिहलि होखे। बैल खूँटा प बइठल पागुर माँढ़त रहले स। हमहूँ दुआर पर बइठल घमनियाँ लेत रहलीं। एही बी करीमन बाबू अइले आ हड़बड़ा के पूछले "का हो आजु-कल्हि का होत बाटे ?"

"आईं-आईं। का होखो ? बइठकिए त बा।"

"नाहीं, आइबि ना। बाड़ा दोचित बानीं। आजु डाँड़ होखे वाला बा। मुंसी कीहें गइल रहलीं हँ। दुपहरिया में आवे के कहले बाड़े। नहा-खा के तह चलिअइह।" -

"अरे, आईं, बइठीं ; काहाँ डाँड़ होई ?"

"……… …रउवा बगइचवा का दखिन ओरि जेवनि पूरुब पछिव के लमहर परिअवा हवे, ओही क डाँड़ करेके बा। जानी जे आंइजा एक डेढ़ भाँड़ा खेत कम बाटे आजु आठ दिन से भूखि लागतिया न पियासि। अरि अरिअइतन कीहें दउरत-दउर टँगरी झुरा गइलि। डाँड़ करे का नाँवे केहू जिअते नइखे। डाँड़ क नाँवें सुनि के बोखा आवे लागत बा। हमरे खेत जनाता जे गंग बरार हो गइल बाटे। सब अवरुवा जानि धकिअवले रहत बाटे।"

करीमन बाबू साँसि रोकि के एक सुरुकिये कहत चलि जात रहले। हम बीच बाति काटि के कहलीं "आजु त सभ तइयार बानूँ ?"

'हूँ' करीमन बाबू ओठ चमका के कहले।

"ठीक बा। मिलि-जुलि के समुझि-बुझि लेवे के चाहीं। जमाना बड़ा खराब बा। एगो कहाउति हवे कि जनम के उढ़री, जवेले सुधरी। चलवला, बनवला के मोल हटे। केहुका कहला का फेर में ना परे के चाही। फेड़ा पर चढ़ावे वाला सभवा, बाकिर फेड़ा प ले उतारे वाला केहुवे केहू बा। सइगो में एगो।"

… .. …"चलत बानीं। तनीं सेंकराहे आइबि।"

"चलीं; जरूर आइबि।"

करीमन बाबू थोरे दूर जाके कहले 'सुनत बानीं ?'

'हँ, कहीं। का कहत बानीं ?"

"झूरी भइया का दालानि में चलि आइबि। सभ ओहीजे बिटुराई। तनीं सेंकरा चलि आइबि। हर-हरवाहि के दिन बा। बाड़ा टंग फटाँव बा।"

"चलीं। हम किछु मुँह में डालि के अवते बानीं।"

× × × × × ×

झूरी सिंह का दुआर पर पहुँचलीं त आंइजा अदिमी का मारे मेला लागल र अवार-जवार क चउधुरी लोग जूटल रहे। रस घोरात रहे। कराही बइठल रहे। बत

होति रहे। अवहीं मुंसीजी ना आइल रहले। सभ उनहीं क वाटि जोहत रहे। पुरुब ओर लें एगो सफइले अदिमी आवत लउकल। सभ केहू चकचिहा के चितवे लागल। मुंसी जी दुआर पर आ धमकले। करीमन वाबू खँखारि के कहले "चलीं सभे, अब खेत पर चलीं जा। दिन लभि गइल वाटे। घामें भर चमकत वा। दिन में कुछु वा ना।"

"हँ, हँ, अब चलवे करे के। हमार मेहनताना ले ले आईं सभे।" मुंसी जी मुँह लटका के, बाँया हाथ से पेट सुहुरा के कहले।

"चलीं, काम शुरू होखो। राउर मेहनताना कहाँ जाई।" करीमन वाबू मुंसी जी क झोरा हाथ में ले के कहले।

"ना, ना, एह कुलिइ में मरउअति का? पेट भरीं त पीठि लादीं। नौ नगद न तेरह उधार। जनलीं करीमन वाबू! हें....हें...हें..हँ।" सभ अरिअइत नमर पीछे एक-एक रुपया दीहल। तब मुंसी जी आगा फाल वढ़वले। एका-एकी सभ केहू खेत पर पहुँचि गइल। डाँड़ होखे लागल।

"पहिले पुरुब वली परिया नाँपि लेईं सभे।" मुंसी जी चस्मा आँखि पर से उतारि के कहले।

भेंड़ि नियर सभकेहू नक्शा पर मूँड़ी गड़वले रहल। खेत नपाये लागल। नाँपि-जोखि के झूर गड़ा गइल।

करीमन वाबू गाँगी से बहरा निकलि के कहले "बाह! ई डाँड़ हम ना मानवि।"

"ना मनबऽ त मति मानऽ। केकरा परवाहि लागलि बा', झींगुरी वाबू गरम होके जबाब दीहले।

दूनो दल गरम हो गइल। गाँगि बन्हा गइलि। नवहा छरके लगले स। जय-जयकार होखे लागलि। जेनिये देखीं ओनिये दोहरीक पगरी वन्हले सात हाथ क लउरि कान्हि पर धइले फूहर-पातर बकत लोग आवत रहले। बूढ़, जवान आ लरिका, पढ़ल-वेपढ़ल सभ केहू सात-सात पोरसा कूदे। मेहरारू कतहीं करिखही हाँड़ी लेके वइठलि रहली स। लड़का सन्-सन् ढेला मारत रहले स। सभ केहू नटई फारि-फारि के हू-हा नियर चिचिआत रहे। मुंसी जी हक्का-वक्का हो गइले। कल से एक ओरि वरकि के कहले "हद हो गइल। कपार खउले लागल। भला वताईं, वेखदी-वदी क झगरा। न केवनों गन्ह न सवाद! सभका लउरि से अँगारे वरिसत वा। धत् तेरी की! ई गाँव वाड़े स कि नरक।"

"आरे मुंसी जी, एहि क नाँव गँवार-गादह ह। थोरे-थोरे वाति का पाछा वेकार क झगरा आ तकरारि!"

"का कहत वानीं। हमारि त अकिलि गूम हो गइलि वा। बुझाते नइखे जे के पढ़ल-लिखल ह आ के गँवार! सभ केहू एके रङ्ग में रँगइाल वा। का मरद, का मेहरारू। केहू हारे हूँसे लायक नइखे। का गाँव रहले हऽसऽ आ का हो गइले सऽ। आजु ले पहिले का मेल जोल रहल ह! ई जेवनि पार्टीबन्दी चललि कि गाँव नरक हो गइबे स। गाँव-गाँवी में फूट, घर-घर में फूट। गाँव बिनास का भरसाइ में झोंकाइल जात बाड़े स।" मुंसीजी नाकि सिकुरा के कहले।

"कहीं मति।"

मुंसी जी दू-तीन फाल अउरी आगा वढ़ि के "राम-राम, रउवा सभका लाज नइखे लागति। चिरुवा भर पानी में बूड़ि मूवे के चाहीं। दुनियाँ कहाँ से कहाँ गइलि आ रउवा सभ...। सियरन क खिसा बाकि एक अदिमी हुँवा कइल कि सभ केहू हुवाँ-हुवाँ करे लागी। न सोचे के, न समुझे के।"

मुंसी जी क एतना बाति सुनि के दूनो गोल लजइला लइका नियर ढेढ़ुकी टोवत हेनी-होनी बरकि गइल। मुंसी जी हमरा से हँसि के कहले "सचहू ई गँवार-गादह अबहीं ढेर दिन ले चली।" हम मनही मन सोचलीं जे ई गँवार-गादह ना रहित त नमर पीछे एक-एक रुपया मेहनताना कहाँ से मुंसी जी पइते।

मल्लाह - गीत

—उमाकांत वर्मा

समवेत स्वर— हइया हो हइया
रामा हो हइया
हइया हो राम

स्त्री — नइया लगादे पार
रे माँझी, नइया लगादे पार
नदिया के पार मोरा बसेला सोहागरे
दमकेले भाग
रे माँझी, नइया लगादे पार

समवेत — हइया हो हइया
रामा हो हइया
हइया हो राम

मल्लाह — घेरि - घेरि बदरा झूमि - झूमि नाचे
जइसे के नाचे महाकाल
गे सजनी, कइसेके लागी नइया पार

स्त्री — रे माँझी, नइया लगादे पार
सुनुरे भइया मोर खेवइया
रोवत होइहें किसुन कन्हइया
रोकत चंचल धार
रे माँझी, नइया लगादे पार

समवेत — हइया हो हइया
रामा हो रामा
हइया हो राम, नइया लगादे पार

मल्लाह — देखगे सजनी टूटे तारा
जइसे टूटे थाती
काजर रतिया खाए अँजोरिया
तूड़त फूलल छाती
गे सजनी, कइसेके लागी नइया पार

समवेत — हइया हो …

दोसर स्त्री — सोना भइया, हीरा बहिना
छाड़ि दे आपन बैना
चीर बिजुरिया, घोर अन्हरिया
छन छन मारे डैना, रे माँझी, मिलिजुलि मारीं पतवा
रे माँझी, नइया त जाई ओही पा

समवेत —हइया हो …

गुजरात के लोक गीत

—जोरावर सिंह डो० यादव

मानव जन्म से ही संगीतप्रिय है। लोकगीत लोकजीवन का अमृत है! लोक गीतों के अज्ञात रचयिता गुजरात के विभिन्न गाँवों में बैठे हैं। जिन्हें न तो धन और समृद्धि की फिक्र है, न तो अपने नाम की। वे समाज और साहित्य-सेवा को अपना चरम कर्त्तव्य मानते हैं।

गुजराती लोकगीत में जीवन का आनंद और उल्लास व्यक्त किया गया है। इसके अलावा सासु-वधू के निर्मल स्नेह की पराकाष्ठा (climax) उसमें मिलती है। लोककवि दु:ख के बादल गिरा सकते हैं, मधुर दाम्पत्य के रंगों का कलायुक्त आलेखन कर सकते हैं, शोक को लहरा सकते हैं।

लोकगीत में जीवन कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष और माघ महीने का [१]मक्करा, फागुन की होली, चैत्र की चित्ताकर्षक मादकता, बैशाख की प्रफुल्ल वनस्पति, अषाढ़ के काले काले बादल, आश्विन मास की शरद पूनम की रात के सुन्दर वर्णन भी पाये जाते हैं। ऋतुगीत विभिन्न ऋतुओं में गाये जाते हैं। इन गीतों में विरहिणी स्त्री और ऋतुओं का आलेखन मिलता है। नवोढ़ा स्त्री ससुराल से अपने मायके गई है। वहाँ इसे ससुराल और अपने स्वामी की याद सताती है वह स्वामी को संदेशा भेजती है। उसका वर्णन इस गीत में किया गया है।

फागण फूल्यो फूलडे जे फूल्या केशर जाड़
अबील गुलालने छाँटणे रमे गोपीने कान
के आवा मोकलने मोरार!
चैतर चंपो मोरियोने मोयो दाड़म द्राक्ष
कोयलडी टहूका करे बेठी आँबा डाल
के आवा मोकलने मोरार!
वैशाखे वन वेडियाने वेडी आँबाशाख
रसे भरेली वाटको मने कोण कहेब तुं चाख?
के आवा मोकलने मोरार!
जेठ महिनाना ताप धणाने घरमा नव रहेवाय
हाथनो गुंथेल वींजणो कोने डोकुं वाय?
के आवा मोकलने मोरार!
भादरवो भल गाजियोने गाज्या वरसे मेह
हूँ रे भिंजाउ घर आँगणे पियु भिंजाय परदेश
के आवा मोकलने मोरार!

हे स्वामी फागुन मास रंग-विरंगी फूलोंकी मधुर सुगंध लेकर आ गया है, केशर के वृक्ष भी फूलों से महंक उठे हैं! कृष्ण और राधिका अबीर गुलाल के छिड़कावे से आनंद मना रहे हैं। मुझे सत्वर ही ससुराल में आना है इसलिए मेरे पिताजी को कह दीजिए कि जल्द ही विदा कर दें!

---

[१] लग्न समय की एक विधि

चंत मास भी आ गया। चंपा, अनार और द्राच की सुवास मन बहला देती! आम्र वृच की मंजरी में कोयल कुहू कुहू कर रही है! प्रियतम जल्द ही विदाकी माग को देखो तो सही, ये वैशाख मास भी आ गया, आम की शाख भी फूलों से लद गई! अमृत जैसौ आम का रस निकाला है! प्रियतम बिना मुझे कोन कहेगा कि इस रस का आ स्वादन कर! हे प्रियतम! तेरी याद मुझे बहुत सताती है!

ज्येष्ठ मास आया है! बहूत धूप पड़ रही है! मैं घर में नहीं रह सकती हूँ स्वयं अपने हाथ से वियना (Fan) बनाया है। अब मैं किसको वियने से ठंढी हवा खिला

भादो महीने में अपने आकाश में काले काले बादल घिर घिर कर हाथियों तरह चिंघाडते हैं वर्षा भी जोर से बरसने लगी है! मैं अपने घर मैं बैठी बैठी भींग रही मेरे स्वामी परदेश में भीग रहे हैं! इस तरह की मधुर कल्पना करते करते विरहिणी को आ गयी और नींद में उसने स्वप्न देखा। स्वप्न में उसने क्या क्या देखा उसका अपनी साहेली से करती है?

आजरे स्वप्नामां में तो डोलतो डुंगर दिठयो जो
खल खलतो नदियुरे साहेली मारा स्वप्नामां रे
डोलले डुंगर इ अमारो ससरो जो
खल खलती नदियेरे सासु जी मारा नहानां तारे
आजरे स्वप्लामां में तो गुलावी गोटो दिठ्यो जो
फूलडियानी फोयु साहेली मारा स्वप्नामां रे
गुलावी गोटो इ अमारो परायो जौ
फूलडिवानी कोयुं साहेली मारी खुंहठीकां रे···

हे सहेली! आज रात को मैंने स्वप्न में डोलता हुआ पर्वत देखा, वह पर्वत तुझे मालुम है? वे तो मेरे स्वसुर थे और कलकल नाद से बहती हुआी नदी भी देखी! मेरी सासु स्नान कर रही थी! सहेजी ने प्रसन्न होकर पूछा फिर····तो नवोढ़ा फिर मैंने अेक सुंदर गुलाब के फूल का गुच्छा देखा! उसकी सुमधुर सुवास भी मुझे आयी थी! वह सुंदर 'गुलाब गुच्छ' मेरे स्वामी थे! उन फूलों की सुवास से मेरा महक रहा था।

गुजराती लोक-कवि की मनोहर कल्पना इससे भी आगे बढ़ती है। इनकी उपमा तो देखिए! स्वसुर को डोलते हुए पर्वत की उपमा दी है! सासु जी को लहर, जेठ को अषाढ़ी बरसात, जेठानी को बादल की बिजली, देवर को लवंगकी ननद को सोने की थाली में भोजन करनेवाली, और ननदोई को वँदर की उपमा दी निम्नलिखित गीत में बनवासी राम और सीता के विवाह की कल्पना की गई है!

वननी चारी चीतरी रामैया राम
धरतीना कीधा वाजाठे रे रामैया राम
आमनो नाख्यो मांडवो रामैया राम
वीजली को परीधी वरमाल रे रामैया राम
नवलख तारा जोइ रहयां रामैया राम
चरणे चरणे सीता नेश्रीराम रे रामैया राम

समग्र वन को वेदी बनाया गया ! धरती को चौरंग मान लिया गया ! और आकाश का मंडप किया गया ! बिजली वरमाला मानी गई ! नभमंडल के नव लाख तारे विवाह के प्रेक्षकगण बन गये ! ये भी आनंद से हँस रहे हैं ; क्योंकि सीता और श्रीराम का विवाह हो रहा है ! लोक कल्पना में अैसी चमत्कृति का आस्वादन भी मिलता है !

राम और सीताजी का व्याह तो हो गया ! फिर अेक दिन दोनों में झगड़ा हो गया ! राम ने निर्दोष सीता जी को खूब पीटा ! सीताजी ने अुसका बदला लिया, लेकिन कैसे ?

लविंग केरी लाकडिये रामे सीता ने मार्या जो
फूल केरे दडूलिये सीताअे वेर वाड़या जो !"

राम ने लवंगकी लकड़ी बनाकर सीताजी को मारा तो सीताजी ने फूल का गुच्छा बनाकर राम को लगाया ! यहाँ मधुर संघर्ष में निर्मल प्रेम के ही दर्शन होते हैं ! राम और सीता का जीवन दांपत्य प्रेम कितना सुंदर और भव्य है ! वे तो आजीवन और मृत्यु के बाद जन्मजन्मान्तर में भी साथ रहता चाहते हैं ! सीता राम से कहती हैं,

हे स्वामी ! आप कहेंगे तो मैं आम की बीजली बन जाऊँगी ! तब राम ने प्रत्युत्तर दिया,

हे सीता ! यदि तुम आकाशकी बिजली बनोगी तो मैं मेघ स्वरूप तुम्हारे पास चला आऊँगा ।

गुजराती लोकगीत में प्रास के भी सुंदर एवं मधुर दर्शन होते हैं ! यह अेक चारणी गीत है ! अिसका सिर्फ प्रास ही देखिये !

फागुन प्रफूलितं बेल ललितं
कीर कलितं कोकिलं
गावत रस गीतम् वसंत वजितं
दन दरशितं दुःख दिलं

अषाढ़ उच्चारं मेघ मेलारं
वनी बहारं जलधारमं
दादुर ढकारं मयूर पूकारं
तडिता तारं विस्तारं
कहें राधेप्यारी हुं बलिहारी
गोकुल आओ गिरधारी

गुजरात का लोकजीवन प्रकृति परायण है ! गाँव के लोक अज्ञान होते हुअे भी निष्कपट उदार और मायालु होते हैं ! लोकजीवन में आतिथ्य का जो महत्त्व है वह आपको यह लोकगीत ही बतायेगा ।

अम घरे साजनिया भले आवारे ।
साजनियाने उतारा ओरडा देवरावोरे,
साजनियाने दातण दाडमी देवडावोरे,
साजनियाने भोजन लापसी देवरावोरे,
साजनियाने मुखवास अेलची देवरावोरे,
साजनियाने पोढण ढोलिया देवरावोरे,
पोढण ढोलिया लई करीने पडोने पांवडी,

पड़धी वागे ढोले शरणाई जाँपे वागें,
अम घरे साजनिया भले आवारे।

आज सद्भाग्य है कि मेहमानों ने मेरा घर पावन किया है। मेहमानों को रहने लिये मैं सुन्दर सजाया हुआ कमरा दूँगी! दातुन के लिये अनार की डाल दूँगी! भो में हलवा और मुख प्रक्षालन के लिये इलायची और आराम के लिये सुन्दर पलंग दूँ इसमें ग्राम जीवन का सुन्दर आदर्श बताया गया है! अिन गाँवों में मेहमान वनकर की हमें हौस होती है! ये लोग 'अतिथि देवो भव' मानते हैं।

गुजरात के लोक जीवन में लोकगीत ने अनोखा स्थान प्राप्त किया है। लोक श्रम निवारक संगीत है। स्त्री और पुरुष अपना कार्य करते-करते गाते हैं! खेतों में हैं! मेले में गाते हैं! पुत्र-जन्म के अवसर पर गाते हैं! लग्न प्रसंग में गाते हैं! नवरा जन्माष्टमी, और पूर्णिमा की चाँदनी में ग्राम नारियाँ और पुरुषबृन्द रास खेलते तालियों के ताले, झांझर की झंकार, बेड़ियो की रणकारके साथ गीत ध्वनि गूँज उठती जुवानी का समुद्र उमड़ उठता है; गीत भी कितना सुन्दर है?

जोवनियुँ आजे आव्युँने काल्य जाशे।
जोवनियुँ काल्य जातु रहेशे,
जोवनियाने आँख्यना उलाकामाँ राखो
जोवनियाने माथाना अँबोडामाँ राखो
जो·नियाने पठानी पानीमाँ राखो
जोबनियाने घाघराना घेरमाँ राखो
जोबनियुँ आजे आयुँने काल्य जाशे
जोवनियुँ काल्य जातु रहेशे।

मानव जीवन में यौवन अेक बार आता है! अपने जीवन में यौवन का उपयोग तरह से कर लेना चाहिए! यौवन आज आया है तो कल चला जायेगा। यौवन को आँ इशारे में रखो! शिर के बालों में, पाँव की एँडी में और अपनी चोली में रखो नहीं वह चला जायेगा। यौवन को किस तरह और कहाँ रखना चाहिए यह बताया गया है।

इस तरह लोकगीत में भिन्न-भिन्न प्रकार और स्वर हैं! जैसे कि लग्न रांदल गीत, ऋतु गीत, कथागीत, अैतिहासिक गीत, भजन, वालगीत, लोरियाँ, मूल और कृष्ण गोपियों के शृंगार गीत।

इन गीतों में गुजरात की लोक संस्कृति का दर्शन होता है! भारतीय संस्कृ गुजरात की लोक संस्कृति निहित है। गुजरात के गाँवों में लोक साहित्य के ढेर हैं से हीरे और मोती जैसे चमकदार लोकगीत भी मिल आते हैं किन्तु उनकी (Research) करना बहुत आवश्यक है।

—o—

पतझार

रहरेठाके झाड़ लेके घरसे चलल कनुनियाँ,
चलल माथपर खाँचा लेके अलगू अउर नथुनियाँ।

घूमि-घूमि के भूमि-भूमि के पतई रहल बटोर,
रोज बगइचा में पहुँचेला उठि के भोरम्भोर।

करिखा और पसीना मिलि के रँगदेला जब देह,
कनुआ अउर कनुनियाँ के तब नाच उठेला नेह।

का बरखा, का जाड़ा गरमी, सभदिन एके काज,
धह-धह घुनसारी में बइठल भूँजे रोज अनाज।

खपड़ी में बालू गरमाला, तब चमड़ी में खून,
दूनों साँझ पड़े थरिया में खाली सातू-नून।

ठाँव-ठाँव उत्सव वसन्त के मना रहल संसार,
कनुआ अउर कनुनियाँ दूनों मना रहल पतझार!

—रामनाथ पाठक 'प्रणयी'

(धारावाहिक उपन्यास)

सुरमा सगुन बिचारे ना

—रमेशचंद्र झा (चम्पारण)

चारू ओर अन्हरिया छा गइल रहे। अइसन अन्हरिया जे अपने हाथ अपना ना सूझे बाकी रात ऊपर से नीचा गिर गइल रहे, पह फाटे-फाटे भइल रहे। बाबू चैना सिंह आपन पलटन सहेज के पहिलके गढ़ पर हमला बोल दिहले बाकी गढ़ पर भी आदमी जुटा देहल गइल। देखत-देखत सारा तुरकी पलटन से भर गइल। नगाड़ा-बिगुल बाजे लागल। तरुआर चमके लागल। कहीं भाला दमके, कहीं बरछी चमके।

अबले आसमान पर लाली ना देखात रहे। तुरकी दरबार के सभन सिपाही सूतल रहस, जइसे कवनो बैपारी घोड़ा बेच के सूत जाला। बाबू चैनासिंह आवाज दिहलन—

'बलिआ...''

''सरकार...'' ?

"सुरमा धोखा के खेल ना खेले। कवनो सूतल शेर के आज तक ना मरनी। सारा तुरकी सूतल बा। हमला कइल ठीक नइखे एह घड़ी। अनुचित काम हो गइल।"

"बहादुर लोग एकर विचार ना करे, सरकार! अब त हमला हो गइल बा। जे होई देखल जाई।"

चैनासिंह बलिआ के समझा के कहलन—

"गलती बात....बहादुर लड़बैया अइसन कबो ना करे, करे के ना चाही..." बलिआ का दिल पर बाबू साहेब का बात के कवनो असर ना भइल। कहलक बलिआ—

"लड़ाई का रन पर त अइसन होत-जात रहेला। सचकी कहल जाय त आज के लड़ाई खाली धोखा के लड़ाई बा, सीधा-सनमुखा के लड़ाई ना रहि गइल..."

बाबू साहेब सोझ दिल के आदमी। बलिआ के बात उनका ठीक ना जचल। बाबू साहेब कइलन—"फिर चले के काम बा बलिआ, भीखम खाँ के खबर कर देहल जरूरी बा जे हम लड़ाई करे आ गइल बानी। चाहस त आपन अरदास लगा सकेलन, चाहस त आपन लोहा आजमा सकेलन। हमर कवनो बात नइखे, दूनू पर तइयार बानी।"

"सरकार, अइसन ना हो सके अब, जे हो गइल से हो गइल। अब हम अइसे फिर के जा नइखी सकत...." बलिआ अपना तरुआर पर हाथ फेरत कहलक।

पलटन आगा बढ़ल। गोपीराय देवान गढ़ का ऊपर सूतल रहे। ओकर आँख खुल गइल। आपन तरुआर ले उठ खड़ा भइल। बेचूराय के नजर ऊपर गइल। आपन भाला चमका के ललकार दिहलन—

"गोपी राय, तू देवान होके तरुआर चमका रहल बाड़ऽ तू का जनलऽ जे लड़ाई कवना जनावर के नाम ह। जिनगी भर देवानी कइल, लती कें कलम आ कसीस के करीका सिआही हाथ से ना छूटल, आज ढाल-तरुआर लेके बहादुर बने चलल बाड़ऽ। तू आपन भलाई सोच के बेतिया का बाबू से मिल जा। चालाकी से काम लऽ। आपन सोचऽ, आपन खानदान के सोचऽ...."

गोपीराय देवान बेचू राय के बात सुनके जइसे आग हो गइलन, कहलन—"सुनीं बाबू बेचू रायजी, अपने बेतिया के बाबू का हाथ से पान के बीड़ा खइले बानी आ हम भीखम खाँ के नीमक, बाकी बात एके बा।" तब ले गोपीराय के भाई छेदीराय भी जाग गइले। छेदीराय चटपट लड़ाई के पोसाक पहिनके तइयार हो गइले। आपन तरुआर लेके नीचा उतरे लागले। बुरजी पर से उतर के जबे आखिरी सीढ़ी पर अइले, तबे बेतिया राज के सिपाही लोहासिंह आ बासमन राय, आगा बढ़के उनका के रोक लिहल लोग। छेदीराय का सामने दोसर कवनो उपाय ना रहे। बाबू चैनासिंह पान का डीबा से पान के बीड़ा निकाल के लोहासिंह के आगा बढ़वलन। बासमन राय से देखल ना गइल, चट से कहलक—

"जईफ आदमी का आगा पान मत बढ़ावल जाय सरकार। आज अपने का हाथ के पान के हकदार जवान बा, बूढ़ ना..." चट से बासमान राय के हाथ आगा बढ़ल आ लोहासिंह का हाथ के पान लेके खा गइल। पान खइला के देर रहे, ओकरा गढ़ पर टूटत देरना भइल भूखल-पियासल बाघ लेखा। बहुत देर तक लड़ाई होत रह गइल।

कुछ जवान एक ओर से जुटल, कुछ दोसरा ओर से। तुरकी दरबार के पहिला गढ़ घिर गइल भाला, तरुआर, बरछा से। गढ़ पर हमला हो गइल बाकी तुरकी दरबार का भीतर कवनो खबर ना जा सकल। अइसन औचक हमला भइल कि लोग जक के थक रह गइल। बासमन राय के हाथ रहे दुनाली बनूक, गोली दागल शुरू क देलन। थोरा देर का बाद लोहा का मोट चदरा से जड़ल काठ के फाटक टूट के गिर गइल। बासमन राय बड़ा हुनरबी आदमी, अपना करेजा के बरिआर क के गढ़ का ऊपर चढ़ गइल।

लोहासिंह अपना के रोक ना सकल, चढ़ गइल बासमन राय का साथे। बाबू साहेब के छाती फूल के उभर गइल।

बासमन राय देह-हाथ से तगड़ा आदमी, अकेले चाहे त दस मनई के ओझरा के घंटन तबाह कर दे। बासमन राय के देखते गोपी आ छेदी के चेहरा उतर गइल। हाथ के हथियार हाथे रह गइल। तनको अक-बक ना चले। बासमन राय नीचे उतरे लागल। तब तक छेदी का मौका मिल गइल। अइसन मौका मिल गइला पर कवनो बहादुर आदमी खाली जाये देवे के ना चाही। छेदी बासमन राय पर तरुआर चला दिहलस। बाकी लोहासिंह आउर धुरंधर उ छेदी का हर डेग के जोखत रहे। चट पाछा से तरुआर बजा दिहलक। छेदी राय के लमहर दाव खाली गइल।

आखिर गोपीराय आ छेदीराय पकड़ लिहल गइले। पकड़ाके बाबू चैनासिंह का सामने हाजिर करावल गइल लोग। दूनू जने चैनासिंह का आगा आगा आपन माथा झुका के सलाम कइले। गोपीराय बाबू साहेब का सामने थर-थर काँपे लागल जइसे तनिको बेआर सिहकला पर पीपर के पत्ता सिहरे लागेला। गोपीराय हाथ जोड़ के कहे लागल—"सरकार, नौकर चाकर ठहरनी। नोकर चाहे अपने के होखे चाहे केहू के, बाकी नोकर त नोकरे ह। हमर जान बकस देल जाय। नोकर के मार के अपने पायब का ? हम सरकार से आपन धरम-दुआर खातिर अरदास लगा रहल बानी।" बाबू साहेब के कवनो दोस ना दोस बेतिया राज के खानदानी। जे केहू हाथ जोड़ के राजा का आगा खड़ा हो गइल, बन गइल। बाबू साहेब पुकार के आवाज देलन··· . ···

"बलिआ . ."

"मलिकार...."

'गोपी-छेदी धरम-दुआर चाहत बा !"

"मारेवाला, चाहे मर जायवाला आदमी दोसर कवनो बात ना जाने। एतना जरूर जानेला जे लड़ाई का रन पर जब तरुआर बाज जाला त केहू के कवनो भीख देहल खतरा से खाली ना होखे··· ..." बलिआ आपन बात बता देलक।

"बाकी एह गरीबन के जान लेके अपनेका. का मिली सरकार ! जइसे एगो कीरा चाहे फतिंगा के जान लेहनी।" गोपीराय फेर अरदास लगवलस आ तीन बेर झुक के सलामी दगलक। अबकी चैनासिंह के दिमाग बदल गइल। बाबू साहेब कहलन—

"गोपी आ छेदी के पोसाक छीन लेल जाय लड़ाई के, हाथ के हथियार रखवा लेहल जाय ..."

कहला भर के देर। गोपी आ छेदी अपन-अपन हरवा-हथिहार रख के तइयार। गोपी छेदी दूनू के जान केहु लेखा बचगइल। गढ़ का ऊपर जे माल-खजाना-सरजाम रहे सब पर बेतिया राज के दखल-दहानी हो गइल। पलटन जे एने-ओने छितरा गेल रहे, एक जगह हो गइल। बासमन राय अपना काका लोहासिंह से अलगा हटा के कहलक—"गोपी आ छेदी के धरम-दुआर दे के ठीक ना कइले। बनल-बनावल काम बिगड़ गइल। लड़ाई के नकसा अजब हो गइल।" "लड़ाई के नकसा बने चाहे बिगड़े बाकी बाबू साहेब बेतिया राज के लाज राख लिहलन। बेतिया राज-दरबार के मनीत रहल बा, जे केहू बेतिया आइल, खाली हाथ वापस ना गइल। गोपी आ छेदी त अपना जान के भीख मँगले, धरम-दुआर खतिरा हाथ जोड़ले....."

"हमार जान त ले लेले रहे छेदिया, अगर तू हमरा पीठी पर ना रहतऽ। रन पर चढ़ गइला का बाद दुसमन के सिपाही के पकड़ के छोड़ देहल केतना खतरा वाला काम जेकर बखान कइल बेकार बा......"

"तहार कहल ठीक बा......"

बासमन राय अपना के रोक ना सकल। गोपी आ छेदी बड़ा तेजी का साथ झटकत बढ़ल जात रहले। बासमन राय के हाथ सुग-बुगाइल। जोश जागल, चल पड़ल। थोड़का दूर तक पीछा कइला का बाद दूनू भाई के ललकार के कहलक—

"भाग मत....."

गोपी आ छेदी पाछा मुड़ के देखल लोग त बाक बन हो गइल। बासमन के तरुआर चमक उठल। फेर ललकार देलक एक बेर—"धोखा देके केहू पर हमला कइल कवनो बहादुर सिपाही के काम ना ह, एह से तोहनी के जना देत बानी....." कहत-कहत बासमन राय छेदी पर अपना तरुआर के धार सटा देलक। छेदी घायल हो गइल। अब गोपीराय के पलटा रहे बाकी छेदी पर हमला भइल देखके गोपी चटाक से अपन तरुआर तान देलक। बासमन राय बड़ा बली आदमी, आगा लपक के गोपी के हाथ पकड़ लेलक, तरुआर छीन लेलक। गोपी आ छेदी घायल हो गइल लोग।

बाबू चैनासिंह दूर से देखत रहलन बाकी कुछ ना बोललन। बासमन राय लगल हाथ आपन बदला चुका लेलक। चारू ओर तहलका मच गइल। हलचल हो गइल। लोग एने-ओने भागे लागल।

तुरकी दरबार का पहिला गढ़ पर बेतिया राज के दखल हो गइल। पतरखा फहराय लागल बुरजी पर हवा का हिलकोरा से। बेचू राय बाबू साहेब का पास अइले, सलामी बजा के कहलन—

"कवनो ताकत अपने के हरा नइखे सकत सरकार..."

"बेतिया राज के लाज अपने का हाथ बा..." बाबू चैनासिंह बेचू राय का ओर देख के कहलन। बेचू राय आगा बढ़के बाबू साहेब का हाथ के हीरा-मोती से जड़ल तरुआर अपना छाती से सटा के चूम लेलन। बाबू साहेव बेचू राय के बहादुरी खातिर कहलन—

"जीत हमर नइखे, जीत बेचू राय के....."

तुरकी के पहिला गढ़ पर बेतिया राज के पतरखा लहरात रहे। पहिला गढ़ का लड़ाई के फल भइल कि ओह गढ़ के सर-सरजाम लोग लूट लेलक आस-पास। निअरा-दूर के लोग आन्ही लेखा लपकल आ मनमाना आप अपना घरे ले गइल, जइसे कवनो लड़ाई का समय हो जाला। आस-पास के लोग बेतिया का बाबू के दोहाई मनवलक।

दखली वाला गढ़ पर बहादुर सिपाही के एगो दल पहरा खातिर बइठा देहल गइल। बेचूराय के बुलाहट भइल। बेचूराय बाबू साहेब के खीमा का भीतर गइलन। बातचीत होखे लागल। चैना सिंह कहलन—

"अब अगिला गढ़"

"पलटन आगा बढ़ा देल जाय, सरकार! चटपट कइला से काम चली। भक-चका खराब हो जाई।"

बलिया नगाड़ा बजा देलक, तुरही बाजे लागल। बेतिया राज के सिपाही लोग होसला का साथ बढ़े लागल। दू–चार घड़ी चलला का बाद एगो नदी मिलल, चारू ओर पानी-पानी, पाट लमहर, पार उतरल कठिन। बाबू चैना सिंह घवड़ा गइलन। घवड़ा के पूछले—

"कवन नदी ह बेचू राय जी?"

"गंडक नदी सरकार।"

"गंडक? जे बेतिया का पास बहल बा?"

"सरकार, अपने का ठीक कहल जाता।"

'केतना पानी होई?"

'घबराय के कवनो बात नइखे। आसानी से पार उतरल जा सकेला। कवनो खतरा के बात नइखे। शायर, सिंह आ सपूत लीक ना देखे, जेने चलो वोने राह बनी…"

'हमरा अपने पर बड़ा भरोसा बा, बेचू राय जी।"

"अपने का इसारा पर हम अपना जान के बाजी लगा देवे के हरदम तइयार बानी।"

"बात एतने बा जे तुरकी कबो अइनी ना, एह इलाका के राह हमरा खातिर अनजान बा, कहीं नाला, कहीं खेत बा त कहीं चँवर। बात सही बा कि हमार पलटन एह नदी-नाला से घबरा नइखे सकत। कवनो बाधा हमरा के घबरा ना सके।"

गंडक नदी पानी से भर गइल रहे बाकी तुरन्त नाव के इन्तजाम भइल। सिपाही लोग नाव पर चढ़ के पारे उतरे लागल। देखते-देखते बेतिया राज के लाव-लसकर ओह पार चल गइल। सलेमपुर जा के ठहर गइल सभे। सलेमपुर का दूनू ओर बागमती के तेज धारा, बीच के धरती बालू से भरल। बालू के रेती पार करे का बेरा बड़ा कठिनाई भइल। कवनो कीमत पर पार करे के रहे।

बेचू राय के राय भइल ओही रेत पर खीमा गिरा के ठहर जायके। कहलन जे तुरकी दरबार बहुत नजदीक रह गइल बा। बाबू साहेब बेचू राय के बात मान गइलन। बलिया जबे रेत पर खीमा लगावे के बात सुनलक, ओकर दिमाग चकरा गइल—'भला एह रेती पर खीमा लगावल खतरा से खाली बा? तीन ओर से घिरल बालू के रेती, चारू ओर खतरा, कवनो बात हो जाई त केहू काम ना आई, कवनो अकिल ना लागी। एह रेत पर हम खीमा ना गड़े देब। एकरा खातिर चाहे जे हो जाय। खतरा से खेलल दोसर बात, खतरा से डरल दोसर चीज बाकी जान बूझ के अपना जिनगी के मौत का धार पर चढ़ा देहल कवनो चलाकी ना कहल जा सके।'

बलिया हकासल-पिआसल बाबू साहेब का लगे गइल त अपना मन के बात बतवलक बाकी बाबू साहेब ओकर बात ना मनले। बेचू राय बीच ही टोकारी भर देलन—'तोहरा एह तरफ के कवन जानकारी बा? तइरा हमनी का बीच ना बोले के चाहीं।' बाकी बलिआ अपना बात पर डटल रह गइल। बेचू राय कवनो काम से खीमा का बाहर अइलन। बलिआ बाबू साहेब के गोड़ छान लेलक आ कहलक—

अपने हमर बात मानत आइल बानी त एगो इहो मान लेल जाय। बालू के रेत खतरा से भरल बा। गंडक के पार कइल त आसान बा, बाकी बालू पर चलल आसान नइखे। एह जगह के बनावट अइसन बाटे जे काल्ह आवे वाला खतरा आजे चल आई, सरकार…"बाबू साहेब का बलिआ के बात जच गइल त कहलन—

"खीमा गड़ी कैसे? चारु ओर त बालुए-बालू लउकत बा…"

“थोड़का दूर हट के सरकार…”

“जगह तहार देखल बा?”

“बे देखले हम कहतीं कइसे। थोड़के दूर हट के बहुत बढ़िया जगह बा। ओह पर जो तरुआरो बाज जाई त देखल जाई। एह जगह पर कवनो बात हो जाई त हाथ तरुआर हाथे रह जाई बाकी कवनो अक्किल ना पेस खाई।”

“मान गइलीं बलिआ, खीमा ओहीं जगह पर गड़ी…” बाबू साहेब का बात बलिआ का संतोख भइल।

बाबू साहेब के बात बेचू राय का ठीक ना लागल। मने-मने कहे लगलन—‘ किसिम के आदमी बा बलिआ. जे हर-हदृसा अपने बतिआ ऊपर राखे के चाहत बाबू साहेब के का कहल जाय, जेही बलिआ कही से होई।’ बेचू राय अपना के रोक सकले, कहिए देलन – “काम ठीक ना भइल, कइसन परसल जगह रहे।”

“जे भइल से भइल एह बात पर अधिका सोच-विचार करे के जरूरत एतना जरूर बा जे बलिआ भरोसा के आदमी बा। कवनों हालत होखे बाकी गलती बात सोच ना सके…” बाबू साहब का कहे के पड़ल।

एह छोट घटना से बलिआ आ बेचू राय का बीच पड़ गइल, एगो नया आ गइल सामने। बलिआ का एह बात के शक हो गइल जे बेचू राय कवो धोखा सकेलन। कुछ अइसने सोच के बाबू साहेब का पास गइल रहे बाकी जे कहे के चाहत कह ना सकल। बाबू साहेब के सुभाव के जानत रहे आ इहो जानत रहे जे बेचू राय धाक जम गइल बाटे बाबू साहेब पर बाकी बेचु का चाल से घबरा गइल रहे मने-मने।

बेचूराय बलिया के बुड़बक बनावे खातिर बाज ना अइलन, फेर कहलन—“ बलिआ का एह जमीन का बारे में कथी मालूम बा? ओकरा का पता जे उतर केने बा दखिन केने?”

“अइसन जन सोचीं बेचू रायजी। बलिआ बीसन बेर तुरकी आइल-गइल ओहदी बन के, परवाना लेके। तुरकी के गली-गली छान देले बा। बड़ा बहादुर बाटे। हमरा बिचार से कवनो बहादुर आदमी के मन छोट ना करे के चाहीं।” बेचू राय का बड़ा तीत लागल बाबू साहेब के बात।

“बाकी अकेले बलिआ कर का सकेला! अकेला त बिअफे झूठ हो जाला।”

“बलिआ का ताकत के अन्दाज अपने का नइखे। बेतिया राज का नाम पर खेल सकेला, धार पर चढ़ सकेला, डेग बढ़ा के पाछा हट ना सके। असली सोना चमकत रहेला, सोना, जे बेर-बेर परखल गइल बा।”

बलिया खीमा के फाटक पर खड़ा होके मने-मने बाबू साहेब के दोहाई रहे, बलिया…असली सोना।

(

* * *

चार गो रुबाई

बँचल ना पीर से केहू नजर का वार के
बँचल ना तीर से केहू सरस बहार के
देखत रहल जनमे से माँझी सागर में
हँसल लहर, करेज कटि गइल किनार के

× × ×

प्यार का न कबो रूप के असरा होला
भरम के, छल के ना एहपे पहरा होला
प्यार निरमल सिंगार हऽ ऊ जिनिगी के
कबो न मउअत के जेह प अँचरा होला

× × ×

याद कइला पर याद केहू आई ना
लाख चहला पर मन से भुलाई ना
केहू के याद में रखल आ भुलावल मन से
मन के बहक हऽ अइसन कि समुझ आई ना

× × +

केहू के बात आपन मन के बताईं काहें
दरद का भार से केहू के सताईं काहें
कहल अनेर बा कुछऊ केहू से आपन
भरम के आग में अपना के जराईं काहें

—जगन्नाथ

भोजपुरी कहाउति में बैल

—प्रो॰ सत्यदेव ओझा, (शाहाबाद)

बैल के खरीद-बिक्री

बैल के कीने-बेचे के जानकारी किसान खातिर बहुत जरूरी बा। जेकरा एह विषय के ज्ञान रहेला, उ अपने त लाभ में रहबे करेला, ओकरा ज्ञान के लाभ ओकरा संगी-साथी का भी मिलेला। भोजपुरी क्षेत्र में बैलन्ह के खरीद-बिक्री खातिर बड़ा भारी-भारी मेला लागेला। अइसन मेला साल में कई मौका पर लागेला। कुछ मेला त आषाढ़ का खेती के पहिले लागेला जैसे फागुन, चैत, बैशाख आ जेठ में। सावन-भादो में खेती का काम अमुराइल रहला से कौनो मेला ना लागे। एह मेलन्ह में खरीदे-बेचे वाला के मोल-तोल करत खूब देखे में आवेला। जानकार आदमी लछन देखि के तेज आ गरि बैल के पहचान कइ लेला। बैल के पोंछि ऐंठि के भी ओकरा चाल के अंदाज मिलेला। किसान लोग से पूछला पर पता लागल जे कहावत में रंग आ अंग सम्बन्धी जवन जानकारी दिहल बा ओकरा आधार पर खरीदला पर धोखा के बहुत कम डर रहेला। बैल खरीदे के बारे में

इ बात हमेशा ध्यान में राखल जाला कि ओकरा के फेंनु बेंचे के परे त कवनो रुकावट होखे पावे। खरीदत-बेचत रहला से बैल के पूँजी खाड़ा रहेला। कहाउत ह—

—बैल अपना खातिर ना
बलुक दोसर खातिर किनाला

रंग के आधार पर

बैल किने का बेरी ओकरा रंग पर ध्यान देवे के परेला। खास-खास रंग के बाड़ा तेज होला जैसे धावर रंग के

—जब देखिहऽतू रूपा धावर
दीहऽ रुपया दु चार आवर

करिया रंग के कछौटा होखे आ सोकन रंग के देह होले त बैल बड़ा तेज होला

—कांछ कसौटी सोकन वान
एह छाड़ि जनि लीह आन

कजरौरी आँखि वाला भी नीक होला

—बैल लीहीं कजरा
दाम दीहीं अगरा

कुछ खास रंग के बैल के कीने के मनाही वा, जैसे कइल (कैरा), करिआ, गो महुअर, छिटाह चितकबरा रंग के

क. कइल के दाम गइल

ख. मउग़ मरद आ कइल वरध के बिसवासे का

ग. बैल बेसाहे चलले कंत
करा के जनि देखिहऽ दंत

घ. जब देखिहऽ करिया कइल
तब करिहऽ मुंह मइल

च. करिया कावर गोल छिटाह
उहो नसिहे दाम तोहार।

लाल बइर के रंग के गोला बैल कीनही के परे त तनि सोचि-बिचारि लेवे के

—जब देखिहऽ तू बैरिया गोल
उठि बैठि के करिहऽ मोल

एही तरे जवना बैल के माथा पर महुआ के रंग होखे और पिठी पर गोला रंग उगरि होला। मारलो-पीटला पर काम ना करे

—माथ के महुअर पीठि के गोल
पैना बाजे तावड़-तोड़

अवस्था आ अंग के बनावट के आधार पर

अवस्था अंग के बनावट का विचार से भी कीने-बेचे के कुछ हिसाब-किताब कम अवस्था के बाछा काड़ा जोताई ना सहन करि सकेला

—बाछा बैल बहुरिया जोय
ना घर रहे ना खेती होय।

एह से बाछा बैल बेंचि के खूब धमधूसर बैल कीने के चाहीं।

जवना बैल का माथ पर लाल महुआ निअर रंग होखे आ पोंछि छोट होखे, अइसन बैल के दाम ना लौटे—

—माथ के महुआरि पोंछि के छोट
एहू के कुछु कह बतेआरी
इ धन लौटे त लौटे ना त भनसारी परे।

एहि तरी मोट मुंह आ माथ पर महुआ के रंग वाला बैल होखे त उ सुस्त होला—

—मुँह के मोट माथ के महुअर
एकरा देखि भूलि जनि जइह
धरती नहिं हराई जोते
बैठि मेंड़ पर पागुर करे।

एह ढंग से पता चलत बा जे किसान खूब चौकला होइके बैल के कीने-वेचे के जानकारी राखेला। अब बैल का बारे में कुछ खास-खास शब्द के ब्योरा देइ के इ निबंध, खतम कइल जाता।

१. धावर—उजर रंग के देह, खुर करिआ, थुथुर करिआ, पूंछ करिआ, सिंघि करिआ।
२. कसौटी—जवना बैल के अंडकोश करिआ, चूतर करिआ, कान करिआ नाभी करिआ, खुर के ऊपर के हिस्सा (जहुरी) करिआ, आ उजर होखे।
३. सोकन—देह के रोवां उजर आ करिआ रंग से मिश्रित, बाकी 'धावर' नियन।
४. कजरा—जवना के आँखि कजरारी होखे।
५. कइल (कैरो)—देह उजर, थुथुर लाल, खुर लाल, पोंछि उजर, जीभ उजर आ सिंघि उजर।
६. करिआ - सउँसे देह करिआ।
७. काकर—चितकबरा।
८. गोला—पीठ पर महुआ के रंग के ऐसन रंग।
९. छिटाह—जवना में थोड़े-थोड़े कई रंग होवे।
१०. बैरिआ गोल—लाल बेर के रंग के गोला बैल
११. महुअर—सिर पर महुआ निअन रंग होला।
१२. मैना—जवना बैल के सींघि नीचे झुकल होखे आ हिलत होखे।
१३. घोंची—जवना के सींघि आगे का ओर झुकल होखे।

—बछवा बैल बेचि के
बैल धमरिया लेह
आपन खेती जोति बोइ के
अनकर जोति बोइ देइ।

एहि से मिलत-जुलत एगो दोसर कहाउति बा जवना में बतावल बा जे नाठ बैल बेचि के खूब धुरंधर बैल कीने के चाहीं—

—नाटा खोटा बेचि के चार धुरंधर लेहु
आपन काम निकालि के औरहु मंगनी देहु।

बैल के अंग के परखत खा छव चीज के छोटाई का ऊपर ध्यान देवे के चाहीं

बैल के छव छोट।[1]

निमनाह बैल के पहचान छोट मुंह आ ऐंठल काने होला—

—छोट मुंह आ अइंठल कान
इहे बैल के इ पहिचान।

बैल के हिबैव ओकरा दाँत के गिनि के भी बैल का बारे में विचार कइल जाला।

बैल बेसाहे चलले कंत
बैला लीहऽ दू-दू दंत।[2]

सींघि के बनावट के हिसाब से मैन बैल आ घोंची बैल अच्छा मानल जाला। कहावत बा—

(क) जब देखिहऽ तू बैला मैना
एही पार से फेंकिहऽ बैना

(ख) घोंची देखिहऽ ओही पार
थइली खोलिहऽ एही पार

कुछ अइसन कहावति भी बा जवना में बतलावल बा जे कइसन बैल ना खरी के चाहीं—

'लमहर सींघि वाला बैल जो चरि दाँत'

(तीन वर्ष की अवस्था वाला जवान) के होखे तबोओकरा के ना खरीदे के चाहीं। अइसन बैल सुस्त होला—

—लमहर सींघि चउदंत हो तबहूँ
कीनिहऽ मति भुलइलो कबहूँ।

—:०:—

---

[1] सींघ, कान, पैर, पोंछि. नाभी आ लोरि।

[2] बैल के अवस्था के अंदाज ओकर दाँत देखि के लगावल जाला। एक दुबड़ साल के बीच बाछा के दूध के दाँत दुगो गिरि जाला ओकरा जगह पर दुगो पाका दाँ निकलि जाला एकरा दु दाँत वाला कहल जाला। जेकर दूध के दाँत ना टूटल रहे ओका 'उदन्त' कहल जाला। तीन बरीस में चौदन्ता हो जाला। लगभग साढ़े तीन साल क अवस्था में दुगो और दाँत निकले ला एकरा 'छक्कर' कहल जाला। चार बरिस का अवस ओकर आठो दाँत निकल जाला तब ओकरा के तौल कहल जाला। अइसे हरदम दू-दू दाँ एक संगे टूटेला आ पाका दाँत जामेला। कबो-कबो फूट दाँत भी जामेला। जैसे सात दाँ या नव दाँत वाला। इ दुनो अशुभ मानल जाला।

उमर के थोरी गोरी अमवां अगोरे रे

झिहिर-झिहिर-झोंके-झोंके पुरवा झँकोरे रे,
उमर के थोरी गोरी अमवाँ अगोरे रे।
गँउअन के गछियन में झूमें बहार रे,
गते मुसकात भोरे मलय बयार रे।
काँचे काँचे कलियन पर आइल बहार रे,
निर्मोही भँवरन के अलगे सुतार रे। झिहिर झिहिर०
लुहु लुहु पतइन कलस कचनार रे,
सजनी का शोभे जैसे सोरहो सिंगार रे।
मद से मातल मस्त कुहुके दिवानी रे,
डेहुँगी पर डोलत बाटे सुघर जवानी रे।
झिहिर–झिहिर, झोंके-झोंके, पुरवा झँकोरे रे,
उमर के थोरी गोरी अमवाँ अगोर रे!

—नाथ नारायण सिंह (सारण)

❋ थारू लोकगीत के झाँकी ❋

तारकेश्वर प्रसाद, मोतीहारी (चम्पारण)

उत्तर चम्पारण में पहाड़ के तलहटी में जंगल के आसपास थारू लोग के निवास बा। एह लोग के आबादी करीब पचास हजार के बा। एह लोग के रहन-सहन में प्राचीन सभ्यता के पूरा–पूरा छाप अभी भी पावल जाला। एह जाति में ई एक ठो विशेषता बा कि स्त्री या पुरुष बहुत निष्कपट आ सच्चा होले। आतिथ्य-सेवा त एह लोग के महान गुन ह। एह जाति के उत्पत्ति कइसे भइल अभी तक निश्चय रूप से ना कहल जा सकेला। एकरा बारे में बड़का विद्वानन में भी मतभेद बा। कोई-कोई कहेला कि थार देस से अइला से ई लोग थारू कहाला, कोई आदिवासी कहेला। खैर जे भी होय मगर अभी एह लोग का आधुनिक सभ्यता के पूरा परिचय नइखे मिलल। ई लोग ज्यादेतर खेती पर निरभर करेला आ एह जाति में कुछ धनी मानी लोग भी बा। अब एह लोग के ख्याल शिक्षा आ बिकास के ओर बा आ अब ई लोग धीरे–धीरे आधुनिकता के ओर बढ़ रहल बा। एह लोग के भासा परबतिआ, अवधिआ आ भोजपुरी मिलल जुलल बा। एह लोग से पूछला पर कहेला कि हमनो भोजपुरिआ बोलत बानी। भोजपुरी के शब्दन के बाहुल्य

एह लोग के भासा में ज़रूर बा आ ओकरा के सबसे अधिक भोजपुरी ही कहल जा सकेला। एह लोग के इहाँ बहुत सा लोककथा आ हर मौका के लोकगीत भी प्रचलित बा। लोकगी में भी थारू लोग के सीधापन आ सचाई झलकत रहेला। लोकगीत के रसास्वादन कइला पर पता चली कि कतना सादगी आ सदाचार से भरल ई गीत बाड़न स।

(१) "निसुके रे खेतिआ कइसे पोसब घर के बेकतिआ,
रोपा भइले तोपा, लेवा भइले सेवा,
कइसे पोसब घर के बेकतिआ, निसुके खेतिआ रे।"

"समय पर बरखा ना भइला से खेती निसुक गइल। अब त इहे चिन्ता धइले कि घर के बेकत कइसे पोसाई।" गीत में हिरदेआ के उदगार कइसन सीधा रूप निकलल बा।

सामूहिक गान के एक ठो गीत देखीं। एकरा के थारू लोग झूमरा कहेला :—

(२) "बिहने से चलले बटोहिआ भइ गइले सांझे,
ओही पंथे पाकड़ तरे हो लिहले बसेर। बिहने से०॥
हारे कटलों में नरखर हो डंसलों में सेज,
बिहंसि सुतेला रे धनिआ सामी जी के कोरे। बिहने से०॥
हारे उठु उठु सामी भँवरा बारू ना अँजोरे,
कवने किरवा ना हो कटले अंगुरी के पोरे। बिहने से०॥

"पति आ पत्नी दूनों रास्ता में कहीं जा रहल बा। साँझ हो गइल। एक पाकड़ के गाछ के नीचे नरकट काट के बिछावन बनावल गइल। दूनों बेकत आराम रात के सूतल लोग। सबेरे पत्नी अपना पति के जगवली कि हे स्वामी उठीं अब अँजो (भोर) हो गइल आ हमरा अँगुरी में कौनो कोड़ा काट लेलख।" एह गीत में दाम्प प्रेम के केतना उज्ज्वल आ निश्छल उदाहरण बा। एह में बनावट कहीं नइखे। स्वाभावि कता टपक रहल बा।

एक ठो गीत देखीं जेकरा के बिरहनी कहल जाला आ धान के रोपनी के ई गावल जाला।

(३) "ठूठी त पकड़िआ सीतल जुड़ि छँहिआ रे,
आहे ताहि तर सूते हरवाह हे,
अंगना बहरइत सैलखी रे चेरिआ,
पनिआ माँगेला हरवाह हे,
आरे खोइंछा टाँगि लिहले आनन्दी के मुँजवा,
माथे लेले कुड़नी हेवाल हे,
आहे कवन हरवहिआ के आनन्दी के मुँजवा,
केकरा ही कुड़नी हेवाल हे,
आरे अगिला हरवहिआ के आनन्दी के मुँजवा,
पछिलाहि कुड़नी हेवाल हे,
बिचला हरवहिआ के अँचल के छँहिआ,
नवरंग बेनिआ डोलाव हे।"

"ठूँठ पकड़ी के गाछ तर हरवाह सुस्ता रहल बा। घाम में मेहनत कइला से हार गइल बा। घरे खबर गइल कि पानी आ भोजन आवो। ओकर स्त्री खोंइछा में आनन्दी के भूँजा (थरुहट के बहुत प्रिय खाद्य पदार्थ) आ माथा पर पानी के वरतन लेकर के अइली। कवना हरवाह के भूँजा देस आ केकरा के पानी देस। अगिला हरवाह जे जेठ रहे ओकरा के भूँजा देली, पिछला खेर के पानी पिअवली आ विचला जे पति रहे ओकरा। के अँचरा के हवा देकर के ओकर हिरदेआ जुड़वली।" एह गीत के वर्णन केतना सुन्दर बा एह गीत के थारू मरद आ औरत सब लोग झूम-झूम के गावेला।

अइसने एक ठो आउर गीत देखी :—

(४) तरुनी— "आजु के रैनिआ रिमिझिमि बरसेला पानी
हमें धनी ओरी तर भींजेला,
खोलु छैला बजर केंवार हे,
किआ तोरि छैला मरि हेरि गइले,
किआ तोरि छैला सुते निरभेद हे,
एक लाख भींजेला नौरंग चोलिआ
दुई लाख भींजेला मोरी सारी हे,
खोलु छैला बजर केंवार हे।"

तरुनी के पास—"टका लागि टका हम देबौ
सुका देई लनवो छोढ़ाई हे,
राखि देहु हे पूता तिरिया के मन
खोलि देहु बजर केंवार हे।"

"पति पत्नी में कलह हो गइल बा। पति केंवार बन्द करके सून रहल बा। पत्नी बरखा में भींजत बाड़ी। निहोरा करत बाड़ी कि हे सामी केंवार खोल दीं। हम बाहर पानी में भींजत बानी। कइसन निरभेद सूतल बानी। हमर चोली आ साड़ी सब भींज रहल बा।" जब पति ना उठजन तब उनकर मतारी मध्यस्था करे अइली। उहो निहोरा कइली कि हे बेटा केवार खोल द। अगर तोहरा स्त्री के दोष से कवनो जानवर फाटक में जाई तब हम छोड़ा के लाएब। स्त्री के मन रख द आ केंवाड़ खोल दे। एह गीत के चित्रण बहुत ही हृदयग्राही बा। स्त्री के निवेदन केतना मार्मिक बा।

एक ठो अन्तिम गीत देत बानी जेकरा के झमटा कहल जाला। एह प्रकार के छोटा-छोटा गीत भी इहाँ बहुत प्रचलित बा।

"केहरि से आवे दरजिआ बेटउआ केहरि से झीन सुईआ केहरि सें,
बगहा से आवे दरजिआ बेटउआ छपरा से झीन सुइआ मँगावे छपरा सें;
अइसन चोलिआ पहिरि गोरि पनिआ के चलली जवने घाटे उनकर ससुर नेहास—
जवने घाटे,
जवने घाटे उनकर भसुर नेहास जवने घाटे उनकर सामी नेहास—जवने घाटे।"

"बगहा के दरजी आइल आ छपरा से महीन सूई मँगा के खूब सुन्दर चोली सिअलख। उहे चोली पहिर के गोरी घाट पर गइली जहाँ उनकर ससुर, भसुर आ सामी नेहात रहस।" सिंगारिक वरनन भी सीमा के भीतरे बा न कहीं भी मरजादा के उल्लंघ नइखे भइल।

ऊपर के गीत सबसे थारू लोग के जीवन के झाँकी आ ओह लोग के सरलता के बहुत कुछ पता लगावल जा सकेला। यह सब गीत के थारू स्त्री आ पुरुष नाच के साथ भी प्रस्तुत करेला जे बहुत मनोहारी लागेला आ ओह लोग के मस्ती देखे में आवेला।

वृक्षारोपण

रासबिहारी राय शर्मा

हिन्दू धर्म के प्रायः सब धर्म-ग्रन्थन में वृक्ष के महातम लिखल बा। तुलसी त साक्षात भगवान श्रीकृष्ण के प्रधान उपासिका बृन्दा के अवतार रहलीं। कालकूट विष के भक्षण के बाद सदाशिव शंकर भगवान विल्वपत्र के रस-पान कर सावधान भइलीं। मत्स्य पुराण में लिखल बा कि जे वृक्षारोपण करेला, पेंड़ लगावेला, पेड़ लगवावेला ओकरा तीस हजार पितरन के अनायासे उद्धार हो जाला। अग्निपुराण में लिखल बा कि घर बनवावे वाला का चाहीं कि घर का उत्तर तरफ पलास, पूरब ओर बड़, दक्षिण ओर आम और पच्छिम तरफ अस्वत्थ (पीपल) के वृक्ष लगावे। घर का दखिन ओर अउर घर का किनारा चारू तरफ कटीला झाड़ी लगवावे जवना में एगो फुलवारी और छोटा आम के बगैचा अवश्य रहे जवना में श्रीफल, अगस्त, तुलसी, शीशो आदि के पेड़-पौधा अवश्य रहे। फलन में आम अवश्य रहे के चाहीं। ओही पुराण में लिखल बा कि जे लोग जनता के भलाई खातिर अउर परोपकार खातिर अउर पशु-पक्षी के भलाई खातिर पेड़ लगवावेला उ लोग मोक्ष प्राप्त करेला; साथे-साथे, उनकर तीस हजार भूत और भावी पितरन के उद्धार होला। पुराणन में आगे लिखलबा कि दस कुआं बनवावल एगो पोखरा बनवावे के बराबर ह। दस तालाब और पोखरा एगो झील के समान ह। दस झील के निर्माण कइल एगो सुपुत्र प्राप्त कइला के बराबर होला। दस पुत्र प्राप्ति के पुण्य एगो पेड़ लगावे के बराबर ह। सिकन्दर अउर युनानी लोग जब भारत में आइल रहें तब उ लोग इहां के विशाल वट वृक्ष देखि के बड़ा आश्चर्य कइलन और बड़ा अचम्भा खइलन। जब उ लोग भारतवासी लोगन के पीपर के नीचे पानी गिरावत और पूजा करत देखलन तब अउर अचम्भित भइलन। धर्मशास्त्र में कतना बात समी बट, धात्री (आँवला), पीपल आदि पेड़न के पूजा के बारे में लिखल बा। प्रत्येक शनीचर के हजारो-हजार लोग पीपल पेड़ के पूजा करेला और दिया देखावेला। लोग मंत्र पढ़ेला कि—

मूले ब्रह्मा त्वचा विष्णु शाखा शंकर एवच।
पत्रे-पत्रे देवास्तु वासुदेवं नमाम्यहम्॥

इ मंत्र के पढ़कर ब्रह्म, शिव, विष्णु रूप वासुदेव के पीपल के अधिष्ठात्री देवता समझकर प्रणाम करेला। ऋग्वेद में लिखल बा कि अस्वत्थ और न्यग्रोध के लकड़ी से बनल हल अउर रथ बड़ा मजबूत टिकाऊ और सुन्दर होला। रामायण के पंचवटी के कइसन सुन्दर बरनन लिखल बा। मनुस्मृति में लिखल बा कि वृक्ष के काटेवाला नरक में जाला। ओकर शुमार पापी लोगन में होला। अस्वत्थ (पीपल) वृक्ष के काटेवाला हत्यारा होला। मत्स्य पुराण में पेड़ काटेवाला के दंड-विधान लिखल बा। पहिले का जमाना में तालाब, सड़क अउर पोखरा तथा गाँव में के अउर गाँव के सीमा पर के पेड़ काटल बड़ा भारी अपराध मानल जात रहे। प्राचीन काल में पेड़ काटेवाला के कड़ा दंड दियात रहे। भारतवर्ष त जम्बू द्वीप में बड़ले बा। भारत वर्ष के इतिहास में लिखल बा कि प्राचीन काल में बड़े-बड़े सम्राट, महाराजा लोग अपना राज में पेड़ लगवावत रहलें। सर्व शास्त्रन में वृक्ष लगावे के महात्म लिखल बा—

अस्वत्थमेकमनीय मीचुमन्दमेकं, न्यग्रोधमेकं दशचिचेड़िकाञ्च।
कपित्थ विल्वालकत्रयञ्च पञ्चाम्रवापि नरकं न पश्येत्॥

महान सम्राट अशोक कहि गइलें कि रास्ता पर हम वट वृक्ष लगवा देत वानीं कि मनुष्य जाति अउर पशु जाति सबके छाया मिल सके अउर सब जीव रास्ता का थकावट के दूर करके अपना हियरा के जुड़ावें। जाविन खातिर आम के पेड़, जामुन के पेड़ आदि लखराँव लगवा देले वानीं कि जीव-जन्तु पशु-पक्षी पत्तंग-मनुष्य आदि सब जीवन के सुन्दर फल मिल सके। हमनिका आम, पीपल, वट, जामुन, तुलसी, अगस्त, अमरुथ, अमलतास, पनसेना आदि के पेड़ त आजकल भी लगावल जात वा बाकी श्रीवेल के महिमा हमनिका कवो ना भुलाये के चाहीं। श्रीसूक्त में ऋग्वेद के जे मंत्र आइलवा ओकर कतना महातम् वा ओकर अन्दाज ना लगा सकल जाई। उहे मंत्र उल्लेख करत वानीं।

आदित्य वर्णें तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोथ विल्वः।
तस्य फलानि तपसानुदन्तु मायान्तरा याश्चवाह्याऽस्प्रलक्ष्मीः ॥

अर्थ—हे आदित्य वर्ण वाली, सूरज के समान कान्तिवाली लक्ष्मी जी, राउर तप से मंगलरूप विल्व वृक्ष उत्पन्न भइल। ओकरा फल के प्रताप से हमरा घर के दरिद्रता दूर हो जा। हमरा वाहर के गरीवी दूर हो जा। श्रीफल का सेवन से सब प्रकार के शारीरिक कष्ट दूर हो जाला। जैसे तुलसी में सोना वा वैसे ही श्रीवेल में सोना वा अउर गन्ध वा। शरीर-शुद्धि और रक्त-शुद्धि खातिर इ रामवाण वा। प्रमेह के इ अचूक दवा वा। ऐसन पेड़ के ध्वंस करेवाला के नरक वास होला। श्रीवेल अउर तुलसी के लगावे में कौनो कष्ट भी नइखे। हमनिका भोजपुर में वृक्षारोपण के वड़ा महिमा वा। भोजपुर के राजालोग विशेष कर डुमरांव के महाराज राजा जयप्रकाश सिंह अउर महेश्वर वख्श सिंह के अमलदारी में इ आदेश रहे कि जे केहू पेड़ लगाई ओह के अउर उनका जमीन के मालगुजारी माफ कइल जाई। येही वजह से भोजपुर में आम के असंख्य बगैचा आजु भी विराजमान वा। भोजपुर में वावन बीघा बगैचा हजारों के संख्या में पावल जात वा। हिन्दू संस्कृति के प्रबल समर्थक श्री कन्हैयालाल मानिक लाल मुंशी एक वार वृक्षारोपण के वहुत वड़ा आन्दोलन उठवलीं जवना से कि सर्वत्र देश में वृक्षारोपण के खूब प्रचार भइल।

—०—

हमनी के धन इहे गंगाजी के जलवा

केहू धनी भइल बाटे, दउरी दोकान से,
केहू धनी भइलबा किराया के मकान से,
केहू केनि धन कारखाना और कल बा।
केहू केनि धन बाटे बड़े बड़े टोपरा,
केहू केनि धन बाटे बड़े बड़े खोपड़ा,
केहू केनि धन में शरीर केनिबलबा।
केहू धनी भइल बाटे चोरी आ चमारी से,
केहू धनी बाटे घूसखोरी जामामारी से,
केहू केनि धन में बगइचा के फलबा।
जवन जल देवता मुनी धरे लनि शीष पर,
जवन जल राति-दिन चढ़े जगदीश पर,
जवन जल सभ जल से नि निरमलबा।

कैलास राय कमरपुरी (बक्सर)

जिउतिया के कथा

ईश्वरी प्रसाद गुप्त (मोतिहारी)

(१)

कवनो एगो गाँव में एगो मुसमात बाभनी रही। उ बड़ा सतवरता रहली— गाँव के लोग सतेया के जाने। कुआर के महीना रहे आ अन्हरिया सतमी तकले हथि नछतर के झपसी ना छूटे के नाम लेलक। गाँव के सभ मेहरारून का पितरपख करे रहे। झपसी का मारे केहू आपन गँहू सुखा ना सकल कि जिउतिया के सरगही चढ़ी सउँसे गाँव के मेहरारू वोह बाभनी का घरे गइल आ कहल लोग कि अपने सतवरता बानी अइसन कवनो उपाय करीं कि हमनी के गँहू सूखो। चारू ओर बरखा बाटे त अपने सत से अपने अङ्गना में घाम उगवा देल जाव कि सभे आपन गँहू येतहिये सुखा लेव बाभनी बाड़ा असमंजस में पड़ली। उ मने मन गोहरवली कि हे सूरज भगवान, हमार राखीं। सूरज भगवान उनकर गोहार सुन लेलन आ उनका अङ्गना में टहकरवा घाम गइल। सभे आपन गँहू सुखावल आ घरे गइल। सूरज भगवान वोह बाभनी के आसक्त हो गइले आ ओकरा इहँवा सदेहे अइलें वाकी बाभनी अपन सत रखली आ सूरज भगवान के तिरस्कार क देली। सूरज भगवान उनका अङ्गना घलथरी पेशाब करके गइलें। वोह पेशाब से घलथरी ठढ़िया के साग जाम गइल आ देखते दिन में सजे र गइल। बाभनी एक दिन ठढ़िया के साग खोंट के बनवली आ रीन्ह के खइली। उनका देह अङ्कुरा रह गइल आ कुछ दिन के बाद उनका एगो बेटा भइल। उ लरिका जब भइल त गाँव का लरिकन संगे खेले जाय लागल। लइका सब वोकरा के अनेरुआ लगल। वोह लइकवा के इ बात बाड़ा खराब लागे। एक दिन उ अपना मतारी पुछलस कि हमार बाप के ह। बाभनी त सतवन्ती रही—जइसही देह अङ्कुरा रहे तबे जान गइल रहस। उ कहली कि तू सूरज भगवान के बेटा हव, तोहरा ना होए त बिहनिया आ दुपहरिया के रंथ छोड़ दीह---तीजहरिया के रंथ रोक के भगवान से अरदास लगइह कि लोग तोहार निन्दा काहे करत बा। लइका दोसरा साँझ के रंथ रोक के पुछलक। सूरज भगवान आपन रंथ रोक के कहलन कि तू हमार हव। जा आजु का दिन से तोहरा के लोग जीउतवाहन गोंसाईं कही आ हर साल पख में एहवात-मुसमात सभी मेहरारू तोहरा नाम पर परब करी। वोहू बाभनी के लइका नाम पर इ जीउतिया हो खेला।

(२)

कवनो गाँव में दू बहिन रहे लोग। एक जानि के नाम चिल्हो रहे आ दोसरी सियारिन। दुनो बहिन जीउतिया भूखल रहल। तीजहरवा पुरखा पुरनिया के खरी- चढ़ा के आके अपना-अपना घर में सूत रहल। चिल्हो आपन ठोढ़ बान्ह के सूत रहली सियारो का भूखे ना अड़ाइल। उ जाके कहीं से मर्‌ही उठा ले अइली आ खाय लगली चिल्हो अपना मड़ई में से पटर-पटर शब्द सुनली त पूछली—ये सियारो बहिन, तोहरा मड़इया में का पटर-पटर करत बा। सियारो कहली—ना कुछो। भूखे हाड़- पटर-पटर करत बा। चिल्हो कहली—से ही बहिन, दोसर परब ना हवे; इ जिउतिया हवे। बिहान भइला पर चिल्हो पारन कइली। चिल्हो के जे लइका होखे उ

लागल आ सियारी के कोख मराछूं हो गइलं। सियारो खीस का मारे येक वेर एगो कुड़ेसर में बिरहनी भर के अपना वहीन कीहा सवगात भेजली। उनका मन में रहे कि वहिनिया के बेटा-बेटी के बिरहनिया काट ली आ उ मर जइहें सन। चिल्हो कीहाँ सवगात गइल तो उनकर लइका-फइका खाय खातिर हठ कइलन स। चिल्हो कहली—मुश्रो माय, जीओ मउसी। जा सन, हमर वहीन तोहनी के मऊसी, खोल के खा सन। लइका स कुड़ेसर खोललक त ओमे भर कुड़ेसर पीअर-पीअर बुनिया मिठाई रहे। सब खाय लगलन सन। सियारो अपना आदमी से पूछली—वहिनिया का घरे रोअन-कानन पड़ गइल होई ? अदमिया कहलस—ना त ! सव कवनो बुनिया खात रहलें ह सन। सियारो फिकिर में पड़ गइली आ फेनु येक कुड़ेसर गहुअन साँप भर के भेजली। चिल्हो वोही तरहे अपना लइका सव के कहके कुड़ेसर खोले देली। लइका सन का भर कुड़ेसर येकावली के हार मिल गइल आ उ पहिन के खेले हँसे लगले सन। सिआरिन सुनली त फेनु खिसिआ के येक कुड़ेसर चहुँड़ आ मूँड़ भेजली—इहो जाके पाकल तरकुल हो गइल आ लइका सब खाय लगलें। अब सियारिन के ना रहल गइल आ उ जाके चिल्हो से पूछली कि हमार कोख मराछ आ तोहर जीअछ येकर का वोजे हवे ?

चिल्हो कहली—"उहे ह सियारो वहिन, जिउतिया के तू रात भर मरही चवउल आ हम आपन जीभ नेवार के वितवनी। अवहू से जिउतिया करऽ कि तोहार कोख उछइत होखे।

(३)

कवनो गाँव में एगो मालिन जिउतिया कइलक। रात भर भूखे रहल आ होत भिनसारे भूख का मारे कि असकत का मारे सोचलक कि के जाव भात डढ़कावे। उ बसिया भात से पारन क लेलस। ओकर वेटा फूल लोरहे गइल रहे। पारन क के उ जइसे घर का वहरा निकलले कि गाँव में हाला मच गइल कि मालिन के वेटा के येगो अजगर साँप लील गइल। मालिन फेंकर-फेंकर के रोये लागल। पास-पड़ोस के बुढ़-पुरनिया मेहरारू अइली सन आ ओकरा के जिउतिया के भेद पूछली सन आ कहली सन कि तू बसिया भात पारन कइलू ह—उहे येकर वोजह भइल हवे। मालिन येक बरीस जीउतवाहन गोंसाईं के धेयान धइली आ दोसरा साल जब जिउतिया आइल त वाड़ा नेम-टेम से कइली। पारन का दिने भात पसा के माड़ भात पितराइन के चढ़वली आ ततले माड़-भात खाये लगली। जइसे-जइसे उ कवर उठावस वोइसे-वोइसे अजगर उनका बेटा के उगिले लागल। उनकरा खा के अचवत-अचवत उनकर बेटा अजगर का पेट में से निकलके उनका सोझा खाड़ा हो गइल। मालिन जीउतबाहन गोंसाईं के गोड़ लगली आ जिनगी भर नेम-टेम से जीउतिया करत रहली।

(जीउतिया का बेरि मेहरारू लोग से लेखक का अपना अङ्गना में के सुनल तीनों कहनी।)

—०—

कहानी—

दमरी राउत

स्वामी विमलानन्द सरस्वती (बक्सर)

पूस सुदी पंचमी के बाति ह। जाड़ा क दिन रहे। धान क कटनी जोर से शु हो गइलि रहे। भोरे पह फाटे का बेरा धनपाल राय का चउफाल पर बइठि लोग कउड़ तापत रहे। केहू हूँका पियत रहल त केहू बीड़ी सुनगावत बतकूचन लागल रहे। लड़िका, बूढ़, जवान समई बाति कटरावे में एगो दूसरा क कान का रहें। हम जइसहीं पहुँचलो धनपाल भाई बीड़ी बढ़ावत कहलन कि—'बइठऽ बइठऽ भा अबले का करत रहलऽ ह?

हम कहलों—भईंसि दूहि के हाथ-मुँह धोवे लगली हँ। सकराह दवँरी नाधे बा कि दूइ-चार दिन में निबाजित हो जाईं। एकही बैल बा, मँगनिये के ठहरल। जबले तोहरा नियर बड़े गिरहत के कटनी नियराई तबले हमार दवँरी ओरि जाई। साढ़े तीन बिगहा के डाँठि केतना होई? धनपाल कहलन—'भाई तोहने निइचिन्त बाड़ऽ जा—ऊधो के लेना न माधो के देना, आपन हाथ-पहुँचा चला के हरें फिटकिरी के दस मन पैदा कइ लेत बाड़ऽ जा।

देखना एह सालि पनरह बिगहा रोपहँस रहल हऽ। दूई गो नाटा राखी एही में बनिहार के डेढ़ बिगहा कोला देवे के परे ला। बोझा पाँजा अँटिया-मु एकरा से जीव बाँचिये ना सके। रुपया रोज आ एक साँझि खाये के दिहलो पर रोप विया-कबरिया भा कटनिहार नइखन भेटात। जमनिया, करइल आ गंगापार दुआ का ओर ले बनिहार ना आवसु त हमन के खेती भइल दुसवार बा।

एतने में सोमारू साहु बाति काटि के बीचे में बोललन—'धनपाल काका ले नइखे, अनेकन आफति बाड़ी स। एतना कुचरा लागल रहेलनि स कि बीचे ले केतने गोड़न के बहका के लवटा देलनि स।

बसगित कुफुति का मारे भीतरे भीतरे सुनगत आ कुरबुरात रहलन। बोलले उनकर पेट फूलत रहे। ना रहि गइल त कहे लगलनि कि—'अइसन गाँव दुपहरिये आगि लागे जरि जाय इहे नीमन बा। लोग खाली भाते क भुखाइल नइँखन उनका इज्जति के रइछा होखे के चाहीं। पानी ना त जिनगानी कवना के। पर साल घुरभारी के उड़ंकू लइका ढढ़नीवालो बनिहारिन क हालि कइलनि राम! राम!! भठयुग आ गइल। लोगन का मारे डोमिन चमाइनि तक नइ बाँचति। गाँव में त गोठहुल भुसहुल माफे रहल ह। भला आन गाँव के लो का कही?"

एतने पर दमरी राउत डाँटि बइठलनि।—"कुछ जानतो बाड़ऽ कि अइस पाँइ पाँइ करत बाड़ऽ ओकरा के भूत न पटकले रहे।"

धनपाल के गंगा जमुनी दाढ़ी आ लमहरि घन मोंछि मुसकी से चमकि उठलि ऊ भला कब बाज आवे वाला रहलनि? उनकर जबाब उधार ना रहे। ऊ कहि त दिहलन—

भाई दमरी बेकार खीझत बाड़ऽ खिसियाइल बिलारि खंभा नोचे। दिन दुपहरि बीच खरिहान में कहीं भूत पटकेला?

दमरी आपन पगरी सरियावत एक हाथे हूँका मुँह में पुड़पुड़ावत—गंगाजमुनी दाढ़ी पर हाथ फेरत कहे लगलनि—चउधुरी अवे तोहरा भूत परेत से कामे नइखे परल —ना त एतना ना जलफितऽ।

हमहूँ भूत परेत से पूरा डेराये वाला जीव रहलीं। एही से विना काटकूट कइले जीभि दवा के सुनत रहली। जिराम अहीर दमरी के वाति सदरथे कहे लगलनि कि—'अरे! दादा!! जे भूत का पाले परल होई ऊहे जानी! अवे त टटके हालि सुनले होइविऽ जा। हम सरेजा ले पाँच रुपया क रावि आ पाँच रुपया क पिंड़िया कीनि के ले आवत रहली हँ। वजारि के दिन पउदा-वारी लेतदेत अवेरि हो गइल। वाकी टहाटह दूध में नहाइल अँजोरिया उगलि रहे। हम नहरि धइले वूढ़ाडीह जाये खातिर चललीं। जइसहीं एक पूलि चलि के तिरलोचनपुर का सोझा चहुँपल होइवि कि नहरि 'का वायें पटरी पर हमरा ले दस डेग आगे एगो अदिमी धपाधप वकुला पाँखि नियर धोती-कुरता पहिरि के सोटा लिहले जा रहल वा। हम जनली कि केहू राहगीर होई। पचीस गज ले हमन का एगो दूसरा का अगले वगल चलत गइलीं जा। एतने में आगे एेगो पीपर के फेड़ परल, हम वायें तकलीं त का देखत वानीं कि ऊ राही वढ़ि के पीपर का बरावर हो गइल। अव त देहि में चिरले लोहू ना। हाथ गोड़ काँपे लागल। हम जानि गइलीं कि ई त भूत हउवे।

पलक गिरत कहीं कि ऊ आगे आइ के खड़ा हो गइल। हमरा से 'गूर मांगे लागल।

"का ले छोमरुवा। गुलवा देवे कि ना? एतना दूल हमाल जिमिदाली थहरलि।"

"हम चिचियाइ के गूर आ रावि पटकि दिहलीं, कइसहूँ जान लिहले परइलीं।"

वाति एइजे ले पलटि गइलि। रामजनम वारी कहलनि कि एक वेरि हम इँटवा हँकारपुर का वन में परास के पतई तोरे गइल रहलीं। ओइजे हमरा के मुड़ि कटवा छेंकले रहे। देवता पीतर के मनवती करत-सुमिरत कइसहूँ जीव वाँचल।

चतुरी भर कहलनि कि गाँव जानते होई। केहू से छीपल वा कि महीं काका का लइका के जान ले लिहलसि। ओझा सोखा लागले रहलनि जा कुछ ना होखल। हमरो के पंचपिपरा गड़ही के चुरइलि तीन महीना ले दिक्क कइलसि। जव राति के सूतीं त सोरह वरिस के सुघर लोच वहुरिया बनि के सिंगार कइले-खटिया का पाटि किहें आइ के खड़ा हो जाय। धनपाल के छोड़ि के सभई भूत के महिमा गावल। केहू राकस आ हँड़ कोसवा के वाति वतियावे त केहू वैमत, महीं, डाइनि, दइत्तर, बुड़वा जीन आ चुरइल के। दमरी राउत त ओझइत रहलनि। इ कुल्हि सुनि के मोंछि काहे ना अँइठसु? उनकर त रोब जमते जात रहे।

धनपाल जंगी जीव काहें के मानसु? दमरी के पलरा भारी होत; देखि के ऊ त वाति का पारिख खातिर ललकरलनि। दमरी कहलनि—चउधुरी वहकल ठीक ना ह। खतरा से डेरात बानी कि हतिया के लेवे जाव? नाहीं त एइजे वइठल मंतर का वल से भूत वोलाइ के देखा दिहतीं।

धनपाल लालपीयर आँखि गिड़ोरि के घुड़ुकलनि 'जानत बानी', आजकाल बढ़ ओझइत भइल बाड़ऽ। बल बेवसाव बाटे त बोलावत काहें नइँखऽ तोहरा मंतर जोर देखीं'।

× × × ×

२

दिन भर का दवँरी क थाकल खेदाइल सांझि का बेरा सभई जहाँ क तहाँ सूत फेर अनगुतहाँ ऊहे चंडाल-चउकड़ी जुटलि। अबहीं दमरी राउत आइल ना रहलनि उनकरे बाति परलि रहे कि बसगित कइलनि—'भाई आज त हमहूँ कायल हो गइलीं कालिह भोरे एइजा बतकूचन होत रहे कि दुपहरिया में खरगपूरा का पशुपति के बेटा हरलाल चँवर में बुड़ुवा से पटकाइ के बेहोश हो गइल रहे। दमरी काका रहितन त ओकर जीव ना बाँचित। चतुरी पूछलनि —'भाई बाति का हउवे कहऽ त।'

बसगित खइनीं ठोंकि के धनपाल राय का ओर हाथ बढ़ावत कहे लगलनि- हरलाल सोखा राय क हरवाहा ठहरल। रसूलपुर ले हर चलाइ के अबेरि का आवत रहे। असरेसा-मघा क दिन। बरखा कहे कि हमहीं रहबि। रोपनी मधकलि पाहि लगावत साँझि हो गइलि। काँदोपांक में सनाइल हरलाल बाहा में नहाये लगल नहाइ-धोइ, नाधा-पयना सरियावत-बटोरत झोल अन्हारी होखे लागल। ऊ में निकिरिसि पुलि पर ना जाइ के कठजा होत बीचो-बीच नहरि लाँघि के जल्दी पहुँचे का खेयाल से नहरि पर आइल। नहरि का उतर पटरी ओह पार एगो बाबा टीका फटकारि के खढ़िया कान्ह पर धइले बइठल रहलनि। हरलाल पुछलनि कि साधु बाबा केतना पानी होखी, हेलान बा?"

"तलि आउ थोलहीं बा।" कहि के छाती पीटत "एही दिनवा में ए दादा।"—बरबरात ऊ साधु नहरि में बूड़ि के गायब हो गइल।

एतने में दमरी राउत आपन हूँका सम्हारत पहुँचि गइलनि।

'का कहीं बड़ा हैरान कइलसि हउवे। छोड़ते ना रहल ह। मरिचा के धू दियाइल। कान में तेल डललीं आ एगो जड़ी सुँघवलीं हँ तबहूँ ना बोलत रहल ह। आ में बकवाके त दम छोड़लीं हँ।

दमरी के टेढ़ मुसकी धनपाल का करेजा में तीर नियर गड़त रहे। ऊ दमरी करखा दिहलनि कि भूत बोलावत बानीं असल ओझइत हउव त आड़ करि हऽ।

दमरी मीठ बोलिया रहलनि। चुटकी लेत बोललनि—ढीठ मति बनऽ। आ फेर हमरे सम्हारे के परी। बढ़ि बढ़ि के बतियावत बाड़ऽ अबहीं कबें मरद से नइखे परल।

धनपाल कब चुप रहेवाला जीव ठहरलनि। ऊ कहलनि कि अब अधिका करे के काम नइखे। काम परले बा, देखी के भागेला?

३

गाँव ले निचाठ पुरुब पचीसन बिगहा हटि के साईं लोग के तकिया तकिया ले उत्तर सटले बकाइनि, बइरि के सीसो के अनघा पेड़ बाड़न स, एक के सघन बगइचे समझीं। लइका बहुता ओइजा बइरि बीने-खाये जात रहनि

बाकी दुपहरिया में खड़खड़िया नाचे लगला पर ओइजा के जाय। लइका डरे ना ठहर सकत रहनि स। साईं लोग के मुरदा ओइजे गड़ाय। लइकन का मालूम रहे कि साईं लोग के पुरुखा-पुरनियाँ खड़खड़िया नाचे लगला पर बवंडर बनि के टहरे निकलेला। एक बेरि एगो ढीठ चरवाह बवंडर में निमक डालि दिहलसि। सुनले बानीं जा कि निमक डालते एगो बूढ़ धपास दढ़िवल साईं-जेकरा के लोग जोहरल्ली कहे—आगा आइ के ठाढ़ हो गइल।

ऊ चरवाह कइसहूँ सात दिन ले जीयल। आखिर में लोहू बोकरि के मरि गइल।

× × × ×

तीन घरी राति गइले होई। दमरी राउत अपना देवी-देवता के सुमिरि के कबुरगाह का ओर चललनि। धनपाल राय से ओइजे कबूरगाह का पँजरा बकाइनि का फेंड़ तर सूति के भूत से ना डेराइला के उनका सबूत देवे के रहे। आपन बाति आ पद जेठ करे में राउत जी पाछे कइसे परितन।

'महाबीर जब नाँव सुनावे, भूत पिवास केहू ना आवे' के चउपाई भुनभुनात दमरी राउत आपन बँसइट खटिया कबुर का पंजरे बिछाइ दिहलनि। खटिया ले पंजरे एगो परई में आगि धइके दसाँगि दीहल रहे। एने धनपाल राय अपना तइयारी में रहलनि। भोजपुरी-किसान गाइ-बैल आ भइँसि का पोंछि के बार काटि के जोगवले रहेलनि। ओही बार से ऊ लोग दवँरी-नोइ आ अउरी केतना बतुस बनावे ला। बार के दवँरी सन पटुवा का दवँरी ले बरियार होखे ले।

धनपाल देही पर ले कुल्हि लूगा-कपड़ा उतारि दिहलनि। बस एगो पातर चीट भर लँगोटी- बिहिटी का रुप में उनका देहि में रहे। करू तेल में करिखा फेंटि के मजेमें सवँसे देहि में ऊ लपेटि लिहलनि। अब परेत बने में कसरि का रहे। एकरा बाद बार के एगो दवँरी कपारे बान्हि लिहलनि जवनि करिहाईं तकले लटकि आइलि। दूसरी दवँरी करिहाईं में लपेटनि कि एड़ी ले सोहरि गइलि। असली भूत बने में जे तनिका कोरकसरि रहे ऊ पूरा हो गइलि।

× × × ×

ओइजा दमरी राउत का पपनिन पर नींनि के पहरा शुरू होत रहे। अँजोरिया डूबति रहे। धनपाल कले-कले कबुरगाह का पँजरा पहुँचि के आँखि बचावत आड़ देइ के बकाइनि का फेड़ पर चढ़ि गइलन। जाड़ क दिन राति महा भकसावन भइलि रहे। बगइचा घनघोर रहे, ओइजा त बकाइनि बइरि बँसवारि आ ढेला मकरतेनि का आड़ से अँजोरियो में अन्हारे जनाय। इ त अन्हरिया रहे एकर का पूछे के। साँझहीं भूत लंगटे नाचे लागसु।

दस पाँच मिलिट ले पटाइ के सूचित भइला का बाद धनपाल हहास बान्हि के बकाइनि के डाढ़ि झकझोरत दमरी राउत का खटिया पर कूदि परलनि।

भूत कें महाभकसावन रूप देखि के दमरी के देवता डहरि नपलनि। 'आहि दादा। जान गइल'•••कहि के चिचियात दमरी खटिया पर ले कूदि के बाईं का झोंक में भगलनि। दुइ बिगहा गइल होइहनि कि बेहोस होइ के गीरि परलनि।

चिचियाइल-चिकरल सुनि के नियरा पास का खरिहान ले लोग दउरि परल। खरिहान से गाँव तक ले डेगाडेगी लरि लागि गइलि। घरी भर में पचासन आदिमी

बाहुर हो गइलन। दमरी का मुँह ले लोहू निकलत रहे। लोग उनके टाँगि के गाँ ले गइलनि।

४

दमरी राउत चउसा-सरँगहा के सबसे बड़का सरहँग ओझइत रहलनि। जवार-मँ में कतहीं केहू के भूत परेत धरे त ऊहे छोड़ावे जासु। आज जब उनकरे झोंटा में था लागल त केहू बुतावे वाला ना भेंटाय। सभई जवारी ओझा सोखा उनकर चे रहलनि। अपना गुरु गोसयाँ के अइसना आफति में परल देखि के उनका लोग अकिलि काम ना करे। केहू लवँगि फेंके त केहू तपावन चढ़ावे। आखिर सभई हा मानि के इहे कहे किं बड़ा भारी दइत्तर हउवे। कुछ थाह नइँखे लागत। जीन दइत्तर के छोड़ावल सहज ना ह।

दमरी बेहोस परल रहलन। सभ जंतर-मंतर बेकार हो चुकल रहे। सात दि ले इहे हालति रहे। देहिं सूखि के काँट हो गइलि। जब कबे दूइचार छन खा होश आवे–आँखि खुले त इहे कहसु कि—"अरे बाप! रे बाप!! बड़ा भारी परेत—ई रहल ह। ओकरा एड़ी कपार ले जटि रहलि ह। देहिं करिया मलेछ!

× × × ×

धनपाल देखलन कि हंसी कहीं हतिया के रूप न धइले। इहे सोचि-समुझि के ऊ दमरी का पास गइलन आ भूत बनि के उनका के डेरवावेवाली आपन कुलि बा कहि दिहलन। एतनो पर दमरी नाहीं पतियात रहलन। हाँफते-हाँफत दमरी क लगलन—नाही दादा! हम तोहरा के चीन्हत नइँखी जे डेराइबि। तोहरा में एतन बल कहाँ बा? ऊ त पुरान जीन रहल ह।

आखिर में राति का बेरा धनपाल आपन उहे पहिलका रूप बनाइ के दमरी का पासे गइलन। दमरी आँखि फारि के मजे में धनपाल के निहरलनि। उनकर शंका दूर भइल आ भरम के भूत पिंड छोड़लसि।

घोषणा-पत्र

१ प्रकाशन स्थान—पटना।

२ प्रकाशन की नियतकालिका—त्रैमासिक।

३ मुद्रक का नाम—पाण्डेय नर्म्मदेश्वर सहाय।
राष्ट्रीयता—भारतीय।
पता—सालिमपुर अहरा, पटना ३।

४. प्रकाशक का नाम—पाण्डेय नर्म्मदेश्वर सहाय।
राष्ट्रीयता—भारतीय।
पता—संचालक, भोजपुरी परिवार, सालिमपुर अहरा, पटना ३।

५ संपादक का नाम—पाण्डेय नर्म्मदेश्वर सहाय।
राष्ट्रीयता—भारतीय।
पता—सालिमपुर अहरा, पटना ३।

६ समाचार पत्र के मालिकों और कुल पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक शे वाले साझेदार या शेयरधारियों के नाम और पते—पाण्डेय नर्म्मदेश्वर सहा सालिमपुर अहरा, पटना ३।

मैं पाण्डेय नर्म्मदेश्वर सहाय, इसके द्वारा घोषित करता हूँ कि ऊपर दिये गये ब्यौ जहाँ तक मेरी जानकरी और विश्वास है, सही हैं।

ह० पाण्डेय नर्म्मदेश्वर सहा

स्व० प्रेमचन्द्र के एक कहानी के रूपान्तर

पञ्च-परमेश्वर

व्रजकिशोर (सारन)

पात्र	पात्री
(१) जुमन मियाँ—अलगू के हित।	(१) करीमन—जुमन के मेहरारू
(२) अलगू चौधरी—गाँव के नामी आदमी।	(२) बुढ़िया—जुमन के मौसी
(३) समभू साह—एगो तेली।	(३) चउधराइन-अलगू के जनाना
(४) रामधन मिसिर आ पंच लोग।	(४) सरवसिया—समभू का घरे
(५) नोकर-चाकर।	

प्रथम दृश्य

[जुमन मियाँ के आँगन। अङ्गना में दु-चार गो पियाली, घइला बाल्टी आ एगो कोना में थोरे लवना धइल बा। एक़ोरी एगो खूब पुरनिया, मउनी में कसे लायक मेहरारू गाल तरे हाथ धके बइठल बिआ। दोसरोरी जुमन मियाँ के मेहरारू करीमन चउखट पर बइठ के बड़बड़ात बाड़ी। फेरु घर का भीतर जाके एगो थरिया में ना जाने कबके झुराइल रोटी लेके बुढ़िया का आगे पटक देतारी—समय दस-एगारे बजे दिन।]

करीमन—जब देखीं तब खाये के! भोरे चाहीं, ऊपरियो बेरा, साँझहुँ खान आ रातियो के!....

बुढ़िया—(झुझुआ के, बाकी बोली में दीन भाव) येही सुखल रोटी पर अतना बात! पेट केकरा नइखे! जबले जिनगी बा तबले तऽ खाहीं के पड़ी। मुँह में केहू जाब लगाके नानूँ रही।

क०— ना रही तऽ खाईं का? चुल्ही में के मुँमुँरे परोस देब। येह अङ्गना जइहें, ओह अङ्गना जइहें! कहीं लोर चुअइहें, कहीं नाक पोछिहें!! जनू इहाँ इनिकर पेटे ना भरे। दिन भर में चार हाली खाँच लेली, तवो हिया ना भरे। हाथी-घोड़ा लिलिहें का दोना?

बु०— आदमियो कहीं हाथी-घोड़ा खाला। हमरा तऽ एक जून के दाना मिलल मोहाल हो गइल बा। बतावऽ ना, हइए दू गो खरकटल कहिया दो के रोटी दे देलू, ना तर तेल ना ऊपर नून!

क०— (अइँठ के) बाप रे बाप! बूढ़ भइली, अबहीं जीभ के टिसुना साबिके बा। रोटी चाहीं, ओपर अलुई, बैंगन, सेम, टमाटर के चार-चार खल के चटकार तियना चाहीं!! गूलर मिलल महाल बा। ऊ कवनो कम बा?

बु०— (आँख में लोर भरके। गला भारी हो जाता) हमरा के कउँचावऽतारू का? हम का चार खल के नइखीं खइले। हम का जननी कि हमार ई गत होई! हे अल्लाह, हमरा के उठावऽ ना! अब आउरी कवन दिन देखइबऽ? (रोअतिया)।

क०— बाप-रे-बाप ! अतना तिरिया-चरितर ई जानेली ! येह टिटुका चुअवला से आजे मर जातारी। आरे, मर जइतू तऽ हमार दुःखे छूट जाइत ! आराम बइठल चाह तुरऽतारी आ तीन-तीन बेरा घोंहतारी, तेपर इनिकर गत होता !!

बु०— (माथा ठोक के) हे अल्लाह, परवरदिगार, कवना जलम के खसुर हवे ए खुदा ! का जानी कि........

क०— (हाथ नचा के) चुपचाप लिलबू कि झोंटा धऽके लासारीं ? दाल चाहीं, चाहीं, रोटी-तरकारी, हलुआ-पुड़ी आ मछरी-गोस चाहीं तऽ जा कहीं एह समे कवनो देखनगर घर कऽ लऽ ?

बु०— ...(एक टुकी रोटी खाके पानी पी लेतिया) जवन-जवन सरधा होखे तवन-कऽ लऽ। का एगो गरीब बेवा के आह बटोरऽतारूऽ ? कवनो हम मंगनी माँ थोरे ! जै दिन बानीं, तै दिन ! फेर तऽ चारू ओर तोहनिये के बा।

क० – ...(गाभी से) हँ, हँ; तूँ तऽ हमनी के किन लेले बारू। दु-तीन बिगहा खेत देली, जिनगी बय करा लेली। ऊसर-धूसर देके हलुआ चभिहें ! जतना सोगिया लवनी का पेट में झोंका गइल ओतना में एगो गाँवे किना जाइतऽ।

बु०— ...(सिसुकल) हे खुदा ! ......

(तले आङ्गन में जुमन मियाँ आवतारे)

जुमन— बाप रे बाप, येकनीं का मारे ता वाया डोल गइल बा ! कहीं से आवऽ इहाँ बाजार गरमे रहता।

बुढ़िया—(रोके) हमरा कवन झगड़ा करेके सरधा जागल बा बबुओ। अपना विअहिया बरजऽ। (नाक पोंछ के फेंकतिया) किरिन भीतर से लेके किरिन बुड़ात ई हमरा के हुतुकावत रहेले। एको घड़ी चैन ना ! कलजुग हऽ कलजुग !! कलजुग !!!

क०— (हाथ चमका के) बाप रे बाप ! जा ना एही मरदुआ से बिआह कऽ लऽ। जाव सगाई। जिनगी भर के खेलनी अभागी सरापते-सरापते घर-बन सम जाई ! ई हमार सवतिन हऽ का दो कि एकरा से झगरीले। बूढ़ भइल जवानी के माजा चाहीं ! राँड़..... अभगती......

बु०— (रोअते में) ओहिना ठाड़ा होके तूहूँ सुनतारऽ जुमन। हम जे एको सबद होखीं तऽ हमार जीभ गल जाव, पिलुआ पड़ जाव ! आ हमरा के अइसन कै दिन खातिर बानी हो जुमन ?

जु०— वाह ! वाह रे !! तहरा खानी केहू बा ? बुढ़ारी समे चुपचाप परल रहेंला तऽ चर-चर कइले बाड़ी। चुपचाप खा !

बु०— (सुसुक के)

जेठ भइल हेठ
बइसाख भइल ऊपर
ससुई का माथ पर
पतोहिया के चूतर

लोग झूठ ना कहे। अब तूहूँ ओकरे पछ घींचतारऽ। हँऽ ऊ तऽ मेहर हिअऽ। हम के हईं ? हम ईं का जननीं ना तऽ।

क०— (झमक के, ऊँच आवाज में) ना तऽ लंका डाह दितीं। लील जइतीं। इहे कहऽ। दु-बिगहा जिरात ना देली, भाग दे देली।

जु०— पहिले हिन्दुए लोके पुरनिया के माथा का दोना सठिया जात रल हऽ। अब तऽ हमनियो के बूढ़ नू बउरा जातारी सऽ। कह तऽ भला मौसी, तोरा का चाहीं ? चुप-चाप सुखल-सुखल मिलेला से खाला आ आराम से परल रहेला। हम तऽ देखतानीं की झगड़ा करे खातिर तोरा बल आ जाताऽ

बु०— हम कब रूखल–सुखल से इनिकार कइले बानीं। बाकी हई रोज-रोज के गहिंगो-गहिंगो अब ना सहाई।

जु०— (चिहा के) एकर–माने ?

बु०— माने ई कि अब हमार निरबाह तहरा सँगे ना होई। हमरा के अलगे दे दिहऽ हम बना खा लेब।

क०— खाहीं के बा तऽ कहीं से खोज ले। इहाँ का घोध धइल बा आकि भूँड़ फूटल बा।

जु०— (रोसिया के) हम ई ना सोचले रली हँ!

बु०— हमहीं ई कहाँ सोचले रलीं हा।

जु०— तऽ फेर ई तीन कनउजिया तेरह चूल्हा कइला के कवन काम ?

बु०— (सुसुक के) बेकस बेवा का दोसर कवनो राह नइखे लउकत। आज गारी सुनतानीं, बात सुनतानीं, बिहान लात खाए के परी। एसे नीमन इहे बा कि हम अलगे खाईं-पकाइं- ना रही बाँस ना बजिहे बाँसुरी ?

क०— लात के के कहो तूँ तऽ रोजो हुदुका खइबू। लात के देबुता बात से ना मानस।

जु०— (रोसे में) ठीक, हरनठ देवता के भरनठ पूजा चढ़ेला। हम बात साफ जानीले। तहरा हमरा संगे रहे के बा तऽ रहऽ ना तऽ हमरा लगे कवनो बैंक नइखे खुलल कि तहरा के भँजा के फाँड़ भर दिहीं।

बु०— रो-रोके) आरे, हमरा कुछुओ तऽ चाहीं ?

जु०— चाहीं का! के जानत रहे कि तूँ इमिरिती खाके आइल बाड़ू। तहरा जिनगी के बेहू ठीका लेले बा ?

बु०— (हाथ ऊपर कके) अल्लाह के डर कर बबुओ। उनका नजर से कवनो पाप ना छिप सके! हम पनचाइती करायेब।

जु०— का कहलू हऽ ?

बु०— इहे कहली हँ कि अगर तुँ हमरा के गुजारा लाएक रोपेया ना देबऽ तऽ हम पंच बिटोरब।

जु०— जा–जा, दुनिया भर के बटोरिहऽ। देखेब कि के हमार का कर लेला। देखेब कि के तहरा के गिनी दिवा देला। (रोसिया के घर से बाहरा चल आव तारे। परदा गिरता)

दूसरा दृश्य

(अलगू चउधरी अपना दुआर पर बइठल बाड़े। ठेहा पर लेदी काटल बा। एगो नोकर ओहि भीरी बइठल बा।)

अलगू— कस रे, तोरा के अब हम केंगें कहीं ? बताव तऽ अब साँझ होखे आइल आ तें टाँग पसरले नीन घींचत रले हऽ। अब खूंटा पर बएल टुकुर-टुकुर ताकत बाड़े सऽ। ओकनीं में जीव नइखे का ? एक बेरा तऽ तनी अबेर होला तऽ हमनी के ढेंढ़र निकले लागला-बुझाला कि तीनू तिरलोके लउकल! अपने से दोसरो के बूझे के चाहीं। ओकनियों का पेट बा, भूख आ पियास लागेला।

नोकर— (कँगँदो मुँहकके) का कहीं मालिक। भिनसहरे से हमार मन दु कइसन दु गइल बा। कपार आ देह टूटता। काल्ह मिजाज साएद झुरा गइल का दो। हरवाही में आजो चल गइलीं हँ। अइला पर बुझात रलऽ कि हम ऊपर आका में पतई खानी उधियात बानीं। आवते जे पड़नी हँ से नीन्न आ गइल हऽ।

अलगू— देखीं तऽ हाथ। (नटिका टोअऽतारे) अब तऽ एकदम ठीक बा। भोरे काहे कहलेहऽ हरवाही आज ना विहान होइत। खैर, अब मिजाज फरहर बुझा कि ना?

नोकर – (कपार टोके) माथ तऽ अबहीं भारिए बुझाता बाकिर तबहूँ टनमन बा।

अलगू— ना होखे तऽ आराम करऽ, आज हमहीं अकेले सभ कार जुगता लेब। दे कसरिआह रहला पर आराम करे के चाहीं।

नो॰— (उठके) ना मालिक! अब कवनो बात नइखे। अतना आलाय-बलाय तऽ हमरा बावें-दहिने रहेला। इ कइसे होई कि हम गोड़ में महावर लगा के बइठ रहीं आ रउआ नाद-भूँसा करीं। जेकर दाना खाय ओकर लिख देवें-ईहे मरद के काम हऽ।

अलगू— चुप! तोर कमाई तऽ हम खाईले, हमार घर भर खाला। हमार कमाई ते का खइबे रे? तें ना रहस तऽ हमनो सभ बेकतिन का मुँह जाव लाग जाई। एक दिन तोहार कार हमहीं कऽ देवऽ तऽ ओसे का होई।

नो॰— (घइला उठा के) ई तऽ ओहि दिन होई जहिया हम खटिया पर पड़ जाएब। चले के बूता ना रही। (बाँह देखा के) अबहीं तहरा अइसन कतना अद का बदला में बिना नागा देले खटे के वल हमें बा! इ बनल रहे तऽ सउंसे जगत्तर नीमन।

अलगू— (हँस के) आरे, पराछुत खाए बइठे वाला के आज केहू पूछे जाता। तहार गुनवे देखके तऽ हम आपन सभ खेती-बारी तहरे पर सँउप देले बानी।

(नोकर एकोरी घइला आ डोरी लेले चल जाता। तले दोसर ओरसे बुढ़िया निहुरल-निहुरल गोजी का बले चलत आवऽ तिया।)

अलगू— (देख के) आरे मउसी, तूँ घुमल काहे फिरऽतारू हो! पा लागीले!!

बुढ़िया—(गोजी धरती पर धरके बइठ जातीया) जीअऽ ए बबुआ! अल्लाह तहरा के लखिया करस! नाती-पूता, धन-दौलत सभ बनल रहो।

अलगू— केने चलले हऽ मउसी? कइसे एतना दूर आ गइले हऽ? बूढ़-पुरनिया के गोड़ चलते-चलते बथ गइल होई।

बु॰— (रो के) आरे बेटा, कलयुग जे ना करावे। ना तऽ हमरा दुआरे-दुआर कुदला के का मोसरफ? दिन कुदिन भइला पर अपनो पराया हो जाला।

अलगू— हई लऽ। (चिहा के) रोअत काहे बाड़े? जुमन कुछ कहले हऽ का?

बु॰— (रोअते में) कहही नु आइल बानीं बबुआ सभ केहू से अपना दुख के कुहुर क अइनीं। तहरो से कहहीं आइल बानीं। मुँह बन कइला पर पेट पर आफ बा। आज पेट खातिर पंचाइत बटोरे के पड़ल बा। हमरा के देख केहू हँसता—केहू मुँह बनावता—केहू गाभी मारता कि रे बुढ़िया अब त तें मुए का

किनारा अइले, फेर ई चख-चख का कइले बाड़े। बबुआ हम कवन आग बोअतानीं—से तुँही कह। सभ जीव-जन्तु पेट खातिर मुअता। हमरो के रामजी पेट देले बाड़े। रुखल-सूखल कुछुओ खाए के त चाहीं? फिर इहाँ त फुटहा दुर्लभ बा? बबुआ हमरा पचाइत में दम भर खातिर तुँहू चलि अइह।

अलगू— पंचाइति में हम जाके का करेंब मउसी! गाँव भर त जइबे करी।

बुढ़िया— हम त अपना दुखड़ा के सगरे कह देनीं। केहू हँसल, केहू मुसकाइल, केहू सुनके देआल भइल त केहू हमरा के लुलुआवले सुरू क देलस। हम सभका से कहतीं। पंचाइतीं में आवे ना आवे के अखतियार ओ लोका बा। तूँ काहे ना चलबऽ हो?

अलगू— हमरा गइला से का नाफा जब हम ऊहाँ मुँह ना खोली?

बु०— त तहार मुँह के बन करी बबुआ? तुँ जे निआर बुझिह से कहिहऽ। तहरा हमार अँगुन लउके त चरलर्ची बोल दिह उनुकर दोस लउके त समझा-बुझा दिहऽ। साँच बात कहे खातिर मुँह पर लगाम ना रहे बेटा।

अलगू— मइटिआ के) हम साँच आ न्याय के बात कँगँ कहेब जब ऊ हमरा लरिकइयाँ के हित हउअन। आज ले हमनी एक दोसरा के कुछ ना कहलीं। ओह दिन हमार ओठ कइसे हिली?

बु०— अरे बबुआ! लरिका खानी मत बतिआवऽ। हितई के बात हऽ। ईमान जवन बात कबूल करे, ऊहे साँच हऽ बकिए सभ जूट। फेरू केहू हितई खातिर आपन ईमान दे दी, आकबद बिगाड़ ली? ईमान आ आकबद हितई का ऊपर के चीज हऽ। बोलऽ अइबऽ नू?

अलगू— (चुप)

बुढ़िया— काहे नइख बोलत हो? एगो गरीब असहाय राँड़ जनाना के मोचन ना करबऽ?

अलगू— (सोच के) चलेब। जब ना मनबू तऽ का करेबऽ।

बुढ़िया— (उठ के) जाईं कुछ अउरि लोग से कह दीं। तूँ आवे के मत भुलइहऽ?

अलगू— आछा! आच्छा!!

(बुढ़िया उठ के जातिया आ अलगू माथा पर हाथ धके सोचतारे। तले परदा गिर जाता।)

तोसरा दृश्य

(मिसिर टोली में भुचेगन महतो का दुअरा पर रामधन मिसिर बइठल बाड़े। लगे दू-चार आदमी अउर बइठल बाड़े।)

रा० मि०— (महतो से) अब तूँहीं कहऽ एसे ढेर अन्याय अब दोसर का होई? एगो राँड़ आ ओहू में बूढ़ मेहरारू के खेत त जुमना लिखा लेलस—लिखावे का बेरी केतना पोल्ह कइलस। आज साफ़ अँगुठा देखा देता।

महतो— हँ मालिक! सभका अपने लउकता। सभे सहोथही का फेर में बा। कँगऽ दोसरा के घेंट अइँठ के आपन पेट ऊँच कऽ लीं, इहे सभे चाहता। बताईं खाला के दिन के मेहमान बिआ।

रा० मि०-आरे ऊ तऽ भला बूढ़ बिआऽ। केहू का जवान बेटा टूट जाता तऽ केहू के
करऽता। बा केहू में पावर कि ऊ ओकरा के बचा लेव। ऊ तऽ बेचा
लटकले बिआ। आज ना मुई, काल्ह ना मुई, परसो! फेर ओकरा के सतन
के काम? आदमी येंगँऽ खखुआला!

महतो— मत कुछ कहीं। जेकर मन एक हाली चसक जाला, ऊ चसकले न रहेला।
अपना के कुछ लगावतारे। तबहीं नू ऊ रौरा पाँच गो आसामी के अपना जमे
में बसा लेले। देखत रहीं कि ऊ का–का करऽ तारे।

रा० मि०-(हाथ पटक के) आरे हम जो चहितीं तऽ चुट्की मीसत में उनुकर सभ अइठ
छोड़ा देतीं। बाकिर बेकार टेंट बेसाहला से का लाभ? अब तऽ एही में बच
सीख जइहें। खाटा-मीठा सभ बुझा जाई।

महतो— चलीं अब ठंढा हो गइल। पंचाइती देख लेहल जाव।

रा० मि०-आजे बा का?

महतो— रौरा इआद नइखे का? लीं, तब तऽ सभ गुड़ माटी करतीं नू?

रा० मि०-नीमन कहलऽ हऽ कि इआद पार देलऽ हऽ ना तऽ का होइत का ना ए
कवन ठीक रलहऽ। चलऽ चलऽ

(उठ के सभे चलता।)

चौथा दृश्य

(दरी आ चट बिछल बा। बीचे दुगो कालिनो बाटे। ऊपर से ब
के गाछ छाँह कइले ठाढ़ बा। नीचा पंचाइत लागल बा। जुमन आ अल
एक सँगे बइठल बा लोग। रा० मि०, महतो वगैरह सभे पंचाइत में आइल बा)

रा० मि०-(बुढ़िया से) अब जेकरा आवे के रलहऽ से सभे आ गइल। अब तूँ कवना बा
के पंचाइती करावऽ तारू से एक हाली आउरो कह दऽ कि सभे कान खोल
सुन लेव। फेर ओकरा बाद पंचाइत के कार होखो!

बुढ़िया—(हाथ जोड़ के) पंच सभनी! हमरा का कहे के बा। सभ तऽ कहिए चुक
बानीं। खैर जब हुकुम बा तऽ कहहीं के परी। अपने सभनो जानत होखेब
तीन बरिस पहिले हम आपन कुल्ही जर-जायदाद जुमन का नावें लिख देहनीं
ऊ हमरा के जिनगी भर परवरिस करे के कबुलले। लिखला का बाद घर
के बरताव हमरा से बदल गइल। एक जून के खाना मिलल मोहाल बा। ह
मन तऽ धोबी के कुत्ता हो गइल बा, ना घर के, ना घाट के। जीअल-मुअ
कवनो अपना हाथ में बा?

महतो— लब का! जेकर जब पूज जाई, ऊ तबहीं चल जाई। मउअत ना मँगले मि
ना खेदले खेदाले!

बुढ़िया—हम तऽ रोज दोआ मनाईले। अल्लाह के निहोरा करीले की अब हमरा के
लऽ बाकिर एमें केकर बस बा। हम मेहरारू जात कोट-कचहरी में कहँवा जाईं
अब ई दुख सहात नइखे। रोज-रोज के खट-पट केकरा नीमन लागेला।
अब अलगे बनावे-खाए के चाहतानीं। पंचमुखे परमेसर बास करेले। अगर हम
में दोस होखे तऽ हमरा मुँह पर थूक दीं सभे आ इनिका में गलती होखे तऽ इ
दीं लोगन। एही दरबार के नू हमरा असरा बा।

रा० मि०-ठीक बा। पंच लोग जुटिए गइल बा। (जुमन मियाँ से) मियाँ जी रौरा आपन पंच चुन लीं। पंच जे कही ऊ तऽ मानही के परी। ई से पहिलहीं से साफ रहल आछा बा।

जुमन— (चारू ओरी देखके) हम का कहीं। पंच के हुकुम अल्लाह के हुकुम हऽ। हमरा ओमे कवनो उजुर ना होई। हम पंचन के बात माथे चढ़ायेब। खालाजान जेकरा के चाहस बदस। हमरा सब कबूल बा।

बुढ़िया—तहरा नाँव धरे में का होता? आपन पंच चुन लऽ?

जु०— ना; आज हमार मुँह मत खोलावऽ। तहरे गोटी लाल बा। जेकरा के चाहऽ ओकरे के चुन लऽ।

बुढ़िया—(मतलब बूझ के) बेटा सबकर मालिक अल्लाह बाड़े। केहू केहू के हित आ दुसमन ना हऽ। जब जेंगऽ मोका आवेला आदमी अपने मने हित आ मोखालिफ बूझ लेला। पंच जे होला ऊ ना केहू के हित हऽ ना बैरी! ओकरा खातिर दुनु आँख बराबरे बा। तूँ सोचतारऽ कि तहार इहाँ सभे मोखालिफे आइल बा। जाए दऽ तहरा आउर केहू पर विसवास ना होखे तऽ अलगूए सही। हमरा खातिर जइसन रामधन मिसिर, ओइसने अलगू चउधरी!

अलगू— ना, ना! हम का करेब? जानत नइखू हम जुमन के गाढ़ इयार हईं। हमर पछ घींच सकतानीं। केहू दोसरा के बदऽ।

बु०— हम तहरा के दुसमन नइखीं कहत। इयारी खातिर केहू ईमान नानू बिगाड़े! पंच मुँहे परमेसर रहेले। तू जे कहवऽ से तहरा मन के बात ना होई, ऊ खोदा के बात होई। हम तहरे के पंच बदतानीं।

जुमन— (अपने से) अब का, अब तऽ ऊँट एनही करवटी!

(अलगू सरपंच बनतारे। बकिए लोग पंच। पंचाइती के असल कार शुरू होता।)

अलगू— (जुमन से) भाई, हम तूँ तऽ लँगोटिया इयार हईं सऽ। जब कार पड़ल त तूँ हमार भार हलुक कइलऽ। हमरा से जे बनल से हम कइनी। बाकी एह बेरा हमरा खातिर जइसन खालाजान, ओइसनके तूँ। एसे तूँ आपन बात पंच लोग से अरज करऽ

जुमन— जइसन हुकुम! (मुसुका के) साँचो तीन बरिस पहिले खालाजान हमरा नावें आपन जायदाद लिख देहलीं। हम उनुका परवरिस के कबूलनीं। आजो कबूलतानीं। ऊ हमरा माई खानीं बाड़ी। हम उनुका के इहे बूझीले। बाकि मेहरारू जात के हम का कहीं। एकरा अपने मने एक दोसरा से डाह रहेला। हम एमें का कर सकतानीं। माहवार खरच देवे लाएक आमदनी के जायदाद नइखे। हिब्बानामा में ओकर चरचो नइखे। आगे पंच लोके अखतियार! हमरा सब कबूल बा।

अलगू— खालाजान, तहरा कुछ आउर कहे के बा?

बुढ़िया—ना! हम तऽ सभ कह चुकल बानीं।

अलगू— आछा मियाँ जी, रौरा तऽ जिनगी भर खाना-कपड़ा देवे के बा?

जुमन— हम एसे कहाँ भागऽतानीं!

अ०— जायदाद कुल्ह कतना बा?

जु०— पाँच बिगहा !

अ०— तहरा ओमे कतना उपजेला ?

जु०— येकर कवन ठीक बा ? सुखार-दहार से बँचवे का करेला ?

अ०— असों सब खेत आबाद बा ? कवन-कवन खेत बा ?

जु०— हँ; बो तऽ सभ देले बानीं बाकिर फसिल नीमन नइखे। कुछ खेत चँवर हऽ चार बिगहा ले ऊपरवार।

(अलगू पंच लोग से राय कके थोरे देर का बाद आपन फैसला सुनावतारे—)

अलगू— जुमन भाई, पंच लोग तहरा बात पर विचार कऽ चुकल ओ लोका रा खालाजान के जैदाद अतना बा कि ओसे खालाजान के महावारी खरच दि सकेला। अगर तहरा खरचा देहल मनजूर ना होखे तऽ बयनामा रद बू जाई आ आइन्दे ज़ैदाद पर तहार कवनो हक ना रह जाई।

(जुमन फक हो जातारे। रा० मि० खुश होके येने-ओने ताकतारे। बुढ़िया अलगू के दोआ देतिया तले परदा गिर जाता।)

माँ

बटोहियाँ अबहुँ न अइलन

बीतल जात हौ सवनवाँ क लहरा
बटोहिया अबहु न अइलन……
कारी कारी आवेली बदरिया
गरज, बरस जाली मोरी अटरिया
पर उनके बिन हे सखि !
रह जाली अधभींगी चुनरिया
कि बिदेशिया अबहुँ न अइलन ….
सुनीला जब कोयलिया क बोलिया
जियरा रह-रह फड़क उठैला
बहेला जब पुरवइया बयरिया
हियरा रह-रह फड़क उठैला
कि रसिया अबहुँ न अइलन……
नयनवाँ से घड़ी-घड़ी नीर बहेला
सुध करके पिछली कहनियाँ
बिरहिया में हो जाईला आकुल
देखिला जब सूनी डगरिया
कि बिदेशिया अबहुँ न अइलन …
बीतल जात हौ सवनमाँ क लहरा
बटोहिया अबहुँ न अइलन……

ललित मोहन पाण्डेय "जीवनदीप"
(वाराणसी)

पनिहारिन

पनघट पर जमघट ले आइलि गुजरिया, भरन गगरी।
रंग रूप यौवन के लागल बजरिया, सजल सगरी, सजल सगरी ॥
सूतल सनेहिया के अंगवा छिपौले
घइला के गर्दन में बँहियाँ लगौले
इंदर सभा से उतरलि परिया, पहिरि चुनरी, पहिरि चुनरी ॥
पायल के रुन झुन से चूरी के झन झन से
गूँजे डगरिया इ चिरइन के सरगम से
पुरवा वयरिया बजावे बँसुरिया, सबद मधुरी, सबद मधुरी ॥
गोटा के साड़ी आ लाली चुनरिया कि
नथिया में सोहेली नयकी बहुरिया कि
अँखियन में कजरा बतावे उमिरिया, रचल अंगुरी, रचल अंगुरी ॥
पानी में जसहीं डूबल घइलिया कि
रूप आपन देखि डेराइलि गुजरिया कि
प्रीतम संग लागल जगावे पिरितिया, बहुत गहरी बहुत गहरी ॥
झटपट पानी भर, माथा पर घइला धर
गोड़ो न रोपात रहे धरती के छाती पर
बीचे डगरिया में रोकलसि वदरिया, अजब फुहरी, अजब फुहरी ॥
चुनरी लेटा गइले अंगिया बोथा गइले
फुलवा अस देहिया के केहू सिहा गइले
सावन के रिमझिम में गावे गुजरिया, मधुर कजरी, मधुर कजरी ॥

गजानन प्रसाद

यदि आप शीघ्र आरोग्य के लिए
सस्ते दर पर
प्रामाणिक, शुद्ध तथा ताजी
दवाएँ
चाहते हैं तो कृपया एक बार
कण्टिनेण्टल मेडिकल हॉल
पटना हॉस्पिटल के सामने
में
अवश्य पधारें

भोजपुरी शब्द कोष

(गतांक से आगे

केड़ी—	तराजू की डंडी।
मारल (मु०)—	डंडी मारना तौल में बेईमानी करना।
केनवई—	साग-भाजी की खेती।
केना—	एक प्रकार की बरसाती घास जो छोटी लता के रूप में फैल जिसके छोटे पत्ते आम के पत्ते जैसे होते हैं।
केरा—	केला।
केराव—	खेंसारी जाति का एक कदन्न, जिसे भोजपुरी में लतरी भी कहते
केवरा—	चौकठ और किवाड़ की ओट का स्थान।
केवाल—	नदी की बाढ़ के बाद खेत में पड़ी हुई चिकनी मिट्टी।
कोआ—	कटहल के भीतर की मीठी फली; रेशम के कीड़े की फली।
कोंइत, कइँत—	कैंत, कपित्थ। (गजभुक्ति कपित्थ)
कोइन, कोइना—	महुए के फल का बीज जिसका तेल पेरा जाता है।
कोइरि, कोइरी—	कृषिकला में प्रवीण जाति विशेष।
कोइल, कोइलरि—	कोयल नामक पक्षी।
कोकड़उर—	विवाह के अवसर पर चीनी मिला हुआ चावल का चूर्ण।
कोका—	हौआ, भकोल, घोघर, बच्चों को डरवाने का एक काल्पनिक भूत
कोकाच—	बड़ा कौर। झपटकर भोज्य पदार्थ का अधिक से अधिक अंश लेनेवा कवल।
कोखि—	पेट, गर्भ, उदर, कुक्षि।
कोठवाली—	महाजनी अक्षर, वैश्य व्यापारी लोगों के वही-खाते में लिखी जानेवा लिपि।
कोठारी—	कोठरी। साधुओं के मठ का भंडारी।
कोठि—	स्त्री का गर्भाशय। बाँस का कुँज।
कोठिला—	घर के अंदर मिट्टी की बनी हुई अन्न रखने की कोठी।
कोठी—	बहुत बढ़िया पक्का मकान।
कोंढ़ी—	फूल की छोटी कली।
कोदई, कोदो—	भदई फसल का एक अन्न जिसका दाना सफेद और अत्यन्त छो होता है।
कोनासी—	खपरैल मकान का एक कोना; खपरैल छाजन में कोने पर लगनेवा लकड़ी। वह काले धब्बेवाला आम जो प्रायः मीठा होता है। आम को कोलवाँसी, कोइलाँसी भी कहते हैं।
कोंपड़—	कोंपल। बाँस और ओल तथा किसी पेड़ का नया अंकुर या बंश
कोबी—	गोबी, गोभी। एक प्रकार की तरकारी का फूल।
कोर—	किसी वस्तु का पतला किनारा। धोती या साड़ी का पाढ़। कोन किसी हथियार की चोखी धार।
कोरई, कोरो—	खपरैल घर या फूस की झोपड़ी का छप्पर बनाने के लिए बाँस की पतीली।
कोरनजा—	कोरा अन्न। असिद्ध अन्न।
कोरखर—	बिना दही या कढ़ी का बड़ा या बड़ी।
कोराई—	दलहन अन्न का छिलका जो पशुओं को खिलाया जाता है।
कोल—	नदी के छोड़े हुए प्रवाह क्षेत्र में बने हुए छोटे-छोटे सजल गड्ढे।
कोलवारी—	बिना लिखा पढ़ी के रुपये पैसे का लेन-देन करना या महाजनी चला
कोलवाँसी—	देखिए कोनासी।
कोला—	खेत का वह अंश जो खेतियर मजदूर को (केवल जोतने बोने के लि पारिश्रमिक के रूप में दिया जाता है।
कोली—	खेत का छोटा टुकड़ा।सकरी अंधी गली।
कोल्हू—	कोल्हू और ईख पेरने का कल।
कोसी—	कोल्हूआड़। ईख पेरने का स्थल।

भोजपुरी मुहावरे

(क्रमशः)

झउरा लगावल—झंझट-झमेला लगाना।
झउरा लागल—झंझट-झमेला लगना।
झगरा बेसाहल—झगड़ा मोल लेना; जान-बूझ कर झगड़ा खड़ा करना।
झटका लगावल—आँख बचाकर किसी की चीज हथिया लेना;
घात में लगे रह कर अपना काम बना लेना।

झटका लागल—अनायास अवसर मिल जाना। अचानक धक्का लगना।
झटकारि के चलल—ममता-माया त्याग कर चल देना; हड़बड़ी में
चल देना।

झनकल पटकल— रूठे मन से झुँझलाहट प्रदर्शित करना,
अंगों के संचालन से खिन्नता प्रकट करना।

झनकवाह भइल—अंगों को कँपा कर झाड़ने का एक रोग (पशु)
झमेला लगावल—बखेड़ा पैदा करना।
झाकाझूमर भइल—हाथापाई होना; मुठभेड़ होना।
झाङा माङा में परल—संकटमयी परिस्थिति में फँस जाना।
झाँखी से बटोरल—बहुलता से उपार्जन करना; इफरात कमाना।
झाँझ पहनना—पैर में बेड़ी पहनना (व्यंग्य)
झाँप उघरल—आँख की पट्टी खुलना; बुद्धि का पट खुलना।
झाँप लागल—आँख या बुद्धि पर पर्दा पड़ना।
झाँपी साजल—विवाह में कन्या की बिदाई के समय वस्त्रादि से उपहार सजाना।
झारि पोंछि के दे दीहल—सर्वस्व दे देना।
झारि पोंछि के ले लीहल— सर्वस्व अपहरण कर लेना।
झाँसा पाटा पढ़ावल—झाँसा पट्टी देना; चकमा देना।
झोंकि डालल—दूसरे की बातचीत को उकसाना; चलती चक्की में अन्न की
मूठ डालना।
झूरफुर बतिआवल - झूठ सच बतिआना; अनर्गल बात करना।
झूर से झगड़ा कइल—निरीह व्यक्ति से उलझना। अकारण या अनावश्यक
झगड़ा करना।

झोंक में आइल—झक में आना।
झोंक लगावल—पेट के दर्द का एक उपचार (आटे का दीपक जला कर पेट रख कर पर
लोटे से ढँकना)
झोंकाह भइल— झक्की होना। अचानक अपनी धुन में आकर कोई काम कर डालना।
झोरा ढोवल— चापलूसी में किसी के पीछे लगे फिरना।
झोरा उठावल—भीख माँगने के लिए तैयार होना, चंदा उगाहने के लिए
उद्यत होना।

कउआ कान ले ले जाला—अफवाह सुनकर बिना समझे बूझे काम करना।

कउआ ले कबेलवे चतुर— बाप से बेटा चतुर।

कँकरी के चोर के लाते मूका काफी—जैसा छोटा बड़ा अपराध वैसा दंड देना उचित है।

कंक गइले कंक कीहाँ, ऊ हाथ पसरले, ऊ दाँत चिअरले—दरिद्र दाता के पास जाकर दरिद्र याचक निराश होता है।

कदुआ पर सितुहा चोख—दुर्बल पर साधारण बलवान भी प्रबल होता है।

कनियाँ के माड़ ना लोकनी के बुनियाँ—अधिकारी व्यक्ति का अनादर और नगण्य व्यक्ति का आदर।

कबो नाव में गाड़ी कबो गाड़िए पर नाव—परिस्थिति के अनुसार दो परस्पर सहायकों के सहायता का आदान-प्रदान

करवा कोंहार के, घीव जजिमान के, स्वाहा—दूसरे के साधन से अपना कार्य सिद्ध करना दूसरे के सामान का निर्ममता पूर्वक उपयोग करना।

करिमना के ना रहले में सुख ना गइले में सुख—निम्कमे आदमी के रहने न रहने से कोई लाभ-हानि नहीं।

कलवार के लइका भूखे रोवे, लोग कहे 'पिअले बा'--किसी अभाव ग्रस्त व्यक्ति की वास्तवि परिस्थिति न समझ कर उसकी व्यंगपूर्ण आलोचना करना।

कवना अभागा के राम ना भावसु ?—कौन ऐसा है जिसको अच्छा काम या अच्छी चीज पसंद न हो?

कवर त दवर—डटकर भोजन करने वाला ही अपने बाहुबल से संसार में अपने लिए जगह बना पाता है।

कहला पर धोबी गदहा पर ना चढ़े—कोई गुणी आग्रह करने पर भी सहसा अपना गु प्रगट नहीं करता।

कहाँ कँकरी कहाँ मचान—जहाँ जिस वस्तु की आवश्यकता हो वहाँ उसका न होना।

कहाँ जात बाड़ ससराँव ? त एक जोड़ी जाँत ले ले अइहऽ—किसी व्यक्ति की असुवि का ध्यान न रख कर उसकी मर्यादा के विरूद्ध साधारण काम की फरमाइश करना

कहाँ राम कहाँ अजोध्या !—पुराने युग की तुलना में नये युग की तुच्छता अनुभव करना।

का बकुला अब लवलऽ डीठि, कतने जाल रगरलसि पीठि—घोर संघर्ष से विजयी हो निकलने वाले व्यक्ति का साधारण शत्रु को चुनौती देना

काठो के सवति ना भावे—कुरूप या बाँझ सौत भी नहीं सुहाती है। किसी भी दशा सौत पसंद नहीं आती।

कान्हे मेहरि भुइयाँ महतारी—पत्नी में अतिशय असक्त होकर माता का तिरस्कार करना

काम भइल दुख बिसरल—काम निकल जाने पर किसी का उपकार भूल जाना।

का होई हर के आ का होई फार के, जवन होई तवन करुआर के—लड़ाई में अगली पर डटने वाला ही जूझता है। जो अगुआ होता है उसी को संघर्ष झेलना पड़ता है

कुकुर मुअल अँठई झरल—दुष्ट के मरने से उपद्रव शान्त हो गया।

केकर केकर घोड़ा होखीं केकर केकर जीन—सबका मन रखना असंभव है।

केकर केकर धरी नाँव, कमरी ओढ़ले सउँसे गाँव—कोई एक व्यक्ति विशेष ही नहीं, समाज ही दोषी है।

कोख के गइलीं, माँग गँववलीं—पुत्र की कामना से जाना और विधवा हो जाना साधारण लाभ के लिए प्रयत्न करते हुए महान लाभ से हाथ धो

कोढ़िहया डेरावे थूक से—असमर्थ व्यक्ति का शक्ति-प्रदर्शन का स्वाँग करना।

बरतन लोग के बतकही

कहऽ हो बटलोही
तू त घरमें के रानी महरानी
अङना में के सिङार
रसोइया घर के मलकिनी
छितराय के बइठे वाली
लउँड़ी-नोकर-नफ्फर में के चतुर सेयानी
तहरा अँजरी-पँजरी,
ई बटुला, बटुली, उलदी, कठवत लोग रहल हऽ
तहरे माथे तहरे के साथे लेके
कुल्ह तिलक बिआह के सोभा निबहल हऽ
कहऽ हो बटलोही
तूँही नू जूने कुजूने
देह के अपना बेंच खोंच के इज्जत राखेवाली
तेकरा के
हई टिनही डेकची
हँसऽतारी सन, ऊजर पालिस वाली

× × ×

कहीं जी हौंड़ा महराज
रउआ त अपना देहिया के
जरती आग का भट्ठी में कुल्ह जार खोर के
बहुत भोज-भतवान सम्हारत अइनीं,
राजा-रंक महंथ-संत के तारत अइनी
राउर बूझ, बड़ाई, सेवा के ना जानल !
आज ले राउर करिखा ना छूटल, लोग लोहा मानल
तेकरा सोझा चदरा वाला डेकचा केटली
कूद फान फरिआवतारे ?
हांड़ा जी के हँसऽ तारे
कोसऽ तारे, अइसन मनमानी ? अइसन घर जानी ?
कहऽ हो बटलोही रानी........

× × × ×

पूछीं एह बड़का परात जी से
हथहर जी से, गिलास जी से
कतना दावत कतना मजलिस के स्वागत कइले
हाथ मिलवले खातिरदारी में
आ तेकरा आगा नव लम्बर के बाल्टी लोग कतार सजाके

गगरा जी से झगरा करऽताड़े !
पूछीं त हईं मिर्जापुरिया उल्टी दारह का एह नेपलिया थरिया लोके
मन मार क झँखऽ तारी
डीक पलेट रिकावी बढ़ी सिकबी भइली
होटल में चाहखाना में
मटिही ढकना ढकनी लोके नाँव धराइल बड़ी तश्तरी
तमूँ में समियाना में (?)
कह दीं अब बहुगूना जी से
ऊहाँ का तमचीन का सोफ्ता कइसे जायेब
सितुआ लेखा चमचन का आगा
अब कवना मूहें करछुल जी भी हाथ मिलायेब
फुलहा, कसहा, तामहा, चाहे पितरिया लोगवा अब घरवा में कइसे रहो ?
राँगहा, टालाहा, लोहिया के हुरकूचन कतना सहो ?
पाछ देव के कुल्ह चिन्हुका मिटकावल जाता हिसका हिसकी से
आ 'फिरी इण्डिया' के फरहर बनवावल जाता हारा-हूँसी से
नवका पलान के ई नवकी पलानी
इजती सोराज के फजीहति मुह दुब्बर फोटानि

—"मुहदुब्बर"

बरखा-गीत

बरखा के रसगर आइल बहार बा ।
अइली पावस रानी
रिम-झिम परे पानी
पुरुवा पवनवाँ के लागल कँहार बा ।
बदरी जमीनि छूवे
सरग से बून चूवे
धरती हँसति साजि सोरहो सिंगार बा ।
नाचतरि मोरवा
मचावतारे शोरवा
गवैं-गवैं झींगुरा बजावत सितार बा ।
नदिया फँफाइ गइली
भुइयाँ जुराइ गइली
मारल-मारल फिरे पनियाँ के धार बा ।
बरखा के रसगर आइल बहार बा ॥

—रामबृक्ष राय 'विधुर'

तसलवा तीर की मार

अप्रकाशित नाटक के कुछ गीत (नाटक)

सत्यनारायण केसरी "सौरभ"

(समय—जब भोजपुर में गंगा बहत रहलीं, नवरतन के नवो रतन खड़ा रहे)

बतिसवन के परेड होता (कोरस)

सब बतिसवा—

नामीं बतिसवा हम हईं भजपूरे के।
बत्तीस गो भेष बदलीला देश देश कें;
बोलीला बत्तीस बोली उरूवो लंगूर के॥
आर पार पौंरीला गंगा के बत्तिस बेर;
कूदि नौरतन के नौंआ कंगूर के॥
बत्तीस गो दाव-पेंच छल के लड़ाई लड़ीं;
बान्हींला बत्तीस हथियार, पास, दूर कें॥
एके सूरे हम चलि जाईला, बत्तीस कोस;
ठेकवा[1] रतौंआ[2] धरीं लमहा दउर के॥
छापामार नाँव, काव[3] नदी में छिपाई राखीं
छापा हम मारीला, बत्तीस ताला तूर के॥
रहिया में गइल के, सावज, मुदई, मीत;
पाँज हम लगाइ लीला, देखिए के धूर के॥
भरि-अँकवार के, वँवर जहाँ छाँह करे;
जंगल-महल, झार झूले बन-अँगूर के॥
रहीला रतौंआ[1]-बन खाँई जड़ी-बूटी के;
पीहीं दूध दानी बन-गैयन के ढूँर के॥
दीहल भगवान के ई, दाँत बा बत्तीस जैसें;
बत्तीस उस्ताद हम बत्तीस खास लूर के॥
दाया-माया नइखे, मानीं हुकुम सर्दार कें;
एके लाठी हाँकीं धनी-मानी-मजूर के॥
हमनी से ऐंठें जे, वोकरा के छोड़ी ना;
तंग हम करीना कभी सोझिया मजबूर के॥
हमनी के छोट-छड़ी, देखिए के परिहऽमति;
भरलबा एमें, लोहा, सीसा हूर हूर के॥
ऐही छड़िया से हम, मारि के हटाइ दीला;
तीर, तलवार, भाला, बरछा, लउर के॥
नामीं बतीसवा हम, हईं भजपुर के॥

---

[1] एक वन के नाम। [2] वन के नाँव। [3] एक नदी के नाँव।

२

बतिसवन के ऐलान—

गंगाजी के आर पार हमनीं के राजरे;
राजा-बाबूधनी बयपारी बड़ा भारी आवे;
ऐंठेना, करे मोलायम मिज़ाज रे ॥
हमनीं के कौड़ी, चुकावे पहिलेहीं ना त;
लूट लीला, नाव-बेड़ा, लदल जहाज रे ॥

पूछीला, तसला ई तोर ह की मोर ह रे;
कहते ई मोर, लूट-मार के रेवाज रे ॥

कहे जे तोहार, कुछ मोहलत खाए के दें;
बस-बस्त्र-मोचने, ना औरू अफ़ाज रे ॥

एही नवरतन के, नैंआ कंगूरा चढ़ि;
करीला एलान, सुन सकल समाज रे ॥

कछुई[1] के आस-पास, गंगाजी का नैहर[2] में;
भोजपुर में बा राज हमनी के आज रे ॥

३

बनिजारा के चेतावनी –

अब निअराइल बनारस हमार हो।
कुल्हि पाल तानऽ माझी, बेड़ा के सजग करऽ;
पहरादार-होंसियार, सम्हरे पतवार हो ॥

आगे बा भोजपुर, गढ़ ह बतिसवन के;
बिना कुछ पनहा[3] के होई ना उधार हो ॥

कइलीं बयपार हम, कमइलीं करोड़, लाख;
लइलीं जहाज नाव, सागर के पार हो ॥

देखली अगम वन, अजब अजब देश;
नाना रंग नारी-नर रूप के बहार हो ॥

देखलीं हम काला पानी, मलया, रंगून बाली;
अइसन बतीसवा ना, पवलीं, जोरदार हो ॥

फरकत बा बाँया बाँह, मन घबराइल बा;
रहिया का ताके कोई, घटवा पर ठाढ़ हो ॥
अब निअराइल बनारस हमार हो ॥

---

[1] कछुई-पुराना गंगा के तीर पर एक कछुआ नीअन चौतार। [2] भजपुर
नवरतन के पास गंगा जी के नैहर प्रसिद्ध रहलहा जहाँ बहुत भहान मेला होत रहल हा
[3] (पनहा) एगौंदड़-नीअन, कौड़ी।

४

साधू गावंतारन--

जीवन तस़लवा ई त़ोर ह की मोर रे ॥
अँखिया तरेर "काल" कहे झकझोर रे ॥
मोर मोर कहि कहि, माया वटोरन जें ।
केहु के गुनल ना लिहलन मरोर रे ॥
मनवा के मन-भोग, खाय का पवलऽ ऊ;
झपट के छीन लेलस, आके वरजोर रे ॥
कलवा बतिसवा के हथवा कठोर रे ।
जिनिगी के तसला ई तोर ह की मोर रे ॥
जिनिगी के तसला में, करुना के खीर कइली;
परसली सुजाता जब, अँखि भर लोर रे ॥
"बुद्ध" के जिआइ लेली, अवहीं ले चारों ओर;
खीर के मिठास से बा दुनिया अँजोर रे ॥
सबसे कहेला "काल" आके भर जोर रे ।
जीवन तसलवा ई, तोर ह की मोर रे ॥
कहेला जें "तोर" कुछ करुना लूटेला उहे;
कहेला जे "मोर" जाला दुखवे बटोर रे ॥
अँखिया तरेर "काल" कहे भरजोर रे;
जीवन तसलवा ई तोर ह की मोर रे ॥
झपट के छीन लेला, आके बरजोर रे !
कलवा बतिसवा के, हंथवा कठोर रे ॥

(गतांक से आगे)

बउध-लीला

स्वामी विमलानन्द
(पश्चिमी

आलस छूटल
हटल अन्हार
भागल भरम कुहेस
तपसी तेजवंत परतापी
बउधदेव सूरज बनि उगलन
आंखि खुलल सभई उठि बइठल
भइल अँजोर टहक्का,
एका-एकी लउकल सभका
धँसल धरम-रथ-चक्का।
सभई कसि के जोर लगावल
रथ खींचल टकसावल।
नाहा गज पुठी तक छुवल-
रथ-पहिया हबसा में;
निकलि पाँक से ऊपर आइलि,
धोवल गइलि साफ हो डगरलि-
चउरस पीच सड़कि पर।
चतुर सारथी बउध देव जी
रथ हाँके दउरावे लगलन।
आगे आगे रथ के घोड़ा
पाछे लोग हजारन;
डेग बढ़ावल आँखि मूँदि के,
अइसन मजिगर डहरि पाइ के।
भटकल राहगीर दल सम्हरल,
सुघर पड़ाव भेंटाइल।
मिलल कलेवा पुरहर सजगर
बइठि बिरिछ का सघन छाँह तर
सभ सुहताइल,
सुख के साँसि लिहल।
मजिगर दीठि मजे में देखीं
सँकलप समझ बूझि के ठानीं
बोलीं मीठ मजे में बानी
करीं कले से मजिगर काम।
सोचि समुझि जीवन-नइया के-
धरीं डाँड़ पतवार।
जियका भली भले अपनायीं
कसरति करीं मजे में,
मेहनति से मत जीव बचाईं-
रहे इयाद कबे जनि भूलीं
सुरता मजिगर राखीं।
मन के धरीं लगामि मजे में
चित हो चउकस चंगा;
डुबकी मारीं ध्यान लगायीं
धरीं समाधि मजे में।
आठो डहँगी इहे धरम के,
इहे ग्यान के गंगा।

× ×

धरती धन्नि जहाँ सुरसरि के
अमिरित धार बहत बा।
जमुना जेकर करत आरती,
सुरसति विनय सुनावति,
सरजू मीठे सुर में गावति;
हाथ जोरि के करत बंदना-
सोनभद्र सुख पावत।
गंडक कोशी चरन पखारत,
पुनपुन चवँर डोलावत।
कुरूक्षेत्र से कोशी तक ले-
बीच हिमालय विंध्याचल का,
बउधदेव भगवान-
बरिस पाँच अधिका चालिस ले,
भिक्खु झुंड ले विचरत डोलत
दिहलन उत्तम ग्यान।
सत्त अहिंसा दया शील के
बउधदेव अवतार;
उनकर सउँसे जिनिगी झलकति,
बनलि सुघर तसबीरि।
त्याग तपस्या,
सेवा-व्रत-संजम के।
कदम-कदम पर लउकत जेकरा-
चमतकार से,
महापुरुस के लच्छन!

× ×

उरूवेल काश्यप का कुटिया
जग्य-हूम-मंडप का भीतर,
विखधर साँप भयंकर,

झपटल पहिले बउधदेव पर
पाछे उनकर नजरि परलि जब-
डर से काँपल,
खप्पर में जा बइठल।
लागलि गयाशीस*परवत पर आगि,
केतने जीव जन्तु जरि गइलन,
केतने जान बचवलनि आगि।
बउधदेव जी भिक्खु लोग के-
जरत पहाड़ देख। के-
दिहलन कुछ उपदेस;
दुखी जीव के ग्यान-सनेस।
"परबत के ई ऊँची चोटी-
जरत अगिनि से जइसे
लालच, मोह, खीसि ममता, मद
टिसुना, डाह, सँग का भीतर
तइसे सब संसार-
जरि के होत खँगार!

× + ×

बउधदेव के तेज देखि के
उनके आपन गुरू बनवलन,
उरूवेल काश्यप महराज।
हँसी खुशी से साथी उनकर
'नदी' 'गया काश्यप' भी दूनो
कंठी जटा उतरलन-
माँथ मुड़वलन चीवर पवलन;
बनलन भिक्खु हजारन लोग-
जे सभ रहे साथ में उनका।
बउधदेव के गयाशीश पर-
भजन करत बरखा रितु बीतलि,
समय पाइ के टहरत—घूमत,
भिक्खु हजार साथ ले अपना
भगवन सुख से करत चारिका
पहुँचि राजगिरि गइलन,
लठ्ठिवन का सुघर चइत* में
पहिले डेरा दिहलन।
राजा बिम्बीसार खबरि पा,
लाखन लोग साथ ले अपना
गइलन संघ-शरण में
चेला भइलन बउधदेव के
सेवा-पूजा भइल नेह से
मिलल वेणुवन दान!
इहँवें संघ-शरण में अइलन-
सारिपुत्त आ मोगलान भी,
दूनो भारी पंडित रहलन
बहुत तेज विदमान,
ग्यानी पुरूस जानि के उनके,
गउतम जी के हुकुम भइल कि
इहे लोग अगहर चेला बनि
धरम-धजा फहराई।

× × ×

जनता के दुख दूर भगावत,
धरम-सनेश सुनावत
बउधदेव जी,
कपिल वस्तु भी गइलन।
शुदोद्धन के नेवता पाके-
भिक्षा कइलन राजमहल में।
राहुल-माता दरसन पवली,
भिक्षा में राहुल के दिहली।
भिक्खु-खुशी भइलन राहुल, से
संघ-शरण में अइलन।
श्रावस्ती के अंगुलिमाल-
दउरल बउधदेव के मारे,
आखिर थाकल भइल बेहाल.
हाथ जोरि के गिरल शरण में
चित बटोरि सुनलसि उपदेश।
चोरी-डाका हत्या-पाप,
छूटि गइल सभ अपने आप।

× × ×

बउधदेव के जानी दुशमन,
कुवँर देवदत रचि मनसउदा-
उन्हे जान से मारे खातिर,
मिलि अजातशत्रु राजा से-
नीलागिरि हाथी छोड़वलन।
हाथी नियरा गइल जइसहीं
उनका आगे बइठल।
चरन-धूरि ले बहुत प्रेम से,

---

* गया के वर्तमान ब्रह्मयोनि पर्वत

* चइत-चैत- बौद्ध-विहार, मठ।

अपना माथे डाले लागल।
बेटा मरल जियावे खातिर,
गइलि शरण में बउधदेव का-
कृशा गउतमी बाभनि।
महापुरुष के हुकुम भइल कि-
"जहाँ न अबतक मउवति पहुँचलि,
उहँवे से मुट्ठी भर सरिसों
जाय गउतमी लावे,
ओकर पूत जियावल जाई।"
गइलि गउतमी घर-घर घूमलि
कहीं जगहि नापवलसि,
जहँवाँ केहू मरल न कबहीं
आखिर ओकरा बोध भइल कि-
जग में सभई मरी एक दिन
मउवतिया से पिंड छुटी ना,
चित-चिंता बेकार।

× × ×

बउधदेव के नजरि समान,
सभ पर उनकर दया बराबर—
हो गरीब चाहे धनवान।
धरमी-पापी, ऊँच-नीच के,
तनिक भेद ना उनका,
नेह समान सभन से।
अम्बपालि वेश्या के नेवता,
सरधा नेह देखि के ओकर;
गउतमजी कइलन मंजूर।
भिक्खु-संघ का साथ पहुँचि के
भिच्छा कइलन बहुत प्रेम से।
चंदन संग सुगन्ध पाइ के,
बिरिछ बहुत चन्दन हो जालन।
महापुरुष से ग्यान-सीखि के,
तइसे अम्बपालि वेश्या भी,
परम साधुनी बनलि अंत में।
कीनि आमवन बहुत नेह से
संघाराम बनवलसि,
दिहलसि दान भिक्खु दलपति के।
वैशाली के नाँव भइल।

× × ×

सत-सरधा से हाथ जोरि के,
दिगपालन के माथ नवावत,
देखि सिगाल भगत के,
बउधदेवजी सिखलवन कि—
"हिंसा, मार-काट मत करि हऽ।
झूठ बचन जनि मुँह से निकले,
चोरी नीच काम हऽ,
बचि के रहि हऽ।
दोसर का मेहरारू साथे,
कबे संग जनि करि हऽ।
इहे चारि परधान धरम हऽ।
चारि दिशा के गोड़ लागि के
कउल करे के चाही,
पूरब-पच्छिम, उत्तर-दक्खिन,
कतहीं पाप करबि ना।"

× × ×

समय पाइ के भेंट भइल जब—
भरद्वाज बाभन से।
सतसंघति में,
बउधदेवजी कहलन—
ऊँच उहे हऽ उत्तम काम करी जे,
आदर ओकरे होई।
जेकरा भीतर तनिक लेश ना;
बढ़िया शुभ कामन के;
ओकर झूठ गुमान —
"ऊँच जाति में जनम हमार,
हमहीं उत्तम बानी।"
ई गुमान कागद के नाइ
एह पर चढ़ि के पार भइल?
"ज़ाति धरम सब छोड़ि भिक्खुदल-
सभई का घर खात फिरेला,
सबके भरल छुवल जल—
बेखटके आचवन करे ला।"
जब प्रसेनजित के ई ओरहन
बउधदेवजी सुनलन—
तब समुझाई नेह से उनके,
कहलन कुछ उपदेश—
"हरदम सभका चाल-चलनि के

बूझ-बिचार करे के चाही ।
आदर करीं धरम-सरधा के,
बाकी सभ बउराही ।''

× × ×

बड़े-बड़े पंडित गियानी—
बउध धरम के धजा उठवलन;
माँथ देश के ऊँचा कइलन ।
घर-घर भइल अँजोर,
फइलल जग में शोर ।
काश्यप-बंधु महाकात्यायन;
जीवक, उपालि, आनन्द,
विजयी वीर सिंह सेनापति—
सभई बउध शरण में,
धरम-शरण में, संघ शरण में ।
पावल सुख आनन्द ।
काटल जग के फंद ।।

× × ×

राजा रंक फकिर अउलिया,
घरवासी सन्यासी;
धरमी पापी एक समान;
रहे मगह मथुरा या काशी ।
एक बटखरा एक तरजुई,
साथे सभ तउलाइल;
सभई चढ़ल चिता का रथ पर,
गइल काल का गाल !
पृथु भगीरथ मांधाता के—
धरती पर अब पता कहाँ बा ?
विश्वामित्र, वशिष्ठ, अंगिरा,
रावण, राम, जनक मतिमान ।
अर्जुन, भीम युधिष्ठिर ग्यानी,
भीष्म, द्रोण बलवान ।
कंश-कृष्ण, बलराम, करण, बलि;
रिखि दधीचि हरिचंद,
कइलसि काल मरउवति केकर ?
गइल छोड़ि के धन धरती सभ
रथ पर चढ़ि के महाकाल का ।

× × ×

पारी आइलि बउधदेव के,
'मार' देवता अरज लगवलन ।
''पूरा काम भइल धरती के,
महाराज मंजूर करीं अब—
देंहि छोड़ि निरवान !''
बहुत खुशी से, बउधदेव भगवान,
मिनती मनलन मार देव के !
चारि सइ आ बरिस तिरासी—
ईसवी सन् से पहिले;
कुशीनगर में,
सघन शाल का वन में,
दुइ शाल का बीच ओठँघि के,
महापुरुष के,
भइल महा निरवान !

× × ×

मचल देश में हाहाकार,
भिक्खु-संघ हो गइल अनाथ,
सूरज डुबलन, भइल अन्हार ।
धरती पर छा गइल उदासी;
कामरूप से सिन्धु नदी तक,
बीच हिमालय विन्ध्याचल का,
घर-घर सभई शोग मनावल !
आखिर बहुत नेह सरधा से,
भइलि देहि के किरिया ।
चइत मुकुट बंधन, मल्लन के;
रहे जहाँ पर;
चिता बनलि भगवान के उहँवें ।
ग्यानी धीर महाकाश्यप जी,
साथे भिक्खु पाँच सइ लेके;
तीनि बेरि परिकरमा कइलन,
अपने लहकलि चिता बाद में !
देंहि छार हो गइलि जइसहीं,
मेघ चिता के ठंढा कइलन ।

× × ×

आठ बराबर भाग 'अस्थि' के
बाभन द्रोण बाँटि के कइलन;
भाग दियाइल भिक्खु संघ के,
गया राज्यन के,
'कुंभ' मिलल बाभन के ।

पहुँचि पिप्पली-वन-मोरियदल,
पावल कुछ अंगार।
आठ जगहि पर बनल देश में
आठ सुघर असतूप!
नवाँ 'कुंभ', दसवाँ अंगार,
जस के कथा अपार,
गावत बारम्बार!!

× × ×

मड़ई से महल-अँटारी तक;
भारत का कोना–कोना में,
बउध-धरम के बरल चिराग।
सत्त-अहिंसा, शान्ति नेह के,
सुघर सोनहुली जोति कले-कल,
फइलि गइलि सभ ओर।
चमचमात चहकत सभ लउकल
लंका ले मानसरोवर तक—
बरमा सिंधु-देश गंधार;
सभ कोइलि के तान सुनल।
बगियन में बुलबुल चहकि उठल!
करत सिंगार चमेली कतहीं,
अलबेली बेइलि मुसकात।
माली के बहुत दुलरुवी,
जूही के कली उतान भइलि।
लोभी भवँर भुलायेवाला
रस से भरल कियरिया देखत,
कले-कले मँड़राये लगलन।
मलय पवन हाँकत रस बेनिया,
नजर बचाइ सुवास चोरावत—
अइसन दूर भागि निकलल कि—
कतहीं हम पकड़ाईं मत।

× × ×

(क्रमश

'आजादी से'

भूलिउ आपन तूँ बचनिया खोलतइ अँखिया सजनी।
आगे-पीछे खड़े सिपाही तोहइ बहुत धमकावइँ
अपने घरक सुधिया आवत बीर तेग चमकावइँ
चमड़ी पीटि-पीटि उधिरावइँ बोलतइ दुखिया सजनी। भू०॥
सोवत हमइ जगाइ के कहलू सांसति घोर छोड़ावऽ
आपन गड़ल खजाना देवइ बेरी मोर तोड़ावऽ
कारी हो गइ सारी देहिया अँटकलि संसिया सजनी। भू०॥
कहलू नियम बनी सरकारी तोहरइ फिरी दोहाई
बेटवा बिटिया कलम चलइहइँ नौकरिया न ओझाई
चुसिहइँ नाहीं कचहरिया गोंड़तइ उँखिया सजनी। भू०॥

चीनी दूध कहू देवइ के मिलइन चोटा रोटी
तोहरे सथवा केतने सेंतइ चाटइँ अंडा बोटी
पीअइँ अंगूरे क पानी जोहतइ पंखिया सजनी। भूलि०॥

तोहरे मजा में सजा न आवइ घर-घर फूट बढ़ावऽ
साहु से जागऽ चोर से मूसऽ कहिके पाठ पढ़ावऽ
पहिरऽ जरी बतावऽ बीतत ओढ़तइ बखिया सजनी। भूलि०॥

बाएँ ओरी ठाढ़ विदेशी दहिने देशी गरजइ
बान तोहार कवन ए गोरिया हमरी करनी बरजइ
निहचइ खइबू धोखा भारी मलतइ अँखिया सजनी। भूलि०॥
'तरल' कहइँ हम सोवत नाहीं का हमके भरमइबू
अपने घर में ठगहारी करि हमइ कहाँ शरमइबू
चेतऽ बीती नाहीं जिनगी धोअतइ दगिया सजनी।
भूलिउ आपन तूँ बचनिया खोलतइ अँखिया सजनी॥

राजबली दुबे 'तरल'
(वाराणसी)

× ×

अहीर सोनार के इआरी

सं०—गणेश चौबे (चम्पारण)

एगो सोनार रहलें। एगो अहीर रहलें। दूनू जना का इआरी लागल। दूनू जना का घर फरका फरका रहे। एक दिन अहीर सोनार कीहाँ गइलें। सोनार उनका वहुत आदर-भाव कइलें आ रसोईं बनवा के सोना का छीपा में उनका के खाए के देलें। अहीर जव खाए लगलें त मनमें सोचलें—इआर के सोना का छीपा वा, कवनो अइसन उपाय करे के चाहीं जे में ई हमरा हाथ लग जाय। जव खा–पी के दुअरा आइल लोग त सोनार कहलें कि चलीं इआर दालान में सूतल जाव। ई सुन के अहीर कहलें 'ना इआर, सब दिन हम गोठउल-भुसउल, माल-जाल तर सुतनी, हमरा दालान में नींन ना परी। हम जातानी एह गोठउल में सूत रहे।' सोनार कहलें—'अच्छा इआर कहीं सूत रहीं।' अहीर जा के गोठउल में सूत रहलें।

सोनार जव अङ्गना गइलें त अपना जनाना से कहलें—'हो सुनतारू! कवनो उपाय कइल जाई मगर इअरवा छिपवा लेइए जाई।' तव सोनारिन कहली कि का कइल जाव। सोनार कहलें—'एगो उपाय ना होखो! छीपा सिकहर पर ध के वोह में भर छीपा पानी क दिआव आ वोही जग नीचा बिछौना क के हमनी दूनू आदमी सूतल जाव। जव इआर ऊ छीपा उतरिहें त पानी छलकी आ हमनी के नींन टूट जाई।' तव का कइल लोग कि छीपा में पानी क के सिकहर पर ध देहल लोग आ नीचा बिछौना क के सूत गइल लोग। ऊ लोग का नींन पर गइल त अहीर जाके छीपा खोजे लगलें। जव ना मिलल त अँजोर क के अइके लगलें त छीपा सिकहर पर चमकल। अहीर जव छीपा के टोअलें त वोह में पानी भरल रहे। अहीर दुआर पर अइलें आ अङउछी में राखि बान्ह के ले अइलें आ तनि-तनि छीपा का पानी में डाल के पानी के सोखावे लगलें। जव सब पानी राखि सोख लेलस त छीपा उतार लेलें आ ले के चल देलें। गाँव का बाहर एगो पोखरा रहे। ओह पोखरा में पानी में छीपा के लुका देलें आ आके सूत रहलें।

जब सोनार के नींन टूटल त ऊ हहुआ के सिकहर टोए लगलें मगर छीपा ना मिलल। ऊ सोनारिन के जगवलें आ कहलें कि इअरवा त छिपवा के ले गइल। सोनारिन कहली कि अब का कइल जाव। सोनार कहलें—'हो भाया! चुपचाप रहऽ कुछ बोलऽ चालऽ जन। तनि देखऽ त जे इअरवा कहाँ वा।' तव सोनार गइलें आ जा के देखस त अहीर नींन से सूतल रहस। ऊ जा के सोनारिन से कहलें कि जलदी चिराक बार। सोनारिन चिराक बार के अइली त सोनार जा के अहीर के देह देखे लगलें। अहीर जाङ्ह-भर पानी में ढूक के छीपा गड़ले रहस से उनका जाङ्ह में पानी के चिन्हा है। सोनार अपना मेहरारू से कहलें कि तू कुछ बोलऽ चालऽ मत, हम छीपा का उदेस में जातानी। सोनार पोखरा पर गइलें आ चारू आंट पर मैदान मार के दउरले। जब सोनार आंट पर दउरे लगले त तीन आट से बेंग कूद के पानी में ढूक गइल आ एक आट से ना कूदल। तब सोनार का दिल में ई बात आइल कि एही ओर से अहीर पानी में छीपा लुकवले बा। सोनार पानी में पइसलें आ जाङ्ह-भर पानी में छीपा के खोजे लगलें। उनका छीपा मिल गइल आ ऊ ओकरा के घरे ले आ के रख देलें।

बिहान भइला पर अहीर उठलें आ सोनार से कहलें—'ए इआर! अब हम जातानी।' सोनार कहलें—'ना इआर! रउरा बहुत दिन पर आइल बानी। रसोई बनवा देतानी। रउरा खालीं त जाईं?' अहीर कहलें—'ना इआर! हमरा पर माल-जाल के देखे के होला। हम खाए का फेर में परब त अबेर हो जाई।' सो ना मनलें आ कहलें—'हम तुरंते रसोई बनवा देत बानी। रसोई बनल आ वोही में परोस के अहीर का सामने धराइल। अहीर खाए लगले आ सोचे लगले—इआरवा कगो छीपा बा कि उहे छिपवा ह जे हम ले जा के लुकवले रहीं। फेर ऊ सोनार से पू —ए इआर! रउरा कगो सोना के छीपा बा। सोनार जवाब देलें—'इआर! छि त एके गो बा, मगर ऊ कबहीं रहेला पानी में आ कबहीं रहेला घरे।' ई सुन के हँस के कहलें—'ए इआर! जइसन चालाक रउरा बानी वोइसने हम बानी। परदेस में, कहीं से कुछ ठग-ठुग के ले आवल जाव।'

दूनू इआर परदेस के बहरले। कहीं एक सेठिआ मर गइल रहे आ फुंकाइल वोतहीं चरवाह स गाय चरावत रहे। सोनार चरवाह स से पूछलें कि इहाँ के फुंकाइल चरवाह स जवाब देलन स—'ई बड़ा भारी सेठिआ रहले ह। उहें मर गइले आ फुँकाइल बाड़े।' सोनार पूछले—'हो भाया! उनका बेटा बा कि ना?' चरवाह जबाब देलें स—'उनका बेटा बा।' फेर सोनार पूछले—'आउर केहु बा?' चरवाह जबाब देलस—'मुनीब बाड़े।' एतना सुन के दूनू जना आगे बढ़लें। आगे एगो मिलल। वोही में दूनू जना बइठ गइले आ आपुस में ऊ लोग सलाह-विचार कि सेठिआ का बेटा के ठगे के चाहीं।

सोनार कइलें कि एह चिता तक सोन्ह बनावल जाव। अहीर जाके एगो कोदारी उपरा लइले आ बहुत फरका से सोन्ह बना के चिता का पास ले आ भीतर बइठे ला जगहा बना लेलस। सोन्ह से जे माटी निकलल वोकरा के तहाँ फेंक देलस लोग। तब सोनार अहीर से कहलें कि ए इआर, रउरा वोही में जाके जाईं आ जब हम कुछ पूछीं त रउरा भीतरे से 'हूँ' करब। अहीर सोन्ह में ढूक गइले सोनार खर-पात से वोकर मुंह तोर के ऊपर से माटी दे देले।

सोनार सेठिआ का दुआर पर गइले आ पूछले—'सेठजी बानी?' मुनीब पूछ सेठजी के काहेला खोजत बानीं?, तब सोनार जवाब देलें कि सेठजी एक बेर हमरा गइल रहीं त हमरा से चार हजार रुपैआ हथफेर लेनी उहाँका कहाँ बानी! कहलें—'सेठजों काल्हे मर गइनी।' एतना सुन के सोनार छाती में मुक्का मार के परल आ कहे लागल जे अब हमर रुपैया डूब गइल, लोगन त अब हमरा के लबरे ई बात सुनके मुनीब कहले कि सेठजी का रुपैया के कवन हरजा रहे कि तोहरा से ऊ लिहें? सोनार रोअत-रोअत कहलें—'हो दादा! हमार त रुपैया डूब गइल, मगर बात मानी सभे। सेठजी एकवाली रहलींह। अगर हमर रुपैया असल होई त उहाँ जमीन बोली। अगर सेठजी उहाँ बोल देब त हमर रुपैया मिली नू? लोग कहल अइसनों कहीं होला! सोनार कहलें—'अच्छा, चलीं लोगन। अगर उहाँ के बोली तब हमार रुपैआ देब लोगन, अगर ना बोली त मत देब लोगन।' एतना सुन के सेठ के बेटा, मुनीब आ गाँव के लोग जहाँ सेठ जी फुकाइल रहस उहाँ लोग। उहाँ चिता का पास खड़ा हो के सोनार पूछले—'ए सेठजी! हमरा से चार हजार रुपैआ रउरा लेनू अइनी?' तब अहीर गींतर से बोलल—'हँ, ह अइनी।' ई बात सुन के लोग बोलल—'एतना धन सेठजी अरजले। चारे

रुपैआ ला उनकर परलोक काहे वन्हित रही। चलीं, इनकर रुपैआ दिआ जाव।' सेठ के बेटा घर अइले आ चार हजार रुपैआ गन के सोनार के दे देलें। रुपैआ मिलला पर सोनार सोचलें कि अगर इअरवा के निकालत वानी तव ऊ एह रुपैआ में से हिस्सा ले ली। सोनार काँट काट के ले अइले आ सोन्ह का मुँह पर ध के खूव हूर देले आ रुपैआ ले के घर चल देले।

जब वहुत देर हो गइल त अहीर मन में सोचे लगलें—'मर! या वात ह कि इअरवा अवहीं ले ना लवटल। हम त कह देले वानी आ ओकरा रुपैआ मिल गइल होई। काहे एतना देरी भइल!' ई वात सोच के अहीर सोन्ह का दुआरी पर निकले खातिर मूड़ी लगवले त मूड़ी में कांट गड़े लागल। तव अहीर का दिल में ई वात भइल कि इअरवा वड़ा उपाय कर देले वा आ कांट से मुंह वन कर देले वा कि हम एही में मर जाईं। तव अहीर अपना देह पर के कुल कपड़ा के मोटरी वना के भीतर से लागल कांट के ठेले। ठेलते-ठेलते कुल कांट के निकाल देलस आ अपने सोन्ह से निकल गइल। वोकरा पता चलल कि सोनार का चार हजार रुपैया मिलल ह। उ वोही रास्ता से दउरल चलल जवना से सोनार गइल रहे।

सोनार दूरे से देखलस कि अहीर दउरल आवता आ अव हम रास्ते पर पकड़ा जाएव। रास्ता पर कहीं नाच होत रहे। सोनार नाच में गइल आ एक जोड़ा वढ़िया जूता चुपचाप पहिर के चल देलस। जब पँतरा में गईल त एगो जूता गिरा देलस आ आगे वढ़ल। कुछ दूर गइला पर एगो गाछ रहे। वोही गाछ तर दोसरका जूता के गिरा देलस आ अपने गाछी पर चढ़ के लुका के वइठ गइल। जब अहीर पँतरा में गइल त वोकरा एगो जूता मिलल। अहीर सोचले कि एगो फूट जूता हम उठा के का करव। जब ऊ कुछ दूर आगा गइले आ वोकर दोसरका जोड़ी मिलल त ऊ मन में कहलें कि एकरे जोड़ो जूता हम छोड़ के अइनी आ ह आ ओकरा के उठा लावे के चाहीं। अहीर वोह जूता के उठावे खातिर लवटले तव तक सोनार गाछी पर से उतर के भागलें आ भागल-भागल घरे अइलें। ऊ सोनारिन से कहले—'हो भाया! इअरवा आई त रुपैआ ला बड़ा दिक करी। हम जातानीं ईंटा का पिजावा में छिप जाय। हम दिन भर वोतहीं छिपल रहव आ रात के तू हमरा के खाएक वोतहीं पहुँचा दीहऽ आ इअरवा आवे आ पूछे त कह दीहऽ कि ऊ त रउरे सङ्गे गइलें तव से लवट के ना अइले ह।' सोनार चुल्ही का पाछा रुपैआ हला देलस आ अपने ईंटा का पिजावा में लुका गइल।

एकरा वाद अहीर पहुँचले आ पुकरलें—'इआर! इआर!' सोनारिन घर से वहरली आ कहलीं 'मर! ऊ त रउरे सङ्गे गइले तव से कहाँ अइले ह।' अहीर कहले कि आच्छा, ना अइलें ह त अइहें नू।

अहीर जाके सोनार का पिछुआरा वइठ गइले। सोनारिन खाएक वना के सोनार का खाये ला ले गइली आ ईंटा का पिजावा तर जा के कहली—'हूँ।' सोनार खाएक थाम्ह लेले। अहीर दूका लागल सव वात देखलें आ अपना घरे अइलें। ऊ अपना मेहरारू से कहलें—'हो सुनतारू! कहीं से सेर भर मड़ुआ ले आवऽ।' अहीरिन कहीं से सेर-भर मड़ुआ पँइचा ले अइली। फेर अहीर कहलें 'एकरा के पीस के दूगो रोटी वना दऽ आ नून मरचा दऽ आ आपन लुगवो हमरा के दऽ।' अहीरिन मड़ुआ पीस के दूगो रोटी बनवली आ छीपा में ध के नून मरचा का साथे अहीर के दे देली। अहीर अपना मेहरारू के लूगा पहिर के जनाना के भेस बनवले आ छीपा में खाएक आ लोटा में पानी ले के अन्हार भइला पर सोनारिन का जायेका पहिलहीं पिजावा पर पहुँच गइलें। उहाँ जा के 'हूँ' कहलें तब सोनार पिजावा में से हाथ बढ़ा के खाएक

थाम्ह ले ले। अहीर पाछा ओर मुह घुमा ले लें। सोनार जब थरिआ में हाथ डलले, उनका मिलल नून-मरचा आ मड़आ के रोटी। ऊ खिसिआ के कहलें—'रे हरमजादी दिन भर हमरा पिजावा में रहे के बा। नून मरचा आ मड़आ के रोटी खइलें हम जीअब घरे खरची ना होय त चुल्ही का पाछा से रुपैया उखाड़ के निमन चीज बना के अइहे। उहाँ चार हजार रुपैआ गाड़ल बा।' ई बात सुन के अहीर चुपचाप थ -लोटा उठा लेलस आ सोनार का घरे आइल। सोनारिन खाएक ले के पिजावा को चल देले रहली। अहीर चुल्ही का पाछा से चारो हजार रुपैआ उखाड़ ले लें अपना घर में जा के हला देलें। अहीर अपना मेहरारू से कहलें कि इआर आव कह दीह कि ऊ बेमार बाड़े आ उनका बांचे के कवनो उमेदे नईखे। एकरा बाद अहीर बेमार बेमार कह के पटा गइलें।

सोनारिन खाएक लेके पिजावा तर गइली आ 'हूँ' 'हूँ' करे लगली। सोन मन में कहलें—ऊ त भल खाएक ले के आइल रहल ह। ई कवन ह जे आके 'हूँ' करत बा। जब सोनार का निकले में देरी भइल त सोनारिन कहली—'बहरऽ जलदी खा लऽ। घर सूने बा।' सोनार बहरले आ कहले 'भल खाएक ले के आइल रह फेर काहे अइले ह।' सोनारिन कहली--'मर! हम त अबगे आवत बानी।' तब सोनार कहे 'इअरवा त चारो हजार रुपैआ ले गइल।' इनू बेकत दउरल घरे आइल आ देखे चुल्ही क पाछा के रुपैआ कोड़ल रहे। सोनार कहले—अच्छा हम असल सोनार हो त उनका से रुपैआ लेब नू।

सोनार अहीर का दुआरा गइले आ पुकरले—'इआर! इआर!' अहीरि बहरली आ कहली जे रउरा इआर का त बाँचे के कवनो उमेदे नइखे। सोनार कह कि तनि उनका से हमरा के भेंट करा दीं। अहीरिन उनका के अहीर का लगे ले ले गइली। सोनार के देखके अहीर आँख मून के गुम हो गइले, ना ताकस ना केहू से बोलस। सोनार लगले रोए आ उनका देह पर मूड़ी पटक के कहे लगले—'कहाँ इआर हमनी दू इआर रहनी। रउरा मुअल जा तानी, हम जिअते बानी।' ऊ एकद बोतही रह गइलें। जब सोनार झाड़ा फिरे गइले त अहीर अपना मेहरारू से कहले 'इ त बड़ा हरान कइलस। हम त दम साध के मरला लेखा हो जा तानी। तूँ उनका कह दीहे जे अब का बइठल बानी ऊ त मर गइलें चिता साज के हमरा के बोह ध दीहे। हम गन से निकल जाएब। एकरा बाद आग लगा दीहे। इअरऊ ज जे इआर फुँका गइले।' एतना बात सिखा के अहीर गुम हो गइले आ आ अही रोए-काने लगली। तब तक सोनार अइले आ कहलें—'का हऽ? काहे इआरिन रोअतानी अहीरिन कहली—'राउर इआर मर गइलें।' तब सोनार जा के अहीर का देह लगले गिरे, भहराए आ रोए। तब तक चिता सजा गइल आ लोग पचाठी ब लागल। ई देख के सोनार कहलें—'ई पचाठी काहे के बन्हाता लोग जवाब देलस 'रउरा इआर के एही पर उठाके ले जाइल जाई फूँके ला।' सोनार कहलें— हमार इआर रहले ह। ऊ पचाठी पर काँहे जइहें। हम उनका के अपना कान्ह पर जाएब।' सोनार अहीर के उठा के ले चलल। ऊ पाँच डेग चले आ उनका धरती पर पटक देवे आ उनका देह पर अपने गिरे आ रोए जे इआर तू मर गइलऽ, हम जिअते बानी। एही तरे पटकते-पटकते उनका के ले गइले आ चिता पर सुता दें अहीर लोग कहल जे अब रउरा जाईं, हमनी फूंक देहब कि ना। सोनार कहलें हमर इआर रहलें ह, हम आग देब। ई कह के सोनार लुकाड़ी बार लेले अहीर का मुंह में धरावे लगलें त अहीर उठ बइठले आ कहलें—'ए इआर! जइ चालाक रउरा तइसन हम। चली आधा आधी बाट लेहल जाव। दूनू जने घरे आ आ आधा-आधा रुपैआ बांट लेले सोंनार रुपैआ ले लेले। आ अपना घर गइले।

पुस्तक-परिचय—

भोजपुरी संगम—सम्पादक प्रो० चन्द्रभूषण सिनहा, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, को-ऑपरेटिव कॉलेज; जमशेदपुर; प्रकाशक, भोजपुरी साहित्य परिषद जमशेदपुर; पन्ना ८२, दाम एक अंक के एक रुपया; कागज, छपाई, सुन्दर, साफ।

'भोजपुरी संगम' के प्रकाशन जमशेदपुर भोजपुरी परिषद के 'पहिला प्रयास' ह। पुस्तक का रूप में कविता, कहानी, आ लेखन के बहुत अच्छा संग्रह भइल बा। हिन्दी आ भोजपुरी के नामी गरामी लेखक आ कवि लोगन के एह में सहयोग बा। प्रो० सिन्हा आ 'सलिल' जी भोजपुरी के जी जान से दुलार करेवाला विद्वान हईं। 'संगम' के साहित्यिक स्तर बहुत ऊँचा बा। एकर प्रकाशन होखहीं के चाहीं। जमशेदपुर अईसन नगर में पइसा के कमी नइखे आ भोजपुरी साहित्य-सेवक लोग के लगनों के कमी नइखे। हमार इहे शुभकामना बा जे भोजपुरी साहित्य संस्कृति आ साधना के ई प्रकाशन संगम बनो। एकर भविष्य बड़ा उज्वल बा। अइसन किताब के प्रकाशित करावे खातिर भोजपुरी साहित्य परिषद आ ओकर सदस्य लोग बधाई के पात्र बाड़े।

ललकी किरिनियाँ के कोर—(कविता-संग्रह)

ले०—श्री गजानन प्रसाद एम० ए० बी० एल०, संगीत प्रभाकर। प्रकाशक-जन-सम्पर्क विभाग, बिहार, । पन्ना ३६ दाम पचीस नये पैसे।

ई संग्रह जनसम्पर्क विभाग बिहार के पदाधिकारी श्री गजानन प्रसाद के रचनन के संग्रह ह। अपनेका गीत आ संगीतकार भी हईं। एह संग्रह में एकावन गो गीत बा। हिन्दी के अधिका आ भोजपुरी के कम। फिर भी भोजपुरी गीत के स्तर ऊँचा बा।

गीतन में गाँव के जीवन के बड़ा मार्मिक चित्रण बा। कौनो-कौनो गीत त बहुते अच्छा उतर गइल बा। 'नइहरवा ना जाइबि' आ 'चहके ले सरसों के फूल रे, पढ़ि के मन आघाई उठेला। प्रसाद जी सुर आ कंठ भी पवले बाड़े। गावे के बेरी लोग के झुमा देले। "खेतवा जाला रे किसनवाँ" गीत आजु के बहुत लोकप्रिय गीत बा। उनुका से भोजपुरी के आउर भी आशा बा संग्रह के छपाई सुन्दर आ दाम त नामे के बा।

वार्षिकी—सम्पादक-मंडल, सर्वश्री राजेन्द्र किशोर वर्मा, मदन प्रसाद, तारकेश्वर प्रसाद; प्रकाशक, साहित्य संस्कृति विभाग, नवयुवक पुस्तकालय, मोतीहारी।

हर साल मोतीहारी से निकले वाली ई एगो सालाना पत्रिका ह। चम्पारण के साहित्यिक भाई लोग कतना कर्मठ बा, ई पत्रिका से साफ बुझात बा। लेख कविता निबन्ध, कहानी हिन्दी आ भोजपुरी दूनो के बड़ा सुन्दर बा। छपाई भी साफ बा आ पढ़े खातिर सामाग्रियो ढेर बा। एह प्रकाशन खातिर सम्पादक-मंडल बधाई के पात्र बा।

(कर्नाटकी)—'ऐतिहासिक नाटिका' हिन्दी ले० रामेश्वर सिंह 'नटवर'; जयन्त प्रकाशन खिचर सराय गया। दाम पचहत्तर नये पैसे। छपाई सुन्दर कागज साफ।

नटवर जी नाटक, कहानी, कविता आ लोकगीत भी खूब लिखेले। इनकर एक दर्जन रचना प्रकाशित भी बा। इतिहास के कथा पर लिखल ई नाटिका सुन्दर बा। भाषा, शैली आ विचार में परिपक्वता बा।

प्र० स०

'अँजोर' के तीसरा साल

भगवान का दया से एह अंक के साथ 'अँजोर' अपना जीवन के तीसरा साल में पाँव धरत बाटे। एह में तीसरा साल के शुरू के दूइ अंक एक साथे निकालल गइलहा। पिछला दूनो साल बड़ा संकट में कटलहा। 'भोजपुरी-परिवार' के सदस्य लोग एकरा तरफ से एकदम उदासीन हो गइले। भोजपुरी इलाका के लोग कवनो तरह के तनिको सहानुभूति नइखन देखावत। तबो हम बराबर घाटा सहि के भी 'अँजोर' के चलावे खातिर कमर कसले बानी। आपन समय आ पैसा लगा के एकर सब काम अपने हाथे करे के परेला। लेख आ कविता भी बहुत मुसकिल से जुटेला। शब्द आ मुहावरा के अरथ दूइ साल निकालल गइल, मगर केहू ओह में कवनो तरह के सुधार के सुझाव ना भेजल। एह साल से कहावत के अरथ देबे के काम नधाइलहा, ओहू में केहू से सहायता मिले के आसरा नइखे। कतना भाई कई अंक ले गइले कि गाहक बनाइब; मगर एको पैसा के दरसन आज ले ना भइल। पहिला साल के गाहक लोग दोसरा साल से चुप्पी साधि लिहले, केहू चिट्ठी के जबावो ना दीहल। कवन-कवन दुखड़ा सुनावल जाउ, भोजपुरिया लोगन का भोजपुरी के तनिको प्रेम आ सहानुभूति नइखे। दोसर-दोसर लोकभाषा में जइसन बढ़िया काम हो रहल बाटे तवनो के देखादेखी भोजपुरिया लोग का मन में उतसाह नइखे होत। भगवान के अइसने मरजी बुझात बा कि लोकभाषा का समाज में भोजपुरी हमेशा पिछड़ले रहो।

चम्पारण के बँगरी-पिपरा कोठी निवासी पंडित गणेश चौबे जी आ शाहाबाद के डुमराँव निवासी श्री रासबिहारी राय शर्मा एम० ए० आ बक्सर के स्वामी विमलानन्द सरस्वती भोजपुरी के अइसन सच्चा अनुरागी आ भक्त बाड़े कि हमेशा 'अँजोर' के उतसाह बढ़ावत रहेले। एह लोग से बहुत सहारा मिलत आइल हा। एह लोग के उपकार कबहीं ना भुलाई। पिछला दूनो साल में जवन लेखक आ कवि 'अँजोर' के सजावे में सहजोग दिहले ओह लोग के भी उपकार बराबर इयाद रही। एह सब लोगन के भगवान नीके राखसु। अब आगे खातिर एह लोगन से 'अँजोर' आसरा लगवले रही। हम सब केहू के हाथ जोरले धन्यवाद देत बानी।

सरकार का ओर से बिहार में जवन विकास-खण्ड जगह-जगह कायम भइल बा तवना में से कुछ दयालु अफसर लोग 'अँजोर' पर कुछ किरिपा कइले बाड़े। अगर ओह लोगन के उपकार से 'अँजोर' के कुछ भलाई होखी त उमेद बाटे की एकर डगमगाइल पाँव धीरे-धीरे जमे लागी। बिहार के पुस्तकालय आ जेलखाना के कुछ अफसर लोगन के निगाह 'अँजोर' का तरफ फिरल बाटे। अगर ओह लोगन के सचमुच दया भइल त आशा बा कि अगिला अंक में हम 'अँजोर' के प्रेमी लोगन के खुस खबरी सुनाइब। ई सब सहारा हमरा भगवान का तरफ से मिल रहल बा। हमरा भरोसा भगवाने के बा। ऊहे सबके मन में सहानुभूति जगइहें। भोजपुरिया भाई लोग हमरा के आगे बढ़ाके आपन हाथ खींचि

लिहल। मगर जेकर सहायक केहू ना रहे ओकर मन अनाथ होके दीनानाथ के पुकारेला, आ जे केहू चारू ओर से निरास होके अकेले भगवान के सरन पकड़ेला ओकरा के भगवान जरूर सहारा देले। हमरा एह बात के अनुभव बराबर होत आवत बाटे। जब हमरा कवनो अपराध से भगवान आपन सहारा हटाइ लीहें तबे 'अँजोर' के आगे अन्हरिया आई, नाहीं त जबले ओह सहारा से दम मिलत रही तबले ई चलत रही।

पइसा-कउड़ी के त कमी पड़ले बा, उमंग बढ़ावेवाला भी केहु नइखे। जे अइसन बड़लो बा ओकरा गाँठी में दाम नइखे। छूँछ सहानुभूति से हम कहाँ तक हिम्मत बान्हो। एही काम का पाछा हमार आपन वकालत के पेसा में बहुत बट्टा परतवा। लेकिन तब अपना रोजी-रोटी के चिन्ता से बढ़ि के हमरा एकरे फिकिर लागल रहेला। हमार साथी सहकारी सम्पादक श्री अविनाशचन्द्र विद्यार्थी अकेले हमरा संगे डोरियाइल चलेले। उन्हुका अइसन दर्द-सरीक साथी ना रहित त अतनो दिन 'अँजोर' ना चलि सकित। आगे-आगे साहस के छकड़ा ठेलेवाला ऊहे बाड़े। भगवान उन्हुको के कायम राखसु जे हमार दहिनी बाँहि मजबूत रहो। शब्द, महावरा आ कहावत के चुनाव करे में, ओन्हनी के अरथ लिखे में, 'अँजोर' के प्रूफ देखे में, प्रेस में दौड़-धूप करे में, चन्दा वसूले में भी उन्हुकरे सहयोग सबसे बढ़ि के बाटे। अन्त में हम पटना के यूनियन प्रेस के मालिक श्री रामेश्वर प्रसादजी आ मनेजर साहेब के भी बहुत उपकार मानत बानीं जे शुरू से आजु ले 'अँजोर' के छापे में, सजावे में, ठीक समय पर निकाले में आ एकरा के प्रकाशित करेके हर तरह के काम में भरपूर सहायता देले चलि आवत बाड़े। आसा अइसने बा कि भगवान उन्हकर मदद दिआवत रहिहें त 'अँजोर' बराबर भोजपुरी प्रेमी भाइयन के सेवा में पहुँचत रही आ हमहूँ तन-मन-धन से एही में ततपर रहत्रि। आचार्य शिवपूजन सहाय जी के किरपा, दया, आ सनेह के बखान हमरा सामर्थ्य का बाहरे बा। भगवान ऊँहा के जुग-जुग जियावसु। श्री रामरूप सिंह जी एम० ए० अगर आपन छोह बनवले राखब त 'अँजोर' के अँजोर भी बनल रहे के आसरा बा।

स्वर्गीय देवव्रत शास्त्री

पटना के नामी हिन्दी-दैनिक 'नवराष्ट्र' के प्रधान सम्पादक श्री देवव्रत शास्त्री पिछली १० जनवरी (१९६२) के मोटर-दुर्घटना में घायल होके बैकुण्ठ चलि गइले। भारी दुःख से ई बात लीखे के परत बा। ऊ भोजपुरी के बड़ा भारी समर्थक आ सहायक रहले ह। चम्पारण जिला के रहनिहार भइला से भोजपुरी उन्हुकर मातृभाषा रहे। ऊहे बिहार में हिन्दी के अखबार खातिर उपजाऊ जमीन तइयार कइले। उन्हुका से पहिले बिहार अखबारन वास्ते रेगिस्तान मानल जात रहे। मगर ऊहे पहिले-पहिल साप्ताहिक 'नवशक्ति' निकालि के एह ऊसर बिहार के उपजाऊ बनवले। 'नवशक्ति' के दैनिक बनवले, दुतल्ला पक्का मकान बनवले, फिर दैनिक 'राष्ट्रवाणी' भी चलवले, अन्त में जब शान्ति से रहे वास्ते दूनों के छोड़े के पड़ल त नया कारखाना खड़ा करके 'नवराष्ट्र' दैनिक निकाले लगले। नैपाल में हिन्दी के प्रचार करे खातिर एगो अखबार निकालत रहले आ उद्योग-धन्धा के क्षेत्र में हिन्दीप्रेम फैलाबे वास्ते अलगे साप्ताहिक चलावत रहलन। भगवान के अइसन मरजी कि 'नवराष्ट्र' के मँझधार नैया

के पतवार टूटि गइल। उन्हुकर सयान बेटा लायक आ होनहार बाड़े, इन्हका भगवान जिआवसु-बढ़ावसु जे शास्त्रीजी के यादगार 'नवराष्ट्र' बराबर कायम र उनुके समय से रामदयाल पाँड़े 'नवराष्ट्र' के सम्पादक बाड़े। पाँड़ेजी भी शाहाबा क्षेत्र के हवे। भगवान शास्त्रीजी के आत्मा के शान्ति आ पाँड़ेजी का हाथ में देसु, इहे 'अँजोर' के अभिलाख बाटे।

'अँजोर' के भाषा-नीतिः—

हम पहिले लिखि चुकल बानी कि हमरा देश में भाषा के झगड़ा से राष्ट्रीय एक में बहुत बाधा पड़त बाटे। एही विचार से हम 'अँजोर' के भाषा-नीति का बारे में साफ-साफ लिखलीं कि हम राष्ट्रभाषा हिन्दी का रास्ता में रोड़ा अँटकावे के नइखीं चाहत। आरम्भिक शिक्षा वास्ते हम भोजपुरी का जगह पर हिन्दी राखे के विचार एही नि से प्रगट कइले रहीं कि भोजपुरी बराबर हिन्दी के विकास में सहायता दीही, ओक जगह ना छीनी। मगर एइ बात से हमार बहुत भाई असन्तुष्ट बाड़े। लेकिन हम अपना सिद्धान्त का तौर पर जे किछु लिखले रहीं से अपना जगह पर बिल्कुल ठी बाटे। अगर सचमुच प्रारम्भिक शिक्षा सब क्षेत्र में ओहिजे के लोकभाषा में हो लागी त हमहू भोजपुरी वास्ते जरूर आपन आवाज ऊँचा करबि। अबहीं प्रारम्भि शिक्षा के पाठ्यपुस्तक कवनो क्षेत्रीय भाषा में छपल ना देखे में आइलहा। जब हरए जनपद का भाषा में प्राइमरी कोर्स के किताब छपे लागी आ पढ़ाई भी होखे ला तब भोजपुरी कइसे पीछे रही। भोजपुरी के ईहे नीयत बा कि भाषा के झगरा बखे में आगे-आगे झंडा ना फहरावत फिरी, बाकी जब सभ लोकभाषा आपन-आपन मोर्चा बन्दी करिहें तब भोजपुरिओ आपन किलाबन्दी करबे करी। भोजपुरी के गढ़ केहू अबर-दूबर ना होई। हम अपना भाई लोग के बिसवास दिलावत बानी कि भोजपु के पच्छ पुष्ट करे में हम केहू से पीछे नइखीं, मगर हम अपना देश में भाषा झमेला लेके कौनो संकट-समस्या खड़ा कइल नइखीं चाहत। हम 'अँजोर' के सहा भोजपुरी में गद्य आ पद्य के अच्छा से अच्छा साहित्य तइयार करेके कोसिस हमेशा कर रह बानी या जबतक सामरथ रही तब तक करते रहबि।

भोजपुरी-साहित्य के प्रकाशन के प्रबन्ध जरूरी बा—

भोजपुरी के लेखक आ कवि भोजपुरी इलाका में बहुत बाड़े। हमार विचा बाटे कि अच्छा-अच्छा लेखक आ कवि लोगन के अच्छा-अच्छा रचना चुनि के गद्य पद्य के सुन्दर-सुन्दर संग्रह निकालल जाउ। कहानी, कविता, निबंध, जीवनी, संस्मर नाटक, एकांकी सबके संग्रह होखे के चाहीं; लेकिन ततकाल अबहीं कविता आ कहानी के संग्रह निकाले के बिचार कइल गइल बाटे। भोजपुरी के साहित्यिक प्रकाशन के बहु जरूरत बा। बहुत-सा लेख-कविता त पत्र-पत्रिका के फाइले में सड़त-गलत रहि जाता पुस्तक का रूप में प्रकाशित भइला पर ओकर गिनती साहित्य के भंडार का चीज में होखे लागी। अगर हिन्दी के प्रकाशक लोग भी अइसन काम करे लागसु त कब घाटा के सउदा ना होई। मगर 'अँजोर' के अइसन संकल्प बाटे कि धीरे-धीरे भोजपु में अच्छा-अच्छा पुस्तक निकले। हमार ईहे निवेदन बाटे कि एह काम में सब लेख आ कवि भाई हमरा के उचित सलाह आ सहायता देबे के कृपा करसु।

प्र०—सम्पादक

'अँजोर' पर सम्मति ।

'अँजोर' की प्रति यथासमय प्राप्त हुई। आप सवोंका यह प्रयत्न सराहनीय है। इस पत्रिका द्वारा आप भोजपुरी साहित्य और संस्कृति के उत्थान और प्रसार में सफल होंगे ऐसी मेरी धारणा है।

परमेश्वरी लाल गुप्त एम० ए०, पी० एच-डी (वम्बई)

'अँजोर' की प्रति देखने को मिली। मेरा ऐसा विचार है कि किसी भी लोक भाषा में इतने उच्च कोटि की पत्रिका अव तक प्रकाशित नहीं हुई! इसके प्रकाशन से राष्ट्र भाषा हिन्दी को कितना बल मिलेगा उसे तो हिन्दी भाषा भाषी ही समझेंगे। यदि यह पत्रिका दस वर्षों तक भी निकलती रही तो भोजपुरी साहित्य का वह भंडार तैयार होगा जो किसी भी अन्य लोक भाषा के साहित्य से टक्कर ले सकेगा। इसकी जिम्मेवारी भोजपुरी भाइयों पर है। आशा है वे इसकी उपयोगिता समझ कर इसके प्रकाशन में पूर्ण सहयोग देंगे। मेरी हार्दिक वधाई स्वीकार करें।

डा० शीलभद्र (हैदरावाद)

"अँजोर" के नियम

१ "अँजोर" में छपे खातिर जे भी रचना भेजल जाय ओकर प्रतिलिपि अपना पास जरूर राख लिहल जाय। प्रकाशित रचना भेजे के कृपा मत कइल जाय।

२ कवनो लेख, कविता, प्रश्न, चित्र आदि के छापे भा ना छापे के आ काटे-छाँटे के पूरा अधिकार सम्पादक के रही।

३ "अँजोर" में विना नाँव-गाँव के मुलाहिजा कइले, रचनन के उत्तमता पर अधिक ध्यान दीहल जाई।

४ पन्ना के एक ओर लेख लिखाये के चाहीं, भाव आ भाषा पर ध्यान त राखहीं के चाहीं। जहाँ तक होखे लेखन के काया छोटे होखे के चाहीं।

५ रचनाके साथ लेखक के वर्त्तमान पता आ जन्म-स्थान के पता दूनो भेजेके चाहीं।

६ "अँजोर" के गाहक कवनो अंक से बनावल जा सकेला। जवना महीना में दाम आ जाई ओही महीना से गाहक समझल जाईं।

७ स्थायी गाहक भाई चिठ्ठी-पत्री लिखत खानी आपन गाहक-संख्या जरूर लिखसु। एक बरिस के चन्दा भेजि के जे गाहक बनिहें उहे भाई स्थायी गाहक कहइहें।

८ रचना, मनीआर्डर, व्यवस्था सम्बन्धी पूछताछ के पत्र सम्पादक के पता से भेजे के चाहीं।

९ आलोचना खातिर पुस्तक के दू प्रति भेजेके चाहीं।

छप रही है! छप रही है!!

भोजपुरी परिवार, पटना के आगामी दो महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

भिखारीकृत 'भोजपुरी' कविताओं की आलोचना

भिखारी ठाकुर

लेखक महेश्वर प्रसाद

'भोजपुरी, के सहृदय कवि बाबू भिखारी ठाकुर का परिचय देना सूर्य को दीपक दिखाना है। कहने की आवश्यकता नहीं कि वह अपनी अद्वितीय प्रतिभा के बल पर समस्त उत्तरी भारतीय जनता के गले का हार हो रहे हैं। उनका मोहक नृत्य, रोमांचकारी नाटक तथा हृदय-वेधक संगीत जादू की तरह मानव-हृदय पर प्रभाव जमाए हुए हैं। प्रस्तुत पुस्तक उन्हीं की सारी कृतियों का सुविस्तृत ज्ञान कराने के अभिप्राय से लिखी गई है। इसके अतिरिक्त काव्यरसिकों, सहृदयों एवं साहित्य-सेवकों के लिए भी। उसमें काफी सामग्री प्रस्तुत की गई है। भोजपुरी भाषा के प्रेमी सज्जन आजही अपने अपने नाम उसकी प्रतियाँ आर्डर भेज कर सुरक्षित करा लें; अन्यथा अधिक समय तक प्रतियों के बचने की सम्भावना नहीं है। मूल्य मात्र २ रु० ५० नये पैसे।

संक्षिप्त भोजपुरी व्याकरण

ले० राम बिहारी राय शर्मा, एम
ए० डिप-एड, साहित्यरत्न।

हिन्दी और संस्कृत साहित्य के विद्व
श्री राम बिहारी राय शर्मा द्वारा लि
गया भोजपुरी का यह सर्वप्रथम सं
व्याकरण अपने विविध अंगों के सा
सहज-सुबोध शैली में प्रकाशित हो
है। इसकी भाषा हिन्दी है और प्रयो
त्मक व्यवहार सम्बन्धी सारे उदाह
भोजपुरी के हैं। केवल भोजपुरी भा
भाषी ही नहीं अन्य विद्वानों के लि
भी यह प्रारंभिक व्याकरण उपयो
सिद्ध होगा। इसके बाद शीघ्र ही भोजपु
का एक बृहद् व्याकरण भी प्रकाशि
हो रहा है। मूल्य मात्र एक रुपया पचा
नये पैसे।

अंजोर के विज्ञापन-दर

कभर के चौथा पन्ना—१५०)
,, तीसरा पन्ना—१२५)
साधारण पन्ना— १००)
,, आधा पन्ना— ५५)
साधारण चौथाई पन्ना—३५)

एक प्रति के ७५ नया पैसा
एह प्रति के डेढ़ रुपया

सालाना—स्थानीय तीन रुपया,
बाहर साढ़े तीन रुपया

प्रकाशक
भोजपुरी परिवार, पटना ३

मुद्रक : युनियन प्रेस, पटना-४

राष्ट्र-सुरक्षांक

[बिहार सरकार द्वारा विद्यालयों एवं पुस्तकालयों के लिए स्वीकृत]

अँजोर

[भोजपुरी के एकमात्र त्रैमासिक पत्र]

जागल जरूरी बा

गीदर के गरजला से शेर घबड़ाला कहीं
कूकुर के झाँस से अहिरावत कहीं भागल बा ?
धोखा से काट भले लीही अनचितला में
फटको का पास जब जानी कि जागल बा ?
जागल आ सूतल के भेद त बुझात होई
शेर के कपार पर ई छड़पत सियार बा
एही से जागल जरूरी बा दुनियाँ में
मोकापर जागल के महिमा अपार बा

—अशांत

प्रधान सम्पादक
पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय

कला- ३
किरिनि-३-४

अक्तूबर १९६२
जनवरी १९६३

संपादक-मंडल

गणेश चौबे : रास बिहारी राय शर्मा
रामवचन द्विवेदी 'अरविन्द' : प्रो० वसंतकुमार : बजरंग वर्मा

सहायक संपादक

अविनाश चन्द्र विद्यार्थी

एह अंक में पढ़ीं:—

पन्ना

१. जागल जरूरी बा (कविता)—अशांत मुख पृष्ठ
२. हिमालय के पुकार (कविता)—प्रणयी १
३. चीन के आक्रमण के सिलसिलेवार विवरण—प्रधान संपादक २
४. मैक मोहन रेखा पर चीन के उपद्रव—रास बिहारी राय शर्मा ५
५. भारत-चीन सिवाना : कुछ बुनियादी बात—पाण्डेय कपिल ७
६. बम बूँटा : पीकिंग पर खूँटा (कहानी)—विवेकी राय १२
७. हमार सोना के देश (एकांकी —मधुकर सिंह १५
८. कविता-कुंज
  १. रन के साज सजाइ गइल रे—प्रभुनाथ मिश्र २३
  २. बिहँसि खून से लिखबि कहानी—जगदीश ओझा 'सुन्दर' २५
  ३ आइल दिन बलिदान के—रामवृक्ष राय 'विधुर' २६
  ४ जागऽ जागऽ भइया मोर—सर्वदेव तिवारी 'राकेश' २६
  ५ गीत—रमेश चन्द्र तिवारी 'रमेश' २८
  ६. गुरु भारत के मत जरी लाग—विश्वनाथ प्रसाद 'शैदा' २९
  ७ बुझउनी—रामदेव द्विवेदी 'अलमस्त' ३०
  ८ पुकार—लक्ष्मी शंकर त्रिवेदी ३१
  ९ नालन्दा के आँसू जमके नून हो गइल—पाण्डेय आशुतोष ३२
  १०. ललकार—राधाकृष्ण ३३
  ११ लागल हिमालय के बरफ में आग रे—सत्यनारायण केसरी 'सौरभ' ३४
  १२. बलिदान हेवाले पर होई—राम नारायण 'राकेश' ३५
  १३. हाथ में हमनिये के भारत के लाज बा—व्रतराज 'विकल' ३६
  १४. हिमालय हुंकार—कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र' ३७
  १५ हईं जा भारत के संतान—जगन्नाथ ३८
  १६. चाचा नेहरू से—परमानन्द शुक्ल 'गाजीपुरी' ३९
  १७. सब रस रंग भरी भोजपुरियन में—अभिमन्यु चौबे ३९
  १८. निमने घर बायन दिहलऽ—रामेश्वर प्रसाद सिनहा ४०
  १९ उद्बोधन—चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह ४१
  २० ई हवे चीन बटमार—उमाकांत वर्मा ४२
  २१ चीनी माटी के प्लेट—धीरेन्द्र प्रसाद सिनहा 'धवल' ४३

'तमसो मा ज्योतिर्गमय'

अँजोर

धरती के लोर बाट जोहि रहल भोर के,
पह फाटल, बिहँसी अब किरिनियाँ 'अँजोर' के।

कला—३
आसिन—माघ २०१९ वि०
अक्तूबर १९६२—जनवरी १९६३
किरिनि ३-४

हिमालय के पुकार

मीतवा के भेख धइले, चीनियाँ चुहाड़ अइले,
सीमवाँ पर कइले अत्याचार हो हिमालय देशके पुकारेला
हिमालय उठि ललकारेला
गोलिया से गोला छूटल, शान्ति के सितारा टूटल,
बिछि गइले सगरे अंगार हो हिमालय देश के पुकारेला
हिमालय उठि ललकारेला
ब्रह्मपुत्र-घाटी जागल, उसरो के माटी जागल,
जागि गइले हिंद के हुंकार हो हिमालय देश के पुकारेला
हिमालय उठि ललकारेला
नेफा-लदाख जागल, चितवा के राख जागल,
शेषनाग उठले फुफुकार हो हिमालय देश के पुकारेला
हिमालय उठि ललकारेला
जब ले बा बाकी खुनवाँ, देहिया में एको बुनवाँ,
तबले लड़ब धुअँवाँ-धार हो हिमालय देश के पुकारेला
हिमालय उठि ललकारेला
रुद्र के त्रिशूल चमकी, भारत के धूल चमकी,
मुदई के होई कुल-संहार हो हिमालय देश के पुकारेला
हिमालय उठि ललकारेला

रामनाथ पाठक 'प्रणयी'

चीन के आक्रमण के सिलसिलेवार विवरण

चीनी प्रजातन्त्रराज के स्वीकृति के थोड़े दिन बाद से ही चीन के तिब्बत प चढ़ाई शुरू हो गइल। ओकर विचार रहे अपना राज्य के सीमा-विस्तार। ७ अक्टूब १९५० से तिब्बत पर आक्रमण शुरू भइल। ओह समय तक भारत का प्रधान मंत्री आ चीन के प्रधान मंत्री में कौनों खास मतभेद ना रहे। सन् १९५४ का जून में दूनो महादे के महामंत्री पंचशील के सिद्धान्तन का मोताबिक चले के प्रतिज्ञा कइले।

एक महीना का भीतरे, उत्तर प्रदेश के बाराहोती में भारतीय सेना के उपस्थिति के विरोध चीन कर दिहलस ओकरा पर भी चीन आपन अधिकार जमावे के चाहत रहे। बाराहोती में चीन के घुसेके विरोध अगस्त में भइल। भारतीय सीमा में से पचास हजा वर्गमील जमीन पर जे चीन आपन अधिकार देखवलस ओकर भी विरोध भारत से भइल। चीन के कहनाम ह कि पहिलका नक्शा कुमितांग सरकार के समय के ह आ ओकर आवृत्ति करे के अवसर चीन का पहिले ना रहे आ ई पचास हजार वर्ग मील चीन के भूमि हवे।

सन् १९५६ में चीनी पहिले उत्तर प्रदेश आ बाद में हिमाँचल प्रदेश में घुसे लगले। नवम्बर १९५५ में चाऊ-एन-लाई कहले कि कम्यूनिस्ट चीन तिब्बत आ भारत के पूर्वीय सीमा मैकमोहन के डँड़ीर मानि लीहल लेकिन एक बरीस का भीतरे चीन मैकमोहन के डँड़ीर लांघि के भारत के उत्तर-पूर्वीय सीमा में घुसि आइल बाद में चीन के तावरतोड़ आक्रमण भारतीय सीमा में होखे लागल। कुछ उत्तर-पूर्वीय आ कुछ उत्तर-पश्चिमी सीमा में शुरू भइल जेकर नतीजा अक्टूबर २० के दूगो भयंकर भारत पर आक्रमण भइल।

सन् १९४९ का अक्टूबर में जब चीन में प्रजातन्त्र राज कायम भइल त भारत ओह देसन में पहिलका रहे जे ओकर स्वकृति दीहल। भारत का ओर से कहाइल कि ई स्वीकृति चीन भारत का बीच अमर मिताई कायम करी, एशिया के संगठन में सहायता दी आ दुनिया में शान्ति कायम करे में भी मदद दी। नवम्बर में चाऊ जब दिल्ली अइले त कहले कि बरमा का साथ सीमा मैकमोहन रेखा चीन मान लीहल आ भारत का संगे भी माने के विचार कर कहल बा।

५ जून सन् १९५७ में भारत चीन के यातुंग में अपना रोजगारवाला सीमा के अलावे सब जमीन दे दीहलस। लोहित सीमा भूभाग में जेकरा के नेफा कहल जाला एक चीनी दल वालोंग पहुंचल।

अप्रिल या मई १९५८ में दूनों देश में ई तय भइल कि आपन-आपन सेना आ अन्य अफसरन के वोहीजा से हटा लिहल जाय। चीन अफसरन का बारे में राजी ना भइल। जतना जमीन पर चीन अधिकार माँगत रहे ओकरा बारे में उन्हन का कौनो ज्ञा ना रहे।

जून २ सन १९५८ में लदाख का सुरनाक किला पर चीन के कब्जा के भारत घोर विरोध कइलस।

वोही साल सितम्बर का महीना में भारतीय पहरेदारन के एगो दल के चीनी सिपाही अक्साई चीन का उत्तर भाग में कैद कइ लीहले। भारतीय पहरेदारन का सा बड़ा दुर्व्यवहार भी भइल।

सितम्बर २७ के चीनी सेना के एक दल लोहित सीमा में घुसल आ बाद बर्मा भी चल गइल।

अक्टूबर में चीनी कार्य्यकर्त्ता उत्तर प्रदेश के लपथल आ संगछमाला में आपन चौकी बना लेलेसन।

अक्टूबर २७ के सीती घाटीआ हिमांचल प्रदेश पर चीनी हवाई जहाज उड़ल।

दिसम्बर का महीना में प्रधान मंत्री नेहरू जी लाल चीन से प्रकाशित एक पत्र में गलत ढंग से देखावल चीन-भारत का सरहद का वारे में चाऊ के लिखलीं। आपस के मतभेद का वारे में एह सवाल के ले के जे भरम पैदा भइल ओकरा ओर भी चाऊ के धेयान खींचल गइल।

सन् १९५९ का २३वीं दिसम्बर के चाऊ जवाव दिहले कि भारत-चीन सीमा कभी भी साधारण रूप से निर्धारित नइखे भइल आ दूनो देश का सीमावन्दी में मतभेद बा। सन् १९५४ में लाल चीन ई सवाल ना उठावल काहें कि ओह घरी निर्धारण खातिर ओकर पच्छ मजबूत ना रहे आ मजबूत त अवहियों नइखे। वेईमानी, झूठ आ धोखेबाजी के त कबहीं कौनो निर्धारित आधार होइए ना सके। फेरू चाऊ बोलले कि मैकमोहन रेखा के चीन कबहीं ना मानल आ वर्तमान काल के चीनी नक्शा में जे सरहद देखावल बा उ पुराने ह आ ठीक बा।

२० अप्रिल के लाल चीन के भारत पर लगावल लांछन कि दलाई लामा के राजनीतिक आश्रय भारत देले बा के विरोध भइल।

१६ मई के लाल चीनी सरकार घोषणा कइलस कि पंचशील के सुविधानुसार मानल जाई।

२३ मई के भारत एकरा पर छोभ परगट कइलस। कहाइल कि 'पंचशील' मूल सिद्धान्त पर स्थित बा न कि सुबिधानुसार परिस्थिति पर।

२६ जुलाई के चीनी सैनिक के एक टुकड़ी पेगांग झील के पश्चिमीय प्रदेश में घुसि के ६ भारतीय सिपाही के कैद करके स्पेगूर में एक चौकी स्थापित कइ दिहलस।

१३ अगस्त सन् १९५० में भारत का अव्यवस्थित सरहद के सवाल लेके कुछ चिन्ता भइल आ इ कहाइल कि चीन-तिब्बत सम्बन्धी सीमा शान्ति पूर्वक निर्धारित हो। अगस्त २१ के चाऊ के जवाब मिलल कि तिब्बत के सरहद भी ठीक हो जाये आ चीनी सरहद भी पक्का हो जाना चाही। भारत एह पर सन्तोष परगट कइलस आ कहाइल कि तिब्बत आ भारतीय सीमा भंग ना होखेके चाही।

१ अक्टूबर के चीनी सेना तिब्बत पर धावा वोल दिहलस। भारत का ओर से कहाइल कि चीन के एह व्यवहार से संयुक्तराष्ट्र में ओकर स्वीकृति में कठिनाई होई आ भारत का सरहद पर अशान्ति आ गड़वड़ी मचि जाई। अक्टूबर ३० के चीन के भारत पर तिब्बत आ चीन के विरुद्ध विदेशी प्रभाव के आरोप लागल। एह पर आश्चर्य भइल आ कहाइल कि एने खाली शान्ति पूर्ण समझौता के इच्छा वा।

२६ अप्रिल के तिब्बत आ भारत में व्यापारिक समझौता भइल जेह में चीन का मातहदी में तिब्बत के स्थिति भारत मानल। पंचशील के आदर करे खातिर दूनो देश में समझौता भइल।

२७ अगस्त के चीन भारत के एगो चिट्ठी भेजलस जेह में तिब्बत के सीमा में भारतीय सेना के घुसे के आरोप रहे।

१४ अक्टूबर के भारत आ चीन का बीच एक व्यापार-सम्बन्धी समझौता भइल।

१८ अक्टूबर के नेहरूजी लाल चीन गइले। जाये के मन्शा रहे आपस के मित्रा के उन्नति आ ५०,००० वर्ग मील भारत के जमीन जे चीनी सरहद में देखावल रहे ओकरा बारे में भी पूछे के।

२८ जून १९५५ में बाराहोती में चीनी सेना के सवाल लेके भारत से विरोध कइल गइल। १५ सितम्बर के चीनी सेना उत्तर प्रदेश के दमजन में १० माइल बढ़ि आइल। ओकरा बाद बाराहोती के चीन आपन भूमि बतवलस आ तनजून ला के सीमा दर्रा कहे में अस्वीकृति दिहलस। सितम्बर में सीपकिन दर्रा का लगे चीनी घुसले। खिनजेमाने में भारतीय पहरेदारन के पीछा हटावल गइल। सुवनश्री आ लांगजू में भी आक्रमण भइल। लदाख में ४० माइल घुसिके चीनी सैनिक १० भारतीय जवानन के साथ नीचतापूर्ण व्यवहार कइले।

सन् १९६० के १९वीं अप्रिल के चाऊ आ नेहरूजी दिल्ली में सीमा के प्रश्न पर विचार कइले। अफसर का उपर समस्या के हल छोड़ दिहल गइल। बाद में तकत संग आ गोम्पा (नेफा) में चीन ५ मील बढ़ि आइल। सुरिया में चीनी पैमाइश दल पहुंचल। बाद में सिक्किम में चीनी दिखाई देवे लगलेस।

फरवरी १४ १९६१ के भारत दूनो देश के अफसरन के निर्धारित रिपोट प्रकाशित कइलस जेह में चीन के ५०,००० वर्ग माइल के अधिकार वेबुनियादी बतावल गइल रहे। १२,००० माइल के एह में के चीन के कब्जा भी नाजायज सिद्ध कइल गइल रहे। चीन एह के ना मानल। काटि छाँटि के आपन रिपोट छपलस। चेमो करपोला आ कमेंग पर धावा भइल। लद्दाख में चीनी आपन चउकी आ सड़क बनावे लगले। लद्दाख में चौकी से १२ माइल चोनी आगे बढ़ले आ भारतीय सिपाही एक माइल भारतीय सरहद से भीतर चलि गइले।

ओकरा बाद चीनी सेना काराकोरम दर्रा से कोंगका दर्रा तक पहरा देवे लागल। चीपचाप नदी पर चीनी चौकी के लेके भी भारत विरोध कइलस। गलवन नदी के घेरा, लदाख में भारतीय सीमा का भीतर होके सड़क बनावे खातिर विरोध भइल। एही इलाका में चीनी-भारतीय सैनिक में लड़ाई भइल। आठ भारतीय जवान मारल गइले। शोला में घोर युद्ध भइल। १७ भारतीय जवान मारल गइले। चीन के बड़ सेना उत्तर-पूर्वीय सीमा आ उतर पछिमी सीमा पर खूब तैयारी से आक्रमण कर देलस। चीनी सैनिक भी हजारो मारल गइले।

२० नवम्बर के आधारात चीन युद्ध-विराम के घोषणा कइलस। पहिला दिसम्बर से पीछे हटे के प्रस्ताव भी कइलसि। अब धीरे धीरे पीछे हट गइल बा। जहां तहाँ चीनी देखाई पड़त बाड़े। बाकी अबहीं ममिला फरियाइल नइखे। कब फेनू लोहा बाजि जाई केहू कहि नइखे सकत काहें कि चीन आपन तीन-सूत्री-प्रस्ताव पर अड़ल बा। भारत के ई प्रस्ताव बा कि चीन ८ सितम्बर १९६२ के स्थिति पर लौटि जाय।

एही बीचे लंका के प्रधान मंत्रिणी श्री मावो बंदरनायक के चेष्टा से एशिया-अफ्रीका के ६ तटस्थ देशनि के ओर से चीन-भारत-सीमा-संघर्ष के अंत खातिर जे प्रस्ताव रखाइल हा ओकरा के भारत सरकार त हू ब हू मान ले ले बा, मगर चीन अभी आनाकानी करत बा।

—प्रधान संपादक

मैकमोहन रेखा पर चीन के उपद्रव

—रास विहारी राय शर्मा

ए वात में इचिको सन्देह नइखे कि भारत अउर चीन के आपसी सम्बन्ध वहुत पुराना ह। भारत के उत्तरी सीमा पर वहुत प्राचीन काल में चंड-मुण्ड, शुम्भ-निशुम्भ, रक्तबीज आदि दानवन के वहुत अत्याचार अउर उपद्रव भइल रहे। देवता लोग वहुत चिन्तित भइल रहलें। अन्त में सब देवता लोग एक साथ मिलि के ब्रह्मा के पास गइलन। फिर शंकर जी के पास गइलन। सब लोग एक साथ होके विष्णु भगवान कीहें गइलन। सब देवता लोगन के आपस में बतकही भइल। सबलोग आपन आपन शास्त्रास्त्र पर्वत तनया पार्वती दुर्गा के दे के युद्ध खातिर तैयार कइलन।

बहुत दिन तक युद्ध भइल। अन्त में सब दैत्य-दानव मारल गइलें। धर्म के स्थापना भइल। अधर्म के हारि भइल। इ कथा देवी भागवत में और मारकंडे पुराण में विस्तार का साथ लिखल बा। आज भी राजा सुरथ के पोखरा बा जेकर चर्चा चण्डी पाठ में आइल बा। अनुमान होता कि ओही दानव लोगन के वंशज इ मंगोल चीन लोग ह। काहें कि खान-पान सब ओही रकम के बा। बहुत पाछे जब गौतम भगवान के अवतार भइल तब इ लोग पर उनका शान्तिमय उपदेश के प्रभाव पड़ल। इ सब लोग बौद्ध हो गइलें। बौद्ध काल में भारत अउर चीन के दोस्ती बढ़ल। अनेक भारतीय भिक्षु चीन गइलन अउर चीन के राजा-प्रजा सब के बौद्ध बनवलन। चीन के भी वहुत यात्री भारत अइलन अउर इहाँ रहि के इहाँ के चाल व्यवहार देखि के वहुत प्रसन्न भइलन। उ लोग भारत के अगाध विद्वानन के देखिके अचम्भित भइलन। इहवाँ से वहुत ग्रन्थ लादि के चीन ले गइलन। ब्रह्मा, चीन, जापान, तिब्बत [त्रिविष्टप आदि देशन में भारत के झंडा गड़ि गइल। सब लोग भारत के सांस्कृतिक लोहा मानि लिहलें। एह बेच में चीन में इसाई धर्म के प्रचार हो गइल बाकिर चीन के लोगन के खाइल-पीयल ओही तरी रह गइल। उ लोग कुकुर, बिलारि, सियार, साँप, तेलचट्टा, चूहा, भेड़िया, गाय, नर आदि के मांस खाये में कुछु पायबन्दी ना राखसु। चीन में पशुता के प्रबलता बा। मानवता के अभाव बा। चीन के सभ्यता में दानवता बा। चीन के बरबरता अउर चीन के क्रूरता जे १९४२ में भइल रहे उ भुलाइल नइखे। ओइजा भगवान नइखन। उहवां 'अहं' के पूजा होला।

अब चीन के नमकहरामी देखीं। जब-जब चीनियन पर आफत आइल तब-तब हमनी का चीन के मदत कइलीं। चीन का ऊपर जापान और जर्मन जब हमला कइलें तब हमनी का चीन के साथ भइलीं। लेकिन इ कुलि बात भुलाके चीन भारत पर लँगोटा बाँधि के चढ़ि आइल। आँखि मुँदि के हजारन भारतीय सैनिकन के गोली बन्दूक अउर तोप से भन-भन काटि के मैकमोहन रेखा का दखिन बढ़ि आइल। पाकिस्तान का साथ चुपचाप साँठि गाँठि करि के जोर-जोर से चाउ एन लाइ ताल ठोके लागल। भारत का ए बात के बड़ा कचोट बा। दुनियां के लोग भी चीन के थू थू करता बाकिर चीन रावण अउर कंस अइसन केहू के बात सुने के नइखे चाहत। चीनी साम्यवाद के ई अच्छा नमूना बा।

जब अंगरेज लोग भारत पर आपन पैर रखलन तब उ लोग तिब्बत, नेपाल, सिक्कम, भूटान आदि से सन्धि-वार्ता कइलन किन्तु चीन के आक्रमण के कौनो भय ना

रहे। चीन का साथ तटस्थ भावना रहे। जब लार्ड करजन भारत के वड़ा लाट भइलन तब उनका भारत के एगो उत्तरी रेखा नियत करेके कुछ चिन्ता भइल। उनक प्रयास से सन् १९१० ई० में हेनरी मैकमोहन के भारत के विदेशी-सचिव बनावल गइल। हेनरी मैकमोहन के जन्म सन् १८६१ ई० में सिमला में भइल रहे। उनका बाप के नौं जेनरल चार्ल्स मैकमोहन रहे। १९१३-१९१४ में भारत के उत्तरी सीमा के निरधार हेनरी मैकमोहन कइले। भारत के चीन से अलग करेवाली इहे रेखा वा। एह रेखा के नाम इनके नाम से मशहूर भइल। इ सब देश का मालूम भइल कि भारत के उत्त सिवान मैकमोहन रेखा ह, जे चीन और तिब्बत के दक्षिण भारत के सीमा रेखा ह। भारत के लक्ष्मण रेखा ह। एकरा दक्षिण भारत ह अउर उत्तर मेंचीन ह।

अब चीन के कहनाम सुनीं। ऊ कहता कि हम मैकमोहन रेखा के ना मानबि। उ कहता कि तिब्बत, भूटान, सिक्किम, नेपाल, उत्तर प्रदेश के वाराहोती, सांगचमल, मानसरोवर, कैलास, वदरीनाथ सब हमरे ह। इ सब स्थान गढ़वाल अउर अलमोड़ जिला में बा। पंजाब के स्फीती क्षेत्र पर ऊ आपन अधिकार जमवले वा। काश्मी के लद्दाख पर धावा वोलिके ओइजा के वहुत जमीन दखल कइ लिहलन। काश्मीर के दक्खिनी पूर्वी क्षेत्र 'डेमचाक' वस्ती के चारो ओर आपन डेरा डाल देले वा।

लद्दाख के पूरा इलाका काश्मीर के महाराज गुलाव सिंह के अधिकार में स १८४० ई० से ही बा। पहिले त रहबे कइल। ओह लद्दाख पर चीन दाँत गड़वले वा। सन १९५० ई० से चीन भारत के वहुत वड़ा भूभाग हथिया लेलेवा। तिब्बत पर आप पूरा पंजा गड़ा देलेबा। मैकमोहन रेखा के दखिन थागला पहाड़ी पर आपन चिराग जला रहल बा। ८ सितम्बर १९५९ के खुद चाऊ एन लाइ नेहरू जी के पत्र लिखले व कि हम मैकमोहन रेखा के नइखीं मानत अउर ना मानबि।

चीन के धोखा-फरेब रावण अउर हिटलर से वढ़िके वा। ऊलोगन के जड़ नाश होगइल वइसही चाऊ के भी नाश जरूर होई। जब भारत रावन के भारी से के छक्का छुड़ा दिहलस। भारत हिटलर के पानी पिलाके संघार कइलस त चाऊ एन ला कवना खेत के मुरई हवे कि इनकर नाश ना होई। रावण जब लक्ष्मण रेखा उल्लंघ करिके सीता के हरण कइलस तब ओकर फल ओकरा मिलल। इहो मैकमोहन रेखा उल्लंघन करिके भारत के शान्ति (सीता) के हरण करेके प्रयास कइले त इनको उहे हा होई। इ लोगन के उपद्रव के बारे में प्राचीन ग्रन्थन में उल्लेख वाकि इ लोग उपद्रव क "पूर्वे किराताः यस्यास्ते पश्चिमे यवनस्थिता नाना भाषा स्थिताः तत्र बहुधर्म प्रवर्तका पूर्वोत्तर में चीन, किरात, दरद, खस तथा पश्चिम में यवन लोगन के उपद्रव होई अ भारत का भीतर नाना भाषा के झगड़ा उत्पन्न होई, नाना प्रकार के धर्म चलावे वा पैदा होंइहें और भारत में भीतरी तथा वाहरी संकट एह प्रकार से उपस्थित होई। भवि पुराण के इ सब बात एह घरी घट रहल वा। हमनी का बड़ा बिचारि के इ संकट सामना करेके बा।

भारत-चीन सिवाना : कुछ बुनियादी बात

—पाण्डेय कपिल

हिन्दुस्तान आ चीन के सिवाना २४०० मील लम्बा बा, जवन कि उत्तर में अफगानिस्तान, चीन आ हिन्दुस्तान के तिनजोड़ा से शुरू होला आ पूरुब में वर्मा, चीन आ हिन्दुस्तान के तिनजोड़ा पर खतम होला। दुनिया-भर के देसन के वीचे जेतना लम्बा-लम्बा सिवाना बाड़न स, ओमें एगो एकरो गिनती होला। अमेरिका-कनाडा के सिवाना ३१०० मील लम्बा बा आ रूस-चीन के सिवाना ३००० मील। हिन्दुस्तान-पाकिस्तान के सिवाना के लम्बाई २७०० मील बा आ चीन-मंगोलिया के सिवाना के लम्बाई २६०० मील। ओकरा बाद त हिन्दुस्ताने-चीन के सिवाना के नम्बर बा। जइसे कि रूस-चीन के सिवाना के वीचे मंगोलिया पड़ जाला, ओइसहीं भारत-चीन के सिवाना के वीचे नेपाल पड़ जाला।

भारत आ चीन के जवन सिवाना बा तवन परम्परा आ जमानादराज से चल आवत बा। आ एह सिवाना के डँरार त प्रकृतिए खीँच देले विया। जवना जगहा से दूगो नदी विपरीत दिशा कावर निकल के जालीसन ओकरा के जल-विभाजन (वाटरशेड) कहल जाला। जल-विभाजन आपन जगह कवहूँ ना बदले। त एहू सिवाना पर ओइसनके जल-विभाजन पड़ल बा। प्रकृति के एह बँटवारा पर कवहूँ सुलह-संधि के मोहर भी लगावल जा चुकल बा। एकरा अलावे, दूनो देश के सरकार अपना-अपना इलाका में आपन-आपन राज चलाके, ओह डँरार के अवरू मजबूत वना देले बा। सैकड़न वरिस से ई डँरार जानल मानल गइल बा। अन्तरराष्ट्रीय कानून आ चलन के मोताविक जवन सिवाना परम्परा आ रेवाज पर कायम होखे आ ओपर कवनो अइसन प्राकृतिक डँरार पड़त होखे जवना में फेर-वदल कवहीं ना हो सके त ओह सिवाना के एकदम पक्का मानल जाई आ ओकरा खातिर कवनो दोसर सबूत के जरूरत ना होई।

हिन्दुस्तान-चीन के सिवाना पर जल-विभाजन वाला पहाड़ के जे लम्बा सिलसिला वा ओकर ऊँचाई १४,००० फीट से लेके २५,००० फीट तक बा। ई एगो बड़का प्राकृतिक देवाल के रूप में खड़ा वा। जहाँ प्रकृति के वनावल एतना ऊँचा देवाल खड़ा बा, उहाँ 'महान' कहाए वाला चीन के देवाल के के पूछो, जवन आदमी के वनावल ह आ जवना के लोमड़ी तक छड़प के पार कर जालीसन।

उत्तर में ई सिवाना हिन्दुस्तान के सिंध नदी आ चीन के यारखंड नदी के वीचवाला जल-विभाजन से शुरू होला। थोड़ा अउरी दक्खिन में, तिब्बत के सतलज आ हिन्दुस्तान के गंगा नदी के बीचवाला जल-विभाजन पड़ेला। नेपाल के पूरुब में जवन जल-विभाजन बा उहाँ से हिन्दुस्तान में ब्रह्मपुत्र नदी आ चीन में सांगपो नदी निकलल बा। एह तरह से उत्तर से लेके पुरुब तक के पूरा सिवाना जल-विभाजन के सिलसिला पर कायम बा। सिवाना पर के जगहा सभ के नाम बा—मुस्ताघ, आघिल, क्येनलुन, जंसकर आ हिमालय के मुख्य सिलसिला।

चीन के जे दावा बा, ओकर कवनो ऐतिहासिक आधार नइखे। ऊ एकदम बनावटी बा आ ओकर कवनो सिलसिला भी नइखे। एक चोटी से कूद के दोसरा चोटी पर जाएवाला हिसाब लगाके चीन सिवाना के जवन दावा पेश करत बा ओकर आधार ना त कवनो जल-विभाजन बा आ ना कवनो नदी। ओकर कहनाम बा जे अमेरिका-

कनाडा के सिवाना, जल-विभाजन वाला सिद्धांत के ठीक उलटा, अक्षांश के आधार मा के कायम भइल बा। ऊ सिवाना झील के काटत निकलल बा चाहे अइसन नदियन के आधार मनले बा जवना के धार बदलत रहेला। रूस-चीन सिवाना चाहे बर्मा-चीन सिवान के जादेतर हिस्सा नदिए के आधार मान के बनल बा, जवना में फेर-बदल होत रहेला।

बाकिर साँच पूछीं त जल-विभाजने वाला सिद्धांत ठीक बा काहे कि एक त जल-विभाजन के जगहा कबहूं ना बदले, दोसरे ओकरा सिलसिला के बीच-बीच में जे दर्रा होल ओकरा ओजह से प्राकृतिक खम्भा भी सिवाना पर खड़ा हो जाला।

हिन्दुस्तान के सिवाना काश्मीर के उत्तरी-पूरुबी डँरार से शुरू होला, जवना के एगो हिस्सा लद्दाख ह। ओकरे सिलसिला में पंजाब, हिमाचल प्रदेश आ उत्तर प्रदे पड़ेला आ उत्तरी डँरार पर सिक्किम, भूटान आ नेफा।

पुराना जमाना में हिन्दुस्तानी सिवाना पर इहाँ से उहाँ तक लद्दाख, स्पिति, बसाह, गढ़वाल, ब्रह्मपुत्र आ कामरूप के राज रहे। आज जे हिन्दुस्तान के सिवाना बा ऊ ओही राज्यन के पाँती पर कायम बा।

लद्दाखे के ले लीं। सत्रहवीं शताब्दी में लिखाइल लद्दाख के शाही इतिहास से पत चलत बा जे १०वीं शताब्दी में इमिस दर्रा लद्दाख आ तिब्बत के सिवाना पर रहे, आ डेमचोक गाँव (जवनापर २८ अक्तूबर १९६२ के चीनी कब्जा कर लेलनस लद्दाखे के एगो गाँव रहे। इपोलित्तो डेसीडरी नाम के एगो यात्री १७१५ ई० में लेह से लासा के यात्रा कइले रहे। ओहू से एह बात के सबूत मिलत बा जे लद्दाख-तिब्बत के सिवाना डेमचोक आ ताशीगांग के बीच में पड़त रहे। आज जे हिन्दुस्तान के सरहद बा, उ ओकरे मोताबि पड़त बा। १८७३ ई० में नैन सिंह नाम के एगो हिन्दुस्तानी यात्री लिखले बा जे हिन्दुस्तानी सरहद, अउरू उत्तर में, नियांगजू नदीं तक बाटे। ओहू से उत्तर, लानक दर्रा तकले हिन्दुस्तानी सरहद रहला के सबूत १८८५ ई० में कैरे आ १८९१ ई० में बावर नाम के यात्रियन के लेख से मिलत बा।

सन् १८९९ ई० में बृटिश सरकार चीन सरकार के जे हिन्दुस्तानी सरहद के ह बतवले रहे ओमे कहल गइल रहे जे हिन्दुस्तानी सरहद ८० डिगरी पूरब तक जात बा। एह से साफ पता चलत बा जे परम्परा से जवन सिवाना चल आवत बा ओकरा मोताबि अक्साई चिन लद्दाखे में पड़त बा। लद्दाख आ तिब्बत के सिवाना परम्परा से कायम बा, जानल-मानल बा आ दूनू पच्छ ओकरा के मंजूर कर चुकल बा। १८४७ ई० में चीनी इम्पीरियल कमिशन, बृटिश अधिकारी लोग के पास जे चिट्ठी लिखले रहे ओहू से बात साफ हो जात बा। चिट्ठी में लिखल रहे जे 'जहाँ तकले सरहद के सवाल बा, द देसन के सिवाना अच्छी तरह से साफ-साफ निश्चित हो चुकल बा आ जमानादराज से जवन व्यवस्था चल आवता, ओहीपर कायम रहल सबसे बढ़िया होई।" 'जमानादराज' शब्द पर गौर करीं त सिवाना कायम करे खातिर अउरू कवनो बात खोजला के जरूरत नइखे।

६ठीं शताब्दी से लेके आजतक के चीनी नक्शा देखला से मालूम होई कि ए शताब्दी के शुरू होखे तकले सिंकियांग दक्खिन में कवो किउन लुन तकले भी जा बढ़ल रहे, मगर आज ऊ काश्मीर के उत्तरी सरहद में घुस आइल बा। सन् १८८० ई० में डॉ० जोसेफ चावेन, ओह घड़ीतक के पूरा पोह-पता ले के, केन्द्रीय एशिया के जवन

नक्शा लाइपजिग से प्रकाशित करवले रहले, ओहू से, एह हिस्सा के परम्परागत सरहद एकदम मिलत बा। एहू बात के बहुतेक सबूत बा जे एह इलाका में चरागाह, नमक आ शिकार के हक हिन्दुस्तानीए लोग जमानादराज से भोगत चल आवत बा। एह सभ बात से ई अच्छी तरह सा वत हो जाता जे काश्मीर आ सिंकियांग-तिब्बत के मौजूदा हिन्दुस्तानी सरहद परम्परागत सिवाना ह।

जवन स्पिति घाटी अब पंजाब के कांगड़ा जिला के कुलू तहसील के एगो इलाका हो गइल बा, ऊ पहिले एगो हिन्दू राज रहे। बाद में ऊ इलाका लद्दाख में मिला दीहल गइल रहे। मौजूदा हिन्दुस्तानी सरहद जे स्पिति-पारे जल-विभाजन तक बा ऊ बिलकुल परम्परागत बा। एकर सबूत बा १८१६ ई० में मूरक्रौफ्ट. १८२१ ई० में जेरार्ड आ १८३८ में थॉमस हटन के लेख।

साहित्यिक आ ऐतिहासिक सबूत से पता चलत बा जे सतलज-गंगा जल-विभाजन हिन्दुस्तान-तिब्बत के परम्परागत सिवाना रहे। स्कंदपुराण में लिखल बा कि गंगा के सब धारा 'केदार क्षेत्र' में पड़ल बा। सन् ६४० ई० में जे ह्यूनसांग नाम के चीनी यात्री हिन्दुस्तान आइल रहे, ओकरो वर्णन से एह बात के पुष्टि होत बा। एकरा अलावे, गढ़वाल आ कुमाऊँ के कत्यूरी राजा लोग के ताम्रलेख में भी पता चलत बा कि गढ़वाल के हिन्दू राज सतलज-गंगा जल-विभाजन तक फइलल रहे।

इतिहासकार फरिश्ता गढ़वाल के इतिहास में लिखले बा जे जमुना आ गंगा के उद्गम एही इलाका में पड़ेला। अठारहवीं शताब्दी में चीन के सम्राट राजा हिसी जवना दूठो लामा लोग के पच्छिमी तिब्बत के सर्वे करेके काम सौंपले रहे, ओह लोग के लिखल बा जे "इहाँ पहाड़ के ठीक ओहपार में गंगा नदी के उद्गम बा।" १८१५ ई० में बृटिश हुकूमत गढ़वाल पर कब्जा कइलस। ओही साल जेम्स बेल फ्रेजर गंगा के तराई के खोज-ढूँढ़ कइले रहले। उनकर लिखल बा जे "उत्तर भारत के कइ एक ठो बड़की नदी आ ऊ सभ धारा जवना से मिलके गंगा नदी बनेले, एही पहाड़ से निकलल बा आ एही इलाका से निकलल बा। १८३६ ई० में मध्य एशिया के जवन नक्शा पेरिस से जुलियस क्लेप्रोथ प्रकाशित करवले रहले, ओह नक्शा में आ जोसेफ चावेन वाला नक्शा में भी (जवना के चर्चा ऊपर भइल बा) सिवाना के डँरार एही जल-विभाजन पर देखावल गइल बा।

कालिका पुराण, महाभारत आ विष्णुपुराण से भी एह बात के प्रमाण मिलत बा जे जवन इलाका आज नेफा के नाम से मशहूर बा, ओमें पहिले हिन्दू राज रहे। ह्यूनसांग के वर्णन आ आठवीं शताब्दी के लिखाइल योगिनीपुरान से भी पता चलत बा जे कामरूप के हिन्दू राज हिमालय क्षेत्र तक फइलल रहे आ हिन्दुस्तान-तिब्बत के सिवाना एही इलाका में रहे। सत्रहवी शताब्दी में लिखाइल "पोलिटिकल ज्योग्राफी ऑफ आसाम वैली" में भी लिखल बा कि एह इलाका के जनजातीय लोग आहोम राजा के प्रजा ह। बृटिश लोग एही आहोम राजा से आसाम के राज लेले रहे आ धीरे-धीरे ओह जनजातीय इलाका पर आपन कब्जा मजबूत कइले रहे जवन आहोन राजा के समय में कमजोर पड़ गइल रहे। ई जनजातीय इलाका आ तिब्बत के सिवाना हिमालय के पहाड़ी भाग में पड़त रहे, ई बात टी० टी० कूपर (१८७३ ई०) आ मिशेल (१८८३ ई०) के किताब में आ १९वीं शताब्दी के छपल कईगो चीनी किताब आ नक्शा में पावल जात बा, जवना

में तासिंग के नक्शा (१८५३ ई०) आ चिआऊ चंग एकेडमी, कैंटन से छपल नक्शा (१९१० ई०) के चर्चा खासतौर पर कइल जा सकत बा।

पहिले के हिन्दू राजा लोग आ ओकरा बाद बृटिश अधिकारी लोग परम्परागत सिवाना तक लेके पूरा इलाका पर अच्छी तरह शासन करत रहे। अक्साई चिन आ चांग चेनमो तराई काश्मीर के लद्दाख वजारत के तंक से ताका इलाका के एगो हिस्सा रहे। काश्मीर के सरकारी लगान के कागजात में आ काश्मीर सरकार के अफसर लोग के दौरा आ मर्दुमशुमारी के रिपोर्ट में १८६२ ई० से लेके १९०८ ई० तकले तक के डेमचोक आ खुरनाक के चर्चा लद्दाख के इलाका के रूप में आइल बा। काश्मीर सरकार के कागजात में चांग चेनमो तराई आ आक्साई चिन के पार तिजारती रास्ता रहला के चर्चा मिलेला। बृटिश सरकार आ काश्मीर के महाराजा के बीच १८७० ई० में एगो सुलह भइल रहे जवना में पांगोंग झील से अक्साई चिन होखत शाहोदुला तकले एगो नया रास्ता बनावे के अधिकार बृटिश सरकार के दियाइल रहे। चांग चेनमो तराई आ पैंगोंग झील के इलाका में शिकार करे खातिर काश्मीर सरकार के ओर से लाइसेंस दियात रहे।

१८६९ में लद्दाख के गवर्नर साहेब चांग-चेनमो, लिंगतिजांग आ अक्साई चिन के इलाका में भरपूर दौरा कइले रहले। एही तरह से लेह में रहेवाला कैले १८७१ ई०) आ ने इलियस (१८७४-१८८४ ई०) नाम के बृटिश कमिश्नर लोग भी एह इलाका में अधिकांश जगह दौरा कइले रहले। १८६२ ई० में जानसन एह सरहद के इलाका के अच्छी तरह से सर्वे करेके शुरू कइले। बादो में, खोजढूढ़ करेवाला आ सर्वे करेवाला कईगो दल एह उत्तरी इलाका में भेजल गइल। इहे सभ दल एह सिवाना के वैज्ञानिक ढङ्ग पर नक्शा बनावल आ ओकर वैज्ञानिक वर्णन कइल। एकरा अलावे एह इलाका के भूगर्भ-सर्वें भी कइ बेर भइल। १८७५-१८८२ ई० में वैज्ञानिक लोग के जवन दल भूगर्भ-सर्वें कइले रहे ओकर नेता रहले डा० लिडकर! डा० लिडकर शियो नदी, स्पांगर, पच्छिमी चांग चेनमो आ लिंगजितांग के ऊपरवाला इलाका के सर्वे पू कइले। १९४१ ई० में काश्मीर सरकार जवन नोटिफिकेशन निकलले रहे ओह से त बिना कवनो सन्देह के ई बात एकदम-से साबित हो जात बा कि डेमचोक, स्पांगर, पांगों आ चांग-चेनमो के इलाका पर काश्मीरे सरकार के शासन चलत रहे।

सन अट्ठारह सौ एकावने से, स्पिति में, जल-विभाजन तक लेके पूरा इला बृटिश-भारतीय-लगानी-बन्दोबस्त में शामिल बा, आ एह इलाका के भरपूर विवरणात्म सर्वें १८५०-१८७९ ई० में भइल। सिपकी दर्रा तकले के पूरा इलाका नामगिया ना के भारतीय गांव में बराबर से मानल जात रहल बा। ओकर सर्वें १८८२ ई०, १८६ ई०, १८९७ ई०, १९१७ ई०, आ १९२० ई० में कइल बा। एह दर्रा तकले हिन्दुस्तान-तिब्बत सड़क के रच्छा भारते सरकार बराबर से करत आइल।

सतलज-गंगा के जल-विभाजन तकले गढ़वाल के सरहदी इलाका पर १८१५ ई०, १८४२ ई०, १८५६ ई०, १८६६ ई० आ १८२० ई० के लगानी-बन्दोबस्त लागू रहलबा। सरकारी सर्वें दल एह इलाका के भरपूर विवरणात्मक सर्वें भी कइले बा।

नेफा के जनजातीय इलाका में बृटिश सरकार के अफसर लोग कुछ ढीला-ढाला ढंग से शासन करत रहे। सरहद पर झंडा लगावे खातिर, जनजातीय लोग के गैरकानूनी

काम के वास्ते दंड देवे खातिर आ आमतौर से ओजिया शांति बनवले राखे खातिर ऊ लोग अक्सर ओह इलाका के दौरा करत रहे। एह इलाका के १९१२ ई० में सादिया आ बालीपाड़ा नाम के दूगो सरहदी क्षेत्र में बाँट दियाइल। सरकारी नक्शन में एह पूरा इलाका के हिन्दुस्तान के एगो अंग के रूप में देखावल गइल वा। १८८३ ई० के भारत के नक्शा में, १८८५ ई० आ १९०३ ई० में छपल सर्वे आफ इंडिया वाला नक्शा में आ १९०९ ई० में जे भारत सरकार अपना राज्यन के मेमोरंडम छपवले रहे ओमे जवन नक्शा वा तवना में एह पूरा जनजातीय एलाका के खास रंग से देखावल वा।

भारत आ चीन के जे ई परम्परागत सिवाना के डँरार वा ऊ कईगो संविधान से भी मंजूर हो चुकल वा। १८४२ ई० में काश्मीर आ तिब्बत के चीन देश से जवन संधि भइल रहे ओमें ई तय हो गईल रहें कि जमानादराज से लद्दा के जवन सरहद आ इलाका चल आवत वा ओकरा के केहू छेड़छाड़ ना करी। १८९० ई० में ऍंग्लो चाइनीज कन्वेंशन में सिक्किम-तिब्बत के सिवाना के डँरार भी निश्चित हो गइल।

मार्च १९१४ ई० में, बृटिश आ तिब्बत के अधिकारिक महादृत लोग के वीच शिमला के कान्गरेंस भइल रहे। ओकरा तिब्बत के सरकार के मंजूरी भी मिल गइल रहे। चीनी अधिकारिक महादृत के ओह नक्शा के एगो प्रति दियाइल रहे जवना में भारत-तिब्बत आ चीन-तिब्बत के मंजूर सिवाना देखावल रहे। ओपर ऊ खाली चीने-तिब्बत सिवाना के कुछ हिस्सा पर एतराज कइले रहे। १९५४ ई० में भारत आ चीन के तिब्बती हिस्सा के वीच तिजारत आ आवा-जाही खातिर जवन करार भइल रहे ओमें सतलज-गंगा जल-विभाजन के सिवाना मान के ६ गो रास्ता के भी जिक्र आ चुकल वा।

भारतीय सरहद के पक्ष में जे एतना-एतना सबूत वा ओकरा से आ एक-दू जगहा पर के छोट-मोट वात के छोड़ के तिब्बत कवहू कवनो विवाद ना उठवलस ओहू बात से, ई निश्चित रूप से साबित हो जाता कि भारतीय इलाका पर चीन जे दावा करत वा ओकर ना त कवनो सबूत बा, ना कवनो आधार।

* * *

(१४ वाँ पन्ना से आगे)

पीकिंग में सुनगवली भाठीं
चाओ चोखा
माओ माठा
तिब्बत लासा
उलटे पासा
लाल चीन
भइले दीन. ।"

लाट बावा आ उनका बटालियन का खेलन के ओर-छोर नइखे। बाकिर हमरा पास समय क बड़ा कमी रहे। गाँव–सुरइच्छा समिति के बइठक रहे, एह से अउँजा के चलि अइलीं। लाट बाबा के नवकी कहाउति बेर-बेर सुने के मन करे ला; देखीं, कब मोका मिले ला।

कहानी

बम बूँटा: पीकिंग पर खूँटा !

—विवेकी राय

आजु काल्हि लाट बाबा गाँजा पीअल छोड़ि देले बाड़नि। जहाँ एको छ
चिलमि सेराये ना पावति रहलिहऽ, ओही जे लिखि के टाँगि देले बाड़नि।

'चाऊ चिलमि चढ़ाइके,
दम्भ पलीता लाइ।
बम गोला दम-दम चले,
पीकिंग धुआँ उठाइ ॥'

अब ऊ चाओ रूपी चिलमि पीअत बाड़नि ! जहाँ साधारन चिलमि भरि के ऊ 'बम भोला, कहत रहलनिहऽ अब ओहीं जे 'बम गोला, के अइसन मारि करत बाड़नि कि पीकिंग जरि के राखी हो जाउ। इहे ना, अब जे उनुकरा कीहें चहुँपत बा ओकरा के लमें हे देखि के चिचिआये लागत बाड़नि "बम बूँटा, पीकिंग पर खूँटा।" ई बाति चारू ओर हवा नीयर फइलि गइलि बा; खाली हमरे गाँव में ना, अवार-जवार में जेनिए जाईं, इहे बाति सुनाई देतिबा। लइका, बूढ़ आ जवान समका मुँह से इहे निकलत बा कि 'बम बूँटा, पीकिंग पर खूँटा। लाट बाबा के चिलमी अखाढ़ा से चिलम-चट्टू लोग एने ओनी बगलिया गइल। कुछु अदिमी त उनहीं क चेला हो गइलनि। कातिक का पूरनमासी का बाद से जेवन आदिमी ओइजा पहिले-पहिले जात बा, देखि के दंग रहि जात बा। हरि घरी दस-पाँचि गो लइका बिटुरा के एगो ना एगो खेलि खेलत रहत बाड़नि स। बाह! ऊ खेलि का बा; आईं, हम बतावत बानीं।

काल्हि साँझि खूनी हमहूँ ओइजा पहुँचि गइलीं। खेलि शुरू रहे। हम कुछु दे से गइलीं, एह से कुल्ह खेलि त ना देखे पवलीं; बाकिर कबडडी क खेल देखलीं। खू जमलि रहे। एगो लइका पढ़ावत रहे—

"चल कबडिया नारा
की चीन ने ललकारा
हिमाले ने पुकारा......।'

इहेना, ओंइजा ले थोरी दूर हटिके लाट बाबा बइठल रहलनि आ चारू ओर के लइका माँटा का फोंफ नीयर छुपले रहलनिस। अच्छा नाटक होत रहे। एगो लइका जवना के गरदनि कुछ लमहरि रहे बकुला बनल रहे। टँगरी लचका-लचका—अजबे ढंग से चलत रहे। कुछु लइका एके संगे पूछत रहले स आ ऊ जबाब देत रहे।

"बकुला, बकुला काहाँ जाला ?'
'मानसरोवर जाऊँ रे !'
"मानसरोवर मछरी काहाँ ?'
'चीनी धइ-धइ खाऊँ रे !'

एगो भारती बकुला से पूछल जात बाटे कि तूँ काहाँ जात बाड़े? ऊ कहत बा कि हम मानसरोवर झील में जात बानीं। बाकिर मानसरोवर में त मोती होले आ मोती खाये वाला बकुला ना हंस होला। ई संका कइला पर कि मानसरोवर में त मछरी होइबे ना करेलीसऽ। बकुला बोलल कि हम साधारन मछरी ना, चीनिन के धइ-धइ खाये-चबाये जात बानीं।

एही तरे थपरी बजा-बजा के गावत इहो कहाउति लइकने का मुँह से सुनलों—

माईं-माई हँसुआदे
ऊ हँसुआ काहें के?
खरई कटावे के
ऊ खरई काहें के?
गोरू के खिआवे के
ऊ गोरू काहें के?
खेत के जोतावे के
ऊ खेत काहें के?
अन्न उपराजे के
ऊ अन्न काहें के?
जवावनन के खिआवे के
ऊ जवान काहें के?
चीन के हरावे के।

छोटी-छोटी लइकिन का मुँह से ई कविता सुनलीं त रोवाँ खड़ा हो गइल —

'चाऊ माऊ खपड़ी!
नेहरू जी बिगड़ी!
त दूनों आँखि निकड़ी!
सम्हरि हऽ ए चाऊ ·· ऊ ··ऊ ·····ऊ······!"

फेनु देखलीं कि लाट बाबा लइकन के गिनती सिखावत बाड़नि। आगा-आगा एगो लइका बोलत बा—एक, दू, तीन। पाछा ले बहुत लइका एके बेर बोलत बाड़निसऽ-भाग चला चीन। फेनु से सुनि लेईं सभे—

'एक दू तीन
भाग चला चीन।
चार-पाँच छह
नेफा में ढह।
सात आठ नौ
लात-मूका सौ
एक दहाई दस
नेहरूजी बस।'

लाट बाबा घूमि-घूमि के भाखन ना करसु आ न सोने चानी माँगत बाड़नि, बाकिर हमरा अइसन बुझात बा जे घूमि-घूमि सोना-चानी माँगे वाला लोग ले ढेर काम लाट बाबा करत बाड़नि। लाट बाबा का मदरसा में परेट क केवनों इन्तजाम नइखे,

बाकिर जब कुछु लइका ओइजा सुर में सुर मिला के गावत त्राड़निसऽत उहे रूप आँ
में नाचि जात बा ।

"ताल काटो, तरकुल काटो
काटो बन के खूझा
नेहरू जी के फउदी चले
सगरे चीनी जूझा ।
घीचि मारो, घीचि मारो
बवना के बच्चा ।"

सैनिक नव निरमान के कइसन सुर बा ? हिमाले पर चढ़िके लड़ाई में
वाला सिपाहिन खातिर रहता बनावऽ। जंगल के झाड़ झंखाड़ काटि के साफ कर
रहता के काँट-कूस साफ करऽ कि नेहरू जी क सिपाही मजे में चलि जासु।
बवनन के जहाँ पावऽ घींचि घींचि के मारऽ। ई कहाउति मन के एक दम झकझो
देत बाड़ी सनि ।

दूगो झाबर-झाबर बार वाला लइका एक जगह बइठल रहले स। ऊ
दूनो हाथ से एगो दूसरा क कान धइ लेले रहलनि स। एह खेल के नाँव ह '
मिमोरिया'। कान अँइठि-अँइठि के झूमि झूमि के का मस्ती में गावत रहले स ?

ताई ताई पुरिया
घीव में चमोरिया
ओके खा-खा लइका छउके
लद्दाख में चाउ चिल्हिके
कान धरि मिमोरिया ?"

के तरे लइका चाउ के कान अँइठि दिहले स ।

× × × × ×

सूरुज भगवान आँखि मूँदि लिहले। लइका गवें-गवें घर की ओर
दिहले स। तबो लाट बाबा आपन दल लेके मैदान में डटल रहलनि। एगो
लइका पाछा से उनका पीठि पर चढ़े के कोशिश करत रहे। ओकरा के लाट
अपना कोरा में लेके सिखावे लगलनिः—

"आसमान चान ऊगल
चीन से लड़ाई लागल ...।"

तबले एगो लइका, जेकर दाँत दूध नियर ऊजर धप-धप चमचमात रहे, आँखि
जस बड़ी-बड़ी रहली सनि, आइल आ लाट बाबा का पँजरा बइठि के कहलसि "
तनी एक बेर 'ओका बोका' वाला कहि दीं। लाट बाबा कहे शुरू कइलनि।
ले कुल्हि लइका दोहरावे लगलनि स—

"ओका-बोका
तीन तड़ोका
लौआ लाठी
चन्दन काठी

(बाकी पन्ना ११ के नीचे)

एकांकी

हमार सोना के देश

मधुकर सिंह

मरद पात्र

1. रामधन—एगो गाँव के पिन्सिन पावत फौजी सिपाही।
2. जीवधारी—पड़ोसी।
3. गनेस—रामधन के लड़िका।
4. फौजी साहेब।
5. डकमुंसी।

औरत पात्र

1. लछिमी—रामधन के मेहरारू
2. गंगा—रामधन के बेटी

प्रथम दृश्य

[रामधन के ओसरा। सुघर एगो बेटी आँगना में तुलसी-चबूतरा धइले चुपचाप ठाड़ बिआ। रामधन कुदारी धइले आकाश का ओर ताक देतारन आ लमहर साँस घींचत दुआरिये प बइठ रह ताड़न।

उनकर मेहरारू, इहे लछिमी हईं। ओखरी में अनाधुन मूसर चला रहल बाड़ी। अँजुरी भर कभी-कभी धान ओखरी से उछिल के भुइयाँ गिरत रहता। लछिमी जतने मूसर चलावताड़ी, ओतने उनकर कंठ सुरीला भइल चल जाता। उ नइखी बुझत कि कब उनकर कंठ फूटल आ उ गुनगुनावे लागताड़ी—

सूरुज छपित भइले,
चान लजइले
कि चान लजइले,
कवन साँवर हो—
रामा, सिरवा पगड़िया कइसे बान्हीं
बलमुआ मोर आँगन हो।
नाहीं हम माँगीला
अन धन सोनवा,
ना माँगी रतन ढेर हो—
रामा, माँगीला अतने उमीरिया के मोती
कि बलमु से सजल रहो आँगन हो.........

एह गीत का संगे कवनो तरीका के संगीत भा बाजा पीछिला भाग से नइखे चलत। खाली गुनगुनाहट बा, लेकिन गुनगुनाहट कवनो अइसन नइखे जे गीत के डँरोर तनिको ना बुझाय। बाकिर पीछे चल के गुनगुनाहट मद्धिम हो चलता आ कंठे भर में अँटकल रह जाता।

रामधन चउकठ से उठि के आँगना में टहरऽतारन। एक तरफ से एगो करीबन आठ-नौ साल के लइका रंगमंच प आवता, आ उ अपना काँख में लटकावल बस्ता निकास के

तुलसी-चबूतरा ठाड़ ओह लइकी का ओर बढ़ा देता। लछिमी मूसर रोक के ओह का ओर पिआसल आँखि से देख रहल बाड़ी, जइसे ममता कहीं डबडबाइल होखे।]

लछिमी—जा बाबू हमार। जा चुहानी दीदिया से खायेक कढ़वा के खालिहऽ। बेटी, बबुआ के खायेक काढ़ द। बाबू के हमरा कतना पैदल चले के रे। कोस भर आवत आ कोस भर रोज जात हमार बाबू के मुँहे सुखा (रामधन से) का रवौं? अपना किहाँ के स्कूल कवले तैयार होई? गाँव भर लइकन फइकन के दुख दलिदर कवले दूर करबि?

रामधन—जलदिये, गनेस के माई। जा गंगा बेटी, बबुआ के हाल दे खायेक काढ़ द।

गंगा—चल बबुआ। (इ कहके उ भीतर चलि जात बिआ।)

गनेस—बाबू, आज स्कूल में मास्टर साहेब लड़ाई के हाल-चाल सुनावत रहन। उ अखबार लइकन के समझावेलन बाबू।

लछिमी—बबुआ, एकाधगो हमनिओ के सुनावऽना?

गनेस—मास्टर साहब कहत रहन नूं माई कि राइफलमैन बची सिंह नेफा में बड़ देखवले बाड़न।

लछिमी—इ बची सिंह के रहन बबुआ?

गनेस—माई, इ कुल लोहित डीविजन के बात ह?

रामधन—त का भइल आगे गनेस बेटा?

गनेस—जान जइह बाबू, जे मैकमोहन रेखा के भीरिये राइफलमैन बची सिंह के क्रिबीतू चौकी पर तैनात रहल हा। रात के वेरा रहल हा। अचके में बजे खानी चीनिया हमला कर देलन स। चीनी सब रहन स ढेर। राइ बची सिंह के एगो सनेस लेके दोसरा चौकी प जायके रहे। एही बीचे जनिहऽ जे आपन फउज के लोगन का उ चौकी खाली कर देवे के पड़ गइल। बेचारे सिंह के त इ तनिको मालूम ना रहे जे उनकर साथी लोग उ चौकी छोड़ गइल बा।

लछिमी—हाय दइब? आछा तब का भइल?

गनेस—फेर अन्हरिया में तीन गो चीनिया सिपाही अकेले बच्चू सिंह के देखलन स। डर-भय के चल आवत रहन अकड़त।

रामधन—बाह रे बीर बाह। धन बाड़न बची सिंह।

गनेस—अभी अवरी सुनऽ ना। अचके में चीनिया 'हिन्दी-चीनी भाई-भाई' कहत बची सिंह प टुटिए न पड़लन स।

लछिमी—छिः छिः। मुदई लोग असहीं नू चालबाजी करऽता। इ का दुसमनऊँ लोग मानी, हँसुआ से आँखि निकाल लीहित।

गनेस—अब जनिहे जे माई, बेचारू बची सिंह करबे करसु त का करसु! तीन गो आ उ अकेले। गिरफ्तार क लेलन स।

लछिमी—हाय मइया! पकड़िये लेलन स नू आखिर?

गनेस—पकड़ला से का भइल माई। बची सिंह एके झटका में तीनों के नू घुलटनिया देलन आ भाग गइलन।

लछिमी—वाह रे बची सिंह। मतारी के कोंख जुड़ा देलऽ ए बचऊ!

गनेस—बाकिर एगो दुसमन ठीक से निसान बइठा देलस आ अइसन गोलो चलवलस कि उ गोली आके बची सिंह के बाँह में लागल। तबो बची सिंह हबकुरिये घुसकुरिया काटत आखिर दाव में अपना भी काम प चहुँपिए गइलन।

लछिमी—धन हउ ए धरती माता। आ धन बा तोहार माटी।

रामधन—हँ, गनेस के माई। हमार सीमा के एक-एक सिपाही बची सिंह हवन। एक सिपाही के बून से एक सौ एक बची सिंह पैदा होइहन।

लछिमी—केकर मतारी साँढ़ बिआइल बिआ जी, जे हमनी तरफ आँख उठा के ताकी? हमनी के बेटा-भतार जी के का करिहन? छिः छिः, तब त आपन जिअला के धिरकारे बानू जी?

(दुआरी से डकमुंसी के बोली सुनाता।)

डकमुंसी—के बा जी? रामधन जी घर में बानीं जी?

रामधन—केहऽ जी?

डकमुंसी—रावाँ नावें एगो चिठी ह। मुंसी दुआरी प चाल करत बाड़न।

(गनेस उठके डकमुंसी से चिठी माँग ले आवत बा।)

रामधन—(चिठ्ठी हाथ में लेके) आरे! गनेस के माई। इ त तोहारा भाई के चिठी बुझाता।

लछिमी—बबुआ के चिठी ह। आ जी, उ त बंगलोर रहल हा नूं? गाँवे छुटी-उटी प का चहुँप गइल?

रामधन—ना, गनेस के माई। इ त लड़ाई प से बुझाता। ल बाँचतानी। सुनऽ।

लछिमी—तनी हाल दे बाँची रवों। लड़ाई प हमनी के बाबू लोग कइसे लड़ता। मुदई के पानी पिआ-पिआ के मारत बा लोग की ना?

रामधन—सुनऽ ना? उं हुं! आगे दीदिया के मालूम कि इ लड़ाई बहुत दिन तक चली। आज तकले कवनो मुदई अतहत बड़ हमला हमनी के धरती प ना कइले रहे। बड़ छल-कपट से इ दुसमन पेस आवतारन स। का कहीं दीदी, घरे से बाबू के चीठी आइल रहे। हमार फौजी साथी लोग जब बाबू के चीठी में इ बात पढ़लन कि समूचा देस के निवासी लोग उनका खातिर उनका बाल-बच्चन खातिर खेत में, करखाना में जीव तोड़ मेहनत करत बाड़न, त उनका लोगिन के छाती गज भर ऊँच हो गइल। हमनी खातिर त चिठी में तोहरा लोगिन के नेह-छोह सीमा-रछक के नाँव सनेसे बुझत बानीं जा। तवांग-तेजपुर सड़क से चीनी अब दखिन-पूरब का ओर बढ़े के कोरसीस में बाड़न स। जांग में दुसमन से जुम के मुठभेड़ भइल रहे। खूब मारल गइलन स। तोहरा असीरबाद से हमनी के मोरचा प खूब डट के लड़ली जा। दीदी, बाँह में तनी गोली लाग गइल रहे। असपताल में अब अच्छा बानीं। अच्छा हो जाइब, त फेनु मोरचा प जाइब। अगिला साल हम राखी बन्हवावे जरूर आइबि। आ तोहरा के सौगात में अपना देस के जीत देबि।

लछिमी—अगर अपना देस के जीत बाबू हमार ले के आवत बाड़न, त उनका के हम अपना खून से टीका लगाइबि।

गनेस—बाबू ! जीतब जा त हमनिए के नूं ?

रामधन—हँ, बेटा। हमनी का चाहे जिअब जा भा मरब, बाकिर आपन सीमा के
करब जा। तोहार मामा फेनु मोरचा प जइहें।

गनेस—मामा आपन देस के लाज जरूर रखिहन, बाबू !

गंगा—(छीपा में खायेक लेले आवत बिआ।) लऽबबुआ ! एहीजा खा लऽ।

गनेस—रख दऽ।

(गनेस उठ के घिड़सिड़ का लगे जाता आ हाथ-मुह धोवता)

रामधन—हम तनीं भूखन दादा के दलान प जा तानीं। लोग जुटल होई।
सभे कोई के बनुक नूं सिखावल जाई ! ओकरे बटोर बा। तूहूँ खा के
बटोर के बुध-बिचार तूहूँ सुनि हऽ।

गनेस—(छीपा प बइठत) आछा, बाबू।

(रामधन बहरी निकल जाताड़न, लछिमी उठ के फेनु मूसर चलावे लागताड़ी

गंगा—का सोचतबाड़ऽ ? खा ना जल्दी-जल्दी।

गनेस—दीदी।

गंगा—का गनेस ?

गनेस—का साँचो हम फउज में भरती ना हो सकीं ?

गंगा—हो काहे ना सकेलऽ। बाकिर तोहार उमीर बहुत छोट बा।

गनेस—केतुना हमार उमिर होई, दीदी ?

गंगा—इहे दस-इगारह बरिस के आस-पास।

गनेस—दस-इगारह साल के केहू सिपाही ना हो सके ?

गंगा—ना।

गनेस—त चाचा नेहरू काहे कहेलन कि हमरा देस के हर आदमी सिपाही हऽ ?

गंगा—अइसने बात सुन-सुन के हमनी के सिपाही लोगिन के होसला बढ़ी गनेस।

गनेस—आज त गाँवे-गाँवे, खेते-खेते, आरी प, डंरारी प, जेने ताकऽ, ओनहीं
फिरात बा—'अधिक अन उपजावऽ दुसमन मार भगावऽ।' आज स्कूल
लड़का मिल के गावत रहीं जा।

गंगा—कइसे गनेस। तनीं हमनिओं के सुनी जां। काहें माई ?

लछिमी—(मुसरे चलावत-चलावत लरिकन के देख के मुसकात बाड़ी।) हँ बबुआ।
हमनिओ के सुनावऽ।

गनेस—सुनऽ लोगिन—

भाई होऽऽ.....
भाई होऽऽऽ ····
पापी बाटे रोपले जे जुलुमी कदमिया हो
डोलतारे धरती हमार।
अछत-चननिआ से दीहे रे बिदाई माई
तोरा रे सीवाने पर जुझार।
सुन-सुन गंगा मोरा बहिनी सुभगियारे
तोर भइया रनवा का ओर।

रकत के टीकावा से मथवा सजाई दऽना
पाछे-पाछे अइहऽ ओहो ओर ।

[लछिमी मूसर चलावत जात बाड़ी आ लरिकन के दुलार में भुलाइल जातबाड़ी। गीत गते-गते कम भइल जाता। आ बाजा के बड़ महीन सुर के साथ खतम हो जात।]

(परदा गिरता।)

दूसरा दृश्य

(उहे रामधन के अँगना। गंगा बइठल सूटर बीनतिआ। हहास बन्हले हावा उठत बा। अन्हड़-पानी के सुबहा बुझाता।

(गंगा घबड़ाइल लेखा असमान ताकतिआ। घुपा-घुप अन्हार छवले जाता।)

गंगा—(जोर से माई रे, पानी आवे के रंग बुझात बा। बहरी कुछ होखे त बटोर लीहे।

लछिमी—(चुहानी से. तनी हाथ-गोड़ तूहें चला लऽबाछो। हमार हाथ बाझल बड़ए।

गनेस—आछा माई। ते काम कर। हमनीके चीज सब सरिआ देतानी जा।

गंगा आ गनेस मिल के समान उठावत बाड़न। हवा के सनसनाहट में कवनों क़िसीम के कम-बेस नइखे बुझात। झोंका में दूनो लइका काँपे लागत बाड़न-स।

गंगा—बाप रे बाप! (दाँत किटकिटावत) बड़ जाड़ लागत बा रे मइयो।

गनेस—दीदी! बूनी तनी पड़ जाई त आछा रहल हा नू?

गंगा—हुँ, बबुआ। रब्बी फसिल खातिर त अछे रहल हा। बाकिर असमान प भरोसा रखल त हमनी सब के बेकूफी बा। अब उ जवाना नइखे। अब तो हमनी के ताकद प भरोसा बा।

गनेस—हँ, दीदी। ई कुल सब साइंस के फल ह। जब चाहीं, बोरिंग से खेत पटालीं।

जीवधारी—(बहरी से) रामफल भाई बाड़ऽ हो?

गनेस—के ह? जीवधारी चाचा का? सोझे चल आवऽ चाचा।

जीवधारी—रामफल भाई केने बाड़न हो, बबुआ। अरे! इ गंगिया बेटी का करत बिआ?

गंगा—सुटर बीनऽतानी, चाचा। मोरचा प तेआर अपना कवनो भाई खातिर सुटर बिनऽतानी।

जीवधारी—तनी हाली-हाली हाथ चलाव बेटी। बखत आ गइल बा। खब मेहनत करे के। दोगिना हिसाब रख के काम करे के बा। खेत में, खरिहानी में, सगरो जीव-जान से मेहनत खोजता। तबे न सिपाही दुसमन का संगे मजबूती से मोकबिला करी!

गनेस—चाचा। सभे कोई त अपना बहादुर सिपाही लोगिन खातिर कुछ-ना-कुछ करते बा। दीदी सुटर बिनते बाड़ी। हम उनका लोग के कवन चीज दीं, चाचा? का हमहूँ लड़ाई प ना जासकीं?

जीवधारी—तू का कवनो सिपाही से कम बाड़ऽ बेटा?

गनेस—इ कइसे चाचा?

जीवधारी—मोका त ठेके दऽ। तू जरूर फउजी सिपाही बनबऽ। हँ। आज बबुआ के चीठी लड़ाई प से आइल रहे।

गनेस—साँचो, चाचा। शंकर भइया के चीठी आइल रहे ? उ का-का लिखले बाड़े चाचा ?

जीवधारी—उ बाड़ा मजे में अपना देस के रछेआ करताड़न, बबुआ।

गनेस—हँ, चाचा। आपन गनेसो भइया बच्ची सिंह हवन।

जीवधारी—आज आपन गाँव के बच्चा-बच्चा बच्ची सिंह हऽ, बेटा। तू का कवनो सिंह से कम बाड़ऽ ?

गंगा—चाचा, एह साल त सोहराई हमनीका ना मनवलीं। बाकिर अगिला साल देस प हमला करेवालन चीनी दुसमनन के खून से फगुआ मनाइबि जा। काहें गनेस

गनेस—हुँ, दीदी। तू साँचे कहताड़ू।

(हवा में सनसनाहट। पछेआ रहि-रहि के झँकझोर देत बा।)

रामधन—(बहरी से अवते) आरे, जीवधारी भाई, तू काहाँ से ? एगो खुसी के बात जीवधारी भाई। हमरा लड़ाई प जाये वाला बात के मंजूरी हो गइल। हम मोरचा प जाइब। मलेटरी से हमार बोलहटा आ गइल।

लछिमी—(चुहानी से अंगना में आके) सांचो जी ! आ की झूठो कहतानी ?

रामधन—हम ठीके कहतानी, गनेस के माई ! हई देखऽ कागज। रहता में तार मिलल।

लछिमी—असीरवाद द हे मइया ! हे छठी परमेसरी ! जीत के आवसु। हम जोड़ा चढ़ाइब। गंगा ! रे बेटी गेटी गंगा ! तोरा बाबू के इ बड़ साध रहे जे लगा के उनका के लड़ाई प भेजतीं। हम अबहियें तिलक लगाइब। इ सीमा जइहें, देस के रच्छक होके जइहें, पहरुआ होंके जइहें। आजु ना तिलक लगाइब कहिया लगाइब। जाईं रवों ! हम बराबर अपना लहू के सिआही के लिख-लिख पठावल करब।

रामधन—हमरा के असीरवाद द भइया, जे हिआव हरमेस दुगुना रहे।

जीवधारी—गाँव भर के असीरवाद लेके तू जइबऽ, रामधन भाई। कवना के माई बिआइल बिआ, जे तोहरा से भिड़ी। तू अकेले नइखऽ। तोहरा संगे समूचा आपन गाँव भी बा।

(हलुक-हलुक सिंघा बाजा आ संगीत के बाद परदा गिरता।)

तीसरा दृश्य

(रामधन के उहे मकान, ओसरा और तुलसी चबूतरावाला अंगना। लछिमी सूप चाउर फटकत बाड़ी। गंगा आ गनेस अंगना में असहीं बइठल बाड़न स।)

गनेस—आज स्कूल में मास्टर साहेब कहत रहन नू माई, कि दुसमनन के इरादा बुरा बा। बमडीला में उ दगाबाजी कइलन हा स। पुल काट देलन हा आ जानऽ ताड़े माई, लड़ाई में गरीब मजूर आदमिन के पकड़-पकड़ के ठाढ़ कर देत बाड़न सऽ।

लछिमी—छिः छिः ! इ कइसन हेवान हवन स हे दइब। ओकनी के मेहरारू, बच्चा सब कइसे सहत होइहें। बेचारी चीनी मेहरारू लोग इ सुनत कि उनकर मरद लोग दोसरा के जमीन दखल करे खातिर मार कइलेबा, सरम से गड़ जात होइहें।

गनेस—मास्टर साहब कहत रहन कि चीनिहन के शुरू से इहे चाल रहल वा। इतिहासो इहे वात कह रहल वा।

लछिमी—बेचारी चीनो मउगिओ का करसऽ। मुअना ओकनिओ के मारे लागत होइहें स। बाकिर अब पाला हमनी से पड़ल वा। मुदई लोग के अब माजा बुझाई, जब हमनी के सवाँगन के पाले पड़त होइहें।

(अचके में लछिमी उदास हो जा ताड़ी)

गनेस—काहें माई ! का वात भइल? तें अचके उदास काहे हो गइले ?

लछिमी—कुछुओ ना बेटा। असहीं, तनी सोचे लगली हाँ कि तोहरा लोगिन के बाबू के गइला आज कइक रोज हो गइल। अभी ले एको चिठी-पतरी उहाँ के ना आइल। लड़ाई प चहुपलन, त कब चहुपलन। उनकर मोकविला कइसन रहत वा ?

गनेस—माई, हमार मन कहतानूं कि बाबू अभी दुश्मन का संगे वाझल होइहें आ दनादन ओकनी के जमपुरी पहुचावत होइहें।

लछिमी—(मुसुका) के तोरा मुँह में घीव-सकर रे बेटा।

जीवधारी (वहरिये से आवाज लगावत बाड़न) गनेस वबुआ वाड़ होऽ ?

गनेस के हऽ चाचा ? भीतरे चल आवऽ चाचा। का वात हऽ।

लछिमी—का बात हऽ रवों। एह पछेआ वेयार में काहाँ से आवतानीं ? कोई से खबर करवा देतीं, कवनो काम होखित त लगले वबुआ के भेज देतीं।

जीवधारी--गनेस के मतारी। इ साहेब सहर के फौजी दफ्तरी से आइल वाड़न। आ रामधन भाई के कवनों सनेस ले आइल बाड़न।

लछिमी—का उ गनेस वाबू के सनेस ले आइल बाड़न ? केने वाड़न साहेब। उ जरूर हमरो के बोलवले होइहें।

गनेस--हमरो के नू माई !

लछिमी—हँ ए वाबू हमार। केने वानी साहेब रवों ?

फौजी साहेब—(अँगना में आवते) हम हेइजा वानी देवी। हमरा के साहब मत कहऽ। हम त तोहार भइया हईं।

लछिमी…भइया ! आछा ए भइया। इ त कहऽ जे हमनी का जीतत वानी जा नूं ?

फौजी साहेब…हँ, वहिनी। आपन जवानन के वीरताई भुलावल ना जा सके। कहत-सुनत आँखि के लोर वान्ह तूर देता। अइसन एगो खिस्सा तोहरा के सुनावे खातिर आइल वानी। कुछे दिन भइल। तवांग का भिरी एगो आपन चौकी के दुसमन सब घेर लेलन स। हमनी का थोड़िका सा रहीं जा। उ लगलनस गोली के बरखा करे। एगो रिटायर्ड हवलदार रहे 'उ जवान खूब वीरताई देखवलस। वहिनी, ऊ जवान अपना पीठी प लाद के दूगो घवाहिल सिपाही के जंगले-जंगले चलल आवत रहे। एही बीचे चीनी सिपाही देख लेलन स। लुका के गोली चला देलन स।

लछिमी—(अचरज में) गोली चला देलन स ! ठीके बबुआ कहत रहे जे मुदइया बड़ दगबाज बाड़न स।

फौजी साहेब—उ गोली ठीक वहादुर हवलदार के सीना में लागल । आ उ ओहिजे गि पड़लन । फजिरे उठाके आपन सिपाही लोग लास मोंकाम प ले आइल । का कहीं बहिन, सभे कोई देखलस । उ वहादुर जवान का चेहरा प अवहिओं ले किरिनिओं से टहकार मुसुकान खेलत रहे ।

लछिमी—उ बहादुर हवलदार कवन जाना रहन भइया । उनकर नाँव का रहे ?

फौजी साहेब—उनकरे नाँव वहादुर हवलदार रामधन सिंह रहे, वहिन । (फौजी साहेब के आँखि में लोर भर जाता । उ हाथ से पोंछतारे ।)

लछिमी— कुछ देर चुप रहला के बाद) अभी तनिके तकलीफ से घबड़ा गइलऽ, भइया। अभी त उ हवलदार के बेटा तोहरा सामने ठाढ़ वा । एकरो के संगे लिअवले जा। आ हई लऽहमार मंगटीका । (उतार के दे देत बाड़ी ।) एकरा के बेंचि के गोली खरीदिहऽ । आ हमार सवाँग के वदला जरूर लीहऽ । इ गोली से जतना दुसम मार सकऽ, मरिहऽ । बाकिर आपन देस के झूके मत दीहऽ ।

गंगा—(भीतर से सुटर ले आ के) हई सुटर ले ले जा । कवनो भइया के दे दीहऽ । आ कह दीहऽ कि एह में तोहार वहिनी के नेह वा ।

गनेस—(आँखि में लोर भर के) हमार गीत सुनऽ साहेब । हमरो के अपना संगे लिअवले चलऽ (गावता ।)

पापी बाटे रोपले जे
जुलुमी कदमिया हो
डोल तारे धरती हमार ।
अछत चननिया से
दीहेगे बिदाई माई
तोरा रे सीवाने प जुझार ।
सुनु-सुनु गंगा मोरा वहिनी सुभगिया रे
तोर भइया रनवा का ओर ।
रकत के टीकवा से
मथवा सजाई दऽना,
पाछे-पाछे अइहऽओही ओर ।
(सभकर आँखि डबडबा उठल वा ।)
(धीरे-धीरे संगीत मद्धिम पड़ता)

(परदा गिरता)

कविता-कुंज

रन के साज सजाइ गइल रे

आजु देस ललकारे लागल, रन के साज सजाइ गइल रे
जागल गाँव, नगर अब जागल
घर-घर, गली-डगर अब जागल
जिनिगी मुसुकाये लागल रे
उमड़ल जोश, लहर अब जागल
दुसमन से लोहा लेवे के, प्रान प्रान अकुलाइ गइल रे
ज्वान ज्वान छरिआइ गइल रे
रन के साज सजाइ गइल रे

जगलें बंगाली, गुजराती
राजस्थानी बीर मराठी
असम, उड़ीसा जाग गइल रे
जाग उठल कश्मीरी घाटी
मध्य देश, उत्तर प्रदेस, केरल में हलचल छाइ गइल रे
पंजाबी अगुआइ गइल रे
रन के साज सजाइ गइल रे

जगल विहार कुवर सिंह के गढ़
नागालैण्ड चलल आगे बढ़
कण्ठ कण्ठ के धुनि गूँजल रे
चढ़ चलु रे, सिवान पर चलु चढ़
साहस, शक्ति अपार देस के कन कन में बिटुराइ गइल रे
बून बून लहराइ गइल रे
रन के साज सजाइ गइल रे

जुगन जुगन के हम बलिदानी
जग जाहिर हमार कुरुबानी
सीमा पर बलि हो जाये के
होड़ लगावे लगल जवानी
चउवालिस करोड़ मुंडन के माला एक गुहाय गइल रे
एके सूत बन्हाइ गइल रे
रन के साज सजाइ गइल रे

छोड़ब ना अपना जमीन के
भीख न माँगब, लेब छीन के
भूमि सुई की नोक बरोबर
हम ना कबहों देब चीन के
मट्ठो फूँकि फूँकि के पीयब, तातल दूध जराइ गइल रे
हमरा के छनकाइ गइल रे
रन के साज सजाइ गइल रे

रिस से भरल दहाड़े लागल
उठल पोंछ के झाड़े लागल
चितवै चारू ओर चिहाइल
ले कुलाँच चिंघाड़े लागल
चढ़ल काल बैरी के सिर पर, सूतल सिंघ जगाइ गइल रे
काँच नींद खुनसाइ गइल रे
रन के साज सजाइ गइल रे

आजु शान्ति से क्रान्ति उठल रे
चन्दन से अंगार झरल रे
बहल पवन उनचास लंक के
साँस साँस सुनगे लागल रे
भट्ठी ओद, आग परला पर, गरमाइल धुँधुआइ गइल रे
आँच लहकि छितराइ गइल रे
रन के साज सजाइ गइल रे

तू पीछे को ओर पलट जा
हमरी धरती छोड़ लवट जा
पीछे बात करब सुलहा के
पहिले तू सिवान से हट जा
डेग बढ़ाइ चलल सीमा पर, अब बिराट रिसियाइ गइल रे
बलि देखत घबराइ गइल रे
रन के साज सजाइ गइल रे

प्रभुनाथ मिश्र

बिहँसि खून से लिखबि कहानी
हम अपना कुर्बानी के

आगि लगावत कौन पातकी खउलत गंगा के पानी।
आजु हिमालय धधकत बाटे खउलत बा सोना चानी।।
कबले आपन कोप सँभारी हिन्द देश बलिदानी के।
बिहँसि खून से लिखबि कहानी हम अपना कुर्बानी के।।

जेकरा के हम नेह पिअवलीं ऊ दामन के साँप भइल।
जेकरा के हम पुन्य समझलीं घोर घोर ऊ पाप भइल।।
हम जनलीं रसधार, भइल अंगार हिमालय धानी के।
बिहँसि खून से लिखबि कहानी हम अपना कुर्बानी के।।

जागल बा चंगेज आजु दुनियाँ में कहर मचावत बा।
पंचशील के सहऽस्तित्व के धइके नाच नचावत बा।।
बढ़ऽ नाँव ले रणचण्डी के माथ झुकाइ भवानी के।
बिहंसि खून से लिखबि कहानी हम अपना कुर्बांनी के।।

कवनों गम ना खून-खून हो जाइ समुन्दर के पानी।
कवनो गम ना धरती डोले त्राहि-त्राहि बोले बानी।।
रंग बदलि दऽ वीर आज तू अपना वीर कहानी के।
बिहँसि खून से लिखबि कहानी हम अपना कुर्बांनी के।।

सिंहनाद तू करऽ फानि के चढ़ि एवरेस्ट अटारी से।
करऽ शान्ति के रखवारी अपना तरुआर-कटारी से।।
आँखि फारि के देखो दुनियाँ कौशल हिन्दुस्तानी के।
बिहँसि खून से लिखबि कहानी हम अपना कुर्बानी के।।

जगदीश ओझा 'सुन्दर'

आइल दिन बलिदान के !

हँसि-हसि अन-धन-प्रान लुटादऽ, आइल दिन बलिदान के !

जे तहरा के पालल-पोसल उहे पुकारति आज रे
बढ़िजा बान्हि करेजा भइया, रथ आपन अब साज रे
देखिहऽ भइया, झुके न पावे झण्डा मान-सम्मान के !
हँसि-हँसि अन-धन-प्रान लुटा दऽ, आइल दिन बलिदान के !

सुरुवाँ उहे कहाला जे ना रन में पाछे भागे
आँधी-पानी, काँट-कूस में बढ़ते जाला आगे
मोह करे ना सुरुवाँ कबहूँ अपना तन के, प्रान के
हँसि-हँसि अन-धन-प्रान लुटादऽ आइल दिन बलिदान के !

लगे न पावे भारत माता की इज्जत में आँच रे
इतिहास गढ़ऽ अइसन आपन कि दुनिया तरसे बाँच रे
हुंकार भरऽ, ढहिजा छन में, पर्वत बलके, अभिमान के !
हँसि-हँसि अन-धन-प्रान लुटादऽ, आइल दिन बलिदान के !

रामवृक्ष राय 'विधुर'

जागऽ जागऽ भइया मोर

देवता के अतमा हिमालय पर उतरल बा,
राछ्स, बेहाया, चोर ! हो भइया
जागऽ जागऽ भइया मोर !
मुखवा में राम बगलवा छूरी
धोखा के टट्टू ह पापी,
सुतला में टीपेला घाँटी, आ भोकलेबा
पीठी में छूरा इ काफी,
दुलिया वा बहे पहिलहीं से नाक काटल,
जग में दीहल डोंगा बोर ! हो भइया,
नन्हीं नन्हीं आँखि एकर, छोट-गोट गोड़ ह
पाजी ह पक्का हरामी,
सदई से बनल भवद्दी-मिताई प
लात मार, फेर ले बा पानी।
दुनिया के आस भरल, आँखि टँगल तोहरे प
तूही काहे बनबऽ थोर। हो भइया

चाऊ आ माऊ के माटी मिला के
तिब्बत प झँडा उड़ा दऽ,
भारत के मानसरोवर में, भइया हो,…
चीनी के धऽ-धऽ डुबा दऽ।
कहतो खा आवे रोआई कि कैदी बां
जुग के पहरुआ तोर। हो भइया..
हिमगिरि के बाटे चुनौती कि जागऽ ना
भारत के लाल गरम खून,
बालक अभिमन्यु आ बुढ़ऊ कुँवर के
लाज राखि, लूटऽ ना पून।
तोहरो जवानी अकारथ, हो भइया,
माता के आँखि में लोर। हो भइया..
सरहद के लछुमन-रेखा के लाँघि के
सीता के धइले बा अँगुरी,
राम-राम सोचेलऽ का भइया लछुमन
रगरि भारी कर कगरी।
जय जय बजरंगी तोहार बूत कँहवाँ बा
पूरहर देखाव ना जोर। हो भइया
शंकर के इज्जत प लागल बा धापा
जागऽ ना शंकर-पुजारी,
हमनी में राम-रावण जे-जे जहाँ बा
दुआरी जा एके जे-जे जहाँ बा
भस्मासुर चाऊ के पढ़ती पढ़ा दऽ ना
कसि के कमरिया जोर। हो भइया…
चंडी के लागल तरासी बा, भइया हो
चीनी के शर्बत पिया दऽ,
खाली बा खप्पर अफीमची के हाड़-गोंड़
तूरि-तारि चट्टक बना दऽ।
भोंकि-भोंकि, लोकि-लोकि, काटि छपटि धऽ दऽ ना
मिले ना थेघ ओर-छोर। हो भइया…
राजघाट सूतल महतमा चिहाइल,
चूअल शहीदन के लाली,
पुरुखा के अतमा दुखइबऽ का, भइया हो
बइठल बरइब का खाली,
कथनी के छोड़ऽ ना करनी देखावऽ
होखे अन्हरिया में भोर। हो भइया…

माता के दूध के नीखि आजु दे द
बाजल बा सूली के डंका,
गंगा के सेनुर प आइल बा आफति
आगे बढ़ऽ वीर-बंका,
कुँवर के बँहिया पुकारे, हो भइया
उत्तर से आवे हिलोर। हो भइया..
अगिन-परिछा बा चालिस कड़ोर के
आगे बढ़े से सपूत,
जौहर देखावे के इहे समइया बा
घसके से संकर कपूत,
माता के इज्जत पुकारे, हो भइया
फेरऽ नजरिया के कोर। हो भइया..

सर्वदेव तिवारी 'राकेश'

गीत

गाईं हम गीत का ?
आपन बिराना बा,
दुसमन जमाना बा,
झूठ-मूठ ऊपर के जानी हम प्रीत का।
गाईं हम गीत का ॥
चाँदी के माया में
सोना के छाया में
हरिना के धोखा के जाल भरल जीत का।
गाईं हम गीत का ॥
आदिमी के आह पर,
प्रान के उछाह पर
दउरल ना सुनि के जे हित अउरी मीत का।
गाईं हम गीत का ॥
कलयुग कहात बा,
मनवाँ घिनात बा,
दौलत के दुनिया में सतरंगी रीत का।
गाईं हम गीत का ॥
जिनगी के तीन दिन,
मस्ती के छान-बीन,
आई बरसात रही बालू के भीत का।
गाईं हम गीत का ॥

रमेश चन्द्र तिवारी 'रमेश'

गुरु भारत के मत जरी लाग !

रे! रे!! तिलचट्टा चीन काग।
हमरा सरहद से भाग भाग॥
रे बुद्धिहीन ई का कइले,
ते भारत के बैरी भइले?
बड़ बुरा भइल तोरा हक में,
अब तिनो लोक से तें गइले।
सभ हमन हिन्द के सिंह आजु,
दन से उठलींजा अरे जाग।
"नेफा-लदाख" कब रहल तोर,
आपन दिहले ईमान बोर,
ठन गइल हमन के बा मन में,
तोरा से होई युद्ध घोर,
रे मूढ़ खैरियत अगर चाहु,
त, छमा हमन से अभी माँग।
अपना के कहले साम्यवाद,
कायम कइले साम्राज्यवाद,
अच्छा "हिटलर" के बनि गइले,
सोरहो आना गोतिया-दयाद,
ई बात कबो का मुमकिन बा,
लोभी कर दी धन के तियाग।
राना प्रताप अभिमानी के,
आ, झाँसीवाली रानी के
सुनले जरूर तेहू होइबे,
ओ वीर-शिवाजी शानी के,
ई शूर-वीर-फुलवा के हऽ।
भारत हमार बेजोड़ बाग॥
बनु नदी भयंकर मत कोसी,
बनिजो अब से भी संतोषी,
जे, टेढ़-मेढ़ चलबे करबे,
त, तोरे के दुनिया कोसी,
से अउर दाग मिट भी जाला,
ना मिटे अजस के कबो दाग।
सत्य, अहिंसा, शान्ति, ज्ञान,
शुचि-त्याग, वीरता, स्वाभिमान,
ए सभ सुन्दर गुण के भारत,
सुरुमे से हऽ भारी खदान,
झटपट, हट, अक्किल के पटपट,
गुरु-भारत के मत जरी लाग।

विश्वनाथ प्रसाद "शैदा"

बुझउनी

रन में तू जइहे रतन, नयन-ललनवाँ रे।
अइसन काम करिहे जइसन कुल के चलनवाँ रे ॥

नौ मास पूजा कइनीं
ध्यान नाहिं दूजा कइनीं
खुस भइली धरती मइया, बिहँसल गगनवाँ रे

तोरे देसे राम भइले
देवतन के काम कइले
कान्ह मरले कंस, राम हतले रावनवाँ रे

कौन कौन हाल कहीं
पुरुखन के चाल कहीं
जाके पूछऽ, माटी कही रो रो राजथनवाँ रे

बाबा तोर रहले अर्जुन
दुश्मन के मरले चुन चुन
उनका डरे काँपल पिरथी, डोलल आसमनवाँ रे

दादा जी शिवा जी रहनी
केहू के न ताव सहनी
कइले बाटे उनकर बरनन-कविता भूषनवाँ रे

बाप तोर भइले गांधी
अजब ले अइले आंधी
नेता जी सुभाष अइसन केकर बलिदनवाँ रे

कौन कौन बात कहीं
कहत दिन रात रहीं
मरदन के मान मरदल इहाँ के जननवाँ रे

तोने के सबूत बाड़े
मोर एक पूत बाड़े
यमदूत बनि के लड़िहें, राखी भगवनवाँ रे

भारत आजाद रही
नाम तोर याद रही
सफल होई हमर कोख, धनि धनि जियनवाँ रे

—रामदेव द्विवेदी 'अलमस्त'

पुकार

अब भयल हिमालय के पुकार।
आ जगल जवाहर पहरदार।।

कोटिन-कोटिन नाहर जगलन,
आ कोटि-कोटि भुजदंड फड़कलन।
कोटि-कोटि साँसन से निकलल
ई नेफा लद्दाख हमार।।

केहू देला सोना चानी,
केहू रकते दे मनमानी।
केहू चीनी फाँके खातिर
अकुताइल बा करत हुंकार।।

जागल अब शंकर अभिमानी
तीसर अँखिया लपकत बाड़ी।
गंगा के पानी उफनत बा
वहि चललि बाय अब उलटि धार।।

अब सागर मन अगरायल बा,
चाओ माओ घवड़ायल बा।
सुतला में जे कइलस धावा,
पव फटल, गिरल ओपर पहार।।

जिनगी ऊहे त कहलाला,
जब मुइए के जीयल जाला।
तू अजर-अमर गूँजल बानी,
भइल बा पुरुखन के पुकार।।

माता माँगेले रकत दान,
माता माँगे जीयत परान।
पूत दूध के रखऽ लाज,
सब देबे के हो जा तयार।।

अब भयल हिमालय के पुकार।
आ जगल जवाहर पहरदार।।

लक्ष्मी शंकर त्रिवेदी

नालन्दा के आँसू जमके नून हो गइल

खबरदार ! हमरे धरती पर भारी कतल मचल बा,
आज बहत गंगा के पानी खून हो गइल !

एकबार परीछा माँगे
धरती स्वाभिमानी से,
घास पात के रोटी खाला
झेलम के पानी से,

भूख पियास भुला के सीमा पर बा लड़त सिपहिया
खइले पिअले ओकरा केतना जून हो गइल।

ऊ रोवे, तलवार तोप में जेकरे
मुरचा लागल होखे।
ऊ रोवे, जेकर कुल रण से
मूँह छिपा के भागल होखे,

ये धरती पर हरदम गीत मौत के गावल जाला
शेर तबर के आगे दुश्मन घून हो गइल।

खुश बाड़ी बुढ़िया महतारी
बेटा के बलि देवेवाली,
बहिन लपेट कमर में साड़ी
चलल गदर में बनके काली,

रन में गोली जाला भट्ठी में तलवार गढ़ाला
अबहिन ना भारत बीरन से सून हो गइल।

आज जनम-धरती के खातिर
गौनहरी के सेनुर बाटे
जबले दुश्मन घर में रही
कसम आज जे टिकुली साटे

जे दिन मरले समर खेत में 'टोपे' 'टीपू' साथी
तबसे कुर्बानी देहल कानून हो गईल।

ई धरती पर मानसरोवर
गमकल केसर के फुलवारी
लुत्ती से खेलेलें लड़िका
इहवाँ हवा बने चिनगारी

राहुल के पीठी पर गोली फाहियान मरलेबा
नालन्दा के आँसू जम के नून हो गइल।

पाण्डेय आशुतोष

ललकार

आज चीन ललकार रहल बा
राम कृष्ण के पुन्य भूमि के ऊ दानव संहार रहल बा ॥
सदियन से जे बनल सनेही
हिन्दी चीनी भाई-भाई
लगा लगा के नारा भइया
कइलस हमसे हाथा पाई।
कई हजार मील निगल गइल, करि सीवाने हुंकार रहल बा ॥
राजनीति के नीति सिखावे
पीछे छुरा भोंकले बा
बारबार ऊ भेजे सुझवता
पीछे ताली ठोकले बा
कहे नीति के नीति ना मानब, ऊ सबके दुदुकार रहल बा ॥
समझ समझ पग अइहे भइया
एने तोर पुजवती बा
आज विश्व में ई भारत के
करकस होड़ चुनौती बा
भुखल चंडिका बहुत दिनन से देखऽ सिंह मुँह फार रहल बा ॥
अभी नजारा बेयालिस के
रह रह के हम याद करीं
चढ़ल सिंह पर रहल सिंहनी
माँ से हम फरियाद करीं
पहिन केसरिया बाना भइया, सभे शहीद पुकार रहल बा ॥
जग के भारत धर्म-गुरू ह
सब के सब जानत बाटे
कवन मंत्र के कवन पुजारी
ये के ई पहचानत बाटे
कवन ओर से कवन युद्ध से मन मन इहे विचार रहल बा ॥
छमा जाचना ई ना माँगे
झुके सीस ना बच्चा बच्चा
डाँटि डाँटि के तोहे सुनावे
ये बेशर्मी बिल्कुल लुच्चा
बन्हल बछरुआ आज शान्ति के, खूँटे पर डकार रहल बा।
राम कृष्ण के पुण्य भूमि के ऊ दानव संहार रहल बा ॥

राधाकृष्ण

लागल हिमालय के बरफ में आग रे !

भोजपुर जाग रे !

लागल हिमालय के बरफ में आग रे ।।
उत्तर भइल लाल, आइल बढ़ल ज्वाल;
आगि उगिलत बाटे, आजु चीन नाग रे ।। भोज०
देश के गोहार बा, द्वार पर जुझार बा;
करतब तोहार बा, आलस के त्याग रे ।। भोज०
लेलऽ मशहूर "लाठी", भोजपुर भूमि माटी
तिलक लिलार करऽ, गावऽ रन-राग रे ।। भोज०
कूदि के जुझार में, बीर धुँआधार में;
मारि के मिलादऽ धूर, चीन के दिमाग रे ।। भोज०
कइके हुँकार, ले तलवार, "कुँवर सिंह वाला" ;
'हमलावर' चीनिन के, काटऽ जैसे साग रे ।। भोज०
योगी यती जप करें, जहाँ शिव तप करें;
जहँवा 'सरग' इन्द्र, नन्दन-वन बाग रे ।। भोज०
उहँवा अफतरा में, डालि सब खतरा सें;
करे अपबित्तर ई अघोरी, चीन काग रे ।। भोज०
नावें "भोजपुरिया' काँपे सुदूर-पूर्व;
लाठी भोजरिया, सम्हारऽ जागे भाग रे ।। भोज०
बाघ के दहाड़ लेलऽ, कूदि के पहाड़ लेलऽ;
चीन के मिटाइ दऽ बुताइ दऽ चिराग रे ।। भोज०
डालि लाल खून, लाल आग के बुताइ डालऽ;
मथवा प बान्हि लऽ तूँ, 'बिजई' के पाग रे ।। भोज०

सत्य नारायण केसरी 'सौरभ'

बलिदान हेवाले पर होई

(१)

आह्वान देश में भइल आज, लहूदान हेवाले पर होई,
बढ़ चलऽ हिन्द के शेर जवाँ, बलिदान हेवाले पर होई !
इतिहास कहेला भारत के औलाद तूफानी होवेला,
सब लोग कहेला, बीरन के फौलाद जवानी होवेला,
बाकिर अपना माटी खातिर ओकर कुरबानी होवेला,

बढ़ऽ जवान ! आज तोहके नेफा के जंग पुकारऽता
भारत के सूतल शेरन के बढ़-बढ़ चीनी ललकारऽता,
आज देश अपना खातिर, एक रंग नया लावे के बा,
अब दुनिया के रंग-मंच पर नव कौतुक देखलावे के बा,
आग लगा के पेकिंग में, तूफ़ान मचादऽ धरती पर
हिमधर के छाती फूल उठे, तरवार बजे सब धरती पर,
भारत के कइसन लोग होला, पहचान हेवाले पर होई !

(२)

हिन्नू खाति मंदिल होई, सिख लोगन के गुरु द्वारा,
तरवारन के टक्कर घंटी, जे खून बही गंगा-धारा,
लहू के टीक़ा चनन होई, आरती होई तरवारन से
कवल-करेजा दुश्मन के परसाद रखाई पारन के
मुदई के मुण्ड-माल पहिरे भगवान हेवाले पर होई !

(३)

मँहजिद के रखवारे मोमिन
मोसल्लम ईमाँ सुनलऽ;
शेख सुनऽ, जाहिद सुनलऽ सब कोम नेवाजी जाँ सुनलऽ,
तसवी होई तरवारन के अब वजू खून से करना बा,
अब मदरजिमी खातिर अपना, बस मरना बा आ जिअना बा,
मँहजिद चल बनल हेवाले पर, आजान हेवाले पर होई !

(४)

जागऽ अब हिन्द के बीर जवाँ
तुगलक जागऽ बाबर जागऽ,
मंदिल-मँहजिद के रट वाला, महाबली अकबर जागऽ
कफनी के हार कबर से फिन, टीपू जागऽ; हैदर जागऽ
फुफुकार मार जागऽ जंगी, अब लाज वतन के राखऽ तूँ
ईंटा फेंकला के पत्थल से अयलान हेवाले पर होई !

(५)

जागऽ राणा, चौहान जगऽ जागऽहे पोरस फौलादी,
यूनान कबो ससुरार रहल, अब चीनो में होई शादी,
मरघट से जगऽ समुद्रगुप्त, जागऽ हे भारत के सुपूत !
सुनलऽ भारत के भीष्म, भीम जागऽ हे पारथ ! टारऽ हिम
गंडीव हेवाले पर बा तऽ संग्राम हेवाले पर होई !
बढ़चलऽ हिन्द के शेर जवाँ, बलिदान हेवाले पर होई !

राम नारायण 'राकेश'

हाथ में हमनिये के भारत के लाज बा

हमनी के धरती के मुदई निहारऽता
मार-मार पलखत ऊ पैर पसारऽता
टेढ़-मेढ़ बोलताटे देह बड़ा झारऽता
कुकुरा के जान आज रोबवा बघारऽता

'भारत के लोगवा के चीन ललकारऽ ताटे'
अपना हिमालय के ईहे आवाज वा !

कवनो ठेकान नइखे ओकरा विचार के
बेंग बउराइल बाटे बुढ़वा इनार के
फुलवो पर चले के चाहीं विचार के
टँगरी बा तूरे के बँड़वा सिआर के

झूक-मिल ओकरा के बाटे बतावे के
भारत के धरती पर जनता के राज वा !

चीनिअन के हमनी के बाटे खदेरे के
नगवा के नाथ के मुरली बा टेरे के
खूनवाँ में चीनिया मिला के बा फेरे के
चीनिया ओरइला पर ऊँखो बा पेरे के

हमनी के बूता के धरती ई जानेली
एही से भारत के हमनी पर लाज बा !

छोड़ के लोभ आज अपना परान के
बाटे बचावे के भारत के शान के
जूझे के मोरचा पर बाटे जवान के
लड़े के खेतवा में बाटे किसान के

जेतना जरूरत बा गोली बन्दूकवा के
ओकरा से बेसी जरूरी अनाज बा !

धोवत चरन जे के सागर विशाल बा
ओपर केके अँखिया देखावेके म जाल बा
चढ़ेके हिमालय पर छुछूनर बेहाल बा
आज निअराइल एह चीनिअन के काल बा

के नाहीं जानेला हमरा हिमालय के
जवन हिमालय हमरा देशवा के ताज बा !

ब्रतराज 'विकल'

हिमालय हुंकार

ए भारतबासी खबरदार !
बा सरहद में सपकल सियार ॥

वड़ त्याग तपस्या कइलापर,
वीरन के मुंड हुनइला पर
आ लाखन लाल लुटइला पर,
खुनवाँ के नदी फँफइला पर,

मिललि आजादी भारत के तब हुलसल हिम गिरि के हँकार।
ए भारतबासी खबरदार ! बा सरहद में सपकल सियार

चाऊ माओ चीनी चाई,
चेला से बनि गइलन भाई।
चाहत पोतल कंचन काई,
घाती घइचट खल अततार्इ ॥

तिरसंकु अस बहल लार जे पंचसील दिहलन लोटार।।
ए भारतबासी खबरदार ! बा सरहद में सपकल सियार

धन्हकि उठल नर हवन कुंड,
बा वीरन के भूमि उठल झुंड।
करिहन दुश्मन के अंग भुंड,
छप छप छिलिहन छलियन के मुंड ॥

मनिहन ना पोस कत्रो "चीनी" ऊ मानुस ना हउअन हुँड़ार।
ए भारतबासी खबरदार ! बा सरहद में सपकल सियार

बलि दधीच बनि जाना बा,
हरिश्चन्द टेक निभुकाना बा।
तन मन धन आज लगाना बा,
माता के लाज बचाना बा ॥

धिरिक बाइ एह जिनिगी के जब लाँघि दिहल दुस्मन दुआर।
ए भारतबासी खबरदार ! बा सरेहद में सपकल सियार.

कमला प्रसाद मिश्र 'बिप्र'

हईं जा भारत के सन्तान

हईं जा भारत के सन्तान

हमनी का तन-मन के, मन के थाह न केहू पाई
के बा अइसन जे इचिको हमनी से आँख मिलाई
सभ गुन में आगर हमनी के पार न केहू पावल
मालुम बा सभका दुनिया में हमनी के प्रभुताई
हमनी का भारत पर, भारत के हमनी पर शान
हईं जा भारत के सन्तान

जिनिगी पवला के मतलब का एकर बा जनकारी
भरल रहेले साँस-साँस में हमनी का चिनिगारी
सहज खेलि हऽ हमनी के लाठी-तरुआर चलावल
उहे बेसाही रेरि लगाई जे खोंता धुनसारी
हेंठ भइल हमनी का हाथे सभकर भरल गुमान
हईं जा भारत के सन्तान

हँसी-खेल ना हऽ लरिकन के सूतल शेर जगावल
हटऽ चीन छोड़ऽ अबहूँ ले खाल-ऊँच बतिआवल
सुखल घास का रोटी पर जे ना छोड़ल आजादी
का चाहत बाड़ऽ झुठहूँ ओकरा से हाथ मिलावल
ई तिब्बत, कोरिया न हउवे, ई हऽ हिन्दुस्तान
हईं जा भारत के सन्तान

ई माटी हऽ बीर शिवाजी के, लक्ष्मी बाई के
ई बीरन के भरल खजाना एह के अजमाई के
खउलि उठल अब जोस-भरल भारत के बीर जवानी
अब लागी ना पता-ठेकाना चाऊ-इन-लाई के
इचिको देर न लागी लगले होई चीन मसान
हईं जा भारत के सन्तान

जगन्नाथ

चाचा नेहरू के नाम पत्र

चीनी हउवनि तऽ हमें हाड़ा समझीं
सवा लाख पर एक पहाड़ा समझीं
चाचाजी, हमनी का तैयारे बानी,
बीति जायेदीं तनी जाड़ा, समझीं
जामवन्ते करिआपा समझीं
हनुमान का तरह थापा समझीं
अब चाओ कऽ लंका ना बचिहनि,
छोड़ि भगिहनि ऊ चापा-चापा समझीं
बाकी दुसमन के टाड़ा समझीं
काँच माटी कऽ इन्हे घाड़ा समझीं
जब चीनी के घोरि के पी जाइबिजा,
तनिको ना रहिहनि ई खाड़ा समझीं
चाचाजी हमनी के यारे तेसमझीं
काटबि जा चीनी के सेयारे समझीं
माता कऽ कसम तनिको ना कसर राखबिजा,
हमनी के सिंघ उनका के सियारे समझीं

परमानन्द शुक्ल 'गाजीपुरी'

सब रस रंग भरी भोजपुरियन में

जइसे सरकार घर में लागल बा मसीनगन,
ओइसन मोरे भोजपुर में लाठी बा खास-धन,
मरदन के बाड़े भरमार भोजपुरियन में।
बलिया के मंगल पाँड़े पहिले से मंगल कइले,
चित्तू पाँड़े बलिया के सात दिन स्वराज कइले,
कुँअर सिंह के जानता जहान भोजपुरियन में।
देश रत्न राष्ट्रपति छपरा के मानल बाड़े,
जय प्रकाश नेता कइसन छपरा के तपल बाड़े;
जगजीवन के कइसन बा चालान भोजपुरियन में।
दुबेजी, हजारीबाबा, चौबे परसुराम अइसन
हरिहर छत्तर, भृगुछत्तर भोजपुर के मेला कइसन
बाबा ब्रह्मेश्वर जी के धाम भोजपुरियन में।
भोजपुरी भाई फेरु बीरता देखाई सभे
चीनियन के चीनी अइसन मीसि के भगाई सभे
होखे मुँह भारत के उजियार भोजपुरियन से।
अभिमन्यु नया-नया कविता बनावतारे
कविता बनाके भोजपुरी में सुनावतारे
नाही ठटिहें चीनी एही पार भोजपुरियन से।

अभिमन्यु चौबे

निमने घर बायन दिहलऽ

ई भारत हऽ जहँवा के लरिका-जवान सभ वीर निछान।
अबहूँ मानऽ कहल चीन लवटऽ तू एही में कल्यान॥

बुला, न सुनलऽ भारत के वीरन के कबो कहानी।
अकिलि भुला जाई तोहार जब जागी जोस-जवानी॥

ओहसे हाथ मिलवलऽ जेकर भइल न केहू सानी।
निमने घर बायन दिहलऽ अब लगले उतरी पानी॥

हमनीं के तन-मन-धन सभ कुछ भारत खातिर बा कुरबान।
अबहूँ मानऽ कहल चीन लवटऽ तू एही में कल्यान॥

सत्य-अहिंसा के भारत शुरुए से हवे पुजारी।
बाकिर एकर ना मतलब कि केहू सान बघारी॥
जे हमनीं के आजादी पर आके धावा बोली।
मउवति-घाट उतार घरबिजा, मुँह तनिको जे खोली॥

इचिको कदम बढ़ल जे आगे, मारल जइबऽ बेपरमान।
अबहूँ मानऽ कहल चीन लवटऽ तू एही में कल्यान॥

रावण-अस बड़ राड़ो के इहँवा रड़ई ना लागल।
जे हुमचत आइल हमनीं के देखते देखत भागल॥
इहाँ जनमले वीर शिवाजी, तात्या टोपी, नाना।
वीर भगत, लक्ष्मीबाई आ कुँअर सिंह मरदाना।

बुझलें तोहरे इहँवा के भारत के ह्वेनसांग-फहियान।
अबहूँ मानऽ कहल चीन लवटऽ तू एही में कल्यान॥

कतनो गाल बजइबऽ तोहके केहू न पतिआई।
तोहरे मन के कुक्कुर आखिर तोहके काटे धाई॥
कुछु अनेति लागी तहार ना इहँवा ई भारत हऽ।
भल खातिर भल हऽ बाकिर राड़न खातिर आफत हऽ॥

बच्चा-बच्चा शेर हिन्द के अबहूँ ले हो जा सवधान।
अबहूँ मानऽ कहल चीन लवटऽ तू एही में कल्यान॥

रामेश्वर प्रसाद सिनहा

उद्बोधन

जाग उठऽ सब हिन्दुस्तानी “हिमगिरि” रहल पुकार बा।
पवनतनय तू भीमसेन तू
फिर हूँकार सुनावऽ।
दहल उठे दुश्मन के छाती
आपन तेज देखावऽ।
भाई बन के रहल आज तक उहे बनल हत्यार बा।
शांतिदूत तऽ बनऽ मगर तू
कायर मत कहलावऽ।
आज पियासल तीर-धनुष बा
“अर्जुन” आगे आवऽ।
माया-ममता रहल कहाँ जब “कौरव” खुद तैयार बा।
कबो केहु के बुरा न ताकऽ
जाने या अनजाने।
मगर केहु से डर मत जइहऽ
जब ऊ सीना ताने।
चंद्रगुप्त के गरम खून के वहत देहमें धार वा।
ई “अशोक” के राज ना कायर
शांति-मंत्र अपनावे से।
“कुंवरसिंह” के देश डरल कब
दुश्मन के धमकावे से?
एही देश में चम-चम चमकल ‘‘राणा” के तलवार बा।
कहऽ चीन से कबो भूल से
नजर ना एने डाले।
“सिक्कम” के बरबाद करे मत
“पेकिंग” खुद सँभाले।
कहत चीन “कैलास” के आपन ‘‘तिब्बत” कहऽ हमार बा।
कहऽ चीन से देहु दुलरुआ
तब एने मत आवे।
“ब्रह्मपुत्र” लेबे वाला
पहिले “सिक्यांग” बचावे
रण में सोभा जाके “भारत” कबो ना खइले हार बा
जाग उठऽ सब हिन्दुस्तानी हिमगिरि रहल पुकार बा।

चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह

ई हवे चीन बटमार

स्त्री

उमड़ घुमड़ जे बदरा अइले
चले पवन उनचास
काहे पिया हो, धड़केला जियरा हमार।

पु०

उमड़ घुमड़ जे बदरा अइले
चले पवन उनचास
सुनु सजनी, ई हवे चीन बटमार!

स्त्री

सुन रे पियवा, भूखल जे ई
दूध पिलाइब एके
दूधवा धोअब गोड़वा पोछब
मुँहवाँ ताकी रोके,
पर ए पियवा! काहे इ बदरा
झूकत अंगना मोर!
काहे पिया हो, धड़केला जियरा हमार!

पु०

सुन रे सजनी, भूखल ना जे
दूधवा पिलइबे एके
गोड़वा धोइबे मुहवाँ पोछबे
ताको ज़े ई रोके
खून पियासल वदरा ई जे
झूकत अगना तोर!
सुनु सजनी, ई हवे चीन बटमार!

स्त्री

सुन रे पियवा, काहे ई जे
खून पियासल बाटे,
एकर धरती बौद्ध गान के
रगवा छाती साटे,
भींजत रहे देख दरदिया
जेकर अँखिया कोर!
काहे पियाहो, धड़केला जियरा हमार!

पु०

सुन रे सजनी, लम्पट ई जे
खून पियासल बाटे,
एकर धरती बौद्ध गान के
अब ना छाती साटे,

भारत माँ के मँगिया धोवे
आइल ई मुँहजोर !
सुन सजनी, ई हवे चीन बटमार !

स्त्री

सुन रे पियवा, लम्पट ई जे
हम हईं चण्डी रूप,
जेकर मनवा जइसन चाहे
बन जाईं अनुरूप,
भारत माँ के पोर जे छूई
गरदन देब मरोर !
सुनऽ पिया हो, काठ करेजवा हमार !

पु०

सुन सजनी, ई हवे चीन बटमार !

उमाकांत वर्मा

चीनी माटी के प्लेट

चीनी माटी के प्लेट चलल—
ऊ बिना फ्रेम के स्लेट चलल
टकराये आज हिमालय से,
कब तक बाची काया ओकर ?
चनकी, फूटी खाके ठोकर
गच पर गिर के गगरी जइसे

मातल मृगेन्द्र के खोदि-खोदि
उकसावऽता पागल सियार
देखीं ई ओकर नादानी।
सूतल तामस जब जाग उठी—
तब एगुड़े पंजा के प्रहार
कर दी हुनका के वे पानी

फिर सिंह एक ना, तीन तीन
जिनकर गरजन, तरजन, दहाड़
से दलक उठे नभ, बन, पहाड़
मतवाला हाथिन्ह के टोली
हो तितर-बितर भागे चिघाड़
सिहरे शरीर के हाड़-हाड़

दू

तोहरा के कूकुर कटले बा जे
अइसन उधम मचवलऽ हऽ
हिम गिरि का ऊजर चोटी पर भी
ललका दाग लगवलऽ हऽ
तू नर पिसाच ? हे महाकाल ?
तू त हो गइलऽ तेज धार
तू चिनियन के हइजा प्लेग-
बनि के मारे लगल अपार।
चीनी जन के खा जाये के
तू इहे राह अपनवलऽहऽ
हे दुर्योधन हे दुस्सासन,
अन्याय नीति अपनावेलऽ
हमरा के बुद्धू बना बना
तू आपन काम बनावेलऽ
अर्जुन का जबले मोह रहल
तवले हथियार चलवलऽहऽ
अब, आवऽ ए चाऊ, माऊ,
मोह अर्जुन के टूटल बाटे
तू दुम दबा भगलऽ काहें
जब भाई सब जूटल बाटे
अबले खाली करवाला से
तू आपन जोस देखवलऽहऽ
अब वीर विनोवा जागि उठल
पद आज युधिष्ठिर के रखले
बेशर्म चीन ! जीतब तोहके
अइले "यशवन्त" "भीम" बदले
तू भीष्म पितामह 'देशरत्न' कर में करवाल धरवलऽहऽ ।
ए चीनी ! अब चीनी अइसन
मीसब तोहके, पीसब तोहके
नापाक पाक का अइला पर त
उलटि पलटि घीसब तोहके
अब से मति टेढ़ मेढ़ चऽलऽ
हमरा के तू का जनलऽहऽ
हिमगिरि का ऊजर चोटी पर भी
ललका दाग लगवलऽहऽ

अक्षयवट दीक्षित

चीन के चुनौती

हिन्दुस्तानी बलिदानी भाई ! तहरा के
आगे ई युद्ध बढ़ावे खातिर आइल बा !
दीपक बरले जे बाड़ऽ खून वहा करके
घनघोर अन्हरिया ओकरा पर झुझुआइल बा !

सीमा पर प्रलय मचल बा, भाई ! होश करऽ
बीसवीं सदी के रावण फिरसे जागल बा,
द्वारिका, अयोध्या, दंडक-वन काशी-प्रयाग
बृन्दावन गोकुल में फिर आगी लागल बा !

ई समय पुकारत बा भइया ! अब होश करऽ
दुश्मन दिल्ली पर आपन नजर गड़वले बा,
तहरे मदमस्त वसन्ती महमह वगिया पर
अन्हड़ आन्ही तूफान बवंडर छवले बा !

तू पंचशील में वन्दी, पर नादान चीन
बूझत बा जे भारत के लागत बाटे डर,
मालूम न बा जे दुश्मन खातिर भारत के
हर वच्चा वच्चा आज हो गइल बा बब्बर !

तू आपन चाल वदल डालऽ चीनी भाई !
अब भी अफीम के खाइल आपन वन्द करऽ
मत न्यौता दऽ तू महानाश के, होश करऽ
अब से भी विश्व-शान्ति के तू स्वच्छन्द करऽ

ई कदम आग पर घूमेवाला हऽ हरदम
मत समझऽ विष हमरा ही पीये के होई,
हम नीलकंठ विष पी जायब लेकिन तहरा
ये ज्वाला में जल जल के जीए के होई।

बिजली चमकल बा, होश करऽ ई पेकिङ्ग के
जब भी तड़पी तो बस कुट्टी कुट्टी काटी,
पड़ गइल हिमालय में दरार जे भी बाटे
ऊ खाई तोहर लास गिरा करके पाटी !

गीदड़ तो हुँआ-हुँआ के शोर मचावेले
लेकिन बनराज न चिल्लाहट पर ऊठेला,
जब शान्ति भंग हो जाला ओकर तो जरूर
बनकर के काल, झुंड पर आखिर टूटेला।

नालन्दा के खँडहर लेहले बा अँगड़ाई
पाटलीपुत्र के शेर आज हो गइल क्रुद्ध,
अब धर्मचक्र वाला कर में बा काल-चक्र
चुप देख रहल बाड़न गौतम भी शुद्ध बुद्ध,

फिर से अशोक या चन्द्रगुप्त जागल बाड़न
ई चाँद घटा से आज आग बरसावत बा,
हल्दी घाटी के महानाग नेफा में जा
रण चडी के पूजा में शंख बजावत बा!

यमुना के लहर लहर में जगल जवानी बा
गंगा के शीतलता में जगल तरलता बा,
रावी चनाब सतलज झेलम या ब्रह्मपुत्र
के जल खउलत बा अइसन भइल सरलता बा।

फिर बिगुल हिमालय बजा रहल बा, राजहंस
भी मानसरोवर के सज्जा के छोड़ले बा
अपने पँखिया में महाकाल के गति भर के
परचंड गरुड़ से आपन नाता जोड़ले बा!

अब भीष्म वाण सह चुकले बहुत शिखंडी के
अब सहल न जाई तनिको ओकर बदम सी,
अब छूटी बन के बज्र वाण उनके, अइसन—
वरदान दे चुकल बाड़न शंकर कैलासी!

आगी से खेलल सचमुच ही नादानी बा
कुछ होश करऽ जो अभी होश में ना अइबऽ
तो निश्चित बाटे पछतइबऽ, आहुत बन के
तू अग्नि कुंड में अपने आखिर जल जइबऽ

बेटा वाली कहलाये दऽ महतारी के
मत आज अन्हरिया अपने घर में आवे दऽ
चींटी के पाँख जमल तो ओकर नाश भइल
चुप रहऽ बाग में कोयलिया के गावे दऽ!

चींटी के मारल कौन बड़ा बा काम भला
कबतकले आखिर एकर टेक निभायब हम,
आपन जो चाल बदलबऽ ना अबहिन चीनी!
पेकिङ्ग में तोहरे निश्चय आग लगायब हम।

तहरे मजार पर दीया बारे वाला भी
रह जइहें कोई भी, एहू में शंका बा,
बेशी अब बात कहब ना ऐ चाऊ! माओ!
बज चुकल यहाँ भी आज कूच के डंका बा!

गणेश 'विशारद'

नारी नर से पीछे नइखी

महतारी

धनि-धनि बाड़ी ऊ महतारी
धनि-धनि बाटे उन्हुकर कोख।
मातृ-भूमि के बलि-वेदी के
ओर बढ़ल जेकर सुत सोख॥
पिता से बढ़ि के सौगुन दरजा
माँ के होला जानऽ तूँ।
माँ से बढ़ि के सौगुन महिमा
मातृ-भूमि के मानऽ तूँ!
मातृ-भूमि पर संकट बाटे—
आइल, देखऽ आँखि उघार।
दुश्मन के मत दालि गले दऽ
दउरऽ दउरऽ लाल हमार!

बहिनि

सूतल रहबऽ कबतक भइया!
अरे नीन्द, के जारऽ तूँ!
आइल बा दुसमन दुआर पर
धनुहा धइल सम्हारऽ तूँ!
हमनी का भी पीछे नइखीं—
तहनी से, लिहलीं हथियार।
देखऽ चललीं जा हमनी का
देखऽ भइया! आँखि पसार॥
हम जोधा के हईं बहिनि, अब
जोधा बनि दिखलावऽ तूँ।
धम-धम धम-धम धम-धम करते
भइया! आगे आवऽ तूँ॥

मेहरारू

अधीरात के, ई के आइल?
सामीजी? हाँ आईं तो!
बैरी इहाँ बढ़ल आवत बा
कुछुओ अब सरमाईं तो॥
काम-केलि के समय कहाँ बा?
होश करीं, अब जाईं तो!
लीं बढ़िके हथियार हाथ में
पुरुसारथ दिखलाईं तो!!

ना तऽ पहिनीं चूरी रउरा
रन में अब हमहीं जाइबि
'नारी नर से पीछे नइखे'
ई हम करि के दिखलाइबि ।।

रामवचन द्विवेदी 'अरविन्द'

उठऽ भारत के सपूत!

(१)

उठऽ भारत के सपूत, करऽटोली मजबूत, आज घरवा से चोरवा भगावे के बाटे।
देखऽ देसवा के काज, राखऽ मटिया के लाज, आज सानवाँ पर जानवाँ लुटावे के बाटे। उ०

(२)

बइरी चढ़ल बाटे राड़, सरहदिया पर मार, ओकरा मनके गुमनवाँ भुलावे के बाटे;
लेलऽ, लेलऽ, तेरुआर, धरऽ हाथे हथियार, करऽ नीमने जुझार, चढ़ि धावे के बाटे। उ०

(३)

जहाँ नाना जी के जान, रानी लछिमी महान, बाटे शिवाजी के शान, के हटावे के बाटे।
वीर भगत के बरदान, हल्दी घटिया के आन, कुँवर अस्सी के जवान, का गढ़ावे के बाटे।

(४)

जवना मटिया के देह, तवना मटिया के नेह, का सनेहियन के वइठि के सिखावे के बाटे।
इतिहसवा महान, जाने सगरे जहान, का कहानी कहि केहू के सुनावे के बाटे? उ०

(५)

देके हडियो के दान, लेला मुदई के जान, ओहि देव के, के डाँटि के डेरावे के बाटे।
जुग जुग के परमान, बाटे अमर निशान, बेरी-बेरो का ई सोना के तवावे के बाटे! उ

(६)

चीनी चिउँटी बेजान, पहाड़न से टकरान, होइ जइहें पिसान, के वचावे के बाटे।
होई लोहुआ लोहान जागी भूत ओ मसान, काली मइया के खप्पर भरावे के बाटे! उ

(७)

जवन भोगेला पहाड़, ओकर तूरऽ हाड़ हाड़, सँउसे देशवे पहाड़, के डोलावे के बाटे,
ज्वाला मूखी के भराव, हम आँधी के पड़ाव, उठि जाईं, तऽ के ताकते दवावे के बाटे। उ

(८)

मीलल जिनिगी के छूट, भइल सरग के लूट, हम होइले अमर, के मुआवे के बाटे!
हाथे शोभेला तिरंगा, गरे कालकूट गंगा, मूड़ी वेदिया पर मइया के चढ़ावे के बाटे। उ

सीताराम चन्द्र शरण 'राम'

डालऽ हिमालय डेरा

आवत बढ़त हटावत काटत ढाहत बजर हिमालय।
बिहँसत प्रान लुटावत भारत सऽहत शांत शिवालय॥
छटपटात गंगा पद छूअत, रोवत हर के रानी।
धैर्य देत बसवार जहाँ के आवत भोजपुर शानी॥

लूटत धोवत भारत माता के सुन्दर माँग गवारा।
समझत जीत मिटा के नरता पापी दुपट अवारा॥
चाहत लेत चुसुल अड्डा के चुगुल खोर लाखेरा।
जाग-जाग भोजपुर ले लाठी डाल हिमालय डेरा॥

अगर डेराता मन लखि बूढ़ा, वीर कुँअर से माँग जवानी।
माँग मोरध्वज के पुत से पुत! साहस शक्ति तूफानी॥
माँग नीत बगसर के बन से जवन मिटा के लंका।
जीवित अभी सिखावत चलि के ले तिब्बत पिटि डंका॥

परत पहिलका किरिन सुरुज के धाँगत खल डेरवावत।
बसहा बैल उखाड़त खूँटा लखि चुप शिव गोहरावत॥
झन-झन चूरी आज बजा के रंग विरंगा साबी।
छठ बरती बधु! शांत अरघ दे आके हिमद दुआरी॥

चापि-चापि चीनी चहटन के अबकी चाल छुड़ाई।
सिर हूरा से फोरि मारि लाठी से तुरत गिराई॥
सती भगवती के ई भोजपुर कभो डरी ना भाई।
सति-चौरा जे कह ललकारत कइसन मोर लड़ाई॥

देवकुमार मिश्र 'अलमस्त'

भोजपुरी समाज, कानपुर

भोजपुरी समाज, कानपुर के कार्य्यकारिणी के चुनाव अगस्त में भइल, जवना में नीचे लिखल पदाधिकारी चुनल गइले—

सभापति—श्री महथा ब्रजनारायण सिंह (छपरा)
उप सभापति—श्री गुलाबदत्त तिवारी (गोरखपुर)
उप सभापति—श्री देवनाथ जी राय (गाजीपुर)
मंत्री—श्री जगन्नाथ ओझा (छपरा)
उप मंत्री—एनुलबसर साहब (देवरिया)
उप मंत्री—रामनरेश त्रिपाठी (गोरखपुर)
कोषाध्यक्ष—ब्रह्मदेव राय (गाजीपुर)

कैसे सुधरी ?

तोर चसकल बाटे मतिया, कैसे सुधरी।
तोरा खातिर पण्डित नेहरू का ना कइले धइले
बाकी तें कि सब का आगे ऊहो उल्हा भइले
तोर कैसन हवे छतिया, कैसे सुधरी। तोर०

तें तिब्बत के हथियालिहलस हमनीं चूप लगवनीं
बड़ा पाप हो गईल जेकर फल टटके हम पवनीं
अब हमनियों पर घतिया, कैसे सुधरी। तोर०

भस्मासुर से भी तें आगे साहस के बलिहारी
जानूँ तें चटपट हथिऐबे सब के पारा पारी
बाकी ई ना ह तिब्बतिया, कैसे सुधरी। तोर०

हिटलर के हालत जग जाहिर, तोरा खाक बुझाइल ?
असल बात जे एही बहाने तोरो मौवत आइल
चाऊ, हो गइल गलतिया, कैसे सुधरी। तोर०

भाग रहल बाड़े अब नाहक एतना आगे बढ़के
तोर खातिर हमनी करब पर्वत पर भी चढ़के
तोर बाँची ना इजतिया, कैसे सुधरी। तोर०

तें बुझलस जे मार लिहनी मीलल बाटे मोका
कम्युनिष्ट भी थूक रहल बा तोरा पर, रे बोका
तोर होई दुरगतिया, कैसे सुधरी। तोर०

महेन्द्र शास्त्री

पापी चीनी

धरम प्रान भारतवासी के जे बनलें दुखपाई।
जीवन भर नाहों सुख पवलें, जीवन भर दुखपाई ॥१॥

धरमी संतोषी उपकारी भारत ई दुखदाई।
एकर अनहित जे नर कइलनि, सपनो चैन न पाई ॥२॥

समझत रहली हाँ चीनी के, हटे मोर प्रिय भाई।
हमरा से जब धोखा कइलसि, धोखा के फल पाई ॥३॥

चीनी के जब मन में ढूकल महा पाप नरिआई।
पापे काल भयंकर बनि के, सब चीनी के खाई ॥४॥

"गंगा" सब जन अब चीनी पर, थूंकत बाड़े भाई।
दगाबाज कहि चीनी पापी, जे नर-मांसो खाई ॥५॥

चौ० गंगा प्रसाद जायसवाल

ई के जोम बघारऽता ?

सदा हिमालय के चोटी पर झंडा भारत के फहराइल
सदा हिन्द के चरन चूमि के महासिन्धु कतना अगराइल
फूल-हार बनि गंगा-जमुना जेकरा काँधे से लपिटाइल
जेकरा पूजन खातिर धरती पर सुरपुर भी धउरल आइल
अरे हिमालय पर ताके के केकर मन बउराइल बा ?
केकर पहुँचल काल अरे, केकर किस्मत खउराइल बा ?
चोर निअर सीमा में घुसिके ई के जोम बघारऽता ?
होशियार ! के हमरा विकरम, पौरुष के ललकारऽता ?
जागल 'नेफा' के शून्य आजु, जागल 'लदाख'-कश्मीर रे
ना सुनले त अब सुनिले फूटल 'चीनी' तकदीर रे
मालाबार, विन्ध्य, करनाटक, अँगड़ाई ले जागल बा
कफन बान्हि के बलिदानी वीरन के मेला लागल बा
लाल लहू से काल लिखी भारत के ई कुरबानी
अमर- कुँवर- ताँतिया—लछिमी के दुहरा दिही कहानी
लाज दूध के माई के अब दुनियाँ में राखे के बा
'जय हिन्द' बोल, 'जय हिन्द' बोल संहार-मंत्र भाखे के बा

पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय

पाँच गो चौपदा—

(१)

आजु कन-कन कमान माँगऽ ता।
आजु 'नेफा' जवान माँगऽ ता।
जागऽ दुश्मन चढ़ल बा धरती पर—
मुल्क 'भामा' के दान माँगऽ ता।

(२)

कबहूँ नयका पुरान हो जाला।
कबहूँ सूरुज भी चान हो जाला।
मुल्क खातिर गँवा के आपन जान
कबहूँ छोटको महान हो जाला।

(३)

चाहीं आन्हीं, बयार ना चाहीं।
खून के ठंढ धार ना चाहीं।
देश का चाहीं शंख केशव के,
बंसरी के उवार ना चाहीं।

(४)

ई हऽ भारत इहाँ जरल जाला !
आगि—फौलाद में ढरल जाला !
ई ना पेकिंग तोहार हऽ; इहवाँ—
देश खातिर जियल, मरल जाला !!

(५)

कबहूँ अइसन भी बात हो जाला !
दिन के जिनिगी में रात हो जाला !!
चाल शतरंज के भूलल बा चीन—
"सह जे देला ऊ मात हो जाला" !!

दिनेश 'अमर'

आवे कहाँ सम्मै छै आराम के

[अंगिका]

दुश्मन आवि गेलो छै दुआरी पै
आवे कहाँ सम्मे छै आराम के ?
हमरो देश छै आजाद
नेहुए देवै बरबाद
पूरा करवै सभ्भे सपना वापू—राम के
आवे कहाँ सम्मे छै आराम के ?

हम्मै नेफा के वचैवे
हम्मे लदाख के बचैवे
हम्मै जानों देके वचाय लेवै आसाम के
आवे कहाँ सम्मै छै आराम के ?

हमरो सेना है नरनाहर
हमरो नेता वीर जवाहर
चीनी लिये नै पारतै एकों इंच हराम के
आवे कहाँ सम्मै छै आराम के ?

हम्मै खटवे रातो दिन
हम्मै होवे नै उछीन
हम्मै देश पहरुवा छिकियै आठो यामके
आवे कहाँ सम्मै छै आराम के ?

मोहन मिश्र 'मधुप'

स्व० पद्मभूषण डा० आचार्य शिवपूजन सहाय

भारत के साहित्य-सेवियन में आचार्य शिवपूजन सहायजी के स्थान बड़ा ऊँचा रहे। विनयशीलता, साधुता आ सादगी के अपने अवतारे रहलीं हाँ। जिन्दगीभर आपन हड्डी रगरि रगरि हिन्दी माता के तिलक लगवलीं। अपने के साहित्यिक गाँधी आ दधीचि से बराबर मिलान होत आइल। द्विवेदी-युग के अपने अंतिम कड़ी कहइलीं हाँ। बड़े-बड़े साहित्य के विद्वान आपन रचना बिना शिवजी के देखवले छापे के हियाव ना करत रहले हा। सम्पादन-कला के त अपने एकमात्र अधिकारी विद्वान समुझल जात रहलीं हाँ।

भारत में बड़े-बड़े नगरन में भोजपुरी भाई लोग के जमात कौनो ना कौनो संस्था का रूप में बा। पटना में 'भोजपुरी परिवार' के स्थापना अपनहीं के कइल रहे। भोजपुर क्षेत्र आ भोजपुरी भाषा खातिर अपने के हृदय में अगाध प्रेम रहे। अपनही के छत्र छाया में हम 'परिवार' के संचालन आ 'अँजोर' के संपादन करत रहीं। अपने का वैकुण्ठवास से 'परिवार' अनाथ हो गइल आ 'अँजोर' टूअर। भोजपुरी साहित्य के उन्नति खातिर जे जे योजना अपने बनवले रहीं उ देखि के सभे हैरान रहे। हिन्दी साहित्य के क्षति के त कौनो ठेकाने नइखे, भोजपुरी के क्षति के का बेआन करीं। बुझात नइखे कि आगेके रास्ता के देखाई। अब त अपनेके बतावल राह पर चलला से कुछ 'अँजोर' हासिल होई। शब्द नइखे कि आपन आ 'परिवार' के विपत्ति के कैसे कहीं। भगवान शंकर बल देसु कि देश, प्रान्त, परिवार आ 'अँजोर' एह दुख के बरदाश्त कर ले। प्रभु अपने के शान्ति आ सद्‌गति देसु।

'अँजोर' के अगिला अंक 'शिवपूजन-स्मृति अंक होखी। ई सब केहू जानऽता कि भारतीय संस्कृति में जे कुछ सत्य, शिव आ सुन्दर रहे ओकरा के अपनेका जीवनभर पूजलीं। सब लेखक आ कवि भाई लोगनसे चिरौरी बा कि सहायजी के स्मृति-अंक खातिर आपन-आपन संस्मरण, कविता आदि जल्दी भेजे के कृपा करीं।

स्व० कामता प्रसाद सिंह 'काम'

श्री कामता प्रसाद सिंह 'काम' के असामयिक निधन से राजनीति आ साहित्य-संसार में बड़ा हानि पहुँचल। ४७ बरिस का उमिरि में अपनेका स्वर्गवास भइल। विशाल शरीर में कोमल स्वभाव आ मीठ बोली सभ के मन मोह लेत रहलहा। अपने भी भोजपुरी भाषा पर बड़ा छोह राखत रहलीहाँ। भगवान अपने के सद्‌गति देसु।

स्व० श्री राज वल्लभ सहाय

श्री राजवल्लभ सहाय काशी से प्रकाशित 'आज' के सम्पादक रहीं। कुछ दिन पहिले अपने 'आज' का माध्यम से भोजपुरी के भी बड़ा सेवा कइले रहीं। बिहार के पुरान साहित्य सेवियन में अपने के नाम बड़ा आदर से लिहल जात रहल हा। अपने स्वभाव से सरल, मृदु-भाषी आ साहित्य के मर्मज्ञ रहली हाँ। अपनेका वैकुंठवास से हिन्दी आ भोजपुरी के बड़ा क्षति पहुँचल। भगवान अपने के दिवंगत आत्म के शान्ति आ सद्‌गति देसु।

राष्ट्र-सुरच्छा अंक

ई अंक राष्ट्र-सुरच्छा अंक ह। राष्ट्र के सेवा खातिर भोजपुर, भोजपुरी औ भोजपुरी भाषा दुनिया में मसहूर बा। देश-सेवा खातिर भोजपुरिया छाती तानि के आगा-आगा चलेला। चीन के धोखेबाजी आ नीचता पर सभे थूकऽता। चीन भाई के नारा लगाके भारत पर चुपचाप चढ़ाई कइ बैठल। हमनी का अबहीं तैयार ना र तौनो पर जे मरदानगी आ बहादुरी से हमरा देश के जवान नेफा आ लदाख का मोर्चा चीनी सेना के सामना कइले उ तारीफ के बात बा। चीनी जाति दानव के जाति ह ऐ से लोहा लेवे खातिर अब पूरा तैयारी हो गइल बा। लंका के प्रधान मंत्रिणी आ राष्ट्र मिलिके जे प्रस्ताव रखले बाड़े उ त भारत मान लीहल, चीन मानेमें कानी करत बा।

एने देश भी जाग गइल। एकता के लहर काश्मीर से कुमारी अन्तरीप तक गइल। आज भारत के बच्चा बच्चा भारत माता के लाज बचावे खातिर आ हिमाल रच्छा करे खातिर जान हथेली पर लेके तैयार बा। नेहरू जी का नेतागिरी में हम सभे पूरा विश्वास रखले बानी। हमार विजय जरूर होई। ई जवानन के त्याग इ खून का अच्छर से लिखी जे युग-युग अमर होके रही।

जय भारत! जय लदाख! जय नेफा!

‘अँजोर’ के तीसरा साल के समाप्ति

एह संयुक्तांक से ‘अँजोर’ के तीसरा बरिस समाप्त हो गइल। अनेक तरह के क नाई के रहते कइसहूँ हमनीका ‘अँजोर’ के प्रकाशन करते अइलीं। अगर आर्थिक स्थि के कुछ रंग ना बदलल त ‘अँजोर’ के प्रकाशन में कुछ परिवर्त्तन करेके पड़ी। बहुत से भोजपुरी भाइन से अपील कइल गइल बाकी अबहीं कौनो तरफ से सहाय किरिनि नइखे लउकत। भोजपुरी साहित्य के सेवा, प्रचार आ निर्माण खातिर बड़ा के जरूरत बा। करीब करीब सभे लोक भाषा आपन श्री-वृद्धि करे में लागल बा, कइओ लिहलसि। बाकी भोजपुरी भाई लोग एकर महत्व अभी नइखे समुझत।

‘अँजोर’ निकाले में देरी हो गइल। कुछ लेख-कवितन के कमी आ कुछ प्रे भी ढिलाई रहे। लाचारी रहे। एह अंक में बहुत लेख आ कविता प्रेस में मैटर भेज बाद आइल हा। सबके हम इस्तमाल नइखी कर सकत, अगिला अंकन में छापल चीन-भारत युद्ध पर लोकसाहित्य में जतना गीत आ लेख भोजपुरी में लिखाइलहा अउर कौनो लोक भाषा में शायद ना लिखाइल होई। एह खातिर भोजपुरी लेखक आ लोग प्रशंसा के पात्र बाड़े। ‘अँजोर’ के एह अंक में कुछ नमूना दिया रहल बा। हमार आ कवि बेजोड़ साहित्य-सृजन में लागल बाड़े। सुरच्छा ‘अंक’ भइला का नाते कौनो तरह के रचननि के स्थान ना दियाइल हा। जइस भोजपुरी लउर मशहूर बा, ओ भोजपुरी साहित्य भी जवानन के जोश आ साहस बढ़ावे में कम काम ना करी। का बीच त्याग, सेवा दान, आ बहादुरी के भाव भी जगवले रही।

‘अँजोर’ का प्रकाशन में जे भोजपुरी भाई लोग, लेखक आ कवि लोग हाथ बँट हम सब के हृदय से धन्यवाद देत बानी। उमीद त अइसने बा कि आगे भी ‘अँजो अइसहीं नेह आ छोह बनवले रहिहें लोग।

—पाण्डेय नर्मदेश्वर

२२. चाऊ से दू बात—अच्चयवट दीच्चित ४५-४६
२३. चीन के चुनौती—गणेश 'विशारद' ४७-४८
२४. नारी नर से पीछे नइखी—रामवचन द्विवेदी 'अरविन्द' ४९
२५. उठऽ भारत के सपूत—सीताराम चन्द्र शरण 'राम' ५०
२६. डालऽ हिमालय डेरा—देवकुमार मिश्र 'अलमस्त' ५१
२७. कैसे सुधरी ?—महेन्द्र शास्त्री ५२
२८. पापी चीनी—चौ० गंगा प्रसाद जायसवाल ५२
२९. ई के जोम बघारऽता ?- पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय ५३
३०. पाँच गो चौपदा—दिनेश 'भ्रमर' ५३
३१. आवे कहाँ सम्मै छै आराम के (अंगिका)—मोहन मिश्र 'मधुप' ५४
९. संपादक के विचार ५५ ५६

शिवपूजन स्मृति-अंक

'अँजोर' के अगिला अंक शिवपूजन-स्मृति अंक होखी। साहित्य सेवी आ प्रेमी भाई लोग से प्रार्थना बा कि 'अँजोर' के वोह अंक खातिर आपन लेख, रचना, संस्मरण कविता आ श्रद्धाञ्जलि भेजीं। २५ मार्च १९६३ तक सब सामग्री 'अँजोर' कार्यालय में पहुँचि जाये के चाहीं।

"अँजोर" के नियम

१ "अँजोर" में छपे खातिर जे भी रचना भेजल जाय ओकर प्रतिलिपि अपना पास जरूर राख लिहल जाय। प्रकाशित रचना भेजे के कृपा मत कइल जाय।

२ कवनो लेख, कविता, प्रश्न, चित्र आदि के छापे भा ना छापे के आ काटे-छाँटे के पूरा अधिकार सम्पादक के रही।

३ "अँजोर" में बिना नाँव-गाँव के मुलाहिजा कइले, रचनन के उत्तमता पर अधिक ध्यान दीहल जाई।

४ पन्ना के एक ओर लेख लिखाये के चाहीं, भाव आ भाषा पर ध्यान त राखहीं के चाहीं। जहाँ तक होखे लेखन के काया छोटे होखे के चाहीं।

५ रचनाके साथ लेखक के वर्त्तमान पता आ जन्म-स्थान के पता दूनो भेजेके चाहीं।

६ "अँजोर" के गाहक कवनो अंक से बनावल जा सकेला। जवना महीना में दाम आ जाई ओही महीना से गाहक समझल जाई।

७ स्थायी गाहक भाई चिट्ठी-पत्री लिखत खानी आपन गाहक-संख्या जरूर लिखसु। एक बरिस के चन्दा भेजि के जे गाहक बनिहें उहे भाई स्थायी गाहक कहइहें।

८ रचना, मनीआर्डर, व्यवस्था सम्बन्धी पूछताछ के पत्र सम्पादक के पता से भेजे के चाहीं।

९ आलोचना खातिर पुस्तक के दू प्रति भेजेके चाहीं।

भोजपुरी परिवार, पटना के आगामी प्रकाश

१. भिखारी ठाकुर ले० श्री महेश्वर प्रसाद

हिन्दी में भोजपुरी क्षेत्र के अग्रगण्य जनकवि श्री भिखारी ठाकुर पर सर्व प्रथम अद्भुत आलोचनात्मक ग्रन्थ (प्रेस में)

२. संक्षिप्त भोजपुरी व्याकरण ले० श्री रास बिहारी राय श

हिन्दी में भोजपुरी भाषा का सर्वप्रथम संक्षिप्त व्याकरण

३. एक सौ एक भोजपुरी कवितायें—

रचयिताओं के चित्र एवं उनके संक्षिप्त परिचय के साथ रचनाओं का हि भावानुवाद सहित आधुनिक भोजपुरी कवियों की चुनी हुई श्रेष्ठ कविताओं अनूठा संग्रह।

४. महुआ के फूल (भोजपुरी कहानी-संग्रह)

५. भोजपुरी एकांकी-संग्रह

६. बउध-लीला (प्रबंध-काव्य)—स्वामी विमलानन्द सरस्वत

⁂

'अँजोर' के विज्ञापन-दर

कभर के चौथा पन्ना—१५०)
" तीसरा पन्ना—१२५)
साधारण पन्ना— १००)
" आधा पन्ना— ५५)
साधारण चौथाई पन्ना—३५)

एक प्रति के ७५ नया पैसा
एह प्रति के एक रुपया

सालाना · स्थानीय तीन रुपया
बाहर साढ़े तीन रुपया

प्रकाशक

भोजपुरी परिवार, पटना—३

मुद्रक : युनियन प्रेस, पटना

रधांजली अंक

[विहार सरकार द्वारा विद्यालयों एवं पुस्तकालयों के लिए स्वीकृत]

अँजोर

[भोजपुरी के एकमात्र त्रैमासिक पत्र]

के ?

कहलो से कहीं अधिक बतिया
हमनी के अब पतिआई के ?
कवनो बेरा, कतहूं, सब से
आपन अइसन बतिआई के ?
माता अस मोही-छोही बनि
के पिता समान सनेह करो ?
अँगुरी धराइ आपन आगे
रहिया पर चले सिखाई के ?

—अविनाश चन्द्र विद्यार्थी

प्रधान सम्पादक

पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय

कला-४
अप्रिल-जुलाई

किरिनि-१-२
१९६३ ई०

भारत माता के सच्चा सपूत

—वाल्मीकि चौधरी

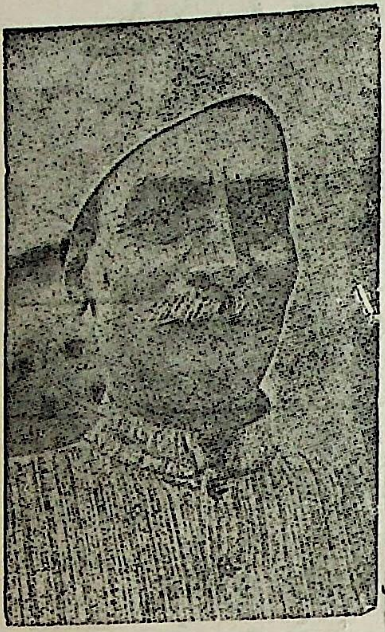

पूज्य राजेन्द्र बाबू भोजपुर के नाते, स्नेही सुभाव भइला का वजह से गाँव-जवार के अलावे भी गैर भोजपुरि भी भोजपुरी में बात कइल अधिका पसन्द रहीं। जइसे हमार घर त मुंगेर जिला लेकिन हमरो से बराबर भोजपुरिए में करत रहीं। एतने ना, उनुका गाँव-जवार के चिठ्ठी भोजपुरी में आवत रहे ओकर जवाब हमरा से भोजपुरिए में लिखावत रहलीं। शुरू-शुरू में जब हम भोजपुरी लिखे में करत रहलीं त उनुकर कहनाम रहे जे भो भासा अइसन बा कि ओकरा में गलती कम होला। एह प्रोत्साहन खातिर अपना के चिठ्ठी के जवाब हमरा के लिखि के कहत रहन। ओकरा पर दस्तखत ऊ कर देत रहलन जेह में हमर संकोच टूटे।

हम उनुका साथे जब जेल में रहीं एक बेर के बात हमरा इयाद बा। जब हम लगलीं त हमरा से कहलन कि जाके तू सिनहा साहेब से मिलिहऽ। आउर उनुका से खातिर सब तौर-तरीका बता देलन। ओकरा में सबसे खास तरीका ई रहे कि से भोजपुरीए में बात करिहऽ ना त ऊ बड़ा बिगड़ जइहन। हम कहलीं कि बात करबि भोजपुरी में। जब हम पहिले पटना सिनहा साहेब का पास गइलीं त उन बहुत रोबदाब में बइठल पवलीं। एक आफिसियल ढंग पर मिले के आ बात करे के आ गइल। हमरा मुँह से अचानक ठेठ हिन्दी आ उर्दू में दू-चार शब्द निकलल जे प्रदेश के स्टाइल में रहे। कारन ई रहे जे हम काशी विद्यापीठ के पढ़ल हईं। हमरा मुँह ऊ स्टाइल के जे दू-चार शब्द निकलल त उनुकर तेवर हम बदलल पवलीं। ऊ हम पूछले कि तोहार घर कहाँ बा। हम कहलीं मुंगेर जिला। एह पर कहलन कि बाड़ऽ 'बारो' के लेकिन तूँ बात करतारऽ 'लखनउआ' निअन। राजेन्द्र प्रसाद से तूँ बतिआवे लऽ? उनुका से किछु सिखलऽ ना? हमरा इयाद आ गइल बाबू के बात उनुकर शिक्षा। जब हम लगलों फिर भोजपुरी में बात करे त सिन्हा साहेब गद-गद गइलन आ तब इ समझे लगलन कि रहल बानी बाबू के साथ। भोजपुरी के ई कदर अभी दुनियाँ के छोड़ देल जाउ त हिन्दुस्तान में एह दूनों सज्जन से बड़ा आदमी जाने नइखन भइल। आ ईहो कहल कुछ अधिक ना होई कि लाखों-करोड़ों के उनका संपर्क रहे ओहमें अधिके से भोजपुरीए में बात करेमें ऊ समुझत रहलन कि हिन्दी भोजपुरिए अइसन बोली बा जे सभे समुझ सकेला।

एक आउर घटना हमरा इयाद बा। बात १६५२ के ह जब स्वतंत्र भारत के पहले पहल मर्दुमसुमारी होत रहे। ओह वखत पूज्य राजेन्द्र बाबू भारत के प्रथम नागरिक रहलन। उनुके से जन-गणना शुरू भइल। ऊ अपना मातृ भाषा में हिन्दी के साथे भोजपुरी के भी दर्ज करवले। अब पाठक लोग समुझस। शायदे भारत के अइसन कवनो राष्ट्रपति होइहें जे अपना मातृभाषा के ई सम्मान दीहें। अइसे त ऊ सात-आठ भाषा के विद्वान रहले। छव भाषा में त भासन भी देत रहले। हिन्दी-अंगरेजी-उर्दू-फारसी के मसउदा उनुकर दोबारा कोई काटे वाला ना रहे। एक बार जे लिख देत रहले ऊ वे मिसाल होत रहेले। काग्रेश-कार्यकमिटी के बैठक में जब ताजा-ताजा प्रस्ताव बनावे के हो त एक तरफे ई सब लोग राजेन्द्र बाबू के ओर इशारा करसु। एकरा में ढेर जोर रहे महात्मा जी के कि "राजेन्द्र बाबू ही इसको जल्दी तैयार कर सकेंगे।" ओहेमें सरदार वल्लभ भाई के एगो चुटकी होत रहे 'वकालत हम सबों ने की है लेकिन मुन्शी राजेन्द्र बाबू ही हैं।'

जब स्वराज्य भइल आ हिन्दुस्तान-पाकिस्तान के बँटवारा के बात चलल तब राजेन्द्र बाबू ओह काम में एक प्रमुख मेम्बर रहले जेह में ब्रिटिश का सरकार का तरफ से पेथिक लारेन्स, स्टैफोर्ड क्रिप्स जइसन धुरंधर राजनीतिज्ञ लंडन से आइल रहन। ओह में बहुत बात हिसाब-किताब के रहे। ओह में सभे लोग के धेयान राजेन्द्र बाबू के ओर झुकत रहे। ओह में सबसे ज्यादे एह विषय में भी राजेन्द्र बाबू के लोहा मानल जात रहे। हिसाब के साथ-साथ अँगरेजी भाषा के जे मसउदा राजेन्द्र बाबू के हाथ से तइयार होत रहे ओकरा देखके अँगरेजन के भी अकिल हैरान हो जात रहे आ ऊ लोग पूछत रहले कि 'आप लोगों की अँगरेजी ऐसी अच्छी कैसे हुई जब कि शिक्षा हिन्दुस्तान में ही हुई।' इहाँ बूझे के चाहीं कि इंन्ट्रेश तक शिक्षा भोजपुरी क्षेत्र में ही नू भइल रहे जेह में ऊ पास कइले त बंगाल उड़िसा, आसाम, विहार नेपाल आ बरमा मिला के सभे विद्यार्थी से सेसर निकलले। इनकर 'इन्डिया डिवाइडेड' किताब देखके त स्टैफोर्ड क्रिप्स हैरान रहे कि 'इतनी मोटी किताब, ऐसे गहन विषय पर लिखने के लिए और इसके लिए तैयारी करने को कब और कैसे समय मिला'! इ लोग कहत रहे कि बँटवारा के समय ओकरा से बहुत मदत मिलल। राजेन्द्र बाबू कहलन कि लिखे पढ़े के समय त अपने लोग के कृपा से मिलल। मतलब रहे जेल-यात्रा से। आखिरी बात हमरा एक इयाद परत बा। 'गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इबो' फिल्म जब बनल त राजेन्द्र बाबू के ओकरा के देखेके उत्सुकता काफी रहे। संयोग अइसन भइल कि ओह फिल्म के उद्‌घाटन पटना में उनुका के देखा के भइल। इ देखलन। उनुका फिल्म से त ओतना शौक ना रहे मगर भोजपुरी में बनला का वजह से देख के काफी प्रसन्न भइले। हालाँकि ओकरा में फिल्मी वातावरण ना रहे से फिल्म के हिस्सा के बात छोड़ के, ऊ भोजपुरी बोल चाल के ही केवल तारीफ कइले। एह से भी राजेन्द्र बाबू के भोजपुरी के प्रति प्रेम के गहराई के समझल जा सकेला। एह में त प्रेम से जादे भोजपुरी के प्रति उनुकर सरधा बुझात रहे।

एक बात अउर इयाद परत बा जे बहुत महत्त्व के बा। 'राष्ट्रपति भवन' में रहे के समय में उहाँ बाबू के दू पोती के बिआह भइल। ओकरा में गीत त भोजपुरी में होते रहे, रस्मो-रिवाज बिलकुल भोजपुरिए रहे जेकरा देखे सुने खातिर दुनियाँ के राजदूत उपस्थित रहत रहले। ओह बीच में राजेन्द्र बाबू बइठ के खुद सभे के ऊ सब बात

समुझावस। हम समझत बानी कि दुनिया के लोगन के भी मालूम हो गइल कि भो गीत, भोजपुरी रस्म-रिवाज कइसन होला अउर हिन्दुस्तान में एकर का महत्व या खास करके ओह लोग के राष्ट्रपतिए का मुँह से सुने के मिलल। ऊ जय समुझ रहलन त हम समझतानी जे उनुका ई बिलकुल खेयाल से उतर गइल रहे कि ऊ राष्ट्रपति भी बाड़े।

राजेन्द्र बाबू के सादगी, बाहरी आ भीतरी दूनों के त पूछहीं के नइखे। बालक के तरह निश्छले रह गइलन। कपड़ा-लत्ता भी उनुकर ओही ढंग के रह गइल ढंग से छपरा आ पटना में पहिरत रहेलन। उनुका खान-पान के बारे में एक रहे। साधारण भात रोटी त सभे खाला, उहो खात रहन। पोलाव कभी ना एही से पता लग सकेला उनुकर खाइल पियल। रोटी खात रहन, पूड़ी-परौठा ना भूँजा रहन। कहत रहन कि रोटी के भारी कइला से का फायदा कहत रहले कि नाश्ता भूँजा जरूर रहे के चाहीं। हम सब कहत रहली कि भूंजा भारी हो जाई, दोसर चीज जाउ। एह पर कहत रहलन जे बढ़ियाँ लागता उहे हटावऽतारऽ। सफर में भु भुँजवा के बोतल में रखात रहे आ जाए के बेरा लोग भूलसु मत एहसे पूछलेत रहसु भुजुनवाँ रखाइल। सतुआनी का दिन राष्ट्रपतिओ भवन में सतुआ जरूर खात रहस ओह दिन अपना स्टाफ के, जे दूर देश के रहलन उनुका से एह सतुआ के महत्व जरूर जिकिर करसु। ओह में ईहे बात रहे कि हमनी का ग्रिहस्त हईं आ सभे के नया- अनाज के उद्घाटन करे के ई दिन समुझल जाउ। के नइखे जानत कि राजेन्द्र आम के बड़ शौकीन रहलन। सतुआ के आम के जिकिर भी होत रहे।

१६६१ में जोर से बीमार पड़लन त ओह समय से उनुका साथे दूगो नर्स रखाइल। एगो त रहे केरल के दोसर रहे पंजाबी-नेपालिन। ई दूनो के साथे पोती के बेवहार हो गइल रहे। एहू लोग के साथ भोजपुरी बोली के शुरूआत हो गइ बाबू भोजपुरी एही खातिर बोलत रहलन जेह में इ लोग समुझस कि मालिक-नौकर इहाँ संबंध ना रहो। ऊ लोग धीरे-धीरे समझ गइली कि जब भोजपुरी के जरिए काम बात कहेलन ओकर माने बा बहुत दुलार से कहलन। आ ओह में इ लोग उनुकर बोली समझ में जल्दी आगइल उ जब कभी हिन्दी में उर्दू में बोलसु तब ऊ थोड़ा सहम जासु कि आजु कुछ गड़बड़ त ना हो गइल। एकरा वजह से भी ऊ भोजपुरिए के ज्यादे पसंद करसु। कुछ दिन त भोजपुरी बोली एक तरफा चल जीवन का आखिरी समय में ऊ लोग भी बहुत कुछ ग्रहण कर लेली। एक दिन बात ह कि डाक्टर रघुनाथ शरण एगो दवाई के जे 'पिल्स' रहे ओकर आधा खावे बतवले रहन लेकिन ओकरा में एगो दिक्कत रहे कि 'पिल्स' के दो टुकड़ा आसानी से हो सकत रहे। सिस्टर के सामने ई दिक्कत रहे जेकरा के बाबू भाँप गइलन। कहलन कि लावऽ एकरा के सउँसे निगल जाईं, आधा आ सउसे में का फरक बा उनुकर ई सुझाव सुनि के सिस्टर के मन हलुक भइल। ऊ गोली में समूचे आ आधा खइला में कोई विशेष फर्क ना रहे। बाबू कहलन कि रघुनाथ जी खाये के बता गइले लेकिन गोली आधा कइसे होई ई ना बतवले। सिस्टर कहली कि डाक्टर पूछेंगे तो यह नहीं बताइयेगा कि सिस्टर ने पूरा दे दिया। एह पर बाबू कहलन

हम उनुके से एकराके आधा करे के कहव त अपनहों कहिहें कि सउसे खा जाईं। एही से पाठक समुझ सकेले जे झूठ-आ साँच के वीच के तर्क संगत वात ऊ कतना वखूसेवी निकालत रहले। डाक्टर सरन से जव ई वात कहिहन त ई सवाले ना उठी कि आधा खइहन कि पूरा खइहन। एह में सिस्टर के डर अपनहीं खतम हो जाइत आ वाबुओ के झूठ बोले के जरूरत ना पड़ल।

एक बेर के बात ह कि जगतगुरु शंकराचार्य अंगरेजन के शासन-काल में (१९२४ के लगभग) आपन भासन के कारन राजद्रोह के अपराध में गिरफ्तार भइलन आ मुंगेर जेल में उनुका के रखल गइल। विहार सरकार के हुकुम रहे कि उनुकर मोकदमा के सुनवाई जेले में होखे ताकी वाहर के कवनो आदमी से न संपर्क होखे पावे आ ना एह मोकदमा में कोई सम्मिलित होखे पावे। एह मोकदमा के सुनवाई एगो अंगरेज मजिस्ट्रेट के जिम्मे रहे। जगतगुरु शंकराचार्य के पद-प्रतिष्ठा हिन्दू-समाज में जइसन अभी वा ओकरा से कई गुना अधिक पहिले रहे। राजेन्द्र वाबू के नजर में ऊ अउर महत्त्वपूर्ण पुरुष रहलन। एह वास्ते उनुका मन में ई रहे कि कम से कम जव ऊ विहार में गिरफ्तार होके रखाइल वाड़े त हमरा ओह मोकदमा में कवनो तरह से जाए के चाहीं। एही दृष्टि से राजेन्द्र वावू ऊपर के अफसरान से उहाँ जाए के इजाजत मंगले। ब्रिटिश सल्तनत में भी ऊपर से नीचे के अधिकारी राजेन्द्र वावू के दोसर कांग्रेसी से अलग स्थान, देत रहले आ ऊ स्थान हिन्दुस्तान में गाँधीओ जी के ना रहे। अंग्रेज लोग राजेन्द्र बाबू के Harmless politician मानत (अहानिकारक राजनीतिज्ञ) रहले हाँ आ उनुका के भारत के सर्व प्रिय विद्वान व्यक्ति मानत रहले। एहि वास्ते ओह मोकदमा में उनका के वइठे देवे में कवनों उजुर ना भइल। उनका वड़ा संतोष भइल कि उनुका से जगतगुरु के कुछ सेवा हो सकी। उनुका इहो लोभ रहे, एही वहाना से संत के दरशनों मिलतरही। जेह दिन मोकदमा खुलल, राजेन्द्र वाबू समय पर पहुँच गइलन। मजिस्स्ट्रेट भी समय पर पहुँच गइल रहे। लेकिन ओह दिन शंकराचार्य जी के जब जेलर अन्दर बोलावे खातिर गइल, ओह समय शंकराचार्यजी महाराज टट्टी में रहले। ओह में कुछ समय त लगबे कइल, उनुकर इहो नियम रहे कि जव-जव टट्टी से आवसु त स्नान करसु। निकल के स्नान करे लगले आ जेलर वाहर इंतजार करत रहे। स्नान के बाद उनुकरा मन में का भइल का ना, संध्या पर वइठ गइले। ऊ अइसन पहुँचल संत रहलन कि संध्ये में ध्यानस्थ हो गइलन जेह में काफी समय लग गइल। जेलर के हिम्मत ना भइल कि उनुकाके टोकसु आ उठावसु। एने दफ्तर में अँगरेज मजिस्ट्रेट इँतजार में दाँत पीसत रहे दाँत से कलम दवावत रहे ई भाव-भंगिमा के राजेन्द्र बाबू ताड़ गइले। ऊ बहुते कोर्ट के अइसन दृश्य के देखले रहलन आ समझत रहलन कि ठीक नइखे होत, एकर नतीजा खराव होई। एकर असर-फैसलो पर पड़ी। लेकिन केकरो बस के वातो रहेना। आखिर लंच के पहिले तक शंकराचार्य जी ना आ सकलन आ आज खातिर कोर्ट उठ गइल। जाए के बेरा मजिस्ट्रेट बिगड़ के गइल आ कहलस कि आज ही फिरू ई केस के सुनवाई होई। एह वास्ते तीन बजे मुदालेह को तइयार रखना होगा। अइसने भइल। मजिस्ट्रेट का अइला का बाद शंकराचार्य जी के लावे खातिर लोग गइल। ऊ हो बखत उनुका आवे में थोड़ा देरी भइल। मजिस्ट्रेट के गुस्सा के ठिकान ना रहे। राजेन्द्र बाबू बड़ा असमंजस में रहलन आ डरत रहलन कि कहीं शंकराचार्य जी के अइला पर अँगरेज मजिस्ट्रेट कुछ बोल न देसु। ओह बखत कोई घटना घट जाई त उनुका भावना पर कुछ ठेस

पहुँचबे करी साथे साथ बांहरो के लोग के जब मालूम होई कि उनुका रहते शंकराचार्य के अपमान हो गइल, त लोग उनुका के का कहीं। ई सब सोचते रहलन एही बीच जगतगु महाराज खराऊँ पर आवत बुझइलन। जइसे कोर्ट के दरवाजा पर उनुकर पैर पड़ल राजेन्द्र बाबू एतना तेजी से झट से उठ के सास्टांग उनुका पैर पर गिरके आपन टोपी देलन। ई दृश्य देखते त अँगरेज मजिस्ट्रेट के सिर्फ कुल गुस्से ना गायव भइल शंकराचार्य जी के बृहत महातम के अचानक ज्ञान भी हो गइल। अइसन दृश्य देख आदर से मजिस्ट्रेट भी अचानक उठ गइल। ऊ कोर्ट के समा वदल गइल। मजिस्ट्रेट उनुका प्रति जे क्रोध रहे ऊ बदल गइल। आ राजेन्द्र बाबू के उहाँ रहल कारगर भइल।

उनका गुन के गिनती नइखे। कोई लिखवइया चाहीं आउर सभ लिखवइया ई सपरी भी ना जे जमाना में उनुका के लोग सभे काम करत देखलस ऊ जमाना के के उनुकर महत्त्व ओतना ना बुझाइल। आगे आवे वाला पीढ़ी उनुकर विशेष-विशेष के आँकि आ समझो। तव भारतो के अधिक महत्त्व वढ़ी कि एह देश में कइसन-कइ लोग हो गइल। जइसे हमनी के राम, कृष्ण, बुद्ध परमहँस राम कृष्ण, स्वामी विवेकान आदि के कल्पना करतानी कि उहो एही देश के महापुरुष भइले ओइसहीं राजेन्द्र बाबू एह युग में भइलन हा जिनकर अपने जिन्दगी में एक आदमी के लोक-कल्या वास्ते जेतना उपयोग हो सकेला सभ भइल।

ऐसन महापुरुष के पवित्र चरण पर हम श्रद्धांजलि चढ़ावत बानी

देशरत्न

देश के रतनवाँ कहवाँ हेराइल रे
भुइयां बिछल बाटे दुख के चदरिया,
उपरा अकसवा में करिया बदरिया,
सुध बुध भुलि गइले, जिया घबड़ाइल रे
देश के रतनवां कहवां हेराइल रे
कतना नयनवाँ में घिरले सवन वाँ,
विजुली कउँधी गइली अचके अँगनवाँ,
उमड़ल अन्हियाँ, चनन महराइल रे

देश के रतनवाँ कहवाँ हेराइल रे
झकसी अन्हरिया, विपतिया के रतिया,
बजर परल हाय! फाटि रहल छतिया,
सुरुज छपित भइले, चनवाँ लुकाइल रे
देश के रतनवाँ कहवाँ हेराइल रे

सीता सुन्दर देवी 'प्रियंवदा'

जुग के बउध-अवतार राहुल जी

—स्वामी विमलानन्द सरस्वती

राहुल जी के नाम बहुत दिन ले सुनले रहलीं-उनकर लिखल पोथी साम्यवाद ही क्यों'? 'बाइसवीं सदी' आ 'तुम्हारी क्षय' -'शैतान की आँख'—'मझिझम—निकाय' 'विनय पिटक' पढ़ले त बहुत पहिलहीं रहलीं। अइसन साफ-साफ बाति लिखे वाला बिना डर भयवाला लेखक बहुत कम होखेलन। सचाई देखि के सरधा बहुत रहे। दूसर बाति कि पढ़ल-लिखल छोड़ि के राजनीति में अइला पर किसानन के प्राण स्वामी सहजानन्द सरस्वती से भी राहुल जी का पंडिताई के बहुत बखान सुने के मिलल रहे।

भागलपुर जेल में अपना मित्र भिक्षु नागर्जुन जी से राहुल बाबा का विषय में बहुत कुछ सुनलीं। पुरातत्व का ओर हमरो पढ़हीं का बेरी ले कुछ रूचि रहे ले। तिब्बत पहुँचि के संस्कृत-साहित्य आ बउध-धरम पोथिन के उनकर खोज सुनि के दंग हो जाये के परल। एह सभ कारनन से सरधा बढ़ते जात रहे।

राहुल जी के पहिला दरसन 'पटना में' १९३९ में 'जनता'-अखबार का दरबार में भइल। लम्बा चौंड़ा सुथर गोर बदन, चश्मा पहिरले मालूम भइल कि केहु सतजुगी, विद्यमान रिषी, आ पंडित के दरशन करत बानीं। बात चीत करे क मोका त मिलल ना बाकी ओतने कम भागि क बाति ना रहे।

दूसरी बेर बड़ा नेह से दउरल रामगढ़ कांग्रेस अधिवेशन में गइली पर राहुल जी पहिलहीं गोरी सरकार का पंजा में पड़ि के नजरबंद हो चुकल रहलन। स्वामी जी, सुबास बोस के दरसन त भइल बाकी राहुल जी का दरसन खातिर मोहे रहिगइल। नजरबंदी से छुटला का बाद राहुल जी के दूसरा दरसन बेजवाड़ा मद्रास में अखिल भारतीय किसान सम्मेल्लन का मोका पर सम्मेलन के सभापति स्वामी सहजानन्द सरस्वती का रावटी में भइल। राहुल जी का रुस जाये क बहुत चर्चा रहे। सुनलीं कि लेनिनग्राद विश्वविद्यालय में संस्कृत, तिब्बती, पाली, हिन्दी बोगयरह भाषा के पंडित (पढ़ावेवाला) होके विश्वविद्यालय का नेवता पर जा रहल बाड़न।

मन में बहुत सरधा-आदर आ प्रेम रहे कि जे कवनो पाठशाला-विद्यालय आ विश्वविद्यालय के वरदानना पाईं के आज अइसन पंडित हो गइल जेकरा के देखि के असंग, वसुवंधु आ धरमकिरती के इयाद हो जात बा।

आखिर महाकाल का रथ पर चढ़ि के राहुलजी सरग के डहरि नपलन। हमन का सभई ताकते रहि गइलीं जा। १९६३ उनहू के ले बीतलि। ई कइसन मनहूस वा कि नेपाली, गुलाब राय, शिवपूजन जी, देशरत्न, सियाराम शरण, डा० रघुवीर के लिहलसि आ हमन के भोजपुरी के अमर रतन राहुल बाबा के भी ले भागलि।

आजमगढ़ का धरती के मोह, भाई-बंधु परिवार के दुलार-छोह, मेहरारु के प्रेम आ सेवा कुछ इनके बान्हि के अँटका ना सकल। राहुल जी पक्का घुमक्कड़ रहलन आ होश सम्हरला का बाद सत्तर साल तक जिप्सिन नियर बराबर घूमते रहलन। राहुल जी

तिब्बत, इरान, जापान, चीन सँउसे एशिया-यूरोप के चउवा-चउवा छानि घललन। हिमालय का घनघोर जंगल के छनलन। घुमक्कड़ शास्त्र का लेखक का कब घुमला संतोख भइल ?

तिब्बत से पोथिन के गठरी, तसवीर, आ मूरति खच्चरन पर ढोइ के ले अइलो प जेकरा संतोख ना भइल आ कई बेर जे तिब्बत गइल, जेकर ले आइल खजाना पा के डा० काशी प्रसाद जायसवाल नियर खोजी विद्मान् आ इतिहास के पंडित अपना धन्य मानल।

पटना संग्रहालय जवना खजाना के पाइ के गद गद हो गइल आ संस्कृत क भुलाइल ग्रंथन का खोज के भड़ार बनिगइल। राहुल जी ग्रंथन का खोज में तीनिबे लासा गइलन।

आर्य समाज के समरथ उपदेशक के समय पाइ के सनातन धरम अपना शिविर पवलसि आ अपना के धन्य समुझलसि। पहिले पहिल एही रुप में राहुल जी के विहा के लोग देखल। १९३० में राहुल जी मठ छोड़लन त हरदम खातिर छोड़ि दिहलन। आजादी का लड़ाई में ऊ हजारीबाग जेल में पहुँचलन एइजा ऊ-समाजवाद के मनलन। 'बाईसवीं सदी' के रचना एइजे जेल में शुरू भइल। रूढ़ि आ गउचिन के तोरि के नियर चले वाला राहुल जी न त बिहार विद्यापीठ का आंगन में बन्हइलन न परसा मठ लेनिग्राद विश्वविद्यालय का सुथुर सोभासिंगार में। राहुल जी के रूसी-मेहरारू लड़िका मोह भी ना अँटका सकल।

राहुल जी के मउवती हिंदी-भोजपुरी खातिर वजर गिरला का समान वा। पंडि रामावतार शरमा खातिर राहुल जी का बहुत सरधा रहे। हमरा कई बेर उनका मुँह सुने के मौका मिलल रहेकि "ऊ आज का युग के गौतम कणाद रहलन ह"।

'बोल्गा से गंगा' में साफ लिखत लिखत-फ्रायड आ मरकस का प्रभाव में राहुल उपनिषद जुग का रिखी मुनी लोग के भी खरी खोटी कहलन। ओहू लोग के टी टिपनी कइलन। इनका लिखला के बहुत छानबीन आ काट छाँट भइल बाकी उन एकर तनिको फिकिर ना रहे। 'जय जौधेय' आ 'सिंह सेनापति' में भी राहुल जी के कल बहुत गहराई से चललि बा। राहुल जी—जवन कुछ लिखलन जनता खातिर लिखल जनता का ग्यान के बढ़ावे आ ओकर सतह ऊँचा करे खातिर लिखलन। संस्कृत-साहि का सभ काव्य आ दरसन के सार पदारथ हिन्दी का लोगन के देइ के राहुल जी संस्क जाने के डहरि सहज बना दिहलन। एह किसिम के उनकर ग्रंथ बा: "ऋग्वैदिक भारत"- ई ऊनकर अपना आप में विचित्र रचना बा, रिगवेद का समय के रिखीमुनि कइसन कप पनिहत रहलन, का सोचत रहलन का खात रहलन। कइसन उन बिनती होत रहे कवना देवता के विनय केतना बेर कइल गइल। कवना रिखी के वेद दान मिलल, शवरन का साथे आरज लोग के केतना भारी लड़ाई लडे के परल कसन मेहरा कइसन गहना पहिरत रहली स, बहुत बातन के झलक एह पोथी में मिलत बा। राहु जी का हिंदी सेवा के कीमत आँकल सहज नइखे। मधुमाछिन नियर दुनिया भर ले किसि किसिम के ग्यान बटोरि के राहुल जी मधु का रुप में हिन्दी का लोगन के दिहलन हिमाचल प्रदेश के यात्रा वरणन के हमन का सिर ऊँचा कइके दुनियाँ का सामने रा सकत बानीं। एह प्रदेश का जातिन का बारे में एतना पता क किमती बाति राहुल

लिखले बाड़न कि 'नृवंश विग्यान' के पंडित लोग पचीस बरिस बाद कही आ मानी कि ई घुमक्कड़ केतना मेंही बातन के खोज कइले आ बारीकी से पता लगवले बा। "किन्नर देश में" उनकर विचित्तर पोथी बा, जेकरा पढ़ला से गंधरब आ किन्नर का रहस्य के बहुत कुछ पता चलि जात बा। 'मध्य एशिया का इतिहास' त उनकर संसार प्रसिद्ध ग्रंथ ठहरल जेकरा के लाखों बरिस का ग्यान के खजाना कहल जा सकत बा।

आपन भोजपुरी कहानी के संग्रह-'जेहल कऽ सनदि', पर राहुल जी के विचार जाने खातिर हम प्रयाग पहुँचलों। ५६, जीरो रोड इलाहाबाद-किताब महल में पहुंचलीं त एगो दूत हमके पहुँचावे खातिर ले चलल, अग्रवाल के मकान में एगो कमरा में राहुल जी बइठि के कुछ लिखत रहलन। पहुँचे का पहिले मन में चहल पहल रहे। एक ओर त खुशी कि एतना बड़ा विदमान् से बतियावे आ अपना पोथिन पर राय लेवे क सोनहुला मोका मिलल बा। दूसर बाति कि डर आ शंका रहे कि एतना भारी पंडित से कइसे कइसे बातचीत कइल जाई। जइसहीं कमरा में बइठलीं मालूम भइल कि केहू बहुत पुरान परिचित दोस्त से बाति कइ रहल बानी। कईगो विदमानन के झमेला रहे बाकी राहुल जी सबसे पहिले हमार रचना 'जेहल कऽ सनदि' अपना हाथ में लेइ के उलटि पलटि के प्रेम से दस पांच पन्ना पढ़लन। दुइ चारगो कहनी सुनि के आपन राय दिहलन-समझवलन कि कहाँ कवन सुधार करे के बा। उनकर प्यार आ उत्साह दिहल जिनिगी भर इयाद रही।

एही बातचीत का सिलसिला में एगो प्रोफेसर राहुल जी से पुछलन कि रउवा त एक-एक छन समय के कीमत करीला। करीब दुइ बरिस लेनिनग्राद में रहलीं हाँ कइगो ग्रंथ लिखाइल ह? राहुल जी चट से उत्तर दिहलन कि एकहू ना। एतना कहि के अपना कुरता का थइली में ले एगो चाभी उनका के देइ के सामने धइल बकसा खोले के कहलन। बकस खुलल त कई दरजन कापी सरियावल धइल रहली स। राहुल जी बतवलन कि बाइस महीना में जरमन, फ्रेंच आ रूसी भासा के पुरातत्व, भासा शासतर मानुष-वंस-ग्यान के हजारों दुरलभ ग्रंथ पढ़ि के साढ़े चारि हजार पन्ना टिपनी (नोट) तइयार कइलीं। ई हमार मध्य एशिया कऽ एक लाख बरिस के इतिहास लिखे क मशाला ह। एतने ना। पांच मन जर्मन, रुसी आ फ्रेंच भासा के बड़े-बड़े ग्रंथ ओइजा ले ढोई के ले आइल बानीं आ एकर मदति लेइ के इतिहास लिखाई।

× × ×

१९४८ का जाड़ कऽ दिन रहे। हम परयाग में अपना संगी बउध विदमान नागारजुन जी का साथे 'किताबमहल' किहें संवारक (संपादक) के काम करत रहीं। अलोपी बाग से सटले ओ० टी० आर० लाइन का उत्तर हमन के डेरा-डंडा रहे। थोरहीं दूर पर डा० उदयनारायण तिवारी जी रहलन। टहलत-घूमत एक दुइ बेर राहुल जी के दरसन भइल। एक दिन अचके में नागारजुन जी हमसे कहलन कि अब रउरा कुछ दिन खातिर राहुल जी का साथ में, उनका सेवा में रहे के परी। उनका लिखे पढ़े में मदतगार होखे आ कागज पत्तर सम्हारे के परी। बस तीसरा दिन राहुल जी का दरबार में हमार आसन पहुँचि गइल। राहुल जी घुमक्कड़ रहलन। ओह खोजी विदमान के चैन कहाँ! अपना सुमति कुदारी के लेइ के जे दिनरात ग्यान में गड़ल बा, सुरसति का अथाह भंडार मेंले हीरा जवाहिरात ऊपर कइ रहल बा। ओकरा कब काहिल नियर बइठि जाई!

चउथा दिन हम राहुल जी का साथे काशी सारनाथ इसटीसन पर उतरलीं टमटम पर के सारनाथ धरमशाला पहुँचलींजा। राहुल जी साँझि का बेरा किताब घर पहुँचल

अँगरेजी के बउध साहित्त पर पचीसो ग्रंथ-वीछि वरा के निकालल गइल। " संस्कृति" नावँ के पोथी लिखाति रहे। इलाहाबाद में हिन्दुस्तानी एकेडमी का ओर भाखन करे के रहे।

दूसरा दिन भोर में साढ़े ६॥ बजे से लिखे के धुवाँ-धार काम चालू हो महापंडित राहुल जी बिजली का तेज चाल से पुस्तक बोलत जात रहन हम वड़ा सजग हो लिखे लगलीं। कहीं-कहीं हमरा अझुराइल शबदन के सझुराइ के आगे परे। कबे कुछ पछड़ि गइला पर दोहरावे खातिर राहुल जी के इशारा करीं त बोझ जनाय। बारह बजे राहुल जी के भोजन उनका कमरे में आ जाय। हम बउध लोग का साथे भंडार में भोजन करीं। भोजन बढ़ियाँ आ सफाई से मिले। एक हम आराम करीं। फेर लिखे के काम चले लागे। एह बीच का समय में भी राहुल आराम ना करसु आ पोथिन के चारपाई पर लेटले लेटल उलटत रहसु। पूरा एक तक सारनाथ धरम शाला में लिखक्कड़ी होती रहि गइलि।

एह बीच में हमरा बोध भइल कि समय के एतना कीमत समझे आ ओकर काम में लगावे वाला धरती पर बहुत कम लोग होखी। सवेरे टहलला का वाद बस ओकरा बाद लिखे पढ़े के काम। अगर बीच में केहु भेंट करे खातिर भारी से आदमी भी आ जाय त राहुल जी समय कें लेहाज करसु बाकी ओह आदमी के ना। साफ सुना देसु कि काल्हि सवेरे टहले का समय बाति होखी। चार बजे उठि के पाँच तक राहुल जी तइयार हो जासु! हमहुँ नहा धोइ के तइयार हो जाईं आ टहले चलि कबहूँ धर्मरक्षितजी, कबे, भदंत आनंद कौशल्यायन, कबे रामकृष्ण दास से भी हमरा मोका मिले।

(राहुल जी बहुमुखी ग्यान के खजाना रहलन हाँ। हिंदी-संसकीरत, अँगरेजी, रूसी, पचीसो भाषा पर उनकर पूरा अधिकार रहल हा। पाली, प्राकृत, हिंदी, संसकीरत, तिब्बती वोगयरह का ज्ञान क उनके जीयत जागत मूरति समझीं। विचार बहुत गंभीर साफ आ सझुराइल होत रहल ह। बहुत लोग उनके आज का बउध-अवतार-बोधि सत्व कहत रहल ह। हमरा समझ में आज का युग खातिर राहुल नागारजुन-असंग-वसुवंधु आ धरमकिरती का मिलल तेज के सरूप रहलि हाँ।)

एक दिन राहुल जी टहलत घूमत-सारनाथ से उत्तर पँजरे-अमर उपन्यासकार जी का जनम धरती लमही पहुँचि गइलन। प्रेमचंद जी के घर दुवार देखाइ के बतावे लगलन कि एतना बड़ा साहित्त के विदमान के हिनुसतानी लोग कदर नइखे न एइजा के देसी सरकार ओने ध्यान देति बा। प्रेमचंद जी के खपड़ा क देखलीं जवना में उनकर जनम भइल रहे। बाद क बनावल उनकर ईंट के मकान देखलीं। दूनों रोइ के आपन दशा बतावत रहे।

राहुल जी बतवलन कि रूस में भारत का लेखकन के बहुत इज्जति बा। ग्राद विश्वविद्यालय का ओर ले प्रेमचंद जयंती मनावल गइल। एकावन फुट ऊँच

के चंद, तसबीरि बनलि हजारो लेखक आ अपार जनता बटुराइल। सुरसती का अमर पूत के अपना सरधा क फूल चढ़वलसि।

सारनाथ में पूरा एक महीना काम कइला का बाद राहुल जी शांतिनिकेतन चले के तइयारी कइलन। तीसरा चउथा दिन बोलपुर इसटीसन पर उतरि के हमन का शांति निकेतन पहुंचलीं।

शांति निकेतन के तसबीर कुछ दूसरे लउकलि। हमन का त हिंदी भवन में आचारज हजारी प्रसाद द्विवेदी के पाहुन बनलीं जा। उनहीं किहें सभ इंतिजाम रहे।

शांतिनिकेतन विश्वकवि महारिसि रवीन्द्रनाथ ठाकुर के तपोभूमि, के दरसन उहो राहुल जी का साथे-बड़ा भागि कऽ बाति रहे।

एइजा आरे जिला का रामपूजन तिवारी से हिंदी भवन में जान पहचान भइल। ओह समय ऊ कुछ रोज से काम करत रहलन। शांतिनिकेतन में पेड़ के नीचे गोल चउतरन पर पढ़ाई कऽ काम होखे, गुरुदेव लोग के ऊँच आसन रहे आ विदारथी लोग आपन आपन आसनी बिछा के बइठसु जा। शांतिनिकेतन के भारी विदमान् लोग राहुल जी से भेंट करे आवसु जा। भिक्षु शांतिरक्षित चीनी भवन में चीनी भासा सीखत रहलन। क्षितिज मोहन सेन, रामकिंकर सिंह चीनी भवन में हिंदी के पंडित रहलन।

शांतिनिकेतन के किताबिघर (पुस्तकालय) बड़ा भारी बा। खास करिके भारत का पुराना इतिहास आ पुरातत्त्व (बृहत्तर भारत) से सम्बन्ध वाली बहुत पोथी ओइजा बाड़ी स। एक महीना हिंदी भवन में हजारी प्रसाद जी का पंजरा रहि के 'बौध संस्कृति' के लिखेकऽ काम बहुत तेजी से चलल। कइ सौ भारी ग्रंथन के खोज भइल। बहुत छान-बीन आ मदति मशाला जुटा के ग्रंथ रचना कऽ काम होत गइल। लगातार चउदह पनरह घंटा काम होखे। कबे सोलह घंटा तक भी काम होखे। एतना मेहनति चारि छव पंडित मिलि के भी ना कइ सकसु। शांतिनिकेतन के विदमान लोग बहुत सजग रहे। ओह लोग का राहुल जी का समय क पाबंदी क बाति मालुम रहे। भेटं आ बाति होखे बाकी समय से। हजारी प्रसाद जी कबेकाल दसपनरह मिनट खातिर आ जासु, कुछ साधारण बातचीत होखे-फेर दूनो महारथी दूइ ओर।

हमरा देखे में आइल कि शांतिनिकेतन के भारी-भारी विदमान् राहुल जी का आगा अपना के विदारथी समझसु जा। राहुल जी का पंडिताई क ओह लोग का लोहा माने के परे। राहुल जी के कवहीं खिसियात ना देखलीं। सदा दिवाली संत घर-हरदम हँसते चेहरा लउके। चिंताफिकिरि कवनो बाति के तनिको ना। भोजपुरी भाषा खातिर उनका मन में अगाध प्रेम रहे। बहुत बेर हमरा 'जेहल कऽ सनदि' के बड़ाई उनके करत देखलीं। कहानिन का भासा क बहुत बड़ाई करसु आ हजारी प्रसाद जी से हमरा साहस के भी सराहसु।

किताबि लिखे का बेर जुगन के इतिहास बहुत थोड़े समय में विचित्तर ढंग से कंठ हो जाय। जावा, सुमात्रा, बाली, मलाया, चीन, आ जापान के इतिहास क तसवीरी रोजे सामने आवे। शांतिनिकेतन में पूरा बत्तीस दिन बिताई के हमन का इलाहाबाद चललीं जा। परयाग में [illegible] दू दिन रहि के नागपुर-बरधा का ओर पयान भइल।

वर्धा में राष्ट्रभासा प्रचार समिति का भवन में भदंत आनन्द कौशल्यायन का ले राहुल जी का ठहरे क इंतिजाम रहे। वर्धा में पूरा पनरह दिन लिखे पढ़े में समय बिता के राहुल जी परयाग लवटलन।

एक दिन बरधा में मध्य प्रांत के भू० पू० गृहमंत्री द्वारिका परसाद मिसिर राहुल जी से भेंट करे अइलन। ऊ राहुल जी के आपन महाकाव्य 'कृष्णा भेंट कइलन। राहुल जी कहलन की एह घरी लिखे पढ़े कऽ काम हो रहल बा- टहले का बेर बाति होंई।

सवेरे जइसहीं टहरे निकललीं जा कि मिसिर जी आनू गइलन। वातची सिलसिला में राहुल जी उनका 'कृष्णायन' के चरचा कइलन। राहुल जी बत कि 'कृष्णायन' के अपना भूमिका में मिसिर जी एह ढंग या नाँव के नया महा बतवले बाड़न—ई त उचित नइँखे।

राहुल जी से ई सुनि के, आज से तेरह सौ साल पहिले भारत से बहुत दूर जाव जावी भासा के एगो कवि सतरह सरग में 'कृष्णायन' महाकाव्य—भगवान कृष्ण के जीवनी लीखि चुकल बा—मिसिर जी का अचरज जनाइल।

जावा सुबरन दीप—भारत से केतना दूर—जहाँ बहुत दिन ले संसकीरित के चार रहे जवन भारत के अंग रहे। जहाँ बउध-धरम आ शिव-वैसणवधरम के धजा समय में फहराइ चुकल रहे—ओइजा 'कृष्णायन' लिखाइल अचरज कइसे बा। जावी भ संसकिरित से निकललि बा। संसकीरित ओकर महतारी ठहरलि। तेरहवीं ईसवी ओइजा संसकीरित के पताका उड़लि रहलि ह। बाद में मुसलमानी धरम के डेग पहुँचला दुनिया दोसर भइलि।

हम बरिसन ले राहुल जी का संगे रहि के लिखे पढ़े के काम काज कइलीं। पर काशी, वरधा-शांतिनिकेतन मंसूरी, दारजिलिंग ले घुमलीं।

'बौध संस्कृति' 'किन्नर देश में' घुमक्कड़ शास्त्र, 'मधुर स्वप्न'-वोगयरह कि ओहनीच लिखइली स। संसकीरित के महापंडित आ विदमान स्वामी सहजानंद स अनेकन बेर कहसु कि-'राहुल जी काम करने के लिए अद्वितीय शक्ति और प्रतिभा हैं कई आदमी एक साथ मिलकर उतना कार्य नहीं कर सकते'।

असल में राहुल जी जुगपुरुष रहलन ह। उनका नियर लोग जुगन का बाद कबे जनम लेला। सत्तर बरिस के जिनिगी में करीब डेढ़ सौ ग्रंथ लिखल-सहज नइखे। सुनले रहलीं कि राहुल जी एक-एक छन समय के काम में बितावेलनि-ऊ आँखिन देखलीं। रेलि में चलत-फिरत भी उनके पढ़ेलिखे में लीन देखलीं। राहुल जी हि भासा, भारत के पुरान इतिहास, पुरातत्व आ बउध-साहित्त खातिर अवतारी जीव रह हिन्दी के जुग चंदवरदाई से, घींचि के सातवीं सदी में-सरहपा-स्वयंभू का जुग में ले गइल अपना खोज से साबित कइदिहलन कि उनकर बाति ठीक बा। तामिल तेलगू भाषा कविन पर भी राहुल जी के खोज भरलि किताबि पढ़लीं। चीनी भासा जाने आ जाये क राहुल जी का बहुत दिन ले चाह रहे। उहो चाह आखिर में पूरा भइल।

राहुल जी प्यार के मूरती रहलन। उनकर प्यार दुलार हमरा रग-रग में बा। कुछ दिन पहिले सुनलीं कि राहुल जी बीमार भइलन। भारत में दवा भइलि।

देश के लोग दउरि परल। आखिर में अपना धरमसंगिनीं कमला जी का साथे रूस भी पहुँचलन। दवा-बीरो भइल, बाकी कवनो फायदा ना जनाइल। दूई महिना वाद राहुल जी दिल्ली लवटि अइलन। दिल्ली से दारजिलिंग। कचहरी रोड से (ग्रिन रीजेज) हरियाली भरलि घाटी के बंगला। दस दिन भारत का धरती पर आपन देहि रखला क बाद उनकर देंहि माटी में मीलि गइलि। जश के देंहि चमकि रहलि बा, आ जुग-जुग तक कायम रही। मड़ई से महल अँटारी तक, किसान-मजदूर विदारथी पंडित विदमान सभ उनकर जश गाइ रहल बा।

‘कीर्तिर्यस्य स जीवति’

राहुलजी का भोजपुरी पुस्तकन के परिचय

—गणेश चौबे

स्वर्गीय राहुल जी के मातृभाषा भोजपुरी रहे। उनकर जनम आजमगढ़ जिला का कनइला गाँव में भइल रहे, ऊ काशी जी में संस्कृत पढ़लेन आ वाद में सारन जिला का एकमा मठ में वैष्णव साधु भइले। पाछे ऊ वौध हो गइले। उ हिन्दी में एक सौसे कुछ वेसिए ग्रंथ लिखले बाड़ेन आ बौद्ध धर्म का पाली ग्रंथन के हिन्दी अनुवाद कइले वाड़ेन। आगे चलके उनकर झुकाव राजनीति का तरफ हो गइल आ ऊ साम्यवादी हो गइले। ऊ सन १९४२ का आसपास भोजपुरी में आठ गो छोट-छोट नाटक लिखले जवना पर उनका सामाजिक आ राजनीतिक विचार के खुलासा छाप वाटे।

उनकर विचार रहे कि भारतवर्ष में जनपदीय भाषा का आधार पर प्रान्तन के गठन होखे के चाहीं आ ओह प्रान्त के राजभाषा आ शिक्षा के माध्यम ओह प्रान्त के जनपदीय भाषा होखे के चाहीं। उनकर खेयाल रहे कि आज के भोजपुरी क्षेत्र में ‘काशी’ आ ‘मल्ल’ दू पुराना जन पद शामिल बा जवना के अलग-अलग प्रान्त आ राजधानी होखे के चाहीं (मधुकर, जनपद-आन्दोलन-अंक, टीकम गढ़, १९४४) आ (हंस, बनारस, अक्टूबर, १९४२)।

उनकर भोजपुरी नाटक किताब महल, इलाहाबाद से छपल रहे। उनका एह पुस्तकन के व्योरा भोजपुरी व्याकरण के प्रसिद्ध विद्वान डा० उदयनारायण तिवारी के पुस्तक ‘भोजपुरी भाषा और साहित्य’ पृ० सं० ६१-६५, का आधार पर दिहल जाताः—

१. नईकी दुनिया, अंक संख्या ४, पृष्ठ संख्या ४०—आवे वाला साम्यवादी जुग के वरनन।

२. दुनमुन नेता, अं० सं० ५, पृ० सं० ४४—कांग्रेसी नेता के निन्दा आ किसान मजदूर राज के समर्थन।

३. मेहरारून के दुरदसा, अं० सं० ४, पृ० सं० ४०—औरतन का दुरदसा के वरनन।

४. जोंक, अं० सं० ४, पृ० सं० ४२—समाज के चूसे-वाला जमात के वरनन।

५. ई हमार लड़ाई ह—दोसरका महायुद्ध में जरमनी का खिलाफ लड़ेवाला का पक्ष में दलील।

६. देस रक्षक, पृ० सं० ३४—दोसरका महायुद्ध में जरमनी के खिलाफ भाग लेवेवा
सिपाहिअन के गुन गान।

७. जपनिया राछछ, अं० सं० ४ पृ० सं० २८—दोसरका महायुद्ध का समय जपानि
के अत्याचार के वरनन।

८. जरमनवा के हार निहचय, अं० सं० ४ पृ० सं० ३६—एह में जरमनी का हार
कामना कइल बा।

ऊपर लिखल नाटक अब प्रकाशक का पास से खतम हो गइल बा आ नइखे मि
अब ओतहीं से नईकी दुनिया, जोंक आ मेहरारुन के दुरदसा एके जिल्द में सन १९४
में छपल ह जे मिलत बाटे।

एकरा अलावा राहुल जी दिसंबर १९४७ में गोपाल गंज में सारन जिला भोजपु
साहित्य सम्मेलन का सभापति का पद से जे भोजपुरी में भाषण देले रहस, ऊ छपल
आ ओकरो के एक गो पुस्तक माने के चाहीं।

अरपित रउरा के नयना के लोरवा

भारत से तिब्बत ले जोतिया जगाइ के,
उजड़ल बगिया में चनन लगाइ के,
कहवाँ छपित भइले 'कमला' के भोरवा!
अरपित रउरा के नयना के लोरवा!
करुना भरल देह, प्यार के सगरवा,
सोतवा सनेहिया के, ज्ञान के अगरवा,
तड़पि रहल जेकर, 'जया'-'जेता'—मोरवा!
अरपित रउरा के नयना के लोरवा!
धरती के धनवाँ प सरग लोभइले,
हाय देवलोकवो में लालच समइले,
रउरा चरनियाँ में रउरे अँजोरवा!
अरपित रउरा के नयना के लोरवा!

—गीता देवी पाठक

एके सागे भाते

तीन के सरधांजली

—मनोरंजन

बाबू—राजेन्द्र बाबू-अपना वड़ भाई, साथी संघाती के राजा बाबू-विहार के बाबू-बाहर के लोग के राजेन्द्र बाबू, राजेन बाबू—बिहार के गाँधी देशरत्न भारत के पहिला राष्ट्रपति। सहज भाव से उहाँ का पूछले रहलीं—'सपरी'।

बात ह छपरा के। सन् १९३६ या ३७ में ठीक इआदि नइखे कि कौन साल ओहिजा विहार प्रादेसिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अधिवेसन भइल रहे अउरी ओकर सभापति रहलीं दुज्जी (द्विजजी)। ओ सम्मेलन में लोग प्रस्ताव पास कइल कि सभे आपस में सुद्ध हिन्दिए में वात करी। बाबू ओ समय छपरे में आइल रहलीं अउरी विहार बैंक में अपना पूज्य भाई इहां ठहरल रहलीं। लोग के मालुम भइल त वड़ा खुस होके दरसन करे गइल अउरी कहल कि हमनी अइसन अइसन प्रस्ताव पास कइली हँ। ऊ लोग हिन्दिए में बोलल लेकिन बाबू बोललीं ठेठ भोजपुरिआ में 'प्रस्ताव त नीमन बाटे जी, लेकिन सपरी'। लोग बूझ गइल कि कहां ले सपरे वाली वात ह।

बाबू कबो आपुस में सिवाय भोजपुरी के दोसरा बोली में ना बतिआवत रहलीं इहां तक कि जब रूस से क्रुस्चेव अउरी वुलगानिन दिल्ली में आइल रहले त उहां का ओ लोग से भोजपुरिए में बात कइले रहलीं काहे से कि डा० सतनाराएन, पी एच० डी० दोभासिआ के काम करत रहस अउरी सतनाराएन भोजपुरिए हवन। ई वात हमरा से सतनाराएने कहले रहस। रूसी नेता लोग के जब ई मालुम भइल कि राष्ट्रपति अपने बोली में ओ लोग से बतिआवताड़न त लोग बहुत खुस भइल।

अतने ना, बाबू देहात के जन सभा में अक्सर भोजपुरिए में भासन देत रहीं। भोजपुरी में चिट्ठी भी लिखत रहीं। हमरा पास उहाँ के एगो अइसन चिट्ठी भी बाटे राष्ट्रपति भवन दिल्ली से लिखल।

× × ×

महापंडित राहुल सांकृत्यायन के भी ईहे आदत रहे। उहां का त आपस में भोजपुरी में बतिआवत रहीं भासन भी देत रहीं लेख भी लिखत रहीं परचार भी करत रहीं। छपरा के साहित्य प्रेस से उनकर कुछ छोट-छोट नाटक भी परकासित भइल ह। भोजपुरी सम्मेलन के भासन भी छपल ह। 'जरमनवा के हार निहचय' के एगो प्रति हमरा पास होइबो करी।

राहुलजी से हमार आपन बहुत घनिष्ठता रहे। बनारस में उहां का हमरा इहां बराबरे आवत जात रहीं। ओघरी उहां का बौद्ध भिक्खु रहलीं। आखिरी बेर जब सन् '३७ या' ३८ में उहां से हमरा ओहिजा भेट भइल रहे तब उहां का रूस मे लवटि के आइल रहलीं। हमरा के बहुत सा फोटो देखौलीं अउरी कहलीं कि 'हम एगो जिन्दा देस से लवटि के अइनी ह'। अब एहिजा के लोग के जगावे के काम में लागब। हमरा ओवेरी मालुम न रहे कि उहां का पूरा-पूरा साम्यवादी प्रभाव में आ गइल बानी। ओकर थोड़िके दिन

के बाद उहाँ का खुल के साम्यवादी गृहस्थ हो गइलीं अउरी आखिरी दम ले गृहस्थी
बोझा ढोअत रहलीं।

परमहंस बाबा दामोदार दास साधु, बौद्ध भिक्खु त्रिपिटकाचार्य महापंडित राहु
सांकृत्यायन, साम्यवादी गृहस्थ श्री राहुल सांकृत्यायन बहुत रंग उहां का बदललीं लेकि
महापंडित उहां का अंत अंत तक रहलीं।

एक सो सत्तर किताब छपल बा। कई गो भासा जानत रहीं लेकिन जनप
भासा के परचार के विसेस महत्त्व देत रहीं। उहां का चाहत रहीं कि भोजपुरी
भोजपुरी रहे, पढुआ लिखुओ के भोजपुरी ना। 'संस्कृत' के सांसकिरित अउरी स्त्री
इसतिरी बना देल जाओ। मातृभासा त मतारी भासा हइए ह।

बौद्ध साहित्य, जात्रा साहित्य, शुद्ध साहित्यिक साहित्य, अनुसंधान, ओगै
ओगैरह त बड़ले बा हिन्दी वाङ्मय त उनका के भूलिए न सके। भोजपुरिआ लोग
उनका कवो न भुला सके।

× × ×

हिंदी भूषण बाबू शिवपूजन सहाय के जीवन हिन्दिए के सोभा बढ़ावे में बीत
लेकिन भोजपुरी पर उनकर कम छोह ना रहे काहे से कि उहाँ का रहन सहन, बोल चा
सभ में ठेठ भोजपुरिए रहलीं। उहां का 'देहाती दुनियाँ' के लेखके ना रहलीं-देहा
दुनिया के जीव भी रहलीं।

'रहरी में रहरी पुरान रहरी'
डोली में के कनिया हमार मेहरी'—केकरा ना इयादि होई !

हमरा इयाद बा कि राजेन्द्र कालेज में तुलसी जयन्ती के अवसर पर भासन
बेरी उहाँ का बतलौले रहलीं कि कइसे गोसाईं तुलसी दास जी अपना रामचरितमान
में भोजपुरी के काफी बेवहार कइले वानीं। और भासन में खास तौर से उहाँ का वि
पत्रिका के एगो भजन में भोजपुरी कहारन के बोली के जिकिर कइले रहलीं।

'विषम कहार भार मदमाते चलहिं न पाउं बटोरा रे,
मन्द विलन्द अभेरा दलकन पाइय दुख झकझोरा रे,
काँट कुराय लपेटन लोटन ठावहिं ठाउँ बझाऊ रे,

जस जस चलिय दूरि तस तसनिज बास न भेंट लगाउ रे।

शिवजी भोजपुरी के सम्बन्ध में कुछ विसेस लिखे चाहत रहलीं लेकिन दो
लोग से उनका फुर्सत कहाँ। दोसरे के लिखल सुधारे में, अउरी दोसरे खातिर वेगार
में ए तपसी के जिनगी खतम हो गइल।

राम कहत चलु, राम कहत चलु, राम कहत चलु भाई रे
नाहिं त भव वेगार मँह परिहौ, छूटत अति कठिनाई रे

× × × ×

माघ में शिवपूजनजी, फागुन में राजेन्द्र बाबू आ चैत में राहुल जी-तीन महीना
एक एक कर के हमनी के तीन गो अनमोल हीरा छिना गइल। काल के त ईहे हाल

'फूले फूले चुनि लिए,' सत्तर वरिस के ऊपर अउरी अस्सी वरिस से नीचे के उमिरि में तीनों आदमी दुनिया से उठि गइल। 'सोचनीय दसरथ नृप नाहीं'।

× × × ×

शिव पूजन जी 'हिन्दी भूषण' रहलीं। भारत सरकार उहाँ के 'पद्म भूषण' के उपाधि देले रहे, लेकिन, भारत में पद्मभूषण ढेर लोग वा हिन्दीभूषण एगो शिवेजी रहीं। राजेन्द्र बाबू 'देशरत्न' रहलीं। राष्ट्रपति, पद से हटला के वाद वाजाब्ते उहाँ के 'भारत रत्न' के रत्न उपाधि देल गइल। लेकिन, भारत में भारत रत्न के उपाधि ढेर लोग के दिआइल ह। देशरत्न एगो राजेन्द्र बाबू रहलीं दोसर देशरत्न कहवाँ से आई।

राहुल जी महापंडित रहलीं। भारत सरकार उहाँ के पद्मभूषण उपाधि देवे के घोषणा कइलस लेकिन ओकरा के लेवे के पहिलहिं उहाँ का आपन चोला बदल देलीं। महापंडित उहाँ का अन्त अन्त तक रहलीं। पण्डित ढेर लोग भइल लेकिन महापण्डित एगो राहुले जी भइलीं।

तीनो आदमी अपना उदाहरण से बतला गइले कि चाहे केहू के सेवा करीं लेकिन अपना मातृभासा के सेवा कबहूँ ना छोड़ब।

हिन्दी ह भारत के भासा। ऊहे एक राष्ट्र के आसा।।
हम ओकरो भंडार बढ़ाइब। ओहू में बोलब ओ गाइब।।
तबो न छोड़ब आपन बोली। चाहे केहू मारे गोली।।

भोजपुरी के सपूत शिवपूजन बाबू

—गणेश चौबे

स्वर्गीय शिवपूजन बाबू के पहिले-पहिल दर्शन हमरा ता० १२-४-४२ के भइल जब ऊ बिहार साहित्य सम्मेलन का मोतिहारी वाला सालाना जलसा में भाग लेवे वास्ते आइल रहस आ अन्तिम दर्शन ता० १२-१-६३ के उनका स्वर्गवास का नव दिन पहिले भइल जब हम उनका मीठापुर वाला निवास-स्थान पर मिले गइल रहीं। ओह दिन जब हम उनका तबियत के समाचार पूछनी त ऊ हँस के जवाब देले-'जे दिन चल जाता, अच्छे जाता। कवनो खास गड़बड़ी नइखे।' हम फेर पूछनी एह घड़ी राउर भोजन का चल रहल बा, ऊ जवाब देलें 'उहे पहिलका भोजन, जौ-चना के रोटी आ साग'। हम करीब एक घंटा तक उनका से बातचीत कर के विदा लेनी। हम का जानत रहीं कि आज के ई मिलन अंतिम बा!

सन् १९३९ ई० का दसहरा का छुट्टी में हम भोजपुरी लोक गीतन के संग्रह करे के शुरू कइनी। ओह समय आज अइसन पढ़ल लिखल लोग का लोक साहित्य का तरफ झुकाव ना रहे, पत्र-पत्रिकन में लेखो छपे में दिक्कत रहे आ सबसे बड़ा डर त ई रहे कि एतना मेहनत से जे संग्रह होता, ओकरा के छापे ला कोई प्रकाशक मिली कि ना। ओह समय हम बिहार में एक अइसन आदमी का खोज में रहीं जे हमे रास्ता देखावे, जे हमरा लेखन के छपे के इन्तजाम कर देवे, जे हमरा संग्रह के छपवा देवे के दिलासा देवे। हम चारो ओर नजर दउरा के देखनी, लेकिन हमरा शिवपूजन बाबू के छोड़ के

दोसर केहु अइसन आदमी नजर ना आइल। ऊ नया लेखकन वास्ते 'गरीब परवर' आजे उनका से जइसन मदत खोजे ऊ तइयार हो जास।

हम पहिले-पहिल १९४१ ई० का अप्रील महीना में उनका नामें एगो चिट्ठी जवना में हम अपना लोक साहित्य संबंधी काम के व्यौरा देले रहीं आ उनका से चहले रहीं। ऊ तुरंते हमरा चिट्ठी के जवाब देलें, जवना में हमरा काम के बड़ाई हमार लेख छपवा देवे के आ हमर पुस्तक तइयार भइला पर ओकरा वास्ते प्रकाशक देवे के आसा-भरोसा देल रहे। ओकरा बादो जब-जब उनकर चिट्ठी हमरा ओह में हमर उत्साह बढ़ावल रहे। शिवपूजन बाबू पहिले हिमालय के संपादक बाद में साहित्य' के संपादक भइलें। ऊ आग्रह कर के हमरा से एक लेख लेके में छपलें आ अइसहीं दू लेख 'साहित्य' में छपलें। जब ले ऊ एहदुनू पत्रन के रहले, ई दुनू पत्र हमरा मुफ्त मिलत रहल। ऊ १९ जुलाई १९५० के राष्ट्र भाषा के संचालक भइले आ ता० २८-८-५० के हमरा के चिट्ठी लिखलें अगर राउर ग्रंथ होय त भेज दीं, परिषद छापी। हमर ग्रंथ तइयार ना रहे, एह से हम ना भेजनी शिवपूजन बाबू त अपना वचन के पालन कइलें। सन् १९५९ ई० में हमरा राष्ट्र परिषद से 'भोजपुरी भाषा और साहित्य' पर निबंध पढ़े के निमंत्रण मिलल। हम निबंध तइयार कर के उनका पास भेज देनी। जब परिषद का जलसा में ओकर कॉपी पढ़े ला मिलल त हम देखनीं कि ओह में जे कुछ जरूरी बात लिखे के छूट रहे, ओकरा के ऊ नीचा टिप्पणी में देके निबंध के कमी दूर कर देले ई रहे उनकर भोजपुरी के ज्ञान।

शिवपूजन बाबू से हमरा बराबर चिट्ठी-पत्री होत रहल। उनकर भेजल चिट्ठी हमरा पास बाटे। ई सब चिट्ठी सुन्दर अच्छर में लिखल बाटे आ ओह में काट-कूट नइखे। कवनो-कवनो उनकर चिट्ठी त अइसन बा कि ओकरा के पढ़े में रस मिलेला। एह में उहो सब चिट्ठी शामिल बा जे ऊ राष्ट्रभाषा परिषद का का हैसियत से भेजले रहस। ऊ सन् १९५९ ई० का पहिली सितंबर से परिषद से गइले। उनकर आखिरी चिट्ठी ता० ११-९-६२ के बा जवना में ऊ राजेन्द्र ग्रंथ वास्ते हमरा से लेख मगले रहस। हम लेख ना भेज सकनी, तबहुओं ऊ ओह का छपला पर ओकर एक कापी हमरा वास्ते भेजवा देलें। जब तक ऊ जीअलें, ऊ के इआ ई कहीं भोजपुरी का एह सेवक के ना बिसरवलें आ भोजपुरी का लोक के जे हमर विशाल संग्रह बा, ओह में शिवपूजन बाबू का आशीर्वचन आ बढ़ावा के बड़ा हाथ बा।

भोजपुरी भाषा पर ओकरा प्राचीन आ नवीन साहित्य पर आ ओकरा साहित्य पर हमरा बहुत बेर उनका से बातचीत, राय विचार आ चिट्ठी-पत्री करे के मिलल बा। हम जवना समय भोजपुरी लोक साहित्य के संग्रह शुरू कइनी ओह उनकर ई विचार रहे कि ब्रज भाषा आ अवधी लेखा भोजपुरिओ हिन्दी के एगो ह, चाहे ऊ लिखल होय इआ-जबानी, ऊ हिन्दी के संपति ओकरा संग्रह से भंडार बढ़ी आ ओकरा प्रकाशन से हिन्दी के शोभा बढ़ी। ओह घड़ी ऊ भोजपुरी नया साहित्य का रचना वास्ते, चाहे ऊ गद्य में होय इआ पद्य में, कवनो तरह

आन्दोलन चलावे का पक्ष में ना रहस। ऊ कहस कि भोजपुरी के अध्ययन जरूर होखे के चाहीं, लेकिन हिन्दी का माध्यम से। उनकर खयाल रहे कि अगर क्षेत्रीय भाषा में रचना का ओर विद्वानन के ध्यान खिंच जाइ त शक्ति बँट जाई आ ऊ हिन्दी का हक में अच्छा ना होई। लेकिन तबहुँओ ई बात जरूर रहे कि अगर उनका सामने भोजपुरी के सुन्दर कविता आ जाय त ऊ ओह में बहुत रस लेस। मातृ भाषा भइला का कारने भोजपुरी से उनका बड़ा प्रेम रहे आ ऊ जब-जब हमरा से खानगी में वातचीत करस भोजपुरिए में करस।

लेकिन समय का फेर से शिवपूजन वाबू भोजपुरी में रचना के पक्षपाती हो गइलें। भोजपुरी का अड़ोस-पड़ोस में आ देश का दोसरो-दोसरो हिस्सा में क्षेत्रीय भाषा में साहित्य रचना वास्ते आन्दोलन जोर पकड़त गइल आ धीरे-धीरे सरकार से क्षेत्रीय भाषा का मान्यता मिलत गइल। शिवपूजन वाबू का सरकार के ई नीति पसंद न रहे। ई आन्दोलन इहाँ तक वढ़ गइल कि विहार सरकार एह प्रस्ताव पर विचार करे लागल कि विहार का हरेक विद्यार्थी का क्षेत्रीय भाषा का रूप में मैथिली वंगला इआ उर्दू, एह तीनू भाषा में से एक पढ़ही के होई। ई तीनू भाषा भोजपुरी से बिल्कुल अलग बा आ एह सब के अपन-अपन अलग लिपि बा। ई प्रस्ताव त त अमल में ना आइल, लेकिन ई वात खुलासा हो गइल कि हवा के रोख कवना तरफ वा आ भोजपुरी भाषी लोग का सतर्क हो जाए के चाहीं। ई सब के प्रभाव शिवपूजन वाबू पर पड़ल। पहिले से त उनकर ई खेआल रहे कि भोजपुरी भाषी लरिकन के भोजपुरी ना पढ़ा के हिन्दिए पढ़ावल जाता त कवनो हर्ज नइखे, लेकिन एकरा बाद उनकर खयाल हो गइल कि अगर कबहुँ-कबहुँ हरेक विद्यार्थी का क्षेत्रीय भाषा पढ़हीं के होई त काहे ना भोजपुरिओ में साहित्य-रचना कइल जाय जे जरूरत पड़ला पर ऊ क्षेत्रीय भाषा का रूप में भोजपुरी विद्यार्थियन के पढ़ावल जा सके। भोजपुरी विद्यार्थियन का अपन क्षेत्रीय भाषा रहलो पर दोसरा क्षेत्र के भाषा जबरदस्ती पढ़े के होई, एह बात के खेयाल कर के ऊ स्वर्गवासी होखे का पहिले भोजपुरी में साहित्य रचना के पूरा समर्थक बन चुकल रहस।

साहित्यिक "शिव !"

—कमला प्र० मिश्र 'विप्र'

विद्वान लोग लिखले वाड़न जे स्व० शिवपूजन सहाय जी खाली साहित्ये के ना निरमान करत रहीं बलुक उहाँ का साहित्यकारन के भी सफल रचनिहार रहीं। स्व० सहाय जी हमरा जन्मभुंइ' सोनवरसा से छवे कोस पर के वासी रहीं बाकी उहां से परिचय भइल बाबा विश्वनाथपुरी (वारानसी) में। परिचय का पहिले हम उहां के कई बेर देख चुकल रहीं। उहां के मुखवटा श्री लालबहादुर शास्त्री जी से मेल खात रहे एही से हमरा भरम रहे जे इहाँ का शास्त्री जी के भाई होखव। एक दिन स्व० प्रेमचंद जी साहित्यकार लोगन के चरचा करत कहलीं :—

'दुर्भाग्य है उस नव साहित्कार का—जो साहित्यिक शिव से सम्पर्क स्थापित नहीं कर पाया'।

स्व० प्रेमचंद जी का कहला का ठीक दोसरा दिन सहाय जी से परिचय भइल। हमरा में कवनों अइसन गुन ना रहे जवना से शिवजी के ओइसन स्नेह पावे के हम भागी रहीं बाकी हमरा जनाइल जे जवारी होखे का नाता से हमरा के उहांका वहुत वड़ आदर

दे रहल बानीं। परिचय भइला का बाद उहां किहां आवेजाए लगला पर भरम भा हम देखलीं जे केहू उहां खातिर ओहटाह ना जनात रहे। उहां का उदार भइले फल रहे जे सभत्तर से साहित्यकार लोग कांपी किताब लेइ के उहां किहां सोरहो घरी रहत रहन। शिवजी के एकही दुगो ना बलुक अनेकन संसमरन हमरा हृदय में लिखल

स्व० सहाय जी के जन्म सं० १९५० में बक्सर अनुमंडल का उनुवांस गांव में रहे। उहां के पिता जी स्व० सिद्धेश्वरी प्र० सहाय जी सदाचार के नमूना रहीं। जी के प्राथमिक शिच्छा भइल गंवई में आ स्कूली परीच्छा पास कइले रहीं कायस्थ अकादमी हाई स्कूल से। परिवार क पूंजी पोढ़ि ना रहला से महाविद्यालय में बेंवत ना बइठल। इहे कारन रहे जे उहांका रोटी चलावे खातिर रोजी ओटियां बनारस कचहरी में नकलनवीसी कइला से पेट के भूख बुताई सकति रहे बाकी साहि भूख से उहांका अधिका बेकल रहीं। सन् १९१३ में उहांका रोजी धइले रहीं आ का साथ साहित्य सेवा का ओर लवटि परलीं डेढ़े साल वितत-बितत।

सन् १९१५ में उहांका कायस्थ जुबली स्कूल में पढ़ावे लगलीं आ चले साहित्य साधना भी एजहने ढंग से। सन् १९१७ में उहां के आरा टाउन स्कूल के कारी लोग अपना स्कूल में बहाल कर लिहल। शिवजी का सदाचार आ उदा अनधा संस्थान क लोग उहां खातिर पलक पसरले रहन। शिवजी चहते उहां का आराम बदे बहुत ठहर निठाह बेंवत बइठि जाइत बाकी उहाँ का बाद में कइलीं देश का गोहार पर राष्ट्रीय विद्यालय में पढ़ावल। पढ़ला पढ़वला का साथ के निजगुत नजर समाज आ देश का ओर भी रहति रहे।

सन् १९२१ में जब शाहाबाद से 'मारवाड़ी सुधार' पत्रिका के प्रकाशन भइल सम्पादन के भार दिहल गइल शिवजी का कान्ह पर। ओह पत्रिका का अलावे बंगाल आ उत्तर प्र० से प्रकाशित होखे वाला—आदर्श, मौजी, मतवाला, गंगा, उपन्यास तरंग, जागरण, गोलमाल, हिमालय आ साहित्य वगैरह दर्जनन पत्रन क सफल सम्पादन कइले रहीं। शिवजी के सम्पादित अभिनंदन ग्रंथन आ पुस्त त बाति अलग रहे उहां क एक एक रचना क समालोचना पोथिए में संइतल जा सके सहाय जी के पहिली कहनी ह 'मुंडमाल' ऊ कहनी भारतीय नारिन क आत्म का अलावे नारी समाज का गरब के नमूना बा। उहां के वीणा, हतभागिनी, प्रा चन्द्रतारा वगैरह भी पढ़ही लायक बा। सहाय जी के बाल साहित्य में त भरपू बड़ले बा उहांका रेखा-उठानन क अल्हड़ि-जवानी के जवन जोगइ के जइसे जिनि सांच में सरेख गइल बानी, जुग जुग गवात रही।

शिवजी क बने आ बनावे क ढंग बड़ा बेजोर रहे। उहां का विदारथी महाविद्यालय के मुंह ना देखलीं बाकी प्राध्यपके ना बलुक विभागाध्यच्छ बन के विद्यालय के महान बना दिहलीं। एक बेर उहांका महान आ समान पर कहे ला उहांका कहलीं त बहुत कुछ बाकी भगवान शंकर आ मंगलमुरत गनेस जी के जे कइलीं, मन मोहि गइल। उहांका कहलीं,:—

'भगवान शंकर इस लिए महान समझे जाते हैं कि विश्वकल्याण की कामना से, आपने महाप्रभु का स्मरण कर हलाहल की घूंट अपने गले में उतारलीं'।

स्व० सहाय जी जवना दिन बक्सर में सरस्वती पुस्तकालय के नेव देवे आइल रहीं गनेश जी का गुन के दोहरावल बतवलीं :—

'गनेश जी का पेट बड़ा है और कान भी बड़े हैं। उनके कानों में बहुत सी बातें आती हैं जिन्हें बिना प्रयास ही गणेश जी अपने उदर में समाहित कर लेते हैं। यही कारण है कि सर्व प्रथम गणेश जी की पूजा होती है'।

बिहार राष्ट्र भाषा परिषद क बीहड़ बोझ उहां का कपारे परला पर ओह लाज क त उहां का सज से निबुकइवे कइलों, हिन्दी साहित्य और बिहार' नाम के ग्रंथ उहांका बरदान सरुप छोड़ गइल बानों। ओह घरी उहांका हमरा किहां एगो पत्र देले रहीं,:—

आदरणीय विप्रजी !

सादर प्रणाम के पश्चात् विदित हो कि बिहार राष्ट्र भाषा परिषद की ओर से 'हिन्दी साहित्य और बिहार' नामक ग्रंथ प्रकाशित होने जा रहा है जिसे आप की सेवा सादर अपेक्षित है। आशा है निकट भविष्य में ही अवश्य दर्शन देंगे।

आपका

शिवपूजन

पटना गइला पर आग्या पवलीं जे वारानसी में बिहार का साहित्य सेवा करनिहार बगसर अनुमंडल का साहित्य सेविन के भी संग्रह कइ के परिषद में भेजल जाय। है, पं० उमापति शर्मा (चिलहरी) का बारे में खास ध्यान देवे के कहल रहे। एह काम में हम इचिका ढिलाई कइलीं तवले तवन बज्र अस ओरहन पवलीं जे ओही दिन मुड़िआई के आपन भार उतारिए के दम लेबे के परल।

एह पारी जन गनना का बेर सहाय जी बगसर में सरस्वती उद्यान के उदघाटन करे आइल रहीं। उहां से हम पुछलीं जे भासा का खाना में अकेले भोजपुरिए लिखावल जाई कि अउर कुछ? एह पर उहां का कहलीं,:—

भाषा शक्ति तथा राष्ट्र भाषा महाशक्ति है और राष्ट्र साक्षात् देवता। हमें मातृ भाषा भोजपुरी का आदर करते हुए राष्ट्र भाषा की आरती उतारनी है। भाषा अथवा राष्ट्र का अनादर तत्काल तो हानिकर नहीं होता मगर भविष्य के लिए महाभयानक परिस्थिति उत्पन्न कर देता है।

उन्हांका साफ कहलीं जे 'हिन्दी के सिर आप बिन्दी लगा चुके हैं। अतः आप 'भोजपुरी—हिन्दी' लिखावें'।

सन् १९६० का २३-२४ जनवरी के राजाभोज का भिहिलाइल भवन पर अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन क नेंव पड़लि। ओह समारोह क सभापति रहीं पं० उदयनाराय तिवारी जी प्रयाग आ उद्‌घाटनकर्ता शिव जी! भाई पाण्डे नर्मदेश्वर सहाय का साथ जब हम एह संवाद के लेइके पटना भगवान रोड वाली कुटिया में पहुंचलीं त शिव जी बड़ा खुस भइलों। उहां का मोतियाबिंद अपरेशन से ओह समारोह में ना पहुँचलों बाकी हमहन उहां के उपदेश आ आसीस दुनों पवलीं। उहांका घंटन बतिअवला क बीच बतवलीं,:—

बिखरल साहित्य क संग्रह, सबल साहित्य क निरमान, पद आ पदारथ खातिर लोभ निबारन, राष्ट्र भाषा हिन्दी का सम्मान खातिर, जागरुकता आ पवित्र हृदय से संस्था क सेवा पर बिसेस बल दिहीं सभन।

दि० २६-१२-६२ के भोजपुरी साहित्य मंडल बगसर क ११ वां वार्षिक अधिवे भइल जवना के श्रीगणेस कइले रहीं भारत के ऊच न्यायालय क मुख्य न्यायधीश। ओ अवसर पर मान्य अतिथि रहीं शिव जी। रोग से उहां का ढेर किरिसतिआह हो गइ रहीं इहे कारन रहे जे बगसर उहां का ना आइ सकलीं उहां का कहलीं जे हम वि का मेला का बेर बगसर चलव काहें जे हम घर पर राखलि पुस्तकन क महर्षि विश्वामि महाविद्यालय क दान कर चुकल बानीं। अभाग बस सहाय जी के दिन पर दिन ग गढ़ आए लागल। संकरात का समय उहां किहां गइला पर आगा खातिर आस ला के परल। अभी टक लगाइ के टुकुर टुकुर ताकते रहीं तवले २१ जनवरी के उ माटी का मंदिल से नाता तूर के बैकुंठ वास लेइ लिहलीं। भाई नर्मदेश्वर सहाय जी आग्या इ जे हमहूं शिव जी पर कुछ लिखीं। भाई सहाय जी क आग्या पालन प्रतीक भेज रहल बानी सेवा में ई नन्हीमुंट क निबंध 'साहित्यिक शिव'।

पूज्य आचार्य शिवपूजन सहाय जी, जब जीअत रहीं।

——श्री सिपाही सिंह

२१ जनवरी १९६३। सुनलीं कि पूज्य आचार्य शिवपूजन सहाय जी के गंगाला हो गइल; उहाँ का एह संसार से विदा होके हमेशा खातिर ओह जगह चल गइलीं ज से लौट के केहू आज ले ना आइल चसमा के भीतर से नेह बाँटेवाली आँखन के दरसन ना हो सकी। बुझाइल, जइसे जिनगी के समूचा सवादे बदल गइल।

उ दिन हमरा खातिर बड़ा सगुनिया रहे जबकि पहिले-पहिल सन् १९४१ जुलाई में आचार्य जी के नेह के निकट से पावे के हमरा मोका मिलल। उहाँ का रा कालेज छपरा में प्रोफेसर रहीं, ओ हम आई० ए० में नाम लिखवलीं। हमरा भोज लोकगीत, लोककथा ओ बुझौवल वोगैरह के जमा करे के बड़ा शौक रहे ओहि सिल में हम जनलीं कि पूज्य आचार्य त चलता-फिरता हाड़ मांस के एगो साक्षात् विश्व हइँ। अगाध विद्वता वो दुर्लभ ज्ञान के सहज स्नेह में लपेटल पाके हमार श्रद्धा उहाँ का चरण में समर्पित हो गइल।

एने उहाँ के कमजोरी, उमिर वो बिमारी देख के मन में विसवास हो गइल कि अब उहाँ का ढेर दिन ना चले सकब। लेकिन उहाँ के जीअत रहला से केतना प्रे मिलत रहे आ आँख मूँद लेला से केतना निराशा होता। इहँई आके आदमी सबसे कम जीव साबित हो जाला।

हाथ में हाजिरी बही वो दू-एगो किताब लेले उहाँ का जवना चाल वो सुभाव हमनी का क्लास में आवत रहीं उ आज भी आँख का सामने एमदम परगट बा। सिर ऊजर धप धप टोपी; बदन में ऊजर बकुला के पांख कुरता पर हलका रंग के बूना छीं अइसन बंडी; नीचे सफेद धोती वो चमकावल जूता। ई रूप का कभी भोर पड़ सकेला!

इयाद करे के दिमागी ताकत उहाँ के एतना जबरदस्त रहे कि कवनों अइसन ना रहे जवना के पूछला पर उहाँ का ओकर प्रयोग के उदाहरण कवनो-ना-कवनो सं श्लोक से या हिन्दी चाहे उर्दू कविता से ना दे देत होइँ।

एक बेर के बात ह कि आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के एगो लेख में हमरा "चक्कवै" शब्द मिलल

हमरा खातिर ई अतना विचित्र शब्द रहे कि सोचलीं कि आचार्य जी के छकावल जा सकता। एगो साथी से कहली कि चलऽ आज हम एगो अइसन शब्द चुनले वानीं कि ओकर प्रयोग कवना कविता में भइल बा से आचार्य जी कभी भी बतावे ना सकवं। ओह महान आत्मा के संसर्ग में आ गइला का बाद भी अतना हलुक बुद्धि हमार रहे कि हम उनका के जाँचे चललीं, छकावे चललीं। सुनतहीं उहां का सहज भाव से मुसका के कहलो "—एकर प्रयोग त रामायने में बा—"ससुर चक्कवै कोसलराउ" ओकरा बाद उहाँ का शुक्ल जी का लेख के भी चर्चा कइलीं। हम अपना मन का चोर के उहाँ का सामने जाहिर कके आपन झेंप मिटावे के चहलीं—लेकिन ओह स्नेह का समुन्दर में हमरा अइसन झांकर-झिकटा से कवनो हलचल होखेवाला थोड़े रहे।

हास्य के त एको मोका उहाँ का हाथ से ना जाये देत रहीं। एक बेर उहाँ का गुप्त जी के 'पंचवटी' पढ़ावत रहीं। सुपनखा भेस वदल के राम-लछुमन का लगे आइल रहे। एगो पांति मिलल "कटि के नीचे चिकुर जाल से उलझ रहा था वायाँ हाथ"।

मुड़ी नवा के चश्मा का ऊपर से आँख कके क्लास का तरफ देख के उहाँ का कहलीं—

'यहाँ कल्पना को अधिक दौड़ाने से कोई लाभ नहीं, क्योंकि जिस चिकुर जाल से वायाँ हाथ उलझ रहा था, वह कटि के नीचे सिर से ही आ गया था।" गुढ़ अर्थ से भरल वात सुन के समूचा क्लास पाँच-सात मिनट ले हँसते रह गइल; लेकिन आचार्य जी खुद जरा-सा भी ना हँसलीं। विलकुल गंभीर वनल रह गइलीं।

उहां का अपना अगाध अध्ययन के प्रदर्शन कवहू ना कइलीं, लेकिन मोका पाके जब कभी ओकरा दरसन लोग का भइल तब ओकरा तेज से सभकर आँख-चौंधिया गइल। एक बेर, राजेन्द्र कालेज में उर्दू के एगो लमहर जलसा भइल। देश भर के बड़का-बड़का आलिम-फाजिल लो आइल रहे। पूज्य आचार्य वहुत सकुचा के, दवाव में पड़के, बोले लगलीं त कहलीं कि हम त हिन्दी के सेवक हईं; ओकरे माध्यम से उर्दू साहित्य के बारे में थोड़ा-बहुत जे जाने के मिलेला ओतमे जानतानी;—एकरा बाद उहां का आधुनिक उर्दू साहित्य का बारे में तवन-तवन वात बतावे लगलीं कि सुन के सब लोग अचरज में पड़ गइल, वो सांस रोक के घंटन सुनत रह गइल। आखीर में सदर का कहे के पड़ल कि हिन्दी के होके सहाय जी जेतना उर्दू के बारे में जानतानी ओतना त उर्दू के होके हमहूं उर्दू का वारे में नइखीं जानत अइसन रहे उहां के अध्ययन।

पूज्य आचार्य के मानसिक धरातल केतना महान रहे एकर एगो बड़ा मार्मिक प्रसंग याद आवता। १९४६ के हिन्दू-मुसलिम दंगा के पूरा नजारा छपरा में भी चहुँपल रहे। दंगा के बाद एगो सभा में एगो मुसलमान प्रोफेसर साहब कहलीं "हिन्दुओं के छुरे से मुसलमानों को घायल होते देख मेरे भीतर का मुसलमान जागा।"—सहाय जी शायद सभापति पद से बोले उठलीं। उहां का बतवलीं कि कलकत्ता में एक बेर हिन्दू-मुसलिम दंगा भइल रहे त दरवाजा का फांक मुहें वो खिड़की का फांक मुहें हम केतना अइसन हिन्दू के लाश गिरत देखलीं जवन मुसलमान का छुरा से घायल होके गिरे।

लेकिन, हमरा भीतर के हिन्दू कबहीं ना जागल। काहे जे हम जानत रहीं कि जे चला रहल बा उ ना हिन्दू ह ना मुसलमान; उ त इन्सान भी ना ह; उह हैवान।

अइसन लमहर इनसान रहीं पूज्य आचार्य शिवपूजन सहाय जी।

दिल में कइसन कचोट उठेला जब इयाद पड़ेला कि उहां का जिनगी भर उ आराम ना पवलीं जवना के उहां का अधिकारी रहीं।

ईश्वर उहां के आतमा के शांति दीं।

ऐसन वज्रपात !

—रासबिहारी राय शर्मा

भोजपुरी परिवार का ऊपर ऐसन तीन-तीन गो लगातार वज्रपात भइल कि बुझा बा कि अष्टग्रह के जोग हमनिये के ऊपर आके परल बा। पहिले हिन्दी भूषण सहाय गईलीं। उहाँ का परिवार के पतवार रहलीं। एक महीना तक परिवार शोक से व्याकु होके कुछ ना कर सकल। महीना बीतत-बीतत उहाँ के श्राद्ध भइला का बाद तुरत हमनी के सम्राट् राजेन्द्र बाबू के देहावसान भइल। इ लोगन से भोजपुरी परिवार के बड़ा बड़ा आशा रहे। सब आशा पर पानी फिर गइल। बुझाए लागल कि सब क धइल माटी मिल जाई। 'अँजोर' के कमर टूट गइल। कौनो-कौनो तरह से हमनि साहस बटोरेनी त इ अंक निकाले के विचार भइल। एही बीच भोजपुरी के वृहस् महापंडित राहुल सांकृत्यायन के देहावसान भइल। अब का कहल जाव। हमनि के साहस टूट गइल। इ तीनू महानुभाव भोजपुरी परिवार के स्तम्भ रहलीं। तीनू क्षेत्र भिन्न-भिन्न भइला पर भी तीनू अगाध विद्वान तीनू अगाध साहित्य सेवी अउर मह ज़न-सेवक रहलीं हां सहाय जी हिन्दी क्षेत्र में शीर्षस्थ रहलीं हाँ। राष्ट्रपति राजेन्द्र बा त देश के महान विभूति रहलीं हाँ। स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति उहें का भइलीं हमरा भोजपुरी मण्डल के सितारा हो के रहलीं हाँ। उहाँ का गइला से फेर अँजोर अभाव हो गइल। राहुल बाबा त अँजोर देखि के बाग-बाग हो गइलीं कहलीं अच्छा होइब त पटना चलि के 'अँजोर' के विस्तार करे के उपाइ करबि बाकी चक्र अइसन आइल कि उहों का आँखि मुंदि दिहलीं। राहुल बाबा भोजपुरी बहुत किताब लिखले रहलीं हाँ। उहाँ के (१) नइकी दुनिया (२ ढुनमुन नेता मेहरारून के दुरदसा (४) जोंक (५) इ हमार लड़ाइ (६) देश-रच्छा (७) जपनिया रा (८) जरमन का हार आदि-आदि किताब उहाँ का लिखले बानीं। सासु पतोहू के के खूब बरनन लिखले बानीं। पुत्री के प्रति उपेच्छा भाव रखेवाला के खूब फट बानीं। एक जगह लिखत बानीं कि :—

एके माई बपवासे एक ही उदरवा में, दूनो के जनमवा भइल रे पुरुखवा।
पूत के जनमवा में नाच आ सोहर होला, बेटी के जनम परे सोग रे पुरुखवा।

इ भोजपुरी के तीनू लाल का चलि गइला से भोजपुरी परिवार अथाह शोक पड़ल बा। भगवान शंकर से प्रार्थना बा कि उहाँ का ए लोगन के आत्मा में शान्ति प्रदान करीं अउर भोजपुरी परिवार के लोगन के नया उत्साह प्रदान करीं कि अँजोर परिवार में फैलत रहे।

संस्मरण

भोजपुरी साहित्य के कर्णधार आचार्य शिवपूजन जी

—ले० तारकेश्वर प्रसाद,

विहार के दुर्भाग्य बा कि कुछ दिन के अन्दर ही इहाँ के बड़का बड़का साहित्य के महारथी लोग हमनी के छोड़ के चलगइलन। २१ जनवरी १९६३ के हिन्दी आ भोजपुरी साहित्य के सब से बड़का महारथी आश्रय दाता पूज्य शिवपूजन सहाय जी हमनी के अनाथ आ टूअर बना के चल गइनीं। हिन्दी साहित्य त निराश्रित आ निराधार होइए गइल भोजपुरी साहित्य के त भवने गिर गइल। आज त चारो तरफ अन्धकार बुझात बा। भोजपुरी के बड़का हिमालय लेखा विद्वान श्री देवव्रत शास्त्री आ पं० नलिन विलोचन शर्मा के गइला के दुख अभी हमनी का भुलाइले ना रहनीं हं कि इ वज्रपात भइल। एक त एही तरह भोजपुरी साहित्य निगावलम्ब होकर के उपेक्षित हो रहल बा आ अब त एकर कर्णधार हमनी के बीच मजधार में छोड़ के चल गइनीं। एकर भविष्य का बा इ त भगवाने जानस। अब सिवाय उनका के एकर बेड़ा के पार लगाई शिवजी महादानी दधीचि के समान आपन शरीर गला के हिन्दी साहित्य के सेवा कइनी। आ हिन्दी के वर्त्तमान रुप में आकर के खड़ा कइनीं। आज जे कुछ भी ओकर रूप बा ओकर श्रेय उन्हीं के बा मगर पाँच करोड़ भोजपुरी भाषा जनता के त उहाँ का हृदय सम्राट रहनी हँ। वास्तव में भोजपुरी साहित्य के जे क्षति भइल उ कभी ना पूरा हो सकी। शिवजी के जन्मे साहित्य के सृजन के वास्ते भइल रहल ह आ इहे काम उहाँ का अपना जीवन भर कइलीं साहित्य के माध्यम से उहाँ का जे अमृत सिंचन कइलीं उ जब तक हिन्दी आ भोजपुरी साहित्य के अस्तित्व रही कभी ना भुलायल जा सकी।

अइसे त एह महारथी के जब-जब दर्शन भइल तब तब दिमाग आ हृदय पर उहाँ के छाप पड़त गइल। उहाँ के दर्शन कइला पर इहे बुझात रहे कि भारतवर्ष के ऋषि परम्परा के सारा गुण उहाँ में सिमट के संसार के एक ठो उदाहरण रख रहल बा। १९४८ के अप्रैल में जब उहाँ का विहार प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अवसर पर मोतिहारी आइल रहनीं त उहाँ के दर्शन करे के मौका मिलल रहे आ ओह घड़ी उहाँ के गुण जे स्पष्ट रूप से देखे के अवसर मिलल से कभी भी ना भुला सके लेकिन १९६० ई० के दिसम्बर महीना में जब हम एक ठो जरूरी कार्यवश पटना गइल रहली तब उहाँ के दर्शन अत्यन्त निकट से करे के सौभाग्य प्राप्त भइल आ इ भेंट त जीवन के एक ठो महान सम्वल हो गइल। एह भेंट के सारा श्रेय 'अँजोर' के प्रधान सम्पादक श्री पाण्डेय नर्म्मदेश्वर सहाय जी के बा। दिसम्बर (१९६० ई०) के संध्या समय हम पाण्डेय जी से भेंट करे गइनीं आ अँजोर तथा भोजपुरी साहित्य के बारे में बहुत देर तक बातचित भइल। बाते बात में शिवजी के भी नाम आ गइल। हम आपन इच्छा प्रकट कइनीं कि तनी उहाँ के हम दर्शन करतीं। पाण्डेय जी तैयार हो गइनीं-आ दोसरा दिन प्रातः हमरा के बुलवनी। हम ठीक ८ बजे पाण्डेय जी के घरे (सालिमपुर अहरा) पहुँच गइनीं मगर पाण्डेय जी के

अपना काम में हम बहुत व्यस्त पवनीं। उहाँ के पटना के एक अनुभवी वोकी इइ। मवक्किल सब के बीच में बैठ कर के कुछ कागज देखत रहनीं। हमरा उहाँ के नि जाए में कुछ संकोच होत रहे तब तक पाण्डेय जी के नजर हमरा पर पड़ल आ का झट से उठ के चल अइनों आ तुरन्त अपना मवक्किल लोग के फुर्सत देकर के शि के इहां चले के तैयार हो गइनीं। हमनी का रिकशा पर चलनीं। रास्ता में भेंटा ग भोजपुरी के प्रसिद्ध लेखक आ कवि श्री केशव प्रसाद मिश्र जी (आचार्य काका)। से भी परिचय भइल आ हमनी का सब कोई आचार्य जी से भेंट करे मीठापुर ग हमनी का जब पहुँचनी ओह घड़ी आचार्य जी पूजा पर बइठल रहनी। जब उहाँ का विखेरत निकलनी तब पाण्डेय जी हमर परिचय उनका के देनी। हंसिए में उहाँ के आशिर्वाद पाकर के ओह घड़ी जीवन धन्य हो गइल। पाण्डेय जी जब 'अँजोर' में प्रका हमर सरभंग सम्बन्धी लेख के चर्चा कइनी तब उहाँ के श्रीमुख से अपना लेख के बारे में यादगारी सुन के हम आश्चर्य में डूब गइनीं। उहाँ का वास्तव में महान रहनी हमरा अइसन छुद्र लेखक के भी अपना मानस भंडार में स्थान दे देनी। जब तक हमनी उहाँ रहनी साहित्य-गंगा में स्नान करत रहनी आ चले के बेरा अपना पुस्तिका में उहाँ कुछ आशिर्वचन के जब हम याचना कइनीं तब उहाँ का लिखनीं 'धन्यास्ते सुकृ पिवन्ति सततं श्रीरामनामामृतम्।" एह एके पंक्ति में उहाँ का आपन हृदय निका रख देनी आ हमरा के प्रेरणा के अक्षय भण्डार दे देनी। हमनीं का उहाँ के सहृदय सदयता तथा हृदय-विशालता के अमिट छाप लेकर के वापस भइनीं जे जिन्दगी के से अमूल्य निधि होकर के रही। अब जब उहाँ का नइखीं उहाँ के याद हमनी के जीवन पाथेय बन चुकल बा।

भगवान उहाँ के आत्मा के शान्ति देस आ हमनी के आत्मा में अतना ब देस कि उहाँ के निर्देशित पथ पर चल कर के मानव कल्याण के कार्य कर सकों।

शिवजी

—विश्वनाथ दुबे

स्वर्गवासी पद्मभूषण आचार्य डाक्टर शिवपूजन सहाय जी साँच पूछीं त एह यु के शिवजी रहीं। जेकरा आशीर्वाद से अनगनित लोग समाज में पूजा प्रतिष्ठा पा गइल ऊ अपने सीधा-सादगी के जिनिगी में स्वाभिमान के साथ दुनिया के लक-दक से द रहि सकल, जेकरा छू देला से माँटी सोना हो गइल ऊ एगो महमूली किरानी के सु सुविधा से अधिका ना पावल, आ जे समाज से पावल त कुछुओ ना बाकी दान कर देल आपन सब कुछ, ओकरा के शिवजी' कहल ही यथार्थ बा।

शिवजी हिन्दी के दधीचि रहीं—अपना खून के अन्तिम बूँद तक राष्ट्र-भाषा के सिंगार में खर्च कइलीं आ अपना हड्डी के घिसि-घिसि के ओकरा मस्तक पर तिलक लगावत रहलीं। सम्पादक आ विद्वान त प्रथम कोटि के रहीं, कई दिशा में राह देखावे वाला आ' आगे-आगे चलेवाला के भी श्रेय इहाँ के ही मिलल बा। इहाँ के आज के साहित्यिक बिहार के पिता कहल जा सकत बा।

साहित्य-देवता के मन्दिर तक शिवजी अपार श्रम आ निष्ठा से साहित्यकार के कठिनाई के एक-एक सीढ़ी पार कइ के पहुँचल रहीं। आचार उचार आ विचार के एकता के साथे सादगी आ सरलता के दुर्लभ योग सोना में सुगन्ध जइसन रहे। शिवजी अपने-आप में एगो पीढ़ी रहीं, द्विवेदी जी के युग से आज तक के साहित्य के बीच के सोने के कड़ी रही, प्रेमचन्द-प्रसाद के परम्परा के साक्षात् अन्तिम प्रतीक रहीं।

शिवजी के साहित्य शिल्प कतना महान रहे इ सबके मालूम वा आ उनकर सम्पादन कइल ग्रन्थ हव जवना के संख्या बहुत अधिका वा। एकर परगट गवाही वाड़न सन। नन्ददास के तरह शिवजी भी 'गढ़िया' से अधिका 'जड़िया' रहलीं। लिखलीं कम, बहुत कम। वेगारी करे से फुर्सत कहाँ रहे? अतना नम्रता बहुत कम आदमी में पावल जाला। 'नाहीं' त उहाँ के केहू के ना कइले होखबि, बेमारियो के हालत में भी ना—जे आपन पोथी लेके शिवजी के दरबार में पहुँच गइल ओकर वेड़ा पार। एकर अनुचित फायदा भी कम ना उठावऽ लोग। तपेदिक के क्रूर चंगुल से कवनों तरह वचला के बाद उहाँ के अतना कमजोर रहीं कि सीढ़ी चढ़ल अबही मना रहे, उहाँ के रहे के आ' काम करे के नीचे का कमरा में ही इंतजाम हो गइल रहे सच ही काम कम करे के पड़े एकर भी ख्याल कइल जात रहे, ओह घरी भी साहित्य महारथी लोग के स्वार्थ-दृष्टि शिवजी के सम्पादन के चक्की से ना उबरे देत रहे।

शिवजी के असली आत्म-कथा आज के कतना वड़-वड़ साहित्यकार लोग के कुर्सी हिला दीहित। कतना जना के जे आज अपना प्रकाशित ग्रन्थन के वलपर बड़का वनल वाडन, मूल पाण्डुलिपि देखल जाय त पता लागी कि ओह में उनकर आपन दसइं हिस्सा भी नइखे—समूचा शिवजी के लाल सिआही से रंगाइल लउकी। शायद इ भण्डाफोर ना हो जाय, एही से शिवजी आत्म-कथा ना लिखलीं।

मट-मइल मोट खादि के धोती-कुर्त्ता में सिमटल अतवत बड़ साहित्यकार! जल्दी विश्वासे ना होत रहें देखेवाला के कि इहे का हईं शिवपूजन सहाय जी जेकरा के सराहे में निराला, प्रसाद, विनोद शंकर व्यास, डा० राम विलास शर्मा आदि के वाणी गौरव अनुभव कइले बा। एह सम्बन्ध के एक घटना हम कबहूँ ना भूला सकबि।

पछिम से पटना के ओर आवे वाली गाड़ी जब आरे स्टेशन पर लागलि त रोज-रोज आवे-जाये वाला चार-पाँच गो कौलेजिहा विद्यार्थी लोग एगो डिब्बा में चढ़ल। कवनो धाका-भीड़ ना रहे, बइठे के जगहि सब के मिल गइल। बाकी एगो चाँगड़ विद्यार्थी के इ अच्छा ना लागल कि एगो देहाती-लेखा लागेवाला यात्री, जवना के मोछ तनी घन रहे आ' फेशन वाला ढंग से ना कटल रहे बलुक दाढ़ियो तनी बढ़ले रहे, धोती कुर्त्ता मोट खादी के वोहु में ना टीनोपाल देल ना लील में गोतल, टोपियो साधारने आ चश्मा पुरान चालिसे पहिरले—सलतंत से बइठसु। ऊ तमकि के अपना जगहि पर से उठले आ' ओह यात्री के पास पहुँच गइले। सामने के बेंचपर जगहि खालि रहे लेकिन ऊ विद्यार्थी दोसरा जगहि पर कइसे बइठते उनका त एह यात्रि के लुआवे-बनावे के ललक रहे यात्री उनका के प्रेम से अपना लगहीं बइठा लेलन।

थोरिका देर आभी-गाभी चलवले बाकी जब ऊपर-झापर के इस्की विस्की के कवनो प्रभाव ना पड़ल त ऊ यात्री से सीधे बतिआवे लगले।

"तोहार घर कहाँ ह हो ?"

"उनवाँस ए बबुआ ।"

"इ उनवाँस-बकवास कहाँ बा भला ?"

"बगसर भीरि नु, ओहिजा से चार कोस दखिन-पुरव । डुमराँव जाने लऽ ? ओहि से चार कोस दखिन-पच्छिम ।"

"त एने कहवाँ जइबऽ" 'पटना"

"कवनों मोकदिमा लड़ताड़ऽ कि केहू पर नालिश कइ कै ओकरा के उजारे के मन ना ओहिजे रहिला । ओहिजे भाई पढ़ेला । हम ओकर भात बनाईं ला । हूँ पढ़वे नु करेलऽ ?"

"हूँ, हूँ ! आरे के बड़का कौलेज में ।"

एह बीच ऊ विद्यार्थी बराबर टकस मकस करत रहले आ अब अतना पसरि बइठ गइल रहलन कि ऊ यात्री अगर सहनसील ना रहित त विना झगरा भइले रहित । लेकिन ऊ त दबिके एगो कोना में निर्विकार वइटल रहल ।

बात में अब रसे-रसे रस आवे लागल रहे । डिब्बा के कुछु अवरु लोग भी एने तनी उत्सुकता से देखे लागल रहे ।

विद्यार्थी आपन धूलसे भरल जूता वाला पैर उठाके यात्री के धोती के सटले बेंच पर कइ लेले । यात्री के ओर से कवनो प्रतिवाद ना भइल, वलुक ऊ तनी दवकि गइले ।

बातचीत फेनु जोर पकड़लसि ।

तूँ कवना किलास में पढ़ेलऽ ?"

गिलास-गिलास मति कहऽ, हम बी० ए० में पढ़ीला । कौलेज में फस्टइ सेकन्डीयर, थडीयर, फौर्थीयर, कहल जाला । तूँ इहो ना जानऽ ? कतना मूरख ब तेह पर का दो भाई के पटने पढ़ावेलऽ !"

हम पढ़ीं नानु, भात नु बनाईं ला । तनी-मनी टो-टा के हिन्दी पढ़ल वा तोहरा निअन हम कौलेजिहा नानु हईं । अच्छा, तूँ का पढ़े लऽ, हिन्दी तूँहूँ पढ़ेलऽ!

कइसन उजबुक देहाती बाड़े रे बुरवक ! तोरा इहो नइखे मालुम जे बी० ए० हिन्दी पढ़ल जरूरी बा । देखऽ हम इहे हिन्दी पढ़ीं ला ।"

ऊ टटके खरीदल आपन 'साहित्य-सरिता' उनुका ओर फेंक देले । साथे आपन दूनो पैर भी यात्री के ओर बढ़ा देले । जवना में उनुकर जूतो रहे जे मुह उनुकर मुह ताकत रहे, शायद उहो पनाहे माँगत रहे ।

"इ किताब त आई० ए० में नु पढ़ावल जाला ? तूँ कहत बाड़ कि हम बी० में पढ़ीला, इ त बड़ा अचरज बुझाता !" यात्री मुसुकात कहले । "तोहरा गँवार का बुझाई—कतहीं से एगो-दूगो किताबन के नाँव सुनलेलऽ, अब जवन किताब मिली तोह ऊहे बुझाई । आरे वड़का विद्वान आचार्य शिवपूजन सहाय के बनावल ह, आई० ए० बी० ए० एम० ए सब में पढ़ावल जाला—तोहरा लेखे त सब धन बाइसे पसेरी जानेलऽ शिवपूजन सहाय के ?" डाँटत ऊ पूरा एगो व्याख्यान दे गइले । आ' जाने यात्री के अपना पैर से एक तरह से जाँतिए देले ।

हमरा का बुझाउ कि कवना बूँट के होरहा होखेला ! पहिले अपना दनो खूरन के तनी हटावऽ आ' पढ़ला-लिखला नीअन वइठ। हमरो भाई इहे किताब·········

तब तक एगो आदमी शायद यात्री, के साथे रहले, शौच वगैरह खातिर गइल रहन, आ धमकले आ विद्यार्थी के हाथ पकड़ि के हटा देले—

"हटऽ! इ हमार जगहि हऽ। भँइस निअन पलरि के वइठन वाड़न जइसे सहूरे ना होखे! महंथ बन वइठिगइलन जइसे लाट होखसु आ, ऊपर से कवीर-कथनी !" उनकर देहि-धाजा देखि के विद्यार्थी सिटपटा गइले आ चुपचाप चिहाइल खाड़ा रहले जइसे काठ मार देले होखे। ऊ आदमी यात्री से कहे लगले—"रउआ आराम से वइठीं। लड़िकन के ढेर ना सहकावे के, ना त इ माथा पर चढ़िके नँचिहें सन्। रउवा सीधाई के कारन त कोना में दवकल बानी,— आ' इ बढ़ि-बढ़ि के बात पागि रहल वाड़न। वड़-जेठ के अदब-लेहाज जइसे उठिए गइल होखे। ठीक कहल जाला सोझिया के मुंह कुकुर चाटे।"

"वइठऽ, वइठऽ। ढेर ना गरमाये के। वइठऽ ही वबुआ तूँहू वइठ। इहो वइठिहें।" यात्री अपना पुरनके मिठास के साथ बोललन।

"जानत बाड़ऽ, केकरा जवरे टेंटा करत रहल हा?" सामने वइठल एगो दोसर आदमी वड़ा नरमी से बोलल, "इहेंका हईं आचार्य शिवपूजन सहाय।"

विद्यार्थी त लजा गइले, उनकर मुँड़ी नीचे हो गइल जइसे उनका पर सइ घइला पानी परिगइल होखे। माफी माँगत कवनो तरे शिवजी के भीरी सिटुकले वइठले। माफी माँगते-माँगते बिहठा स्टेशन आ गइल आ, ऊ माफी माँगते उतरि गइले। पता ना उनुका ओहिजे उतरे के रहे कि अवरू आगे जाये के रहे। आ शिवजी निर्विकार भाव से मुसुकात रहीं।

बैकुंठवासी शिवजी के भोजपुरी भाषा से अगाध प्रेम

—विश्वनाथ प्रसाद शैदा

आजु से तीन बरिस अगते के बात ह। हमार साइत आल इण्डिया रेडियो स्टेशन पटना से भोजपुरी कविता पाठ के प्रोग्राम रहे। प्रोग्राम दिया वरान के बेरा से रहे। मद्धि दुपरिया में हम स्वर्गीय शिवजी के दरसन खातिर राष्ट्रभाषा परिषद-भवन में गइलीं। शिवजी कहलीं कि "शैदाजी जे रवाँ कवनो तकिलीफ ना होखे त भोजपुरी के आपन एक कविता सुनावलजा।" सहायजी के ई बात अमरित के बून्द नियन हमार कान में परल आ हमरा आँखी में सनेह के जल उमड़ आइल। हम सोचलीं की सहाय जी में कतना बड़प्पन बा जे इहां के कहली हाँ कि "कवनो तकलीफ न होखे त····" हम कविता सुरुम कइलीं। मथेला रहे—"भोजपुर के माटी"।

"धन्य भोजपुर ई हमार आ धन्य इहा के माटी।
कवनो गुन में ए से केहू ना आँटल ना आँटी॥"

हम पवलीं कि सहाय जी कतना गद्गद् हो गइल बानो। फेरु उहाँ के भइल। एगो अउर। हम दोसर कविता कढ़वलो।" कवन उ कुअर सौंघ बापा केहू के जवानी ना उनकर बुढ़ापा॥" इहो कविता खतम भइल। तब हम शृंगार रस के एगो कविता कढ़वलीं। तपिस के मौसक भी रहे। कवनो विरहनी विरह वेदना रहे। कविता इ रहे कि "पिउ के ह जिउ सखी कइसन कठेठ रे। हम अभी कहे पवली कि शिवजी कहलीं कि "शैदाजी इची रावाँ ठहर· जाईं। सहाय अपना कार्यालय के सहयोग बाबू लोग के बोलवलीं आ ओ लोग से कहलीं कि " सभे हमरा भोजपुरी के शब्द शैदाजी के मुंह से सुनी। शैदाजी के 'कठेठ" शब्द से कठेठ होत भी कतना मुलायम आ रस से भरल बा। फेरु उहाँ के हमरा से कहली हँ शैदाजी अब सुनावलजा। कविता शुरूम भइल।

पिउ के ह जिय सखी कइसन कठेठ रे।
जेकरा वियोगे मोरा भावे ना भोजनवा,
गोड़ों में बहत बाटे हांथ के कँगनवा,
जाइ के विदेसे पिया, रहले बएठ रे।
काल बा इ मोरा लेखें आइल धुप काल रे,
उनुका वियोगे बानी अपने वेहाल रे,
उहाँ का ना अइसन तवत होई जेठ रे।
जइसे दुपहरिया में जरे ले धरतिया,
ओसही जरत बाटे रात दिन छतिया,
हुक के हलुक देहि गइल का पएठ रे।
ह-ह-ह-ह-रह रह बहेला बेयार रे,
जब तब अचके में बाजेला किवार रे,
उठिला झमकि मन फेरु होला हेठ रे।
जइसे कि बसन्त गइले तेजि फुलवरिया,
जाते इ झुराये लागल फुल के किअरिया,
ओसही का पिया देले मोरा के संएठ रे।

कविता खतम भइल। सहाय जी कहि बइठलि कि भाई, जनता के हृदय छुवे के जादू अइसन सकती भोजपुरी के ही कविता में बा। जनता के ई आपन चीजु बा। समाज-सेवा में जतना भोजपुरी के कविता सहायक हो सकी ओतना त कवनो दोसर भाषा ना होई। खास करके भोजपुरी भाषा-भाषी क्षेत्र में। वाह रे हमार भोजपुरी भाषा वाह। एही सिलसिला में हमरा इयाद आ गइल। ३-४ बरिस भइल जब स्वर्गीय राजेन्द्र डुमराँव आइल रहलीं आ भोजपुरी भाषा में ही आपन प्रबचन दस हजार के जनता देले रहीं। उहां के भी प्रेम हम भोजपुरी भाषा में अगाध पवले रहीं। एही से एह युगल हँस के याद में कविता ए लेख में लिख रहल बानी। मथेला ह—"युगल हंस"

रे हाय, बिछुड़लें जुगल हेस!
ई रहनिहार एके घर के, हमरा बिहार ही मन सर के,
ई एक जाति के, एक पाँति के, रहल दूनो के एकबंस।
रे हाय, बिछुड़ले जुगल हंस॥

रहले सरदा के दुनो लाल, दुनो के एके चाल-ढाल,
दूनो में दुनियाँ पावल, हा वेस सोरह आना देव अंस।
रे हाय, बिछुड़ले जुगल हँस।।
रहले हाँ एक पद्दुम भूसन, रहले हाँ दोसर देस-रतन,
दूनो बकता, दूनो लेखक, दूनो रहले हां परम हंस।
रे हाय, बिछुड़ले जुगल हंस।।
एक हंस साहित्य रचल, दोसर देस के दिहले बल,
जेकर गुरु रहली गाँधी जी जे धंस विदेशी कइल कंस।
रे हाय, बिछुड़ले जुगल हंस।।
सिरि शिवजी, सिरि राजेन्दर, चट एक महीना के अंदर,
हा, उड़गइले ई सरग लोक जन-मन-मानस के राज हंस।
रे हाय, बिछुड़ले जुगल हंस।।

आचार्य शिवपूजन सहाय के ममत्व

—डॉ सत्यदेव ओझा

चार पाँच वरिस पहिले अपना शोध-प्रबंध का सिलसिला में इलाहाबाद गइल रहीं। ओइजा निराला जी के दरसन करे के भी मोका लागल। निराला जी उघारे देही लुंगी लपेटले भोजन करे बइठल रहीं। खइला-पिअला का बाद पूछलीं— 'कहाँ से आये हो ? "क्या करते हो ?" आदि सब कुछ बतवला पर पूछे लगलीं कि 'शिवपूजन जी कैसे हैं ?' एकर उत्तर दिहला के बाद लगलीं आम वगैरह के चर्चा करे आ असम्बद्ध बात करे। इ बात जब हम आचार्य शिवपूजन सहाय से आई के परिषद–भवन में कहलीं त आचार्य जी निराला जी के नाम सुनत चुप चाप रहलीं आ दु मिनट चुप रहला का बाद देखीं त उनुकर आँखि भरि गइल बा। लागल जे उनका मर्म पर चोट पहुँच गइल बा खैर आचार्यजी पान मंगवले आ सबके बाँटे लगले बड़ा प्रेम से सब पान लीहल। हम त खैर उहां से माफी मंगली, ओकरा बाद उहांका परिषद् का लोक–भाषा अनुसंधान के सहयोगी विक्रमादित्यजी के कुछ पुस्तक वगैरह देखावे के कहलीं और हम आपन काम कइके आचार्य जी से छुट्टी लीहलीं।

आचार्य जी से हमार पत्राचार तब से रहे जब उहां का राजेन्द्र काँलेज छपरा में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष रहीं। 'हिमालय' का सम्पादन छोड़ला का बाद जब उहां का फेह काँलेज के कार्यभार सम्हरलीं त एगो चिट्ठी लिखलीं। हम ओह घरी मोकामा हाई स्कूल में अध्यापक रहीं। पत्र में हम भोजपुरी पत्र-पत्रिका के विषय में पूछले रहीं। 'भोजपुरी' पत्रिका निकाले के बात होत रहे। हम ओह पत्र के पूरा-पूरा देत बानी। एह से इ पता लागी कि उहांका भोजपुरी पत्र-पत्रिका का बारे में कतना सूचना राखत रहीं।

पूज्य पंडित जी, सादर प्रणाम।

कृपापत्र के लिए कृतज्ञ हूँ। 'भोजपुरी' पत्रिका पटना से निकलने वाली है। श्री महेन्द्र शास्त्री और श्री व्रजनन्दन 'आजाद' बी० ए० उसके सम्पादक होने वाले हैं। आप कदम कुआँ, पटना अथवा 'आर्यावर्त्त' के सम्पादक (इन्डियन नेशन प्रेस, पटना) के पते से 'आजाद' जी के पास लेखादि भेज सकते हैं। एक भोजपुरी भाई कलकत्ता से भी 'भोजपुरी' साप्ताहिक निकालते हैं। १२६ चित्तरंजन एवेन्यू उसका पता है। उसमें भी

एक-दो पत्रे के लेख भोजपुरी में रहते हैं। आप वहाँ भी भेज सकते हैं। मेरे पास को कोई पत्र नहीं है। मैंने 'हिमालय' भी छोड़ दिया है। .. .... हम एह पत्र के बाद इ एतराज कइलीं कि रउआ हमरा के एह ढंग से संबोधित कइले वानी जे हमरा संकोच बुझाता। उहां का एगो दोसर पत्र दिहलीं आ लिखलीं कि आप विप्र वंश के और मैं ठहरा चित्रगुप्तवंशी।" हमार मन उहाँ का प्रति श्रद्धा से गद्गद हो गइल। कहाँ हम एगो मामूली शिक्षक और कहाँ आताना लमहर साहित्यकार! जमीन-आसमान के फरक लेकिन उहाँ का दिल में कबहूँ अहंकार के लेस भी ना रहे। जहाँ तक लिखावट के सवाल बा, उहाँ का लिखला में एको जगे कटकूट ना रहे एकदम मोती निअन अक्षर। व्याकरण-सम्मत भाषा लिखे में उहां का टक्कर के कमे आदमी रहे। कई गो साहित्यकार के किताबन के साजे-सँवारे में उहाँ का आपन काम तक रुकि जात रहे। 'दिनकर' जी कहीं लिखले वानी जे कतना प्रकाशक लोग उहाँ के सरलता से लाभ उठाइ के शोषण करे में भी ना चूकल लोग और उहाँ का एकरा वास्ते कौनो गिला शिकायत ना कइके हमेशा हँसते-हँसते काम कइलीं। प्रूफ-संशोधन आ भाषा-सुधार उहाँ के अतना समय लिहलसि जे उहाँ का रचनात्मक साहित्य सिरजे के मोका ना मिलल।

पत्र के जवाब उहाँ का कतना रुचि से देत रहीं एकर अनुभव बहुत आदमी के होखी। पत्र लिखनिहार चाहे छोट आदमी होखे चाहे बड़ आदमी, बात छोट पूछल गइल होखो या बड़ उहाँ का ओह पत्र के बहुत महत्व दीहीं आ उत्तर जरूरे दीहीं आपना मृत्यु से कुछ महीना पहिले उहाँ का श्रीराजेन्द्र-अभिनन्दन-ग्रंथ का सम्पादन में बहुत व्यस्त रहीं। एही अवसर पर हम अपना डाकटरेट डिग्री मिलला के सूचना देके आशीर्वाद आ भावी मार्ग प्रदर्शन के कामना कइलीं। उहाँ के ६ दिसम्बर १९६२ के एगो पत्र लिखलीं। एह पत्र से इ झलकल कि कार्य-व्यस्तता भइलो पर उहाँ का कातना प्रेम पूर्वक उत्तर देवे के कष्ट करत रहीं, भले ही कुछ विलम्ब काहें ना होखे। पत्र के एगो टुकड़ा देखल जाउ—

"आपका कृपापत्र यथासमय मिला था। मैं पिछले तीन-चार मास से श्री राजेन्द्र-अभिनन्दन-ग्रंथ के सम्पादन कार्य में अत्यन्त व्यस्त था। गत ३।१२ को वह ग्रंथ उन्हें विधिवत् समर्पित कर दिया गया। 'साहित्य' का नलिन-स्मृति-अंक भी प्रकाशित हो गया। अब महीनों की इकट्ठी डाक देख आवश्यकतानुसार उत्तर दे रहा हूँ। आशा है विलम्ब के लिए क्षमा प्रार्थी हूँ।" उहाँ का आशीर्वाद रुप आगे लिखले रहीं जवना में उहाँ के वात्सल्य स्पष्ट झलकत रहे—

"......आपको सर्वान्तः करण से बधाई देता हूँ। परमात्मा आपको उत्तरोत्तर यशस्वी करें। भला आपको आगे के लिए मैं क्या सुझाव दूँगा? आप स्वयं स्वाध्यायी विद्वान हैं। अब डी० लिट्० की तैयारी किजिए। भगवान आपको पुनः सफल मनोरथ करेंगे। निष्टापूर्वक परिश्रम करने पर भगवान निश्चय ही पुरस्कार देकर कृतकृत्य करते हैं। भरोसा भगवान का दृढ़ रहे। स्नेही –शिवपूजन"।

एह पत्र में उहाँ के वात्सल्ल, ईश्वर-निष्ठा आ नवोदित साहित्यकार के उत्साहवर्द्धन के प्रवृत्ति साफ झलकता। एह ढंग के निःस्वार्थ साहित्य सेवी अब कम होत जा रहल बाड़े। शिवजी का उठि गइला से एगो अइसन बट वृक्ष उखड़ि गइल जवना के छाया में सैकड़ों आदमी उत्साह, प्रसन्नता आ निश्चिन्तता अनुभव करत रहल हा। भगवान उहाँ के आत्मा के शांति देसु आ हमनी में इ बल देसु कि उहाँ के गुणन्ह के अनुकरण कर सकींजा।

शिवजी के लइकाईं

—सूर्य परमार

स्व० आचार्य शिवजी के लइकाईं के बात खुद उनके लिखल कई किताबन आ लेखन से बड़ा आसानी से मिल जाता। ई शिवजी के भोजपुरी आ हिन्दी साहित्त के एगो बड़का देन बा। काहे से कि ढ़ेर पुरनकन अक्खर कवियन आ लेखकन के चाहे उ संसकिरत के होखस चाहे हिन्दी के जीवनी आ समय के बारे में मारखानी विवाद उठत रहत बा। शिवजी आपन जिनगी के बात लिख के साहित्त के ई विवाद से अपना के बचा लेले बानी। अब हम उनकर लइकाई भाग के देखीं कि उहाँ के लइकाई कइसे बितल।

इहां के जनम के बारे में बड़ा रोचक घटना बा। "'दुर्गादत्त परमहंस" किताब के भूमिका में अपना मातारी के मुँह से सुनल खुद सचाई बआन करतानी कि 'हमार तीन लइका मर गइले त तोहार चाचा 'उनका' से भभूत मांग के ले अइले। उ दूध के सामान उजर भभुत एगो डिबिया में देलन। घीव के समान कन रहे आ खूब मंहकत रहे। ओकरे के हम नेहाधोआ के हर महीने खात रहीं। उपरोहित बैजनाथ धाम आ काशी जी जाके 'परमहँस जी' के बतावल मनतर जपत रहनी आ हमरा घरो में पारथी-पूजा आ खीर हवन करत रहीं। 'परमहँस' जी जइसे-जइसे बतवनी ओसहीं-ओसहीं सब भइल। तब जाके तोहार जनम भइल। 'परमहँसजी' के भीरी सनेसा गइल त उ कहलन कि इ लइका महादेव जी के भगत होई।" 'दुर्गादत्त परमहँस जी' के भूमिका में 'परमहँस जी' के दिव्य रूप के वरनन बा। उहाँ के डुमराँव के रहे ओला रहीं। एही डुमरांव से शिवजी के गांव चार कोस दखिन-पछिम में बा। शिवजी के जनम एकरा अनुसार सन् १८९३ ई० आने वि० स० १९५० में भइल रहे। 'दुर्गादत्त परमहँस के पहिला संसकरन वि० स० १९८७ आने सन् १९३० ई० में निकलल रहे।

दोसर भी किताब जवना में शिवजी के जिनगी के बात खुद उहें के लिखले बानी, पावल जाता। ई किताब के नांव "कविरत्न मीर" जवन संवत् १९८३ वि० में आने सन् १९२६ ई० में पहिले पहिल परकासित भइल रहे। एह में ईहां के लिखतानी "हम लड़काई में तीन-चार बरिस ले उरदू आ फारसी के आरंभिक शिछा पवलीं -करीमा, खालकबारी आदि कंठ कर चुकलीं फिर स्कूलो में हम छव बरिस ले उरदू-फारसी पढ़लीं। बाकी होनहारी के बात मेटरीकुलेसन में तरक्की पावे से एक साल पहिलहीं उरदू—फारसी के संघत छूट गइल आ हिन्दी से नाता जुट गइल। बाकी उरदू-फारसी पढ़े के शौक बनले रहल।" तीसरकी किताब 'देहाती दुनिया' से शिवजी के लइकाईं के बात झलकत मिलत बा। हमनियो के लइकाई में डोली देख के देहाती कहाऊत कहत रहनी जा। शिवोजी डोली देखत रहीं त आपन लंगोटियन यारन जवरे चिचिआये लागीं जब केनहु से डोली के कहार हाँफत आ ओह में ओहार का भीतरे कवनो कनेआ सुसुकत मिल जात रही—

"रहरी में रहरी पुरान रहरी
डोली में के कनेआ हमार मेहरी।"

सन् १९६० ई० में 'मेरा वचपन' के एगो पुस्तिका साहित्य साधना प्रका
पटना—४ से परकासित भइल। एह किताब से शिवजी के लइकाईं के सब
होनहारिता मिल जाता। इहाँ के दादा बाड़ा पूजा-पाठ करत रहनी। 'शि
'योगवासिष्ठ' के नियमित पाठ करत रहनी। शिवजी के बाबूजी गरीबी के कारण
करे लगलीं काहे से कि यहाँ के दादा के जब भाई लोगिन से बाँट-वखरा
उनकरा हिस्सा में ऊसर खेत आ अमराई के बदला कुछ महुआ के फेंड़ मिलल।
ईहाँ के दादा आपन भाई लोगिन में सबले छोट रहीं एह से लाज-लेहाज से
उठवनी। बाकी बड़भाई लोग सरासर बेमानी कइल। इहाँ के दादी वाड़ा चतुर
महाभारत में एगो खिसा बा। दरोनाचार्य के लइका अश्वथामा गरीवी के
का बदला आटा आ चावल के घोल पिअल करत रहन। शिवजी के गरीवी
सने उदाहरण रखले बा। जौ के सतुआ में मध भा गुर मिला के घोल वना के
के दूध खाती अठान-कटान डाली त देके बझावल जात रहे।

शिवजी लइकाईं में थिरिक-थिरिक के बड़ा नाचत रहनी। इनका माथा प
भरल रहे एह से इनकर नाच बाड़ा देखजगु रहे। सुनर चेहरा, गोर देह आ
मुँह सब के पिआर के कारन रहन। जब इनका कपार पर तिरपुन्ड के टीका
बाबूजी पूजा कइला के बाद लगा देसु त शोभा में अवरू निखार हो जात रहे।
ओह घरी इनका के लोग 'भोलानाथ' कहत रहे। इनकर बाबूजी इनिका के
आ उपदेश देत जाईं। रामायण के दोहा आ चौपाई इयाद कराईं। शिवजी के
चोखा से बाड़ा पिआर रहे। जा दिन ना मिले ओह दिन ऊ रुस जास। पाँच
के भइला प इनकर बुढ़िया दादी वक्सर गंगा जी के किनारे इमली आ सेन लेखा
जाटा के मुण्डन करावे खाती ले गइली। मुंडन के बाद जाटा ना देख के इहाँ के
रोअनी। बाकी अब जाटा काहाँ से? इनकर दादी पढ़ल-लिखल ना रही बाकी
चालिसा' समूचा इयाद रहईन। उ एगो तोता पोसले रही जवना के सिखवले रही-

"नासे रोग हरे सब पीरा, जपत निरंतर हनुमत वीरा।
संकट कटे मिटे सब पीरा, जो सुमिरे हनुमत बलवीरा"॥

तोता का साथे-साथे शिवजी के भी रटावत जात रहीं। शिवजी के सबसे
बहिन के नांव 'मनवसिया' एह से राखाइल कि जसहीं इनकर दादी 'हनुमान चा
के पाठ—

राम चरित सुनिबे को रसिया।
राम लखन सीता मन वसिया॥

जसहीं 'मनवसिया' कहली तसहीं खबर भइल कि लइकि पैदा भइल।
'मनवसिया' ओह घरी नांव धर देली।

शिवजी लइकाईं में बाड़ा कम बोलत रहन। एह से इनका के लोग 'मौनी
भी कहत रहन। मोतीचूर के लड़ुआ पर खूब चोट करत रहन। कभी-कभार
ओही से मानसु। इनकर एगो खेलौना कपड़ा के गाय रहे। ओह में ओकर
भी दूध पीअत रहे। ई खेलौना इनकर बाड़ा पिआरा रहल। इनकर हठ अजवे
एक नमर के जीद्दी। एकबार आपन विजायठ अवरु बघनखा गड़हा में फेंक देल

ओकरा साथे चिरौरी हो त मथावल दूधो फेंक देलन। जब ई पाँच साल के भइलन। एगो पाँच रोपेआ के गाय जवन एक सेर दूध देत रहे खरीद के आइल। ओह घरि एक सेर दूध ओली गाय के दाम पाँचे रोपेआ आ दुसेर ओली के दसे रोपेआ रहल हा। एक बेरा मातारी जांत चलवावत रही आ इनकर छोटका भाई घर में खटिया प अचेत सुतल बा। त ई चुपे जाके छोट भाई के कान्हा प उठालेलन। अब चउखट लाँघले नइखे जात। दउरी के मातारी बच्चा के थाम लेली। एह खाती ईहाँ के खूस हो के सरग उठा देली। इनका घरे जवन गाय खरीदा स तवन कबहीं वेचाय ना। एह से गायन के संखेआ बढ़त गइल। इनका जनम के बाद से इनकर परिवार के गरीबी कुछ टलत गइल। एगो गाय के नाँव रहे 'गंगिया' एकरे दूध, दही आ घीव से शिवजी के पालन-पोसन भइल रहे। गंगिया सुधि गाय के थन में मुंह लगाके ई पिए लागस आ गंगिया चुप खाड़ा-खाड़ा पागुर करे लागे। एक देने से गंगिया के वाचा आ दोसर का देने से शिवजी के मुंह में थन लागल बा। दूध के सेवन प इनकर भाई के वाड़ा धेआन रहइन। पिआसो लागे त दूधे दिआय। एह से अन्न कम खासु। थरिया में इनकर मातारी फरके-फरके कवर बनावसु तोतवा, मेनवा, कबुतरा, बाघवा आदि-आदि आ गीत गा-गा के खिआवसु।

लईकाई में आंचार के इहाँ के बाड़ा परेमी रहीं। आ ओह में मीठिका आंचार के त अवरू। छोहाड़ा के मिठिका आंचार के घइला घाम में रखल मिलल कि ईहाँ के ओकरा के बात के बात में चट कर जाईं। एहतरे ईहाँ के घइलवो नास दिहीं। जवना से इनकर मातारी बाड़ा दुख मानसु काहे से कि आंचार के घइला तेल से रिठिया-रिठिया के ठीक भइल रहत रहे। ई बहुत कमे होला कि भाई वाबू अपना लइका के नटखट बनावे खाती कोशीश करसु। शिवजी नटखट ना रहसु। इनकर भाई नटखट बनावे खाती खूब बढ़ावा देस। एक बेर अपना अंगना में एगो हमजोली लइका से उलझ गइले। ओकर नोह बड़े-बड़े रहे आ इनकर नोह काटल-संवारल रहे। बाकी इ दाँत से ओकरा के कईं जगे काट देलन उ नोह से नखोर-नखोर नोच के इनका के लेहु-लुहान कर देलस। इनकर बाबूजी ई तमाशा देखत रहनी बाकी छोड़वलन ना। खाली मना करसु। जब ई लोग लड़त-लड़त थाक गइल त फरके से दूनो यार एक दोसरा के धमकियावे लगले—"अब की आव। अब की आव ना।"

इनकर बाबूजी वाड़ा अच्छा रामायणी रहीं। रामायण सुने खाती एगो किसान जेकर नांव जगेसर रहे तीसो दिन फूल लेके आवस। इहे जगेसर पहिले पहिल शिवजी के नांव के अरथ शिवजी के बतवलन। जगेसर के सतसंग के शिवजी के ऊपर बाड़ा अच्छा असर पड़ल। ईहां के लईकन के बिटोर के पूजा-पाठ आ सोमारी मेला के नकल करीं आ चाना-चबेना परसादी बाँटल जाय? केहु देखे त इ लोग लजा के भाग जास। ईहाँ के लइकाई में बाड़ा बतवनवा भी रहीं। लोग आ लईकन के हँसावे के जुगुती खूब जानत रहनी। एक बेर ईहा के बधारी में लईकन के साथे मूस मारे निकल गइनी। मूस के बील में पानी डालल जाता आ मूस भाग स त पटापट छड़ी से पीट दिआय। शिकार पूरा हो गइल आ आग लगा के झोल के तुरत चट कर दिआइल। दोष कइला प इनका के मारल-पीटल ना जात रहे। बलुक हलुक सजाय दिआत रहे। मूस खइला के सजाय इनका के इहे मिलल कि इनकर बाबुजी जबले छुट्टी में घरे रहीं तबले इनका

के इनकर माई ले भेंट करे ना दिआईलं। सांत आठ वरिस के भइला प इनकर
इनका के घर से हटा के आपन छोट वहिन किहाँ भेज देलन अंगरेजी पढ़े के
इ भइल रहे। इनकर छोटाका फुफा अंगरेजी के "फर्स्ट बुक" खतम करवा दे
फुफा के बाबूजी इनका के उर्दू के पहिलकी किताब 'आमोज' खतम करवा
इनकर बाबूजी जब कभी भेंट करे आवस त रामाएन के दोहा आ चऊपाई इयाद
एक चऊपाई के खाती एक पइसा आ दोहा खाती दु पइसा मिले। रामाएण
इ पढ़ जास एह से इनकर बाबूजी इनका के इनकर बड़का वहनोई मुन्शी कालिका
किहाँ भेज देलन। पढ़ाई-लिखाई के मामिला में इनकर बाबूजी बाड़ा कठोर
जहँवा इनकर लाड़-पिआर अधिक होखे ऊहँवा से तुरते हटा देस। ईहँवा रात में
के सेकेन्ड बुक आ रामाएन चलत रहे। इनकर बहनोई महाभारत के 'भीष्म
गीता के अनुवाद कइले बानी। महाभारत के कथा में शिवजी के वाड़ा मन लागत
दोसरकी किताव 'रस कुसुमाकर' के नकल भी मुन्शी जी कइले वानी। महाभार
बहुत से कथन के शिवजी भी आपना कापी में उतरले वानी जवन आज तक सुनर
में ईहाँ के आपन पुस्तकालय में संजो के रखल बा। एहिजे से हिन्दी साहित
जाग रहल बा। एकर श्रेय मुन्शी कालिका प्रसाद के देल जाई। ब्रज भा
ढेर कवित्त आ सवैयन के इनकर बहनोई इनका के इयाद करा देले रहस। एह से
में शौक पैदा होत गईल। आ ओने उरूदुओ के पढ़ाई मकतब में होते रहे।
'खालिक वारी', खालिकवारी,' आ 'गुलिस्ता' सब खतम हो गइले। उरदू त
हिलहिल के ईहाँ के घोखीं बाकी रात के रामाएन जरूरे पढ़ीं। इनकर मोलवी
बाड़ा मारखाह रहले। खाली छड़िए से बात करस। अच्छर बनावे खातिर
मारस। पढ़ाई आ सुनर अच्छर खाती इनका कई वे इनाम मिलल रहे। इनकर
के पास दूगो "एकबार' हिन्दी के 'वंगवासी' कलकत्ता से आ उरदू के 'पैसा अख
लाहौर से आवत रहे। ओह अखबारन के शिवजी पढ़स आ आपन बहनोई के
के सुनावस। एह काम खाती इनका के बन्हुआ मिठाई बान्हल रहे. शक्कर के लड़
चाहे बतासा। एहिजे से अखबार पढ़े के चसका लागल।

सन् १९०३ में आरा के एगो हाई स्कूल (कायस्थ जुबली एकेडेमी) में
दरजा में नांव लिखाइल। इनकर बाबूजी इनका के हिन्दी पढ़ावल चाहस वाकी ई
आ फारसी पर जोर देसु। ओह घरी शिवजी के उमिर दस बरिस के रहे।
इस्कूल में साते बरिस लिखावल गइल। एकर नतीजा बुरा भइल। ओह घरी
वरिस से कम छात्र विश्वविद्यालय परीक्षा में न बइठ सकत रहन। शिवजी के
इनटरेंस किलास के टेस्ट में चौदह साल के रहे। एह से ईहाँ के रोका गइलीं।
में आके ईहाँ के हिन्दी पढ़े लगनी आ एहे पर धआन देवे लगनी।

इनकर बाबूजी के मऊअत १९०६ में हो गइल। उहे इनका के लकम धरा
रामाएन के नित पाठ करे के। नेहा धोआ के जिनगी भर शिवजी रामायन के
करत गइनी। कबहीं ना छुटल। रामाएन के परभाव इनका प बहुत पड़ल।
एही से हिन्दी का ओर झुकाव भइल। इनकर उरदू के साथी आ इनकर मौलवी
कहल करस कि जे ठेठ देहाती गंवार आ उजबुक बा उहे हिन्दी पढ़ेला। एकर
इनका प तनिको ना पड़ल। इस्कूल के हेडमास्टर बंगाली रहन जेवन बाड़ा कड़ा

खूब बेंत मारस आ कटोर सजाय देस। बाकी पढ़ावे में सानी ना रखत रहस। मारे में साच्छात यमराज आ पढ़ावे में साच्छात विरंची। एगो आदर्श शिच्छक अवरू रहन जेकर नांव पडित गुरूदेव प्रसाद शर्मा रहे। ई हिन्दी के परसिद्ध विद्वान पं० ईश्वरी प्रसाद शर्मा के बड़ भाई रहन। अभिभावक बढ़िया रहे के ओजह से शिवजी के जिनगी में सफलता मिलत गइल। बाबूजी के सीख ईहाँ के खूव मानत रहनी। ऊहाँ के सीख रहे—"खराब लरिकन के साथे मत खेलऽ। वड़ के आदर करऽ। दाँत, नाक साफ रखऽ। सकारे उठ के बड़के असीस लऽ। गाली मत बकीहऽ। झूट मत बोलिहऽ। किताब-कापी सरिया के रखऽ। आदि-आदि अनुशासन आ शिष्टता प वड़ा धेआन दिलावस। शिवजी के जिनगी के नींव इनकर बाबूजी ए दे गइलन। हसन इमाम वालीस्टर आ डाकडर सच्चिदानन्द सिनहा के आरा में विहारी छात्रन के सभा में सवसे पहिले देखे के मोका इनका मिलल जेवना में उनुका लोग के अंगरेजी में भाखन भी ई सुनलन।

"मेरा बचपन" में शिवजी एक जगे लिखतानी कि "सचमुच संसार में महतारी के रिन से कबहीं केकरो उधार ना हो सके। तनिके अवधि में मिलल सही बाकी महतारी के सनेह के सुख जिनगी भ खाती मन-भरन कलेवा हऽ अजुओ इहे बात धेआन में बा कि जिनगी में जेवन शुभ आ सुनर बा उ माई बाप के पुन्य के परताप से।"

स्वर्गीय आचार्य शिवपूजन सहाय

—सीतारामचंद्र शरण

साहित्य के वर्णमाला से जेकरा परिचय होई, ऊ आचार्य के नाम जरूरे सुनले होई। हिन्दी साहित्य के कथा साहित्य के अमर स्तंभ स्वनामधन्य श्री प्रेमचंद जी रहीं, उहाँ के पहिला उपन्यास रंगभूमि कइसन रहे, ई जे पढ़ले होई उहे वता सकेला, बाकी ई बात कम लोग जानत होई कि ओकरो पांडुलिपि के शोधे के सोभाग्य आचार्य के रहे। हिन्दी के नाट्य साहित्य में अमर त नाम एगो जयशकंर प्रसाद जी के बा, ऊहाँ के नाटक के अलावे कुछ कहानी आ उपन्यास भी लिखनी बाकी खोज कइला पर पता लागल ह कि ऊँहों के 'तितली' 'कामायनी आदि कुछ अनुपम ग्रंथ के पांडुलिपि इहाँ के शोधले रहीं। ईँहों के विशाल व्यक्तित्व के साहित्य में का योगदान रहे, एकरा विचार करेके विषय में हमनी के अकिल भुला जाता, बस तुलसी दास जी के ईहे कड़ी वेर-बेर इयाद आवता—'सागर सीप कि माहिं उलिचे,। ऊहाँ के कवनो संस्था बनवली, कवनो बढ़वनी केकरा केकरा के प्रेरणा देहलीं, केकरा केकरा व्यक्तित्व के विकास में ईहाँ के योगदान भइल, ई कुल गनि गुथ के बता दीहल हमरा वास्ते कवहीं संभव नइखे। हम त एतने कह सकीले कि ऊहाँ के विशाल हृदय, लिखेके लगन बतावे के उदारता, समुझे के योग्यता आ अगाध विद्वता अद्वितीय रहे। कुछ लोग कहता कि ऊहाँ के हिन्दी के आधुनिक महावीर प्रसाद द्विवेदी जी रहनी हँ। श्रद्धेय द्विवेदी जी बहुत पहिले भइनी, ऊहा के निकट सम्पर्क के हमरा सौभाग्य ना रहे बाकी इहाँ के सम्पर्क में हमरा कुछ दिन खातिर आवे के मौका लागल, आ हमरा लउकल कि ढेर लोग के साहित्यिक बनावे के ऊहाँ के सौभाव रहे।

अइसे त उहाँ के लेख हम पहिले पहिल 'मतवाला' 'माधुरी' 'गंगा' आदि मासिक

पत्रिकन में देखले रहलीं बाकी पटना के 'हिमालय' आ 'साहित्य' के संपादक के रूप में ऊँचा के देन अनुपम बुझाइल। उहाँ के अपना जीवन में अनेक प्रतिष्ठित पद के सुशोभित कइलीं आ जहाँ-जहाँ उहाँ के रहलों ओह पद के मर्यादा के साथ ऊँचे कइके देखलीं। उहाँ के पहिले पहिल दर्शन हिन्दी साहित्यसंघ गर्दनीबाग के एगो गोष्ठी में भइल आ उहाँ के बेर बेर दर्शन करे के आ निकट सम्पर्क में आवे के मौका हमरा तब लागल जब पटना के राजधानी में 'भोजपुरी परिवार' बनल।

हिन्दी साहित्य संघ, गर्दनीबाग से एगो त्रैमासिक हस्तलिखित पत्रिका 'रश्मि' निकलत रहे। संस्था के पास धन ना रहे कि ऊ ओकरा मुद्रित रूप दे आ ओकरा में काम करेवाला लोग के ओतना छूट्टियो ना रहे कि महीने महीने निकाले। बाकी ओकरा आचार्य जी अइसन महान् साहित्यिक के हाथ से जन्म पावे के संयोग आ सौभाग्य रहे। पत्रिका चलत गइल आ कुछ दिन का बाद ओकर दूगो अद्भुत विशेषांक निकलल 'मेघांक' आ 'पुष्पांक'। समय आ स्थान दूनो के अभाव बा एहसे ई बात के हम संछेपे में कह देहलीं। दूनो विशेषांक के सामग्री बहुत अधिका रहे, देश के बड़का-बड़का विद्वान कवि आ साहित्यकार लोग ओहमें जोगदान कहले रहे। आचार्य समूचे सामग्री देख के सम्पादित कइके, ओकरा के छपावे खातिर बिहार राष्ट्रभाषा परिषद के निर्देशक के पद से १००० रु० छपावे के अनुदान देहले आ अन्त में ओकर अद्भुत भूमिका लिख गइले। ऊ सम्मिलित अंक बिहार राष्ट्रभाषा परिषद के समर्पित कइल गइल बा आ जल्दीये प्रकाशित होई। ऊ कइसन अनुपम उतरल बा, इ देखले से रउरा समुझ सकब। संस्था के जन्म बहुत लोग देला। बाकी ओकरा उत्तरोत्तर विकास के वास्ते जिनगी भर ध्यान राखेवाला ऊहें का रहलीं ह।

आचार्य के मत रहे कि अँजोर के दू काम रहे, रचनात्मक (Creative matter) आ दोसरा शोध (Research) रचनात्मक भाग में कविता कहानी लेख आदि भोजपुरी में आ शोध सामग्री खड़ी बोली में होखे। शोध भाग में रचनात्मक भाग पर कुछ आलोचनात्मक सामग्री का कुछ खोजपूर्ण सामग्री दिहल जाउ। भोजपुरी कहावत आ मुहावरा के संग्रह कइल जाव। शब्द कोश तैयार कइल जाव, आ 'अँजोर' लगभग एही रूप में निकलऽता।

आचार्य के श्रीमुख से निकलल भोजपुरी परिवार के भविष्य उज्ज्वल बा। उहाँ के गइनी बाकी अपना गादी पर एगो योग्य उत्तराधिकारी के विषय में उहाँ के एक आदमी से कहले रहनी। पांडेय नर्मदेश्वर सहाय भोजपुरी खातिर वोइसने सेवा साधन जुट गइला पर करिहें जइसन भारतेंदु हरिश्चंद्र अपना समय में हिन्दी के उत्थान खातिर कइले।"

अगर रउरा आचार्य के प्रति कुछ सरधा बा, उनकर बनावल भोजपुरी परिवार से, अँजोर से प्रेम बा, तऽ यथाशक्ति जवना रूप में रउरा से पारलागे योगदान करीं, उनका आदर्श के कायम करे में सहायता करीं। अँजोर के अपनाईं आ बढ़ाईं। ई हर एक भोजपुरिए के ना हर एक भोजपुरी प्रेमी केभी कर्तव्य बा।

हिमालय के पहरुआ नेपाली जी

—रमेशचंद्र झा

बेतिया आज एह खातिर परसिध वा कि उहाँ राजा के सीसमहल वा त मीना-बाजार वाटे, काली बाग वा त लालबाजार वाटे नवरंगा बाग वा त गुलाव वाग बाटे. पुरानी गुदरी बा त नया बाजार बाटे, बाकी एह सबका बावजूद बेतिया आज एह खातिर भी मसहूर बा कि नेपाली जी के बेतिया, चाहे बेतिया के नेपाली जी। नेपाली जी के खो के हमनी अइसन गीतकार खो दिहनी जेकरा कंठ से गीत झरत रहे, ओठ से फूल, आबदार मोती, खुशबूदार फूल। हमनी आपन अइसन पहरुआ भी खो दिहनीं जे जूझत रहल जिनगी का हर मोरचा पर।

आज हमरा सामने नेपाली जी के दू चेहरा बा, एक चेहरा ओह नेपाली जी के बम्बई के जे बम्बई के चिलोली, मलाड महल्ला का किराया का कोठरी के किरायादार रहस, दोसर बेतिया (बिहार) के सागर पोखरा के वासी। एगो नेपाली कहले—"भगवान तेरे घर का सिंगार जा रहा है", त दोसर नेपाली कहले जे—"धार पर जले लहर के दीप और जीवन बहता जल हुआ" बेतिया आ बम्बई के बीच जे दूरी बा, करीब-करीब उहे दूरी बा दूनू नेपाली का बीच। का हम कवनो गलती बात कह रहल बानी?

साँवर रंग, मझोला कद, चढ़ल-चढ़ल बाँह, लिलार पर भरोसा के रेघारीं लथपथ पुतलियन का बीच छोट-छोट नेपालीनुमा आँख, हर घड़ी कुछ ना कुछ गुनगुनात ओठ गठीला बदन रोबेदार चेहरा, तेज से भरल कि खुखड़ी चाहे वन्दूक ना त कलमे सही। मीठा सुभाव, चुहल से भरल भासा, बातचीत का साथ चुटकी, चले समय हर पाँव, नाप जोख के साथ, ठीक ओही लेखा जइसे नन्हा-मुन्ना सबदन के इस्तमाल करत रहलन। नेपाली जी, जे आँखि से देखलन उ कविता हो गइल, जे कुछ महसूस कइले उ गीत बन गइल। नेपाली जी के सिछा दिछा बेतिया में भइल जइसन नेपाली एक बेर बनवले रहस-"बेतिया राज-स्कूल के पण्डित मंगल पांडे आ महावीर सिंह वीरन के छाया में हमर भासा सँवर सकल, रामधारी प्रसाद 'विशारद' के सनेह हमरा खातिर वरदान बन गइल।" अपना पहिला कविता का बारे में नेपाली जी के कहल सही बा जे "हमर सबसे पहिला कविता रहे—भारत-गगन के जगमग सितारे।"

पीपल के पत्ते गोल-गोल
कुछ कहते-रहते डोल-डोल

एही कविता से नेपाली जी हिन्दी का परदा पर आ गइलन आ 'हरी घास' लेके चरचा के विषय बन गइले। छोटी छोटी सबद, छोटे-छोटे छंद, सुकुमार पाँती नेपाली जी के आपन खूबी मानल गइल। नेपाली जी के 'पीपल' कविता तब के ह, जब दरजा नौ में पढ़त रहलन। नेपाली जी एक बेर कहले रहस-"जवना माटी पर खेल के सेयान भइनी ओकर मोह हमरा के छोड़ ना सकल। हम अपना भासा में अपना धरती आ आसमान के आरती उतरनी।"

अपना कमजोरी आ लापरवाही से मैट्रिक भी पास ना कर सकले त जिनगी कारन लेहलस। बेतिया से भाग के लखनऊ गइले आ निराला जी का साथ 'सुधा' के सेवा दिहले। कहीं अस्थिर ना रहे के सुभाव नेपाली जी के आपन बात, फेर दिल्ली के मालवा के डगर पर घूमे लगले। किछ दिन मालवा से 'रतलाम टाइम्स' के सम्पादन कइलन। मोका पावते मालवा से भाग चलले आ पटना का 'योगी' में आ गइले। चारे साल का बाद-"लौटचले पंछी कोटरे को।" नेपाली जी बेतिया आके राज प्रेस के नौकरी कबूल कर लिहलन। राज प्रेस के चाकरी बहुत खराब होके भी ठीक साबित भइल। खराब एह माने में जे बराबर कैफियत पर कैफियत, ठीक एह माने में जे राज प्रेस के दफ्तर छोड़ के एक बार फेर बाहर पाँख फड़-भड़ा सकले, खुलल हवा मिल सकल, एतने का नेपाली जी का कान्हा पर लटकत गुमान के चादर मइल होत-होत बांचल। आगे के बात नेपाली जी का जबानी सुनी—

"लांछन आ अपमान से बचनी त प्रेस का चाभी के गुच्छा फेंक के भाग चलनी बेतिया के दोस्त घबराइल लोग कि गोपाल भाग गइलन। घर के लोग अकुलाइल कि एगो कमाऊ बेटा हाथ से निकल गइल। बहुत दिन का बाद बेतिया वापिस अइनी बाकी राज प्रेस का ओर कबो झांके ना गइनी। एह बीच कवि-सम्मेलने भइल। कुल मिला के हमरा जिनगी का साँस मिलल" नेपाली जी के जिनगी के इ छन बहुत कीमती मानल जाला।

'पंछी', 'उमंग', 'रागिनी', 'नीलिमा' का बाद 'पंचमी' हिन्दी संसार का सामने आइल। पंचमी का बेरा अपना ओर से नेपाली जी कहलन—

उठो, उठो साहित्य देवता तुम्हें पाँचवी बार पुकारा!
गान कंठ लेकर कवि ने आज तुम्हारी ओर निहारा!

'पंचमी' का बाद नया ढंग से 'नवीन' आइल, देश के नया सनेस देवे—"तुम कल्पना करो, नवीन कल्पना करो। आज एह बात से कबो इनकार ना कइल जा सके जे सीधा-सादा भासा में गहराई तक डुबकी लगावे वाला कवि लोगन में नेपाली जी के नाम पहिला पांती में आवेला। नेपाली जी के कहल ठीके बा जे—'चलत-फिरत भाखा में अइसन गहराई देवे के चाहीं जे केहू डूबे त मोती पावे सीप ना।'

आज नेपाली जी ना रहलन बाकी रह गइल पीपल के पत्ता, हरियर घास, नीला-नीला आसमान गीला-गीला नैन। बहुत पहले एक बेर नेपाली जी से कहले रहीं—'छाया लोक त सपना के खेल ह, कवनो कीमत पर घरे लौट आइल जाव।' नेपाली जी हँसते-हँसते जबाब दिहलन—बम्बई रहके भी हिन्दी के झंडा के रच्छा कर रहल बानी, एगो सिपाही लेखा। नेपाली जी हिन्दी का झंडा के रच्छा करत रहस सिपाही लेखा, आ हमनी उनकर आगवानी करत रहीं नया मोरचा बनावे खातिर बाकी नेपाली जी लौट के ना अइलन। नेपाली जी जीत गइले, हमनी हार गइनी। इहो बात सही बा कि बेर-बेर उनका चौकी पर हमला भइल, बाकी केहू ओह चौकी पर अधिकार ना कर सकल।

सारा देश नेपाली जी के गीत सुनत रहे, बाकी नेपाली जी सूत गइले गावते-गावते। ठीक ओही लेखा, जइसे कवनो कहानी के अगुआ के, मौत आके दबोच देवेले त कहानी का नया रास्ता मिल जाला, नया मोड़ मिल गइल। कहल जात रहे जे नेपाली जी बड़ा

मौज से, बड़ा चाव से जी रहल वाड़न, केकरा पता रहे जे भीतर-भीतर एह लेखा सुलगत भी रहलन ? कलम के धनी गोपाल सिंह नेपाली ना रह गइले आज बस रह गइल उनकर परिवार बेसहारा, बे घरबार ।

बेतिया के आपन मकान कुछ दिन पहिले बिका गइल बाकी बाँच गइल, चिंचोली मलाड (बम्बई) के किराया वाला कोठरी एकरा अलावा बूढ़ बाप रेलबहादुर सिंह, सौतेली माँ, सौतेला भाई शेरबहादुर, सौतेली बहिन, सहोदर भाई बम्बहादुर सिंह 'मगन' बेतिया का सागर पोखरा पर, ओही मकान (जे बिक गइल) से सटल-बनल बदबूदार कमरा के मामूली किरायादार बम्बई वाला किराया का कोठरी के भीतर केहू लेखा जिये खातिर मजबूर नेपाली जी के विधवा औरत वीणा देवी उनकर बाल बच्चा, सबसे जेठ लड़की शादी का लायक । आज कहल कठिन बा कि आगे का होई । एतना बात जरूर बा जे नेपाली जी के एह कहानी के केहू सुख से खतम होत ना देख सकी, जइसन कि मौसम बा चाहे हवा बह रहल बा ।

नेपाली जी के जनम धरती बेतिया का चौराहा पर तरह-तरह के चरचा हो रहल बा । हमरा ओह चरचा से कवनो मतलब नइखे बात जे भी होय, बात इहे बा जे नेपाली जी के परिवार कम, देस अधिका मरलस, उहे देस, जवना खातिर अपना खून के सियाही बना दिहलन । चीनी हमला का बाद उनका पास जे कुछ रहे, सब जोड़-जुटाके 'हिमालय ने पुकारा' छपलन । नेपाली जी के इ कदम सबका ठीक लागल ।

गोरखा जात वीर होला, जे टूट सकेला बाकी झुक ना सके । जिनगी का मोरचा पर नेपाली जी जूझत रह गइलन बाकी उनका के केहू सरकारी फाटक पर ना देखलक । सच बात कि उ जूझे वाला ना, जूझत रहे वाला सिपाही रहलन । चीनी हमला का समय आपन जे रूप दिहले देख के, उ हिन्दी के अइसन पहरुआ के रूप साबित भइल जे सर कलम होखे से पहिले, कलम छोड़ के राइफल उठा ले बाकी हिमालय का भी अइसन गोरखा जवान के जरूरत पड़ गइल ।

प्रकृति-पुजारी-नेपाली

सहज कंठ से गा गा के जे खिला गइल मंदार
हिन्दी के कल कुँज में जेकर गुंज अपार
साँस-साँस में डोल रहल बा, जेकर मोर्चा गीत
प्रकृति-प्रेम के मस्त-पुजारी 'नेपाली' जुग जीत

—राधिका देवी पाठक

काव्य-सरधाँजली

उजड़ गइल कैलास

रउरा तन में छिपल जोश के पार ना केहू पावल
के साहित्य में बा जे रावा पाछे कबो ना धावल
कांट–कुस, झाड़ी-झुरमुट में निक निक फूल खिलवनी
सब गुण में आगर हिन्दी के रउवे कबो बनवनीं
हिन्दी भइल निहाल ना कुछ बदला में लेनीं
धइला तन के मोल बड़ा सुन्दर दे देनीं
जवन छोह पवलस भोजपुरी उ का कतहूँ मीली
देखीं कवन डाढ़ि जवना पऽ एकर किसमत खीली
रउरा का गइनीं बुझात चल गइल अँजोर
खुलल पपनिआ से हमनी के ढरक रहलवा लोर
बा भोजपुर अबहीं तक ले बाटे जहँवा "उनवास"
मगर "शिव" के ना रहला से लागि गइल उदवास

—चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह,

श्री शिवपूजन सहाय जी पद्मभूषण उठ गइले

उठि गइले जगवा से पद्मभूषण हो भइले विकल विहार
घटि भइले केतना सहितवा के हो का कइलऽ करतार
दिलवा में बाटे दरदवा हो गुन का गाईं तोहार
बिनईं सोभाव तोहार रहे हो रहलऽतूहू शैलिकार
साहित शिलिपियन में अगुआ हो जे के माने संसार
तोहरा भउआ में केतना सफाई रहे जे में अनुभव रहेला साकार
बड़ बड़ किताबवा के जँचलऽहो केतना कइल तइयार
अँखिया से हमनी का लोर बहे हो दुखित भोजपुरी परिवार
चाहींसन शान्ति तोहरा आतमा के हो कहल करेवसन तोहार

—जनार्दन पाण्डेय "विप्र"

हमनो का भइलों असहाय

डगमग डोलतीया नइया खेवइया बिना, हमनीका भइलीं असहाय हो सहइया बिना
शिवजी जे जिनिगी में कइलें धनखेतिया, से सूखि के चलल मुरझाय पटवइया बिना
घेरि घेरि घुमरेला घन रे बिपतिया के, भोंजतड़ुए सउँसे शरीर हो मड़इया बिना
लकड़ी के कुन्दा केतना फिरतड़ुए मारल मारल, के सबके गढ़ि के सँवारी बढ़इया बिना
मोहफिल में जूमल बड़ुए रँग रँग के बाजा गाजा बाकी सभ लागतड़ुए फीका गवइया बिना
दीयवा में तेलवो बा, आउर बड़ुए बतोयो से होत नइखे तवहूँ 'अँजोर' देसलइया 'बिना
आगे आगे हमनी के रहिया देखई अब के ? राखी के हमनी के लाज रखवइया बिना
हमनी के घर-परिवरवा वेमाथ भइल भोजपुर भइले अनाथ बड़का भइया बिना

—धीरेन्द्र प्रसाद सिनहा "धवल"

आचार्य श्री शिवपूजन सहाय जी का निधन पर

'अँजोर' रहि गइल, बाकिर दिया बुताइ गइल
आँच गइल ना अगिया भले झँवाइ गइल
अलम रहल जे टूट गइल मातु हिन्दी के
बिहार सून भइल, भोजपुर लुटाई गइल
हाथ छूटि गइल जवन सहारा रहल
आँखि-आँखि के पुतरी के जे तारा रहल
सरन मिलत रहे जहँवा हमेसे सभका के
कुजोग अइसन कि उहे महलिया ढहल

जहर के घोंटि के हरमेस जे अमरित दिहल
दिहल जे सभके, कुछ ना केहू से लिहल
अनाथ कइके गइल देवता ऊ अचके में
जिनिगी भर जे हिन्दी के खातिर जिअल
केहू के अनभल सपनो में जेकि ताकल ना
भुलाइयो के बात अधरम के जानल ना

कोख सून भइलि हिन्दी—भोजपुरी के
सपूत अइसन सरदार अबले जामल ना
सछात शिव के अवतार त रहले शिवजी
छोड़ि सिरजन संहार ना जनले शिवजी
दधीचि हिन्दी—सँवसार के रहलन ऊ तऽ
हिन्दी खातिर कवन दुख ना सहले शिव जी

—जगन्नाथ

मति पथराइल बा

समय-समुद्र मथात आजु बा
निकलि रहल बा हालाहल
हा शिव जी ! कहँवा चलि गइलीं
हमनी के करि के पागल
कइसे छुटल देहाती दुनियाँ
गुन जेकर अपने गवलीं
ई कइसन बिपत्ति, हमनीका
कवन पाप के फल पवलीं
माँ भारती उदास आजु
हिन्दी नौका के पाल कहाँ
भोजपुरी के टपके लोरवा,
महतारी के लाल कहाँ
जाइँ सहाय जी, रउरा के पा, देवलोक अगराइल बा
हमनी के धिरजा के दीही, सब के मति पथराइल बा

—प्रो० बच्चन पाठक "सलिल"

शंकर हिन्दी के

हिन्दी गद्य जगत के शंकर यमके लाग दुआरी
रोवत कोना डगर नगर के बेदिल कनक कियारी
मुरुछाइल छवि फूल कियारी
घर आँगन सब रोवत अटारी
धउरल आइल पीटत छतिया झाँकत शिव के वारी
रोवत कोना डगर नगर के बेदिल कनक कियारी
चलल राह में लेके रथवा
जयजयकार मनावत सथवा
बरस पड़ल लेखक कविता के दल फूल बरसावत नारी
रोवत कोना डगर नगर के बेदिल कनक कियारी
रोना सकनी ढोना सकनी
सुनलीं जब बेहोस परइनी
बनल राष्ट्र-भाषा न बीच में आ दुख पहुंचल भारी
रोवत कोना नगर डगर के बेदिल कनक कियारी
जोम जाम ना तनिक अडम्बर
सुरुज चान अस छाया सुखकर
तरु के रोप फुला के भागल आज दुखी फुलवारी
रोवत कोना डगर नगर के बेदिल कनक कियारी

—श्री देव कुमार मिश्र "अलमस्त"

सरधा के लोर

लोरवा से लिखीं का करेजवे कढ़ाइल हो
'पूजनो' के 'शिव' नाहीं, दइबा के सहाइल हो
देहनीं 'अँजोर' जेहकर मने वान्हल डोर बा
'परिवार' टूअर भइल, टूटल-टाटल जोर बा
पाँतियो जोरात नइखे, गीतिया वनाईं का
रोएले सेयान लड़िका, आके समुझाईं का
अउरी-अउरी लोगवा त, लूटेला वाजार हो
भोजपुरी मइया के मँदिरवा अन्हार हो
पीअनीं महुरवा गइनीं जिनिगी सँवारि के
लिखनी के गंगा लेहले जटा में सम्हारि के
गइनीं अलोता कहँवाँ, नाव मँझेधार बा
पतवारो टूटल बाटे, दूरवे किनार वा
अँधिया से लउकत नइखे आँखीतर अन्हार वा
छने-छने छछनत आजु राउर दुलार वा
दीहनीं जनम, दीं जिनिगियो 'अँजोर' के
जोरि दीं सनेहियन के नेहि जोरे जोरि के

—सीतारामचंद्र शरण 'राम'

आचार्य श्री शिवपूजन सहाय जो के प्रतिः

जे जरि-जरि के जिनिगी भर सभका में सुभ जोति जगाईं गइल
जे राह देखावल अतना दिन कइ टूअर आज पराइ गइल
जेकर तन-मन-धन सभ कुछ हिन्दी के खातिर हरमेस रहल
जे भरि जिनिगी हिन्दी खातिर चुपुके अनगिनित कलेस सहल
जे सींचि गइल बिरवा कतना भलहीं अपने मउराइ गइल
जे खुद अन्हार में चलि-चलि के सभका के जोति देखाइ गइल
ऊहे थाती अनमोल हाथ मउवति का आज लुटाइ गइल
हो गइल खूँख 'अनुवाँस' 'भोजपुर' यूपी० खूँख 'बिहार' भइल
'शिव' जी के माटी के सरीर माटी में जाई लुकाइ गइल
अँजुरी भरि लिहल फूल हमनीं के आँसू बनि कुम्हिलाई गइल
कतनो आन्हीं मचली शिव जी के दिया किरिति के रही अमर
जबले धरती बा उन्हुकर जस गावल जाईं सगरे घर-घर

—रामेश्वर प्रसाद सिनहा

छछनि-बिछनि काहें रोएलू !

छछनि-बिछनि काहें रोएलु भोजपुरी महतारी
हहरि-हहरि बरसावत बा अंखिया काहें जलभारी
ई अकुलाइल, ई छपटाइल जस बछरू हित गाई
देखल नइखे जात अरे अब बोलु तनिक तूं माई

× × ×

सुनि ई लागल चुए अउर अँखियन से झर-झर पानी
महतारी के मुंह से निकलल करुन भरल फिर वानी
एक-एक करी चुनि लिहलऽ तूं हा हमार लरिकन के
कतना बाड़ऽ क्रूर दइव ! देख नयनन के घन के
शिव राहुल राजेन्द्र कहाँ गइले केहू बतलाई
ई अघात कइसे दइबा ? दुखिया से अरे सहाई
ले ले के सब नाम इहां हम अब संतोष करबि का
गुण के माला गूंथि अरे अब हिय में हाय धरबि का

शिव जी

शिवजी रहलन 'शिव' दुनियाँ में 'शिवं' भरल शिव-काम रहे
सब पूजत रहलन एही से 'शिवपूजन' अस नाम रहे
केकरा के कइले सहाय ना, ऊ सहायजी बोलऽ लोग
टुक-टुक का ताकत बाड़ऽ अबहूं तऽ कुछ मुंह खोलऽ लोग
पढ़ि-लिखि शहर ओर सब जाले, गाँव-ओर उन्हुकर जियरा
ई 'देहात' के 'दुनियां' में ही रमत रहे उन्हुकर हियरा
भोजपुरी-नइया के रहलन उहे एक बस खेवनहार
उन्हुका बिना टुअर लागत बा, बड़का भोजपुरी-परिवार

रजिन्नर बाबू

सत्य अहिंसा के रक्षक ऊ धरम करम के नेमी
पहिला राष्ट्रपती भारत के जन-जन के ऊ प्रेमी
आपन भाषा, आपन संस्कृति, आपन घर के बोली
खातिर जे खइलन जीवन में हंसी खुशी से गोली
घर-घर गांव नगर में जेकर बहल नेह के आन्धी
कहंवां बाड़े बोले कोई ऊ बिहार के गान्धी
"राज इनर" अइसन लइका जे धरती पर जनमाई
ऊ माई के महिमा जग में के बा कवि जे गाई

राहुल जी

महतारी-बोली सुनि के जब मुंह बिजुकावत रहलन लोग
कइलस भोजपुरी में तब ऊ नाटक, कविता के उपयोग

भाषा के भंडार भरे मे दिल दिमाग मजबूत
कइलग, ना वइठल छनभर भी ऊ वानी के पूत
लादि-लादि गदहन ले आइल ऊ पुरुखन के बानी
जेसे पूरन भइल देश, भाषा, इतिहास, कहानी
कहां गइल संसार घुमक्कड़ फक्कड़ पुतर हमार
ऊ साहस के पुतला, ऊ निरभीक विदित संसार

राजबलभ, नेपाली

कइसे हाय भुलवि हम आपन राजवलभ, नयपाली
नलिन, दिवाकर भी चलि दिहले, ई हियरा करि खाली
देववरत ब्रजबलभ, सकलनारायन, नंदकिशोर
करि के याद भरल आवत वा एह अँखियन में लोर
जब तक वहत रही गंगा-जमुना के निरमल धार
तब तक रही उजागर ई-लइकन के नाम हमार
जब तक चाँद सुरुज नभ में घूमत रहिहें सविधान
तव तक एह लइकन के जग में होत रही गुन-गान

—राम बचन द्विवेदी "अरविन्द"

सम्पदाक के विचार

एह अंक का संबंध में निवेदन

आचार्य्य शिवपूजन सहाय जी का स्वर्गवासी भइला का बाद भोजपुरी परिवार के विचार भइल कि उहाँ के श्रदांजलि देवे खातिर एको अंक निकालल जाय। पिछला अंक में एकर विज्ञापन भी कर दियाइल। एह संबंध में हमन का पास कुछ रचना भी आइल। एकरा बाद राजेन्द्र बाबू स्वर्गवासी हो गइलों, फेर राहुल जी। उचित त रहलहा कि एह तीनो रतनन का स्मृति में अलग-अलग एक-एक अंक निकलित। लेकिन दरिद्र के मनोरथ दिल में, दिले में विला जाला। आपन शक्ति आ साधन के ध्यान में रख के अन्त में इहे तय भइल कि एक अंक में एह तीनों विभूति का प्रति श्रद्धांजलि प्रगट करेवाला रचनन के सामिल कर देहल जाय। देवता बहुत आ अछत थोर; लेकिन जेतने अछत बाटे वोही में सबके पूजा होखे के चाहीं। एह अंक खातिर शिवजी पर कई रचना पहिलही आ गइल रहे। अंक का कलेवर का लेहाज से कुछ खास-खास आदमी से जे राजेन्द्र बाबू इआ राहुल जी के बहुत नजदीक रहे हमनी का रचना लेके एह अंक में दे रहल बानीं। जादे रचना देवे के इन्तजाम ना हो सकल। अपना कमजोरी पर हमनी का के घड़ी परदा डालीं।

एह अंक का प्रकाशन में बहुत देरी हो गइल। विद्यार्थी जी जरूरी काम से छुट्टी लेके घर चल गइले। उनकर स्त्री बहुत बीमार हो गइली। पाण्डेय जी का दहिना हाथ का अंगुरी में चोट अइला से बड़ा घाव हो गइल। ई काम करो त के करो। इहां त पैसा का कमी से सम्पादक से लेके चपरासी तक के काम प्रधान सम्पादके का करे के पड़ेला। अकेले त पत्र पाण्डेयजी निकालते रलीं ह। अब की केवल 'अरविंद जी के सक्रिय सहायता मिलल। साहित्य जगत विश्वास करे भा ना बाकी इ त कहहीं के परी कि अंजोर के प्रकाशन सम्पादन में

बड़ा तपस्या बा। पत्र जाये में देर होले। त कुछ भाई लोग अपशब्द भी लिख भेजेला। कठिनाई केहू समुझत नइखे श्री बनारसी दास चतुर्वेदी आ स्व० शिवजी दूनो साहित्य के महारथी अंजोर का बारे में कहले "लोक भाषा में इतने उच्च कोटि की पत्रिका अब तक नहीं निकली। जिस पत्र से साहित्य निर्माण का कार्य्य होता हो उसका महत्व अत्यधिक है। 'अंजोर' की पृष्टभूमि में साहित्य, लगन और साधना तीनों की त्रिवेणी बहती है। ऐसा पत्र यदि बन्द हो जाय तो हमारे लिये इससे अधिक दुर्भाग्य एवं लज्जा की बात क्या होगी।" खैर कइसहुँ अंक अपनेसबका सामने पहुँच गइल। देर भइल एह वास्ते हम अपने सबसे माफी मांग रहल बानी। भोजपुरी का प्रेमी भाइयन के सैकड़ों चीठी परिवार कार्य्यलिय में पड़ल बा। लाचारी से जबाब ना दियाइल। अब से चिठ्ठी के जवाब देर चाहे सबेर जरूर दियाई।

हमनी का पास भोजपुरी लेखकन आ कवियन के बहुत से उच्च कोटि के रचना रखल बाटे। अगिला अंक में सब छपी। हमनी का साधन के कमी जरूर बा लेकिन हिम्मत के कमी नइखे। भोजपुरी के ई दिया भले कबहुँ टहकार बरे, चाहे कबहुँ टिमटिमात बरे, लेकिन बरत रही।

पछिला बरिस का नवो गरह के सम्मेलन के असर दुनिया पर कुछ परल होय चाहेना, लेकिन बिहार का साहित जगत पर आ खास करके भोजपुरी परिवार पर एकर प्रहार भइल। देवव्रतजी, नलिन जी, शिवजी, राजवल्लभ बाबू, राजेन्द्र बाबू, राहुल जी के हमनी से छीन के भगवान का तृप्ति ना भइल त श्रीगोपाल सिंह नेपाली जी के भी हमनी से छीन लेले।

राजेन्द्र बाबू के कुछ प्रशंसा कईल सुरुज के दिया देखवला अस बा। भारत के पहिला राष्ट्रपति होके जे काम अपने का कइलीं उ इतिहास के पन्ना पर सोना का अच्छरि से लिखाई। अपने के विद्वता, सेवा, त्याग के वर्णन ना हो सके। भोजपुरी पर अपने के विशेष प्रेम रहे।

शिवजी के साहित्य के दधीचि कहला में कौनो कमी नइखे। अंजोर आ भोजपुरी परिवार के स्थापना अपन ही के कइल रहे। अपने का छोह छिनइला से परिवार टुअर हो गइल आ अंजोर पर अन्हरिया के छाया परल। केकरा से कहीं आ का कहीं कि हमनी ओर अपने के कतना दुलार प्यार रहे।

राहुल जी लंका से अंजोर के खबरि लेसु। अपने के भोजपुरी प्रेम मसहूर बा। हमनी खातिर, अंजोर खातिर बड़ा नेह राखत रहली हां। उहां का लिखले रहीं कि पटना का आसपास आइबि त अंजोर के भार अपना उपर लेबि। एह युग के महापंडित राहुल जी का बारे में कुछ लिखत बरबस आँख बरिसे लागतिया। दूचार शब्द में के कहो इहां सब के गुण गान थोरे में ना हो सके। हमनी का आपन करबद्ध श्रद्धांजलि एह तीनों अवतारी युग पुरुषन का चरणन में अर्पण करतानी। भगवान इहं लोग के आत्मा के सद्गति देसु।

नेपाली जी चम्पारण जिला का बेतिया के निवासी रहले ह। उनकर पिता नेपाल से आके इहां बस गइले आ ऊ इहां के निवासियन में घुलमिले गइले। नेपाली जी घर पर भोजपुरिये में बोलस, बात करस। हिन्दी के अपना लेले रहस। अपना कविता से हिन्दी के भंडार भर लें। उनकर सेवा अनमोल बा। उ प्रकृति के कवि रहस। नेपाली जी का अवसान से हिन्दी जगत का जे हानि भइल हां ऊ कभी पूरा ना होई। भगवान उनुका आत्मा के शान्ति आ सद्गति देसु।

—गणेश चौबे

भोजपुरी परिवार, पटना के आगामी दो महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

भिखारी ठाकुर

ले० महेश्वर प्रसाद

भोजपुरी के सहृदय कवि बाबू भिखारी ठाकुर का परिचय देना सूर्य को दीपक दिखाना है। कहने की आवश्यकता नहीं कि वह अपनी अद्वितीय प्रतिभा के बल पर समस्त उत्तरी भारतीय जनता के गले का हार हो रहे हैं। उनका मोहक नृत्य, रोमांचकारी नाटक तथा हृदय-वेधक संगीत जादू की तरह प्रभाव जमाए हुए हैं। प्रस्तुत पुस्तक उन्हीं की सारी कृतियों का सुविस्तृत ज्ञान कराने के अभिप्राय से लिखी गई है। इसके अतिरिक्त काव्य-रसिकों, सहृदयों एवं साहित्य-सेवकों के लिए भी. उसमें काफी सामग्री प्रस्तुत की गई है। भोजपुरी भाषा के प्रेमी सज्जन आज ही अपने-अपने नाम उसकी प्रतियाँ आर्डर भेज कर सुरक्षित करा लें; अन्यथा अधिक समय तक प्रतियों के बचने की सम्भावना नहीं है। मूल्य मात्र २ रु० ५० नये पैसे।

संक्षिप्त भोजपुरी व्याकरण

ले० रासबिहारी राय शर्मा, एम०ए०,
डिप एड, साहित्यरत्न।

हिन्दी और संस्कृत साहित्य के विद्वान श्री रास बिहारी राय शर्मा द्वारा लिखा गया भोजपुरी का यह सर्वप्रथम संक्षिप्त व्याकरण अपने विविध अंगों के साथ सहज-सुबोध शैली में प्रकाशित हो रहा है।

संस्कृत का सुप्रसिद्ध नाटक
वासवदत्ता का भोजपुरी अनुवाद

प्रस्तुत पुस्तक भोजपुरी के विद्वान श्री देवकुमार मिश्र 'अलमस्त'कृत भोजपुरी अनुवाद है। अनुवाद सुन्दर उतरा है। पृष्ठ सं० ५८ मूल्य १) प्र० रामानन्द पुस्तकालय, हेतमपुर, जि० शाहाबाद।

अँजोर के विज्ञापन-दर

कभर के चौथा पन्ना—१५०)
,, तीसरा पन्ना—१२५)
साधारण पन्ना— १२०)
,, आधा पन्ना—५५)
साधारण चौथाई पन्ना—३५)

एक प्रति के ७५ नया पैसा
एह प्रति के एक रुपया

सालाना—स्थानीय तीन रुपया,
बाहर साढ़े तीन रुपया

प्रकाशक
भोजपुरी परिवार, पटना ३

मुद्रक: युनियन प्रेस, पटना-४

"अँजोर" के नियम

१ "अँजोर" में छपे खातिर जे भी रचना भेजल जाय ओकर प्रतिलिपि अपना पास जरूर राख लिहल जाय।

२ कौनो लेख, कविता, प्रश्न, चित्र आदि के छापे या ना छापे के आ काटे छाँटे के पूरा अधिकार सम्पादक के रही।

३ "अँजोर" में बिना नाँव गाँव के मुनाहिजा कइले, रचनन के उत्तमता पर अधिक ध्यान दीहल जाई।

४ पन्ना के एक ओर लेख लिखाये के चाहीं, भाव आ भाषा पर ध्यान त राखहीं चाहीं जहाँ तक होखे लेखन के काया छोटे होखे के चामीं।

५ अँजोर" के गाहक कवनो अँक से बनावल जा सकेला। जवना महीना में दाम आ जाई ओही महीना से गाहक समझल जाई।

६ स्थायी गाहक भाई चिट्ठी पत्री लिखत खानी आपन गाहक संख्या जरूर लिख सु। एक बरिस के चन्दा भेजि के जे गाहक बनिहें उहे भाई स्थायी गाहक कहइहें।

७ रचना, मनीआर्डर, व्यवस्था सम्बन्धी पूछताछ के पत्र सम्पादक के पता से भेजे के चाहीं।

८ आलोचना, खातिर पुस्तक के दू प्रति भेजेके चाहीं।

घोषणा-पत्र

१ प्रकाशन स्थान—पटना।

२ प्रकाशन की नियतकालिता—त्रैमासिक।

३ मुद्रक का नाम—पाण्डेय नर्म्मदेश्वर सहाय।
राष्ट्रीयता—भारतीय।
पता—सालिमपुर अहरा, पटना ३।

४ प्रकाशक का नाम—पाण्डेय नर्म्मदेश्वर सहाय।
राष्ट्रीयता—भारतीय।
पता—संचालक, भोजपुरी परिवार, सालिमपुर अहरा, पटना ३।

५ संपादक का नाम—पाण्डेय नर्म्मदेश्वर सहाय।
राष्ट्रीयता—भारतीय।
पता—सालिमपुर अहरा, पटना ३।

६ समाचार पत्र के मालिकों और कुलपूंजी के एक प्रतिशत से अधिक शेयर वाले साझेदार या शेयरधारियों के नाम और पते- पाण्डेय नर्म्मदेश्वर सहाय, सालिमपुर अहरा, पटना-३

मैं पाण्डेय नर्म्मदेश्वर सहाय, इसके द्वारा घोषित करता हूँ कि ऊपर दिये गये ब्यौरे जहाँ तक मेरी जानकारी और विश्वास है, सही हैं।

ह० पाण्डेय नर्म्मदेश्वर सहाय

[बिहार सरकार द्वारा विद्यालयों एवं पुस्तकालयों के लिए स्वीकृत]

अँजोर

[भोजपुरी परिवार (पटना) के त्रैमासिक मुख-पत्र]

❖

जामें रस कछु होत है ताहि पढ़त सब कोय
भाव अनूठो चाहिए भाषा कोऊ होय

—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

❖

प्रधान सम्पादक
पाण्डेय नर्म्मदेश्वर सहाय

कला-४ किरिनि-३-४
अक्टूबर १९६३ ई०
जनवरी १९६४ ई०

संरक्षक
श्री अम्बिका शरण सिंह, राज्य-मंत्री, बिहार
संपादक-मंडल
गणेश चौबे : रास बिहारी राय शर्मा
रामवचन द्विवेदी 'अरविन्द' : प्रो० बसंत कुमार : रामनाथ पाठक 'प्रणयी'
सहायक संपादक
अविनाश चन्द्र विद्यार्थी

एह अंक में पढ़ीं—

पन्ना
१ गीत—हरिराम द्विवेदी १
२ भोजपुरी काव्य में शरद (निबंध)—रामेश्वर प्रसाद सिनहा २
३ शरद के विहान (कविता)—रामनाथ पाठक 'प्रणयी' ७
४ प्रकृति के हृदय भैंसालोटन—हरिश्चन्द्र प्रसाद ८
५ बउध-लीला (प्रबंध काव्य)—स्वामी विमलानन्द सरस्वती १३
६ माँग (कहानी)—विवेकी राय १६
७ शरद के रतिया (कविता)—गीता देवी पाठक १९
८ बिहँस उठल आकाश कविता)—सीता सुन्दर देवी 'प्रियंवदा' १९
९ भोजपुरी कहावत में आलस्य चर्चा—डा० सत्यदेव ओझा २०
१० रोजगार दफ्तर—चतुरी चाचा २२
११ अभिज्ञान शाकुन्तल के भोजपुरी रूपान्तर—देव कुमार मिश्र 'अलमस्त' २५
१२ कविता कुंज—
    (क) गजल—चन्द्रशेखर मिश्र ३२
    (ख) पराती—प्रो० बसंत कुमार ३३
    (ग) गीत—पाण्डेय सुरेन्द्र ३४
    (घ) बिरहिन—सूर्य परमार ३४
    (ङ) भिनुसहरा के बेरिया—कुमार शैलेन्द्र ३५
    (च) चयनवाँ नाहीं लेवे राम—राहगीर ३५
    (छ) आइल बसंत बहार—नाथ नारायण सिंह ३६
    (ज) फाग गीत—प्रफुल्ल चन्द्र द्विवेदी ३७
    (झ) अइलन गंगा के तीर—विश्वनाथ प्रसाद ३७
    (ञ) चेतह चीन—विश्वनाथ राय ३८
१३ टीपन निबंध.—विधनाथ प्रसाद ३९
१४ मौर्य काल में मगध के मूर्ति कला—सुमन ४१
१५ सुरमा सगुन बिचारे ना (धारावाहिक उपन्यास)—रमेश चन्द्र झा ४३
१६ भोजपुरी के मुद्रित साहित्य की सूची—गणेश चौबे
१७ टिपटिपवा (लोक कथा)—स्वामी विमलानन्द सरस्वती ५९
१८ भोजपुरी शब्दकोश ६०
१९ भोजपुरी मुहावरे ६१
२० संपादक के विचार ६२

प्रकाशक—भोजपुरी परिवार, पटना—३

अलरौड-बक्सर
३०·3·६

'तमसो मा ज्योतिर्गमय'

अँजोर

धरती के लोर बाट जोहि रहल भोर के,
पह फाटल, बिहँसी अब किरिनियाँ 'अँजोर' के।

कला-४ | अक्टूबर १९६३ – जनवरी १९६४ | किरिनि ३-४

गीत

नेहिया कै दियना जरवली हो भइलैं अँगना अँजोर
सपना पलकियाँ चढ़वली हो अइलैं सुखवा कै लोर
अनमुख भइलैं पियरवाऽ धइ गइलैं जोगिया कै भेस
लिखि पाती कोरे बदरवा के कगदा पठउलैं सनेस
बाँचि न पवली लिखनियाँ बरसलैं अच्छरवन कै बून
मोहिया कै माला बनवलो हो छींटल मोतिया बटोर
देखली अजोरिया के पनियाँ धोवले चिरइयन कै पाँख
बिछिलाइ जाले किरिनियाँ चिकनई प, ठहरै न आँख
नोहर भइ गइली छँहियाँ सुधियौ सवराइल खोजि
असरा कै बिरवा लगवली हो राखि मनवाँ अगोर

हरिराम द्विवेदी (वाराणसी)

भोजपुरी काव्य में—

शरद सोहावन आइल रे !

रामेश्वर प्रसाद सिन्हा, बक्सर

प्रकृति के आँचल से झाँकती हुई ऋतुओं का अगर आप अवलोकन करें तो पायेंगे—ग्रीष्म, वर्षा, शरद, शिशिर, हेमन्त, एवं बसन्त को। इन छवों ऋतुओं का अपना विभिन्न रंग हैं। विभिन्न विचित्रताएं हैं इनकी। सबकी अपनी-अपनी महत्ता है—अपने स्थान पर। प्रकृति के आँचल में अगर ग्रीष्म झाँकता है तो धरती का रंग फीका होगा, नीरस होगा। वन्ध्या—सी लगेगी वह। अगर वर्षा झाँकती है, तो धरतो का रंग धानी होगा। सरस होगी वह। अगर शरद् झाँकती है, तो धरती का रंग लुभावना होगा, सुहावना होगा। प्रफुल्लित-सी लगेगी वह। मोती जड़े मिलेंगे उसके दामन में। अगर बसन्त झाँकता है तो धरती का रंग वासन्ती होगा। सरसों की पीली चादर ओढ़े झलकेगी वह।

यों तो बसन्त ही ऋतुओं का राजा माना गया है, फिर मी शरद् का महत्त्व भी विशेष उल्लेखनीय है। ग्रीष्म की मुरझाई लतिकाओं को वर्षा ऋतु रिमझिम रस-फुहियों से सोंचती है, जीवत-दान देती है उन्हें और शरद् ऋतु रंग-रूप को सजाती है, संवारती है उनके यौवन में निखार भरती है, सलोनापन उड़ेलती है वह उनमें। प्रस्फुटित करती है वह।

वर्षा के बीतते ही शरद् लगता है धरती की हरितिमा में निखार पैदा करने। बरसात के दिनों में पंकोली रहती है न वह। सर्वत्र जल-ही-जल नजर आता है। गलियां सड़कें एवं राहें सभी कीचड़ से भर आती हैं। फेनिल हो उठता है नदियों-नालों का मटमैला जल। लेकिन शरद् के शुभागमन के साथ ही एक नया रंग चढ़ता है प्रकृति पर। अम्बर की नीली घाटियों में उमड़ते काले कजरारे घन न जाने कहाँ चले जाते हैं और स्वच्छ हो उठता है नीलाकाश। मुस्करा उठती है, झकझका उठती है सितारों के देश की चन्द्रमुखी परी झिलमिल तलैया में और लगती है अपने चँदा से अठखेलियां करने, बादलों के हल्के—स्वत पंखों पर मचलने इठलाने। सिमट उठता है नदियों का मटमैला फेलिन जल उसकी छाती में और झलमला उठता है, अपनी निर्मलता के साथ। सूर्य के विलगाव पर रोती हुई निशा के वसुधा पर लुढ़के आंसू के बून्द चमचमा उठते है मोती के सदृश्य और फिर सुबह होते ही दिवस की झोली में बटोर-समेट कर रखलेता है रवि एक एक बून्द चुन-चुन कर उन्हें निशा-प्रेयसी का उपहार समझकर। इधर हरी-घासों पर बिखरे ओस कण और फिर से सूर्य की सुनहली किरणें। मन मुग्ध हो उठता है धरती की यह सुनहली छवि देखकर। और ऐसे वातावरण में किसी सहृदय की भावना वेगवती हो उठे; आकृष्ट हो जाय वह उसकी तरफ, डूब जाय वह उसमें, और उसकी रंगीनियों में तो अत्युक्ति ही गया ? आश्चर्य ही क्या।

शरद के इन्हीं रूपों एवं सलोनापन के कारण ही हमारे भोजपुरी कवियों ने भी जहाँ ग्रीष्म वर्षा एवं बसंत का सफल चित्रण किया है, वहाँ शरद के लिए कोई स्थान रिक्त रह गया हो, ऐसी बात नहीं। विभिन्न ढंग से मनोहारी चित्रण प्रस्तुत किया है उन्होंने शरद का। आइये, जरा भोजपुरी कवियों की रचनाओं पर भी दृष्टिपात करें!

बीत गयी बरसात। दूर हो गया अब टूटी झोपड़ियों का टप-टप चूना एवं हाथ-पैर की अंगुलियो का सड़ना। कवि की सरल अभिव्यक्ति देखिये—

डमखोवाला सड़ल मड़इया
चुअत रहे दिन-रात,
रोपनी में सड़-सड़के अंगुरी-
लात रहे हगुआत,
बीत गइल बरसात।

—श्री महेन्द्र शास्त्री

और बरसात के बीतते ही आ गया शरद मुस्कुराता हुआ काली कजरारी बदलियों का घूँघट हटाता। कितनी मार्मिक अभिव्यंजना है—

पुरब परी फजिरे मुसका के
खोललस जब अपन सिन्होरा
खुलल डगरिया नगरिया बजरिया के
बटिया खुलल चारू ओर।
करिया बदरिया के घुंघट हटा
मुसुकाइल शरद रितु गोर।

—श्री कमलेश 'मधुरिमा'

हाँ, तो मुस्करा उठा है शरद् और प्रसन्न हो उठा वर्षा से ऊबा हुआ मन। फैल गयी वसुधा पर सर्वत्र हरी-हरी घास। छा गयी काले कजरारे उमड़ते बादलों में सफेद केशों सी उजराई और सूख गयी धरती की पंकीली चुनरी। कितना सजीव चित्रण है वह कवि का!—

कतहूँ ना पांकी, कतहूँ ना धूरि
साफ हो गइल डहरिया।
दिन भर घाम, बहेला पछेया,
धरती के सुखि गइल चुनरिया।
उठल पलिहर धान दुधाइल, कन-कन प्यार समाइल रे।
नदियन के उफनाइल मनवा
घिरल अउर अब उतरल पानी।
उजराइल हो श्याम बदरिया
बीत गइल उन्हकरो जवानी।
सगरे धरती पर हरिअर-हरिअर दुबिया छितराइल रे!
शरद सोहावन आइल रे!

—श्री जगन्नाथ

अरे! यह लहँगा किसका लहरा उठा है!

बीत गइल बरखा के पहरा
सिहरावन लागे भिनसहरा
ताल-ताल में लाल उमिरिया खिल-खिल इठलाइल।
बाज उठल केकर दो पायल, केंदो मुस्काइल।
शरद के लहँगा लहराइल॥

—श्री प्रण

शीतल बयार भी तो सिसक उठी हैं, सिहर उठी है शरद के आते ही।—

लोर चुआवत बीतल बरखा
सिसकल सरद बयार
अंजोरिया टह-टह बा।

—श्री जवाहर

इधर देखिये, बह रही है शीतल बयार और डोल रहे हैं धान के पौधें खेतों में झुर झुर! कितनी सरसता है इन पंक्तियों में!

सीतल बहल बयार शरद के.
झुर झुर डोले धान खेत में।
साँवर-साँवर हरिअर-हरिअर
पनखी पाकल नीचे ऊपर
हारिल के पंखिया से पाटल
धनखर के मैदान खेत में।

—श्री प्रभुनाथ मिश्र

अकाश से श्याम बादलों के छटते ही नीलापन की एक विचित्र-सी आभा झलकती है। नभांगन में और नीलम-घाटियों के चाँद पर एक नया रंग चढ़ आता है। मुस्कुरा उठत है वह गोर मनोहर रूप में और चकोर भी आश्चर्य-चकित हो जाता है उसे देख कर। सकुचा जाती है धरती उज्ज्वल-सफेद चुन्दरी में। गीतकार श्री जगन्नाथ की अभिव्यंजना देखें—

निरमल भयल अकाश अँजोरियां
रह रह धरती पर मुस्काइल।
चानी अइसन ऊजर चुनरी
में धरती हँसलस सकुचाइल।
गोर मनोहर रूप चान के निरखि चकोर चिहाइल रे!

—श्री जगन्नाथ

कितनी अनूठी कल्पना है यह कवि को। इसमें कितनी मार्मिकता एवं भावुकता तथा सरसता है। 'गोर मनोहर रूप चान के' में!

और भी देखिये, स्वर्ग के पाहुन को सेज पर पाकर टेम्हों का लार भी चू गया। श्री राकेश के भावुक हृदय की अभिव्यंजना देखिए—

रसे-रसे सरके कुमुदुनी के अँगुरी में
भँगुआइल रस के फुहार,

सरग पहुनवा के पाके सेजरिया प
चुइ गइल टेम्हीं के लार,
ओकरे अंजोरिया में मावल तलइयाके
चितवा में परल चिहार,
आतम के जोती के फइलल ई माया वा
गवँई के गोरी के प्यार।
चँदा के परिछहियाँ झिलमिल तलैया में
झाँके रूपनवा निहार,
बड़ अगराइल लहरिया के धियवा
गुदुरावे अँचरा पसार।

—श्री राकेश'

शरद् का आगमन होते ही-शरद् सुन्दरी भी आ पहुँचती है। चाँदनी की साड़ी पहन तारों की फुलवारी से विहँसती-इठलाती और ढलकाने लगता है चाँद वसुधा पर रसभरी गगरी। झड़ने लगती हैं प्यार की फुहारें और बरसने लगती है अमृत की धारा-श्री राहगीर की कल्पना की सफल उड़ान देखिये—

पहिन चाँदनी के सारी
तारन के फुलवारी
विहँसत मुख आवे, शरद सुन्दरिया।
आइल शरद ·········।
प्यार के फुहार बरसे
अमरित के धार बरसे
चाँद ढरकावे धरती रसके गगरिया।
आइल शरद ·······।

—श्री राहगीर

और यह देखिये, चाँदी की सुन्दर ड्योढ़ी से चाँद भी उतर आया धरती पर।

ले गंध चलल गमकत समीर
महकत सरिता के तीर-तीर।
चाननी रात का आंगन में
मोती बन चमकल नयन नीर।
चानी क सुन्दर ड्योढ़ी से
धरती पर चान उतर आइल।
काया आकाश के लहराइल।

—श्री मंजुल

कितनी मिठास भरी कल्पना है। कवि की पंक्तियाँ मन को आकृष्ट कर लेती हैं।

शरद आता है और चाँद निशि के काले बुर्के को अपनी धवल किरणों से हटा देता है एवं उसके रूप में निखार पैदा कर देता है। उसके स्याह दामन में लगे ओस

विन्दुओं के गोटे मोती के सदृश्य चमचमा उठते हैं तथा चमचमा उठती हैं उसकी 'चुनरिया' और 'चदरिया'। बहने लगती है बयार और बिखरने लगता है सुरभि। यह साँवरिया है, जो सज-धज कर जा रही है प्रिय के पास झुमती हुई? श्री 'पद्म' की अभिव्यक्ति देखे। कितनी सरसता एवं आकर्षण है इन पंक्तियों में, कितनी कलात्मकता की चमक है।—

चमके चान अकासे रतिया
फुटल जोति गगरिया,
करि सिंगार, चललि झूमि के
पिय के पास सँवरिया,
बहलि बयार, सुरभि ले महकल
चारू ओर अन्हरिया
लहरल चम चम कोर चुनरिया
मोती जड़ल चदरिया।

—श्री पद्मदेव 'पद्म'

स्वर्ग की सुन्दरी भी आज स्नान कर धरती पर आ पहुँची है? उसी की यह सबुज रंग चुनरी है, जो सुख कर निखर सी रही है—

आ गइलि सरग के सुनरिया नहाइ के
निखरि रहल सबुज रंग चुनरिया झुराइ के
झूमि रहल धान के कियरिया बयरिया में
डोलि रहल झुर-झुर रस-बेनिया बयार के।

—अविनाशचंद्र विद्यार्थी

शरद के चाँद का सलोनापन किससे छिपा है? नीलाम्बर में धवल चाँदनी का मचलना-इठलाना भला किसके अन्तर की भावनाओं को गुदगुदाकर उसमें हलचल नहीं पैदा कर सकेगा। और फिर, शीतल पुरवाई भी तो सिहरन भर देती है रग-रग में। ऐसी स्थिति में प्रिय का सान्निध्य न होना बहुत ही दर्द पैदा करता है प्रेयसी के दिल में वातावरण की इन रंगिनियों में प्रियतम की याद, सुधि, वेगवती हो उठती है! सोया हुआ प्यार भी तिलमिला उठता है। देखिये, परदेशी की सुधि लेकर ही तो लहराइ है यह पुरवाई—

सीतल पुरवाई लहराइल
परदेसी के सुधि ले आइल।
फहरल आँचर, जागि गइल
आँतर के सुतल पियार रात में।
सिहिके लगल बयार रात में।

—श्री प्रभुनाथ मिश्र

शरद ऋतु में प्रकृति प्रफुल्लित रहती है! रंग-रंग के फूलों से धरती रंगीन रहती है। कहीं लताएँ डोलती हैं, तो कहीं बिरवाई झूमती दीख पड़ती है। यहाँ तक कि निरस बबूल का वृच्छ भी पियराई से भर उठता है। जल पर बिखरे करमी के बैंगनी फूल

तो और भी लुभावक होते हैं। देखिये, कितनी यथार्थता एवं सजीवता है इन पंक्तियों में—

रंग-रंग के फूल खिलइले
खपड़ा पर बिहँसलि बिरवाई।
निरस बबुरवा भी जागल बा
उमड़लि ओकरो में पियराई।
फूल बेगनी के करमी के पनिया ऊपर मुसुकाइल रे।

—श्री जगन्नाथ

शरद के बिहान

बरसेला सोनवाँ, शरद के विहान रे !
मेघवा बिलाइ गइले,
फरिछ अकाश भइले,
चम-चम चमकेला खेतवा में धान रे !
बरसेला सोनवाँ, शरद के विहान रे !
गोधन के गीत जागल,
छठिया प दीठ लागल,
गह-गह करे घर-दुअरा—दलान रे !
बरसेला सोनवाँ, शरद के बिहान रे !
मोतियन माँग भरल,
जुरवा तरेगन जड़ल,
रात के सुरतिया प नाच उठे चान रे !
बरसेला सोनवा, शरद के विहान रे !
काहे मनमारि गोरिया,
तिलि-तिलि झाँके खोरिया,
कहवाँ शरीर बाटे, कहवाँ परान रे !
बरसेला सोनवाँ, शरद के बिहान रे !

रामनाथ पाठक 'प्रणयी'
(आरा)

प्रकृति के हृदय भैंसालोटन

—हरिश्चन्द्र प्रसाद, बी० ए० (पूर्वी चम्पारण)

चम्पारन जिला के उत्तरी-पच्छिमी छोर पर गंडक नदी के किनारे घोर जंगल में भैंसालोटन बा। इहाँ के प्राकृतिक दृश्य देखते बनले। नदी के ओह पार नैपाली क्षेत्र में मंदार पर्वत-श्रेणी बा, पूरब में सोमेश्वर पर्वत माला के दृश्य तथा दक्खिन में घनघोर जंगल।

बगहा रेल-स्टेशन से इहाँ जाय के दूगो रास्ता बा—सिधांव होके नहर-मार्ग से और मदनपुर-सिरिसिया-कोतराहाँ होके जंगल मार्ग से। बगहा से नहर-मार्ग सेभैंसालोटन के दूरी ३६ मील बा और जंगल-मार्ग से २७ मील। नहर मार्ग जन-मार्ग न वा बल्कि एकर उपभोग नहर विभाग के अधिकारी और सेवक लोग करले। जंगल-मार्ग अब पूरा पक्का हो गइल जे पर दिन-रात में कै गो मोटर-बस दउरले। ए वजह से यात्री लोग के इहाँ जाये में कोई कठिनाई न होय।

भैंसालोटन एगो असइन तीर्थ-स्थान बा जहाँ पहुँचला पर लोग के हृदय में अइसन आध्यात्मिक भाव जाग्रत होखले जे से लोग कुछ समय वास्ते सांसारिक मोह-माया बिलकुल भुला जाले। इहां के सबसे महत्वपूर्ण जगह-त्रिवेणी संगम बा। ई उहे जगह वा जहाँ सोनहा और पंचा नांव के दूगो नदी आके गंडक नदी में मिलल बा। एही से ई संगम के त्रिवेणी कहल जाले। सोनहा और पंचा त गर्मी के दिन में बिलकुल सूख जाले लेकिन गंडक साल-भर सजला रहलें। एही से पुरान में एकरा के सदानीरा भी कहल गइल बा। पुरान के लिखे वाला एकरा के शालिग्रामी के नाम से भी पुकरले वा। नैपाल में एकरे नाम सप्तगंडकी वा और बौद्ध लोग हिरण्यवती या मही कहले। ई नदी नेपाल में पहाड़ और वन-प्रान्तर से होइत भारत-नेपाल सीमा के नजदीक चम्पारण जिला में त्रिवेणी-संगम के पास समतल में प्रगट भइल बा। त्रिवेणी-संगम से लेके पटना शहर के सामने तक जहाँ ई गंगा नदी में मिलले, एकर धारा के लम्बाई १७३ मील वा जे में से दाहिना तट के ११½ मील नैपाल के जमीन के छूअइत बा।

हर साल माघ महीना में अमावस के दिन भारत और नेपाल के हिन्दू लोग बहुत संख्या में यहाँ जुटले और त्रिवेणी में स्नान करके अपना के धन्य मानले। एही अवसर पर संगम के नैपाली क्षेत्र में एगो बड़का मेला लागले जे में माल-मवेशी और किराना के बहुत खरीद-बिक्री होखले।

पौराणिक दृष्टिकोण से भी त्रिवेणी-संगम के आपन खास महत्व वा। कहल जाले कि श्री मद्भागवत में वर्णित गज और ग्राह के युद्ध के प्रारम्भिक स्थल इहे बा जहाँ से दूनो लड़इत-भीड़इत केतना बरिस में सोनपुर के पास कोनहारा घाट पर पहुँचल और विष्णु भगवान के द्वारा त्राण पवलक। एकर निदेश चम्पारन जिला के भोजपुरी के सुकवि श्री बलदेव प्रसाद श्रीवास्तव अपना 'चाम्पारन के गीत' नामक पुस्तिका में भी कहले बारन।

पंक्ति :—

‘तीरथ इहंवे बा तिरबनी,
भइल गाह-गज के सगराम।
प्रभुता थाक गइल जब आपन,
लिहलन गज गोबीन के नाम।
खुदे गोबीन छोड़वलन बंधन,
धा के गज का पाँव के।
सुनीं, सुनाईं कथा आज हम,
चम्पारन के गाँव के।’

त्रिवेणी संगम के अलावे भैंसालोटन के जंगल में अइसन कै गो स्थल बा जेकर दर्शन कइला से पाप नाश हो जाला और हृदय पवित्र। एह स्थलन में पहिलका नांव जटा शंकर के मंदिर के लेहल जा सकले। ई मंदिर त्रिवेणी-संगम से आधा मील दक्खिन और भैंसालोटन से डेढ़ मील में पूरब बा। ई बहुत प्राचीन मंदिर बा। एकर निर्माण के करवलक, ई जानल एगो समस्या बा। लेकिन मंदिर के देखला से ई साफ झलकले कि ई हिन्दू-काल के मंदिर त जरूर बा। मंदिर के पुजारी लोग कहले कि एकर निर्माण आल्हा-ऊदल के पिता आज से लगभग ८०० बरिस पहिले करौले रहस। ए मंदिर के महादेवजी पर लोग के अटूट श्रद्धा बा काहे कि लोग कहले जे ई महादेवजी से जे अभ्यर्थना कइल जाले से जरूर पूरा होखले। मंदिर के मुख-द्वार पच्छिम रोख के बा और आंगन बहुत लमहर। एकरा बचाव ला यहाँ महन्थ हमेशा एकर मरम्मत करावलन।

साधना वास्ते भी ई जगह बड़ा अनुपम बा। सवेर में जब पूजा के बेर घंटी बाजले या रात में शृंगार और आरती के बेर, एकर त वर्णन कइल बड़ा कठिन बा। एह समय के घड़ी-घंटा के आवाज जंगल में शान्त वातावरण में एकाएक गूंज उठले और लोग के हृदय में आध्यात्मिक भावना जाग्रत कर देवले। एही से चम्पारन के रहस्यवादी कवि श्री विश्वनाथ प्रसाद ‘जटाशंकर की आरती’ शीर्षक कविता में एकर आध्यात्मिक महत्व पर प्रकाश डालइत लिखले बारन कि—

‘ढण्, ढण्, ढण्, ढण्, बजता है घड़ियाल
कि प्रभु के प्राणों के उद्वेलित होने की
ध्वनि सुन्दर गूंज रही है।
डिम्, डिम्, डिम्, डिम् डमरू बजता
या प्रभु के प्राणों की धड़कन उछल रही है।
झन्, झन्, झन्, झन्, झाँझन बजती
प्रभु के मानस की तरंग, लो, थिरक—
थिरक कर नाच रही है
और कक्ष में घंटा जो टन्, टन्; बजता है
पार्वती, शंकर के पावन, सरस मिलन की
महामांगलिक बेला का अभिनन्दन स्वर है।’

इहाँ के दोसर मंदिर कमलेश्वर स्थान (आधुनिक कवलेश्वर स्थान) के नाँव से प्रसिद्ध बा। ई मंदिर के निर्माण आज से ११२ बरिस पहिले सम्वत् १८९७ के फागुन महीना में अँजोरिया पख के नवमी तिथि के बेतिया के महाराज श्री आनन्द किशोर सिंह के शासन-काल में भइल रहे। ई भगवान शंकर के आधुनिक ढंग के मंदिर बा। मंदिर के अहाता में प्रवेश कइला पर मंदिर के द्वार पर एगो मित्र-लेख उत्कीर्ण बा जेकरा के पढ़ला से बेतिया-राज-वंश के पूरा परिचय और ओकर राजा लोग के वीरता, धार्मिकता आदि के पूरा ज्ञान हो जाले। लेख ए लेखा बा—

'श्री गणेशाय नमः पुरा चम्पकारण्यदेशे नरेन्द्रो महोदग्रसिंहो नृपाणी शरण्यः सदा दानशीलो गुणानां निकायो रणे कर्कशो दुर्जयोभूद् रिपुणां :१ श्री श्री गज सिंह नामक नृपो जातस्तत स्ततसुतो येनायं प्रघितो महागुणयुतो देशो मुदा शोभितः राजानो विजिता जितोहित गणो देवा द्विजास्सत्कृताः ख्यातो राजकुलावतंस निकरैस्सम्पूजितस्सत्कृत :२ दिलीप सिंहों नृपसिंहो नृपवंश केतु दिल्लिश्वरैः सत्कृत श्चाविरासीत् ततो हि जज्ञे ध्रुवसिंह नामा धरा पतीनां खलु मौलिबन्धः :३ श्रोवियुगल किशोरो वररणधीरो महोदारः शारदेन्दु समकीर्तिज्जनक समो मून्महीपालः :४ श्रीमद्वीर किशोर सिंह नृपतितस्यात्मजोभद् दलीप च्छौर्येणापराजितो रिपुगणस्स्वास्धयन्त्र लेभे क्वचित् शौर्यो-दार्य्यं जिताञ्जुनाकं तनयो गौरी-शिवोपासकः श्रीमद्वेत्रवती राचीपुरीवद्येन प्रख्यापिता :५ श्री आनन्द किशोरस्तत्पुत्रो मून्महीपालः दाने कर्णसमो यः करुणागारो महोदारः :६ श्री मन्नवल किशोरस्तद्भ्राता भ्रातृ वत्सलोभुपः रन्तिदेव इव दाने रतिपतिरिव रुपतो जज्ञे :७ त्रिवेणी समाया त्रिवेणी प्रसिद्धा जटाशंकरश्शंकरो यत्र भाति अदूरे तयोर्मन्दिरं निर्म्ममे सद्भवानीशयमुक्तिकामा यदम्बा :८ मासे फाल्गुनिके हिमांशुतनये वारे सितेऽवा तिथौ शाके नेत्ररसागभूपरिमिते चक्रे शिव-स्थापनं ज्ञात्वैवं कमलेश्वर हरमिमं जानन्तु सर्वें जना :९ श्री शलिवाहिनीय शाके १७६२ श्री विक्रमादित्य सम्बत् १८९७ सन् १२४८ साल शुभम्वतु।'

ए मंदिर के मरम्मती न भइला से, एकर हालत जीर्ण-शीर्ण हो गइल बा। ई बड़ा दुख के बात बा। अधिकारी लोग के ए ओर ध्यान देबे के चाही।

ई दूनू मंदिरन के अलावे एगो आउर मंदिर बा जेकरा के 'नर-देवी के मंदिर कहल जाले। ई मंदिर भैंसालोटन से पूरब ८ मील के दूरी पर घनघोर जंगल में स्थित बा। एह जगह अनायास बाघ-सिआर देखाई दे जाले। मंदिर में आधुनिक ढंग के माँ दुर्गा के एगो बड़ा सुन्दर और सजीव मूर्त्ति बा। मंदिर में उत्तर, दक्खिन और पच्छिम तीनों ओर से दरवाजा बा। मंदिर के सामने पच्छिम ओर एगो बलि-वेदी बा जेकरा सम्बन्ध में कहल जाले कि प्राचीन युग में इहाँ आदमी के बलि देल जाइत रहे। कुछ लोग ए स्थान के सम्बन्ध आल्हा-ऊदल से भी जोर ले। लोग कहले कि इहाँ एगो मूर्ति रहे जेकर पूजा आल्हा और ऊदल रोज करइत रहस। लेकिन ई बात कहाँ तक साँच बा ई त शोध के विषय बा।

एही जगह से सम्बन्धित एगो गाँव बा जेकरा के दरुआबारी कहल जाले। ई गाँव त्रिवेणी-संगम से ५ मील पूरब में बा। ए गाँव के उत्तर दिशा में कुछ खंडहर बा जेकरा के लोग ५२ गढ़ी और ५३ बाजार के नांव से पुकारले। कुछ अन्वेशक एकर सम्बन्ध राजा विराट से जोड़ले जेकरा इहाँ पांडव नोकरी कइले रहस और कुछ अन्वेशक कहले कि आल्हा-ऊदल के एतही जन्म भइल रहे। चम्पारन गजेटियर में ए सम्बन्ध में एगो कथा आइल बा कि इहाँ जैसर और तोहर नांव के दु गो क्षत्रिय सहोदर भाई रहस जे इहाँ राज

करइत रहस। दूनू भाई के दू-दूगो लड़का रहे। जैसर के लड़का लोग के नाम रहे आल्हा-ऊदल और ताहर के झगरू-झम्पन। एक दिन गंडक नदो के किनारे पर के पाँच गो आम के पेड़ ला दूनू भाई में तलवार चल गइल। दुर्भाग्य से लड़ाई में तोहर मारल गइले। ए पर झगरू अपना पिता के बदला जैसर के पत्नी और दूनू बचा से लेवे के चहले। जैसर के पत्नी अपन दूनू बच्चा के प्राण रच्छा वास्ते भाग निकलालन। भाग्य से रास्ता में जैसर के मित्र काशी-राज श्री ताला सैयद के नजर, जे शिकार खेले निकलल रहस, ई लोग पर पड़ल। उ ई लोग के अपना साथे काशी ले गइले। दू वरिस के वाद फिर ई लोग महोबा के राजा परमाल, जे जैसर के साढ़ू रहले, के पास चल गइल। एतहीं आल्हा-ऊदल के युद्ध के शिच्छा मिलल। एही बीच झगरू जेसर के मार के एगो बरगज के पेड़ में लटका देलक। ई सुन के आल्हा-ऊदल के खून खौल गइल। दूनू भाई सेना साज के 'सोंढ़रगढ़ पर चढ़ाई कर देहले। घमसान लड़ाई के वाद झगरू मारल गइले। विजयी भइला पर दूनू भाई अपना पिता के कंकाल पेड़ से उतारले और काशीजी में ले जाके दाह-संस्कार कइले। विजय भइला पर दूनू भाई, 'सोंढ़रगढ़' में न वसले, उ लोग महोबा में ही बास कर लेलक।

महान् पुरातत्त्ववत्ता श्री स्मिथ के मुताबिक चीन-यात्री फाहियान और ह्वेंन्सांग ई जगह के भी देखले रहले।

भैंसालोटन के जंगल बहुमूल्य लकड़ी और आखेट-भूमि के दृष्टिकोण से भी बड़ा महत्वपूर्ण बा। इ जंगल सखुआ, असना, जिगाड़ा, करमा, सेमल, असिध टिकुल, करँ शीशम, सतसाल आदि के विशालकाय पेड़ से भरल बा। जंगल एतना घना बा कि यदि जगह-जगह वन-विभाग के सड़क ना रहइत तो एकरा भीतर प्रवेश कइल भी एगो समस्या हो जाइत। जंगल में जगह-जगह तख्ती पर ई लिख के लटकावल बा कि कोई भी जंगल के कौनो तरह से च्छति न पहुँचाव। एकर देख-रेख बिहार-सरकार के वन-विभाग द्वारा होखे।

जंगल के धना भइला से ए में बहुत-स हिंसक-पशु भी रहेला जे में बाघ, भालू, चित्ता, तेंदुआ, सूअर आदि बड़ा प्रमुख बा। एकरा अलावे जंगल हिरण, वन-मुर्गी, मोर तथा रंग-विरंग के दोसर-दोसर तरह के पशु-पच्छी से भरल बा। इहाँ कहीं भी हिंसक-पशु रास्ता-पैंरा चलते लोग के देखाई दे जाला। 'नर देवी' के नजदिक के जंगल में तो एगो चित्ता हमरे देखाई पड़ गइल रहे। इहाँ के लोग कहेला कि इहाँ आदमी पर जेतना आक्रमण बाघ न करे ओ से कहीं अधिक भाल करेला।

जंगल में किसिम-किसिम के शिकार के साधन उपलब्ध बा। ए वजह से ई आखेठ के बड़ा सुन्दर भूमि बा। अंगरेजी शासन-काल में त इहाँ बड़ा दिन के छुट्टी में शिकार के विशेष आयोजन होइत रहे जे में देश-विदेश के शिकारी लोग भाग लेइत रहे। जंगल जंगल में जत्थाकें जत्था शिकारी लोग घुस जाय और शिकार खेले। कुछ जत्था के हांका द्वारा शिकार खेलइत देखल जाय, तो कुछ के मंचान पर बइठ के। एही ओर इशारा करइत चम्पारण के भोजपुरी के कवि श्रीब्रजबिहारी प्रासद वर्मा 'चूर' अपना 'चम्पारन-गुन-गान' शीर्षक रचना में लिखले बारन—

'तिरबेनो के नामी जंगल, जहँवा बाघ करेले दंगल
बड़का दिन के छुट्टी होला, बड़-बड़ हाकिम लोग जुटेला
केतना गोली रोज छुटेला, चम्पारन के लोग हँसेला।'

बड़ खुशी के बात बा कि भैंसालोटन भी आर्थिक दृष्टिकोण से एगो तीर्थ-स्थल होए ज रहल बा। पहिले भी गंडक नदी से सिंचाई करेला समय-समय पर प्रयास भइल। सन् १८९६ के अकाल के मोका पर के करोड़ घनफुट माटी काट के एगो नहर निकाले के काम शुरू भइल, जे सन् १९०९ ई० में तैयार हो गइल। ई नहर से बगहा, रामनगर, शिकारपुर, मैनाटाँड, सिकटा ओर खसोल थाना के लगभग ४ लाख एकड़ भूमी के सिंचाई होखले। ई नहर के नांव 'त्रिवेणी-नहर' बा।

वर्तमान गंडक-योजना के कल्पना भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपतिस्व०डा० राजेन्द्र प्रसाद के दिमाग के उपज बा। सन् १९४७ ई० में जब उ भारत-सरकार के कृषि और खाद्य मंत्री रहस तब उनकर ध्यान गंडक-नदी से होए वाली सिंचाई के संभावना के ओर गइल। एकरे आधार पर सन् १९५१ ई० में भैंसालोटन में एगो बराज बना के सिंचाई और बिजली पैदा करेके रूपरेखा तैयार भइल। अब योजना के काम भैंसालोटन में पूरा हो गइल बा। इंजिनियर और कर्मचारी लोग के रहेला अस्थाई मकान बन गइल बा।

एकर उद्घाटन भी जल्दीए होखी। ए योजना से तिरहुत कमिश्नरी के प्रायः चारों जिला, उत्तर प्रदेश के देउरिया-गोरखपुर और नेपाल के परसा, बारा और रौतुहर जिला के बहुत बड़ा भू-भाग के सिंचाई होई।

योजना के मुख्य उद्देश्य नाचे लिखल मुताविक बा—

(क) वर्तमान त्रिवेणी नहर में १००० फुट नीचे २७४९ फुट लम्बा एगो बराज बनावल जाई जेकर आधा भाग नैपाल में रही और आधा भाग भारत में। ए बराज के ऊपर सड़क भी रही।

(ख) बराज़ बन गइला पर ए नदी से दू गो नहर निकली जेकर नाम होई—मुख्य पच्छिमी नहर और मुख्य पूर्वी नहर। मुख्य पच्छिमी नहर से विहार के सारन जिला के लगभग १४ लाख और उत्तर प्रदेश के लगभग ८ लाख ३१ हजार एकड़ जमीन के सिंचाई होई। पच्छिमी तट से एगो आउर नहर निकली जे से नेपाल के भैरवा जिला के लगभग ४०,४०० एकड़ जमीन के सिंचाई होई। मुख्य पच्छिमी नहर के लम्बाई १२० मील होई। मुख्य पूर्वी नहर से चम्पारन, मुजफ्फरपुर और दरभंगा जिला के लगभग साढ़े सतरह लाख और नेपाल के परसा, बारा और रौतुहट जिला के लगभग १,०३५०० एकड़ भूमि के सिंचाई होई। ई नहर के कुल लम्बाई १५५ मील होई।

(ग) नैपाल क्षेत्र में मुख्य पच्छिमी नहर के निकले के जगह से आठ मील आगे एगो बिजली पैदा करे वाला मशीन बइठावल जाई जे से १५,०८० किलोवाट बिजली पैदा होई। जब नेपाली क्षेत्र में ६० प्रतिशत उपभोग करे के क्षमता हो जाई, तब भारत-सरकार एकरा के नैपाल-सरकार के उपहार के रूप में दे दी।

ए योजना पर कुल लागत लगभग ५२ करोड़ रुपया बा जेकर कुछ हिस्सा उत्तर प्रदेश-सरकार के वहन करे के होई और बकिए बिहार-सरकार के सहे के पड़ी। उम्मीद कइल जा रहल बा कि ई बराज बन गइला पर हरसाल २१ करोड़ रुपया के लगभग १ करोड़ २० लाख मन पैदावार में वृद्धि हो जाई।

"बउध-लीला"

—स्वामी विमलानंद सरस्वती (बक्सर)

(पहिले से आगे)

"बउध-धरम के उदय भइल,
भारत के दिन बदलि गइल।
कपिलवस्तु शुद्धोदन कोंखी-
जामल अइसन लाल नगीना,
जेकर तेज जगत में फइलल,
जस गावल संसार।
चक्का घूमल धरम ज्ञान के,
सत्त अहिंसा शांति न्याय के।
दिन लदि गइल गुलामी के-
शासति जुलुम सलामी के।
लउकल जहाँ धरम दुबराइल,
निपटे भइल सूखि के अँठई-
अधरम छउकत तोन फुलवले,
हँकड़त फानत ज्ञान बघारत;
पलरा भारी भइल पाप के-
आखिर गरहन लागल,
समय पाइ के फूटल भंडा,
उखर गइल अधरम के झंडा।
कालिह रहे तसवीरि अउर कुछ
आज भइलि कुछ दूसर।
डोंगा डूबल बीच धार में,
थउसि गइल धम धूसर ॥
आडंबर, पाखंड, पाप के,
बोझल नाइ मराइलि।
धरम, इमान सबुर के गठरी-
थेघ पाइ उतिराइलि ॥
बीच हिमालय विंध्याचल का,
कुरूक्षेत्र-कोशी ले जेकर—
बउधदेव जी बीया बोवलन।
बरखा, शीति, घाम, सब सहि के,
काँवर ढोइ पटवलन।
बहुते मीठ भइल फल ओकर-
सघन छाँह फइलल सभ ओर।
पाख अँजोर पुरनवाँसी दिन,
शुभ वइशाख महीना—
सोलह कला तेज से पूरन;
ऊगल जवन चाँद पूरब में-
चमचमात अमिरित बरसावत-
ओकर सुघर अँजोरिया सगरे;
खिल खिलात मुसकात कले कल
कइलसि बहुत अँजोर।
भिक्खु संघ बनि गइल हजारन,
सिक्का जमल देश में सगरे।
बउध-धरम के भिक्खु लोग के-
तूती बोललि, तेज विराजल
मड़ई महल अँटारी तक।

× × ×

समय पाइ के बउध देव से-
शुभ मंगल उपदेश धरम के,
भिक्खु लोग सुनि कंठ करसु जा।
बउध-देव के शुभ उपदेश,
दूइ किसिम के देत सनेश।
पहिला दरशन धरम बतावत,
भिक्खु भिक्खुनी नियम दूसरा।
पाली भासा के कहनाम,
'धम्म' 'विनय' दूनों के नाम।
चारि सइ आ बरिस तिरासी,
ईसवी सन ले पहिले,
केंचुल छोड़ि देंहि के अपना
बउध देव पंवलन 'निरवान'।

ओर ५:
कइलन जग से महा पयान ॥
समझि-बुझि के बीछि बरा के,
बउध देव के अगहर चेला—
साधु संत पंडित मुनि ग्यानी
ओही घरि खबरि पा समई,
अगुवा मानि महाकाश्यप के
पहुँचि राजगिरि बटुरइलन जा—
सुघर 'सप्तपरनी' गूफा में।
भिच्छु-संघ-अगुवा का नाते,
ग्यानी संत महाकाश्यप जी—
महाराज के तपसी चेला,
सहज दुलरुवा सेवक,
उठि 'आनंद' भिक्खु से पुछलन
बहुत सवाल धरम के मेंहीं।
'विनय'-सवाल महाकाश्यप जी,
जब उपालि से कइलन—
गोता मारि बुड़किया गुनगर,
थाहि थाहि के मोती जोहत,
गुनत-मँथत थाहत कुछ सोचत,
समय पाइ ऊपर ले अइलन—
मूँगा मोती वहुत अमोल।
देखलीं रतन जवाहिर केतना,
गोमेदक नीलम पुखराज।
कहवाँ अइसन लाल मिलल के—
जे खराद पर चढ़ल शान से,
चमक पाइ मुसकाइल।
बउध भिक्खु लोगन का दल से—
माँजि धोइ के सजल सवाँरल
इहँवें पहिला नियम रचाइल,
पोथी बनलि लिखाइलि।
बउध-धरम-इतिहास जगत में,
ई पहिली संगीति कहाइलि।
"सबतुक साच वचन के पालन,
दूर रहल चोरी से,
लतियावल लति मार काट के,
छोड़ल जीवजंतु के डाहल—
सहकि सतावल बलजोरी से।
धातु बीज के रच्छा राखल
जग के रीति निबाहत।
अइसन सुकरम 'शील' कहाइल
बउध धरम पाली भासा में।
'रूप', 'आयतन' 'धातु' बतकही—
मेंही गूढ़ अकिल के,
'प्रज्ञा' दरसन दीठि कहाइल—
धरम-सभा से भिक्खु-संघ से।
पढ़े-पढ़ावे डहरि देखावे—
साजे सरियावे के काम,
भिक्खु लोग अपना में बाँटल
राजी खुशी अँगेछल।
केहू बनल 'धम्मधर' मन से
कहल 'सुत्तधर' केहू उनके।
कहीं विनयधर आगे चललन,
कहीं 'मातिकाधर' भिच्छुकदल—
धरम धजा फहरावल!

× × ×

दुनियाँ चढ़लि, समय का रथ पर-
सूरज चाँद सारथी जेकर;
आँखि सेंकि के मउज मनावत—
जिभिया रस में बोरत,
मनवा चसकल डेग बढ़वलसि—
परदा परल आँखि पर तनिका,
बस लगामि कुछ ढील भइलि,
दशो भूटिया घोड़ा रथ के—
गइलन बहकि विसय का ओर।
बरसि एक सइ बीतल जइसे—
भिच्छु-संग भँगुवाये लागल
कुछ सूतल कुछ जागल—
भरमत मोह निशा में।
बहुत भिच्छु मनमानी कइलन,
सड़कि छोड़ि पगडंगी धइलन,
गिरलन मुँह का भरे काँट में—
मुचकल गोड़ रसातल गइलन।
झगड़ा उठल वासना फइललि
कहीं घिराइन गमकल।
डहरि चलंता राहगीर दल—
उबियाइल, अकुताइल मन से—

मूँदल आपन नाकि सजग हो।

× × ×

तीनि सइ आ बरिस तिरासी,
ईसवी सन् ले पहिले,
तपसी महापुरुस के बारल,
बउध धरम के चमकत दीया—
जब तनिका मधिमाइलि लउकलि।
गुल के झारि सजावे खातिर,
बाती तेल लगावे खातिर
समय पाइ के वैशाली में—
बउध भिक्खु बटुरइलन।
डालि मशाला पटकि पाठ पर,
धोइ, फींचि, चीवर-संघाटी;
बहता पानी में झपिला के,
धूप-छाँह में मंद हवा में
कले-कले सुखवा के।
आपन साज-बाज सरियावल,
धपकावल-चमकावल।
भइलि गंदगी दूर देंहि से,
नयी रोशनी आइलि।
भिक्खु-संघ के सभा बटोर,
सुनि के भइल देश में शोर;
ई दोसर संगीति कहाइलि,
झट एकर इतिहास लिखाइल।

× × ×

कुछ लोगन के भेद, मिटल ना,
मन के अँइठल गाँठि खुललि ना,
चाउर छेद लेइ के उनकर—
अलगा खिचड़ी पाकलि,।
अकिलि पैंतरा भाँजे लागलि—
हरिन-चउकड़ी मारैकलि !!
कौशांबी में महासंघ के
अलगा मेला लागल।
भिक्खु लोग कटरावल पागल,
चउका लीपि पोति के घाँगल,
आपन अलगे राग अलापल,
'धरम' 'विनय', के नेम बनावल
डहरि दूसरे नापल !!
'धरम' 'विनय' के पालेवाला,
असली नेम निबाहेवाला,
बउध-धरम के पहिला राही—
जवन डहरि धइ कइलन नाँव,
दुख कलेश के दूर भगवलन—
भइल देश के कुछ उबहाँव।
बउधदेव के मानेवाला—
साधु संत, पंडित गिरहस्त,
उत्तम पदवी दिहलन ओके—
सोचि समुझि 'असथविरवाद'
दूसर दल के अईंकल लोग,
नावँ धराइल उनका जोग,
तुरत 'महासांघिक' मशहूर,
समझि-बूझि के लुरि सहूर।

× × ×

क्रमशः

कहानी

माँग

—विवेकी राय (गाजीपुर)

घुट्टुर बाबू खँखारि के बोलले "केवनों बाड़ू सऽडरे ?" मलिकाइन उनुका हाथ में लोटा क पानी दे के कहली, "हूँ। चलीं खाइबि नूँ ?"

घुट्टुर बाबू हाथ-गोर धो के ठहरी पर बइठि गइले। मलिकाइनि उनुका आगा थरिया टारि के कहली "आरे, अब लइकी सेयानि हो गइलि। कतहीं घर-बर टउरत वानी कि ना।"

"अबहीं त खरवाँस रहलि ह। बाकिर अब कहीं ना कहीं टउरले जाई।"

ज्यों खिचड़ी बीतली त्यों घुट्टुर बाबू बर का उदेस में गाँवें-गाँवें घूमे लगले। पता चलल जे तिरासी पुर में राम बाबू का पास एगो लइका बा। नउँवाँ दरजा में पढ़ेला। घुट्टुर बाबू गोला निकलत-निकलत राम बाबू का दुआर पर पहुँचि गइले। घुट्टुर बाबू का पहुँचते राम बाबू का मये सत्रांगन के बयखरा ले लीहलस। के हू खाराउँ ले के दउरल केहू हूँका में पानी फेरे लागल आ के हू तमाखू चढ़ावे लागल। नोकर हाथ-गोर धोववलसि। पन पिआव आके धरा गइल। कईं किसिम क मिठाई आ नमकीन। लस्सी अलगा से।

राति में फेनु उहे तमाशा। अँचार, चटनी, भूजिया, खीर, रायता पूड़ी, कचउड़ी, पूवा, मालपूवा आ किसिम-किसिम के मिठाई। घुट्टुर बाबू क त देखी के पेट भरि गइल।

खइला-पियला का बाद बिआह क बात-चित होखे लागलि।

'आरे, साहब, एतनी बेर आराम करीं। सबेरे बात-चित हो जाई। का वति आवे के बा! दस हजार रुपया नगद आ एगो मोटर साइकिल त बरइछे पर देवे खातिर आदिमी तइयार बाड़नि।" राम बाबू दूसरी ओर ताकि के कहलनि।

घुटर बाबू का काहें के ओंघाई लागो। राति भर उल्ह मे ल्ह करत रहि गइलनि। रहि-रहि के लइका का सूरति आँखि में नाचे लागे। कउवा जइसन करिया रंग। बकुला का टँगरी नियर लमर-लमहर टँगरी। हाथ गोड़ सिरिकी पेट नदकोला का संगे संगे लिख-लोढ़ा पढ़ पत्थर! करिया अच्छर भँइसि बराबर। सबेरे पता चलल कि आजु ले कुछु दिन पहले भँइसि चरावत रहलनि हँ। तिलकहरून का आँखि में धूरी झोंकि के तिलक लेबे खरवाँस बीतले मदरसा में जाये लगलनि हँ।

सबेरे बिदा-बिदाई की बेर घुट्टुर बाबू लइका क नाँव लेके चलि दीहले।

× × × ×

३-४ दिन का बाद— घरे अइला पर एक अदिमी बतावल कि सीवान गाँव में बाबू बनवारी सिंह का पास एगो लइका बा। लइका क नाँव सिरी परकास ह। एही साल

बी० ए० पास कइलसि ह। मलिकाइनि खुशी में नाचे लगली। 'घरहूँ कुछ-जगह जमीनि होइबे करी?"

"वाह! खेती-बारी, वाग-वगइचा, घर-दुआर, पसु-परानी हर तरह से भरल-पूरल परिवार बा। लइको दस गो लइकन में लइका ह। एह घरी वनवारी सिंहक का पूछे के बा। खूब चमकल बा।"

सुनते मातर घुटुर बाबू चलि दीहले। "हँ त का तिलक लेइबि वनवारी बाबू? घुटुर बाबू एगो लमहरी साँसि लेके पूछले।

"आरे, पहिले सउदा पसन्न कइलीं।"

"सउदा पसन्न बा। तिलक बताईं?"

"देखीं साहब,' बनवारी सिंह कहले, 'हमरा लइका—अधिका नइखनि स कि रुपया लेके बेंची। हम न रुपया देईं लाँ, न लेईं लाँ। अगर लइका पसन्न होखे त बिआह करीं। केवनो बाति नइखे।

घुटुर बाबू वड़ा खुश भइलनि। घरे अइला पर मलिकाइनि कहली "लइका बी० ए० पास बा। धन-दउलति मजहीक बा। आ तिलक कुछऊना। जरूर केवनों मोवरी बाति बा। ओंइजा विआहना होई।"

घुटुर बाबू का कपार पर फेनु सनीचर महराज सवार हो गइलनि। अबकी ऊ नारद तिवारी से राइ लीहलनि।

"आजु-कालिह विआह कइल त बाँया हाथ क खेल बा। झूठ-साँच बतिआके आपन काम निकालि लेबे के बा।" नारद तिवारी मोंछि पर हाथ फेरि के कहले। "हम 'सुराजी, विआह कइल चाहत बानी, नारदजी, समुझलीं।"

"हँ, त केतना क गहना देइबि!" नारद तिवारी का बोले ले पहिलहीं लइका क वाप हाकिम वाबू पूछले। "सात हजार के गहना बनवा देइबि। लइका के घड़ी, साइकिल आ ५००) बरिआति क खरचा।" नारद तिवारी घुटुर बाबू की ओर से कहले।

बिआह ठीक हो गइल। घुटुर बाबू क सांसि फूले लागलि।

"अरे जजिमान, ५००) में का बा? सात हजार का जगह पर ५००)। हेँ-हेँ-......। हाथ मारि लेबे के बा। नारद तिवारी आँखि मटका के कहले।

"आ गहना कइसे बनीं?"

"वाह यार! केतना समुझाईं १००) में कुल्हि गहना बनि के तइयार हो जाई। एकदम झका-झक।"

"घड़ी, साइकिल?"

"मति दीहऽ। कोहनाके जइहें त जासु। बिआह त हो जाई। फेनु जोलहा क बीनल के उभारी।"

"दुनिया का कही?"

"दुनिया क कहल देंहि में सटे आई। जे कही ऊ अपना घरे कहत रही। दूध क धोवल बा? आजु-कालिह राजी खुशी से केकर बरिआति बिदा होतिया। ५ हजार देता ओहक आ जे ५ रुपया दे ता ओहू क बरिआति कोहनाई के जाति वा।"

"लइकी का समुझी?"

"ओकर का बिगरी। रउवा रुपया देके चाहे केहूतरे ओकर बिआह त एगो व आदिमि कीहें कइदेत बानी नूँ। एक दिन-दू दिन बहुत करिहेंस सासु-ननद मेंहना मरिहें स। फेनु कालिह ठीक हो जाई।

बरिआति आइलि। बाजा बाजे लागल। घोड़ा-हाथी नाचे लागले स। बनूकि छूटे लागली स। धाँय…धाँय…धाँय…।

दुआर पूजा का बाद बिआह करे खातिर बरनेति मड़वा में आगइलि। डाल पूजा होखे लागल। गहना का मारे मड़वा ठगि गइल। बरिअतिहा आपुस में काना-फुसी करे लगले स। सुमंगली क काम सुरू भइल। सेनूरदान क तइयारी होखे लागलि। लइका हाथ में सेनूर लेके ज्यों निहुरल कि मालिक आँख तरेरि के गर भर बोलले "खबरदार! पहिले गहना क जाँच होई"। सोनार गहना देखे लागल। लइका हाथ में सेनूर लेके खड़ा रहल आ लइकी क बाप टुकुर-टुकुर अपना लइकी क माँग देखत रहल लेके माथ क लूगा हटाके नाउनि उघारि देले रहलि।

शरद के रतिया

बरसि-बरसि के गइल बरसतिया ।

लिलरा प बूना शोभे, हथवा में कँगना,
झुमि-झुमि गोबरा से लीपे गोरी अँगना,
चनवाँ उगल देखि हुलसल छतिया !
बरसि-बरसि के गइल बरसतिया !
तलवा-तलइया में कोइयाँ फुलइले,
खेतवा में धनवाँ प मनवाँ झुलइले,
मंगल-मोतियन से भरली परतिया !
बरसि-बरसि के गइल बरसतिया !
गंगवा-जमुनवाँ के झक-झक पनियाँ,
रुनझुन धरती के बाजे पयजनियाँ,
कतना सुनर लागे शरद के रतिया !
बरसि-बरसि के गइल बरसतिया !

गीता देवी पाठक (शाहाबाद)

बिहँस उठल आकाश

शरद के बिहँस उठल आकाश !

चान उगल, उग गइल तरेगन,
खुलल रात के लाखो लोचन,
टूटि-टूटि मोती छितराइल, फूटि-फूटि के काश !
शरद के विहँस उठल आकाश !
लहराइल रे दूध-समुन्दर,
धरती के घर - आँगन सुन्दर,
खेत-खेत में नाच रहल बा जिनिगी के विश्वास !
शरद के विसहँ उठल आकाश !
लुटा रहल बा के दो चानी,
इठलाइल सब ओर जवानी,
ठाँव-ठाँव पर छिड़ल मनोहर बृन्दावन के रास !
शरद के बिहँस उठल आकाश !

सीता सुन्दर देवी 'प्रियंवदा' (शाहाबाद)

भोजपुरी कहावत में आलस्य-चरचा

(डा० सत्यदेव ओझा, एम० ए०, पी-एच० डी०
हिन्दी विभाग, कोऑपरेटिव कॉलेज, जमशेदपुर)

संसार के आधा से जियादा दुख असकति से होला। लोग के इहे मन ह कि काम कम-से-कम करे के परो आ आराम अधिक-से-अधिक मिलो। इहे आलस्य के जरि ह। आदमी देखादेखी देहचोर बनि जाला। जब आप अपनी के देहचोरवल होला तउना घरी के चित्र देखीं—

में रानी तें रानी
के भरी गगरी चढ़ि पानी।

जइसे खरबूजा के देखि के खरबूजा रंग पकड़ेला ओइसहीं एगो देहचोर के देखि के दोसर आदमी भी असकतिआह आ देहचोर बनि जाला—

ऐजू लंगड़ बैजू कोहिं
सरजू बइठले कमरा ओढ़ि।

असकतिआह आदमी के दीर्घसूत्रता त मसहूरे ह—

हेंगा ले आवे गइले कातिक में
त अइले चइत में।

एही तरे एगो कहावत में कहल गइल बा—

जव के गइले त सतुआन के अइले।

एह बिलम्ब आ दीर्घसूत्रता के कुफल भी जल्दी देखे में आवेला। एक आदमी के असकति के कुफल ओही आदमी का ना भोगे के परे बलुक ओकरा संसर्ग में जे रहेला ओकरो भोगे के परेला—

जब ले पांडे दोना लइहें
तब ले पंडाइन सुखले बुकइहें।

असकतिआह आदमी बहानाबाज भी होला—

करे के मन ना त नव गो फरफन।

यदि ओकरा के रुके के तनिको संकेत मिलेला त चट दे ओकर फायदा उठाइके भाग चलेला—

गारी के बैल के हँ कहऽ त तीन डेग पाछा।

अइसना आदमी के छोटो काम परवत हो जाला—

(क) सियार के गुह परवत।
(ख) हाथ का असकती मोंछि टेढ़।

उ छोटो काम करे के ना चाहे। ओकरा कमइला के फिकिर ना रहे खाली खइला से मतलब रहेला, कइसहूँ आपन स्वार्थ सधो एही ताक में रहेला—

(क) हुंहुआ जर भाई हुहुँआ जर
उतरल चेरुई पराइल जर।
(ख) बिनु पीसा बिनु कूटा बिनु हाथ परोसल
बिनु आगी बिनु पानी मोहि ततले-ततले दे।

(ग) हर हँगा में अइसन तइसन
पगुरी में रंथ।
(घ) कंटिया नु पीटिया
खींचि के बान्हो अंटिया।

अइसन आदमी आपन सुविधा आ स्वार्थ खातिर हरमेशा ताक में रहेला, काम कुछ ना करे लेकिन वाहेवाही आ देखावे खातिर झूठ-साच कुछ करत रहेला—

(क) करे के नु धरे के,
लव लब करे के।
(ख) आवे के नु जाए के,
बइठल हुकुम ढाहे के।

अइसन आदमी अतने से संतुष्ट ना हो जाला, दोसरा के काम के छिबि निकाले ला और अपना भावभंगिमा से साबित करे के चाहेला कि उ अपने बहुत निमन काम करेला—

करनी नु धरनी
धिया ओठ बिदोरनी।

असकतिआह आदमी डोंग भी खूब हाँकेला। उ डोंग भी खूब हांकेला, काम से ना बाकिर लमहर-लमहर बात बना के आगे बढ़े के चाहेला—

—कुतिया मन करत त बाघ के फारि दिहिति।
प्रश्न—काहें नइखे फारति ?
उत्तर—मने नइखे नु करति !

अइसन आदमी कबो कवनो बात के बहुत गंभीरता से ना ले ला, ओकरा के टारत रहेला। ओकरा अपना जबाबदेही के बोध ना होखे –

मचिया पर बइठल बानी
टमटम गहावत बानी
चलीं रउआ आवतानी॥

असकति ऊपर से चाहे कतनो निक बुझाउ, लेकिन ओकरा से स्थायी सुख के प्राप्ति ना हो सके, जिन्दगी भरि निमहबो ना करे—

असकति बाड़ा निमन चीजु ह,
बाकिर जिनिगी भरि निमहे तब नु।

एक त असकति बराबर निमहे वाला चीजु ह ना, दोसरा एकरा चलते तकलीफो कम ना होखे। मेहनती आदमी जाहाँ अपना मेहनती से अपना भाग्य के बनावेला, आलसी आदमी अपना भाग्य पर रोवेला—

सब केहू काते हम सोवों रे दइया
सब केहू पहिने हम रोवों रे दइया।

कबो काम के दोसरा दिन खातिर ना छोड़े, जवन सामने आबे तवना के लगे हाथ करि लेबे के चाहीं। खिस्सा ह—

सँपरल काम सैतान के।

एह तरह से भोजपुरी कहावत में आलस्य के कई तरह से विचार कइलगइल बा, जवना के सुनि के आदमी का अन्दर चुस्ती आ फुर्ती आ सके ला।

रोजगार दफ्तर

—चतुरी चाचा (बलिया)

'ई हाथ के का हवे अंगदजी ?'

'सरकार, इहे नू हवे साटिकफिटिक ।'

'कइसन साटिकफिटिक ?'

'रिफ्यूजी भइला के, रउरा इहाँ शरणार्थी भइला के ।'

'एमे का लिखल बा ?'

'एमे लिखल बा कि इनकर बाप बालि लड़ाई में मराइ गइलन । सगरे सम्पत्ति नोचा चोंथी में चौपट हो गइल । ई रामजी का शरण में रहलन । ई सचहूँ के असली रिफ्यूजी हउवन । इनिकर मदद जरूरी बा ।'

'तोहार राजपाट त तोहके लौटा दीहल गइल ?

'हाँ सरकार !'

'तब ?'

'सरकार एतना खोद विनोद करवि तब कइसे गुजर होई ?'

'गुजर के कवन सवाल बाटे ?'

'सरकार ए घरी भारत में रिफ्यूजी लोगन पर वड़ा हमदर्दी देखावल जात बाटे। रहे के घर मिली, जोते के खेत मिली. रोजिगार के रुपया मिली, लइकन का पढ़े खातिर पढ़ाई के खरचा मिली । बहत दरियाव में हाथ धोई लिहला के काम बाटे । कामो धन्धा में अगताहे विचार होखी ।'

'नाहीं ! अइसन त ना होखे के चाहीं, 'शरणागत पाल कृपाल प्रभो !' त लोग खाली हमरे के कहेलन ।'

'त भारतो भूमि सरकार रउरे न हवे : एमे अचरजे केवन बाटे ?

बाकिर तू त मुआवजा पा गइल ?'

'त एसे का सरकार ? सुविधा आ सांस जेतना होखे लिहला के हवे ।'

'त का चाहत बाड़ ?'

'चाहत बानी कि सरकार एपर सही कई देंती कि हम झटकल ओइजा चोहपि जइतीं ।'

'कहवां ?'

'रोजगार दफ्तर में नू ?'

'इ कइसन दफ्तर हवे हो ? हमरा बेरि त ना रहे ।'

'ई विचऊ दफ्तर हवे ।'

'एमे का होला ?'

'होला का ? एह कोठा के धान ओह कोठा कइल जाला । दस आदमी के एहसे रोजी चलत बाटे । काम दिलाऊ दफ्तर एकर नावें हवे सरकार ।'

'सरकार ! एमे बूझे के का बा ? आजु काल्हि केवनों रोजिगार बिना दलाल के नइखे होखत। सौदा पटावे खातिर एजेण्ट जरूरी बाटे।'

'एसे का फायदा बा ?'

'एसे थोरे फायदा बा सरकार ? कहाई कइसे कि सरकार बेकारी मेटावे खातिर एड़ी के पसेना चोटी ले जाति बाटे।'

'इ कइसे बेकारी मेटावति बाटे ?'

'सरकार ! जेतना कलरक आ अफसर एह महकमा में बाटे ऊ लोग अगर ई दफ्तर ना खुलल रहित त बइठि मछिये नु मारित। ई त कहीं कि टीपन के फल भांगत बाटे लोग। दफ्तर खुलि गइला से चानी काटत बाटे लोग।'

'अच्छा ! त मियां अपने उजुरमंद त दरगाह कहां से लगावत बाड़न ? अपनहीं बेकार बाटे लोग त दोसरा के काम कइसे लगावत बाटे लोग।'

'सरकार ! बतवतो डर लागत बाटे ! काहें जे कानून बनि गइल बाटे।'

'कइसन कानून ?'

'सरकार ! ईहे कि रउरा नोकर के काम होखे त रोजिगार दफ्तर से मंगाई के चीठीं। बजार में से नोकर-चाकर लेइबि त रउरा पर जुर्माना होखी, सजाई होई ?,

'अइसन बाति ?',

'हाँ सरकार।'

'त एतना नोकर ऊ दफ्तरवाला कहाँ पा जाला लोग।'

'नोकर के केवन दुख बाटे। एक बोलावे तेरह धावे। केहू के आजु कालिह का जमाना में काम मिलि जा उहे ढेर बा। अइसन लोग त बराबर दफ्तर का आगा पाछा मड़रात रहेलन।'

'ई लोग एगो रजिस्टर बनवले बाटे। सबके नांव-गांव, पता-ठेकान, पढ़ाई-लिखाई के ब्योरा लोट कइके राखि लेला लोग। जेकरा नोंकर के काम होला ऊ लिखि के मंगावेला कि हमके हइसन आ हेतना नोकर हे दिना हेतना बजे चाहीं। ई लोग चीठी भेजि के जेकरा के चाही भेज दई।'

'एमे चहला के केवन सवाल बाटे ? जेकर लम्बर आई भेजि दियात होई ?'

'ना सरकार ! सत का चिरुआ पर चलला से काम ना फरियाई। केतने जाना सालन से नांव लिखवाई के टपरा गावत बाड़न आ केहू हाथों हाथ नांव लिखवाई के आपन पुर्जी निकसवाई लेत बाटे।'

'एकर ओरहन बइनी ना दियाला का ?'

'काहें, काहें नाहीं दियाला। हरि छ महीना पर काट नया बदलाला। जाके बदलवावे के परेला। ना गइला पर बूझि जाला लोग कि काम मिलि गइल बा रउरा अटंड हो गइलों। ऊ लोग कागद में दर्ज कइ लेला।'

'एसे का फायदा होला ?'

'फायदा ई होई कि रेकाट में देखावल जाई कि साल में हेतना अदिमी के काम दियाइल। एही से सरकार, सिखा दीहल जाला कि बीच में रोजिगार मिलि जा त नोटिस दे दीह जा कि पाकल राटी गांवसे हमनी का [illegible] लेइबिजा।'

'अच्छा त तोहार का हालिबा ?'

'सरकार पूछीं जनि ।'

'अरे भाई कहब तबे न ?'

'सरकार अबहीं हमका बतायीं । अबहीं त नावे ना लोट भइल ; बड़कि खोलि त सिकहरे बा ?

'नाव लोट करावे में का दिक्कत बा ?'

'दिक्कत त ओइजा काले-काले बा । दफ्तर का बाबू का घरे गदहन से तीन दिन खादि ढोववलीं हवीं, एक कहतरी सजिगर दही चोंहपवलीं हवीं तब जाके त बाबू के मूंडी ऊपर उठलि हवे ।'

'ना त का कहत रहलन हाँ ?

'कहत रहलन हाँ पढ़ल लीखल नइखऽ केवन काम दियाई । तोहार नाव ना लिखबि ।'

'पढ़ले नइखऽ का ?'

'कहां पढ़े पवली ? लरिकइयें में बाप बिना टूअर हो गइलीं । के पढ़ावो, लिखावो कइसन काम खातिर पैंतरा लगावत बाड़ऽ ?'

'काम केवल डिप्टी कलक्टरी चाहत बानीं ?' बस चौकदारी या दरवानी के काम मिलिजा एतने काफी बा ।'

'त ई कुल्हि त हमार चिठियो ले के जइबड़ त वोह लोग अपना ईहा राखि लेई ।'

'न सरकार बिना' रोजिगार दफ्तर ' के परमिट कटावल नौकरी के कोटा ना भेंटाई ।'

'अइसन नोकरी के कन्टर उल भइल बा ? तब त चोरबाजारियों चलत होई ।'

'चोरबाजारी त चलती बा सरकार । रुपये न रुपया के खींचे ले । जे लगाई से पाई । जे बइठी से पछताई । 'रोजी' में गोरे वाला दफ्तर हवे रोजिगार दफ्तर ।'

'तब का विचार बा ।'

'बिचार त इहे होत बा कि दस पांच रुपय होखे त दीहल जाए । जे बाबू तन मनसल बाड़न । साटिकोफिटिक 'रिफ्यूजी' के ले जात बानी । उम्मेदि बाटे कि ए बेरि नांव लिखा जाई ।'

'नावे लिखा दिहला से ना नू फरियाई । कामों त अपनही उहिआवे के परी ।'

'बानी एगो कामों उहियवले, घूमी-घूमी के मुनादो करेवाला दफ्तर में चौकीदारी के जगहा खाली बा । ओइजा भरसक केहू ना जाई ।'

'काहें ?'

'केवलों ओ काम में' 'उपर-झापर' नइखे ।' 'उपर-झापर' वाला काम में नू धक्का धुक्की होला ।'

'तब त हमरो विचार करत बा ई दफ्तर देखे के । नीक रोजगार बाटे बइठ पइसा कमाये के बा । रोजगार के टहल बा । नागा कबों ना परी ।'

'हां सरकार ! चली चढ्र चलीं । तनिकी भर ठहर जाईं हम रिक्शा ले ले आईं ।'

अंगदजी रिक्शा ले आवे गइलन आ भगवान आपन कपड़ा बदले ।

अंक, पहिला

(धारावाहिक)

अभिज्ञान शकुन्तल के भोजपुरी रुपान्तर

—देवकुमार मिश्र 'अलमस्त'

(एकरा बाद हरिना का पाछा से लखेदत हाँथ में धनुषवान लिहले सारथी का साथे राजा रंग मंच पर)

सारथी—पहिले हरिना के आ फेनु बाद में राजा के ओर निहार के ....
महाराज !....

भागत, खेदत, तान धनुहिया,
देख मिरीगवा आवत ध्यान।
करत सुअर का पाछा तनले,
कठिन पिनाक शंभु भगवान ॥

राजा—ई हरिना हमरा के बड़ा हैरान कइलस। तवना पर भी देख।

रथ देखत मुह फेर चउकड़ी,
भरत ई माँथ नवावत।
तीर ताकि के भय से कवही,
कइसन तन सीकुरावत ॥
आधा मुँह बवले हँफत बा,
घसिया खातिर ठिठकत।
मार छलांग खिलल धरती से
नभ में कइसन लउकत ॥

ताक !—अब अतना बेग से जाता कि सहजे लखाई नईंखे परत।

सारथी—महाराज ! उबड़ खाबड़ जमीन मिल गइला से रथ के हाके में बड़ा कठिनाई परत रहे एसे ई हरिना दूर निकल आइल बाकी अब जमीन बरोबर भेटाइल बाटे एके इ सरपट में हम एकरा के ले लेबि।

राजा —आच्छा त घोड़ा के लगाम ढीला कर।

सारथी—जइसन हुकुम। (पहिले रथ जोर से आ बाद में गवें गवें)
महाराज ! देखि, देखि ।

ढीला-राशि करते धउगल अब
घोड़ा तन सिकुरवले।
धूरि लगत ना बा टापन के
कइसन कस के छोड़ले ॥
आल खड़ा कर तरनाइल बा
कान उठा के कइसन।
धावत धूपत दौड़ लगावत
उड़ आइल ई सनसन ॥

राजा—साचो ई घोड़ा अतना तेजी से भागल कि अबही आँखी के पपनिओं ना
पावल कि हरिना से ई आगे बढि आइल।

गिदी-गिदी ई जवन दिखाई-
देत बड़ा लख भीरी से।
जान परल ई मिलल, फरक लख
टेढ़ा सोझ लमाई से॥

बड़ा बेग में चले पहिअवा धावल अतना बेगे में
थोरे छन तक अम्बर धरती सटल बुझाइल एके में

अच्छा अब देख। एकरा के कइसे हम गिरावतानी। (धनुष बान प चढ़ावे
परदा से....ई आसरम के हरिना हटे, एकरा पर बान मतछोड़ल जाय।

सारथी—(शबद सुनके तिकवत) महाराज। बान के सोझा त ई हरिना भेंट गइल बा
ई दू तपस्वी एकरा के मारे से बरिजतारे।

राजा—अच्छा, घोड़ा रोक द।

सारथी—जइसन आज्ञा। (रास खिचत)

(एगो तपसी चेला का साथे अइलन)

तपस्वी—(बाँहि उठा के) महाराज! ई हरिना आसरम के हटे एकरा के मत मार
जाय।

तानऽ मत तीरवा।
कोमल बा सरीरवा॥
रुअवा के गाला अस, हलुक परनवा
जल जाई मत सुनगाव बान अगवा
बजर तोहार तीर
कहवा नरम सीर
ढीलीं मत नाही त होखबि बदनमवा
खलवा के दलवा प ढिलल जाला बनवा
तानऽ मत तीरवा

राजा—(परनाम कइ के) ल बान उतारलेतानी।

(बान उतारलेलन)

तपस्वी—
रंवा खातिर अइसने उचित बा
रउये अइसन जनमासु जग,
चक्रबरती धरमतमा लाल
इहे हमार असीस नाथ बा,
करसु जगत के जे प्रतिपाल।

चलो—(दुनों हाँथ उठा के) राउरा धरमतमा आ चक्रबरती बालक होखे।

राजा—(परनाम क के) ब्राह्मन देवता के ई बचन माथे पर।

तपस्वी—महाराज जग खातिर हम लकड़ो ले आवे जात बानी। आगे मालिन के घाट
प गुरू कण्व मुनि के आसरम लखाई परता। अगर रंवां फुरसत हो त उहां
चलि के अतिथि सेवा मंजुर कइल जाय।

विना रे विधिनिया के ओहिरे जगहिया प,
साधु लोग करेलन सफल साधनवा।
रउरो जानब दे'ख हमरा ई भुजवा से'
होला सत पुरूषन के कतना मंगलवा॥

राजा—राउर गुरुजी आसरम में बानी कि ना?

तपस्वी—अपना बेटिया शकुन्तला के अतिथि सत्कार के कहि के उन्हके गरह दसा सुधारे खातिर सोम तीरथ करे वास्ते गइल बानी।

राजा—आच्छा त आसरम के दरसन करे खाती हम जाइब आ उ शकुन्तला के भी देखब जवन हमार भाव भगती महरसी से सुना दिहे।

तपस्वी—रंवां चलि के आसरम में पधारी आ हमहुँ आपन कारज सिध करे वास्ते जातानी।

(तपस्वी चेला का साथे चल देलन)

राजा—सारथी रथ हाँक। ई पवितर आसरम के दरसन कइके हम आपन जियरा जुड़ालीं।

सारथी—जइसन आज्ञा। (रथ हकलन)

राजा—(चारो ओर निहार के) कोई ना बतवले रहीत तबहुँ हम जान लेती कि ई तपोवन हऽ।

सारथी—महाराज त रंवां अइसन का चिह्न देखलीं।

राजा—ऊ तू का ना देखल। देख, देखावतानी।

सुगा के टूंगल अन, चुमत विपिन-थल,
हिंग कूटे खाती खल ओहिजा रखल बा
लोगवा आवत जात इचीना डेरात बाटे
बचवा मिरीगवा के ढीठ रे बुझात बा
परल लकीर बहि जग-चीज धार बहि,
वरवा के सोरिया झलकि, जल साफ बा
करिया भइल पात हवन होखल राख
जग के जगहिया प अंकुरल अनाज बा॥

सारथी—महाराज, अब हमहुँ तपोबन के चिन्ह जान गइलीं।

राजा—(कुछ दूर हटि के) बनबासी लोगन के तनिको भी तकलीफ नाहोखे। एसे रथ के एहि जे रोक द। हम उतर जातानी।

सारथी—(रास खीचत) उतर जांईं महाराज।

राजा—(उतर के भेष निहारत) मुनि जन के लगे बड़ा नरमता के साथे जाये के कहल गइल बा। एसे ई हमार राज चिन्ह आ धनुष-बान थाम ल। (सारथी ले लिहले। जब तकले हम तपोबन के दरसन करके ना लवटीं तब तक ले घोड़ा के पीठ ठोक-ठाक के ठीक कइल।

सारथी—जइसन आज्ञा। (बाहर गइले)

राजा—(फिर से चारो ओर निहारत) अब आसरम में ढूकऽतानी। (आसरम में ढुकले)

काहे हांथ दहिन फरकत बा
निमन सगुन फल कवन कहत बा

ना बुझात बा का होनिहारा।
तपोभूमि नृप करत विचारा॥

(नेपथ्य में) सखी ईहाँ, आउ ईहाँ आउ।

राजा—(कान कइले) फुलवारी के दखिन तरफ कुछ औरतन के बोली सुनाता। (फिर से चारो ओर निहारत) अहा ई त तपसी लोगन के लड़की अपना अपना हूब के मोताबिके कवनो बड़ कवनो छोट घइला लेके फूल पटावे खातिर जातारी। धन ह रे, कइसन एह लोगन के मनोहर चितवन बाटे।

ए युवतिन के छवि रनिवासो,
के भी अस तरसावत्त बा।
रंग गंध उपवन फूलन के,
जस बन लता सजावत बा॥

(शकुन्तला, अनुसूया प्रियम्वदा के परवेस)

शकुन्तला—सखी इहां आउ।

अनुसूया—हे सखी, एकरा से सनेह पिता कन्व के तोहरासे भी अधिका बा काहे कि तोहरा-अइसन सुकवार के कोमल हाथ से पटावे के आशा दे गइल बाड़न। नाही त तोहरा अइसन कोमलांगनी पर उनकर दया जरूर भइल रहीत।

(फेड़ में पानी डालत)

राजा—कन्व के बेटी शकुन्तला इहे हईं। उ रिसी के जियरा बड़ा भारी कठोर बा काहें कि अइसन सुकवार के शरीर से फेरा के खलरा पहिरा के अइसन-कठोर तपस्या के भार सँउपले बाड़न।

ना बनावटी तनिको छू के, सहज सुरतिया चमकत्त बा।
कठिन तपस्या मुनि अनुशासन, से मुनि बच्चिया झलकत बा।
सभी लता कोमल पतवन के मुनि कइसन बुधमानी से।
काटे के चाहत बाड़े जस नील कमल छितवानी से।

ई पद्मिनी के देह फेड़ के छाल से भी शोभता। साचो के रूपवती के देह में हर चीज नीक लागेला। (वइसने करत)

शकुन्तला—(रूक के सखि अनुसूया! खाल के चोली प्रियम्वदा बड़ा कस के पेन्हवले बाड़ी जवना से हमार देह तना गइल बाटे। ढीला कर, तनि आके।

अनुसूया—बहुत अच्छा। (ढीला करत)

प्रियम्वदा—(हंस के) एकरा में तोहार जवानी के दोष बा।

राजा—बल्कल के चोली इन्हका में ठीक नइखे लगत ई हमार कहल बिल्कुल गलती बा।

कमल फुलना के सेवरवा के बीचवा से,
करिया के चिन्हिया से चान।
वोइसे ई शोभे बड़ मुनि के बिटिउआरे,
पेन्हले मिरीगवा के चाम॥

शकुन्तला—(सोझा निरख के) हवा के बेंग से केशर के पतई कइसन हिलऽता कि जइसे कि उ हमनी के अपना अंगुरी से बुलावे खातिर इसारा करत होखे। चल हो ओहिजे चलीं जा।

(परिकरमा करत)

प्रियम्वदा—सखी इचका भर एहिजा विसराम कर लीहीं जा काहे के तोहरा खड़ा होखला से ई केशर के फेड़ बड़ा सोहासित लागता। अइसन मालुम देत बा कि एकरा में लतर के भँवर लपटाइल होखे।

शकुन्तला—एही से तोहार नाम प्रियम्वदा परल काहे कि तोहार बात बड़ा मीठ होला।

राजा—प्रियम्वदा शकुन्तला से त बात बड़ा निमन कइली आ साच भी कइलीं काहेकि।

मुनि के बेटिउआ के पातर अधरवा से,
सुतल लतरवा के पात।
बंहिया सुतल बेलि उठल योवनवा जे,
उगल खिलल फुल जात॥

अनुसूया—सखी इ लता के काहे ढील कई के आगे बढ़ि गइलू। पिता कन्व के दुलार तोहरे अइसन एकरो मिलल बाटे।

शकुन्तला—कवनो दिन कतहीं हम अपनो के मत भूल जांई। (लता लगे जाके) सखी, जरी से फुलंगी तकले ई लता कइसन कोंढ़िआइल बाटे।

प्रियम्वदा—अनुसूया काचे उमर में फुलाये के कारण का बाटे?

अनुसूया—ई ठीक हम ना कह सकीला, तूही कह।

प्रियम्वदा—ई लछन से इहे बुझात बा कि इन्हकर दुलहा बड़ा सोहासित मिली आ लगले आके हाथ पकड़ी।

शकुन्तला—तोहार इच्छा अइसने बाटे।

(परदा गिर गइल)

राजा—जरूर ई कन्व के बेटी अपना स्त्री से ना हटे। अइसन संका कइल अनेरिया बाटे काहे कि······

जस एकरा पर मोर नजरिया का उठल बेकार।
ई जरूर छत्री के बिटिआ व्याह युगुत सवसार॥
कभी सजनवा के जियरा से उठत भरम के धार।
ओकरा के झट दूर करेला मन में गुनत विचार॥

(आछा एकरा में असलियत का छिपल बा ई पता त जरूरी लगावे के चाही)

शकुन्तला—(घबड़इले) अरे बाप ई ढीठ भँवरवा नया चमेली के ढील के हमरा के बेचैन कर तारेस।

राजा—(मने में)

मारि मारि तिरछी नजरिया हटल लखि,
नगर जननिया में कतना बनउरी
बाकी एही बिटिआ के तिरछी नजरिया से,
टपके सहज मधु रस ले लजवनी
चाखे दिन रात स्वाद चपल नजरिया के,

धनि धनि धनि तोरि भाग रे भँवरवा ।
कनवा के भीरीया सुनावे इहो जाई जाई
भेदवा भरल सभ बात के· सनेसवा ॥

शकुन्तला —भँवरा ई ना मानी । बड़ा भारी सैतान बा । एहिजा से दोसरा जगे चलले में कुसल बा । (दोसर जगे टकस के) अरे । ओह ॥ एहिजा भी भँवरा से जान ना बाचल । हे सखि भँवरा हमरा के सता रहल बाड़नस । कसहु जान वचाव ।

प्रियम्वदा —(मुसका के) हम के हई तोहार कि आके छोड़ाई । राजा दुष्यन्त छोड़इहन । जे समुचा तपोवन के मालिक हवन ।

दुष्यन्त—परगट होखे खातिर ई आच्छा मोका बा । इचिका सा आगे बढ़िके) डर मत डर मत । (अतना कहिके फेनु हट गइले) (मन में) बाकी एसे त खुल जाई कि हम राजा हंई । जे होखे के से होखो मामूली परदेशी के भेष में एकरा से हम मिलब काहे कि बातचीत उन्हका से कइल बहुत जरूरी बा ।

शकुन्तला—एहिजा भी भँवरा हमार पाछा ना छोड़लन स । अव कहाँ भागीं । (एक ओर चलत आ जवना तरफ भँवरा जाता ओकिरा ओर निहार के) अरे दूर होख सखी हम जहाँ जात बानी ओहिजा ई पहुँच जातारेस । कतहीं एहिनिनं से हमार जीव ना बांची । बचाउ सखी ।

दुष्यन्त—(हाली से सामने आके)

खल दुष्टन के सोधे वाला, पुरूवंसी मालीक जवले ।
मुनि कन्या के दुख पहुचावे, अईसनका के बा तवले ॥

(अचरज मेंपड़ि के तीनो सखी निकले लगली ।)

अनुसूया—अजी एहिजा सतावे वाला कोई आदमी त नइखे नू हमार सखी एगो भँवरा से खूब डेरा गइल बाड़ी । (दूनों सखी शकुन्तला के निहारत)

दुष्यन्त --(शकुन्तला के भीरी जाके) हे सुन्दरी । तोहार तपस्या अबगे सुफल हो गइल । (शकुन्तला लजइले सकपका के धरती ओरी निहारे लगली)

अनुसूया —रंवा अइसन अतिथि आ गइला से तपस्या काहे ना सुफल होखो । आईं बइठीं । सखी शकुन्तला, जो सतकार करे खातिर फल ले आव आ नदी के ओनिए से जल भी गोड़ धोये खातीर ले लीहे ।

दुष्यन्त —रंवा सभे के मीठ बोलिए से हमार जियरा जुड़ा गइल ।

प्रियम्वदा—आईं पाहुन कुछ घरीं तक इ केला के पतइ पर विराजीं । इहां शीतल छाया बा आवे में कष्ट होखल होखी । बिसराम कइल जाय ।

राजा—रंवा सभे थाकल होखब । आईं इचिका आराम कर लीहीं जा ।

अनुसूया—अरे शकुन्तला अतिथि के सतकार कइल उचित बा आव, चल, बइठलिहीं जा । (बइठ गइल लोग)

शकुन्तला—ई पाहुन के देखि के हमरा जियरा में अइसन भाव उपजता ब कि ई तपोवन वासी ना हवे ।

दुष्यन्त--(सभन के निहार के) हे युवती विधाता रंवा सभ के एक निअर रूप उमिर सिरिजले बाड़न वोइसही आपस में प्रीत भी ।

प्रियम्वदा—(धीरे से) सखी अनुसूया, ई कहाँ से नया अतिथि आइल बाड़े जेकर अंग बड़ा कोमल बा गंभीर आ बोलीओ भी बड़ मीठ बा। ई लछन त महान प्रतापी के हटे।

अनुसूया—(गंव से) सखी प्रियम्वदा, एही सोच में त हमहुँ परल बानी। हमरो मन में अइसने उठता कि इन्हका से हम कुछ पूछीं। (परगट) राउर मीठ-बोली सुनके हमरा अइसने मालुम देत बा कि रंवा कही के राजकुमार हँई से रंवां कहीं कि कवन राजबंस के रंवां राजकुमार हंई आ कहां के परजन के बिरह में व्याकुल ढील के इहाँ आइल बानी। का कारन बा कि अइसन कठोर तपोवन में आके आपन सुकवार देहि के जारत बानी।

शकुन्तला—(मने में) अरे मन, ते अतना आतुर मत होख। इचिका धीरज धरू तोरे कल्यान के वास्ते अनुसूया बात करत बाड़ी।

दृष्यन्त—(मन में) अब हम काहे ना परगट होखीं। छिपल काहे रहीं। जे होखे से होखे। एह लोगन से बात जरूर करबि। (परगट) हे रिसीकुमारी हम पुरूवंसी राजा के नगर में रहीला। आ उहे पुरुवंसी लोग हमरा पर आपन राज के धरम भार सँउपले बाड़न। एसे आसरम के दरसन करे वास्ते आइल बानी।

अनुसूया—महत्मा रंवां आ गइला से ई बन के सभ धरमतमा सनाथ होगइलन।

(शकुन्तला कुछ सरमा के मोहित हो गइली। दूनो सखी कबो राजा के ओर आ कबो शकुन्तला के ओर निहार के) हे सखी! आज कतहीं पिता कन्व रहिते!

शकुन्तला—त का होइत।

दूनो—पाहुन के आदर अवरू बड़ा नीक से होइत।

शकुन्तला—(मुँह बिजुका के) चल दूर होखस हरमेसा तोहरा लोगन के इहे लागल रहेला जा हम तोहरा लोगनी के ना सुनबि। (अलग जाके बइठ गइली)

दुष्यन्त—हे सुन्दरी तोहरा सखी के समूचा कहानी सुने के हमरा इच्छा बा।

दूनो—ई राउर किरिपा बा।

राजा—कन्व त बाल ब्रह्मचारी हवन त फेनु ई तोहार सखी केकर बेटी हई।

अनुसूया—त महाराज सुनीं कुशिक के कुल में एगो परतापी राजर्षि बाड़न।

दुष्यन्त—ई त हमहु जानतानी रंवां बिश्वामित्र के नाम लेबि।

अनुसूया—असली में उहे हमार सखी के पिता हवन। कन्व इन्हकर पिता एसे कहालन कि अबही इन्हकर नारो ना कटाइल रहे कि तसही इन्हका के जमीन से लोटल देखि के अपना कुटिया में ले अइलन। तबही से पाले पोसे लगलन।

दुष्यन्त—जमीन प लोटल मिलल रहे ई सुन के त हमरा बड़ा अचरज होखता। फेनु जरी से कहानी कहि के हमार संका दूर करीं।

अनुसूया—सुनीं, कहतानी। उहे विश्वामित्र अतना कड़ेर तपस्या कइलन कि जवना से सभ देवता डेरा गइलन आ तपस्या भंग करे वास्ते सभ से सुनर मेनका नांव के अपसरा भेजलन जा।

दुष्यन्त—साच ह देवता लोग अइसने होला कि दोसरा के तपस्या देखि के डेरा जाले लोग।

अनुसूया—वसन्त रीतु में बिश्वामित्र मेनका के रूप देखते ...(अतना कहते सरमाईल मुड़ी कर लेली)

क्रमशः

कविता-कुंज

गजल

—चन्द्रशेखर मिश्र (वाराणसी)

सूझत न बाय तोहे कि तू का करत हय।
हमरे हिया के मड़ई पर अँगरा धरत हय॥
छाती में जौने तोहे चोराये रहीला हम।
रहि के ओही में ओही पर कोदो दरत हय॥
हम त विकल हई तोरे चोन्हा के बदौलत।
चोन्है का कम रहा, काहे गुस्सा करत हय॥
तूँ हसल्य त हमैं बहुत नीक लगला।
फेरि से हँस, कोहाँय के गजब करत हय॥

तोहरे निगाह में बुरा हई त का भयल।
हमके तोहर कसम तू अच्छा लगत हय॥
नेवर जे कही तोहै ओकर जीभ खींचि लेब।
हमके त सब कहला, का तुहीं कहत हय॥

हम दिन भरे में बीस लगावा करब फेरा।
बोल कि आजु कालि तूँ कहाँ रहत हय॥
पूरूब जनम क देन हो ई रूप मिलल बा।
अगले जनम बदे बताव का करत हय॥

जीयथईं जब तलक खूब दर्रि ल अँगरा।
आँचर हमार पाँउ क पोंछना करत हय॥
हनुमान जी के घीउ क लेड़ुआ चढ़ी ओह दिन।
जेह दिन सुनब हमार तू चर्चा करत हय॥

पराती

—वसंत कुमार (सारण)

जागऽ भइया, बिहँसत जगावे विहान !
छड़पे किरन के बछरुअन के टोली
चरि के अन्हरिया के धान !
लह-लह पलइअन में सपना सजा के
सिहरत पवनवाँ में नेहिया जगा के
कुँवरी तलइया के सेनुरा लगा के
लेवे कुँवर मुसुकान !
जागऽ भइया, बिहँसत जगावे बिहान ।
गूजि रहल पनघट के छुम-छुम डगरिया
दूर कहीं मधुवन से बाजे बँसुरिया
पनघट के मस्ती तलइयों में थिरकि रहल
झनन-झनन पायल के तान !
जागऽ भइया, बिहँसत जगावे बिहान !
नदिया के धड़कन में नइया के फेरा
ऊपर चिरइयन से चह-चह सबेरा
झूकल सुनहुला छितिजवा के नीचे
झूमत चलेले किसान !
जागऽ भइया, बिहँसत जगावे बिहान !
रहिया पर ठुनुन-ठुनुन बोले खँजड़िया
दुअरा पर टुनुन-मुनुन बाजे सरंगिया
अंगना में नुपूर के झुनुन-झुनुन बोली
ककना के खन-खन जबान !
जागऽ भइया, विहँसत जगावे बिहान !
ललको किरन के चुनरिया में दमकत
पूरब लिलार पर टिकुला वा दमकत
लाज भरल दुलहिन धरती से
मिले दुलह असमान
जागऽ भइया बिहँसत जगावे बिहान !

गीत

—पाण्डेय सुरेन्द्र (सारण)

मन के घुरूमत बतिया मोर घात लगा के टभकेले।
भरमल रतिया नेह जगावे
जागल दियरी आग लगावे

सूतल आज सुरतिया मोर याद जगा के टभकेले।
करिया रात जोगावे बाती
दहकेला दियरा जस छाती
मोती टपकत अँखिया मोर आज ठगा के टभकेले।
आँखिन से जोन्ही जस टूटे
मन के साध पाँख से छूटे
फूटल हाय करमिया मोर रात जगा के टभकेले।

बिरहिन

—सूर्य्य परमार (आरा)

रसिया भरमे जइसे अजगर परल चीते
जिनगी भरमले में जाय।
असहीं भरमवा में रात दिने तिरिया के
पियवा के बहियाँ बुझाय।
ढरकेला लोर कोरे-कोरे रे बदरिआ के
नखे-नखे धरती जुड़ाय।
दरकेला असहों रे पतिया में छतिया से
बोरी-बोरी रसवा बुड़ाय।
काहे असमानवा रे जारत बड़ुए जोन्हिया के
काहे रे चनरमा फफास!
काहे रे सरगिआ के रकतल देहियाँ ले
करेला रे संमुदरा टहास!
अइसने मोहाल रे दुलम मोर संवरिया के
के ई दिहल मथवा मुड़ाय!
मोरा हो जोगिनिआ का पतिया का संग-संग
चलुरे बयरिया उड़ाय।

भिनुसहरा के बेरिया:—

—कुमार शैलेन्द्र (मुजफ्फरपुर

अंखिया के मोती बिखरा के,
पतिया के बिंदिया सजवा के,
रतिया पहिर गइल चुपके से,
बूटीदार चुनरिया,
चंदा जड़ल अँचरिया,
भिनुसहरा के बेरिया।

पनघट पर पनिहारनि गुइआँ,
घइ दिहली गागर के भुइआँ,
छिनु-छिनु नयना राह निहारे,
अइले नाहीं संवरिया।
सौंतिल बनल बंसुरिया।
भिनुसहरा के बेरिया।

चन्दा के मुखड़ा समाईल,
कवन चाँद धरती पर आइल,
गगरी के गलबहियाँ देके,
निकसलि खोल किवड़िया,
रुनझुन चलली गोरिया,
भिनुसहरा के बेरिया।

नदिया के पानी अस लागे,
धरती रानी साज सजाके,
भरी-भरी चुटकी मंगिया भरली,
लह-लह लाल सिनुरिया
टह-टह करे बिदुंलिया
भिनुसहरा के बेरिया

चयनवाँ नाहो लेबे राम

—राहगीर (वाराणसी)

भले दिहले बाटे हमनी के बयनवां,
चयनवाँ नाही लेबे राम।

भगत सिंह के देसवा ईहऽ,
कुँवर सिंह के तरवरिया,
नेता जी के कसम तू सुनिल ऽ,
घर घर मौरी दुवरियाँ,
केतनों कुदब-फनब हमरी सिवनवाँ,
चयनवाँ नाही लेबे राम।

कसम आज राणा प्रताप के
अवर झाँसी की रानी के
कसम आजु बा वीर शिवा के,
गंगा जी के पानी के,
केतने दुसमन के छूटले परनवाँ,
चयनवाँ नाही लेबे राम।

बैरिन के अन्याय देखि के,
सीमा हमें पुकारे,
आजु हिमालय बढ़ि के आगे,

दुसमन के ललकारे,
कबों नाही केहु टिकले समनवाँ
चयनवाँ नाहीं लेबे राम।

भारत के इ अइसन धरती,
रहि रहि पिरित झरेला,
बाकिर केहु आँखि, देखावल,
ओकर नास करेला,
केहु बचि के गइलं ना दुसमनावाँ,
चयनवां नाहों लेबें रामं।

पूंछो केहू आजु सिकंदर,
से तों उहो बताई,
रावण कइसे राम से हारलं,
एकं एकं हाल सुनाई,
अब लागल बाटें तोहरा प धियनवा,
चयनवाँ नाहों लेबे राम।

आइल बसंत बहार

—श्री नाथ नारायण सिंह 'भोजपुरी

नदिया किनार पर बाजल रहल बांसुरी आइल बसंत बहार
लह लह लहरे ला हरियर चुनरिया
मोतियन से माँग भोरे भरेले सँवरिया
धरती अंराई लेत आपन सिगाँर पर
किरिनियाँ लुटा गइली प्यार-आइल
मह मह महकेला मातल मोजरीया
गह गह भइल आज सगरी नगरिया
झूम उठल दुनिया बंसत के सितार
पपिहा लुटा गइले प्यार आइल बंसत बहार
रसे रसे डोलेला रसिक पवनवाँ
अखियन में नींद नाहीं बिना सजनवाँ
भँवरा भुलाइल जवानी के फूल पर
सुध बुध भुलाइल हमार हो आइल बंसत बहार

फाग-गीत

—प्रफुल्लचन्द्र द्विवेदी, एम० ए० (सारण)

फागुन महिनवाँ में दुआरा-अँगनवाँ में,
गुंजल जवनियाँ के राग; झूम-झूम,
डगर-डगर, लहरल नगरिया में फाग।
सीतल सुगंध झकझोरे बेयरिया,
रग-रग में बेधलसि सगरे गतरिया;
चंचल नजरिया में, उमड़ल जवनियां,
झलकेला जीवन-परग; झूम-झूम
जात-पाँत भूलि-भूलिके होले मिलनियां,
चमकेला चाँद जहाँ टूटही पलनियाँ,
बिहँसत झोपड़ियां में, कोठवा कोठरिया में,
सचहूँ अबीर-रंग-राग; झूम झूम
गछिया बिरीछ फेंके फटही लुगरिया,
झारि-झारि बदले बसंती चुनरिया,
महँकत मोजरिया में, कुहुंकत कोइलिया में
धरती के मातल सोहाग; झूम-झूम
झाल-कठताल-ढोल बाजत मंजीरा,
गीत उठे घर-घर अन्हारा-अँजोरा,
लड़िकन परनियाँ के युवक-दुलहिनियाँ के समान। झूम-झूम

अइलन गंगा के तीर, सिया रघुवीर ॥

—विश्वनाथ प्रसाद सब जज (बक्सर)

केवट से रामजी कहें सुनु भैया,
जल्दी से इहँवा ले आउ अपन नैया,
पार करादऽ अभी गंगा के नीर। सिया रघुवीर ॥
हमनी के जाये के बाटे ओह पार
तीनों जना लगादऽ ओह किनार
सूरज का पहिले ना तो होई बड़ा भीर। सिया रघुवीर ०॥
केवटा ना बात सुने मने मुसुकाला
अइसन जवाल में के पड़े जाला
कुछो ना जबाब देला रहे गम्भीर। सिया रघुवीर ०॥
केवटा कहे राम से कैसे नैया ले आईं।
कठवा के नैया कैसे घरनी बनवाईं
दू दुगो घरनी के कैसे सहब भीर। सिया रघुबीर ०॥
राउर गुन हम पहिले से जानीला
एही से अइसन परन हम ठानीला
एकरा में तनिको न मानब पीर। सिया रघुवीर ०॥

दौरि के केवट कठौता ले आवेला
रामजी के चरन सब मिल के धोआवेला
बहे लागल केवटा के नैना से नीर। सिया रघुवीर०॥
चरन रज धोइ सब मिल के लुटावेला
देवतन के दुर्लभ से बस्तु सब पावेला
मीट गइल केवटा के सब भव पीर। सिया रघुवीर०॥
पार जाके रामजी मनही सकुचाले
पार उताराई हम से कुछ न दिअइले
सिया जी तुरत देली अँगुठी उतार। सिया रघुवीर०॥
केवटा परेला राम चरन अकुलाई
रउरा से हम कैसे लेवि उतराई
एतना जो मानी तो करदीं भवपार। सिया रघुवीर०॥
'विश्वनाथ' केवट—अनुराग सुनावेले
मन का अनुराग से भजन बनावेले
हरि का चरनिआ में नवावेले सीर। सिया रघुवीर०॥
अइलन गंगा के तीर

'चेतऽचीन पछुतइब'

—विश्वनाथ राय (गाज़ीपुर)

पहले रहलऽ मित्र, शत्रु तूँ भइलऽ बाद में,
पीछे जाके तू पछुतइबऽ रोइबऽ तूहुँ बाद में।
मित्र बनि के धोखा दिहलऽ,फल तूं पइबऽबाद में
भारत से तूँ धोखा कइल, नरक में जइबऽ बाद में

सन् '५० में पंचशील के, तूँ ही आप बनवलऽ,
हिन्दी चीनी भाई-भाई नारा तूँही लगवलऽ।
ओही साल में तूं आकरके, भारत पर सेनाचढ़वलऽ
लद्दाख में आके तुहूँ, आपन सड़क बनवलऽ

पंच शील हिल मिल के बनवलऽ, कइल तू अच्छा काम।
पंच शील के पेड़ के खइलऽकइल-ना अच्छा काम,
भारत देश से युद्ध तूं ठनलऽकइलऽ-ना अच्छा काम,
नमक खाइ के सरियत ना दिहलऽ हउवऽ नमकहराम

थोर देख के हमला कइलऽ,चहलऽकि हम जीत जाईं,
सेना लेके तूं चलि अइलऽभारत से करे लड़ाई।
भारत कऽ एक सिपाही, एकईस चीनिन के भगाई,
भारत लड़के मार भगाई, ओहरो सहकल छूट जाई

टीपन

(विधनाथ प्रसाद, एम० ए० बी० एल, वकील, मोतीहारी)

अभी कुछ दिन भईल, एगो दोस्त कहलन कि जोतिस पर एगो छोट किताब लिख द; प्रकाशित करा देतानी। बात कुछ देर ला मन में आईल; फेर काम हो ना सकल। अँजोर जब निकले के रहे तबे भाई गणेश चौबे जी एक दिन कहले रहस कि भोजपुरी में भी कुछ लिखल जाव। हमनी का "अँजोर" निकाले जा रहल बानी; अपने के सक्रिय सहयोग देबे के होई। ओ घड़ी भी कुछ कर ना पवनी। अब आज मन में ई बात आईल कि भोजपुरी में ही एक जोतिस के किताब लिखीं। सोचत बानी क्रमशः लेख छपत जाई त एक किताब बन जाई। अच्छा होखो या बेजाय' लेकिन जोतिस के एक किताब भोजपुरी मे त होई। पहला लेख "टीपन" पर लिखत बानी। आशा करतबानी कि पसन्द आई।

जिनका के देख के पार्बती माई के आँचल में दूध के धार बहेला; जिनका ओर निहार भगवान् शंकर के मन में उमंग के झरना झरेला; जे मोदक खा खा के अघा रहल बाड़न; ऊ गणेश जी हमरा के आशीष देस कि हम अपन कार्य्य बिना विघ्न के पूरा करीं।

हिन्दू लोग जे टीपन बनावे ला ओकरा पर बहुत मखौल उड़ावल जाला। लेकिन टीपन का ह एकरा ओर कोइ गौर ना करे। अगर फलित जोतिस पर विश्वास बा तब त "टीपन" के मूल्य रउआ एही से समझी कि जे भविष्य में देखे के अभी तक कौनो वैज्ञानिक या अध्यात्मिक साधन नइखे उ भविष्य के देखे के ई यन्त्र ह। फलित जोतिस यदि नइखी मानत तबहू "टीपन" के महत्व एसे समझी कि केहू के जन्म काल के समय के ऊ ब्रह्माण्ड के एक नक्शा ह। टीपन में जे बारह गो घर रहेला ऊ ऊपर के १८०° और नीचे के १८०° मिला के ३६०° होखेला। एक एक घर तीस तीस डिग्री मे बाँटल बा। अब देखीं टीपन के मतलब रउआ अपना टीपन मे। पहला स्थान के लग्न कहल जाला। "लग्न" के मतलब ई ह कि जे समय रउआ ए पृथ्वी पर अइली ओ ठीक समय पर राउर जन्म के स्थान से पूरब कौन "तारा-राशि" उगल रहे।

अब जब "तारा-राशि" के बात आइल तब एही घड़ी ओकरो विषय में कुछ कह दीं। जोतिस-विज्ञान के विद्वान् लोग कहेला कि ब्रह्माण्ड अनेकों बा। हमनी के ब्रह्माण्ड के नाम "सेन्ट्रल गैलेक्सी" कहल जाला। एमे अनेको सूरज-मण्डल बा। हमनी के सूरज मण्डल मे मंगल, बुध, वृहस्पति, शुक्र, शनि ग्रह बा। चन्द्रमा उपग्रह बा। राहु, केतु विशेष स्थान के नाम ह। हँ त एही लेखा ऊसख्य-ब्रह्मण्ड से भरल आकाश "तारा-राशि" से भरल लागेला। ई सब तारा राशि के ऋषि लोग भिन्न-भिन्न नाम दे देहले बा। बारह नाम बा। मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ, मीन। "तारा-राशि"

बहुत तारा के मिलला से बने ला। बहुत तारा एक जगह एकत्रित हो जाला तब एक आकृति का ऐसन बन जाला। एसे जौना "तारा-राशि" के ऋषि लोग भेड़ा का रूप के देखलक; ओकरा नाम धइलक मेष-ऐही लेखा बैल का अनुसार दीखला से वृष और फिर एही समान और सब नाम भी देहलक। अब फेर पीछे के बात से सम्बन्ध स्थापित करीं। मान ली राउर जन्म के समय पूरब में मेष अर्थात् भेड़ा के आकृति के तारा-राशि उगल रहे तब राउर लग्न मे अंक लिखादले एक-१। अब देखी जौना स्थान में रउआ बानी ओ जगह से रउआ जन्म काल के समय "ब्रह्माण्ड" का स्थिति रहे ओकर पूरा नक्शा राउर टीपन के जन्म-कुण्डली में अंकित बा। हमर त फलित जोतिस में विसवास ह अउर किताब हम फलित ज्योतिष केही लिखब। लेकिन एक क्षण ला मान लीं फलित ज्योतिष कुछ ना ह। तबो बताईं संसार में कौनो ऐसन सभ्यता कभी पढ़ायल जेमें लोग अपना लड़िकन के जन्म-समय में ओकरा जन्म् स्थान से देखला पर ब्रह्माण्ड के का का स्थिति रहे ओकर नक्शा रखत होखे। भारतीय के बौद्धिक-स्तर के पता जोतिस से कम ना लागे। दुनिया में लोग तिथि लिखेला, जन्म-स्थान लिखेला और कैसन जन्म-स्थान या समयर है ऐकर विवरण लिख लेवेला; अधिका से अधिक देश के नाम जोड़ लेवेला लेकिन हिन्दू-संस्कृति ही एक ऐसन संस्कृति बा जेमे हजारो साल पहिले से लोग अपना लड़िकन के जन्म-समय में ब्रह्माण्ड के स्थिति के नक्शा रखत आईल बा।

◆

मौर्यकाल में मगध के मूर्ति-कला

—सुमन (मुरार, शाहाबाद)

मौर्य युग में बिहार के ही ना समूचे भारत के भाग चमकि गइल। एह काल के प्रतापी राजा अशोक अइसन दुनिया में कोई ना भइल। इनका समय में सारा देश एक सूत्र में बँधा गइल रहे। आधुनिक पटना से ही सगरो के शासन होत रहे। ई बहुत दिन तक एकछत्र राज्य कइलन। एक तरह के भाषा, कला, धर्म अउर लिपि के प्रचार करके संस्कृति के क्षेत्र में भी एकता लइलन।

प्राचीन काल में बिहार (मगध) के स्थान हिन्दुस्तान में सब क्षेत्र में व्यापक रहे। बिहार के ही इतिहास सम्पूर्ण भारत के इतिहास बा। कला के क्षेत्र में भी मगध के आपन एगो विशेष स्थान बा।

भारत में शिल्प या वास्तुकला के इतिहास हरप्पा के सभ्यता से शुरू समझल जाला। ई सभ्यता बहुत ऊच्च दर्जा के अउर शहरी सभ्यता रहे। हरप्पा, मोहंजोदड़ो आ अउर जगह से खुदाई में ईसा के सहस्रों बरस पहले के सभ्यता के पता चलल बा। ई सभ्यता के बारे में खुदाई के पहिले कोई ना जानत रहे। आधुनिक शहर अइसन वैज्ञानिक ढंग से नगर बसल रहे। मूर्ति वगैरह भी बड़ा सुन्दर मिलल बा। सिन्धुघाटी या हरप्पा के संस्कृति के बाद जे कलात्मक कीर्ति मिलत बा उ मौर्य काल के ही बा। मौर्य राजा लोगन के देख रेख में मूर्त्ति-कला के खूब विकास भइल। अशोक के बौद्ध धर्म मान लेला के बाद ओकरा प्रचार-प्रसार खातिर बहुत तरह के काम शुरू कइलन। पत्थर के स्तम्भ गड़वा के धर्म लेख खोदवएलन। एह सब स्तम्भ के ऊपर तरह-तरह के मूर्ति बइठावल गइल बा। अलग-अलग सब मूर्ति एक दूसरा से बेजोड़ बा।

भारत के मूर्तिकला के इतिहास में मौर्य-काल के आपन अलग विशेषता बा जे अउर समय के मूर्ति में नइखे मिलत। अशोक के कला के अगर लोप कर दिहल जाय त मौर्य युग के इतिहास ही अंधकार के बादल से ढक जात बा। एह युग के मूर्ति में भद्दापन, मोटापन नाम मात्र के भी नइखे। काम अतना बारीकी से कइल बा कि पत्थर पर कहीं एक छेनी कम या बेसी लागल नइखे बुझात। हरप्पा के सभ्यता के बाद एही काल में पत्थर पर मूर्ति बने के सुरू भइल। पत्थर के अलावे एह युग के मिट्टी के बनल खिलौना, मूर्ति, गाड़ी आदि बहुत संख्या में खुदाई से मिलल बा। पत्थर पर एतना चमकीला पालिश न मौर्य युग के पहिले मिलत बा न पीछे। पालिश के प्रयोग एही समय सुरू भइल आ लोप भी मौर्ययुग में भ गइल।

बसाढ़-परवीरा में जे स्तम्भ मिलल बा ओपर के सिंह-मूर्ति अशोक के पहिले के मालुम होत बा। ई सिंह सारनाथ से मिलल सिंह-मूर्ति से एकदम भिन्न अउर शैली में भी पिछड़ल बा। स्तम्भ के ऊपर एगो चबूतरा बा। उ जरूरत से ज्यादा बड़ा अउर भारी बा। बाद में जवन स्तम्भ बनल बा ओकरा ऊपर के चबूतरा वृत्ताकार सुन्दर बा। लउरिया नन्दनगढ़ (चम्पारन) में अब भी सिंह शीर्षयुक्त स्तम्भ खड़ा बा। पत्थर के काट के नकाशी के जे काम भइल बा उ सब बहुत उच्च श्रेणी के बा। गोल चौकी के ऊपर सिंह गरदन उठाकर आगे के पैर पर खड़ा बनावल गइल बा। चम्पारन जिला में ही लउरिया नन्दनगढ़ से थोड़े दूर पर रमपुरवा में अशोक के शिला स्तम्भ पशुमूर्ति आदि मिलल बा। एकर ऊपर के भाग कुछ दूर पर मिलल। उलटे कमल के ऊपर सिंहासन बनल

बा। एह मूर्ति में ई विशेषता बा कि कोई भाग आसन से बाहर नइखे निकलल। सिंहासन पर सिंह शान से बइठल बा। मौर्य युग के कला के पूरा विकास एह मूर्ति में पावल जात बा। एह में सिंह खूब पुष्ट बनावल बा। एही गाँव से एगो साँढ़ के सिर भी प्राप्त भइल बा। एह साढ़े के तुलना सिन्धु घाटी के मुहर पर मिलल साँढ़ से कइल जा सकेला। एही मूर्ति अइसन भुवनेश्वर (उड़ीसा) के धौली में एक चट्टान में विशाल हाथी के मूर्ति बनावल गइल बा। पत्थर पर अतना सुन्दर मूर्ति बनत बा कि देख के अचरज होत बा। अइसन मालुम होत बा कि जे कारिगर रमपुरवा के सिंह मूर्ति बनवलन उहें या उनकर साथी कोई धौली के हाथी मूर्ति बनवलस। गया जिला में बरावर पहाड़ी पर अशोक के पौत्र दशरथ के कटवावल गुफा बा। एह गुफा के लोमस ऋषि के गुफा कहल जाला। एह गुफा के दरवाजा पर हाथी के सुन्दर लाइन बनल बा जे स्तूप के पूजा करे जा रहल बा। हाथी के बनावट बड़ा ही सुन्दर बा।

१९१७ ई० में पटना के पास दीदारगंज से हाथ में चँवर के साथ एगो स्त्री मूर्ति मिलल। ई मूर्ति चौकी पर खड़ा बनावल गइल बा। एह मूर्ति के हरएक अंग के शोभा के बखान जतना कइल जाय सब थोड़ा ही बा। शरीर के सब अंग एक से एक बढ़कर निखरल बा। नारी के सुन्दरता के जे नख-सीख वर्णन कवि लोग कइले बाड़न ओही अनुरूप ठीक ई मूर्ति उतरल बा। एकर कमर पतला, स्तन एकदम उभरल अउर दाहिना हाथ में चँवर बा। बाल भी बड़ा उत्तम तरह से गूथँल बा। अइसन बुझात बा कि स्तन के भार से मूर्ति कुछ झुकल होखे। कला के नजर में शायद मौर्य काल के ही ना ई सब काल के मूर्ति में श्रेष्ठ बनल बा। विद्वान लोगन के राय से ई मूर्ति अशोक के राज प्रासाद में रखल जात होई।

मौर्य काल में बौद्ध धर्म या यक्ष आदि के पूजा के अलावे जैन धर्म के बोलबाला भी रहे। १५ फरवरी १९३७ के लगभग पटना के लोहानीपुर महल्ला से जैन तीर्थंकर के नंगा मूर्ति मिलल, जेकर हाथ सिर नइखे। अशोक के दूगो पौत्र में से एगो 'संप्रति' जैन हो गइल रहलन। ई जैन संप्रदाय के प्रचार वास्ते बहुत काम भी कइलन। एह से अनुमान कइल जात बा कि लोहानीपुर से मिलल जैन मूर्ति संम्प्रति के समय के ही होई। एह मूर्ति पर भी चमकीला पालिश बा।

ई सब मूर्ति के अलावे पटना से ही दूगो विशाल लम्बा चौड़ा पुरुष के मूर्ति मिलल बा। ई दूनों मूर्ति मथुरा शैली के बोधिसत्व से मिलत जुलत बा। विद्वान लोगन के राय में अभी भी मतभेद बा। खैर कला के नजर से ई दूनो मूर्ति अतना बढ़िया ना कहल जा सकेला। ई जरूरत से ज्यादे बड़ा अउर कुछ भद्दा भी बा।

मौर्य कला के भी अन्त मौर्य काल के बाद हो गइल। एह समय में चमकीला पालिश के जवन प्रचार भइल उ मौर्य काल के बाद एक दम नइखे मिलल। एह समय के मिलल मूर्ति कुछ त सरकारी देख रेख में ही बनल बाकि कुछ गैर सरकारी कलाकार के भी बनावल बा। अभी एह युग के न मालुम कतना कला के नमूना जमीन के नीचे पड़ल बा जे समय पर खुदाई होखे त निकल सकेला। एह से पटना अगर आस-पास के फिर से खुदाई करना जरूरी बा।

सुरमा सगुन विचारे ना

—रमेशचन्द्र झा (चम्पारण)

आसमान के लाली धरती पर उतरे लागल। पंछी अपना घर का ओर लौट चलली। दिन भर के हलचल पी के आसमान जइसे चुपकी साध लेलक, छिटफुट तरेगन उगे लागल। आसमान पर कहीं-कहीं बादल के छोट-छोट टुकड़ा देखाय लागल। बहुत दूर तक परल बालू के रेती के भेयावन रूप, अधिका भेयावन लागे लागल।

थोड़का दूर पर खीमा लगा दिहल गइल। खीमा के जगह बाबू चेन सिंह का भी ठीक लागल—सामने दूर तक पसरल जमीन, पानी से भरल पोखरी, पोखरी का आंट पर आम के बगीचा। सभ लोग अपना-अपना खीमा का भीतर चल गइल। कुछ लोग पहरा पर आ डटल आपन हथियार लेके। बलिआ बाबू साहेब का खीमा का भीतर आइल। बलिआ के आइल देख के उठ बैठले। बाबू साहेब कहलन—

"बलिआ?"

"सरकार" बलिआ बोलल।

"सलतनत हो गइल सभे लोग?"

"जी, सरकार।"

"कवनो नया बात?"

"हमला कब बोलल जाई?"

"सोच लेहल जाता। आपन राय बोल······"

'हमरा बिचार से भीखम खाँ के मोका देहल ठीक नइखे। दुसमन के कवनो घड़ी मोका ना देवे के चाहीं, मलिकार ·· "

"बिना कवनो खबर देले, केहू पर हमला बोल देहल जाय, ठीक ना लागे हमरा। तुरकी दरबार के खबर कर देना जरूरी बा।"

"हमर काम हमला कइल बा, दुसमन के खबर देहल ना।"

"हो सकेला जे हमर अगवानी सुनके भीखम खां बाकी रकम हाजिर क दे। एह से पहिले खबर दे देहल जरूरी बा, मुनासिब बा···"

"हमरा ठीक नइखे लागत " बलिआ आपन बात पूरा ना कइले रहे कि बेचू राय बीच ही टपक पड़लन आ बातचीत के सिलसिला बदल दिहलन। कहलन—"सभ बात बलिए जान जाई त फेर का बाकी रह जाई।" बलिआ का दिल पर एह बात के बड़ा चोट लागल बाकी कुछ बोल ना सकल। बहुत देर तक एह बात पर बात चलल आ तै भइल जे भीखम खां के पहिले खबर कर देल जाय। अगर भीखम खां कवनो लेखा लगा के तीस हजार जमा कर देस त फेर लड़ाई के कवनो काम ना रह जाय। लड़ाई घाटा के सौदा ह नफा के ना····"

एतनो पर भीखम खां का मजूर ना होई त हमरा सामने दोसर कवनो चारा नइखे बिना लड़ाई के। बलिआ रजदूत बनावल गइल। सुखाल मिरजई पहिन के घोड़ा पर असवार भइल, मुरेठा का भीतर बाबू के परवाना सहेज के राख लेलक आ चल पड़ल तुरकी दरबार का ओर। घोड़ा तेजी से छारदक भागे लागल। भीखम खां के दरवाजा पर घोड़ा रोक के उतर गइल। फाटक पर एगो सिपाही खड़ा रहे। सिपाही से मिल के दरबार का भीतर अपना अइला के खबर भेजवलक। बलिआ के बुलाहट भइल।

राजसी अदब का साथ बलिआ भीखम खां का सामने गइल। सलामी वजवलक आ मुरेठा खोल के परवाना भीखम खां का आगा बढ़ा देलक। परवाना पढ़ के भीखम खां कहलन—"इ परवाना बेतिया राजा के बाटे जे सै कोस पर राज करत बा, हमर तुरकी सोरह कोस के बा। हम उनका सामने एगो गरीब आदमी बानी, बाकी हमरो पर उनका हमला करे के पड़ गइल। हमला कइला से कुछ मिल ना सके बेतिया का बाबू साहेब का·· "

भीखम खां अपना देवानजी के बुला के उतारा लिखवले आ बलिआ का हवाले कर दिहले। भीखम खां मने-मने कहलक—"जे भी होखे, आपन-आपन टेक बा, हम बाकी रकम दे नइखीं सकत, बेतिया के राजा बिना हमला कइले छोड़ नइखन सकत। अब एकरा आखिरी हार-जीत तरुआर का धार पर होई।'

बलिआ अपना घोड़ा पर सवार भइल। उतारा लेके मुरेठा का भीतर रखलक आ खीमा का ओर आवे लागल। बड़का फाटक से गुजरे का बेरा एने-ओने निहारे लागल। औचके ओकर आंख दहिना ओर गइल त देखलक जे बगल का बैठका का भीतर पहलवान लोग तइयार होत रहे, संगीन साफ कइल जात रहे। कुछ लोहार लोग निहाय पर घन चलावत रहे।

एकरा पहिले भी बलिआ केतना बेर तुरकी आ चुकल रहे। पहिले जब भी आइल भीखम खां का बतकही से कबोना बुझाइल जे ओकरा दिल पर करिआ दाग बा। ओकरा एह बात के बड़ा अचरज भइल जे पहिला गढ़ से बेदखल होके भी, ओकर बात तक ना हे आइल जीभ पर। अइसन हो ना सके जे खबर ना होखे भीखम खाँ के। दाल का भीतर जरूर कुछ करिआ बा। सोचत-बिचारत घोड़ा के कोड़ा लगवलस। बलिआ घबराइल ना तनिको। बलिआ खूब जानत रहे जे बेतिया का सामने, तुरकी घड़ी भर ना ठहर सके। ओकरा हथियार डाल देवे के पड़ी। तुरकी दरबार का चाहरदीवारी से निकले का बेरा एक बेर चारु ओर देखलक।

बाबू चैना सिंह अपना खीमा का भीतर बइठल बलिया के अगवानी करत रहल। घोड़ा के टाप सुनके बाहर आ गइलन आ जोर से पुकारे लगले—"बलिआ"·"·· बलिआ····" कवनो उतारा ना मिलल बाकी घोड़ा के टाप सुनात रहल। कवनो उतारा ना पाके शक होखे लागल। बाबू साहेब फेर आवाज लगवलन—'बासमनराय''!'

बासमन राय अपना समेयाना का भीतर जागले रहस। सुनते लपक के सामने आ गइले। बाबू साहेब कहले—'बहुत देर से घोड़ा के टाप कान से सुनाई पड़त रहे बाकी कुछ दिखाई ना पड़ल, हमरा शक हो गइल। तनी सचेत रहे के जरूरत बा।" बासमन राय कहले—

"सिपाही लोग के जगा दिहल जाय?"

"ना···"

"कवनो बात हो गइल तब?"

"हमनी कम नइखीं, समझ-बुझ लेवे खातिर।"

"बलिआ अबतक वापस ना आइल?"

"बहुत देर लागल। अबले तक आ जाय के चाहीं ओकरा··"

खीमा से थोड़का दूर पर घोड़ा रूकल। बलिआ उतर गइल। घोड़ा के राव

पकड़ के धीरे-धीरे चले लागल। घोड़ा के एगो गाछ से बान्ह के पास दाखिल भइल। सलामी देके कहलस—

“अपने के सेवक अपने सामने बा सरकार!”

“आ गइले तू?”

“सरकार••”

“कवनो बात, कवनो नया खबर?”

“भीखम खाँ कवनो पटरा पर आवे के चाहत नइखे। बाकी रकम भी देवे के नाम नइखे लेत •” बलिआ कहलक आ मुरेठा का भीतर से परवाना निकाल के बाबू साहेब का सामने रख देलक।

परवाना पढ़ल गइल। बाबू साहेब का तरवा के आग कपारे चढ़ गइल। कुछ देर चुप होके बलिआ का चेहरा का ओर देखे लगले। बलिआ का चेहरा पर जइसे खून अइसन रंग चढ़ गइल रहे, माथा पर तमतमी आ गइल रहे। बाबू साहेब खीमा का भीतर गइले आ तुरन्ते बाहर आके कहलन—

“बलिआ••”

“सरकार लड़ाई••”

“कूच खातिर तइयारी कइल जाय?”

“सरकार के हुकुम के देर बा••”

“हमर हुकुम बा।”

“अपने का हुकुम का पहिले से इंतजार हो रहल बा।”

“तोरा के हम आपन देह मानिले, बली!”

“सरकार, सचकी पूछल जाय त एह झमेला का साथे, ना बेतिया राज के कसूर बा ना भीखम खां के। भीखम खां कवनो ओतना खराब आदमी ना बाड़न बाकी एह अकुआ का पाछा कवनो अइसन आदमी के हाथ बा जे हरदम अपने-सभन का बीच रहत आवत बा आ एह मोका से आपन काम बना लेवे के चाहता।”

“लड़ाई होई, हो के रही, जेकर तरुआर तेज होई, ओकर जीत होई ••”

“लड़ाई त अब ना रुक सके, सरकार••••”

“एक बात जनिहे बलिआ, भीखम खां के मन बड़ा बढ़ गइल बा। हरदम आसमान पर चढ़के बात करेला•••”

“बाकी भीखम खां के ताव सहे के हम तइयार नइखीं। हमार बूता से बाहर के बात बा•••”बाबू चैना सिंह बड़ा मजगूती का साथ कहलन।

“थोड़का मोहलत मिले के चाहीं भीखम खाँ का••••”

“भीखम खां के एतना समय दिआ गइल बा, जेतना ना देवे के चाहीं। सबका मालुम बा जे बेतिया राजा के दिल दरिआव हं। अगर भीखम एक बेर बेतिया जाके नुनुआ के सलामी बजा आइत त सम तूल-कलाम खतम हो जाइत बाकी ओकरा पठान भइला के बड़ा गुमान बा। आज भी हमरा सामने आ जाय त ओकर लगान-बाकी माफ कइल जा सकेला, बाकी अइसन कर ना सके। एकर त साफे मतलब बा जे बेतिया राज से लोहा बजावे के चाहत बा, त लोहा बाजी••••”

लोहासिंह आ बासमनराय बड़ा तेजी का साथ बाबू साहेब का खीमा का भोज आइल लोग आ कहल लोगे "हमनी लोहा बजावे के तइयार होके आइल बानी, तीस हजार कवनो बहुत लमहर रकम नइखे बेतिया राज खातिर। एतना न दसहरा के मोका पर भोर से संक्रिया ले लोग ५. दे देहल जाला; सरकार…"

"बासमन राय !"

"सरकार, अपने का होश ना होई। एक बेर एगो पटवारी पकड़ा के आइल ना जानी केतना सैकड़ रुपया लगान के असूल क के खा गइल रहे। हाथ जोड़ के बुढ़वा महराज का आगा खड़ा हो गइल। तवले महराज के भोजन करे के बेरा भइल। महराज भोजन करे गइनी। तरकारी में नीमक अधिका पड़ गइल रहे। महराज से खाइल ना जाय। पटवारी महराज का पास गइल आ कहलक-,घी अधिक मिला देल जाय सरकार, नीमक के असर अपने कम हो जाई। बुढ़वा महराज पटवारी के बात मान गइनी। महराज खा पी के चौका से बाहर होके कहनी-"हमरा राज के पटवारी चोरी ना करे। जेतना रुपया कम बा। पटवारी के माफी दिआत बा हमरा ओर से। महराज के दोहाई मनावत पटवारी अपना घरे चल गइल। अगर भीखम खां आज भी बड़का महराज का-पास जाके हाथ जोड़ देस त उनका खातिर तीस हजार कवनो बहुत लमहर बात नइखे। एह से भी लमहर रकम रहित त माफी मिल जाइत—"

बाकी भीखम खां अइसनकर ना सके :—'

"अइसन एहसे ना कर सके कि ओकरा अकिल ओकर साथ नइखे"

"कहल बा जे बिनास के घड़ी निअरा आवेला त कवनो अकिल काम ना करे।"

मुकबिला भइल त बेतिये से-सौ चोट सोनार के, एक चोट लोहार के.."

"दिमागे आन्हर बा।"

बाबू चैना सिंह उठके सिपाही लोग का खीमा का ओर चल दिहलन। वारी-वारी सभ खीमा का भीतर गइले। सिपाही लोग के जगवले। वेचू राय, बाबू चैना सिंह का खीमा का भीतर बेखबर सूतल रहले। लौट के वेचू राय के भी जगवले। फेर अपना खीमा से बाहर आके पुकारे लगले—"बलिआ, बलिआ··"

बलिआ तुरन्त आइल। बाबू साहब कहले—"

"बड़का भिनसरवा का पहिले तुरकी गढ़ पर हमला बोल देवे के बा। सभन सिपाही के जगा देले बानी।"

"सगुन ठीक बा न सरकार"

"तोरा से बेर-बेर कहिले जे सुरमा लोग कबो सगुन–असगुन के बिचार ना करे। जे होई देखल जाई।"

लड़ाई के नगाड़ा बाज गइल। कुछ सिपाही खीमा के पहरा खातिर तैनात कर दिहल गइले। बाकी लोग कतार बान्ह के तुरकी का ओर बढ़ल।

बेतिया के भीखम खाँ के दरबार का सामने कुछ देर खातिर ठहर गइल जइसे झमाझम बरसत मेघ थम जाला जब तब। भोर होत-होत सिपाही लोग अपना-अपना जगह पर आ गइल। बड़का फाटक के पहरू अबहीं सूतल रहे। ओकर आँख आँचके खुल गइल आहट पा के। आँख खुलते नगाड़ा कस के पीटे लागल। चारू ओर हाहाकार मच गइल। केहू-केहू के ना पूछे। बाबू चैना सिंह पुकरलन—

"बलिआ··"

"सरकार···" बलिआ बोलल।

अपना सोलह जवान का साथ बलिआ तोप पर आ गइल रहे। तोप में पलीता लगावत देर भइल बलिआ का बाकी पहिया नचावत देर ना भइल ओकरा। पहिला गोला छूटल बाकी बेकार गइल जाके बागमती का धार पर गिरल। पहिले निसाना चूक गइल देख के बाबू साहेब के दिमाग चकरा गइल मने-मने कहले—'बलिआ बड़ा भरोसा के आदमी आ ओकर निसाना कबो चूक ना सके कइसे गइल :–

बाबू साहेब आवाज लगवलन—

"ओझा जी !"

"अगर अपने फतेह चाहत बानी त पलीता आ निसाना अपना हाथ से लगावल जाय। अपने के निसाना अचूक होला। अपने का दाव के जवाब तुरकी दरबार का पास नइखे··" ओझा जी कहले।

बाबू चैना सिंह लपट के तोप का लगे आ गइले आ बलिआ के अपना जगह पर लगा दिहले। लड़ाई जम के होखे लागल। कुछ लोग एने गिरल, कुछ ओने। बाबू साहेब तोप के नाली सामने दरबार का ओर घुमा दिहले। पलीता लगा के आग लगा दिहले। जोड़ के धड़ाका भइल। एगो लमहर लहकत बमगोला दरबार का अगिला फाटक पर धमू से लागल। लोहा के फाटक जे पर बड़ा गुमान रहे भीखम खाँ का, चरचरा के टूट गइल। सबका भरोस रहे जे फाटक टूट ना सके।

फाटक टूटला का बाद भी तोप के मार लगातार चलत रहल। संजोग एगो गोला जाके तुरकी दरबार का अगिला फाटक पर धमू से लागल। लोहा के फाटक जे पर बड़ा गुमान रहे, भीखम खाँ का, चरचरा के टूट गइल। सबका भरोस रहे जे फाटक टूट ना सके।

फाटक टूटला का बाद भी तोप के मार लगातार चलत रहल। संजोगन एगो गोला जाके तुरकी दरबार का घोड़सार पर गिरल। केतना घोड़ा जर के राख हो गइल, केतना घुड़सवार लापता हो गइल, घुड़सार धड़-धड़ धनके लागल। भीखम खाँ कवनो गती तरुआर के जवाब देतन बाकी तोप के जवाब उनका पास ना रहे। तोप के मार देख के तुरकी दरबार के जवान लोग घबरा गइल।

लोहा के फाटक टूटते बेतिया के सिपाही लोग फाटक का भीतर दाखिल हो गइल, जमके लड़ाई होखे लागल। आदमी पर आदमी गिरे लागल। ओने से भीखम खाँ अपना बहादुर सिपाही लोग के ललकरलन, एने से बासमन राय अपना जवान लोग के मार पर मार करे खातिर सहेजलन। बासमन राय बड़ा जीवट के आदमी रहे, जब बढ़ जाय त मुड़ ना सके आ जब चढ़ जाय त फिर ना सके। तरुआर बाजे लागल। भीखम खाँ शमसेर के आगा बढ़ा दिहले; बाकी बासमन राय ठहरले उनको से अधिका खेलल जवान। पहिले दाव पर शेमसेर के चढ़ा देलन आ पछार के अपना तरुआर शमसेर का सीना से सटा देलन। पहाड़ जइसन जवान उलिट के गिरल आ उठ ना सकल। शमसेर का गिरते सारा तुरकी हलचल से भर गइल। भगदड़ लेखा भय गइल। लोग उत्तर-दखिन भागे लागल।

तुरकी के सिपाही लोग पहिले आगा बढ़े के चाहत रहे, बेर-बेर लोग किना बान्हे बेर-बेर तूरे बाकी सामने का फाटक पर तोप देख के अकिल तेरह हो जाय। बलिआ भी बाबू चैन सिंह का पास आ गइल रहे आ तोप का अगल-बगल बलिआ के तरुआ चमकत रहे। लोहासिंह के लोहा भी आपन इसपाती ताकत लगवले रहे। भला केक बेटा बाघ के रहे जे लोहा सिंह का तेगा का सामने से बचके निकल जाय। लोहा सि का ना काट दिहला के डर ना कट गइला के, ना जिनगी से मोह ना मौत से भय।

बाबू चैनासिंह तोप आ पलीता ठीक कइलन, धड़ाका भइल त अइसन लागल के धरती फाट गइल। अबकी बेर के गोला तुरकी दरबार का जनानी डेवढ़ी पर गिरल। भीतर के लोग निकल के बाहर भागे लागल। जनानी डेवढ़ी पर गोला गिरला के बड़ा पछतावा भइल बाबू चैना सिंह का बाकी अब करस त का, होखे वाला हो चुकल रहे।

चारू ओर का दरवाजा पर हथियार वाला सिपाही के पहरा पर बइठा दीह रहे। जेने नजर जाय, ओनही तरुआर, भाला, बनूक बरछी देखाई देवे। बलिआ अपना जगह पर अड़ल, बसिमन राय अपना जगह पर जमल, लोहा सिंह अपना जगह प डटल आ सबसे कठिन सामना बाबू चैनासिंह के तुरकी दरबार के पहिला फाटक पर तोपची के काम, पलीता बोझल, निसाना लगा के मार कइल। देह से टप-टप पसेना टपक बाकी आपन मोरचा पर जान हाथ पर लेके तइयार, हरदम धार पर कटे के तइया कबो हटे के ना। बाबू चैनासिंह, जे केहू तरह झुक जाय के हाल ना जनले, भले टू गइले।

भीखम खां के सिपाही लोग अपना के बचावे का फिकिर में लागल रहे, हमला कइल त कठिन हो गइल। बेतिया राज के सिपाही एक पर एक तैनात रहे। बाब साहे के हर गोटी आगा बढ़त जाय। बाबू साहेब का ओर से मार पर मार होत गइल। तरुआर बनूक चलत रहल, तोप के गोला दगात रहल। आसमान पर धुआं जइसन छा गइल।

भीखम खां आपन हार त बाजी देख के घबरा गइले बाकी एतनों पर हार माने के तइयार ना भइले, कवनो कीमत पर। जइसे-तइसे हर दबाव के देवे के कोशिश करत गइले। कहल जाय जे भीखम खां आपन सब-कुछ लुटा देवे के तइयार रहले। बाकी बेतिया का बाबू के हार माने के राजी ना रहस। केहू तरह अपना सिपाहियन के साहस देत रहल, ललकारा देत गइले। एतने ना, अइसन कवनो मौका के खोज करत रहले कि से आपन बाजी लहावल जा सके।

भीखम खां का पास भी कुछ अइसन आदमी रहे जे आसानी से बेतिया का जवान लोग का साथ कस के जूझ जाइत बाकी तोप देख के सब कर दिमाग चकरा जाय। भीखम खां भी एह बात के जान गइले जे तरुआर का जोर से बेतिया का बाबू के हरा देबे खातिर दोसर जुगुन लगावे के सोचे लगले। भीखम खां चालाकी से ना धोखाधड़ी से काम लेवे के सोच लिहले। सिपाही लोग केहू तरह बचाव के लड़ाई लड़त रह गइल दिन भर आ भीखम खां बाबू बेचू राय से केहू तरह बतिआवे के कोशिश करत रह गइले। बेचू राय आ भीखम खां एक सिवनिया आदमी जान-पहचान भी कम ना रहे। भीखम खां के कोशिश आ गइल। डेवढ़ी का जनानी निकसार से बेचू राय के अपना डेवढ़ी का भीतर बुला लिहले। बाहर लड़ाई होत रहल आ भीतर-भीतर बातचीत होत रहल।

भोजपुरी के मुद्रित साहित्य की सूची

(आधुनिक साहित्य-ग्रन्थ)

—गणेश चौबे

लगभग एक वर्ष हुआ, जब 'भोजपुरी परिवार' के संचालक एवं इस पत्र के संपादक श्री पाण्डेय नर्म्मदेश्वर सहाय ने भोजपुरी के प्रकाशित साहित्य की एक सूची तैयार करने का प्रस्ताव रखा तो मैंने अपने सीमित साधनों के कारण इस प्रस्ताव को बड़े संकोच के साथ स्वीकार किया। यद्यपि ऐसी सूची की उपयोगिता निर्विवाद है, और इससे भोजपुरी साहित्य के इतिहास-ग्रंथों की अनेक भ्रान्तियों का भी निराकरण होगा।

भोजपुरी एक बड़े भू भाग की मातृभाषा है जिसका विस्तार विहार और उत्तर प्रदेश के सोलह जिलों में, मध्यप्रदेश के सुरगुजा एवं नेपाल तराई के चार जिलों में है। भोजपुरी क्षेत्र में एक भी ऐसा पुस्तकालय नहीं, एक भी ऐसी दूकान नहीं जहाँ भोजपुरी की कुछ पुस्तकें एक साथ उपलब्ध हों। फलतः मुझे बहुत से ग्रन्थकारों, प्रकाशकों एवं पुस्तकालयाध्यक्षों से पत्र द्वारा या व्यक्तिगत रूप से संपर्क स्थापित करना पड़ा है और भोजपुरी साहित्य के इतिहास-ग्रन्थों से भी इस सूची के लिए सामग्रियाँ संकलित करनी पड़ी हैं। इस गुरुतर कार्य में जिन-जिन साहित्य सेवियों, विद्वानों एवं संस्थाओं से मुझे जिस रूप में सहायता मिली है, उनका नाम इस सूची में यथास्थान सादर उल्लिखित है। उनके प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। तारांकित ग्रंथों के रचयिताओं ने अपने-अपने ग्रंथ मेरे पास भेजकर इस कार्य में मेरी सहायता की है और इसके लिए मैं उनका विशेष रूप से कृतज्ञ हूँ। मैं श्री पाण्डेय जी को केवल शिष्टाचार के नाते ही धन्यवाद दे रहा हूँ क्योंकि उन्होंने मुझसे ऐसी सूची तैयार करा कर अपने कर्त्तव्य का पालन ही किया है।

यह सूची पूर्ण नहीं कही जा सकती है, फिर भी भोजपुरी के आधुनिक साहित्य के अधिकांश ग्रंथ इसमें सम्मिलित हैं, ऐसा मेरा खयाल है। भोजपुरी के संत साहित्य, बाइबिल साहित्य, प्रकीर्ण लोक काव्य, लोक नाट्य, लोक संगीत एवं भोजपुरी सम्बन्धी हिन्दी एवं अन्य भाषाओं के समीक्षात्मक एवं संदर्भ-ग्रन्थों की भी ऐसी ही सूची की आवश्यकता अनुभव की जा रही है। मैं कह नहीं सकता मैं इसे पूरा कर सकूंगा या नहीं। यह तो बहुत कुछ साहित्य-प्रेमियों के सक्रिय सहयोग पर निर्भर करता है।

मुझे सूचना मिली है कि सर्वश्री दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह का 'साहित्य रामायन', अनिरुद्ध की 'पनिहारिन', मोती बी० ए० की सीता', निर्भीक को 'भोजपुरी एकांकी', यी का 'कचनार', और 'सोना अइसन भोर', काश्यप जी का 'लोहा सिंह का नया मोर्चा', एवं चन्द्रशेखर मिश्र का 'भोजपुरी के ऐतिहासिक लोकगीत' प्रेस में हैं और ये पूरक सूची में यथा समय सम्मिलित हो सकेंगे। मेरी अज्ञता के कारण जिन ग्रंथकारों के ग्रंथ इस सूची में सम्मिलित नहीं हो सके हैं वे सूचित करने की कृपा करें; हम उसे पूरक सूची में स्थान दे सकेंगे।

क—कविता

१. गो विलाप छंदावली (भोजपुरी-हिन्दी-ब्रजभाषा), रचयिता दूधनाथ उपाध्याय —(अ) प्रकाशक श्री नौरंग सिंह रईस भेलमा, मुद्रक भारत जीवन प्रेस काशी, प्रकाशन काल १८९३ ई० (१९५० वि०) चतुर्थ संस्करण, पृष्ठ संख्या ३४, मूल्य ०-२-० आने। ये सूचनाएँ नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी के सहायक मंत्री के पत्र पर आधारित हैं, जहाँ यह ग्रंथ सुरक्षित है।

(आ) चारो खंड प्रकाशक जगदीश नारायण तिवारी, १०।ए, मछुआ बाजार स्ट्री कलकत्ता-७ प्रकाशन काल १९४३ ई० (वर्तमान संस्करण पृष्ठ संख्या १९२ मूल्य २-०-, रुपये।_ अवलोकित विवरण। लेखक के निजी संग्रह में उपलब्ध, जिसे पं० परशुरा चतुर्वेदी (बलिया) ने रचयिता के भतीजा पं० श्याम सुन्दर उपाध्याय से प्राप्त कर भेजा है। उपर्युक्त चतुर्थ संस्करण की सामग्रियाँ वर्तमान संस्करण के 'पहला खंड' में सन्निविष्ट हैं। रचयिता ने भोजपुरी रचनाओं को 'बलिया दोआबा की बोली' में लिखा है।

२. बदमाश दर्पण (बनारसी बोली), रच० तेग अली, प्रका० भारत जीवन प्रेस, काशी, प्र० का० सन १८९५ ई० पृ० सं २२ मू ०-१-६ पाई। ये सूचनाएँ ना० प्र० सभा वाराणसी के सहा० मंत्री के पत्र पर आधारित हैं, जहाँ यह ग्रंथ सुरक्षित है।

३. बिरहा (भोजपुरी), राम कृष्ण वर्मा, भारत जीवन प्रेस काशी, सन १९०० ई०, पृ० सं० २६ मू० ०-१-०। ये सूचनाएँ ना० प्र० सभा काशी के सहायक मंत्री के पत्र प आधारित हैं, जहाँ पर ग्रंथ सुरक्षित है।

४. भरती की गीत (भोज०), दूधनाथ उपाध्याय, प्रका० सन १९१४ ई०। डा० उदय नारायण तिवारी ने भोजपुरी भाषा और साहित्य (पटना, १९५४ ई०) पृ० ४१ प लिखा है कि यह छोटी सी पुस्तिका है, जो आज भी उपलब्ध है।

द्वितीय संस्करण, प्रकाशक डिस्ट्रिक्ट असिस्टेन्ट रिक्रुटिङ्ग औफिसर बलिया, प्र० का० १९१८ ई० (५००० प्रति), पृ० १४ मू० ०-०-६ पाई। अवलोकित विवरण। इसे बलिया दोआबा की ठेंठ बोली की रचना कही गयी है। लेखक के निजी संग्रह में उपलब्ध जिसे पं० परशुराम चतुर्वेदी ने पं० श्याम सुन्दर उपाध्याय से प्राप्त कर भेजा है।

५. रघुवीर पत्र पुष्प (हिन्दी भोजपुरी), रच० रघुवीर नारायण (शरण)। यह पुस्तक सन १९१७ ई० के पूर्व का प्रकाशन है, जिसमें कवि का प्रसिद्ध भोजपुरी गी 'बटोहिया' सर्व प्रथम छपा था। अन्य सूचनाएँ उपलब्ध नहीं हो सकीं (श्री दुर्गा शंक प्रसाद सिंह, भोजपुरी के कवि और काव्य, पृ० २१६-१७)।

६. रघुवीर रस रंग हिन्दी भोज० व्रज०), रघुवीर नारायण (शरण), बिहार बु स्टोर, पटना प्र० का० १९१७ ई० पृ० ८८ मूल्य ०-१०-० आने। अवलोकित विवरण। यह पुस्तक मुझे श्री तारकेश्वर प्रसाद मोतिहारी से अवलोकनार्थ प्राप्त हुई है। इस भोजपुरी की रचनाओं के लिए 'प्रान्तिक भाषा में' प्रयुक्त हुआ है। इसमें भोजपुरी के स पदों के अतिरिक्त 'बटोहिया' (पृ० ५५-५७) और विजयी नाटक रामायण (पृ० ६१- दिया हुआ है।

७. मड़ई पलानी (संभवतः हिन्दी भोज०), रघुवीर नारायण (शरण)। इस पुस्त की चर्चा श्री सिद्धेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव ने भोजपुरी लोक साहित्य अंक, पृ० २७ पर की है। अन्य विवरण नहीं मिल सका है।

८. हिलोर (हिन्दी भोजपुरी), महेन्द्र शास्त्री, राहुल पुस्तकालय, पो० रतनपुरा वाया महराजगंज, सारण, १९२८ ई० पृ० ६४ (१) मू० ०-१-० आने। ग्रंथकार से प्राप्त सूचनाओं पर आधारित।

९. ग्राम गीतांजलि (भोजपुरी) रच० चंचरीक i) प्रथम संस्करण, प्रकाशक ठाकुर महातम राव, रेती चौक गोरखपुर, प्र० का० १९३१ ई० (डा० कृष्णदेव उपाध्याय, हिन्दी साहित्य का बृहद् इतिहास, १६ वाँ भाग, १९६० ई० पृ० १६८)

(ii) द्वितीय संस्करण, हितैषी प्रिन्टिंग वर्क्स, बनारस, १९३५, मूल्य १-०-० रुपये। अवलोकित विवरण। यह लेखक के निजी संग्रह में सुरक्षित है।

डा० तिवारी ने लिखा है कि 'कुछ ही वर्षों के भीतर इसके चार संस्करण हो गये हैं' (भो० भा० सा० पृ० ५०)। यह 'उत्तर प्रदेश की ग्रामीण बोली' की रचना कही गयी है।

१०. भूकंप पचीसी (भोजपुरी), दूधनाथ उपाध्याय, प्रकाशक रचयिता, मुद्रक प्रभात प्रेस, चौक बलिया, १९५४ ई० (द्वितीय संस्करण) पृ० सं० १० मूल्य ०-०-: पाई। अवलोकित विवरण। पुस्तक लेखक के निजी संग्रह में उपलब्ध है, जिसे पं० परसुराम चतुर्वेदी ने पं० श्याम सुन्दर उपाध्याय से प्राप्त कर भेजा है।

११. गुनगुन (हिन्दी-भोज०), मनोरंजन प्रसाद सिंह, पुस्तक भंडार लहेरिया सराय, १९३७ ई० पृ० १४० मू० ०-१२-० आने। अवलोकित विवरण। नवयुवक पुस्तकालय, मोतिहारी में सुरक्षित। इसमें 'काशी वर्णन' शीर्षक से पृ० ११७–१९ पर एक भोजपुरी कविता दी हुई है।

१२. केवट अनुराग (हिन्दी भोज०, सिद्धनाथ सहाय विनयी, अम्बिका भवन, मन्सा पांडे का बाग, आरा (श्री दुर्गा शं० प्र० सिंह, भोज० क० का० पृ० २४०)। इस ग्रंथ को मैंने भारतेन्दु साहित्य संघ मोतिहारी के पुस्तकालय में देखा था। इसका प्रकाशन सन् १९४१ ई० के आस-पास हुआ था और पृ० सं० लगभग ६० और मूल्य ०-६-० आने।

१३. द्रौपदी रक्षा हिन्दी-भोज०), सिद्धनाथ सहाय विनयी, प्रकाशक उपर्युक्त; (श्री दु० शं० प्रसाद सिंह, भो० क० का० पृ० २४०)। अन्य सूचनाएँ उपलब्ध नहीं हो सकीं।

१४. धरती के गीत (लोक भाषा कविता संग्रह), संपादक रमेश चन्द्र सिन्हा जन प्रकाशन गृह, राज भवन, स्टैण्डहर्स्ट रोड, बंबई-४, पृ० सं० ७४ मू० ०-१२-० आने। इसमें पृष्ठ संख्या ५२ से ५८ तक भोजपुरी कविताएँ हैं। अवलोकित विवरण और लेखक के निजी संग्रह में सुरक्षित।

१५. देहाती दुलकी (भोजपुरी, श्याम बिहारी तिवारी 'देहाती' देहाती दुनियाँ, बेतिया चंपारण सन १९४७ ई० पृ० ४० मू० ०-४-० आने। अवलोकित विवरण। यह पुस्तक श्री रमेश चन्द्र झा (सुगौली) से अवलोकनार्थ प्राप्त हुई है। डा० उपाध्याय ने इसे तीन भागों में प्रकाशित बतलाया है, जो तथ्यहीन है। हि० सा० बृ० इति १६ वाँ भाग पृ० १६८)।

१६. आज की आवाज (हिन्दी-भोजपुरी), महेन्द्र शास्त्री, राहुल पुस्तकालय, पोस्ट रतनपुरा वाया महाराजगंज (सारण) १९४७ ई० पृ० सं० ७६ मू० ०-८-० सूचनाएँ ग्रन्थकार से प्राप्त।

१७. सरजू क बाढ़ (भोजपुरी), चन्द्रदेव सिंह 'हृदय' प्र० का० १९४८ ई०। संभवत: यह छोटी सी पुस्तिका है, जिसकी चर्चा श्री राहगीर ने 'आधुनिक भोजपुरी गी और गीतकार' पृ० ९५ पर की है।

१८. तिरंगा (भोजपुरी), महेश्वर प्रसाद, प्रकाशक रचयिता, ग्रा० पो० भरौली, शाहाबाद। प्र० का० १९५० ई० (सं० २००० वि०), पृ० १८ मूल्य नहीं लिखा है। अवलोकित विवरण।

१९. अमरलत्ती (भोज०), अर्जुन कुमार सिंह 'अशांत' अशोक प्रेस, पटना, १९५० ई० पृ० सं० १०० मू० ०-१२-०। प्रकाशक से प्राप्त सूचनाओं पर आधारित।

२० गाँव के ओर (भोजपुरी), राम वचन द्विवेदी 'अरविन्द', सुलभ साहित्य सदन पट १९५१ ई० (सं० २००८ वि०) प्रथम संस्करण पृ० सं० ७० मू० ०-८-०, द्वितीय परिवर्द्धि ० सन १९६३ ई० पृ० ११२ मू० २-०-० रुपये। अवलोकित विवरण। भोजपु परिवार, पटना के पुस्तकालय में दोनों संस्करण उपलब्ध हैं।

२१. कोइलिया (भोज०), राम नाथ पाठक प्रणयी, जनवाणी प्रेस ऐण्ड पब्लिकेश लि० गोदौलिया, काशी, १९५२ पृ० सं० ११५ मूल्य २-०-० रुपये। ग्रन्थकार से प्रा सूचनाओं पर आधारित।

२२. सितार (भोज०) राम नाथ पाठक प्रणयी, देववाणी मंदिर आरा, सन १९५ ई० पृ० सं० ११७ मूल्य २-०-०। ग्रंथकार से प्राप्त सूचनाओं पर आधारित।

२३. चांदनी (हिन्दी-भोज०) सरयू सिंह 'सुन्दर', सुन्दर सदन, राम नगर, चंपारण, सन १९५३ ई० पृ० सं० ४५ मूल्य १-४-०। अवलोकित विवरण। इसमें केवल ए भोजपुरी कविता 'फगुनी अँजोरिया' पृ० ६-७ पर दी गयी है। *

२४. बिनिया बिछिया (भोज०), राम विचार पाण्डेय, भोजपुरी पुस्तक भव बलिया, १९५४ ई० (सं० २०११ वि०) पृ० सं ४४ मूल्य ०-१२-० आने। अवलोकि विवरण। ये सूचनाएँ सन १९५६ ई० के द्वितीय संस्करण से संकलित हैं। *

२५. चोखा (भोज०), महेन्द्र शास्त्री, राहुल पुस्तकालय, रतनपुरा वाया महारा गंज, सारन, सन १९५४ ई०, पृ० सं० ४४ (?) मूल्य ०-४-० आने। रचयिता प्राप्त सूचनाओं पर आधारित।

२६. मधुवन (भोज०), कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र', भोजपुरी साहित्य मंडल, बक्सर, सन १९५४ ई० (सं० २०११ वि०) पृ० सं० ९० मूल्य ९ आ०। अवलोकित विवरण।*

२७. उदयन (हिन्दी-भोज०), रामदेव द्विवेदी 'अलमस्त' चाणक्य प्रकाशन, पटना, १९५५ ई० पृ० सं० ८० मूल्य १-०-० रुपया। अवलोकित विवरण। *

२८. भोजपुरी वीर काव्य (भोज०) प्रसिद्ध नारायण सिंह, अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन मंड नयाटोला, पटना, सन १९५५ ई० पृ० सं० १४० मूल्य २-०-०। मासिक भोजपुरी प्रकाशित समालोचना एवं सुगौली (चंपारण) के श्री विन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव से प्रा सूचनाओं पर आधारित।

२९. चंपारण गुनगान (भोज०, व्रज बिहारी प्रसाद 'चूर', प्रकाशक रचयिता, रा नगर, चंपारण, सन १९५५ ई० पृ० सं० १६ मूल्य ०-३-०। अवलोकित विवरण। श्री ज्वाला प्रसाद श्रीवास्तव, मोतिहारी ने रचयिता से इसे प्राप्त कर मेरे पास भेजा है।

३०. पुरइन के फूल (भोज०) रामनाथ पाठक प्रणयी, देववाणी मंदिर, आरा, स

१९५५ ई० पृ० सं० ५५ मूल्य १-८-०। अवलोकित विवरण। भोजपुरी परिवार, पटना के पुस्तकालय में संकलित।

३१. चकोह (भोज०) दिवाकर लाल 'अंकुर', प्रकाशक महेशमिश्र, मिश्रा प्रकाशन मंदिर, शुभनपट्टी, बलिया, १९५६ ई० पृ० ३२ मूल्य ०-६-० आने। विवरण चतुर्थ संस्करण (१९६३ ई०) से दिया गया है। इसका प्रथम संस्करण मुजफ्फरपुर में छपा था, शेष बनारस में। सूचनाएँ रचयिता के पत्र पर आधारित हैं।

३२. आसा (भोजपुरी), राम विचार पाण्डेय, भोजपुरी साहित्य भवन, बलिया, १९५६ ई० (सं० २०१३ वि० पृ० सं० ६२ मूल्य ०-१२-०। अवलोकित विवरण। *

३३. जीवन गीत (भोज०, राम विचार पाण्डेय, भोजपुरी पुस्तक भवन, बलिया, स० १९५७ ई० पृ० सं० ४८ मूल्म ०-१२-०। अवलोकित विवरण। *

३४. वीर बबू कुँअर सिंह (भोज०), कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र', भोजपुरी साहित्य मंडल, बक्सर, सन १९४७ ई० पृ० ४८ मूल्य १-०-०। अवलोकित विवरण। *

३५. भोजपुर के रतन (भोज०), बालेश्वर राम, भोजपुरी साहित्य परिषद, १ गुलमुरी बाजार, जमशेदपुर ३, स० १९४७ ई०, पृ० ३२, मूल्य ०-४-०। अवलोकित विवरण। *

३६. चंपारन के गीत (भोज०), बलदेव प्रसाद श्रीवास्तव, भारतेन्दु प्रकाशन मोतिहारी सन १९५७ ई० पृ० सं० २२ मूल्य ०-८-०। अवलोकित विवरण। *

३७. कुँअर सिंह (भोज०), रच० हरेन्द्र देव नारायण, सन १९५७ ई० में आरा से प्रकाशित। भोजपुरी, जुलाई, अगस्त १९५८ ई० पृ० ३९५ पर प्रकाशित समालोचना पर आधारित।

३८. गाँव-गिरान (भोज०), रच० शिवदत्त श्रीवास्तव 'सुमित्र'। सम्भवत: यह छोटी सी पुस्तिका है, जिसकी चर्चा श्री राहगीर ने आधुनिक भोजपुरी के गीत और गीतकार' पृ० ३२ पर की है। अन्य सूचनाएँ उपलब्ध नहीं हो सकीं।

३९. विकास (भोज०), कुन्नी लाल, प्रकाशक रचयिता, ग्रा० पो० नाचाप, शाहाबाद, १९५८ ई० सं० २०१५ वि०) पृ० १३ मूल्य ०-६-०। अवलोकित विवरण। लेखक के निजी संग्रह में उपलब्ध।

४०. हरिअर हरिअर खेत में (भोज०), प्रभुनाथ मिश्र, विहान प्रकाशन, बलिया, स० १९५९ ई० पृ० १०३ मू० १-८-०। अवलोकित विवरण। *

४१. गाँउ-गिराउँ हिन्दी-अवधी-भोजपुरी, राजबली दुबे तरल प्रका० आनन्द बहादुर सिंह, तुलसी पुस्तकालय, भदैनी वाराणसी, सन १९५९ ई० सं० २०१६ वि०) पृ० सं० ७६ मूल्य १-४-०। अवलोकित विवरण। *

४२. महुआ बारी भोज०), मोती बी० ए०, शर्मा ब्रदर्स, लूकरगंज इलाहाबाद, स० १९५५ ई० पृ० सं० ८४ मूल्य ३-८-०। ग्रन्थकार एवं प्रकाशक से प्राप्त सूचनाओं पर आधारित।

४३. गुनावन भोज०, दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह नाथ', नवसाहित्य प्रकाशन मंदिर, दलीप पुर, शाहाबाद, सन १९६० ई० पृ० सं० ११४ मूल्य ३-०-०। अवलोकित विवरण। इसमें पदों की हिन्दी एवं अँग्रेजी टीका दी हुई है। *

४४ एटम के युग में (भोज०), दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह 'नाथ', अखिल भारतीय

भोजपुरी सम्मेलन, बक्सर, सन् १९६० ई०, पृ० २७ मू० ०-१२-० आने। अवलोकित विवरण। *

४५ राहीं (भोज०) माधव पाण्डेय 'निर्मल', सन्मुखा प्रकाशन (आरा) शाहाबाद, सन् १९६० ई०, पृ० सं० ३८, मू० ०-१२-० । अवलोकित विवरण। भोजपुरी परिवार, पटना के पुस्तकालय में उपलब्ध।

४६ संगम (हिन्दी भोज०), जगदीश ओझा 'सुन्दर', विद्या मंदिर, बलिया, सन् १९६१ ई० पृ० सं० १३६ मू० २-०० रुपये। अवलोकित विवरण। इसमें पृ० ७३ से १३६ तक भोजपुरी की ३७ कविताएँ हैं। *

४७ ललकी किरिनियाँ के कोर (हिन्दी-भोज०), गजानन प्रसाद, जन सम्पर्क विभाग, बिहार, पटना, पृ० सं० ३६ मू० ०-४-आने। अवलोकित विवरण। भोजपुरी परिवार, पटना के पुस्तकालय में उपलब्ध।

४८ धरती के गुहार (भोज०) संपादक उमाकान्त वर्मा भारतीय जन नाट्य संघ हाजीपुर सन् १९६२ ई० (?) पृ० सं १२ मूल्य-२-० अवलोकित विवरण। *

४९ ललकार (हिन्दी-उर्दू-भोज०) संपादक रघुवंश नारायण सिंह, भोजपुरी-कार्यालय, आरा, सन्१९६२ ई० पृ० सं० ४८ मू०-४-० आने। अवलोकित विवरण भोजपुरी परिवार, पटना के पुस्तकाल में उपलब्ध।

५० झुरुकि बहे ना (भोज०), रामवृक्ष राय 'विधुर' अन्तर्ग्रामीय सुहृद साहित्य गोष्ठी, गाजीपुर, बलिया, सन् १९६२ ई० पृ० सं० ५० मुल्य १-०-० । अवलोकित विवरण। 'भोजपुरी परिवार' पटना के पुस्तकालय में उपलब्ध।

५१ समय की पुकार (हिन्दी-भो०) त्रिलोकी नाथ उपाध्याय, प्रकाशक रचयिता, भड़सार, सहजनवा, गोरखपुर, १९६२ ई० पृ० १८ मूल्य ०-४-० । अवलोकित विवरण। लेखक के निजी संग्रह में उपलब्ध।

५२ वतन का तराना (हिन्दी-भोज०) बलदेव प्रसाद श्रीवास्तव, प्रकाशक रचयिता, मोतिहारी, सन् १९६२ ई० पृ० सं०, मू० १ आ० ६ पाई अवलोकित विवरण। इसमें पृ० ७-८ पर एक भोजपुरी कविता है। *

५३ रुक जा बदरा (भोज०) मधुकर सिंह, यशदा प्रकाशन, आरा, सन् १९६३ ई० पृ० सं० ५६ मूल्म १-०-० । अवलोकित विवरण। भोजपुरी परिवार, पटना के पुस्तकालय में उपलब्ध।

५४ हिमालय ना झुकी कबहूँ (भो०) मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध' (चतुरी चाचा), हिन्दी परिषद, आशापुर, चितबड़ागाँव, बलिया, सन् १९६३ ई०, पृ० सं० ६४ मू० १-०-० अवलोकित वित्ररण। भोजपरी परिवार, पटना के पुस्तकालय में उपलब्ध।

५५ धोखा (हिन्दी-भोज०), महेन्द्र शास्त्री, राहुल पुस्तकालय, पो० रतनपुरा वाया महाराजगंज, सारन, सन् १९६३ ई०, पृ० सं० ३२ मूल्य ०-४-० । ग्रंथकार से प्राप्त सूचनाओं पर आधारित।

५६ गोड़ लागि मैया नारायणी (हिन्दी-भोज० ?), प्रका० जन सम्पर्क विभाग बिहार, पटना, सन १९६३ ई० (?) मू० ०-४-० । 'उपयोगी सूचनाएँ' पटना जुलाई अगस्त' ६३ पृ० १६ पर विज्ञापित।

५७ बेलपत्तर (भो०), गणपति पाण्डेय 'संकेत'। भोजपुरी के नये गीत और गीतकार, पृ० १३ पर उल्लिखित।

५८ भोकास (भो०), रामकुमार त्रिपाठी, प्र० ग्रंथकार, ठठेरी बाजार, डुमरॉंव (शाहाबाद, प्र० सं०, सं० २०१३ वि० पृ० ७४, मू० ६४ नये पैसे। श्री अरविन्द जी से प्राप्त सूचनाओं पर आधारित।

ख. भोजपुरी की कविताओं के हिन्दी संग्रह

१ भोजपुरी के कवि और काव्य, ग्रंथकार, दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह, सं० डा० विश्वनाथ प्रसाद, प्रकाशक विहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना सन १९५८ ई० पृ० सं० ३१६ मूल्य ५-१२। अवलोकित विवरण। *

२ आधुनिक भोजपुरी गीत और गीतकार, सं० राहगीर, मधु प्रकाशन, चेत गंज वाराणसी, १९५८ ई० पृ० सं० १२५ मूल्य ३-८-०। अवलोकित विवरण। यह पुस्तक सुगौली के रमेश चन्द्र झा से मुझे अवलोकनार्थ मिली है।

३ भोजपुरी के नये गीत और गीतकार, सं० राहगीर, उदय प्रकाशन, वाराणसी, सन १९६३ ई० पृ० १५६ मू० ६ रु० ५० नये पैसे भोजपुरी परिवार के पुस्तकालय में उपलब्ध अवलोकित विवरण।

ग. संगीत

१ सुधाबून्द (हिन्दी-ब्रज-भाषा भोजपुरी) रचयिता लाला खग वहादुर मल्ल, खड्गविलास प्रेस, बांकीपुर सन १८८२ ई० डा० ग्रियर्सन ने इसका प्रकाशन काल सन १८८४ ई० दिया है। किन्तु मैंने श्री दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह के पास इसकी एक प्रतिलिपि देखी है जिससे प्रकाशन काल दिया गया है। इसमें ६० कजलियाँ हैं।

२ महेन्द्र मंगल, प्रथम भाग (हिन्दी-भोजपुरी), महेन्द्र मिश्र, प्रकाशक त्रिगुनानंद मिश्र जमींदार. छपरा, मू० ०-२-६। मैंने इस पुस्तक की एक प्रतिलिपि श्री दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह के पास देखी है। ग्रंथ का प्रकाशन संभवतः १९२० ई० के पूर्व हुआ था।

घ नाटक

१ देवाक्षर चरित (हिन्दी-भोजपुरी), रविदत्त शुक्ल, आर्यदेशोपकारी सभा बलिया, प्रकाशन का० १८८४ ई०। यह पुस्तक नागरी प्रचारिणी सभा, काशी में सुरक्षित है और सूचनाएँ वहाँ के सहायक मंत्री के पत्र पर आधारित है।

२ नागरी विलाप (हिन्दी-भोज० राम गरीब चौबे, प्रकाशक ग्रंथकार, राजकीय पाठशाला, काशी, सन १८८५ ई० पृ० सं ३२ मू० २ आना ६ पाई। यह पुस्तक नागरी प्रचारिणी सभा काशी में सुरक्षित है और सूचनाएँ सभा के सहायक मंत्री के पत्र पर आधारित है।

३ जंगल में मंगल (संभवत: हिन्दी-भोज०) स्व० रविदत्तशुक्ल। सन १८८६ ई० में बनारस से प्रकाशित। सूचनाएँ डा० ग्रियर्सन के लिंग्विष्टिक सर्वे ओफ इन्डिया जिल्द ५ भाग २ पर आधारित है। यह पुस्तक नागरी प्रचारिणी सभा काशी के पुस्तकालय में भी नहीं है।

४ नइकी दुनिया (भोज०) रचयिता राहुल सांस्कृत्यायन प्रकाशक किताब महल इलाहाबाद, पृ० सं० ४०। यह द्वितीय महायुद्ध के अवसर पर लिखा गया एक नाटक है,

जिसकी चर्चा डा० उदय नारायण, तिवारी ने अपने ग्रंथ 'भोजपुरी भाषा और साहित्य' के पृ० ६१ पर की है।

५ ढुनमुन नेता (भोज०), राहुल सांकृत्यायन, पृ० सं० ४४। अन्य सूचनाएँ उपरिवत्।

६ मेहरारुन के दुर्दशा (भोज०) राहुल सांकृ०, पृ० सं० ४०। अन्य सूचनाएँ उपरिवत्।

७ जोंक (भो०) राहुल सांकृ०, पृ० सं० ४१, प्र० का० १९४२ ई०। अन्य सूचनाएँ उपरिवत्।

८ ई हमार लड़ाई ह (भोज०) राहुल सांकृ०। इस ग्रंथ की पृष्ठ संख्या तिवारी जी ने अपनी पुस्तक में नहीं दी है। अन्य सूचनाएँ उपरिवत्।

९. देश रक्षक (भोज०), राहुल सांकृ०, पृ० सं० ३४। अन्य सूचनाएँ उपरिवत्।

१०. जपनिया राछछ (भोज०), राहुल सांकृ०, पृ० सं० २८, प्र० का० १९४२ ई०। अन्य सूचनाएँ उपरिवत।

११. जरमनवा के हार निहचय (भोज०), राहुल सांकृ० प्र० का० १९४२ ई० अन्य सूचनाएँ उपरिवत्। राहुल जी के नाटकों की चर्चा करते हुए प्रि० मनोरंजन प्रसाद सिंह ने लिखा है कि उनके छोटे छोटे नाटक छपरा के साहित्य प्रेस से छपे थे, जिनमें 'जरमनवा के हार निहचय' उनके पासहै, (अंजोर' अप्रील-जुलाई १९६३ पृ० १५)। मेरे प्रयास करने पर भी इस सम्बन्ध में किसी सूत्र से मुझे कोई अतिरिक्त सूचना नहीं मिल सकी।

१२. उल्टा जमाना (भोज०', गोरख नाथ चौबे, सत्ययुग आश्रम बहादुर गंज, इलाहाबाद, प्र० का० १९४२-४३ ई० (डा० तिवारी, भो० भा० सा० पृ० ६५।

१३. (अ) लोहासिंह (भोज), रामेश्वर सिंह काश्यप, ग्रन्थमाला कार्यालय, बाँकीपुर, पटना, प्र० का० १९५५ ई०, मूल्य २-४-० आने। ये सूचनाएँ 'भोजपुरी' अगस्त १९५५ के आवरण पर प्रकाशित विज्ञापन पर आधारित हैं।

(आ) लोहा सिंह, मुरब्बे और अन्य करतूत (सम्भवतः द्वितीय संस्करण), राष्ट्रीय प्रकाशन मंडल, मछुआ टोली पटना, प्र० का० १९६३ (?) पृ० सं० १५२ मूल्य ३-०-० प्रकाशक से प्राप्त सूचनाओं पर आधारित।

१४. बीर मंगल पाँड़े (भोज०), कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र', भोजपुरी साहित्य मंडल बक्सर, प्र० का० १९५६ ई० (२०१३ वि०) पृ० सं० २९ मूल्य ०-८-०। अवलोकित विवरण। *

१५. मोती के घवद भोज०', ग्रन्थकार एवं प्रकाशक उपयुक्त, प्र० का० १९५७ ई० (सं० २०१५ वि०, पृ० सं० ४३ मूल्य ०-१२-०। अवलोकित विवरण। इसमें दो एकांकी सम्मिलित हैं। *

१६. तीन नाटक (भोज०), राहुल सांकृत्यायन, किताब महल इलाहाबाद, प्र० का० १९५८ ई० मूल्य १-१२-०। इसमें राहुल जी की 'नइकी दुनियाँ' जोंक और 'मेहरारुन के दुरदसा' सम्मिलित हैं। प्रकाशक से प्राप्त सूचनाओं पर आधारित।

१७. बृक्ष रक्षा सम्मेलन (भोज) बलदेव प्रसाद श्रीवास्तव, भारतेन्दु प्रकाशन मोतिहारी १९६४ ई० पृ० सं० १४ मूल्य १-८-०। इस गीत रूपक में पृ० १४ पर बारहमासा शीर्षक से एक भोजपुरी गीत दिया हुआ है। अवलोकित विवरण। *

१८. शहीद मंगल पाँड़े (भोज०) राम विचार पाण्डेय भोजपुरी साहित्य सदन बलिया, प्रकाशन १९६० ई० पृ० सं० ३६ मूल्य १-१२-०। अवलोकित विवरण। भोजपुरी साहित्य के इतिहासकारों ने ग्रन्थकार के 'कुंअर सिंह' नाटक के प्रकाशन की चर्चा की है, जो भ्रामक है।

१९ रास लीला (भोज०), मोती बी० ए०, मेसर्स शर्मा ब्रदर्स, प्रकाशन १९६० ई० पृ० सं० २८ मूल्य १-०-० पुस्तक सचित्र है। अवलोकित विवरण।

२० बाबू कुँअर सिंह (भोज०) दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह, विद्या भवन, पटना, १९६२ ई० पृ० सं० १२६ मूल्य ३-१२-०। अवलोकित विवरण।

२१ नया जमाना (भोज०), शिवचन्द्र ओझा, साहित्य सहकार, लहेरियासराय, दरभंगा, सं० १९६३ ई० पृ० सं० १५ मूल्य ०-८-०। अवलोकित विवरण। भोजपुरी परिवार, पटना के पुस्तकालय में उपलब्ध।

च अनूदित नाटक

१ (क) स्वप्नवासवदत्ताम् (भोज०), देवकुमार मिश्र 'अलमस्त', रामानन्द पुस्तकालय, हेतमपुर, शाहाबाद, सन १९६३ ई०, पृ० सं० ५८ मूल्य १-०-०। अवलोकित विवरण।

(ख) योजना नाटिका (भोज०) शिवचन्द्र ओझा बी० ए० बी० एल० प्रकाशक साहित्य सहकार, लहेरियासराय, दरभंगा पृष्ठ १५ मू० ५० न० प० भो० प० प० के पुस्तकालय में उपलब्ध।

छ उपन्यास

१ बिन्दिया (भोज०), राम नाथ पाण्डेय, शेखर प्रकाशन, रतनपुरा, छपरा, स० १९५६ ई०, पृ० सं० १२० मूल्य १-८-०। अवलोकित विवरण।

ज कहानी

१ जेहल क सनदि (भोज०), अवध विहारी 'सुमन' (अब स्वामी विमलानन्द सरस्वती), मुद्रक नया विहार प्रेस, कदम कुआँ, पटना, प्र० का० १९४८ ई०। सूचनाएँ डा० तिवारी के भो० भा० सा० पृ० ५८ और डा० उपाध्याय, हि० सा० बृ० इति १६वाँ भाग, पृ० १५६ से ली गयी हैं।

२ भोजपुरी कहानी संग्रह (भोज०), संपा० चन्द्रभूषण सिन्हा, भोजपुरी साहित्य रिषद, १ गुलमुरी बाजार, जमशेदपुर ३, स० १९६२ ई० सं० ९६ मूल्य १-०-०। अवलोकित विवरण।

झ रेखाचित्र

१ सुरतिया ना बिसरे (भोज०), रसिकविहारी ओझा 'निर्भीक', भोजपुरी साहित्य रिषद, १ गुलमुरी बाजार, जमशेदपुर ३- मुद्रक विहान प्रेस बलिया, स० १९६३ ई० ृ० सं० १०० मूल्य १-०-०। ग्रंथकार से प्राप्त सूचनाओं पर आधारित।

ट निबन्ध

१ चतुरी चाचा की चटपटी चिट्ठियाँ भाग (१) भोज०) गद्य), मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध' (चतुरी चाचा), मेसर्स शर्मा ब्रदर्स, १३२ लूकरगंज इलाहाबाद, १९५७ ई०, पृ० सं० १९३ मूल्य ४-०-०। ग्रन्थकार एवं प्रकाशक से प्राप्त सूचनाओं पर आधारित।

२ चतुरी चाचा की चटपटी चिट्ठयाँ भाग २, ग्रन्थकार एवं प्रकाशक उपर्युक्त, सन १९५८ ई० पृ० सं० २६६ मूल्य ४-०-०। ग्रन्थकार एवं प्रकाशक से प्राप्त सूचनाओं पर आधारित।

३ भोजपुरी संगम (भोज० गद्य एवं पद्य संग्रह), संपादक चन्द्रभूषण सिन्हा. प्रका० भोजपुरी साहित्य परिषद, गुलमुरी बाजार, जमशेदपुर-३, प्राप्ति स्थान-प्रो० बच्चन पाठक 'सलिल', करीम सिटी कौलेज, जमशेद पुर, १९६१ ई० पृ० सं० ८२ मूल्य १-०-०। विविध लेखकों एवं कवियों की रचनाओं का संग्रह। अवलोकित विवरण।

ठ कोष

१ भोजपुरी शब्दकोष (भोज० हिन्दी), मिस एल० सेन्ट जौसेफ मिशन हाउस, मोतिहारी, १९४० ई० (१), पृ० सं० २८ मूल्य ०-८-० आने। अवलोकित विवरण। लेखक के निजी संग्रह में सुरक्षित।

ड लोक साहित्य के संपादित संग्रह

१ भोजपुरी ग्राम्य गीत, डबलू जी० आर्चर तथा संकटा प्रसाद, मुद्रक पटना लॉ प्रेस पटना, प्राप्तिस्थान विहार रिसर्च सोसायटी, पटना, सन १९४३ ई० पृ० सं० २१० मूल्य ४-०-०। अवलोकित विवरण। लेखक के निजी संग्रह में उपलब्ध।

२ भोजपुरी ग्राम गीत प्रथम भाग, कृष्णदेव उपाध्याय, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग. १९४३ ई०, पृ० सं० ३९८ मूल्य ४-८-०। अवलोकित विवरण। लेखक के निजी संग्रह में उपलब्ध।

३ भोजपुरी ग्राम-गीत, द्वितीय भाग, रचयिता एवं प्रकाशक उपर्युक्त सन १९४८ ई० (सं० २००४ वि०) पृ० सं ५४४ मूल्य ११-०-०। अवलोकित विवरण। लेखक के निजी संग्रह में उपलब्ध।

४ भोजपुरी लोकगीतों में करुण रस, दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह, प्रकाशक हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, स० १९४४ ई० (सं० २००१ वि०) पृ० सं० ४९६ मूल्य ६-०-०। अवलोकित विवरण। लेखक के निजी संग्रह में उपलब्ध।

५ लालच जीव के जवाल (भोजपुरी लोककथा एवं संग्रह), जगदीश भगवती प्रकाश शास्त्री पुस्तक भंडार, पटना, स० १९५५ ई० पृ० सं० ११२ मूल्य १-१२-०। अवलोकित विवरण। लेखक के निजी संग्रह में उपलब्ध।

लोक कथा

टिपटिपवा

—स्वामी विमलानन्द सरस्वती

एगो चमार रहे। ऊ गइल पहाड़ पर चाम सरावे खातिर हरें-बहेरा क पतई ले आवे। पहाड़ पर जात खानि डहरी में भारी बन परल। एगो बाघ चुआड़ में पानी पीये उतरल रहे। ऊ चमार भाई के डहरी में छेंकलसि। ऊ पूछलसि कि तू के हउवे? चमार कहलसि जे बाबूजी हम मोची हईं। रउआ गोड़ क पनही बनाईं ला। बाघ कहलन कि हमरो गोड़क पनही बनइबे? चमार भाई त डरे सटक रहलनि। ऊ कहलन कि हँ बाबूजी बनाईं के ले आइत्रि? चमरा जब घरे आइल त फेर डरे ओने गइबे ना कइल। जब ऊ डरे ना गइल त बघवा बड़ा खिसियाइल आ पता लगावत-लगावत एक दिन राति के ओकरा के धरे खातिर ओकरा घरे पहुँचल।

ओह दिन माघ क बदरी रहे आ टिप-टिप बुन्नी परत रहे। अपसि के चमरटोली में चमारन का पिछवाड़ा रेंड़ होला। बाघ ओही रेंड़वारी में जाइके छपकल रहे। चमार-चमाइनि राति का बेरा अपना घर में सूतल रहलनि स। पिछवारा जब खुर खुराय त चमइनियाँ कहे कि देखत काहे नइँख हो कि का खुरखुरात बा? तब चमरा कहलसि कि न हमरा बघवा क डर न सिंघवे क बा। बघवा छपकले छपकल कुल्हि सुनत रहल। ऊ बड़ा सोच में परल कि ए भाई कवन अइसन जनावर बा कि ई कहत बा जे -'न बघवा क डर न सिंघवे क डर, हमरा डर टिपटिपवा क'?

तबले एही बीच में धोबिया क गदहा भुलाइल।
ऊ जोहत जोहत पहुँचल चमरटोली।

ए बनारसी भाई हमार गदहा भुलाइल बा देखल (अ) ह? तब चमार घर मेंले सुतले सुतल कहत बा कि भाई देख ना हमरा पिछवरवा कवे ले का त खुरखुरात रहल हउवे। टिपटिपवा का डरे ना उठलीं हउँवीं। रेंड़वरिया में देखिह भाई।

धोबिया बोलल—चुप! चुप!! हल्ला मति कर (अ)। आ ऊ चुप्पे चुप्पे पाछे ले गइल। ओह अन्हार में गोड़ो तर का ना सूझत रहे। ऊ पाछे ले कुदि के बाघ का पीठी पर चढ़ि गइल। चढ़ते चढ़त एक डंटा ओकरा मुँहे पर मरलसि।

बघवा जनलसि कि बुझाता इहे टिपटिपवा आइल। डंटा क घाव लागते ऊ जीव लेइ के चलल पराईं। बघवा जइसहीं सरेहि का ओर भागे तइसहीं धोबिया मुँहेमुँह मारत जाय कि गदहवा घर का ओर फिरें। कुछ दूर जात-जात अँजोर होखे लागल। धोबिया देखलसि कि ए दादा! ई त बाघ ह।

तबले एतने में एगो बर क फेंड़ परल। ओही फेंड़ क एगो लटकलि डाढ़ि धइके धोबिया फेंड़ पर चढ़ि गइल। फेंड़ में एगो खोंढ़रा रहे। धोबिया डर का मारे लुका के ओही में बइठल।

एने बाघ त जंगल का ओर पराइल जात रहे। तवले राह में ओकरा एगो सियार से भेंट भइल। सियार पुछलन कि कहवाँ जात बाड़ बाघ भाई? बाघ कहलन कि का पुछले बाड़ भाई टिपटिपवा मारि के मुँहे बिगारि दिहलसि। तव सियार कहलन कि चल देखाव भाई कहँवा बा? बाघ डेराते डेरात बरका फेंड़तर अइलन। सियार के फरके ले खोंढ़रा देखाइके कहलन कि ओही में बा तूँ ही देख (अ) हम ना आइबि। तब सियार बाघ का पीठि पर चढ़ि के खोंढ़रा का निचिला छेद पड़े पोंछि डालि के देखे लगलनि। तवले धोबिया कसि के पोंछिये धइलिहलसि। सियार जइसहीं कँइ दे कइलन तबले बाघ चललनि पराइ। अब सियार कटहर निग़र लटकि गइलन। एने धोबिया अइसन जोर भर खिचलसि कि उनकर पोंछिये कबरी गइलि। सियारो भागि के जंगल धइलन। जंगल में बाघ आ सियार दूनों जाना का भेंट भइल। सियार कहलन कि बाघ भाई तू त बड़ा धोखा दिहल अ। ई टिपटिपबा ना ह ई त पोंछिकबार ह। देखते बाड़ कि हमार पोंछि कबार लिहलसि। दूनों जाना का सरबर होत देखि के एगो खेखरि अपना मानि मेले रक-झक सुनि पंजरा आ गइलि। ऊ सियार आ बाघ दूनों जाना पर बड़ा बिगड़लि। कहलसि जे चल (अ)जा हम देखीं त का हउवे? जात जात तीनों जाना बर का फेंड़ किहें पहुँचलन। सियार त सजगे रहलन। बाकी खेखरि बाघ का पीठि पर चढ़ि के खोंढ़रा में हाथ डालि के देखे लगली। तवले धोबिया का पास छूरी रहे। ऊ छूरी से खेखरि क हाथे काटि लिहलसि बाघ आ सियार त पहिलहीं ले सजग रहलन जा। ऊ लोग खेखरि का किंकियाते चलल पराइ। खेखरियो किंकियात गिरत कइसहूँ जीव लेइके पराइलि।

फेर तीनों जाना का जंगल में भेंट भइल। खेखरि कहे लगली कि भाई तोहन लोग त बड़ा धोखा दिहल (अ) जा। ई न त टिपटिपवा ह न पोंछिकबार ई त पहथकाट ह।

बस बाघ भगलन टिपटिपवा का डरे। सियार भगलन पोंछिकवार का डरे। खेखरि भगली पहथकाट का डरे। एने बिहान हो गइल आ धोबी जीव लेइ के अपना घरे अइलन।

भोजपुरी शब्द-कोश

१ कोवा—पक्के कटहल की फली ।
२ कोस —मार्ग की लम्बाई का परिमाण । २ मील का एक कोस ।
३ कोसल—अयोध्या नगरी । देश विशेष का नाम ।
४ कोसिला—कौशिल्या राजा दसरथ की पटरानी ।
५ कोसी -- छठ ब्रत का एक विशेष पूजन-विधान जो रात्रि में सम्पन्न होता है ।
६ कोंहइन—कुम्हार की स्त्री । एक कीड़ा विशेष जो मिट्टी का घर बनाता है ।
७ कोंहड़ा—एक प्रकार की तरकारी । आकार गोला बड़ा, पकने पर रंग पीला ।
८ कोंहड़उरी —कोंहड़े और तीसी-मसूर की दाल फेंट कर बनी बड़ी ।
९ कोहनाइल—रूठा हुआ । रूसा हुआ ।
१० कोइबर —कौतुक-गृह । विवाह सम्पन्न हो जाने पर जिस घर में वर-वधू का स्वागत होता है ।
११ कोही— बर्त्तन, नदिया । क्रोधी । "कर कुठार मैं अकरण कोही" ।
१२ कंक—दरिद्र ।
१३ कंकड़—एक प्रकार की सूखी खैनी की बनी तम्बाकू ।
१४ कंचट—एक प्रकार का कान का घाव ।
१५ कंजर—डोरी बेचने वाली जाति ।
१६ कंठी -तुलसी की माला जो गले में धारण की जाती है । माला । सुग्गे की कण्ठी
१७ कंठुली—काठ की छोटी कठवत ।
१८ कंप—हड़कम्प ।
१९ कंसी—एक प्रकार का बाजा, तबला-सारंगी के साथ बजाया जाने वाला ।
२० खँइक—लकड़ी या बाँस का अत्यन्त पतला टुकड़ा जो आसानी से शरीर में चुभ जाय ।
२१ खँइची (छँइटी)—बाँस की पतीलियों से बना सामान ढोने का पात्र ।
२२ खइनी—सुर्ती, तंबाकू ।
२३ खइनिहा—सुर्ती सेवन करनेवाला ।
२४ खइनिहार—खानेवाला ।
२५ खउँजाह—बीमार ।
२६ खउफ—खौफ, डर ।
२७ खउर, खउरा—पशुओं के खुर का रोग । कुत्तों का रोग विशेष ।
२८ खउराखापट—अत्यन्त नष्ट भ्रष्ट हो जाने की स्थिति ।
२९ खउराइल— वि.) खउरा रोग से ग्रस्त । (क्रिया) बुरी तरह से बिखर जाना ।
३० खउराह—खउरा रोगवाला ।
३१ खएका, खाएक—भोजन, कलेवा ।
३२ खँखड़ी—धान या किसी अन्य अन्न का खोंखला भाग ।
३३ खखन—लालसा ।

भोजपुरी मुहावरे

छीलन कइल—किसी चीज की जाँच में निरर्थक नुकाचीनी करना।

छुतिहर भइल—किसी व्यक्ति का जातिच्युत होना। किसी पात्र का अपवि
होना।

टाट उलटल—दिवालिया हो जाना। रहस्य खुल जाना।

टाट परल—पंचायत की बैठक होना। जमाव।

टाट पर बखिया चलावल—भद्दी वस्तु को व्यर्थ सजाने की चेष्टा करना।

टिपुना चुआवल—रूठ जाना। जरा सी बात में पिनक जाना।

टेंटि कइल—बेइमानी करना।

टेंट ढीला भइल—द्रव्य की कमी होना।

टेंट खुलल—खर्च करने में हिचकिचाहट न होना।

टुकरा खाइल—किसी के दिये हुए अन्न वस्त्र से अपना जीवन-निर्वाह करना।

टुकरा उगाहल—भिक्षाटन करना।

टोना कइल—मोहित करना। मंत्र या तंत्र बल से किसी का अहित करना।

ठकठेनि कइल—उकसाना।

ठठपाल परल—अत्यन्त द्रव्याभाव होना।

ठनका ठनकल—बिजली चमकना या कौंधना।

ठाठ पलान बान्हल—कार्य्य-संपादन की भूमिका। प्रारम्भिक प्रयत्न करना।

ठेनि बेसाहल—झगड़ा मोल लेना।

ठेहुना से लोर ढारल—कृत्रिम आँसू बहाना। दिखावटी संवेदना प्रकट करना।

ठोकि ठेठा के देखल—सब प्रकार से परीक्षा कर लेना, जाँच लेना।

डागा पिटाइल—डुग डुगी पिटाना। सर्व विदित होना। डंका पिट जाना।

डीठि लगावल—किसी वस्तु पर लालच भरी दृष्टि डालना।

डूबत उतरात रहल—अनिश्चित विचार। किसी तथ्य पर न पहुँचना।

डूबि के पानी पिअल—लोगों की दृष्टि बचाकर अपना स्वार्थ-साधन करना।

डेगा डेगी दिहल—किसी कार्य्य सम्पादन का प्रारंभिक प्रयास। चलने की प्रारम्भि
चेष्टा करना।

डोमघाउज कइल—व्यर्थ का अत्यन्त हो हल्ला मचाना।

डोरी में पिसान बान्हल—अविश्वसनीय कार्य्य होना।

डोरी लागल—सुअवसर प्राप्त होना।

ढकना उठावल—भिक्षा-पात्र उठाना; भिक्षा-वृत्ति अपनाना।

ढंढ कमंडल बान्हल—ढोंग पसारना।

ढढ़नच कइल—व्यर्थ बखेड़ा खड़ा करना।

ढूका लागल—दूसरे के काम को देखने या बात को सुनने के लिए छिपे रहना।

ढोल पीटल—किसी बात को प्रचारित करने के लिए बार-बार और जगह-ज
कहना।

सम्पादक के विचार

'अँजोर' के चउथा बरिस

एह अंक का साथ 'अँजोर' के चउथा बरिस समाप्त हो जाई। स्व० आचार्य शिवपूजन सहाय जी का बैकुण्ठबास कइला का बाद हमनीका तरह तरह के कठिनाई अनुभव करेके परल। उँहाँ का आशीर्वाद से आ 'अँजोर' के शुभ-चिन्तकन का छोह से आपन नाव मझधारो में खेवत अइलीं जा। 'अँजोर' का अँजोर में तनिको कमी ना भइल।

कई बेर एह पत्र के जरिये,भोजपुरी भाइन आ भोजपुरी भाषा भाषी के धेआन एह ओर खीचल गइल कि द्रव्याभाव का कमी से पत्र निकाले में कुछ कठिनाई होता। गाँहक भाई लोग एक बेरि चन्दा देके चुप बैठि गइल। सरकारी सहायता से कतना दिन पत्रिका निकली आ उहो नामे मात्र के। भोजपुरी भाषा के आगे बढ़ावे खातिर बहुत कुछ करे के बा। खाली दू-तीन गो अखबार निकलला से, साल में दूचारि गो भोजपुरी कवि-सम्मेलन कइला से भोजपुरी भाषा के तरक्की ना होई। भाषा साहित्य तैयार करे खातिर पुस्तक प्रकाशन के आवश्यकता बा। साहित्य का हर अँग के भोजपुरी के किताब तैयार हो जाय। व्याकरण, कहानी, कविता, निबन्ध, बाल साहित्य के भी प्रकाशन बहुत जरुरी बा। एकरा ओर छिटपुट प्रयास जहाँ तहाँ हो रहल बा, वाकी उहो,साहित्य के हर अँग के पूरा नइखे करत। भोजपुरी के नामी गिरामी लेखक-कवि लोग चुपचाप बैठल बानी जा। लोकसभा के महत्व आ उपयोग सब केहूं बूझे लागल। हो सकेला लोकभाषा में थोरे दिन में पढ़ाई भी शुरु हो जाय। ओह घरी भोजपुरी क्षेत्र के लड़िकन का मुँह ताके के परी। आगे वाला पीढ़ी हमनी के का कही। द भाषा पढ़े के होआ अभी लागलेबा। एही से भोजपुरी के विद्वानन से हमार अरज वा कि भोजपुरी के तरह तरह के किताब लिखि के भोजपुरी साहित्य के भंडार भरीं।

एह अंक का निकाले में बड़ा देर हो गइल। सरकारी किताब का छापे में पटना के सब प्रेस बाफ़ल रहे। केहू बात सुने पर तैयार ना। हम एकदम अकेला परि गइलीं। साथी लोग से भी कुछ पूरा सहायता ना मिलल। अभागवस जनवरी आ फरवरी में बेमारी पड़ि गइलीं। चारु ओर से जेकरा जे नीक जबून बुझाइल हमरा के कहल आ कहता। हम केकरो मुँह ना बन कइ सकीं। हमरा अतने संतोष बा कि 'अँजोर' का निकलला से हमरा कौनो आर्थिक लाभ नइखे। हमरा हानि बा तरह तरह के। जहाँ तक हो सकता हम कइले जातानी। भोजपुरी के जहाँ तक होई ऊँचा उठाइबि। 'अँजोर' के स्तर नीचे ना गिरे देबि। ना चली तब 'अँजोर' बन कर दिआई। हमार आपन पत्रिका ई ना हऽ बहुत भाई लोगन का ई भरम बा। केहु आके पूछवो त करीत। आगे से छींटाकसी करे से का लाभ। हमरा सामने बहुत बड़ बड़ आ लाभदायक योजना बा। का जाने एह जिनगी में हम पूरा कर सकबि कि ना। अगर ना करबि त प्रभु से ई अरज करबि कि शरीर छूटला का बाद फेरि भोजपुरी क्षेत्र में जनम देसु आ भोजपुरी के सेवा,उन्नति खातिर आपन किरपा आ साधन देसु। संस्कृति, साहित्य, उपासना के

साधन त एक जनम में पूरा ना होखे। अपने सब अगर कुछ मदत करवि त ढेर हो जाई ना त अकेले चना कहीं भार फोरखेबा ?

एह अंक में भोजपुरी पुस्तकन के सूची छपल बा। अगिला अंक में भोजपुरी कवियन के नाम आ पता छपाई। जे जे भाई भोजपुरी में एको लाइन कतहूँ लिखले होखे उ आपन आपन पता भेज दे। जे भेजले बा उ भाई लोग मति भेजी।

भोजपुरी कविता-संग्रह अभी तक ना छपल। हमार निहोरा रहे कि कवि भाई आपन छोट फोटो, कविता, दूगो, हिन्दी में अर्थ का साथ, जन्म तिथि, शिक्षा, आपन प्रकाशित साहित्य का साथे भेजीं। बहुत कमे आइल बा।

भोजपुरी फिल्म

भोजपुरी में एक से एक सुन्दर फिलिम बन रहल बा। भोजपुरी फिलिम के एगो सूची आगे निकली। भोजपुरी भाषा के परचार के इ बड़ा नीक साधन बा। लेकिन फिलिम के निकाले वाला भाइन से इहे अरज बा कि भोजपुरी भाषा के भी खियाल राखे के चाहीं। भोजपुरी फिलमन में भोजपुरी वातावरण पूरा नइखे खिलत। एकरो पर धेआन राखे के चाहीं। आगे फेरु एह बारे में कुछ लिखाई।

'अँजोर' के संरक्षक श्री अम्बिकाशरण सिंह जी

'अँजोर' का पाठकनि के इ जानि के खुशी होई कि श्रीअम्बिका शरण सिंहजी विहार के राज्य मंत्री 'अंजोर' के संरक्षक होखे खातिर आपन स्वीकृति दीहलीं हां। आशा बा कि अपने के छत्र छाया में 'अंजोर' के अंजोर घर-घर फैली। अपने के कर्मठ स्वभाव, निस्वार्थ सेवा आ साहित्य प्रेम के सोहरत बा। अपने के छोह रहो त अंजोर का निकले में कुछ परेशानी ना होई। 'भोजपुरी परिवार' अपने का किरपा के बहुत आभारी बा।

प्र० सं०

“अँजोर” के नियम

१ “अँजोर” में छपे खातिर जे भी रचना भेजल जाय ओकर प्रतिलिपि अपना पास राख लिहल जाय। प्रकाशित रचना भेजे के कृपा मत कइल जाय।

२ कवनो लेख, कविता, प्रश्न, चित्र आदि के छापे भा ना छापे के आ काटे छाँटे के पूरा अधिकार सम्पादक के रही।

३ “अँजोर” में बिना नाँव गाँव के मुलाहिजा कइले, रचनन के उत्तमता पर अधिक दीहल जाई।

४ पन्ना के एक ओर लेख लिखाये के चाही, भाव आ भाषा पर ध्यान त राखहीं के चाहीं। जहाँ तक होखे लेखन के काया छोटे होखे के चाहीं।

५ रचना के साथ लेखक के वर्त्तमान पता आ जन्म-स्थान के पता दूनों भेजेके चाहीं।

६ “अँजोर के गाहक कवनो अंक से बनावल जा सकेला। जवना महीना में दाम आ जाई ओही महीना से गाहक समझल जाई।

७ स्थायी गाहक भाई चिठ्ठी-पत्री लिखत खानी आपन गाहक संख्या जरूर लिखसु। एक बरिस के चन्दा भेजि के जे गाहक बनिहें उहे भाई स्थायी गाहक कहइहें।

८ रचना, मनीआर्डर, व्यवस्था सम्बन्धी पूछताछ के पत्र सम्पादक के पता से भेजे के चाहीं।

९ आलोचना खातिर पुस्तक के दू प्रति भेजे के चाहीं।

अँजोर के विज्ञान-दर

कभर के चौथा पन्ना —१२५)
,, तीसरा पन्ना—१००)
साधारण पन्ना— ७५)
,, आधा पन्ना—५५)
,, चौथाई पन्ना—३५)

एक प्रति के ७५ नया पैसा सालाना ३ रु० ५० नया पैसा

एह प्रति के १ रुपया पचास नया पैसा

द्रक : यूनियन प्रेस, पटना-४

किसी ज्योतिषी की भविष्य वाणी इतनी निश्चित नहीं हो सकती जितनी 'अल्प बचत योजना' की लगायी राशि से आपका तथा आपके बच्चों का भविष्य सुरक्षित है।

'अल्प बचत योजना' में राशि लगाकर करमुक्त ब्याज प्राप्त कीजिए सुरक्षा सर्टिफिकेट खरीदिए। डिफेन्स डिपोजीट तथा नेशनल डिफेन्स सर्टिफिकेट आयकर, सुपर टैक्स तथा अतिरिक्त सरचार्ज से मुक्त है। इसके फलस्वरूप आयकर देनेवालों को इस योजना के अन्तर्गत काफी लाभ होता है।

यदि आपकी आय	तो आपको निम्नलिखित सुविधा मिलती है
१००००	५·६५ प्रनिशत
२००००	६·७९ ,,
३००००	९·९० ,,
५००००	१६·३८ ,,
६००००	१८·२७ ,,

सभी डाकघरों में उपलब्ध है।

विशेष जानकारी के लिए 'अल्प बचत योजना' के कार्यकर्त्ताओं से मिलिए

बिहार सरकार के 'अल्प बचत योजना' के विशेष पदाधिकारी
पटना द्वारा प्रसारित।

[बिहार सरकार द्वारा विद्यालयों एवं पुस्तकालयों के लिए स्वीकृत]

अँजोर

[भोजपुरी परिवार (पटना) के त्रैमासिक मुख-पत्र]

❋

जामें रस कछु होत है ताहि पढ़त सब कोय
भाव अनूठो चाहिए भाषा कोऊ होय

—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

❋

प्रधान सम्पादक

पाण्डेय नर्म्मदेश्वर सहाय

बरा-५ किरिनि-१-२
अप्रैल १९-६४ ई०
जुलाई १९-६४ ई०

संरक्षक
श्री अम्बिका शरण सिंह, राज्य-मंत्री, बिहार
सम्पादक-मंडल
रामवचन द्विवेदी 'अरविन्द,' रासविहारी राय शर्मा, गणेश चौबे
वसंत कुमार, रामनाथ पाठक "प्रणयी"

एह अंक में पढ़ीं—

पन्ना
१ गीत (कविता)—पाण्डेय कपिल एम० ए० १
२ भोजपुर का ऐतिहासिक महत्व (लेख)—डा० भगवत शरण उपाध्याय २
३ गाँव-गिराँव (कहानी)—रामवृक्षराय 'विधुर' ६
४ अम्बपाली (कविता)—राम सजीवन सिंह एम० ए० ८
५ भोजपुरी में क्रिया के रूप (व्याकरण)—विन्धाचल प्रसाद श्रीवास्तव ९
६ ✓बउध-लीला (प्रवन्ध-काव्य)—श्रीस्वामी विमलानन्द सरस्वती १४
७ हथिया (रेखा-चित्र)—रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक' १६
८ कविता-कुंज
(क) अकुराइल चिनगी—वेदनन्दन १८
(ख) दिया बुत गइल—गणेशदत्त किरण १८
(ग) गीत—श्रीराजेन्द्र 'संजय' १९
(घ) इ नयनन के लोर हो—कामेश्वर शर्मा 'नयन' २०
(ङ) पिजावऽ तनि—अशांत २०
(च) भोजपुरी त्रिपदियाँ—विद्याधर शुक्ल 'विद्यार्थी' २१
(छ) गवई के दुनियाँ—रामवचन सिंह यादव 'प्रेमी' २२
(ज) गीत—सूर्य परमार २३
(झ) गीत—पाण्डेय चन्द्र विनोद २४
(ञ) गीत—मधुकर आजमगढ़ २५
९ भोजपुर क्षेत्र के कहाँरन के कुछ साँकेतिक शब्द—डा० सत्यदेव ओझा २६
१० जोतिया से मिलि गइले 'मोतिया' के जोतिया (कविता) श्रीमती गीता देवी पाठक २७
११ मंसाभूत, संका डाइन (लोक कथा)—ईश्वरी प्रसाद गुप्त २८
१२ गीत (कविता) मुसुकल कोइलिया—प्रफुल्ल चन्द्र द्विवेदी एम० ए० ३१
१३ जागनि क कआल्हा (ऐतिहासिक लेख)—सूर्य परमार ३२
१४ करूणा-क्रन्दन (कविता)—प्रि० मनोरंजन प्रसाद सिन्हा ३५
१५ बरसात (कविता)—रामनाथ पाठक 'प्रणयी' ३६
१६ टीपन (जोतिस)—विश्वनाथ प्रसाद एडवोकेट ३७
१७ भोजपुरी मुहावरे ३८
१८ भोजपुरी शब्द-कोश ३९
१९ सोहनी के गीत (लोकगीत)—गणेश चौबे ४१
२० बरसाती (लोकगीत)—गणेश चौबे ४२
२१ चम्पारण के भ्रमणशील जातिः नट—तारकेश्वर प्रसाद ४३
२२ सम्पादक के विचार ४४
२३ पुस्तक-परिचय ४८

प्रकाशक भोजपुरी परिवार पटना—३

तमसो मा ज्योतिर्गमय'

अँजोर

धरती के लोर बाट जोहि रहल भोर के,
पह फाटल, बिहँसी अब किरिनियाँ 'अँजोर' के।

कला-५ | अप्रील १९६४—जुलाई १९६४ | किरिनि १-२

गीत

सुखवा आ दुखवा के दूई रे किनरवा
जेकर बीचे
बहे लोकवा के धारवा
जेकर बीचे!
धार पर ओही धनी! जिनगी के नइया
लहर खींचे
जब उठेला लहरवा
लहर खींचे!
दुखवा दरदिया के सीकल जिनिगिया
छुटल पीछे
जे कलेस के नगरवा
छुटल पीछे!
उठत तरंग, मन विहँसे जवनियाँ
उमंग सींचे
जब बहेला बेयरवा
उमंग सींचे!
जिनगी के नइया धनी! लागल किनरवा
आनन्द रीझे
जहाँ सुख के बिहरवा
आनन्द रीझे!

—पाण्डेय कपिल एम० ए०

भोजपुर का ऐतिहासिक महत्व

—डा० भगवतशरण उपाध्याय

भोजपुरी जनपद का महत्व इतिहास प्रसिद्ध है। भारत के इतिहास में इस देश का कोई जनपद इतना महत्व न पा सका, जितना काशी की हृदय में बिठाए भोजपुर जनपद को मिला। बुद्ध और अशोक का नाम किसने नहीं सुना? वर्धमान महावीर और चन्द्रगुप्त मौर्य का नाम किसने नहीं जाना? बुद्ध का प्रायः समूचा जीवन अधिकतर इसी भोजपुर जनपद में उपदेश करते बीता। बौद्धों के चार प्रसिद्ध तीर्थों में से तीन इसी अंचल में हैं। बुद्ध की जन्मभूमि कपिलवस्तु, उनके उपदेश का पहला अधिकारी मृगदाव-सारनाथ और उनकी मृत्यु-महापरिनिर्वाण की भूमि कुसीनारा-कसिया, भोजपुर के ही जनपद में थे। स्वयं बोध गया भी, जहाँ उन्होंने ज्ञान-लाभ किया था, भोजपुरी बोली के दक्खिन-पूर्वी छोर के निकट ही था। बुद्ध के वैभव के रूप में भोजपुर का सांस्कृतिक साम्राज्य उत्तर में कोरिया, जापान, तिब्बत, दक्खिन में सिंहल पूरब में चीन, मलय, हिंदेशिया और पच्छिम में ईराक, इस्त्रालय तक जा फैला और कालान्तर में ईसाई साधुवर्ग की, उनके मठों की, नींव बना।

चन्द्रगुप्त मौर्य ने भारत की भौगोलिक सीमाओं पर हमारे देश के इतिहास में पहली बार राजनीतिक व्यवस्था स्थापित की और सुदूर के दक्खिन को छोड़ समूचा भारत एक राष्ट्र बन गया। अपने भोजपुरिया वीरों की हरावल लिए वह भारत के बाहर हिंदूकुश पर्वत के आर-पार अफ़गानिस्तान जा पहुँचा, जहाँ पश्चिमी एशिया के राजा और सिकंदर के सेनापति सेल्यूकस ने उसे रण के लिये ललकारा था। ग्रीकों को अभिभूत कर उसने काबुल और आस पास के चारों ग्रीक प्रान्त उस भोजपुर के साम्राज्य में मिला लिए जिसकी राजधानी, तब के मगध की राजधानी, पाटलिपुत्र थी। चन्द्रगुप्त भोजपुरी जनपद में ही जन्मा था, मल्लों के पड़ोसी पिप्पलिवन के मोरियों की संतान था, जिसने मगध पर अधिकार कर लिया था। उससे भी पहले, इसी भोजपुर के वीरों से अपनी सेना की हरावल बनाकर देश में पहला साम्राज्य राजा नंद ने स्थापित किया था जिसकी उग्रकर्मा सेनाओं से डर कर सिकन्दर की सेना ने पंजाब में ही व्यास के तीर हथियार डाल दिए थे और उस जगद्विजयी को उल्टे पाँव लौट जाना पड़ा था।

अधिकतर इसी भोजपुरी जनपद में जैनधर्म के चलाने वाले वर्धमान महावीर के उपदेश भी, बुद्ध से भी पहले, होते रहे थे, जन्म चाहे उनका मैथिल जनपद की वैशाली में हुआ। इस प्रकार संसार के दो महान् विचारको और सामाजिक क्रान्तिकारियों की विचारधारा भोजपुरी जनपद में ही बहती रही। इनमें से एक, बौद्धधर्म, ने तो अपने विस्तार में संसार के छोर छू लिए और जैन धर्म ने भारत भर में तप और अहिंसा का बिस्तार किया। अशोक का महत्व किसका नहीं जाना है? बुद्ध और जैन ने जो कार्य भारतीय संस्कृति की दिशा में, विश्वशांति और मानव प्रेम की दिशा में किया, चन्द्रगुप्त मौर्य और अशोक ने वही राजतंत्र की दिशा में किया। अशोके—गोरखपुर और कसियाके बीच मोरियों में जन्मा अशोक—तो संसार राज्याचरण का कीर्तिमान ही बन गया। उसने दिग्विजय को

त्याग धर्मविजय को अपनी राज-नीति बनाई और राजनय में पहली बार भ्रातृभाव का व्यवहार किया। ग्रीक सिकन्दर अशोक के पूर्वजों के समय एक हाथ में तलवार दूसरे हाथ में आग लिए आया था, उसी के देश में ग्रीकों के पाँचों राज्यों में, पश्चिमी एशिया, उत्तरी अफ्रीका, मिश्र और पूरबी यूरोप में अशोक ने दवायें बँटवायीं, मनुष्यों और पशुओं के लिए पेड़ पौधे लगवाए। (ग्रीक यहां मृत्यु के उपकरण लिए आये थे, भोजपुर ने उन्हें जीवन के साधन देकर जीता) तपस्वी अशोक भोजपुरी अंचल से उठा बौद्ध धर्माकाश का अप्रतिम नक्षत्र था, गोरखपुर और देवरिया के पड़ोस के मोरियों की संतान चन्द्रगुप्त का पोता। उसी अशोक ने भारतीय राष्ट्र को उसकी मुहर दी, चतुर्दिक सिंहों का मुद्रांक दिया, उसकी ध्वजा को वह चक्र दिया जिसका धर्ममय प्रवर्तन काशी के मृगदाव में बुद्ध ने किया था, जो गति का, मानव प्रगति का, प्रतीक था, जो आज भी शान्ति के चक्रवर्ती तथ्य का स्मारक है। भारतीय कला की चरम विन्दु मौर्य शिल्प का जादुई आकर इसी अशोकीय भोजपुरी जनपद का अंचल चुनार था।

भारत के प्रजातंत्रीय या पंचायती राज्यों का महत्त्व जो इतना बखाना जाता है उसकी बुनियाद भी अधिकतर इसी भोजपुरी जनपद में थी। यहीं बुद्ध को जन्म देने वाले कपिलवस्तु के शाक्यों, यशोधरा को पैदा करने वाले रामगाँव के कोलियों, पिप्पलिवन के, चन्द्रगुप्त—अशोक के, मोरियों, पावा-पड़रोना और कुसीनारा के मल्लों के पंचायती राज्य-गण और संघ थे। (यहीं बुद्ध के एक गुरु आलारकालाम को जन्म देने वाले कालाम बसते थे और यहीं ऐतरेय ब्राह्मण के भर्गों और बौद्ध साहित्य के भग्गों की सुंसमारगिरि का वह प्रसिद्ध नगर था, मिर्जापुर-चुनार के पास, जहाँ अशोक ने अपनी लाटें बनवा उन पर अपने उपदेश खुदवा कर उन्हें हजार मील दूर दक्खिन हैदराबाद और मैसूर की भूमि पर खड़ा किया था, जहाँ आंध्रों में हिन्दी नहीं, उसकी भोजपुरी का ही एक पूर्वगामी रूप मान्य हुआ।) इसी भोजपुरी के जनपद में वह काशी है जिसके ब्रह्मदत्त राजाओं की कथा बुद्ध के कहे जातकों में भरी पड़ी है, जिसके राजा अश्वसेन के पुत्र पार्श्व का नाम वर्धमान महावीर पूर्व जैन तीर्थंकरों में असाधारण महत्व का है, और जिसके राजा अजातशत्रु ने विदेह जनक, अश्वपति कैकेय, प्रवहण जैवलि के साथ साथ उपनिषद् विद्या का प्रचार किया था। विश्वनाथ की गली में रेशमी वस्त्र और ठठेरी गली में पीतल के पात्र-भांड जो बनते थे उनके बैलगाड़ियों के अटूट कारवां एक ओर पच्छिम की उज्जैनी और सौराष्ट्र, दूसरी ओर अन्तिओक और अलेप्पो की राह पहुँच यूरोप की भूमध्यसागरवर्ती मंडियों को अपनी बहुमूल्य वस्तुओं से भर देते थे। यही काशी एक मगध और कोसल के साम्राज्यों में कशमकश का कारण बन गई थी और इसी काशी की महिमा देश के कोने-कोने में, साहित्य और पुराण के पन्ने-पन्ने पर, गाई जाती रही है। समूचे भारत के जिन सोलह जनपदों का बुद्ध से पहले की पुस्तकों में बखान हुआ है उनमें अनेक जनपद इसी भोजपुरी अंचल के थे, जहाँ शंकर जैसे दार्शनिक अपने तर्क पर शान चढ़ाने आया करते थे।

मौर्यों के बाद शुंग आए जिन्होंने विदेशियों से लोहा लिया और भोजपुरी जनपद की ही गंगा की घाटी में पुष्यमित्र शुंग ने ग्रीक विजेता मीनांदर को आज से कोई दो हजार साल पहले धूल चटा दी थी। वास्तव में स्यालकोट का ग्रीक साम्राज्य तब भोजपुर में ही नष्ट हुआ जब उसके सम्राट् पुष्यमित्र ने ग्रीकों की राजधानी साकल-स्यालकोट जाकर अपना फरमान निकाला। और शायद तभी हिन्दू समाज को पहली व्यवस्था देने वाली

मनुस्मृति, संभवतः काशी में ही, गंगा के तट पर रची गई। मात्स्यन्याय का अन्त करने वाले, भारतीय परम्परा के अराजक वन्य जीवन के अन्तक प्रथम मानव राजा यही मनु थे जिनकी विधान-व्यवस्था के प्रधान आचार्य भृगु ने बलिया और काशी के गंगातीर पर पहले उस विधान को साधा था।

विदेशी शक-पल्हवों, ग्रीक-कुषाणों ने जब उत्तरापथ को आक्रान्त कर लिया तब मिर्जापुर की कन्तित-कान्तिपुर में छावनी बना कर मध्यदेश की रक्षा करने वाले पद्मावती के नागों ने पीठ पर काशी के शिव का प्रतीक लिंग धारण करने वाले भारशिव नागों ने, बारबार विदेशियों को परास्त कर बारबार अश्वमेध किया था। प्रत्येक अश्वमेध के बाद उन्होंने काशी में अवभृथ स्नान किया था जिससे, उनके अश्वमेधों की संख्या दस होने से, काशी के प्रसिद्ध घाट "दशाश्वमेध" का नाम ही उनके स्मारक में पड़ गया। इस प्रकार भारतीय स्वतंत्रता का पहला संग्राम इसी भोजपुरी अंचल में लड़ा गया जिसकी परिणति शकों को देश से निकाल कर शकारि-विक्रमादित्य चन्द्रगुप्त ने की। उसी "चन्द्र" ने भोजपुरी वीरों के साथ पंजाब की सातों नदियों को लाँघ, हिन्दूकुश लांघ बलख बुखारा, बखाँ-बदख्शाँ की आमू दरिया के तीर की, केसर की क्यारियों में अपनी हरावल के घोड़े हिराए और लौट कर दिल्ली मेहरौली में अपना लौह स्तम्भ गाड़ उस पर इस विजय की प्रशस्ति खुदवायी—तीर्त्वा सप्तमुखानि येन समरे सिंधोर्जिता वाह्लिकाः।

गुप्तों का उदय अधिकतर त्रिवेणी और गंगा और सोन के संगम के बीच की ही भोजपुरी भूमि में हुआ। इसी के वीरों ने चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के पौत्र स्कंदगुप्त के झंडे के नीचे लड़कर उन हूणों को परास्त किया जिनकी पराजय की कहानी स्कंदगुप्त ने सैदपुर भीतरी के पास पत्थर की लाट पर खुदवाई (—हूगैंयस्य समागतस्य समरे दोर्भ्यां धरा कम्पिता। भीमावर्तकरस्य—देश की रक्षा के लिए रणभूमि में रातें गुजारने वाले उस वीरवर की भुजाओं के युद्ध में हूणों से टकरा जाने से भयानक आवर्त बन गया था, धरा काँप उठी थी। बंगाल के पाल और सेन राजाओं ने, वैसे ही कन्नौज के गहड़वाल राजाओं ने, भोजपुरी जनपद का महत्व समझा और उसके केन्द्र काशी में उन्होंने अपने लेख खुदवाए, उसे अपनी दूसरी राजधानी बनाया। इसी भोजपुर इलाके को उन भरों के कुलों को समुन्नत करने का श्रेय है जिन्होंने अपना ब्राह्मण-क्षत्रियेतर साम्राज्य कायम किया और जिनके अनेक कुल आज स्थानीय क्षत्रिय बन गये हैं। जमाना बदलता गया पर उस केन्द्र का महत्व दोनों में बना रहा—उसके भारतीय पुजारियों में भी, विदेशी लुटेरों में भी। सदियों काशी नगरी का धन विदेशी विजेताओं की नजर पर चढ़ा रहा और समय समय पर उनकी तृष्णा की प्यास बुझाता रहा।

सोलहवीं सदी में भोजपुर के राजा अफगान थे और उनके सरदार शेरशाह ने कुछ वह किया जो भारत के इतिहास में न कभी देखा गया था न सुना गया था। भोजपुरियों की सेना लिए शाहाबाद जिले के सासाराम से जब वह चला तब दिल्ली का तख्त हिल गया, फरगना के तैमूर का वंशज और बाबर का बेटा हुमायूं तब शेरशाह के सामने बगैर तोप दागे, बगैर बंदूक की एक गोली छोड़े, जो भागा तो उसके पैर ईरान में ही जाकर टिके और इस भोजपुरिया शेरशाह ने वीरप्रसविनी राजस्थान और पंजाब की भूमि को रौंद डाला, मालवा से गुजरात तक की भूमि पर अधिकार कर लिया।

यह पहला उदाहरण था जब जनपद और सूबे के जमींदार ने उठकर देश की राजधानी दिल्ली पर कब्जा कर लिया और केन्द्रीय सिंहासन पर जा बैठा था। उसी शेरशाह ने वह टोंडरमल उत्पन्न किया जिसने आगे चलकर अकबर के राज की व्यवस्था की। भला आज किसी को इस बात का कयास भी हो सकता है कि जो ग्रैंड ट्रंक रोड पेशावर तक जाती है उसका निर्माण शेरशाह ने कराया था? या कि आज हम खेतों की पैमाइश का, चांदी के सिक्कों का, डाक का, जो इस्तेमाल कर रहे हैं उसकी बुनियाद भोजपुर के सरदार इसी शेरशाह ने डाली थी?

यह भोजपुर जनपद निर्भीक सन्त कबीर का है, साधक संकटमोचन-संस्थापक तुलसी का है, साहित्यधुरीण प्रेमचन्द, प्रसाद का है. हरिऔध, रामचन्द्र शुक्ल का, बटोहियाकार का है, इतिहास मार्तण्ड काशी प्रसाद जायसवाल का है, तिब्बत के अन्तराल से भारतीय ग्रन्थरत्नों की राशि निकाल लाने वाले राहुल का, ज्ञानशिरोमणि मंडनदंपति, रामावतार शर्मा, शिव कुमार शास्त्री का है, गणित के अप्रतिम पंडित सुधाकर द्विवेदी, गणेश प्रसाद. अवध उपाध्याय का है, काशी विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठाता मदन मोहन मालवीय का है, संविधान सभा के समारंभयिता सच्चिदानन्द सिन्हा का है, भारतीय स्वतंत्रता के सेनानी, स्वतंत्र भारत की संविधान सभा और स्वतंत्र भारतीय राष्ट्र के प्रथम राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद का है, उस काशी नरेश चेतसिंह का, जिसने सन् सत्तावन से भी पहले विदेशी सत्ता को चुनौती दी।

कहानी लम्बी है, भोजपुरी महत्त्व की कहानी। बात यह है कि वह महत्त्व कभी मर न सका और यह जनपद देश के इतिहास में अपने जस के सोने के पृष्ठ पर पृष्ठ जोड़ता गया। उसी प्रकार का वह भी पृष्ठ बना जब सत्तावन के गदर में भोजपुरियों के बाँके कुंअर सिंह ने अंग्रेजों को लोहे के चने चबवा दिए। और उसी सुनहरी कहानी का वह घटना उपसंहार बन गई जब मंगल पांडे की परिणति स्वरूप चित्तू पांडे ने स्वतंत्रता संग्राम में सन् ४२ में बलिया की पुलिस लाइन में कलक्टर और पुलिस के सुपरिन्टेन्डेन्ट को वहां के जेल के कैदियों की मदद से कैद कर लिया था और पूर्वी जिलों के अंग्रेज अधिकारी को बड़े परिश्रम से बलिया जीतकर लखनऊ तार देना पड़ा था—"बलिया रीकैप्चर्ड—"बलिया पर फिर से अधिकार हो गया!" और इतिहास के जानकारों को लगा कि जैसे सर चार्ल्स नेपियर ने सिंध की विजय की हो!

जय भोजपुर! जय हिन्द!!
भोजपुरी संसद की ओर से।

गाँव-गिराँव

—रामवृक्ष राय 'विधुर'

गाँव का रहले ह स ? का हो गइले स ? आजु ले थोर ही दिन पहिले गाँवन में कंचन बरिसत रहे। दूध-घीव क नदी बहति रहे। चारू ओर का शान्ति रहलि ? न केवनों तरह क लड़ाई, न झगरा। दिन भर काम कइला का बाद रात में सभ बिटुरा के रामायन, फगुआ, कजरी जब जइसन मौंका आवत रहे, गावल जात रहे। का सोहाबित लागत रहल ह ! जनाई जे सरगे उतरि आइल बा। आजु त गाँव कलह के अखाड़ा बनि गइल बाड़े स। घर-घर में फूट। गाँव-गाँव में फूट। बाप-बेटा में फूट। मरद-मेहरारु में मुँह फुलउवलि। लइका, बूढ़ आ जवान, पढ़ल-वे पढल सभ केहू एके रंग में रंगाइल बा। सभ केहू अपने आपन स्वारथ सिध कइल चाहत बाटे ! 'आपन भला, भला जग माहीं, सभ का दिमाग में अइसन बइसि गइल बा कि दूसरा के फूटहियो आँखि से केहू नइखे देखल चाहत। भर-भयवदी क बान्ह टूटि गइल। सभ केहू आपन-आपन डफली, आपन-आपन राग अलापत फिरत बाटे। न कवनों चमक, न दमक। न केवनों जर, न जलमा। चारु ओरि मुरुद घटिया अइसन सून-सान ! सन्नाटा।

ई जब से पार्टी बन्दी क भूत अदिमी का कपार पर सवार भइल ह, तब से गाँवन क ई दसा हो गइलि हटे। एह पार्टी बन्दी से केहू क चाहे जेतना लाभ होखे, गाँव त बिनास का भरसाँई में झोंकाइल जात बाड़े स। गाँव सचहूँ क नरक हो गइले स।

एही सोच में परल रहलीं, तवले एक अदिमी नँटई फारि के चिचिआइल "केवनि ह रे ?"

"हम हई बाबूजी ! सुधरी !"

"का करति बाड़ी ?...."कुछऊ ना। एक मूठी साग त खोटत बानीं।" "वाह ! जइसे जनाता जे इनिका बापे क खेत हटे, निकलजा ना त आइबि त ..।" वइठका से बहरा निकलि के पूछलीं के हऽ ? मोहन बाबू "हँ।" "का चिचिआत बानों !" ......"हई सुधरी ह जी, एके पाँचि दिन से बरिजत बानों। मानति नइखे। जनाता जे कहियो हाथ लगावे के परी। अब एतरे ना फरिआई। सोझवा क मुँह कुकुरो चाटेला।" "जाये देईं। ऊ बेचारी कहाँ जाई। गरीब ह, बाड़ा पुन्नि होई।"

दूसरा दिन सबेरे उठलीं त एगो जवान लइकी जेकर उमिरि २०-२१ बरिस के रहे, गाले हाथ देके गोड़तारी बईठलि रहे। साँवर सरीर। कउड़ी अइसनि बड़ी-बड़ी आँखि। रोवाँ से गरीबी झांकति रहें। कपार क बार तेल बिना अइसन हो गइल रहे जइसे जनाजे चिरई के खोंता हवे। देहिं पर एगो फटही लुगरी, जे में सत्त रह गो पेवन लागल रहे। छाती क लाजि बँचावे खातिर एगो बेलाऊज ; जे मे हरियर, पीयर, लाल, करिया कई रंग क छीटि लगावलि रहे। गहना का नाँव पर दहिना हाथ में एगो लहठी बाँया हाथ एकदम छूँछ।

थोरे घरी तक त हम एक टक ओकरे ओर देखलीं। आह! विधाता क का विधान बा। जेके रूप मिलल ओके धन ना, आ जे के धन मिलल ओके रूप ना। अजब भगवान के माया बा। फेरु ओकरा ओरि देखि के पूछलो "कहाँ घर ह?" "आरे का बाबू जी, चिन्हत नइखों?"

"ना, हम त नइखीं चिन्हत।" "हूँ, विपति में केहू के केहूना चिन्हेला।" ऊ भरि आँखि लोर छलछलावत कहलसि। "आखिर कुछु पता, ठेकान बतइबो तवेनूँ। कहाँ घर ह?" "एही जे।" "एही जे?" एड़ो से मूड़ी तक मजे में देखि के चकचिहा के पूछलों। "हूँ।" "केकर लड़की हविसि?" "मुखलाल क।" "नाँव का ह?" "सुभगिया।" आँचर से मुँह तोपि के कहलसि। "वाह! का नाव बा सुभगिया, जेकर भागि खूब नोमनि होखे। "ना बाबू जो, सुभगिया नावें भर बा। अभगिया समुझीं अभगिया! एही उमिरि में बाप भाई सभ के खा चबा घललों। आँख के आन्हर, नाँव नयनसुख। "कहु, का चलली हसि?" "का बताईं; तनी चलि के देखिलीं। इनरु बाबू हमरा नाँकि में दम कइ देले बाड़े। सूतल-बइठल मोहाल हो गइल बा। हमरा निकसारे मुँहें उनकर पनरोह बहत बाटे। कतहूँ बइठहूँ के सरन नइखे। सरि के बज-बज हो गइल बा। खा के निकलला पर जइसे जनाता जे बाँटि हो जाई। दोहाई बाबू क, तनी चलि के देखलीं।"

जब हम ओइजा पहुचलों त देखलों मरद-मेहरारु सड़सल रहले। तोर-मोर होत रहे। "इनरू! "काहे के एह गरीबिनी के संतावत बाड़ऽ। एइजा पनरोह बहल ठीक नइखे। गाँवन के त तहन लोग नरक बना घललऽ जा। एही जे एगो नाद गाड़िदऽ। नाद भरि जाई त उदहि के बहरा फेंकि दीहऽ। भला केहू नीमन अदिमी आई त का कही। तनी अपना मनो में त कयास करे के चाहीं।"

इनरू अबहीं बोल ही के रहले तवले उनकर मेहरारू चउकठ से बहरा निकलि के कहली "जा, जा, तोहरा नियर ढेर अदिमी के देखले वानीं। देखीं लाँ न कि केवन बाप के बेटा पनरोह बन करावेलनि। हम हूँ एगो बाप के बेटी हईं! माँगि धोवनो गोहारि बोलावे गईलि रहली स ह। हम हूँ इनिकर गोहरिये देखे के वानीं।"

झगरा शुरू हो गइल। इनरू क छोटा भाई शंकर लउरि लेके छरके लगले। हम कल से कगरिया गइलों। मदन बाबू कान में कहले "चलीं, का ई कुल्हि सुनले वानों।" "का कही मदन बाबू; गाँवन क दसा देखि के सइ मूठी क एक मूठी हो जाईंला। दुनियाँ बदलि गइलि, बाकिर एह करिया कमरा पर जनाता जे कबो दूसर रंग ना चढ़ी। "हँ, हँ, हँ···आजु जनलीं हँ। आरे, एही क नाँव ह 'गाँव गिराँव' चलीं। देखलों नूँ। रउवाँ गाँव में रहबे भर नूँ करीलाँ। गाँव के हालि-चालि हमरा से पूछ लीं कालिह एके रात में हमरा गावें दस बिगहा खेत उलराइल ह। सुनले बानीं?" "ना।"

ओइजा से चलि अइलीं। बाकिर उ बाति दिमाग में फिरिंगी नियर नाचे लगलि। वाह! गाँव का रहले ह स! का हो गइले स? का होइहें स, केवनो ठेकान नइखे।

अम्बपाली

'बुद्ध-वैशालिक'—एक अंश

ई की कौनो परी जे कि सामने-सुगत के
प्रगटल रहै डिगावेला उनका शुचिव्रत के
उहे रूपरँग काट, उहे भंगिमा उहे सब
भौं के टेढ़ी, लोचन के बंकिमा उहे सब
उहे कमल के पांव, हंस के चाल उहे सब
उहे चम्पई बदन, गुलाबी गाल उहे सब
उहे सिंह-कटि में चंचल कोंचा के झालर
उहे काँख में जेन सँभरइत सेही आँचर
उहे उरोज उचकइत औ कंचुकी मसकइत
उहे व्याज में सी-सी-सी वासना कसकइत
उहे उधर में दंश, आँख में उहे काट हइ
उहे चांद के टुकड़ा सन छप-छप ललाट हइ
उहे व्याल बेनी में हइ लहरइत, लपकइत
उहे मांग तलवार-धार हइ तेज चमकइत
उहे साज सिंगार नाज अन्दाज उहे सब
माटी खुँदइत ढीठ मचलइत लाज उहे सब
उहे फूल के बान कान तक तान चल रहल
उहे काम के सेना के अभियान चल रहल
की रंभा, उर्वशी. मेनका में से केऊ
जीवन के लावण्य-सिंधु में छवि के छेऊ
स्वर में छवि साकार, रूप में सुरभि भरल हइ
अंग-अंग में मांसलता में प्रान तरल हइ
इहे अम्बपाली, त्रिभुवन-सुन्दरी इहे हइ
इहे रूप-आगार, स्वर्ग के परी इहे हइ
वैशाली के संघ-राजनर्त्तकी इहे हइ
गया के यौवन के हगके टकटकी इहे हइ
रंगमंच पर थिरक रहल हइ भावभोर हो
'जय-जय' के उठ रहल चतुर्दिक तुमुलरोर हो
कुहु-कुहु-कुहुकिनि कूक रहल फाल्गुनीपर्व में
मोजर के रस पीकर पछुया भरल गर्व में

श्री रामसंजीवन सिंह, एम० ए०

भोजपुरी में क्रिया के रूप

—विन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव

भोजपुरी में क्रिया के रूप हिन्दी के क्रिया का रूप से कुछ भिन्न होला। 'कुछ भिन्न' एह से कि भोजपुरी क्षेत्र का बाहर रहेवाला (और हिन्दी जानेवाला) कौनो आदमी अपने त भोजपुरी ना बोल सकी, बाकी भोजपुरी बोलेवाला का कहे के मतलब जरूर समझ जाई। भोजपुरी के क्रिया हिन्दी का क्रिया से कुछ भिन्न भइलो पर कुछ खास काल में संस्कृत का क्रिया का लेखा होला। एह से भोजपुरी का क्रिया के रूप हिन्दी का क्रिया का अइसन "विश्लिष्ट" और संस्कृत का क्रिया अइसन "संश्लिष्ट" भी बाटे। संस्कृत में खाली क्रिये से काल, पुरुष, और वचन के पता चल जाला, जइसे—'गच्छामि' से सामान्य वर्त्तमान काल, उत्तम पुरुष. एक वचन तीनू के पता चल जाला, "गच्छेत" से विधिलिंग, अन्य पुरुष, एक वचन, तीनू के पता चल जाला। ओइसहीं भोजपुरियो में "गइनी" से सामान्य भूत, उत्तम पुरुष, एक वचन के पता चल जाला, "जाय"। "जाव" से विधिलिंग, अन्य पुरुष, एक वचन के पता चल जाला। ई बात ठीक बा कि क्रिया का रूप के जइसन साफ-साफ लेखा-जोखा संस्कृत में बा ठीक ओही लेखा भोजपुरी में ना बाटे, तेहूपर बहुत कुछ ओही लेखा जरूर बाटे और उ "साम्य" का भीतर मानल जा सकत बाटे, जब कि हिन्दी का क्रिया में अइसन बात ना बाटे। ओह मे "विश्लेष" के प्रधानता बाटे।

हिन्दी में क्रिया के "संयुक्त रूप" जादे बाटे। हैं, हूँ, हो, था, थे, थी, र, हल, रहे, रहीं का मेल से अक्सर क्रिया के रूप बनेला। "शुद्ध संयुक्त क्रिया" जे दू या अधिका क्रिया का मेल से बनेला उ अलगे बा। संस्कृत का लेखा "प्रकृति प्रत्यय" के मेल इहाँ ना बा। हिन्दी में जहाँ "जाता था" बोलल जाला, ओह से सामान्य भूतकाल में सब पुरुष के एक बचन में काम चल जाला, बाकी ओकरा जगह पर भोजपुरी जाईं जाय, जास, जा, आदि आवेला।

एह से साफ मालूम होता कि भोजपुरी के क्रिया का रूप पर संस्कृत के असर कुछ ना कुछ जरूर रहगेल बा। संस्कृत का धातु से भोजपुरी का धातु के ओतना नगीची ना बाटे काहे कि दूनू का "ध्वनि" में ओतना खुलासा बराबरी (साम्य) ना मिले, मगर संस्कृत से प्राकृत, जेमें शौरसेनी, मागधी, अर्द्ध मागधी, महाराष्ट्री आदि सामिल बा, और अपभ्रंश, एह सब रास्ता से होके भोजपुरी तक पहुँचला पर संस्कृत के असर खुलासा हो जाई।

कुछ नमूना देखला से पता चल सकेला। ई सब नमूना चम्पारण का भोजपुरी—पूरबी भोजपुरी से देल जाता।

(सं०)—कथ (शौरसेनी) कध (महाराष्ट्री) कह (भोजपुरी)

सं० 'हस्-हँसना।

लोट् अन्य-पु०, ए० व०, हसतु हसऽ (प्रा०) हँसो (भोज०)

म० पु०, ए० व० हस हससु (प्रा०) हँसऽ (भोज०)

लृट्, प्र० पु०, ए० ब० हसिष्यामि हसेहामि (अर्द्ध मागधी)—हंसेम, हसब (भोज०)

भोजपुरी क्रिया के शास्त्रीय स्वरूप यानि मूल भाषा से ओकर मिलान करे का पहिले अलग-अलग काल ओ पुरुष में ओकरा क्रिया के चालू रूप देखलेल ज़रूरी बाटे जेसे आगाड़ी के विवेचन साफ-साफ बुझा सके।

भोजपुरी के एगो सकर्मक क्रिया बा-"खायल" हिन्दी (खाना) संस्कृत (खाद्)

(क) वर्त्तमान काल

(१) सामान्य वर्त्तमान काल कर्त्तरि प्रयोग विधानार्थक।

उ० पु०—खाइले।

म० पु०—खाल-खालस, खालू-खालिस (स्त्री)
खाइले (आदशर्थक)

अ० पु०—खाला-खालन-खाले, खाली-खालिन (स्त्री)
खाइले (आद०;

नकारार्थक—(ना)

उ० पु०—(ना) खाई-खाइले।

म० पु०—"खास-खा खालस खालु-खालिस (स्त्री)
खाई-खाइले (आद०)

अ० पु०—"खाय-खाला-खालम-खाले,
"खाय-खालिन-खाली (स्त्री)
"खाई-खाइले (आद०)

(विधानार्थक)

कर्मणि प्रयोग :— खाएल जाला-खाएल जाला।

(नकारार्थक)—ना खाइल जाला (खाएल जाल)
ना खायल जाय।

(कर्त्तरि विधाना०)

प्रेणार्थक उ० पु०—खिआइले।

म० पु०—खिवावल—खिवावेल-खिवावे (१) लस,
खिवाव(वे) लिस—खिवावलु (स्त्री)
खिआइले।

अ० पु०—खिवावलेन—(खिवावलन) खिवाव (व) ला
खिवावली—खिवावलिन (स्त्री)
खिवाइले (आद)

(विधाना)

कर्मणि प्रयोग—खिवावल जाला।

नकारार्थक—(कर्त्तरि) खिवाइले (बाकी सब 'ना' का मेल से विधार्थक लेखा।

नकारार्थक (कर्मणि) ना खिवावल जाला-जाय।

(२) तात्कालिक या घटमान वर्त्तमान।

कर्त्तरि :—

उ० पु०—खातानीं।

म० पु० खातारे-खातार खातारस,

खातार—खातारिस (स्त्री)

खातानी खाइल जाता (आद०)

अ० पु०—खाना-खातारन

खातारी—खातारिन (स्त्री)।

खातानी—(आद०)

नकारार्थः—

नकारार्थ खातिर दू तरह के रूप बोलल जाला।

स्वीकारार्थ चाहे सामान्य कथन में "खात"

जइसे "नइखे" "नइखी खात" "नइखू खात"

"नइखे खात"

यानी, "नकारात्मक" क्रिया विशेषण के रूप में "ई, ऊ, ए" का देर फेर से पुरुष और वचन के काम चलेला। बाकी प्रश्नवाचक में "सामान्य कर्त्तरि प्रयोग" का साथे "ना" जोड़ के चाहे "नइखी" वाला रूप बोलल जाला।

जइसे—ना खातार?

नइख खात?

कर्मणि प्रयोग :—खायल जाता।

एकरा नकारार्थ में ना खायल जाता चाहे नइखे खायल जात दुन्नू रूप चलेला।

प्रेरणार्थक :—(कर्त्तरि)

उ० पु०—खिवावतानी

म० पु०—खिवावतार-खिवावातारे-खिवावतारस, खिवावतारू-खिवावतारिस (स्त्री)

खिवावतानी, खिवावल जाता (आद०)

अ० पु०—खिवावतारन—खिवावता,

खिवावतानी—खिवावतारिन (स्त्री)

खिवावतानी (आद०)

(कर्मणि) खिवावल जाता।

नकारार्थक :—(कर्त्तरि) नइखीं खिवावत ना खिवावतानी

(कर्मणि) ना खिवावल जाता नइखे खिवावल जात।

(३) सम्भाव्य वर्त्तमान।

कर्त्तरि :—

उ० पु०—खात होईं

म० पु० खात होख-खात होखस

खात होईं (आद०)

अ० पु०—खात होखे—खात होखस
खात होईं (आद०)

एह काल में नकारार्थक में ना ही लागेला 'नइखे' ना लागे।

कर्मणि :—खाएल जात होए।

नकारार्थक खातिर एहू में खाली ना लागेला।

प्रेरणार्थक "खिआवत + होईं-होख-होखे-आदि"

(४) पुराघटित पूर्ण वर्त्तमान ।

(कर्त्तरि)—

उ० पु०—खइली हँ,
म० पु० खइल ह खइले ह, खइल ह-खइलिस ह (स्त्री)
खइनी हँ (आ०)
आ० प्र० खइलक ह खइलन हँ,
खइली ह,-खइलिन हँ (स्त्री)
खइली हँ (आद०)

कर्मणि :—खाएल गेल ह।

नकारात्मक :—'ना' का मेल से कर्त्तरि कर्मणि दूनू में ऊपर वाला रूप चलेला।

प्रेरणार्थक :—(कर्तरि)

उ० पु०—खिववनी हँ
म० पु०—खिववल ह—खिववले ह
खिववलूह—खिववलिसह (स्त्री)
खियवनी हँ (आद०)
अ० पु० :—खिववलन हँ—खिववलक ह,
खिववली ह,—खिववलिन हँ
खिववनी हँ।

(कर्मणि)—खिवावल गेल ह

नकारात्मक खातिर 'ना' के मेल कएल जाला।

विशेषः—पुराघटित वर्त्तमान काल में (√बार) "बानी,—बाड़'—बाड़े—बाड़स—बाड़ू" का मेल से भी क्रिया के रूप बोलल जाला जइसेः—

"हम खइले बानी, तु खइले बाड़' "

कवहीं-कवहीं (√ बार) "बानी"
आदिका साथ (लेल) के रूप भी बोलल जालाः—

हम खा लेले बानी"

मगर एह दूनू रूप से पुराघटित वर्त्तमान और पुराघटित अतीत के पता एके लेखा चलेला जइसेः—

(१) हम दवाई खा लेले बानी—पु० घ० वर्त्तमान
हम ताजमहल देखलेले बानी—पु० घ० अतीत
हम ताजमहल देखनी है—पु० घ० व.

(२) हम ताजमहल देखले बानी

हम ताजमहल देखले बानी—पु० ध० अ०

ऊपर का उदाहरण (२) में बात या कथन का प्रयोजन के छोड़ दिआए "देखनी हँ" रूप ही शुद्ध पुराघटित वर्त्तमान के द्योतक बा। अँग्रेजी में क्रिया के ई रूप वर्त्तमान काल में ही मानल बा Present Perfect, मगर संस्कृत में भूतकाल मे मानल गेल बा (आस भूत) हिन्दी में विवादग्रस्त बा, ओइसहीं भोजपुरियो में।

(४ क) पुराघटित वर्त्तमान (दोसर रूप)

कर्त्तरि:—उ० पु०—खइले बानी,

म० पु०—खइले बाड़े,—खइले बाड़स,

खइले बाड़ू,—खइले बाड़िस (स्त्री) खइले बानी (आदमी)

अ० पु०:—खइले बा–खइले बाड़न,

खइले बाड़ी—खइले बाड़िन (स्त्री) खइले (आद०)

कर्मणि—खाएल गेल ह।

नकारात्मक:—(कर्त्तरि)

उ० पु०–नइखी खइले.

म० पु० नइख खइले—नइखस खइले।

नइखू खइले·नइखिस खइले (स्त्री) नइखी खइले (अदमी)

अ० पु०—नइखे खइले—नइखन खइले

नइखी खइले—नइखिन खइले (स्त्री)

नइखी खइले—(आद०)

एकरा अलावे "ना" और "बानी" का मेलसे भी नकारात्मक बोलल जाला:—एह में बानो; बाड़-बाड़े, बड़ू-बाड़िस, बानी; बा–बाड़न, बाड़ी—बाड़िन, बानी;

"ना खइले" का बाद पुरुष और वचन के मोताबिक बोलल जाला

नकारात्मक कर्मणि प्रयोग मे "ना खाएल गेल बा" रूप होला।

प्रेरणार्थक :—(कर्त्तरि)

उ० पु०—खिववले बानी

म० पु०—खिववले बाड़ खिववले बाड़स,

खिववले बाड़ू—खिववले बाड़िस (स्त्री) खिववले बानी (आद०)

अ० पु०—खिववले बा—खिववले बाड़न

खिववले बाडी—खिववले बाड़िन (स्त्री)

खिववले बानी (आद०)

कर्मणि :—खिवावल गेल बा

नकारात्मक—खातिर ऊपर का रूप का पहिले कर्त्तरि प्रयोग में "न" जोड़ल जाला चाहे "खिववले" का पहले पुरुष वचन का हिसाब से "नइख नइखू" आदि जोड़ के बोलल जाला।

कर्मणि प्रयोग में "ना खिवावल गेल बा" चाहे "नइखे खिवावल गेल" चलेला।

"बउध-लीला"

—स्वामी विमलानंद सरस्वती (बक्सर)

(पहिले से आगे)

दूसर दल के अईंकल लोग,
नावँ धराइल उनका जोग,
तुरत 'महा सांघिक' मशहूर,
समझि-बूझि के लुरि सहूरें।

× × ×

मिरिगडाह का कठिन आँचि में,
धरती जब जरि भइलि खँगार।
जीव जंतु सभई अकुलाइल,
झुलसि गइल शोभा सिंगार।
दशो दिशा के हवा बद हो,
हिले न पीपर पात।
कइलन कोप विधाता अइसन
छुटल हाथ से तीर।
पहुँचि गइल अंधड़ तूफान,
जेकर सोरि पताले ठेकलि—
अइसन फेड़ हजारन उखरल।
उजरि गइलि चिरइन के खोंता,
भइल अन्हार डहरि ना सूझे,
बहुत लोग जूझल बेबूझे।
रण के निठुर भयंकर नेवत
ठीक अइसहीं आवेला,
लोहू, के धार बहा के अचके
लाखन माँथ गिरावेला।
जालिम के जुलुम मिटा के छन में—
जब भूकंप मचावेला,
कोठा-कोठी महल अँटारी,
पलक गिरत भहरावे ला।

× × ×

जुलुम का जलती चिता से
निकलि के रण के भवानी
मुंडमाला डालि गर में,
हाथ में तलवार चमचम।
सिंह पर चढ़ि के चलेली
गरजती हुँकार करती,
देवि दुरगा काल रानी॥
जालिमन के मांथ पोंछे,
लोर पोंछे बेकसन के।
लोग जागल सजग होके—
सुनि सुघर उपदेश उनकर—
"जालिमन के सिर झुकावल,
लोर पी के दिन वितावल,
कायरन के काम हऽ।
भारी भयंकर पाप हऽ!!

× × ×

समय पाइ के ठीक अइसहीं,
जब कलिंग में लोहा लागल।
रण के बादल चढ़ि मँड़राइल,
तेज चमाचम तड़पलि बिजली,
रणचण्डी खप्पर ले आइलि;
जीभि निकलले लहू पिये के।
रथ पर चढ़ि के महाकाल का,
बढ़ल हजारन लोग समर में।
भइल खून से लथपथ धरती—
पाटि गइलि लाशन से।
नाहक लोग पिसाइल केतने,
नदी बहलि लोहू के।
अइसन लहू-लुहान देखि के,
पितापूत माता-मेहरि के—
छाती पीटल रोवल।
उघरि गइल भीतर के परदा

बीणा के तार बजावल केहू।
कोमल दिल अशोक के पिघलल,
बनि के लोर छलकि आँखिन से,
ढरकि गइल धरती पर।
माँथ धुनत सोचत-पछतात—
मन के बतिया कहल न जात।
"लागल खून धोवाई कइसे—
मेंटी ई कलंक के टीका।"
दुख कलेश से काँपि कलेजा—
आवे मुँह के फिरि-फिरि हरदम।

× × ×

के अशोक का मति के फेरल,
बान्हल के सागर लहराइल,
जादू फूँकि लहरिया घेरल,
खून-खराबी रण के रोकल—
सुघर दवाई अइसन हेरल।
पत्थल के कठिन करेजा झट से
मोमि नियर टेघरावल,
दिल का भीतर दया-धरम के—
मूरति सुघर बनावल!

× × ×

मन के बागडोरि जे मोड़ल,
धन-धरती के लालच छोड़ल,
समुझल भाई-बंधु सभी के,
फंद मोह-माया के तोड़ल।
दुख आदर अपमान समान,
घट घट में देखल भगवान।
पहिरल गेरुवा बसन उदासी,
ग्यान विराग अटल सन्यासी,
सच्चा संत लंगोटी-धारी—
बउध-धरम के माने वाला।
कठिन भगीरथ जतन जुगुति से,
पलटि दिहल गंगा के धारा।
बउधदेव के सुनि उपदेश,
दया धरम के शुभ संदेश,
राज मुकुट झुकि गइल चरण में
संघ-शरण में, धरम-शरण में;
मोगलिपूत तिष्य के आपन—
मनलन गुरू अशोक नरेश!

× × ×

× १३ पृष्ठरचन
छोड़ दिया-
छापा-

उड़हीं खातिर पाँखि मिलल तब—
कोइलि के मनवा माने कइसे?
उत्तर पुरुब मंगोल देश में,
साइबेरिया का सिवान पर,
देखि सुघर तुनहवांग पहाड़,
कुहुकति पहुँचलि घाटी में।
झरना जहवाँ गुनगुनात—
अँठिलात कलें-कल,
राग रागिनी जोहत,
मोहत बरबस मन के!

× × ×

दश हजार सीढ़िन से चढ़ि के
ऊपर पहुँचल जइसे लोग—
अकिलि दंग हो गइलि देखिके,
परबत काटि बनावल मंदिर—
बउध कला के अमर नमूना।
भीतर बइठल अमिताभ देव,
कोइलि के पंचम राग सुनत।
सीढ़िन में बनल झरोखा,
सज से जहाँ विराजत [illegible]जिगर,
दस हजार मूरतियाँ।
बउध धरम इतिहास कहानी,
जुग जुग ले कहति सुनावति,
हँसि के इहे बतावति—
"समय रेत पर उतरल इहवाँ—
केतने मोती के पानी।"

× ×

बउधदेव के कथा अपार,
कवि के कहाँ खेमाता भइया—
कलमि चला के पावे पार।
हाथ जोरि के विनय इहे बा,
दया धरम कुछ राखीं मन में।
का जिभिया लपकावत बानीं,
नाहक धरम नसावत बानीं,
जे आइल से गइल जगत से,
देहियाँ माटी भइलि अंत में।

रेखा-चित्र

हथिया

—रसिक बिहारी ओझा "निर्भीक"

हथिया कवनो हाथी भा हथिनि ना रहे बलुक इ रहे जगेसरवो अहीरिन, हमनी के परजा। लगभग साढ़े पाँच फूट के चपाट मकुनी हाथी लेखा, मोटका करीया चिमर देहि के चमड़ा। बिलकुल दँइत लेखा औरत-एह से सभे हथिये कहे।

हथिया के कवनो भाई ना रहे। एह से एकर बाप जे निमनाह पहलवान रहन, एकरा के लइका लेखा पोसले रहन। आपन बाना, वनइठी, भाला भा लउरि चलावे के शिक्षा सभ अपना एकलौती बेटी के देले रहन। एह से बल आ फूर्ती में हथिया मरद के कान काटे। ओकरा लउरि से आगि बरसे। बाना बनइठी के पैतरा देखि के लोग दाँत तले अंगुरी काटे।

एक बेर कजउआ गढ़हा में मछरी मारात खा, पुरुब टोला आ पछिम टोला में ठेनि लागि गइल आ मारि होखे लागल। दाना दन लाठी बरिसे लागलि। चमचम भाला आ बरछा चमकें लागलि। आदमी आदमी के पटुआ आ वरे के डांट लेखा धुने लगलन। घायलन के लासि से परती पटाइ गइल रहे। हथिया के लाठी कतने पछीम टोला के लोगन के पाटि दिहलसि। ओह लोग के पैर उखड़ि गइल। हथिया काली रुप धइले रहे। चिखत अखाड़ात लागन के दुआर पर तक पीठिआइ के मरलसि। एगो औरत के मरद नही आ फूर्ती देखि के गाँव जवार के लोग सभ दंग रहे।

जब हथिया के होश सँभलल त अनेकन घायलन के रौंदति अपना के पवलसि। ओह! आजु हथिया कतने औरतन के माँग धो देलसि, कतने के कोखि सुन करि देलसि आ कतने लइकन के करि देलसि टूअर। कुछ देरि के बाद ओकर खीसि कुछ सान्त भइल आ धियान आइल त ओकरा हिरदय-सागर में दया के लहरि उमड़ि उठल आ अपना करनीं पर पछतावा होखे लागल। बाकीर जब लोग ओकरा से कहे कि तोर टोला जीत गइल बा हथिया तऽ खुशी से ओकरा ओठ पर मुसकान के टेढ़ि डाणि किंचा जाई।

एक दिन असहीं राति खा चोर मालिक चाचा के घर में सेन्हि मारत रहन सऽ। हथिया दुआर के मचान पर सुतल रहे। नीनि ओकर कुकुरे लेखा रहे। खुर-खुराहट से ऊ जागि गइल आ लउरि उठाइ के लखेदलसि। भागे के कवनो साँवग ना लागल त एक जाना घमोइ में छिपे लगलन। हथिया लउरि के हूरा टेकि के उनकरा छाति पर मच से फानि गइल। उनकर छाती के बाता चाचाराइ के टूटि गइल। खून मुँह से ढरकि गइल। परान पखेरु उड़ि गइल। अइसन करनी पर हथिया के थाना से इनाम मिलल। हथिया से बिगड़ाह से बिगड़ाह साँढ़ आ भंइसा पार ना पइहें। अइसन अइसन अपूरब बल रहे ओकरा में।

कातिक महीना के भिनुसहरा रहे। ओस के बुन घासी पर मोती लेखा चमकत रहे। जनेरा जोन्हरी के डाठ पात से ओस टप-टप बुनी लेखा टपकत रहे। सिपावा

चलत रहे। हम कुछ संघतिया के साथे फूँट तूरे सरेहि गइल रहीं। चारो तरफ खेत में रखवार रहन सऽ आ हमनो के तुरे के रहे चोराइ के। जनेरा के खेत में धीरे-धीरे माँव बनि के चले आदमी जेमे मचान पर के रखवार के पाता ना लागे। एक जगह अनेकन हरिअर-हरिअर कंचन ककरी के लत्तर लउकल। पिअर गन्हकी रंग लेखा फूल फुलाइल रहे। कतने ककरी में भतीया लागल रहे। कतने लाम-काम खाये जुकुत भइल रहे आ कतने भइल रहे गुरुम्हि आ पाकि के फाटी-फाटी फूँट। हमनी के धोती के खूँट में तावड़-तोड़ तुरत रहीं जा। अतने में हथिया के खोखला के आवाज़ सुनाइ परल। हमनी के प्रान सुखि गइल। डर से पराइल आदमी। बाकीर ड़ाठ के खरखराहट से ओकरा पता चल गइल आऊ लिहलसि पीछिआइ। जादा फूँट-गुरुम्ही हमहीं तुरले रहीं। एह से भागले ना जाइ आ एक जगे ठेस लागि गइल त धड़ाम से गीर गइनी तऽ एके छन में अपना के हथिया के बलिष्ट बाँह के बीच ओकरा कोरा में पवनी। "अरे मालिक तू ककरी-फूँट के चोरी करे आवत बाड़ऽ। राम-राम हम तहरा घरे पहुँचाइ देबि बाबू। काँट कुस गड़ि जाई। अब ले हम अनजान में खुरुपी चलाइ के मारि दिहितीं त गोड़ कटि गइल रहित। कहत हथिया करिया मोट ओठ से चूमा लेबे लागलि। आ हम ओकरा कोरा में मछरी लेखा छटपटात रहीं आ रही एह दाँव में कि मोका लागे त फुर्र से भागि जाइ। ऊ एक छँइटी फूँट आ ककरी लेके हमरा के घरे ले आइलि आ माई के कोरा में देत कहलसि कि "रउंआ अपना बबुआ जी के बान्हि के राखीं मलिकाइन। ई बधार-बधारे चोरी करत फिरत बाड़न। हम इनकरा के रोज फूँट पहुँचाइबि।" तब से हथिया जब दुपहर खा बाधार से घास लेकेआइ त हमरा के ककरी फूँट जरूरे ले आई आ खुरुपी से छीलि छीलि खिआई फिर एकरा बाद अपना घरे जाई। ई ओकर आदत हमेशा रहल। अब बड़ भइला पर भी जब बाहारा से घर जाइबि त मौसम के अनुसार बाधार वाली चीज ले-ले पहुँची आ बइठि के खिलाइ।

एक बेर आँगना में बइठल जीउतिया के ओठघन खात रहीं हथिया बायन लेबे घरे आइलि आ हमरा के खात देखि के पूछलसि कि ई का खात बाड़ऽ बबुआ? ओठघन हथिया हम जबाब दिहनो। आताना छोट ओठघन होला! ऊ बड़ा अचरज कइलसि आ एके तीलि में अपना घर से एगो दूइ सेर के ओठघन लेके आइल आ कहलसि कि एकर नाँव ओठघन ह बबुआ, तूतऽ मोमिआवल रोट खात रहलऽ हा। ल हई खा। ओठघन के जूठ ना छोड़ल जाला आ ना तुरिये के खाइल जाला। एकरा के असही काटि-काटि के खा हमार बाबू"। दूइ सेर के ओठघन आ एके बइठका में, भला हम कइसे खा सकीं। हथिया के पुत्रवत स्नेह हमरा हमेशा मिलल।

ना बेराम ना हेराम। असहीं एक दिन हथिया तिझरा पहर खा बाधारि से घासि लेके घरे आवत रहे। गोड़ में रहरि के खूँटी के ठेस लागि गइल आ ऊ धड़ाम से गरि परलि। पता ना केने से कइसे अइसन मजबूत आ विशाल शरीर से ओकर परान पखेरू फुर्र से उड़ि गइलन। हथिया के जिनिगी के अउर कारनामा लेखा ओकर अइसन सहज मरन भी सभे के अचरज में डालि देलसि।

कविता कुंज

अझुराइल-चिनगी

कागा आधी रतिया के काहे उचराइल ?
सूनी रे सेजरिया प चिनगी लेसाईल !
दुअरा प ठनकेला सजग पहरुआ,
कुंज बन बंसिया के धुन उमगाइल ।
प्रान के चिरइयाँ मझरात में चिहुँक गइली,
आँगना के हँसी-हँसी चाँदनी थिराइल ।
कुल परिवार लेखा डाँटेले पयलिया,
आस के नउनियाँ गइल सकुचाइल ।
उमगल गोपीअन के जिनगी फुलात होई,
हमरे पिरीतिआ के गात कठुआइल ।

× × ×

मोरले डहके लागल जमुना कगरिया,
निठुरी किरिनियाँ ना बात पतिआइल ।
खींचेला पवन मोरा अँचरा कन्हाई लेखा-
राधा के विरह लेखा मन अझुराइल ।

वदेनन्दन

दिया बुत गइल

अचके में तार टूटल मन का सितार के ।
दिया बुत गइल खाके झोंका बयार के ।।
परलय का बदरी से जलधार फूटल
नइया बा मझधार पतवार टूटल ।।
ढिमिलात ढोंका बा ढहि-ढहि अरार के
दिया बुत गइल खाके झोंका बयार के ।।१।।
का जाने केने से आइल अन्हरिया.
दुखिया का सूझे ना दुख में डगरिया
नइखे सहात भार सिर पर पहाड़ के
दिया बुत गइल खाके झोंका बयार के

निनियाँ उचटि गइली बिखरल सपनवाँ
हूक उठल हियरा में हहरे वदनवाँ
लूट ले गइले संचल-कंचन हमार के ?
दिया बुत गइल खाके झोंका बयार के

मन में ना मोह निरमोहिया का आइल
पिंजरा उजार गइले सुगना पराइल
के अस कटारी चलावल संहार के ?
दिया बुत गइल खाके झोंका बयार के

सून भइली गोदी भरल भारती के
हुलसल उतारी कहऽ आरती के ?
हीरा हेरा गइले हमरा अन्हार के
दिया बुत गइल खाके झोंका बयार के

गणेश दत्त किरण

गीत

सझलौका होले आइल इनार पर
आ गोरी आ SSS——-——
बांकी किरिनिया के बोझिल नजरिया।
भरती थकन जइसे ढलती उमरिया !!
चहके चिरइया सब बंसवट-दुआर पर
आ गोरी आ SSSS-------
चन्दा न चमकी अब अँगना गगनवा !
तारन से होई अमा के मिलनवा !!
दियरा जला दे रे तुलसी, मजार पर
आ गोरी आ SSSS------
दिन भर के थाकल पियासल तिमिरवा !
रतिया के अखिया में छाइल मदिरवा !!
संगीत नाचता काजर के धार पर
आ गोरी आ SSSS--------
पनघट पियासल, पियासल बा घटवा !
राधा निकल खोल घूंघट के पटवा !!
वसुधा मचल गइली यमुना किनार पर
आ गोरी आ SSSS-------

श्री राजेन्द्र 'संजय'

ई नयनन के लोर हो

मन के सोचल भाव बह चलल ई नयनन के लोर हो
मन पतंग अँटकल सब खन में
जिन कर सुधि के डोर पर
भाव नदी में बढ़ देख के
थाम्हल आज इइ कोर पर
सकल सहारा पाके अबतके जउन मनहि मन चोर हो
मन के सोचल भाव बह चलल ई नयनन के लोर हो
दिन हफ्ता पख फिनु-फिनु बीतल
चलल आसरा नेह पर
मास बरस देखत युग बीतल
राह जोहते खेह पर
अँटकल प्रान विकल निसदिन रे हिय बान्हल सुधि डोर हो
मन के सोचल भाव बह चलल ई नयनन के लोर हो
बड़ा जतन से रहल जोगावल
दीया एक मजार पर
बार-बार संझा बाती दे
कइली जोत हजार घर
भाख देवता मन्दिर-पूजा के न रहल कुछ ओर हो
मन के सोचल भाव बह चलल ई नयनन के लोर हो
चलल अन्हरिया घेर घुप्प
इञ्जोर मुनायल जाय रे
उड़ल जाय पंछी छप्पर से
जे न उचर कुछ पाय रे
गोंग जाय पर पतरी बाँचे ममता तन झकझोर हो
मन के सोचल भाव बह चलल ई नयनन के लोर हो

—कामेश्वर शर्मा 'नयन'

पिजावऽ तनि

पिजावऽ तनि फेरू तरुअरिया के धार
बाप-बाप कईला से
पाप-पाप गईला से

होखी ना जुलुमवाँ के हार।
आँखि-आँखि लोर बाटे
कहँवा अँजोर बाटे
घरे-घरे होखता लुटार।
जबसे सुराज भइल
अँखिया के लाज गइल
गहिरा में गिरल बा विचार।
जवना समाज लागि
जवना मिजाज लागि
हमनीं मचवनीं जुझार।
नांहि त सुराज फल
चाभि के चुहार दल
देसवा के कर दी उघार।
जब ले चढ़ाई भांग
सूतब पसारि टांग
घरवा से भागि ना अन्हार।

---अशांन्त----

भोजपुरी-त्रिपदियाँ

काकरी जब तोहरा समझे ना कछु आइल
पहुचवलेसि जोन्ही तक विज्ञान लुतुक्का,
बाकिर संका क ओखद बनइ ना पाइल

◆

भीत कालों क आजु हो गइल सिहनी।
बाप ददा दुनियां के सपन वतउलेनि,
जवने के नवछिटिया कहिदिहलेनि किहनी

◆

उ मजा करी जे आपन वोकत बनाई।
नाहीं त सुख कहतूरी खातिर भटकी,
हिरना नियर दउरि-दउरि मरि जाई

◆

अब अइसन झूठ जमाना भइया आइल।
जे ढोल में पोल बनाई इहवां अब ऊ,
मान पाई दुनियां नकली पर धाइल

-- विद्याधर शुक्ल 'विद्यार्थी'

◆

गँवई के दुनियाँ

'अगराइल गँवई के दुनियाँ
पुरवइया ले चललि बदरिया, बरिसत रिम-झिम पनियाँ
ढोल बजावत-गावत बदरा, नाचत सब नइया
हुलसत खेत-बधरिया हरियर, मनगर धेनुगइया
डहुरावति हियरा, झलकावति मुखड़ा रहि-रहि दामिनियाँ
जागल भाग ताल के कोरा नया-नया जिनिगी मुसुकाइल
सगरो देहिं तलइया के गह-गह फूलन ले आजु गुहाइल
बढ़ि आइल मन, पिया मिलन के, अँतिराइल धरती के कनियाँ
ठुम्मुक-ठुम्मुक-ठुमुकत लरिका चिटुकी बजा चुहनियाँ
बुलबुल्लन के घुघुरु बन्हले, छमकति अङना बुनियाँ
हुंक्की पीयति बुढ़िया फूसुकति, ताल मेरावति ओरवनियाँ
टेवत मोछ किसनवाँ ले हर धइले जाला छवरा
टिटिकारत गुदुरावत हाँकत आ गोला आ धवरा
खोंसि अँचरवा काछि कछनियाँ, रोपत धनवाँ रोपनियाँ
मनसायन बाहर-भीतर, ओरमल लुरुगर घन करिया
मोहि गइल पगला गोरियन प, फुचकारी भरि भेंवत सरिया
खेलत घुमरी पेरउआ, झुलुआ झूलै सुरतिगर धनियाँ
बहङोले तिजियां के भैया अइले, मगन बहिनियाँ
गोड़ परत एको ना भुइयाँ आइ पिया सुहगिनियाँ
बाजत सहनाया, दल के दल करत पुज़इआ साजनियाँ
चानी मढ़ल चदरिया ओढ़े, भुइयाँ, भरल अघाइल कोना
साधि बुताइल रसगर धन के धान में लथरल चानी-सोना
"प्रेमी" पनिगर भइल गँवइया, बलिहारी धरती महरनियाँ
अगराइल गँवई के दुनियाँ ॥

—राम बचन सिंह यादव "प्रेमी"

गीत

एक

पिया भेजे पाती
लिख-लिख भेजे. पाती
के विरहिन के आँच जगावे
के विरहिन के काँच तापवे
केकर डहके रोआँ
केकर लहके धुआँ
केकरा से पाती बँचवावे
के के संघाती लिखवावे
के थोरा दुख ढेर करावे
के जोरा के फेर करावे
के जरले वा बाती
पिया भेजे पाती
लिख लिख भेजे पाती
छछनल बाया !
रकटल काया !
अधिको दाया !
कइसन माया ?
ना जाने, ना माने
का जाने ? का जाने ?
चुअत लोर महुआ जस
आँखि लाल टेसुअस
दिन दिन दूबर
अब ना सूघर
के जुड़ाई छाती
के बिताई राती
पिया भेजे पाती
लिख लिख भेजे पाती

तीन

बड़ कड़ा वा जाड़
छेद देता हाड़!
चाम सिकुरल
देह किकुरल
अंगुरिन के पोर—
ठिठुरल
कप-कँपी बा
थर-थरी बा
भइल रोआँ खाड़

× ×

ओठ फाटल
कटल बिधुनल
बड़ी चेहरा खार
उगल चमकता देह सगरी
सुखे सिहुला
दुखे दिनाय
कहाउत मिटा रहल
'फूटे करम त
फूटे बेवाय'
चमक के गइल फाटल

× ×

पछेआ उठल जोर
ललकार
खहरा गइल सब पात
फाटल कुहेसा ओस के
भहरा गइल बरसात
फेंक कठुआइल
खोंता के चेंगना
लटुआइल
जहाँ जे—
ओहि जे पटुआइल
गिरल ठनका खाड़
बड़ कड़ा बा जाड़
छेद देता हाड़

सूर्य्य परमार

गीत

मारे बिजुरिया कटार
बलमु, हिया धड़के हमार
आइल अन्हरिया त रहिया ना लउके
बरिसत बनौरी डगरिया पर छउके
बदरा सतावे हजार
बलमु, हिया धड़के हमार
जियरा में टीसेले मरम के बतिया
धरती- अकसवा लगावेले घतिया
नैना से बरसेला प्यार
बलमु, हिया धड़के हमार
मनवाँ के फुलवा मनहीं कुम्हिलाइल
सूतल सुरतिया के नींदे भुलाइल
जिनगी के रूसल सिँगार
बलमु, हिया धड़के हमार
पिया परदेसे, आइल बरसतिया
दिनवाँ ना भावे, बिरावेले रतिया
लउके ना कवनो अधार
बलमु, हिया धड़के हमार

पाण्डेय चन्द्रविनोद

गीत

जाग हो सिराइ गइली दुखवा क रतिया
नाचेला नगरिया में मोर।
पुरुबे से ललकी किरिनियां क टोलिया
करैलीं सिवनियां अँजोर ॥

हमरी जिनिगिया से देसवा में जोतिया
धरती प हमहीं बिछाईं नित मोतिया
हमरी बखरिया में, खेत खरिहनवा में
उड़ेला अँचरवा क छोर।

डर नाहीं हमके कि लोहवा क छतिया
अपनी मतरिया से हमके पीरितिया
हमरे अँगनवां में तुलसी क चौरा
सरगे से इचिको न थोर।

गंगा औ जमुनवां क निर्मल पनियां
अमिरित पियले बा हमरो जवनियां
माई के मुकुटवा क हमके कसमियां
पोंछबै अजदिया क लोर।
पुरबै से ललकी किरिनियां क टोलिया
करैली सिवनियां अँजोर।

—मधुकर
आजमगढ़

भोजपुर क्षेत्र के कँहारन के कुछ सांकेतिक शब्द

—डॉ सत्यदेव ओझा

भोजपुर क्षेत्र के कँहार जब अपना पालकी पर ले चले ला लोग तब अपना साथिन्ह के आगाह करे खातिर कुछ विशेष शब्द बोले ला लोग। कभी-कभी एकर अर्थं ना जाने वाला भ्रम में पड़ि जाला आ कहे ला लोग जे इ सब पालकी का कनिया के लक्ष कइके हँसी-मजाक करे खातिर आपन शब्दावली बनवले बाड़े स। हम जब अपना गाँव (बड़का सिहनपुरा मु॰ पो॰—जि॰ शाहाबाद) के कँहारन से इ चर्चा कइलीं त उ सब दाँते जिभि कटले आ कहले कि राम! राम! बाबू हमनी के इजति ढोवतानी, यदि तनिको छेछड़ई करबि हमनी का जूता ना खाए के परी। हमनी त हर प्रकार के दुलहिन सब के सुविधा के ध्यान रखिलें पानी-पियास का दिन में ओकरा के पानी धरि के अलग हटि जाईं लें। आड़-अलोत देखि के समुझा देलींजा जे उ हाथ-मुंह धोइलेउ। खैर, एहि सिलसिला में कुछ शब्द के विषय में जानकारी भइल। एह शब्दन्ह के ऊपर विचार कइला से भाषा-वैज्ञानिक तत्व भी शायद हाथ लागि सकेला।

१. मतवाला = हाथी
२. रूपहुला = काँटा, बबूल आदि का। (उजला होखे का नाते)
३. धमिक = गढ़ा (जहाँ आदमी धम्म से गिर पड़े)
४. लोटन या लोटना = ढेला (पड़ल होखे का कारण)
५. पकी लोटन = ईंट, पत्थर
६. पाका ठोकर = फेड़ के सोढ़ि।
७. चरखी = बैलगाड़ी
८. मोर मारऽ = घूमि जा।
९. बाँटि लऽ = पातर राह, आगे पीछे हो जा
१०. बढ़ती राहे = जल्दी चलऽ
११. राम = ठहरि, जा।
१२. जिअऽ = चलत जा।
१३. कटा लऽ = बचाइ के चलऽ

जोतिया से मिलि गइले 'मोतिया' के जोतिया

(स्व० पं० जवाहर लाल जी के स्वर्गवास पर)

केकरा वियोगवा में बरसे नयनवाँ
जमुना में बाढ़ अइले
लोगवा के लोर से,
सून आसमान भरले
रोअला के जोर से,
बजर-करेजा फाटे, बिहरे परनवाँ
केकरा वियोगवा में बरसे नयनवाँ
जोतिया से मिलि गइले
मोतिया के जोतिया,
मिलि गइले सागर से
गंगवाँ के सोतिया,
धरती से उठि गइले धरती के धनवाँ
केकरा वियोगवा में बरसे नयनवाँ
कइसे दो अचके में
लागि गइले अगिया,
जरि-जरि छार भइले
चनन के बगिया,
छूइ के पराई गइले पछेया पवनवाँ
केकरा वियोगवा में बरसे नयनवाँ
दुनिया के देश-देश
भरि गइले शोक से,
सुरुज छपित भइले
इदिमी के लोक से,
छछनेला हिन्द हाय गले हिमवनवाँ
केकरा वियोगवा में बरसे नयनवाँ

—श्रीमती गीता देवी पाठक

मंसा भूत संका डाइन

—ईश्वरी प्रासाद गुप्त, चम्पारन

अपने ई कहाउत सुनले होखेब। मरद मेहरारू का बीच में कभे-कभे छोट-से छोट बात अइसन ना झुलुम जोत देला कि जीवन-मरन के सवाल खड़ा हो जाला। अपने देखल गइल होईं इरानिन मेहरारुअनके जे सहर-बाजार टीसन कचहरी आ धरमसालन मे घूम-घूम के आपन सौदा बेचेलीसन। ओकनी का लगे एगो भीड़ लाग जाला। ढेर लोग त ओकनी के चुस्ती चालाकी देखेला आ कुछ अइसनो लोग होखेला जे ओकनी के सौदा के मोल-जोल करेला आ एकाधे जना खरीदेंले। कहीं कवनो जवान लड़की भेंटल तब त कुछ पूछही के ना। छवारिक लोग भर दिन ओकरा आगा-पछा घूमते रह जाला। हमनी एकनी के इरानी कहीले बाकि ई इरानी ना हवे सन। हमनी कीहाँ जइसे नट-मदारी होखेला वोइसही इहो एगो जात हवे। नट-मदारी दस-बीस जिला तक घूमेला आ एकनी सन दस-बीस मुलुक तक घूम जाला आ इहो सिरकी तनुये जात हवे। जाने-बुझे वाला लोग एकनी के जीपसी कहेला।

बात एक दिन के अइसन भइल कि रामरतन घरे ना रहलें वोही घड़ी दुपहरिया में येगो अइसने छोकरी उनका अंगना आपन माल असबाब बेचे पहुँचल। सौदा देखे-सुने का बेर ओह छोकरिया के नजर रामरतन के मेहरारू का अंगुरी पर पड़ गइल। बाते का रहे, छोकरिया उनका मेहरारू के कलाई पकड़ लेलक। हंसी-मजाक लेखा ना जे तरेह चोर के पकड़ल जाला वोइ तरेह। अबत रामरतन के जनाना का तेरहो तरंगन लउके लागल। रामरतन बहू का मालूम रहे कि एकनी बड़ा झँझटिआह होखेली—बाते में छूरा निकाल के खड़ा हो जालीसन। ऊ आपन हाथ छोड़ावे के बड़ा कस्त कइल बाकी लड़किया के लोहा जइसन पंजा से उनकर कलाई नाहिये छूटल। ऊ खिसिया के कहली-इका हवे ? एकर का माने ?,

'मानी-वानी मैं नही जानती बाई।' ऊ कहलस।

'तू अपना सौदा के दाम लेबू आउर का

'जो सौदा तू ने लिया है, उसकी कीमत लाख-दो लाख होगी।

'लाख-दू लाख। सनकल बाड़ू! कि भांग पी के आइल बाड़ू! तोहरा कुली सौदा के दाम सयो-पचास रोपेया ना होखी।' रामरतन के भौजाई कहली। उहो ओतही खड़ा रही।

'चल, बड़ी जज बन आई! तुम्हें बुलाया किसने ? लइकिया झाड़ देलस। ओकरा बोली पर खिसिया के रामरतन के भौजाई कहली—'बढ़-बढ के बोलतारे, बोलाई नोकर! एके झांपड़ में तोहर सेखी निकल जाई।'

'चल-चल, बड़ी नोकर वाली बनी है। बुला तो जरा देखूं तोरे नौकर को। लइकिया बोलल। येह झोंका-झोरी में अबले अड़ोस-पड़ोस के ढेर जर-जनाना जमा हो गइल।

रामरतन जब घरे पहुंचले त दुआरा से अंगना ले हंगामा देख के उनकर करेज कांप गइल। बुझाइल उनका कवनो किसिम के खतरा हो गइल होय। ऊ हलकाय

पूछले—बात का हवे ? मुदा उनका सवाल के जवाव देने खातीर सभे एक दोसरा के मुंह देखे लागल। रामरतन का त जीव में जीव ना रहे, लोग के ठेलत-ठालत ऊ अंगना पहुँचले। ओतही के तमाशा देखते उनका देह में आग लाग गइल। ऊ उफ़ठाइे बोल पड़लें—'बात का हवे।'

अबले ओह जीपसी छोकरी के नजर रामरतन पर पड़ गइल। ऊ बोललस-'बाबू, तुम भी आ गए ?

रामरतन ओकरा के चिन्हलेलें आ कहलें—'ये डेला तू येतहु पहुंच गइलू!

डेला कहलस—'हमारा तो यही पेशा है। यह घर तुम्हारा तो नहीं बाबू?

'काहे, इ त हमरे घर हवे।'

'और यह औरत ?'

हमार घरनी हई।' रामरतन के जवाब सुनते ढेला उनका जनाना के कलाई छोड़ के हाथ जोड़ के कइलस 'माफ करना बाई, बाबू तुम्हारा सौहर है तो उसपर तेरी भी हकीकत है।'

सभे तमासबीन लोग अवाक रह गइल। भला जवन मेहरारू अइसन ऐस-तैस बन्हले रहे रामरतन का आवते मोम हो गइल। बात का हवे, मने-मने सभे गुने लागल। तरेह-तरेह के बात सोचे लागल। डेला कहलस—'गलती माफ करना बाबू, मुझे बड़ी देर हुई। चली। फिर कल आ जाऊँगी।' रामरतन कुछ बोलस तले ऊ आपन झोरा उठा के चल देलस। ओकरा अंगना से निकलते सभे चल देहलस। रामरतन के कुछ मुंहलगू जनाना सन कह उठली-'बापरे बाप, बात बड़ी दूर ले बा।' केहू कहलस-बुझात बा पुरान दोस्ती हवे।' आ जब उहो लोग चल गइल त रामरतन के मेहरारू मुह फुला के कुप्पा क लेहली रामरतन बोलावत-बोलावत हारे-हार हो गइले बाकि उनकर मेहरारू त खटवास-पतवास ले के पर गइली। रामरतन के सवाल उनका मने में रह गइल। ऊ केकरा से पूछस कि ओह छँवड़ी से काहे हाथा-बांही होखत रहल हवे। रामरतन के सजी मनुहार बेकार-उनका घरनी के जबान नाहिए खुलली, घर नरक भ गइल, मन के हुलास मर गइल। घर आ घरनी रामरतन के काटे खातीर दौड़े लागल।

राम राम कहत दोसर दिन भइल आ फेनु दुपहरिया आइल। राम रतन का बुझात रहे कि ऊ छवड़ी उनका मेहरारु पर कवनो किसिम के जोग तन्तर क देले बा। येही मारे ऊ बेचैनी से ओह छँवड़ी के राह देखत रहस। ठीक ओही बेरा ऊ छवड़ी पहुँचल। ओकरा आवते राम रतन के जनाना महटिया के कोठरी में समाये लगली, बाकी राम-रतन उनकर हाथ पकड़ के ठहरा लेले आ छुटले डेला से पूछलें—का रे डेला, तू कवन जादो मार गइले कि हमरा घरनी के बोली बन हो गइल बा ?' डोला हँस देलस आ कहलस—मैं क्या करू' बाबू, मैंने फजुल ही बाई को तंग कर डाला। मुझे इसका अफसोस है बाई! मुझे माफ करो।' डेला राम रतन के जनाना के कान्ह पर हाथ रख के कहलस।

चुप रह वेलज्जी, हमरा आँख का आन्हा चल जो।' राम रतन के मेहरारू खीसे मात के कहली।

'समझो। बाई, गुस्सा न करो। बाबू ने मेरी मरती माँ की जान बचाई है। हम उनका अहशान नहीं भूल सकते।' डेला के बात सुन के राम रतन बहू अपना मालिक ओर तकली। डेला कहत गइल—'बाई, वह अंगूठी जो तुम्हारी अंगुली में है।'

कहत-कहत/ डेला राम रतन बहु के अंगुरी के कोर निहरलक। बाकि ऊ अंगूठी ना लउकल। ऊ तड़ाक से पूछ पड़ल—बाई, वह अंगूठी क्या हुई? वह बड़ी कीमत की है लाख, दो लाख में भी वह नहीं मिलने को। उसे रखा कहाँ बाई कहत-कहत डेला रो देहलस।

'बाई, सच बता उसे फेंक दिया? वह करामाती है, मैंने उसे बाबू को अपनी माँ की जान की कीमत में दिया है।' कहत कहत डेला ओढ़नी में आपन लोर पोछलस आ फेनु कहे लागल—बाबू ने महीने भर दिन रात मेहनत कर मेरी माँ को बचाया था। वह अंगूठी सोने की कीमत में भी नहीं मिल पाएगी—उसमें हमारा खानदानी जौहर है।'

ओकरा आँख के लोर रामरतन से ना देखल गइल—ऊ कहलन—त, तू ओके देबे काहे कइलू?

'बाबू, तुम ने ही तो इनाम मांगा था। उस वक्त मेरे पास उसके सिवा दूसरा था ही क्या? समझी, तुमने मजाक किया। लेकिन मेरा भी तो फर्ज था। मैंने उसे मजबूर होकर नहीं दिया, खुले दिल से दिया। तू ने जिस कदर हमें खुश किया, इस अंगूठी को पहन कर तू उस से भी अधिक खुश होगा! वह इन जिप्सियों की खान्दानी चीज है।' मुसकत-मुसकत छँवड़ी कहलस। बुझाइल। इहे जादो नु अपना लागल बा। लोग जे कहेला-भंखा डाइन, संका भूत। कवनो झूठ ना हवे। करेज कवनो खीरा-ककरी ना हवे कि चीर के देखा दीं।' राम रतन कहलन।

'चलीं-चलीं ई दोसरा के सीखाएब। एह बाजारु औरतन के कवन ठेकान।' रामरतन बहू अपना सामी से कहली।

'इलजाम मत लगाओ बाई। हम जिप्सी औरतें जान पर खेलकर अपनी अस्मत बचाती हैं। हम बाजारू हैं लेकिन अस्मतफरोस नहीं।' खीसे डेला के मुंह लाल हो गइल। पान के पतइन जइसन ठोर थरथर काँपे लागल आ ओही मतले डेला कह पड़ली-अस्मत बाजार का सौदा नहीं कि पैसों से उसे खरीदा जा सके। बाई, मैं अग्नि-परीक्षा भी दे सकती हूँ।'

'बात जन बनाव, तोहनी के त किरिया मांगल हवे।' रामरतन बहू ठेसरी मरली।

'क्या कहा? मैं बातूनी नहीं बाई, ला आग। मैं तुम्हें अपनी सच्चाई दिखाकर ही दम लूँगी।' कहत ऊ छँवड़ी आपन सजो सामान छोड़ के घिघिआइले बहरा चल गइल।

घड़ी छन में ऊ हाथ में हरिहर हरिहर पीपर के पता लेके आइल। ऊ घिघिआइले बोलल—बाई, हमारा देवता आग है। ला आग के सोले और मेरी हथेली पर रखदे। अगर मैं ने अपनी अस्मत लुटाई है तो हमारा देवता मुझे हरगिज माफ नहीं कर सकेगा और फफोले उठकर ही रहेंगे।' ओकर बात सुन के रामरतन बहू चट से चुल्ही में से एगो लमहर अंगार निकाल ले अइली आ रामरतन के हें-हें कइलो पर भी ओकरा तरहथी पर धइये देली। डेला हँस के कहलस—'बाई, बारी-बारी से तुम्हें भी अपनी सफाई देनी होगी।' तरहथी पर पीपर के पता आ ओ पर आग के अंगोरा तेहु पर डेला के चेहरा पर तनिको सिकन ना आइल आ देखते देखते आग का धाह से पता मुख गइल आ धनके लागल। डेला हँस के कहलस-बाई, देख अब भी तुम्हें सुबहा है। हम खानाबदोश औरतें अपना सौदा बेचती हैं, अस्मत, नहीं।' ऊ अंगोरा के तरहथी पर से गिरा के रामरतन बहू का सोझा हाथ पसार के मुड़ी हिलावे लागल। घर के सभे इ तमाशा देख के हरान रह गइल। रामरतन बहु अंगूठी ले आके रामरतन का अंगुरी में पेन्हा देली आ डेला के भर अँकवार ध लेली।

गीत

सुसुकल कोइलिया

आमवां के बगिया में, सुसुकल कोइलिया,
बिखरल जिनिगिया के राग;
लहरल बसुरिया के तान।

पिपरा, पकड़िया-महुइया के पतवा,
लहरे बेयरिया में गोर जइसे हाथवा;
आमवां प मोजर के चमके मउरिया,
भवँरा सुनावे मीठा गान।

हँस-हँस के कनखी सनइया चलावे,
तितली धधाइल गुलाबवा प आवे,
धरती के हरियर चुनरिया प छलिया;
चाँनवां चलावे नैना-बान।
रंगवा अबीरवा से भींजल नगरिया,
रसवा से उमड़ल बिहँसे बजरिया;
बिरही गुजरिया के उमगल जवनियां;
रहि-रहि हहरे परान।

जउवा रहरिया गेहूँ सरिसउवा,
चानवां, मटरवा लेतरिया सुगउवा;
झन्-झन्-झन् ढेढ़ियन के पायल बजावे;
खेतिहर के यही में जहान।

कुहुकी कोइलिया सनेहिया जगावे,
सबके पीरितिया के गीतिया सिखावे;
अचके में दुखवा के टकसल अन्हरिया;
देशवा में लउकेला बिहार।

—प्रफूल्लचन्द्र द्विवेदी एम० ए०

जगनिक क 'आल्हा'

—सूर्य परमार

बारहवीं सदी में राजपूतन के तीन गो गढ़ दिल्ली, कनौज आ महोवा वड़ा मशहूर रहे। दिल्ली में पृथ्वीराज, कनौज में जयचन्द आ महोबा में परमाल के वीरता के झंडा उड़त रहे। ओह घरी राजा पृथ्वीराज के दरबारी 'कवि चन्दबरदाई, आ राजा परमाल के 'जगनिक' रहस। दूनो जना के समय एके रहे। दूनो कवि के 'अल्हा' वीर से सम्पर्क रहे। एह से दूनो कवि 'आल्हा' के वीरता प कविता लिखले। जगनिक के 'आल्ह राइछो' आ चन्दवरदाई के 'पृथ्वीराज रासो' के देखला पर इ ना बुझाय कि केवन कवन कवि के ह। नामे से फरक पावल जाता। अइसे त इतिहास का गड़बड़ी से ई सद्ग्रन्थन के समय पऽ प्रकाशन ना हो सकल रहे। मियाँ लोगिन के संकुचित दायरा में आके कतना हिन्दू वीर-काव्यन के पता ठेकान भूला गइल। भरसक ऊ लोग जरा देत रहे भा नदी-नाला में नोंच खसोट के फेंक देत रहे। तवनो पऽ कुछ ग्रन्थ छिपल मिल जाता। अइसने इ ग्रन्थ 'आल्ह-राइछो' इऽ। 'आल्ह-राइछौं के आखिरी पन्ना से बुझाता कि-"कातिक वदि ३० सोमे सं० १९१० वि० इति श्री 'आल्ह-राइछो' सम्पूर्ण समाप्त। ई ग्रन्थ तब खतम भइल रहे।

पूरा किताब यूद्ध के बरनन से भरल बा। आल्हा का साथे-साथे ढेर वीरन के वीरताई कूट-कूट के रखल बा। इतिहास कहेला कि महोबा आ दिल्ली जबले राजपूतन का पासे रहल तबले लड़ते रहलन। आल्हा बुन्देला रहन ऊ परमाल के सेना में रहत रहन। कुछ खट-पट माहिल क चलते भइल त खिसिया के भाई उदल आ मातारी देवल दे का साथे पृथ्वीराज किहा दिल्ली चल गइले। आल्हा के वीरताई से खुश होके पृथ्वीराज आल्हा के 'गाय गुवाल' के पदवी देले रहस। राजा परमाल का ओरि से आल्हा के वीरताई प 'मंडरिक' के पदवो मिलल रहे। जगनिक भाँट रहन आ कविता कहल-गावल उनकर जिनगी रहे। आपन काव्य में जगनिक आल्हा से एक जगे कहताड़े-'मंडरिक जी रउरा बिना सउसे महोबा के फउद अइसन बा जइसे बे दुलहा के बरात होखे।

तीस लाख असवार लै, चढ़ आयो चौहान;
थेर महोबे कौ परौ, डेरा र्गाह गौहान,
श्री राजा परमाल के, के तिन साहिन संग;
निकट महोबे के परौ, करो नहीं सफ जंग।
बड़ी फौज दखिन गई, सात लाख है सात ;
सो सबरी फीको लगे, दुल्हा बिना बारात।

जवना समय आल्हा कनौज में जयचन्द का पासे आइल रहस ओही समय राजा परमाल किहा से आल्हा के बोलावल गइल। आल्हा जाए से नकरले त अदल कहताड़े—

राजा सब साथी दिये, हाथी चार हजार;
वीर दिये सब फौज ते, तीन लाख असवार।

जब कनोज से आल्हा-ऊदल के बिदाई होने लागल त जगानिक कहताड़े।

त्रेता ते जुग तीन गे, सबलग जस सरसात।
रहत न कोऊजमत में, रहत कहन को बात।

कनौज के जुवराज के नाम 'लाखन' रहे। जंगर प्रान्त के जीत का बाद आल्हा ऊदल का संगे ऊहो चलले।

आए गंजर देस ते, पाँच लाख असवार;
हरसिंघ, वीरसिंघ, घूरना; पूरन कौन उवार।

× × ×

नाव बसाई लखनऊ, सौ पत लाखन बार;
सुन मंडरिक उठ ठाड़ भै, नै कै करौ जुहार।

× × ×

गज बाज साज दसराज कौ, गल गज्यौ सजधार कौ;
दलकत भुव, छलकत समुद, सो वलकत आवत मार कौ।

'कनखेरे' एगो जगह में आके आल्हा एगो पाती राजा परमाल का पासे आपन नजदीकी दूत से पेठवलन—

तव जगनायक राय, बिने बनाफर पऽकरयौ;
दीजे खबर पठाय, पाती राजा को 'लिखौ।

× × ×

आल्हा पाती लिखी जाय परमालहिं दिज्जै।
काने पहँचे आय राय, कुछ फिकर न किज्जै।
धावन पहँचो जाय, पाती राजा को दई
सिरो पाँव मंगवाय, पकरयो आप हजुर ही।
राजा ने पाती लई, ब्रह्मै लयो बुलाय,
नदी बेत वे तीर प, मंडरिक पहुँचौ आय।

आल्हा-ऊदल का लाखन सब सरदारन का संघे खुशी मनावत जोम से आगे बढ़त चलल जात रहे लोग। रात होखे त महफिलो जमे, नाचो होखे। पृथ्वीराज के भेदिया लोग एकर सभ खबर लेत रहत रहे। भेदिया जाके पृथ्वीराज के दल के वीरन चामुण्ड राय आ धाँधू के खबर देलस कि राते में धावा बोलल ठीक होई—

हैं सरदार बत्तीस, जुदी-जुरी मिसलें लिये;
कुरीं जुरीं छत्तीस, सब सिरधानी नाच में।

× × ×

जुदीं जुदीं फौजें परीं, इकट्ठे सब सिरदार'
ते सबहिं चलै हैं नाच में छोर धरे हथियार।

लड़ाई ठनतीया तब ओकर दृश्य जागनिक अवरू साफ कविता में कइले बाड़े।

हम सौं यहय जुरि गये, भिरत दन्ती सौं दन्ती,
असुवारे असुवार, खेत आये अनगन्ती।

ढालन भयो ढकेल, सेल्ह सोगन बैजुन्ती,
खैंचत लाल कमान, खुलत कानन के मुन्ती।

× × ×

भई नाच में अलल कुरज डेरन कौं भंजै,
दिये दुदुभी बजवाय लोग सोवत जग संजै।
आपुन-आपुन मिसल बाँध, गोलन भये ठाढ़े,
कुटत कनवज कटक, हटक होइ लोत न आढ़े।

× × ×

भोर असरार भाई, बेतवा के तीर-तीर
तीर बरसैं जैसे, बुन्द सरवर कौं,
चौंड़ लीन्हों चाँप जब ऊदल के घेरो जुझो
सिंघा की उफाल आयो, सिंघा पर वर कौ
सेल्ह सौ ढकेल पेलु मेल्यो भीर जुवा जिमि
गिरते गिरत टूट, पेड़ तरवर कौ
करियो उपराला धाय, धाँध लीन्ही घे
राखो गजन गुरेरे, गज ते नरवर कौं।

× × ×

जुध खतम भइला पर आल्हा आपन बाँचल फऊद का साथे बेतवा नदी में असनान कइले। —

बेतवे में असनान करि, बहुदान दये करि ठाकुर सेवा।
लागे है लोग रसोइन कौ तहाँ, भोग लगायो मँगायो मेवा।
जेंवबे कौं सरदार जुरैं जिवना भई है तैयार कलेवा।
सिंग सिया कौ लिये अपने में, चली मुहरा चढ़ डोलन देवा।

महोबा के जुवराज ब्रह्मजीत कीरत सागर का पासे आल्हा-ऊदल, लाखन, वीरमाता देवल दे आ सभ फउद के खुल के स्वागत-सत्कार कइलन। जब आल्हा महल में गइले त रानी मल्हन दे परमाल राजा के स्त्री खूबे स्वागत कइली। राजा परमाल हिरदे से लगा लेलन आ माला पेन्हा देलन। आल्हा के इनाम में एक हजार गाँव अउर सै मन सोना मिलल।

कवि जगनिक क ई 'आल्ह-राइछौ' एहि जे खतम हो जाता।

भूलल विसरल

करुणा क्रन्दन

—प्रि० मनोरंजन प्रसाद सिंह

[सन् १६२१ ई० में जब मनोरंजन जी चंपारन में एक राष्ट्रीय कार्य-कर्त्ता का रूप में काम करत रहस, एह गीत के रचना भइल। उहवाँ हिमालय का शिखर के दर्शन के सुअवसर कवि का मिलल और एह रचना वास्ते प्रेरणा भी जहाँ तक हमरा पता बाटे, ई रचना अबहीं छपल नइखे। हम विहार राष्ट्र भाषा परिषद का "चौबे संग्रह" से ई रचना लेके इहाँ छाप रहल बानी —संपादक]

आजहुँ उतरवा हिमालय विराजेला हो।
भारत तोरे शिर शुभ्र मुकुट छवि छाजेला हो॥
आजहुँ निश दिन सागर चरण पखारेला हो।
गंगा रे जमुनवाँ के धार अजहुँ गले धारेला हो॥
सरयू गोदावरी के नीर अजहुँ लहरावेला हो।
अवध वृन्दावन के कुंज अवहुँ मन भावेला हो॥
राम किशुन के सुरतिया अवहुँ जिया भावेला हो।
करि वोही दिनवा के याद नयन भरि आवेला हो॥
बोलू रे भारत बोलू तोर का हाल भइल।
रहल जे लछमी के लाल कइसे कंगाल भइल॥
अब हम भइलों पराधीन विदेसिया के राज भइल।
कवन कहों हम बात आज जे हाल भइल॥
लुट गइल सब धन धाम विदेशवा में माल गइल।
हाय रे अभागिन के लाल आज कंगाल भइल॥
माई के नाम गुनाह धर्म सब पाप भइल।
कहवाँ के विदेसिया चंडाल माई अरू बाप भइल॥
परल टिकसवा के बोझ धरमवा के खून भइल।
तेहु पर जुलुमी कानून घाव पर नून भइल॥
आज पंजाबवा के याद करेजवा के सालेला।
अपने लड़िकवन के खून हृदय के उबालेला हो॥
देखि सरकारवा के न्याय आस मोरा टूट गइल।
परलीं अधरमी के हाथ करम मोरा फूट गइल॥

ढालन भयो ढकेल, सेल्ह सोगन बेज़ुन्ती,
खेंचत लाल कमान, खुलत कानन के मुन्ती।

× × ×

भई नाच में अलल कुरज डेरन कौं भंजे,
दिये दुंदुभी बजवाय लोग सोवत जग संजे।
आपुन-आपुन मिसल बाँध, गोलन भये ठाढ़े,
कुटत कनवज कटक, हटक होड़ लोत न आढ़े।

× × ×

भोर असरार भाई, वेतवा के तीर-तीर
तीर बरसैं जैसे, बुन्द सरवर कौं,
चौंड़ लीन्हों चाँप जब ऊदल के घेरौ जुझो
सिंघा की उफाल आयो, सिंघा पर वर को
सेल्ह सौ ढकेल पेलु मेल्यो भीर जुवा जिमि
गिरतें गिरत टूट, पेड़ तरवर को
करियो उपराला धाय, धाँध लीन्ही घे
राखौ गजन गुरेरे, गज ते नरवर कौं।

× × ×

जुध खतम भइला पर आल्हा आपन बाँचल फऊद का साथे वेतवा नदी में असनान कइले।—

बेतवे में असनान करि, बहुदान दये करि ठाकुर सेवा।
लागे है लोग रसोइन कौ तहाँ, भोग लगायो मँगायो मेवा।
जेंवबे कौं सरदार जुरैं जिवना भई है तैयार कलेवा।
सिंग सिया कौ लिये अपने में, चली मुहरा चढ़ डोलन देवा।

महोबा के जुवराज ब्रह्मजीत कीरत सागर का पासे आल्हा-ऊदल, लाखन, वीरमाता देवल दे आ सभ फउद के खुल के स्वागत-सत्कार कइलन। जब आल्हा महल में गइले त रानी मल्हन दे परमाल राजा के स्त्री खूबे स्वागत कइली। राजा परमाल हिरदे से लगा लेलन आ माला पेन्हा देलन। आल्हा के इनाम में एक हजार गाँव अवरू से मन सोना मिलल।

कवि जगनिक क ई 'आल्ह-राइछो' एहि जे खतम हो जाता।

करुणा क्रन्दन

—प्रि० मनोरंजन प्रसाद सिंह

[सन् १६२१ ई० में जब मनोरंजन जी चंपारन में एक राष्ट्रीय कार्य-कर्त्ता का रूप में काम करत रहस, एह गीत के रचना भइल। उहवाँ हिमालय का शिखर के दर्शन के सुअवसर कवि का मिलल और एह रचना वास्ते प्रेरणा भी जहाँ तक हमरा पता बाटे, ई रचना अबहीं छपल नइखे। हम बिहार राष्ट्र भाषा परिषद का "चौबे संग्रह" से ई रचना लेके इहाँ छाप रहल बानी —संपादक]

आजहुँ उतरवा हिमालय विराजेला हो।
भारत तोरे शिर शुभ्र मुकुट छवि छाजेला हो॥
आजहुँ निश दिन सागर चरण पखारेला हो।
गंगा रे जमुनवाँ के धार अजहुँ गले धारेला हो॥
सरयू गोदावरी के नीर अजहुँ लहरावेला हो।
अवध वृन्दावन के कुंज अबहुँ मन भावेला हो॥
राम किशुन के सुरतिया अबहुँ जिया भावेला हो।
करि वोही दिनवा के याद नयन भरि आवेला हो॥
बोलू रे भारत बोलू तोर का हाल भइल।
रहल जे लछमी के लाल कइसे कंगाल भइल॥
अब हम भइलीं पराधीन विदेसिया के राज भइल।
कवन कहीं हम बात आज जे हाल भइल॥
लुट गइल सब धन धाम विदेशवा में माल गइल।
हाय रे अभागिन के लाल आज कंगाल भइल॥
माई के नाम गुनाह धर्म सब पाप भइल।
कहवाँ के विदेसिया चंडाल भाई अरू बाप भइल॥
परल टिकसवा के बोझ धरमवा के खून भइल।
तेहु पर जुलुमी कानून घाव पर नून भइल॥
आज पंजाबवा के याद करेजवा के सालेला।
अपने लड़िकवन के खून हृदय के उबालेला हो॥
देखि सरकारवा के न्याय आस मोरा टूट गइल।
परलीं अधरमी के हाथ करम मोरा फूट गइल॥

चार रे ओर भइले अन्हार पंथ नाहीं सुझेला हो।
भइले सब पूत कपूत दरद नाहीं बूझेला हो॥
धरू धरू भारत धीर देश अब जाग गइल।
रहे ढेर लोगनि के आस सभे विपरीत भइल॥
अबहुँ न एकमत होत कवन विश्वास करीं।
होइबि अब मोर उधार एकर कवन आस करीं॥
जब सब कोई होई एक तबहीं कल्याण होई।
तबहीं हमार सहाय स्वयं भगवान होई॥
टूटि परु हिमगिरि साज हिन्द सिर चूर करु।
अब दुख भइल असाध वेगि तू दूर करू॥
आउ आउ सिन्धु तरंग गरभवा लीन करु।
सरबस देहुँ डूबाय अतुल जल लीन करू॥
पूरब गौरववा के चिन्ह कवनो नाहीं शेष रहे।
मिटि जाये नाम निशान, नाहीं कछु लेश रहे॥

बरसात

बिछिली भइल, बरसात के डगरिया
उमड़ि-घुमड़ मेघ आइ गइले नियरा,
मेघवा के देखि-देखि हुलसेला हियरा,

घरे-घर ढुलुहा प उठली कजरिया
बिछिली भइल, बरसात के डगरिया
गँवे-गँवे गोड़ धरे धरती प गोरिया,
इनरधनुहिया के लटकल डोरिया,

लपटि के सटि गइले अँगवा से सरिया
बिछिली भइल, बरसात के डगरिया
खेत के सिंगार भइले हरवा के फार से,
तनमें अँजोर अइले मनवाँ के प्यार से,

पुरइन–पतवा प लगली नजरिया
बिछिली भइल, बरसात के डगरिया
बरखा के चोट, खाके ढहले पगरिया
ढहि-ढहि बहे रोज गंगा के अरारिया,

लोरवा में डूबि गइले अलका नगरिया
बिछिली भइल बरसात के डगरिया

रामनाथ पाठक 'प्रयायी'

टीपन

विश्वनाथ प्रसाद, एडवोकेट, मोतीहारी

हाथ में जेकरा साँप लिपटल बा; जेकरा जटा से होकर गंगा बहल बाड़ी ; जे अपने भांग, धतूर खाके अपना भगत के सब कुछ देवे वाला हवन ; ऊ शंकर जी जेकरा के देख के हुलसित हो जालन ; से माता पार्वती के आशीर्वाद से हमर लेख अच्छा होखे।

टीपन के ऊपर पिछला लेख में हम लिख चुकल बानी कि ओकर बनावे में का रहस्य बा। अब टीपन में जे अंक लिखल जाला ; ऊ काहे से सुनी। मान लीं कि रउआ टीपन में जे बारह खण्ड बा ओमे से जे ठीक रउआ सामने खण्ड बा ओमे आठ लिखल बा। तारा-राशि के जे क्रम बा से, ए लेखा बा—मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ, मीन। ई क्रम निश्चित बा। तब देखीं, आठवाँ वृश्चिक पड़ल। आठ लिखला के मतलब भइल कि राउर लग्न वृश्चिक भइल। टीपन देखब तब मालूम होइ कि उ बारह खण्ड में बँटल बा। हर खण्ड तीस डिग्री के मानल जाला। लग्न में वृश्चिक भइल तब दोसरे स्थान भइल—धनु। ऊँहा लिखाई नव। अपना हाथ में टीपन रखीं। देखीं पहला स्थान में कौन अंक बा। जे रउआ आँख का सामने ठीक बाटे ; ऊहे पहिला स्थान ह। ओमे जौन अंक लिखल होखे ऊ अंक से ऊ कौन स्थान भइल ; से तारा-राशि के नाम जे ऊपर लिखल बा ; ओमे देख के निर्णय कर लीं। अगर आठ लिखल बा तब ठीक ओकरा बायें वाला खण्ड में नव लिखल होई। उ स्थान होई—धनु। तीसरा दस में लिखल होई। उ स्थान होई—मकर। चोथा में ग्यारह लिखल होई—उ स्थान होई कुम्भ। पँचवा में बारह लिखल होई ; उ स्थान होई—मीन। छठा में एक लिखल होई। उ स्थान होई—मेष। सातवाँ में दू लिखल होई। उ होई—वृष। फेर आठवाँ में तीन, नौवाँ मे चार, दसवाँ में पाँच, ग्यारवाँ में छ और बारहवाँ में सात लिखल होई आउर उ स्थान सब क्रमशः मिथुन कर्क, सिंह, कन्या, आउर तुला होई। ईहे मतलब ह टीपन में जे अंक लिखल रहेला सेकर। अब देखीं ग्रह नव गो बाड़न। सूर्य्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि राहु केतु। अंगरेज जोतिस लोग दुगो नया ग्रह के पता लगवलक ह—हर्शेल आउर प्लुटो। लेकिन हमनी कीहां उ प्रचलित नइखे ओकर बात छोड़ीं।

हँ, त ईहे नव ग्रह जे बा से टीपन मे रहेला। एकर कौनो निश्चित क्रम नइखे। जौना घड़ी राउर जनम भइल ओ घड़ी जौना स्थान पर ई ग्रह रहे से अंकित हो गइल। अब ए में चन्द्रमा जौन स्थान पर रहल ; उ राउर राशि भइल। मानलीं राउर लग्न

बृश्चिक ह आउर पहिला खण्ड में आठ लिखल बा। फेर जहाँ बारह अंक लिखल बा, ऊँहा चन्द्रमा बा। तब राउर राशि मीन भइल। लग्न वृश्चिक और राशि मीन। लग्न पर देखीं कौनो ग्रह बा कि ना। बुध, वृहस्पति, शुक्र ओर चन्द्रमा शुभ-ग्रह मानल गइल बा। मंगल, शनि पाप—ग्रह मानल गइल बा। राहु, केतु छाया का ऐसन ह। कौनो ग्रह का साथ ना रहला पर एकनी के पाप—ग्रह मानल जाला। आउर अगर एकनी का कौनो ग्रह का साथे बाड़न सन तब एकनी का ओकरे अनुरूप फल देवें वाला हो जालन सन्।

अब देखीं, लग्न पर कौन ग्रह बा। वृहस्पति ? बड़ा अच्छा बा।

लग्न से तन के और राशि से मन के विचार होखेला। खग्न पर वृहस्पति बा तब देह हाथ अपने के सुडौल होई। तनि मोटा, ताजा हाड़ ओ चाल ढाल में बड़ा गम्भीरता होई। सफाई स्वच्छता पसन्द करब। राशि मीन बा ? कल्पना-शक्ति खूब होई। दूर दृग के उड़ान भरब। कविता, कला, साहित्य में खूब मन लागी।

—क्रमशः

अँजोर के विज्ञापन-दर

कभर के चौथा पन्ना—१२५)

„ तीसरा पन्ना—१००,

साधारण पन्ना - ७५)

„ आधा पन्ना—५५)

„ चौथाई पन्ना—३५)

भोजपुरी मुहावरे

१ तरकुल के छाँह भइल—अपर्याप्त सहायता या शरण मिलना।
२ तरवा चटकल—अचानक किसी आशंका से सचेत होजाना। छनकना।
३ अत्यंत प्यास लगना। किसी वस्तु की उत्कट अभिलाषा होना।
४ ताखा पर धइल—किसी वस्तु को उपेक्षा करना। टाल देना। ध्यान नहीं देना।
५ ताथा धइल—टाल मटोल करना
६ तान तूरल—दिखावटी नाज-नखरा करना।
७ ताना परसे कटल – कन्ने पर से कट जाना। पहँच के बाहर हो जना।
८ तापि गइल— सर्वास्व स्वहा कर देना। सब खर्च करदेना।
९ ताल ठोकन—ललकारना। वसंत-पंचमी के दिन होली-गायन का प्रारंभ होना।
१० तास जागल—उत्तेजित होना।
११ तीसी तेल ना रहल—निस्सार होना।
१२ तूरि के बोलल—ऐंठ कर बोलना, स्पष्ट कहदेना।
१३ तूल बेसाहल—झंझट मोल लेना।
१४ तूल कइल—परेशानी बढ़ाना।
१५ तेल लगावल—खुशामद करना।
१६ तेल बेल भइल—साँठ-गाँठ होना।
१७ तोख बोध कइल—समझाना-बुझाना।
१८ तोन फेंकल—अत्यधिक मोटा होना।
१९ तोर-मोर कइल—अपना और बेगाने का भाव प्रदर्शन करना। झगड़ा करना।
२० थपरी पीटल—उपहास करना; ठट्ठा उड़ाना; लांछित करना।
२१ थरिया भुलइला पर गगरी में ढूँढ़ल—विपत्ति में मतिभ्रम होना।
२२ थाप गइल—साख न रहना।
२३ थासे छोड़ल—किसी कार्य से एक दम विमुख होजाना।
२४ थूकि के चाटल—हेय समझ कर त्यागी हुई वस्तु को फिर से ग्रहण करना।
२५ थूके सातू सानल—साधन का अत्यन्त अभाव होना। असंभव काम के संपादन का प्रयास करना।

खखनल (वि०)— अप्राप्त वस्तु के लिए अत्यन्त लालायित।

खखाइल (वि०)—बहुत दिनों से किसी वस्तु के लिए उत्कंठित।

खखुआइल वि०)—उतावला। (क्रि०) झल्लाहट के साथ व्यवहार करना।

खँखोरी—पात्र में सटे हुए दूध या दही का खुरचा हुआ अंश।

खगड़ा—पत्ते सहित ताड़ की डाली।

खँचिया, खँचोली—बाँस की पतीलियों या झउआ से निर्मित एक विशेष प्रकार की टोकरी।

खँजड़ी—चमड़ा मढ़ा हाथ से बजने वाला एक वाद्य विशेष।

खजुली, खझुली—खुजली। खाजे की तरह बनी हुई एक प्रकार की मिठाई।

खटकिन—बेशर्म और ढीठ स्त्री।

खटनी—कठिन परिश्रम।

खटपट—परस्पर बिगाड़।

खटपर—शय्याग्रस्त।

खटमीठी—आम या इमली की गुड़ डाली हुई चटनी या अँचार।

खटोली, खटोली—छोटी तथा हल्की खटिया।

खटतरोई—एक प्रकार की बरसाती तरकारी।

खड़खड़िया—एक प्रकार की पालकी।

खँड़लिच - पच्छी विशेष (खंजन)

खँड, खँड़ि—घर से लगा हुआ या बाहरी वह भाग जहाँ केवल पुरुष वर्ग एवं मवेशी तथा गृहस्थी के साज-सामान रहते हैं।

खँड़ेरा - बेसन की बनी एक प्रकार की तरकारी।

खदर-बदर (वि०) बहुसंख्यक।

खनदान—खाना।

खदोना—पत्ते का बना हुआ दोना।

खधुक—ऋण लेने वाला।

खधोर (वि०) अधिक मात्रा में भोजन करने वाला।

खन—छन क्षण)

खन्ता—वह स्थान जहाँ की मिट्टी काट कर हटा दी गई है।

खनहन (वि०)—चुस्त-दुरुस्त। नीरोग।

खन्हार, खन्होर—पानी की धारा से कटी हुई भूमि

खरई—खर, एक प्रकार का तृण विशेष।

खरकटल - (वि०)—जिस पात्र या पदार्थ में चिपकी कुछ गंदी, रुखड़ी, सूखी तथा आसानी से न छूटने वाली वस्तु हो

खरकोंच—खरोंच।

लोक गीत

सोहनी के गीत

(१)

ननदी का अङ्गना सिरिसिआ, त सेहु कइसे सोएले हो राम।
अहर झहर करे डाढ़, त निनिओ ना आवेला हो राम।
जरि से कटइबो सिरिसिआ, त पलङ्ग डँसाइब हो राम।
ओही पर सोइहें मोरा बालम, कइसे के जगाइव हो राम।
सासु मोरा सोएली अटरिया त ननद, गज ऊपर ए राम।
सँइआ मोरा सुतले महलिआ, त कइसे जगाइब हो राम।
उठू उठू ननदी छुलाछन, सँइया के जगा देहु हो राम।
चारु कोनन चोर मूसेला, दिअरा धरावेला हो राम।
हम होइबो जल के मछरिआ, जलहि रहि जाइब हो राम।
प्रभु मोरा जइहें असनान, चरन लपटाइव हो राम।
हम होइबो बन के कोइलिआ, बनहि रह जाइब ए राम।
प्रभु मोरा जइहें सिकार, त सबद सुनाइब हो राम।
अब ना जलम सुख पाइब, एही जग में आइब हो राम।
काया पुर करबों मकान, माया में लपटाइब हो राम।

× × ×

(२)

खेलइत रहलों में सुपली मउनिआ, राम हिअरा में देखो।
आइ गइले अवचक नियार, राम हियरा में देखो॥
बाबा दिन फेरले राम भइआ दिन फेरले, राम हियरा में देखो।
भउजी निदरदी धरले हो निआर, राम हियरा में देखो॥
केसिआ बढवले जोगी धुँइआ जमवले, राम० ।
अपने चलले पर हो देश, राम० ॥
अपने त जाले प्राभु पुरुबी बनिजिआ, राम० ।
हमें कुछुओ कहिओ ना जास राम० ॥
तोहरा त बाड़े धनी नइहर के लोगवा, राम० ।
हमरा कोइअ सङ ना साथ राम० ॥
गवना के धोतिआ मलिनो नाहीं भइले, राम।
अइले मुअनिआ के समाद, राम० ॥

× × ×

बरसाती

(३)

लागले हिड़ोलवा अवध पुर, जहाँ झूले लछुमन राम। टेक
गायाजी में झूलले हो गजाधर, झाड़ी खंड बाबा बैजनाथ।
गोखुला में झूलले हो कन्हइआ जी, कासी में बाबा विश्वनाथ॥

× × ×

(४)

हरवा जोतते हरवहवा रे भइआ, टुटि गइले हरवा के टोड़ हो।
पनिआ भरत राम गागर फुटेला, नहीं बाड़े तिरिआ के दोस हो॥
छोटकी ननदिआ हो विखिके धरिअवा, दउरल भइआ किहाँ जाय हो।
तोहरे तिरिअवा भइआ मधुआ के मातल, गागर फोरि फोरि देल हो॥
आवे देह ननदो हो जेठ बइसखवा, धइ देबो तोहरो निआर हो।
घइला के बतिआ के ननदो सालेला करेजवा, कता दिन रहबू छतर छाँह हो॥
बाबा जे देहले गाइ रे भँइसिआ, भइआ देहले हंसराज घोड़ हो।
आमा जे दिहली लहरा पटोरवा, भउजो दिहली खोइछा धान हो।
मरि हरि जइहें गाइ रे भँइसिआ, मरि जइहें हँसराज घोड़ हो॥
फाटि चिटि जइहें लहरा पटोरवा, गड़इत जइहें खोंइछा धान हो।
बाबा कहेले बेटी काज परोजन, भइआ कहले छव मास हो॥
आमा कहेली बेटी नित उठि अइह, भउजो कहली दूर जासु।
घइला के बतिआ हे ननदो सालेला करेजवा, कतादिन रहबू छतर छाँह॥

× × ×

(५)

गड़िआ बएलवा मोर सउतिनिआ भइली
पिअवा के मोरङवा भेजली ए राम।
मुअहुँ बढ़इआ तोरो जेठ पुतवा,
जिनि मोरा गड़िआ के जलमवा देहल हो राम।
चरखा त काति पिअवा खरची चलइबो,
नथिआ बेंचि के पिआ फेरि द तबगिआ हो राम।

× × ×

संग्रहकर्त्ता—गणेश चौबे

चम्पारण के भ्रमणशील जातिः नट

ले० तारकेश्वर प्रसाद, मोतिहारी

संसार के हर देश में खुछ असन लोग वा जेकरा घर दुआर नइखे आ इ लोग घुमते फिरते आपन जिन्दगो बितावेला। एह लोग के घर दुआर साथ ही रहेला। विदेस में एह लोग के जिप्सी कहल जाला। भारतवर्ष में अइसन कइठो जात पावल जाला। भोजपुरी क्षेत्र अइसन जात के प्रधान अड्डा ह काहे कि एह क्षेत्र में खेती खूब होला बा इ लोग ज्यादेतर भीख मांगेला या छोट मोट काम करेला जेकरा वास्ते इ क्षेत्र वहुत उपयुक्त बा। अइसन जात में नट एक ठो वहुत मशहुर जात वा। इ लोग एह क्षेत्र में बहुत बा। गांवन के बगीचा सब में एह लोग के डेरा पड़ेला आ इ लोग विसेस कर के खिरकी के घर वनावेला जे चले के बेरा फेर समेट के फेर दोसरा जगह खड़ा कर दिआला। मुर्गा, बकरी त खाये के काम में आवेला, घोड़ी आ भैंस एक जगह से दोसरा जगह सामान ढोए के काम में आवेला। एह जाव में कुछ विसेसता वा जेकर संक्षिप्त वरनन एह लेख में दिहल जा रहल बा।

इ लोग अपना पैदाइस के जे कहानी बनावेला से वहुत रोचक बा। कहानी सुनी'। कवनो देस में दू ठो वहिन रहे जेकर नाम हिरनी आ विरनी रहे। दूनो वहिन के उमर विआह के हो गइल मगर ओह लोग के विआह ना होखत रहे। उ लोग अपना गांव के लालू राउत से एक ठो भैंस के पाड़ा लेकर के पोसले रहे। उ पाड़ा अब सेआन हो गइल रहे। ओह लोग के परन रहे कि जे एहभैंसा के पटक दी ओकरे से हमनी का विआह करब। वहुत लोग आ के किस्मत अजमवलख मगर कोई से भैंसा ना पटका सकल। तव उ दूनो वहिन चितौरगढ़ के राजा पोसन सिंह के दरवार में गइल। दरबार में दूनो वहिन चुनौती देली। केतना दरवारी लोग भी आपन किस्मत आजमा के हार गइल। जब केहुना पटक सकल तब राजा पोसन सिंह खुद अपने भैंसा से भिड़ गइलन। राजा-पोसन सिंह भैंसा के पटक के अपना जनेउ से ओकरा के नाथ देहलन। अब अपना वादा के मुताविक दूनो वहिन हिरनो आ विरनो के सादो राजा पोसन सिंह से भइल। राजा इ दूनो वहिन के अलग महल वनवा के रखलन। एह दूनो वहिन से राजा का पाँच ठो वेटा भइल। उनका अपना रानी लोग से नव ठो बेटा रहे। राजा के मरला के वाद चौदहो बेटा में जायदाद के वास्ते झगड़ा लागल। राजा के पहिलका घर के लड़िका लोग इ पांचो भाइ के एक ठो हिसा देवे के चाहत रहे। आखिर में पंचायती भइल आ सब का बरावरे हिसा लागल। फिर भी उ नवो भाईं मिलकर के इ पाँचो भाई के जात से छांट दिहल लोग। एह लोग से बरावर लड़ाई झगड़ा भी लागले रहे। अब बहुत मजबूर होकर के इ पांचो भाईं घर छोड़ देहल लोग आ कहों भी असथीर ना रहल लोग। नट लोग कहेला कि ओही पांचो भाई के वंसज इ लोग ह आ आजतक इ लोग घुमते बा। चूंकि जनेउ से राजा पोसन सिंह भैंस के नथलन एह से इ लोग जनेउ ना पहिरे। मगर अब तक अपना के इ लोग क्षत्रिय कहेला। सिखा भी वहुत कम इ लोग रखेला मगर हिन्दू देवी

देवता के इ लोग मानेला आ बाकी ओर जातन अइसन पूजा पाठ भी करेला। गोरेआ बाबा एह लोग के मुख्य देवता हवन जिनका के बकरा, मुरगा आ सूअर चढ़ावल जाला आ चढ़वला के बाद ओकर मांस खाइल जाला। एह घड़ी नट लोग के कइ ठो साखा-पावल जाला जेह में मुख्य बा (१) लठवार (२) कोड़रिया (३) थवई (४) बबुना-(५) मुसलमानी नट। पहिलका चारो नट हिन्दु ह आ सब रसम रेवाज हिन्दु के अइसन बा जब कि एह लोग के आपन भी कुछ रसम रेवाज भी बा। लठवार आ कोड़रिया नट लोग सांप, बन्दर आ भालु पोसेला जेकरा के देखा कर के तथा बन्दर भाल के नाच देखा करके पैसा उपारजन करेला। इ लोग जादू के तमासा, गिरहबाजी आ कसरत देखा के भी पैसा कमाला। थवई नट जानवर में विसेस करके घोड़ा आ गदहा पोसेला आ जाता, सिलवट के तेजारत करेला लोगे। बबुना नट-सारंगी., खंजड़ी आ ढोल बजा-बजा के आल्हा, भरथरी, बनजरना वगैरह के गीत गावत चलेला। मुसलमानी नट मिलल जुलल सब काम करेला। एह लोगन के औरत सब भी कुछ काम करेला आ गांवन में गोदना गोदे के काम मुख्य बा। ओह घड़ी वहुत शृंगारिक गीत गावल जाला। जवना गांव में एह लोग के डेरा परेला उहाँ इ लोग के छोटमुट महल्ला वस जाला आ अपना जरुरत के सब सामान इ लोग साथहीं लेले घुमेला। अब धीरे-धीरे दोसरा काम के तरफ भी बढ़ रहल बा लोग मगर अभी भी वहुत कम एह लोग के घर पावल जाला। अगर कोई-कोई घर बना भी लेले बा तब भी ओहं में रहे के मौका बहुत कम मिलेला। चम्पारण में एह लोग के टोली विसेस करके पावल जाला। धान के कटनी के बेरा उत्तर चम्पारण थरुहट आ बहास में इ लोग ज्यादे घुमेला। नेपाल तराई तक इ लोग दौड़ मारेला। चूंकि इ लोग घुमते रहेला एह से एह लोग के कोई एक ठो भांसा असथायी रूप से नइखे फेर भी चम्पारण के नट लोग बा तहां के वोली भासा अपना ले ले बा। सिक्छा (शिचा) के परचार एह जात में वहुत कम बा मगर अब कहीं कहीं पढ़ल लिखल नट भी पावल जाला। चम्पारण जिला में नट लोग के संख्या पांच छव हजार के लगभग बा। जिला के कोना कोना में इ लोग घुमते रहेला। गन्डक नदी पार कर के छपरा आ गोरखपुर तक भी चल जाला लोग। अब एह लोग के सांस्कृतिक जीवन के कुछ झांकी देखी। अल्हा, विहुला, नाएक वनजरवा, कुआरविजई वगैरह बड़का वड़का गाथा गीत गावेला लोग। औरत सब भी गीत गावेली जेह में सोहर आ झूमर के विसेस असथान बा। एह लोग के गीत खासकर के सिंगीरिक होला आ असलीलता के दोस से मुक्त ना रो छोट छोट लड़की सब के भी गीत सुनल जाला कि घर घर गावत चली—

'अरे मोरवा रे झनकि बोलिया बोल''

चाहे ''छोटी मुटि सुइआ रे जाली के मोरा काढ़ ना''। इ दुनो पंक्तियन के पुरना गीत बहुत असलील बाड़न स। नीचे कुछ गीत दिआत बा जे शुद्ध भोजपुरी में बा। —

''कजरवा रे दईआ बड़ा दुख देला,
सुरमा जो रहिते धोइ धाइ डलतों,
कजरवा रे दईआ फइलि फइलि जाय,
मुँहवा के दगिया सईंआ का ना भावे
पानी मलि मलि धोइ धोइ जाय।''

अर्थ साफ़ बा। दोसर गीत देखीं—

छव महिना बेटी रजलो, रजलो के मइआ मरि हो जाय।
बरहा बरिस लों दुधवा पिअवलो, रजलो मोगलवा से हो लोभाय,
गेहुँआ के रजलो रोटिआ बनवली, उपर से मुरगिआ के रे झोर,
जेवहिं बइठले उहो मोगलवा, रजलो बेनिआ हो डोलाय,
सूप अइसन दाढ़ी मोगलवा के, बरधा अइसन आंख,
ओही मुहें लिहलन मोगल चुमवां, रजलो के छुठल उकलाय।"

इ गीत पर मोगल कालीन समय के छाप वा आ नटिन सब एह गीत के बहुत चाव से भाव बता बता के गावेली। एक ठो दोसर गीत देखीं जे नट समाज में बहुत लोकप्रिय बा विसेस कर के स्त्री समाज में।

'जब हम पेन्हलो चोली मोरे सईंआ सेजिआ पर खोली—
झमा झम वाजे हो मोरा सारी,
मोरा अंगना में बेला मोरा सईंआ अलबेला—झमा झम०
तावा में डललों रोटी सईंआ के जरि गेल गोटी—'
मोरा अंगना में करसी मोरा ननद भतार बिनु तरसी—"

अर्थ त साफे बा। उपर वाला गीत सब नटिन लोग औरतन के गोदना गोदत समय भी गावेला आ एह तरह से भी गा गा के मनोविनोद—करेला। सोहर में कोई खास विसेसता नइखे आ जे सोहर हमनों के समाज में परचलित बा उहे उ लोग भी गावेला। कहीं कहीं दू चार सबदन के हेर फेर रहेला।

राजा पोसन सिंह जेकरा के नट लोग आपन आदि पुरूष मानेला उनका-सम्बन्ध में भी गीत परचलित बा जेकरा के बहुत सरधा के साथ—गावल जाला। गीत बहुत बड़ा बा ओकर कुछ अंस देखीं:—

"पोसन पोसन सुनिले रे ननदी
राम कइसन हउ पोसन के सुरतिआ हे राम,
जइसन हउ चांद के सुरतिआ
ओइसन हउ पोसन के सुरतिआ हे राम,
जइसन हउ आम के फँकवा
ओइसन हउ पोसन के दुनो अँखवा हे राम,
जइसन हउ सुगा के ठोरवा,
ओइसन हउ पोसन के ओठवा हे राम।"

× × × × × ×

एही तरह से जांघ, पीठ, पैर, हांथ आदि के भी वरनन वा।

नट गीत में रामपतिया आ भागमती के गीत बहुत मसहूर वा। इ गीत सव बहुत लम्बा बा एह से इहां ना दिआ सकत बा। इ गीत सव खास कर के प्रेमगीत ह आ दोसरा लेख में ओकर वरनन कइल जाई। उपर के लेख आ गीत से पता चल जाई कि नट लोग जदपि पिछड़ल बा मगर उ लोग उपेछित बा आ हमनीं के समाज के एक अङ्ग ह।

संपादक के विचार

एह अंक से अँजोर के पाँचवा साल सुरू हो जाई। प्रभु का किरपा से, लेखकन, पाठकन आ गाहकन का छोह से कइसहूँ चार बरिस तक 'अँजोर' कठिन से कठिन संकट में पड़ि के भी आपन अँजोर बिखेरते गइल। एह पत्र का प्रकाशन में बराबर ध्यान रखाइल कि पत्रिका के स्तर नीचे ना गिरे पावे। एह में कहाँतक हमनी का कामियाबी हासिल कइलीं इ त पत्रिके बताई।

गाँहकन के ध्यान में इ बात ले अइलीं जा कि आपन आपन चन्दा के रकम भेजीं बाकी एह ओर केहू ध्यान ना दिहले। अभी भी अँजोर पर आर्थिक संकट मँडराता। कुछ सरकारी सहायता सेहू नावें भरि आ कुछ आपन खरच जुटा के इ पत्रिका चलि रहल बा अँजोर के प्रेमी भाइ लोग से इहे अरज बा कि ऐसन ना होखे कि पत्रिका के प्रकाशन बन हो जाय।

अँजोर कौनो व्यवसायी आ पूँजीपति के पत्र ना ह। व्यापार के विचार से निकाले के रहित त इ एक साल ना चलीत। पत्रिका के स्तर निवाहे खातिर वोइसन लेख कविता कहानी वगैरह के जुटान होखे तब न पत्रिका निकले। भले देर से निकले बाकी चीजु नीक रहे। इ बात केहू भाई समुझत नइखे। सब समुझता कि हमरा पास लेख कविता वोगैरह के खजाना भरल बा। पत्रिका निकले में देर भइल कि नाना प्रकार के चिठ्ठी लिखाये लागता। केहू डाँटि के लिखता केहू दुगो नीक जबून भी लिख भेजता। अँजोर कौनो समाचार पत्र ना ह। एकरा से भोजपुरी साहित्य के निर्माण हो रहल बा। साल आ महीना लिखइला से अँजोर के प्रकाशित रचनन के मोल घटि ना जाई। अँजोर के कौनो अंक कभी भी पढ़ल जा सकेला। देश के बड़े-बड़े विद्वानन का ओर से एकर मंगाहट आवता। कभी कवनो अंक पुरान ना होई। पत्रिका निकले में जे कठिनाई बा उ त हमनीये का बूझतानी। उमीद बा कि अँजोर के प्रेमी एकरा पर ध्यान दीहें। बहुत सोचि समझि के रचनन पर ध्यान देके पत्र निकालल जाला। पत्रिका अपनही सब के ह। एकरा के बढ़ावे खातिर नित उपाय करे के चाहीं।

सरकारी मदति अगर पूरा मिलि जाइत तबो इ पत्रिका निकाले में कौनो अड़चन ना पड़ित। इ बात साबित हो गइल बा कि राष्ट्र भाषा हिन्दी के उन्नति में इ पत्रिका लाभदायक सिद्ध भइल। पाण्डेय जी आपन सर्वस लगा के इ पत्रिका चलावतानी एह से लोग का भरम बा कि उनकर इ खास पत्रिका ह। इ बात बिलकुल ना ह। परिवार के लोग का ढिलाई से उनका पर बहुत भार पड़ गइल बा। हमनी का चाहीं कि उनकर भार हल्का कई दीं, ना त अइसे क दिन आ कैसे चली।

—अरविन्द

स्व० पं० जवाहरलाल नेहरू

स्व० जवाहर लाल जी का बैकुंठवास से भारते के ना दुनियो के एगो महान व्यक्ति के अभाव खलता। जवाहरलाल जी युग निर्माता रहलीं हाँ, आ इतिहास बताई

कि भारत खातिर अपने का आपन सर्वस कैसे त्याग देलीं। ऐसन महान नेता, कबहियें कबही एह दुनिया में आवेले। जीवन के हर क्षेत्र में अपने के व्यक्तित्व के प्रभाव पड़ल। अपने के खो के आजु देश टुअर हो गइल। अपने के कीर्ति के बखान कइल सूरुज के दीया देखावल बा। ऐसन जन-प्रिय नेता के आत्मा के भगवान सद्गति आ हमनी के उनकर बतावल राहपर चले के सामरथ देसु।

भोजपुरी साहित्य।

भोजपुरी के चर्चा आजु काल्ह जोर से चलता। सिनेमा का जरिये भोजपुरी के जे प्रचार होता उ सन्तोष जनक नइखे। भोजपुरी साहित्य के निर्माण होखे के चाहीं। हर विषय पर किताब लिखाइत। पत्र पत्रिका भी निकलित। सभा सोसाइटी त होखते बा। एकरा ओर केहू के ध्यान नइखे जात। बहुत सा अप्रकाशित रचना पड़ल बाड़ी। इन्हन के प्रकाशित करे के चाहीं। अब त सभे देख लिहल कि भोजपुरी भाषा कतना पुष्ट और समृद्ध बा।

अखिल भारतीय भोजपुरी सम्मेलन देस में एगो कायम होखे के चाहीं। भले ओकर शाखा प्रशाखा और जगह बने। काशी में अखिल भारतवर्षीय भोजपुरी सम्मेलन भइल हा। बगसर में भी एगो ऐसनके संस्था बा जेकरा भवन खातिर कुअर नरेन्द्र बहादुर जी दू कठ्ठा जमीन चरित्रवन में दान स्वरूप दीहलीं हाँ। डा० स्वामी जी का परिश्रम से काशी में भी ऐसने भोजपुरी भवन बने के खबर बा। वहाँ से साहित्य प्रकाशन भी होई। जहाँ तहाँ से कवि लेखक लोग के रचना कभी कभी-कभी देखे के मिली जाता। एह से इ बुझाता कि भोजपुरी साहित्य के भविष्य बड़ा होनहार बा। भोजपुरी भाई लोग से एह बात के अरज बा कि साहित्य निर्माण में लोग जुटि जाई नाहीं त एकेले दुकेले कहीं इ काम ना हो सकी।

—पाण्डेय नरमदेश्वर सहाय

पुस्तक परिचय

(१) भोजपुरी लोक गीतों के विविध रूप—ले० श्रीधर मिश्र एम० ए० खालसा कॉलेज बम्बई १८४ पन्ना, दाम ४) प्रकाशन, प्रकाश प्रिंटिंग वर्क्स इ क्लाइव रोड इलाहाबाद। इ पुस्तक मिश्र जी के गम्भीर अध्ययन के फल ह भोजपुरी लोक गीत के नाना प्रकार के रूप ए में बा। लोक साहित्य के ऐसन पुस्तक लिखला खातिर मिश्र जी बधाई के पात्र बानी।

(२) हिमालय ना झुकी कबहूं (भोजपुरी काव्य)—श्री मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध' चतुरी चाचा। चौसठ पन्ना। दाम एक रुपया प्र० हिन्दी परिषद। आशापुर चितबड़गाँव, बलिया बिपत का बेरा में सब में उत्साह भरेके काम बा। चीन का ओर से ऐसन परिस्थिति पैदा कइल गइल बा कि ओकरा मुकाबिला खातिर हमेशा हमनी का तैयार रहे के चाहीं। चतुरी चाचा के विद्वता आ लेखनी के लोहा भोजपुरीए संसार ना हिन्दी साहित्य भी मनलेबा। कवितन के पढ़ि के मोछि पर ताव अपने दिया जाता आ जांघ पर ताल ठोका जाता। एक एक लाइन वीर रस से पागल बा ऐसन रचना खातिर बधाई।

(३) विकास (भोजपुरी काव्य)—ले० मुन्नीलाल (शाहाबाद) नचाप दाम सैतिस नया पइसा ह कवितन के संग्रह ह। नीमन प्रयास बा। पढ़े लायक और सुन्दर।

(४) सुरतिया ना बिसरे (रेखा चित्र संग्रह) ले० रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक' प्र० जमशेदपुर भोजपुरी परिषद दाम १.५० न. पै.। ओझाजी के कलमि के कमाल एह में जगह जगह लउकता रेखाचित्र एक से एक सुन्दर बनि पड़ल बा। भोजपुरी साहित्य के एगो बड़ा अभाव पूरा भइल।

झुरुकि बहेना (भोजपुरी कविता संग्रह) ले० रामवृक्ष राय 'विधुर' प्र० अंतरग्रामीण सुहृद साहित्य गोष्ठी गाजीपुर बलिया। दाम सौ नया पैसा। विधुर' जी भोजपुरी संसार के नामी गरामी लेखक आकवि हवे। झुरुकि बहेना में बहुत सुन्दर कविता बाड़ीसन। भाषा, भाव सब सुन्दर बा।

चतुर्मुख (त्रैमासिक) प्र० हिन्दी साहित्य परिषद सिकन्दर पुर बलिया सालाना चन्दा २-५० न० पै० एह अँक के ६५ न० पै०। सम्पादक झड़प जी से हिन्दी संसार परिचित बा। चतुर्मुख हिन्दी साहित्य के एक अभाव के पूर्ती करत बा। लोक कविता आलोचना ऊँचा दरजा के बा। भोजपुरी में भी एक आध गो लेख रहता। छपाई, साफ आ प्रकाशन सुन्दर बा।

रुक जा बदरा (भोजपुरी गीत) ले० मधुकर सिंह प्र० यशदा प्रकाशन आरा दाम १ रु०। रुकजा बदरा एह बात के संकेत करता कि भोजपुरी में नाना प्रकार के रचना हो रहल बा। इ खण्ड काव्य ह। और फुटकर गीत भी बा। रचना सुन्दर बाड़ीसन। प्रकाशन भी बड़ा सुन्दर भइल बा।

वार्षिकी—१९·६३-६४ साहित्य संकलन प्र० नवयुवक पुस्तकालय मोतिहारी—पहले भी अँजोर में एके चर्चा कइल गइल बा। मोतिहारी से निकलेवाली इ पत्रिका वहाँके साहित्य के प्रगति के आदर्श स्थापित करता। लेख कविता, कहानी सब सुन्दर बा छपाई भी साफ सुन्दर आ मनमोहक बा।

"अँजोर" के नियम

१ "अँजोर" में छपे खातिर जे भी रचना भेजल जाय ओकर प्रतिलिपि अपना पास जरूर राख लिहल जाय। प्रकाशित रचना भेजे के कृपा मत कइल जाय।

२ कौनो लेख, कविता, प्रश्न, चित्र आदि के छापे या ना छापे के आ काटे छाँटे के पूरा अधिकार सम्पादक के रही।

३ "अँजोर" में बिना नाँव गाँव के मुलाहिज़ा कइले, रचनन के उत्तमता पर अधिक ध्यान दिहल जाई।

४ पन्ना के एक ओर लेख लिखाये के चाहीं, भाव आ भाषा पर ध्यान त राखहीं के चाहीं। जहां तक होखे लेखन के काया छोटे होखे के चाहीं।

५ "अँजोर" के गाहक कवनो अंक से बनावल जा सकेला। जवना महीना में दाम आ जाई ओही महीना से गाहक समझल जाई।

६ स्थायी गाहक भाई चिट्ठी पत्री लिखत खानी आपन गाहक संख्या जरूर लिखसु। एक बरिस के चन्दा भेजि के जे गाहक बनिहें उहे भाई स्थायी गाहक कहइहें।

७ रचना, मनीआर्डर, व्यवस्था सम्बन्धी पूछताछ के पत्र सम्पादक के पता से भेजे के चाहीं

८ आलोचना खातिर पुस्तक के द प्रति भेजेके चाहीं।

घोषणा-पत्र

१ प्रकाशन-स्थान — पटना।

२ प्रकाशन की नियत कालिता—त्रैमासिक।

३ मुद्रक का नाम—पाण्डेय नर्म्मदेश्वर सहाय।
राष्ट्रीयता—भारतीय।
पता—सालिमपुर अहरा, पटना ३।

४ प्रकाशक का नाम - पाण्डेय नर्म्मदेश्वर सहाय।
राष्ट्रीयता—भारतीय।
पता—संचालक, भोजपुरी परिवार, सालिमपुर अहरा, पटना ३

५ संपादक का नाम—पाण्डेय नर्म्मदेश्वर सहाय।
राष्ट्रीयता—भारतीय।
पता—सालिमपुर अहरा, पटना ३।

६ समाचार पत्र के मालिकों और कुलपुंजी के एक प्रतिशत से अधिक शेयर वाले साझेदार या शेयरधारियों के नाम और पत्ते—पाण्डेय नर्म्मदेश्वर सहाय, सालिमपुर अहरा, पटना-३

मैं पाण्डेय नर्म्मदेश्वर सहाय, इसके द्वारा घोषित करता हूँ कि ऊपर दिये गये ब्योरे जहाँ तक मेरी जानकारी और विश्वाश है, सही हैं।

ह० पाण्डेय नर्म्मदेश्वर सहाय

माँ अपने पुत्र पर गौरव करती है

पिता अत्यन्त चिन्तित है ?

उनका पुत्र गत माध्यमिक विद्यालय परीक्षा में ६५ प्रतिशत से अधिक नम्बरों से उत्तीर्ण हुआ है ।

निःसंदेह यह परिवार में खुशी का अवसर है। परन्तु पिता उस समुद्र में गोते लगा रहे हैं। जहाँ यह उसके समझ में नहीं आता कि वह कैसे अपने पुत्र से कहे कि उसके पास कॉलेज के पढ़ाई के लिए रुपये नहीं है।

अगर पिता में दूरदर्शिता होती तो निश्चय ही १५ वर्षीय वार्षिकी प्रमाण-पत्र खरीद कर, जिससे उसे निश्चित रूप से प्रतिमास पुत्र के पढ़ाई के खर्च के लिए रुपये प्राप्त होते तथा इस चिंता से मुक्त रहते।

यह १५ वर्षीय वार्षिकी प्रमाणपत्र के खरीदने के दो तरीके हैं :—

१ किसी भी समय एक मुश्त १३३०/-, ३३२५/-, ६६५०/-, १३३००/ या २६,६००/- व्यय करने से प्रति मास क्रमशः १०, २५, ५०, १०० और २००/- रुपये मूल एवं सूद सहित पन्द्रह वर्षों तक प्राप्त किया जा सकता है जो पढ़ाई के लिए सर्वश्रेष्ठ तरीका है।

२ दूसरा तरीका यह है कि प्रति मास अपने आय में से ५, १०, २०, ५०, १००, २०० तथा ३०० रुपये सर्वाधिक चक्रवृद्धि जमा का खाता खोलकर डाकघर में ५, १०, १५ वर्षों तक जमा किया जाय जिससे अवधि के पूर्ण होने पर एक साथ बड़ी रकम को प्राप्त किया जा सकता है। प्रत्येक माह ५० रुपये जमा करने से ५, १० तथा १५ वर्ष में ३२५० रु०, ७२५० रु० और १२५०० रु० क्रमशः मिलेगी। इस पर जो सूद प्राप्त की जायगी वह आयकर एवं सम्पत्ति कर से मुक्त होगी।

इस तरह से प्राप्त धन की बड़ी रकम को ५, १० या १५ वर्षों के बाद उपरोक्त १५ वर्षीय वार्षिकी प्रमाण-पत्र खरीदने में लगाया जा सकता है जिससे प्रति मास निश्चित आय की जा सकती है। यह सभी तरह के लोगों के लिए उपयुक्त है।

अपने सन्तान के भविष्य को अनिश्चित पर न छोड़िये। उनके लिये कुछ करें। जितना भी साधन हो आप सर्वाधिक चक्रवृद्धि जमा के खाते में जमा करें जिसमें आप को आयकर में छूट की सुविधा भी उपलब्ध है।

विशेष जानकारी के लिये निम्नांकित जगहों से सूचना प्राप्त करें :—

१ अपने समीपवर्ती डाकघर से।

२ राष्ट्रीय बचत कार्यपालक पदाधिकारी, पटना, मुजफ्फरपुर हजारीबाग, धनबाद, रांची, चाईबासा तथा आरा से।

३ सभी अनुमंडलों में राष्ट्रीय बचत पर्यवेक्षकों से।

४ राष्ट्रीय बचत संस्था से।

प्रचारित विशेष पदाधिकारी, राष्ट्रीय बचत, बिहार सरकार पटना द्वारा।

[बिहार सरकार द्वारा विद्यालयों एवं पुस्तकालयों के लिए स्वीकृत]

अँजोर

[भोजपुरी परिवार (पटना के त्रैमासिक मुख-पत्र]

*

जामें रस कछु होत है ताहि पढ़त सब कोय
भाव अनूठो चाहिए भाषा कोऊ होय

—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

*

प्रधान सम्पादक

पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय

कला-५
अक्टूबर
जनवरी

किरिनि ३-४
१९६४ ई०
१९६५ ई०

संरक्षक

श्री अम्बिका शरण सिंह, राज्य-मंत्री, बिहार।

सम्पादक मंडल

रामबचन द्विवेदी 'अरविन्द,' रासबिहारी राय शर्मा, गणेश चौबे,
प्रो॰ बसंत कुमार, रामनाथ पाठक 'प्रणयी'

सहायक सम्पादक

श्री अविनाश चन्द्र विद्यार्थी

एह अंक में पढ़ी—

पन्ना

१ भइल अँजोर (कविता)—संत धरनीदास १
२ संत धरनीदास (निबंध)—प्रो॰ रामबुझावन सिंह २
नया साल (कविता)—रामनाथ पाठक 'प्रणयी' ६
३ गँवई के भूत (कहानी)—बच्चन पाण्डेय 'मुक्त' ७
✓ ४ बउध-लीला (प्रबन्ध काव्य)—स्वामी विमलानन्द सरस्वती ९
५ भोजपुर के जातिन्ह के देवी देवता (निबंध) प्रो॰ डा॰ सत्यदेव ओझा १३
नया साल (कविता)—सीता सुन्दर देवि 'प्रियंवदा' १७
६ आँवा के आगि (कहानी)—विजेन्द्र लाल 'अनिल' १८
७ उत्तरी सीमा के रक्षक बाबा सोमेश्वर नाथ—ज्वाला प्रसाद श्रीवास्तव २१
८ पनिहारिन के चार सवाल (लोक कथा)—शैलेन्द्र किशोर चौबे २३
कैसे दूँ (कविता)—महेन्द्र शास्त्री २५
९ मन के बात (कविता)—प्रभुनाथ शर्मा २६
१० भोजपुरी में क्रिया के रूप (भोजपुरी व्याकरण)—विन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव २७
११ परदा रहे दीं (कविता)—धीरेन्द्र प्रसाद सिनहा 'अचल' ३१
१२ अँजोर (निबंध)—कुमारी माधुरी श्रीवास्तव ३३
१३ भोजपुरी पर हिन्दी के निबन्ध एवं सन्दर्भ ग्रन्थ—गणेश चौबे ३४
१४ भोजपुरी मुहावरे ३६
१५ भोजपुरी शब्दकोश ३७
१६ पुस्तक परिचय ३८
१७ सम्पादक के विचार ३९

प्रकाशक भोजपुरी परिवार, पटना—३

'तमसो मा ज्योतिर्गमय'

अँजोर

धरती के लोर बाट जोहि रहल भोर के,
पह फाटल, बिहँसी अब किरिनियाँ 'अँजोर' के।

कला–५ | अक्टूबर १९६४—जनवरी १९६५ | किरिनि ३–४

भइल अँजोर

सुख कहल न जाय दुख दुखिया।
गइल अन्हर पख भइल अँजोर। मै गैला भजन मगन मनमोर ॥
निशि दिन रटत रोअत चलि जाय। गृह आंगन वन कछु न सोहाय ॥
ई दुख जनिहै बिरला कोय। ऐसन दुखरा परल जेहि होय ॥
सुख हित नर कर कोटि उपाय। धरनि के दुख हित सुख न सोहाय ॥

— शब्द प्रकाश : संत धरनीदास

भोजपुरी का अमर गायक

संत धरनीदास

—प्रो० राम बुझावन सिंह

भोजपुरी बोली के प्रदेश को अनेकानेक महापुरुषों की जन्म-भूमि अथवा कर्मभूमि होने का गौरव प्राप्त है। इसी की गोद में मुगल बादशाह हुमायूं को परास्त करनेवाले वीर पठान शेरखाँ, ब्रिटिश साम्राज्य से जूझनेवाले बाबू कुँअर सिंह तथा पाखण्डों पर तीखे प्रहार करने वाले 'आदि संत' कबीर ने जन्म धारण किया। इसी के अंचल सारनाथ में महात्मा बुद्ध ने सर्वप्रथम वह उपदेश दिया जिसकी गूंज दिग्दिगन्त में फैली। कबीर के बाद जो निरगुनिया संतों की परम्परा चली, उसके कई प्रमुख संत एवं कवि किसी-न-किसी रूप में भोजपुरी बोली एवं प्रदेश से सम्बद्ध रहे हैं। ऐसे संत कवियों की शृंखला बड़ी लम्बी है जिसकी कुछेक प्रमुख कड़ियां हैं—रटना (जिला गाजीपुर) के निवासी संत रामानन्द, बीरू साहब, भुरकुड़ा (गाजीपुर) के निवासी बूला साहब तथा गुलाल साहब, आजमगढ़-निवासी भीखा साहब, फैजाबाद-जिला-निवासी पलटू दास, गाजीपुर-निवासी संत दुखहरन, चंदवार-निवासी (बलिया) संत शिव नारायण, अघोर पंथी कीनाराम (बनारस), दरिया दास, मांझी-निवासी (सारन) संत धरनीदास, सखी-संप्रदाय के प्रवर्त्तक अमनौर-निवासी (सारन) 'लछिमी सखी' आदि।[1] इनकी रचनाओं में भोजपुरी भाषा का लालित्य जिस रूप में निखरा-बिखरा है वह आज भी काव्य-रसिकों एवं भाषाविदों को समान रूप से अपनी ओर आकृष्ट करता है। यहाँ एक ऐसे ही संत कवि का संक्षिप्त परिचय—उसके दो-एक भोजपुरी पदों के साथ—प्रस्तुत है जो हमारे उक्त कथन के प्रमाणस्वरूप होंगे। वे हैं—संत धरनीदास।

सरयू नदी के दाएँ तट पर छपरे से ग्यारह मील पश्चिम मांझी नामक एक ऐतिहासिक स्थान है। धरनीदास के पितामह टिकैत दास इसी नगर के निवासी थे। यह कायस्थ परिवार वैष्णव मतानुयायी और राज के ऊँचे पदों पर प्रतिष्ठित होने के कारण काफी मशहूर भी था। टिकैत दास के पुत्र परशुराम दास बड़े योग्य निकले। राज्य का शासन-सूत्र एक प्रकार से इन्हीं के हाथ में था। इनकी कुशलता और प्रयत्न से इनके समय में राज की बड़ी श्रीवृद्धि हुई। इनके परिवार का नाम भी दूर-दूर तक फैल गया। धरनीदास ने इनकी मृत्यु के सम्बन्ध में लिखा है :—

भाव गयो दरबार सो राजनीति सहजैं लटी।
ता दिन ते जग जान सब मांझी की महिमा घटी ॥

धरनीदास इन्हीं परम बैष्णव राजनीतिज्ञ परशुराम जी के पुत्र थे। धरनीदास जी की माता का नाम बिरमा था और लछिराम, छत्रपति, बेनीराम और कुलमनि—ये चार धरनीदास के सहोदर भाई थे :—

लच्छी राम औ छत्रपति धरनी बेनीराम।
कुलमनि सहित पाँच जन साधु संगत विश्राम ॥—प्रेम प्रकाश।

---

१. पं० परशुराम चतुर्वेदी के 'भोजपुरी के संत कवि' से साभार।

इस दोहे में धरनीदास जी का तीसरा स्थान है। यह ठीक भी मालूम पड़ता है, क्योंकि ये नाम ऐसे हैं जिसका क्रम आसानी से नहीं बदला जा सकता है। इससे यही अनुमान होता है कि धरनीदास जी अपने पिता के तीसरे पुत्र थे। धरनीदास जी ने अपने जन्म की तिथि नहीं दी है, वैराग्य लेने का संवत् भर दिया है:—

संबत् सत्रह सौ चलि गयऊ। तेरह अधिक ताहि पर भयऊ।
शाहजहाँ छोड़ी दुनियाई। पसरी औरंगजेब दुहाई।।—प्रेम प्रकाश।

वैराग्य-ग्रहण के बाद ही इन्होंने महेसी नगर में, जो चम्पारन (?) जिले का एक कस्बा है, अपना ग्रंथ 'प्रेम प्रगास' 'पूष पंचमी सुकुल पक्ष, पुष नक्षत्र गुरुवार' को आरंभ किया था। इनके पिता परशुराम जी की मृत्यु इसके थोड़े ही दिन पहले हुई थी—

सतरह सौ संवत् लिखंत तेरह अधिकानो।
समय मास आषाढ़ पक्ष उजियार बखानो।
तिथि परिवा बुधवार गंग सर्वदा अन्हाये।
परशुराम तन तज्यो वास बैकुंठ सिधाये।

इससे यह अनुमान होता है कि इन्होंने संवत् १७१३ के आषाढ़ शुक्ल पक्ष परिवा और पौष शुक्ल पक्ष पंचमी के बीच कभी वैराग्य धारण किया था। औरंगजेब का सिंहासनारोहण-काल सं० १७१५ है। यदि उस समय धरनीदास की अवस्था चालीस के लगभग मानी जाय, तो इनका जन्म-काल सं० १६७३ के आस-पास ठहरता है। मांझी में प्रायः यह जन श्रुति है कि धरनीदास ने २४ वर्ष की अवस्था में वैराग्य लिया था। इस आधार पर उनका जन्म-काल सं० १६८९ होता है। इनके जन्मकाल के संबंध में प्रचलित एक जनश्रुति यह है—

संवत सोलह सौ चलि गयऊ। अधिक ताहि पर बत्तिस भयऊ।।
परसराम अरु बिरमा माई। ता घर देवी प्रगटे आई।।

इनकी चर्चा करते हुए पं० परशुराम चतुर्वेदी जी ने लिखा है कि 'यदि इनका विरक्त होना सं० १७१३ में निश्चित है, तो इनका जन्म-संवत् उक्त जनश्रुति के अनुसार संवत् १६३२ मानने पर विरक्ति के समय इनकी अवस्था ८१ वर्ष की ठहरती है जो विचार करने पर अधिक प्रतीत होती है।' अपने पिता की मृत्यु के झटके से ही इनमें विरक्ति का भाव उदित हुआ था। ८१ वर्ष की अवस्था तो मृत्यु के निकट की अवस्था है, जो विरक्ति उत्पन्न करने के लिए अपने आप काफी है। इतनी बड़ी अवस्था में किसी की मृत्यु पर विरक्त होना अधिक जंचता नहीं। अतः 'संवत् सोलह सौ चलि गयऊ। अधिक ताहि पर बत्तिस भयऊ।।' उनके किसी अनुयायी की रचना-सी ज्ञात होती है, जो 'सं० सत्रह सौ चलि गैऊ। तेरह अधिक ताहि पर भैऊ।'' के अनुकरण पर रचित है। अतः इनके जन्म और मरण की तिथियाँ अभी तक अनुमानाश्रित ही हैं।

राज के सर्वोच्च पद पर प्रतिष्ठित होने के कारण परशुराम ने इनकी शिक्षा का अच्छे-से-अच्छा प्रबन्ध किया होगा, और इनकी रचनाओं से भी यही सिद्ध होता है कि इन्हें बाल्यावस्था में ही हिन्दी, संस्कृत, फारसी आदि की अच्छी शिक्षा मिली थी। इन्होंने पंजाबी, बंगला, आदि भाषाओं में भी कुछ रचना की है जिससे मालूम होता है कि इन भाषाओं का भी इनका ज्ञान अच्छा था।

जनश्रुति है कि ये भी राज के किसी अच्छे पद पर नियुक्त थे। एक दिन ये अपने हुक्के का पानी पास के कागजों पर गिराकर आग बुझाने की-सी चेष्टा करने लगे। इनका यह व्यवहार देखकर लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। कारण पूछने पर इन्होंने कुछ नहीं बतलाया। आखिर बात राजा साहब के पास पहुँची। उन्होंने एकांत में ले जाकर इस सम्बन्ध में इनसे पूछ-ताछ की। धरनीदास ने बतलाया कि आरती के समय जगन्नाथ जी के कपड़ों में आग लग गई थी, मैं उसे ही बुझा रहा था। राजा साहब का धरनीदास के उस कथन पर विश्वास नहीं हुआ और उन्होंने तस्दीक कराने के लिए पुरी आदमी भेजा। बात ठीक पाई गई। भेद प्रकट हो जाने पर धरनीदास जी राज-सेवा से सम्बन्ध-विच्छेद कर वैरागी हो गए।[1]

संभव है, यह घटना न हुई हो, या वास्तविक घटना का यह अतिरंजित रूप हो, पर इतना माना जा सकता है कि धरनीदास का झुकाव ईश्वर-भक्ति की ओर था और वे राज का काम, कबीरदास की तरह, समाज-धर्म के विचार-से करते रहे हों। उनके पिता उस समय तक जीवित थे, जैसा कि पहले कहा जा चुका है। यह बात भी धरनीदास का वैराग्य न लेकर समाज में रहने के लिए प्रेरित कर रही होगी। जो हो, धरनीदास अपने पिता की मृत्यु के बाद महेसी जाकर विनोदानंद के शिष्य हो गए। परशुराम की मृत्यु से राज की स्थिति कुछ डांवाडोल-सी हो गई थी। संभव है, धरनीदास के निश्चय में यह स्थिति भी सहायक हुई हो।

आज प्रायः सभी जातियों ने शिक्षक का पेशा अख्तियार कर लिया है। पर कुछ वर्ष पूर्व तक ब्राह्मण कायस्थ, और मुसलमान—यही तीन प्रायः शिक्षण-कार्य करते थे ब्राह्मण प्रायः टोलों में या अपने ही घर संस्कृत पढ़ाते थे, पर हिन्दी, फारसी की शिक्षा लोग कायस्थ और मुसलमान शिक्षकों को अपने घर पर रखकर दिलाते थे। उसी प्रथा के अनुसार धरनीदास के विद्यागुरु एक कायस्थ सज्जन थे—

प्रथमहि गुरु कायस्थ भये जिन विद्या दीनो।
दूजे गुरु संन्यास पास जेहि मारग चीन्हो।
तीजे गुरु वैराग भाग कछु भले जनाओ।
चौथे गुरु गोविन्द साधु संगति लखि जाओ।

गुरु मंत्र केवल अल्पावस्था में ही लिया जाता है। जो लोग पुरानी प्रथा के प्रेमी हैं, उनके यहां आज भी यही बात है। धरनीदास जी को एक संन्यासी से दीक्षा दिलाई

---

१. 'निर्भय ज्ञान' में कबीर अपने परम प्रिय शिष्य धर्मदास को अपना जीवन-वृत्त बतलाते हुए कहते हैं कि एक बार मैं काशी-पति के पास गया और अपने पाँव पर जल ढालने लगा। इसका रहस्य पूछने पर राजा को मैंने यह बतलाया कि जगन्नाथपुरी के पण्डे का पांव जल रहा था जिसने रक्षा के लिए मेरी पुकार की। मैं उसका ही उद्धार कर रहा था। राजा को विश्वास नहीं हुआ। उसने पुरी के पण्डे के पास अपना दूत भेजा। जब दूत पुरी के पण्डे के पास पहुँचा तो वहाँ मुझे मौजूद देखकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। पंडे ने भी पूछने पर बतलाया कि सचमुच ही कबीर ने पाँव जलने से मेरा उद्धार किया है। कबीर तथा धरनी—इन दोनों महात्माओं के जीवन-वृत्त में एक ही प्रकार की घटना किस संयोग से आ गई, यह विचारणीय है।

गई थी। पर वे 'हरै शिष्य धन शोक न हरई' न थे। उन्होंने धरनीदास का सच्चा मार्ग बतलाया और यह उन्हीं के उपदेश का परिणाम है कि धरनीदास जी कालांतर में एक अच्छे महात्मा हुए। विनोदानन्द जी धरनीदास के तीसरे गुरु थे जिनसे उन्होंने वैराग्य-ग्रहण किया। विनोदानन्द रामानन्द जी की शिष्य-परंपरा में थे।[१]

अब तक धरनी दास जी के जिन ग्रन्थों का पता चला है उनमें 'प्रेम प्रगास' और 'शब्द प्रकाश' प्रमुख हैं। 'शब्द प्रकाश' का प्रकाशन सन् १८८७ ई० में हो चुका है जिसकी प्रतियां अब दुर्लभ-प्राय हो गई हैं। यह उनके कई ग्रन्थों वा ग्रन्थ खंडों का संकलन है जिनमें एक 'शब्द प्रकाश' भी है; यथा—साखी, कबीत, लीला, भजन, महराई, पंवारा आदि। 'प्रेम प्रगास' अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ हैं। यह एक प्रेम-गाथा काव्य है।

संत धरनीदास के दार्शनिक, धार्मिक एवं आचार सम्बन्धी सिद्धान्त मुख्यांश में वे ही हैं जो कबीर आदि संतों के हैं। कबीर तो इस पंथ के अगुआ ही हैं, जिनका न्यूनाधिक प्रभाव बाद में आने वाले संतों पर अवश्य ही पड़ा है। किन्तु धरनीदास ने उन विचारों को अपनी विशिष्ट शैली में प्रस्तुत किया है जिससे उनके व्यक्तित्व की छाप उनकी रचनाओं में स्पष्टतः दीख पड़ती है। उन्होंने अपने कई पदों में श्रीकृष्ण के रूप का तथा अन्य देवी-देवताओं का वर्णन किया है, पर वस्तुतः वे निर्गुण परम्परा के ही संत कवि थे। उन्होंने विविध छन्दों एवं राग-रागिनियों में रचनाएँ की है। यह उनके दो-एक पद प्रस्तुत हैं जिनमें भोजपुरी की छटा दर्शनीय है—

की शुभ दिन आज सखि शुभ दिन।
बहुत दिना पिया बसल विदेश। आजु सुनल निज श्रवन संदेश॥
चित चितसरिया में लिहल लिखाय। हृदय कमल धैलों दियरा लेसाय॥
प्रेम पलंग तंह धैलों बिछाय। नख सिख सहज सिंगार बनाय॥
नयन धइल दुइ दियरा लेसाय। धरनी धनि पल पल अकुलाय॥—शब्द-प्रकाश

निराकार ब्रह्म की प्राप्ति के लिए गुरु की शरण अनिवार्य है, इसे सभी संतों ने स्वीकार किया है। धरनीदास जी भी मानते हैं कि गुरु के उपदेश से ही सारे क्लेश दूर हो जाते हैं तथा घर 'अंजोर' हो जाता है—

जेहि मैल गुरु-उपदेश अंमा। अँग अँग मेटल कलेश अंमा॥
सुनत सजग भैल जीव अंमा। जनु रे अगिन परु घीव अंमा॥
उर उपजल प्रभु प्रेम अंमा। छुटि गेल जाति व्रत नेम अंमा॥
जब घर भइल अँजोर अंमा। तब मन मानल मोर अंमा॥
देखल से कहल न जाय अंमा। कहले न जग पतियाय अंमा॥
धरनी तिन धनि भाग अंमा। जिन जिय पिय अनुराग अंमा॥—शब्द-प्रकाश

जब तक घर अँजोर नहीं हो जाता, नाना प्रकार के प्रपंच वहां डेरा डाले रहते हैं और मनुष्य उन्हींके पीछे दौड़ता-फिरता है—रामनाम को भूलकर। इसलिए धरनी दास जी सावधान करते हैं—

---

[१] मांझी-निवासी स्व० राजवल्लभ सहाय जी के आलोक से साभार।

काहे के पुरुब जाला हाट बाट भात खाला, पछिम प्रतच्छ होला देह कै विध्वंसना।
का चढ़े सुमेरसिंग पूजले पखान-लिंग, कौन काज हिंगलाज जीभ काटि वैसना॥
ढाढ़ होला काहे लागि आस पास बारे आगि, काहे केहु भावेला जे भुइयां खोदि पैसना।
धरनी कहेला परपंच पंच काहे लागि, हिय न जपेला पुनि राम राम कैसना॥

संत धरनीदास की रचनाओं में से ऐसे कई पद उद्धृत किये जा सकते हैं जिनमें भोजपुरी की सुन्दरता एवं सजीवता सहज ही हृदयंगम की जा सकती हैं। यहां उनकी दार्शनिक एवं आध्यात्मिक मान्यताओं का संक्षिप्त निरूपण एक छोटे से निबंध के आयाम में संभव नहीं। इतना ही निवेदन है कि जब तक संत धरनीदास के संबंध में विस्तृत रूप से विवेचन के उपरान्त उनकी समस्त रचनाओं का सम्पादन कर उनके सिद्धान्तों, विचारों और काव्य-व्यवस्था को विकास-क्रम से प्रकाश में नहीं लाया जाता, तब तक बिहार में उत्पन्न इस गौरवमय संत के प्रति हमारा ऋणशोध अपूर्ण ही रहेगा, जिसने समस्त हिन्दी संत-काव्यधारा को प्रभावित किया हैं। इन्हें 'अन्हर-पख' से 'अंजोर' में लाना ही है।

⁂

नया साल

नया प्यार लेके नया साल आइल!
ठहर ना सके बाढ़ के ढेर पानी,
बुढ़ापा रुकी का? रुकल ना जवानी,
नया खेत, पौधा नया लहलहाइल!
नया प्यार लेके नया साल आइल!
सभे एक दिन नींद में मात जाला,
इहाँ एक के देख दोसर सिहाला,
नया चान, सूरुज नया मुसकुराइल!
नया प्यार लेके नया साल आइल!
कुहुँक के करेजा कतर के रहल ई?
नया लाल पतई कि लेहू बहल ई?
नया बाँसुरी के नया सुर सुनाइल!
नया प्यार लेके नया साल आइल!

रामनाथ पाठक 'प्रणयी'

"गँवई के भूत"

—बब्बन पाण्डेय "मुक्त" गाजीपुर

ओझा जी बाड़न ?

नइखन, खखनू त कब लियावे आइल रहुवन, उनुका पतोहि के चुरइल धइले बा। एह नवरातर में घरे बइठे के सवँस लागत बा ?

तब कबले अइहन कुछ पता नइखे ?

ना अब एतरे हम कबले बताईं। अच्छा त हम जातानी बाकिर जब अईहन त कहि देइबि कि राम दास आइल रहलनि हानि।

खोलऽ ना केवड़िया, तुहूं त हरदम बने कइले रहेलू। जब आइला तब टंगरी पसारी के सुतल। ना किछु के गम बा ना फिकिरि। साँझि सबेरे तसला में पा भर चाउर डालिके बुदुका देबे के बा। आ कहियो उहो नाहिये बा। तहरा मारे त हम नकिया गइल बानी।

तूंही ना। हमहूं तहरा से नकिया गइल बानी। लऽ आपन हइ मलिकांव। तहरा ए मलिकांव के हम नइखीं रकटल। केनियों ले अइहन हमरे पर बघुआ के चढ़ि बैठेलन। ना बुझाला कि इनकर हम कवन बाप मरले बानी। कबो अइतन आ जे मीठ बोलीतन। हरदम माहुरे कूचले आवेलन।

खिसिया गइलू का ? अरे केहू अपने के न बोलेला। तूहीं सोचऽ, तू अनका घर के रहितू त तहरा के हम रामो दइबो बोले जइतीं। हमरा तहरा से का मतलब। बाकिर एह तरे त जब थरिया एक लगे रही त बजबे करी। तहरा एकर दुख ना माने के चाहीं हई देखऽ तहरा के हम का लेआइल बानी।

आ ई सोना के हार कहाँ से ?

आ इहे न खखनू का पतोहि का ओझाई मिहें पवलीं हंऽ। हमनी के त इहे नवरातेर में न खूब चलेला। अरे चार घरे भभूति फूंकल कि चार सइ रुपिया बनि गइल। केहू का नोकरी कके कमाई।

आछा हम गइलीं हं तबले केहू आइल ह कि ना ?

अरे रउवा जबे घर से बहरियवों तबे रामदास आइल रहुवन। त अइलों ह तबे काहें ना कहलू हऽ। एघरी बइठे के मोका बा। दऽ हमार बकुड़ी तनी देखले आईं।

काजी, अबहीं ओझा जी आइल बानी कि ना ?

के हऽ रामदास ?

चलीं चलीं रउवे घरे जाय खातिर अब छड़ी उठली रहलि हऽ कि रउवा बोलबे कइली हंऽ। देखीं इहे अट के सट बोलत बाड़न। आ खटिया पर ले उठि उठि भागत बाड़न।

पढ़े त बगसरे न जालन ?

हँ । असो बरहवाँ में बाड़न । पढ़हूँ जाये के हरज होता आ हमनी के मनो बाड़ा अकुलाइल रहता ।

कवनों बाति नइखे । इ कुल्हि भूल भँवरि हऽ । हम एगो जन्तरि बनाके दे देइबि कुल्हि ठीक हो जाई । तनी साफ राखी ले आईं तऽ ।

इहे कहाला जीन्हि दू अछरि पढ़ि ले ताड़न ऊ कहताड़न कि भूत दूत काहऽ मनसे भूत हऽ । अरे हमनी का अपना बापे दादा का मुंह से सुनत चलि आवत बानि जा कि भूत एगो हइये हउवन सनि । अब केहू सूई सरेंज देके छोड़ा न देउ जो बाप के लाल होखे त । एह बेरी त मुँहे बवा जाईं बकारियें ना निकली कि कहीं । रउवे सोची कि जो ई झूठ रहित त हमनी के बाप दादा बुरबक रहलनि हनि । अतना जन्तरि मन्तरि बनवला के कवन काम रहित । तुलसिये जी के देखीं, भूते से न राम के पवलनि । अब त देखीं इहे नवरातर चढ़ल बा समकर नसि ढील हो जाई । हजार गो पुजा पाठ करीं । ई काहे खातिर, एमे कुछु बाति बा तबे तऽ ।

हइ राखी लेईं ।
देईं देखीं का कसरि परलि बा
“हइ आके इतनी पहर से छू कालीं—।”

सुनीं इन का के बहोरा का बर पर के जीन धइले बा । एके छोड़ावे खातिर थोड़ खरचा करे के परी । थूके सातू ना सनाई । जाईं ५० गो रुपिया पाँचि मन चाउर आ एक जोड़ा धोती के इन्तजाम करीं । पाँचि दिन दुर्गा जी के पाठ करे के परी तब जाके त फरियाई । ई जीन हऽ । बाते ना छोड़ी ।

महाराज जी ! हे महमारी में त पेटे चलावल मुश्किल भइल बा । हफता में एक किलो त गेहूँ चाउर मिलता । करजा केहू देते नइखे । कमें में ना होई । तनी अइसन करीं की सँपरे । बड़ा मुश्किल बा । पेट के पूजा त हरदम करहीं के परता आ ऊपर ले एगो इहो पूजा करऽ ।

तब रहे दीं । मति करीं हमार का । हमार थोरे किछु बिगरी । कपार पर दस गो भूत परेत अउँरी राखीं । हमरा त गुन रही त हजार जाना अइहन जइहन । देईं हमार छड़ी अब-ई चललनि ।

अरे बइठीं बइठीं ।

ना ना अब हम सूरजू का घरे जा तानी । का झूठो के बइठीं ।

बाबू ! ई कुल्हि का हरतुज होता ? हः हः हः हई देख झूठहूं के ओझइति । हमरा कवन भूत धइले बा ? हऊ देखऽ ओझा जी भगलन ।

धरि हऽ धरिहऽ धरिहऽ

"बउध-लीला"

—स्वामी विमलानंद सरस्वती (बक्सर)

बउध देव निरवान समय से,
सावा दूइ सौ बरिसि बाद में।
पिय दरसी अशोक रजधानी
पटना में गंगा का तीरे,
आरज असथविरवाद के अगहर,
कइलन जतन तिष्य महराज।
भिक्षुसंघ में मेल करावे—
दल के भेद मिटाने खातिर!
चुनल चुनावल एक हजार
भिक्षु लोग नेंवताइल आइल,
प्रिय अशोक के बनवावल मठ,
जहाँ अशोका राम बिहार॥
जुटि के खूब भइल बतकूचन,
जहाँ-जहाँ दोबिधा शंका के—
तनीको जगहि मिलल केहू के।
बउध-धरम के छीर-समुंदर,
एक हजार मथानी लेके,
धीरे-धीरे खूब मँथाइल।
केतने रतन मिलल अनमोल,
अंत समय अमिरित के घरिया—
सरधावान भिक्षुदल पावल!!
इहे भइलि तीसरि संगीति,
धरम-कुटी में लेवरक लागल,
गोबरी भइल पोताइल भीति!!

× × × ×

असथविरन से छाँटल लोग,
एही समय कइल उतजोग,
डहरि पकड़ि सरवास्ति वाद के—
बटुरल सभई नालंदा में।

× × × ×

खतम भइलि तीसरि संगीति,
धरमसंघ के बदलल रीति।
मोगलिपूत तिस्स महराज—
मदति पाई के तब अशोक के।
बउध-धरम फइलावे खातिर,
देश देश में भेजलन दूत।
इहे सोनहुल अवसर पहिला,
जब भारत के धरम-दूत दल—
शुभ मंगल संदेश सुनावे—
बउध-धरम उपदेश जनावे,
लाँघि सिवान विदेश गइल।
देश-देश में शोर भइल!!
पहुँच[illegible]ल बउध भिक्षुदल पच्छिम
मिसिर, सीरिया का सिवान में,
यवनराज यूनान देश में,
बलख बुखारा मध्य एशिया—
उत्तर में बैकाल झील तक।
बहुत लोग दक्खिन भी गइलन
सुवरन भूमि ताम्रपरनी में,
बरमा लंका जे कहलात॥

× × × ×

धन्य अशोक नरेश हमार,
ओकर सरधा नेह धरम के
पावल गइल उदार अपार।
धन दउलति सम राज-खजाना,
लागल धरम-काज में जेकर।
माया मोह तोरि के आपन
बेटा-बेटी दान दिहल जे—
बउध-संघ के, धरम-संघ के।
लाल महेन्द्र निराला सबसे,
साथे बहिन संघमित्रा ले—
हँसि के भिक्खु भिक्खुनी भइलन,
धरमदूत हो लंका गइलन!!
राजा मनलन बउध-धरम के—

बउध भइल लंका के लोग।
उहँवें पहिला ईसवी सन में,
'सूत' विनय, अभिधरम पिटक के—
शोधि सँवारि लिखाइल सज से !
इहे आज के पाली त्रिपिटक ॥
लंका गढ़ असथविरवाद के,
जुग-जुग ले बरल चिराग जहाँ।
बउध-धरम के देश दुलरुवा
अइसन दूसर मिलल कहाँ ?
बउध-धरम पर लट्टू रहलन —
मौर्य वंश के राजा लोग।
सुघर सोनहुला उनका राज,
बउध-धरम के तूती बोललि,
उहे भइल सभकर सिरताज !
राजा, सेठ, धनिक गिरहस्त
सभई मिलि असतूप बनावल—
संघाराम विहार हजार।

× × × ×

बदलल राज, जमाना पलटल,
कइलन राज 'जवन' पच्छिम में—
पहिला राजा बनल मिनान्दर,
भइल साकला में रजधानी।
छात्रप लोग धजा फहरावल,
समय पाइ मथुरा उज्जैन !!
एक समान समय कब केकर,
बदलत रंग जमाना हरदम,
'जवन' पताका उखरल आखिर।
पहरा आइल शक लोगन के,
इन्हीं के दल रहल 'कुशान'
राजा भइल कनिष्क प्रतापी,
मनलसि मति 'सरवास्ति वाद' के
बनल पुरुसपुर-पेशावर में—
जेकर शुभ रजधानी !
आचारज सरवास्ति वाद के,
अश्वघोस वसुमित्र भेंटइलन,
मदति मिललि राजा कनिष्क के
भइल बटोर भिक्खु बटुरइलन।
टीका लिखल गइल 'त्रिपिटक' पर
परल 'विभासा' ओकर नावँ।
अब 'सरवास्तिवाद' मतिवाला,
पदवी पवलन 'वैभासिक' के !!

× × × ×

एही समय वरार देश में,
'नागारजुन' के जनम भइल,
'शून्यवाद' मझिम-विचार के,
आज चनरमा उगल नया।
पोथी सजगर बनलि लिखाइलि,
'शून्यवाद' मझिम-मत वाली।

× × × ×

चउथी ईसवी पेशावर में,
उगलन दूइ गो लाल नगीना।
अचारज 'बसुवंधु' हाँकड़ी,
पंडित रतन 'असंग' संग में।
मति 'विज्ञानवाद के पनफलि,
'योगाचर' डहरि धइ चललन,
अगहर बनि असंग महराज !
तनिक फरक 'वैभासिक' दल से,
आंचारज बसुवंधु बनवलन,
आपन मत 'अभिधरम कोश'।
बउध भिक्खु-दल भइल चारि मत,
विलग-विलग चारों के 'दरसन'।
तीन यान के मानेवाला—
'वैभासिक' 'सौत्रांतिक' दल के
नावँ धराइल 'हीनयान' !
बउध-यान के मानेवाला —
'योगाचर' माध्यमिक'-मतिधर,
पदवी पवलन 'महायान' के !!

× × × ×

बउध-धरम के शुभ संदेश,
पहुँचल सगरे देश विदेश।
जीतल सबका दिल-दिमाग के,
शांत भिक्खु दल-नेह-छोह से।
सत्त, अहिंसा, दया प्रेम के—
बंशी बजलि चैन से घर-घर ॥

दिशा-दिशा में, देश-देश में,
बनवावल राजा 'अशोक' के—
चउरासी हजार असतूप,
जिन पर बउधदेव के मंगल—
खोदल गइल धरम-उपदेश !
पढ़ि के भइल अँजोर हृदय में,
बढ़ि के लोग समाज-सुधारल ॥
श्याम, सुमात्रा जावा, बाली,
कवन देश बा खाली ?
जहाँ भिक्खु-दल पहुँचल नाहीं
मधुर प्रेम के अमिरित लिहले,
बउध-धरम संदेश सुनावत ।
कंबुज चीन, मलाया सगरे,
भाई-बंधु भइल सभ हमरे,
तिब्बत, इरान, जपान, कोरिया,
सभई बउध-धरम अपनावल ।
पियल धरम-अमिरित के घरिया,
भयवद्दी के हाथ बढ़ावल ॥
सेवा दया नेह से भरि के,
बारल बउध-धरम के दीया—
दीपंकर श्री ग्यानदेव के,
अबले जगमगात चमकत बा,
तिब्बत का कोना-कोना में ।
धरम दूत तपसी गुरु ग्यानी,
पंडित चतुर कुमार जीव के—
जस, गावत जापानी जनता,
गाँव नगर घर-घर में !!

× × × ×

भारत सुबरन-भूमि सुघर,
अलकापुरी अमर नंदनवन,
विद्या ग्यान कला-भण्डार ।
तेज देखि धावल संसार ॥
चमकल तक्षशिला, नालंदा—
विक्रम शिला उदंतपुरी में;
देश-देश ले अइलन लोग,
पढ़ि के ग्यान बढ़ावे खातिर—
गुरुद्वारा के दरशन पाके
मन के मइलि धोवावे खातिर ॥

पटना पाटलिपुत्र मगध में,
पग-पग इतिहास लिखल बा,
भूलीं मत मेंगास्थनीज के,
'जवन'-देश के ब्रतिधर दूत ।
घूमल सगरे गाँव नगर में,
मड़ई ले महल अँटारी तक ।
देखलसि मंदिर तीरथधाम,
निहुरि झाँकि के देश तमाम ।
कहीं बेइलिया, जूही, चँपा,
कहीं कियरिया केशरि के,
गमगमात चंदन का बगिया—
चहकत बुल-बुल के राग कहीं ।
तब मनवा ललकल मुसकाइल,
खिंचलसि कल से तसबीरि सुघर ॥

× × × ×

आज चीन पागल हो धावल,
गुरुद्वारा पर हमला कइलसि,
भाइन पर तलवार उठा के,
चलल खींचि में मानल !
भूलि गइल इतिहास पुराना,
फाहियान के भेजल जे,
ह्वेनसंग जहाँ ले आइल,
गुरू चेला के नेह निबहलसि ।
नालंदा के विजयी वीर,
जब नरेन्द्रजस गइलन चीन,
पनरह बरिस पहुँचते लागल,
पेकिंग नगर देखि के जागल,
चरन चूमि के आदर कइलसि,
धूरि चढ़वलसि माँथे अपना ।
पनरह बरिस चीन में रहिके,
चीनी भासा पढ़ल जवान ।
पंडित डेढ़ हजार सिखा के—
डेढ़ हजार धरम पोथिन के,
संसकीरत ले रूप बदलि के,
चीन देश का समझे खातिर,
रचलसि चीनी भासा में ॥
साधुसंत के घर सगरे बा,
जग का कोना-कोना में ।

जेकरा मोह भइल ना तनिको,
जोरू-जाँता सोना में ॥
धरमदूत बनि के नरेन्द्रजस,
नेवता पा के गइलन चीन ।
उनका मन में भेद रहल ना,
घरवे जनलन चीन देश के ।
केतने उनकर चेला भइलन,
बउध-धरम-पोथिन के पढ़लन,
सजि चीवर संघाटी में !
देंहि बनलि माटी के आखिर—
मिलल चीन का माटी में !!

× × × ×

बउध-धरम के जादू अइसन—
सिर पर चढ़ि के बोलल,
कारीगरी-कला विद्या में,
अमिरित सज से बोरल ॥
अकिलि देखि हयरान होति बा,
मोमि नियर पत्थल के काटल,
मूरति सुघर बनावल ।
खोदि धरम उपदेश लाट पर,
संघाराम विहार सजावल,
असतूपन पर रचल उरेहल,
मनमोहक तसबीरि अनेकन ।
कहीं सिंह हाथी हरिना के,
कहीं धरम-चक्का के कंचन ।
जावा अइसन दूर देश में,
बोरोबुदूर का अमर भेस में,
बउध-कला चहकति चमकति बा,
खिलखिलाति बिहरति बिहँसति बा,
कला-कोइलिया कुहुकि रहलि बा,
उहे अजंता गूफा में ।
सारनाथ, साँची नालंदा—
बोधगया में, बामियान में,
वक्षु नदी का तीरे !

चंचल मनवाँ मानत कहवाँ,
बनल उड़ंकू धावेला ।
पहुँचि गइलि लंका में उड़िके—
कोइलि आपन तान सुनावत
पंचम सुर में गावत !

बसि महेन्द्र परबत का घाटी,
रूप निहारत चमकत खाँटी,
पत्थल काटि जहाँ खोदल बा—
पूरा पाली त्रिपिटक ।

(ई बीच में के कुछ सबसे सुन्दर अंश छुटि गइल रहे, प्र० सं०)

भोजपुर के कुछ जातिन्ह के देवी-देवता

—डॉ० सत्यदेव ओझा

भोजपुर क्षेत्र में कई जाति के लोग बसेला। सब जाति के आपन-आपन कुल देवता भी होले। लोग जाति आ कुल देवता के पूजा जाति आ कुल के कुशलता आ मंगल खातिर जरूरी मानेला। साल में कौनो खास तिथि, दिन, पक्ष चाहे महीना में पूजा के विधान कइल जाला। पूजा के उद्देश्य कुल देवता के खुश कइल होला और जाति के विघ्न बाधा के दूर कइल भी। कुल देवता के खिसि नेवारे खातिर भी ई पूजा कइल जाला। कभी-कभी भखौटी' उतारे खातिर भी पूजा के जोगाड़ होला। पेशेवर जाति के लोग अपना उपकरण या हथियार के पूजा करेला। साइत एह से कि जवना उपकरण के मदद से उन्ह लोग के भोजन के समस्या हल होता ओकरा खातिर आपन एहसान परगट करेके चाहीं। दोसर बात इहो हो सकेला कि ओह उपकरण सभ में जवन देवता रहेले उनका के आदर देवे के खातिर या ओह में जवन अमंगल के भाव होखे ओकरा के दूर करे खातिर भी पूजा कइल जात होखे। ग्राम देवता के पूजा भी 'डीहवार' का रूप में कइल जाला। 'डीहवार' बाबा भूत प्रेत से गाँव के रक्षा करेला। उनका ताकत के बढ़ावे खातिर भी खाद्यान्न देके पूजा कइल जाला। देवता लोग का मन में भी हमनीए निअन सत्कार के भूख रहेला, ना मिलला पर क्रोध होला और झोंक में आइ के हमनी के ऊ लोग नोकसान भी पहुँचा सकेला।

एह देवी देवता लोग के पूजा आदि में मनोवैज्ञानिक उद्देश्य भी बा। एह से जीवन में संतुलन होला और पूजा करे वाला जाति के अंदर बहुत आत्मबल मिलेला।

प्रायः सभ प्रकार के शुभ अवसर पर अपना कुलदेवता के स्मरण आ पूजन जरूरी होला। पूजा के अधिकारी घर के मालिक या मलिकाइन होली। घरके बेटी के कुलदेवता आदि के पूजे के अधिकार ना होखे। ऊ त पराया घर के समुझल जाली। कौनो-कौनो पूजा घर के मरद लोग ही करेला, मेहरारू लोग के कौनो हाथ ना रहे। एही तरे कौनो-कौनो पूजा खाली मेहरारूए लोग करेला। मरद के ओइजा प्रवेस भी ना होखे। जहाँ तक पूजा के सामग्री के सवाल बा, अलग-अलग देवता के अलग-अलग पूजा सामग्री के जरूरत होला। स्त्री जाति के देवता आ पुरुष जाति के देवता में भी अंतर होला। स्त्री जाति के देवता के पूजा में साड़ी, सिंदूर, चोटी, कंघी तक के जरूरत पड़ सकेला।

अब कुछ जाति के देवी-देवता के नाम आ पूजन विधि दीहल जाता। हम प्रायः अपना गाँव, ग्राम आ डाक बड़ासिंहनपुरा(सब डिवीजन बक्सर जिला शाहाबाद) के जातिगत पूजा के आधार पर ई सामग्री प्रस्तुत कई रहल बानी। जहाँ अपना गाँव के बात नइखे, ओइजा दोसरा गाँव के नाम दे देले बानी।

चमार

इ सामग्री हमरा के नगरपुरा, पो० बड़कासिंहनपुरा जिला शाहाबाद के एगो चमइनि से मिलल। ओकरा अनुसार चमार लोग कई गो देवी-देवता के पूजा करेला

लोग जैसे—कुंअर बाबा, पांचो पीर, सायर, समें, सीतला, कंकारि, कलिका, हीरन बाबा, पंखेरु, डीहवार आदि ।

कुंअर बाबा के पूजा खँसी के बलि देके कइल जाला । खँसी एकवरनिया (एक रंग) होखे के चाहीं । ई पूजा खासकर ओह घरी कइल जाला जब परिवार पर कौनो दैवी संकट, रोग आदि के प्रकोप होला । खँसी के पूजा का पहिले से चुनि लीहल जाला आ पोसल जाला । एकरा के बड़ा पवित्रता से रखल जाला कौनो जूठ चीज ना खिआवल जाला । एक तरे से ई देवता के अंश हो जाला । कौनो खास दिन तय करके बली दीहल जाला ।

पांचो पीर भी ई लोग के देवता ह लोग । इ चमारिन हमरा के पांचो पीर के नाम त ना बता सकली किन्तु अपना गाँव के एगो धोबी—बांका धोबी—एकर सब नाम बतवले—सुबहान, अली, शोर, पीर महम्मद आ हुसेन । खैर, इ देवता लोग मुसलमान लोग के देन ह लोग । ई लोग का पूजा में मुरगा चढ़ावल जाला । बलि सुबह में दीहल जाला, केहू दोसरा के देखावल ना जाई, एहमें घर का अन्दर सब काम कइल जाला आ आरोग्य लाभ खातिर भी ।

सायर, समें, सीतला, कंकारी, आ कलिका काली माता के गन मानल जाला लोग । सायर के सबसे बड़ देवी मानल जाला । ई रोग के रखवारिन मानल जाली । बैसाख महीनों के अँजोरिया पख में सुक चाहे सोमार के सूअर के बलि देके पूजल जाला । समे, सीतला, कंकारि आ कलिका के चबुतरा बनावल जाला । सूअर के छौना, साड़ी, गुलौरा, शक्कर के मिठाई, कराह आ दारु चढ़ावल जाला ।

हीरन बाबा के पूजा चइत नौमी के होला इनका के गहूं के पिसान के पिंड बनाके चढ़ावल जाला ।

लइका भइला पर पंखेरु (चुरइल) के पूजा होला । ई पच्छी जाति के देवी हईं । इनका खातिर सात टुसी हरदी पिसी के ओकरा में गुर मिला के चढ़ावल जाला । एकरा के अलवाँत खाले । एह देवी के पियरी चढ़ावल जाला, एकरा के अलवाँत पहिरेले । हलुआ आ मसाला भी चढ़ावल जाला । एह प्रसाद के केहू खा सकेला ।

चमार लोग का घर के अन्दर चउतरा पर 'चौरा' बनावल रहेला । बिआह के अवसर पर जब 'पितर नेवतल' जाला, ओह घरी एकइस जोड़ी दालपूरी, एकइस गो कचवनिया और माटी का एकइस गो चुकिया में बूंट दाल आ गुड़ चढ़ावल जाला । चमारटोली के डीहवार भूत प्रेत से चमार लोग के रइछा करेले ।

धोबी

ई सामग्री हमरा के अपना गाँव के बाँका धोबी से मिलल । धोबी लोग कोंहा गोरया, कुंअर बाबा, पंचपीरी और सतीबनी के पूजा होला । इन्ह लोग के एगो देवता मुसलमान लोग के देन बा ।

वैष्णव देवी देवता के प्रभाव भी कौनो कौनो देवता पर बा ।

गोरैया के पूजा खास खास मोका पर कइल जाला जैसे पहिले पहिल बेटा भइला पर, पहिलका बेटा का बिग्राह का समय, कौनो भयंकर संकट से बचला खातिर। लेकिन ई पूजा सभ खातिर जरुरी नइखे। जे भखौटी माखेला उहे ई पूजा करेला। ई पूजा बड़ा धूमधाम से कइल जाला। एकरा में बड़ा खरच वरच कइल जाला। एह पूजा में मुसलमान लोग के सहयोग भी लिहल जाला। जैसे मुर्गा कटवावे खातिर। मुर्गा के अलावे सूअर के छौना भी चढ़ावल जाला। छौना अइसन होखे के चाहीं जवन अभी अपना महतारिए के दूध पिअले बा, विष्टा आदि नइखे खइले। छौना चढ़ावे के काम धोबी लोग खुद करेला। छौना के गाँव का बाहर कौनो कूर खेत में काटल जाला। कभी कभी एकर मांस खाइल जाला और अगर खाए के ना रहे तो घर का अन्दर गढ़ा में गाड़ि दीहल जाला। गोरया के मुरुगा, मुरुगी, पाठा पाठी भी चढ़ावल जाला। एह सभ के करेजा निकालि के पकावल जाला, इहे मांस आ एकर सिरुआ गोरया पर चढ़ावल जाला। बाकी मांस के अलग से पका के प्रसाद रूप में खाइल जाला। मांस अपने परिवार के लोग खा सकेला दोसर केहू ना। खइला-पिअला के बाद हड्डि आदि के एगो गढ़ा खोदी के गाड़ि दीहल जाला। एहि गढ़ा में हाथ आदि धोवल जाला और आखिर में एकरा के मिट्टी से भरि दीहल जाला।

कुंअर बाबा के पूजा सावन के अन्जोरा में कइल जाला—सुक या सोमार के। कुंअर बाबा के कुंआर पाठा चाहे पाठी आ पांच गज मोटिया चढ़ावल जाला।

पंचपीरी के पूजा में सात जोड़ी दोहथी चढ़ावल जाला। ओटिन्ह में छेद की दीहल जाला आ ओकरा ऊपर से मुरूगा के मांस आ ओकर सिरुआ चढ़ावल जाला। सिरुआ छेद से निकल के बाहर चलि जाला।

धोबी लोग में सभ देवता खातिर मांस आदि चढ़ावे के नियम बा, खाली "सतर बनी" के पूजा निरामिष चीज से कइल जाला। धोबी लोग अपना अपना घर एगो देवकुर बनवले रहेला लोग, ओइजोहुम कइके मिठाई आदि चढ़ावल जाला। "सती-बनी" के सात गज के खोंईछा दीहल जाला।

बीन

मछरी पकड़े वाली एगो जाति बीन कहल जाले। बीन जाति के पूजा क-विधान के सूचना हमरा काजीपूर पो० डुमरी जिला शाहाबाद के इन्द्रासन बीन से मिलल। जब बीन लोग कौनो नदी आ तालाब में पहिले पहल मछरी मारे जाला लोग त ओकर पूजा चूड़ी-सेनुर से करेला। कबो कबो महुआ गुड़ या दारू भी चढ़ावे ला लोग। एह से ज्यादा मछरी मिले के संभावना रहेला आ पानी से जान के रइछा भी करेले।

बीन लोग अपना घर में कलिका, समे, बगेसरी, सायर, मालती, बिघिन आदि के पूजा भी करे ला। ई सभ देवी लोग के पशु बलि जरुर चाहीं। कलिका के चुनरी आ कराह के संगे खँसी चढ़ावल जा ला। समे के खँसी, भेंड़ा चाहे सूअर चढ़ावल। बगेसरी के कराह आ सूअर चढ़ावल जाला। मालति के भेंड़ा चाहे बकरा, बिघिन के कबूघर आ सायर के सूअर चढ़ावल जाला।

मलाह

मलाह लोग के रोजी ज्यादेतर नाव खेवला से चलेला। उ लोग नया नाव के गंगानदी में डाले का पहिले गंगाजी के पीठा चढ़ावेला लोग। नाव का माथा के पीतर से मढ़ि देला लोग। एह माथा के नाव के माँग कहल जाला। एकरा पर सेनुर चढ़ावल जाला। नाव के पहिला बेर नदी में डालला का बाद ब्रह्मभोज आ भाईभोज भी कइल जाला।

सोनार

सोनार लोग अपना अंगइठा के पूजा करेला। ई लोग अंगईठा के जगदम्बा माई बोलेला। अंगईठा के पूजा के कौनो खास दिन निश्चित ना रहे। जौना दिन अंगईठा के पूजा करे के होला ओह दिन एकरा के ठीक से लीप दीहल जाला कौनो तीह परब का दिने, या बेसी आमदनी भइला पर अंगईठा के पूजा कइल जाला। लीपपोत के एकरा लगे हुम कइल जाला आ मिठाई आदि भी चढ़ावल जाला। जौना दिन पूजा होला ओह दिन एकरा ऊपर आग ना सुलगावल जाला। ओह दिन गहना वगैरह भी ना बनावल जाला। अंगईठा के राख के कबो समूचा खाली ना कइल जाला। कुछ ना कुछ राख बरावर छोड़ दीहल जाला। पूरा राख निकालल असुभ मानल जाला। अंगइठा के भीतरी भाग एकर 'कोंखि' मानल जाला। सोनार लोग अंगइठा रोज धूप वगैरह देखावेला लोग।

गौड (भडभूंजा)

हमरा गाँव में गोंड़ लोग भुजना भुँजे के काम करेला। उन्ह लोग अपना 'पारि' (भाड़) के पूजा करेला लोग। एह पूजा के 'सिअरुआ' कहल जाला। वैशाख महीना का अँजोरा में सतुआन का दिन 'सिअरुआ' होला। ओह दिन भनसारी ना जरावल जाला और 'भनसारी' के लीप पोति के साफ कइल जाला। 'घनहर' लोग पारापारी आइके एक-एक लोटा पानी 'पारी' पर गिरावेला, पारी के सेनुर से टीकेला और थोड़ा अनाज पारी पर चढ़ा देला। 'घनहर' लोग या गोंड़ लोग के ई ख्याल रहेला कि जवना 'भनसारी' के उ लोग साल भर जरावल ओकरा के एक दिन अच्छी तरह हे ठंढा कइ देवे के चाहीं, एहसे अगिन देवता प्रसन्न होइहें और सान्ति से रहिहें। साँझी के गोंड़ लोग दालपूरी आ रसियाव खाला।

तुरहा

तुरहा लोग—जिन्ह लोग के आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी आर्य आ गोंड़ के मिश्रण मानेले—सनिचरा के पूजा करेला। ई पूजा सावन का अँजोरा सनिचर के होला। तुरहा लोग ओकरा खातिर घर-घर से "भीख" माँगेला लोग। एह तरीका से अनाज आ पइसा उगहला के बाद अपनो ओर से कुछ मिलाके पूजा के चीजु ले आवे ला लोग। पूजा में मुर्गी आ कबूतर उड़ावल जाला। सूअर भा पाड़ा के कान काटल जाला। माटी का कराह में खीर बना के चढ़ावल जाला। एह लोग 'भगत' 'सनिचरा खेलेला'।

नाऊ

नाऊ लोग अपना औजार के पूजा करेला। ई पूजा सावन का अँजोरा कौनो मंगर आ सनिचर के होला। सायद एह से कि मंगर या सनिचर के लोग हजामति ना नावे एह से नाऊ लोग का फुर्सत रहेला। पूजा के दिन कई गाँव के नाऊ लोग कौनो एगो गाँव में जुटेला लोग। एह पूजा में मेहरारु सामिल ना होलीस। आपन औजार राखि के पूजा करेला लोग। ओकरा बाद सामूहिक भोज होला। कुछ साल पहिले तक लीटी आ जाउर खात रहे लोग, बाकिर अब पूड़ी आ जाउर बनाइ के खाला लोग।

नया साल

बरिस पुराना बीतल, नया साल आइल रे
धनवाँ कढ़ाइ गइले, भरल खरिहनियाँ,
दंवही प लागि गईले लोग के धेयनियाँ,
खेत में खेंसरिया के सारी लहराइल रे
बरिस पुराना बीतल, नया साल आइल रे
बिनियाँ करेली सेहू आज लछिमिनियाँ,
अँखिया में घुरुमेली सुखवा के निनियाँ,
बुँटवा के फुलवा प जोन्हिया लजाइल रे
बरिस पुराना बीतल, नया साल आइल रे
गाँवे गाँव फैलल रवि के कहनियाँ,
जउआ गहुमिया प गरब के पनियाँ,
सरसों के सोभा देखि जियरा जुड़ाइल रे
बरिस पुराना बीतल, नया साल आइल रे
तीसियो के फुलवा प चढ़ली सुरतिया,
बइठल खेतवे में देश के मुरतिया,
बाग में बसन्त के सनेंसवा सुनाइल रे
बरिस पुराना बीतल, नया साल आइल रे

—सीतासुन्दर देवि 'प्रियंवदा' (शाहाबाद)

आँवा के आगि

—विजेन्द्र लाल 'अनिल' (शाहाबाद)

करेजा कोंहार के आँवा लेखा धन्हकत बा। आँवा के आगि त दुइए चार दिन में बुता-जाला, बाकी ई आगि त दिन प दिन तलफते जाता। बुझाता सँउसे जिनगी असहीं आंरा जाई, भीतरे भीतरे ज़रि के, आ धुँओं ना निकली। बाकी धुँआ त निकलते बा, तबे नू भुलेटन के माई जबे तबे टोकि देली—"तोहरा कवन रोग भइल बा कि दिनों दिन पिअराइल जात बाड़ू? दिन राति मन मारि के काहे बइठल रहतार? हम कछुओ ना कहींला, का कहीं? कइसे कहीं कि तोहार भुलेटन......

......ना हम भुलेटन के कछुओ ना कहबि। उनुका के अछरंग लगाइत त हमरा पिलुआ परी, मुअला प पीब के गड़हि में परबि। उनुकर रीनि हमरा से एह जिनगी में ना भराई। ऊ देवता हवन। ऊ ना रहितन त हम सतवन्ती लेखा एहिजा राज ना करितीं।......

एह में कवनों सक सुबहाँ नइखे कि भुलेटन से हमार भेंट ना होखित, त एह टुटही मड़ई में, जवन जेठ के दुपहरिया में, चालनि आ सावन भादो के बरखा में झँझरा के काम करेले, हमरा ना रहे के परित; हम कोठा प रहितीं, रजगद्दी प......। बाकी ओह रजगद्दी खातिर कतना तेआग करे के परित...... ? आपन देहि बेंचे के परित, लाज सरम के पानी में घोरि के पीए के परित, आ बकुला के पाँखि लेखा ऊजर, सफेद, अपना खनदान के इजति में करिखा पोते के परित......, एहिजा राज क लेतीं त का, दइब के दुआरा त लुआठी से दागल जइतीं.........'

आ एहिजे का कम साँसती होखित? सेठ सहुकार आ राजा महराजा के कवन बात, डोम, चमार, हलखोर, जेही दू कउड़ी दिहित, ओकरा आगा डाँड़ लचकइतीं, जेकरे मन करित, ऊ दुगो ढेबुआ देके, राति भर, कुकुर लेखा, हमार गतर-गतर झिंझोरित......, छी...छी..., एह तरे जिअला से त चुरुआ भ पानी में डूबि के मू गइल बढ़ियाँ...।

बाकी मुअलो ओतना असान ना ह जतना लोग सोचेला। हमहूँ त घर से मुअहीं खातिर निकलल रहीं। काहे ना मू गइनीं? काहे ना रेलि से कटि गइनीं? निकहा त राति के बेरा रहे, आ गाड़िओ महरानी हहास बन्हले आवत रहली, खाली लाइन प सुतला के देरी रहित, छन लगबे करित, सँउसे देहि गुरिए-गुरिए हो जाइत। जाड़ा-पाला के राति, कवनो मोसाफिरो ना निकलतनि स गाड़ी से, केहू के कुछ पते ना चलित, फजिरे, दुनिया जानित कि गाड़ी से एगो मेहरारू कटि गइलि। केकर मेहरारू? ई त केहू जनबे ना करित? जानिओ के का करित? केहू आँखि से दू बून लोरो त ना गिराइत। का जाने 'उनुका' पाता चलित त।

त का करितन?......रोइतन......? काहे के? हम उनुकर के रहीं? बिआही! हम काहे के ओह हतेआर के बिआही होखे जाईं? हम त ओकर रखनी रहीं तबे

ओह राति, हमरा के अपना घर से निकले के हुकुम दिहलसि। अपना मेहरी के केहू आधा राति खा घर से खदेरी ? कसाइयो भेंड़-बकरिन के जाड़ा-पाला में आँगना में ना छोड़ेलन स; कोठरी में बन कके राखेलन स……।

……आ, हम कसूरे कवन कइले रहीं ? ढेर दिन प फुलेसरी के मरद बहरा से आइल रहे। ओकरा से दू घरी हँसि-हँसि के बतिअवले रहीं। इहे नू ? त का एही से हम ओकरा जरे फँसि गइनीं ? कतना सकेत होखेला मरद के करेज ? ऊ सबके से बोली, बतिआई, राह चलत जवान छोकरिन के देखि के 'गोरिया तोरे नयनवा चलावे छुरी-भाला' गाई बाकी का मजाल कि ओकर मेहरारू कवनो दोसरा मरद से तनी मुसुकाइ के बोल देउ……।

बाकी, इहो सोचल ठीक नइखे। भुलेटनो त मरदे हवन……! मेहरारू प कबहीं सक-सुबहाँ ना करसु। हमरा के त 'देवी' लेखा मानेलन। कबहूँ कहींला कि हमरा अइसन छुछुनर के रावा काहे अतना बड़ बूझींला, त कहेलन—

"तू का जनबू कि तोहरा में कवन गुन बा ? बुढ़वा तोहार कदर ना कइलसि, एकर माने ई नइखे कि तू घूरा प फेंके लाएक बाड़ू। साँच पूछ त तोहार नाँवे हीरा ना ह, तू हूँ, हीरा हऊ। हीरा के मोल जोहरी जानेला, दोसर केहू त ओकरा के पथल समुझि के फेंकिए देला।……"

त का हम साच हूँ हीरा हईं ? लोग कहेला कि हीरा से अन्हारो घर में अँजोर हो जाला। का हम केहू के अन्हार घर में अँजोर करि सकीला ? उहूँ। ई ई सब मुँह देखल बात ह, अइसने रहित त भुलेटन हमरा के……।

भुलेटन के नाँव जीभि प आ जाला त उनुकर सूरति नाचे लागेला आँखि के आगा। अजबे किसिम के झुरझुरी उठे लागेला करेजा में। मन करेला, ओइसने कुचकुच अन्हरिया राति रहित, जाड़ा-पाला परत रहित, भुलेटन खाकी के कुरूता पाएट पहिरि के चउरहता प खाड़ा रहितन, हम टुकुर-टुकुर उनुकर मुँह तिकवत रहितीं, हमार आँखि से ढर-ढर लोर गिरत रहित, ऊ आगे बढ़ि के हमार दुनो हाथ ध लेतन आ कहितन—

"तू चुपेचाप चल हमरा सँगे। तोहरा कवनो किसिम के तकलीफ ना होई हमरा घरे जानि-बूझि के कीचड़ में ना परे के।……तू अनेरे रोअत बाड़ू। तू त चनरमा हऊ, चनरमा। तू जहँवा रहबू, ओहिजा अन्हरिया रहबे ना करी।"

बाकी ई सब सपना रहे, अब ना लउकी आँखी से।

अबहीं ले हमरा ई ना बुझाइल, कि ओह राति खा, का सोंचि के ऊ हमरा के चनरमा कहले रहन। चनरमा से त लोग अपना मेहरारू के मुँह के उपमा देला। तका हम उनुका अपने मेहरारू लेखा लागत रहीं ओह घरी ?……

ई सब सोचले नजाएज बा। ऊ ओह घरी हमरा के का समुझले रहन, ई त ऊहे बता सकेलन। हो सकेला, हमार, राहता बदले खातिर अइसन बात कहि देले हो खसु। जरूर इहे बात होई। अगर उनुका मन में कवनो किसिम के खोंटि रहित, त ऊ भेंट होखते मातर, हमरा के चनरमा, आ बेइलि के फूल कहि के अपना अँकवारी

में बान्हि ले ले रहितन, जइसे आजु काल्हु के 'बाबू' लोग अकेला में कवनो जवान मेहरारू के देखि के करत बा……। ऊ त, पहिले, हमरा के, तरी मोहाला में आधा राति खा, देखि के चकरइलन। चकराए के बातो रहे। एक त रण्डिन के मोहाला, दोसरे आधा राति के बेरा। ऊ हमरा से ओह बेरा खा, ओहिजा आवे के कारन पूछले रहन। हम का कारन बतइतीं? हमरा से ई ना कहल गइल कि अपना मरद से रूसि के, एह मोहाला में आइल बानी हमरा आँखि के आगा भग जोगनी उड़े लगलोस। लोर ढरके लागल। ऊ हमरा भिरी आ गइलन। कहलन—"चल, तोहरा घरे पहुँचा दिहीं।"

हमार घर काहाँ रहे? बाबू त हमार बिआह क के मू गइलन, बिआहे के हूक में। नइहर ओही दिन सोआहा हो गइल। रहे ससुरा। ओहिजो के फाटक बने हो गइल रहे। अब कवन मुँह लेके ओहिजा जइतीं? कहि देनीं—

"हम बे घर दुआर के हईं। आजु से इहे मोहाला हमार घर बनी। राउर आपन 'डिउटी' करीं।"

ऊ चिहा गइलन।

"त तू ई कुल्हि सीख के दिहलहा तोहरा के?"

हम कुछ ना बोलनीं। का बोलतीं हम केहू के सिखवला में परि के त आइल ना रहीं। चललत रहीं अपने मन से। लइकाईं में माई के मुँह से सुनले रहीं कि जवना तिरिआ प से पती के बिसवास ऊठि जाला ऊ बेसवा समुझल जाली स। हमरा प से पती के बिसवास ऊठि गइल रहे। ऊ हमरा के रण्डी कहियो देले रहन। एही से हम चलल रहीं एह मोहाला में। गावे बजावे आवते रहें, भगवान रूप देलहीं रहन। खाली कोठा प बइठला के देरी रहे……। हमरा के चुप देखि के, ऊ हमार दरद जानि—गइलन, तबे नू कहलन—"तू चुपचाप चल हमरा सँगे……।"

ऊ बोली में मिसिरी घोरि के बोलल रहन। बुझाइल कि सरग से भगवान कहत बाड़न कि—हमरा सँगे चल। हम अपना के ना रोकि पवनीं। चुपचाप उनुका सँगे लागि गइनीं। फजिरे, एही मड़ई में, उनुकर माई, हमरा के देखि के चिहा गइलीं। ऊ हँसि के कहि देलन कि ई तोहार 'पतोह' हईं। ई सुनि के, हम कनखी से उनुका ओर तकनी। ऊ मुसुकाइ के, गते से कहलन—

"तू डेरइह जनि। हम माई से हँसी कइनी हाँ। तहार बिआह हो गइल बा। गवनो एह साल हो जाई।"

ओही घरी बुझाइल कि केहू हमरा करेजा में लुतुकी फेंकि दिहल। ऊ गते-गते बढ़े लागल। अब त ऊ आँवा के आगि बनि गइल बिया। का जाने ई आगि कबले बुताई, कि ना बुताई……।

उत्तरी सीमा के रक्षक: बाबा सोमेश्वर नाथ

—ज्वाला प्रसाद श्रीवास्तव

चम्पारन जिला के उत्तर छोर पर नेपाल-भारत सीमा के बीच में सोमेश्वर पहाड़ बा। भैंसालोटन (तिरबेनी से ले के करीब करीब भिखनाठोड़ी) तक एह पहाड़ के पाँती बा। एह पहाड़ के सबसे उँचका चोटी २८५० फीट उँचा बा। एही चोटी के सोमेश्वर के नाम से पुकारल जाला। पुराणन में एह जगह के बार बार चरचा आइल बा। सोमेश्वर नागपुर से नजदीक पावेला। इहां से १४ मील दूर गोबरधना गांव से बीहड़ जंगल शुरु होला। ई जंगल भी बगहा से भिखनाढ़ोड़ी तक फइलल बा! एह जंगल के पार कइला पर आ करीब करीब दू माईल उत्तर का ओर बढ़ला पर सोमेश्वर के पहाड़ी मिले लागेली सब। इहे पहाड़ी सब भारत-नेपाल के सीमा के रक्षा करेली।

पहाड़ के चढ़ाई जेतना बीहड़ बा ओतने नयनाभिराम बा ओकर सुन्दरता। भक्त लोग के देखे वास्ते राजा भरथरी के कुटी भी इहां बा। बाबा सोमेश्वर नाथ के टूटल मन्दिर, देवी के मूर्ति, उनकर तेरुआर बाघ वगैरह सब कुछ भक्त लोग के दर्शन के वास्ते इहां मौजूद बा। औघड़ बाबा रहसो गुरु के पत्थल के नाव भी इहां बा जेह पर चढ़ के बाबा रहसो गुरु कावे तक जात रहस। आज रहसो गुरु नइखन लेकिन सावे घास के बाघ से दँवरी कराके चाउर निकाले के कथा आज एह जवार में गावल जाला। इहे सब देखे वास्ते बराबर लोग जात आवत रहेला।

३ मार्च १९६२ के भोर में हमनियों का सोमेश्वर का दर्शन का वास्ते चल पड़लीं। एक दिन पहिले काफी बरखा हो गइल रहे। एह दिन भी आसमान में बादल लागल रहे आ कभी कभी छिट पुट बून्दा बान्दी भी हो जाय। लेकिन सोमेश्वर पर चढ़ाई के जोश में हमनी बढ़त गइनी।

रामनगर से १४ मील पर गोबरधना गांव में हमनी थोड़ा आराम कइनी। इहें से जंगल शुरु होला। इहां जंगल विभाग के आफिस आ बंगला बा। करीब ७½ बजे भोर में हमनी इहां से आगे बढ़नी। घनघोर जंगल पतझड़ का वजह से बहुत साफ हो गैल रहे। दू मील जंगल पार कइला पर पहाड़ के पांती शुरू हो गइल। दुनू ओर आसमान छूअत पहाड़ का बीच में गली लेखा रास्ता पार करत हमनी परेवादह पहुंचनी। एह जगह के नाम परेवादह काहे परल कुछ ठीक ठीक ना कहल जा सके। एह पहाड़ी पर करीब दू हजार परेवा रहेलीस। आउर एक ठो छोटा मोटा दह भी बा दूनू ओर पहाड़ी के बीच में। सालो भर एह में पानी कम से कम जांघ भर रहेला। आ ठंढा अइसन कि गोड़ रखते बुझाला कि माथ पर ले बरफ जाम गईल। हिम्मत करके हमनी एकरा के पार कर गइनी बाकि ओह पार निकलला पर डांड़ आ गोड़ दुनू टेढ़ आ गइल। अइसन बुझाय कि डांड़ का नीचा सब पानिए में छूट गईल। बड़ी देर का बाद आगे बढ़े के हिम्मत भइल। एही जगह से पहाड़ के चढ़ाई शुरु होला। नेपाल जाये में जे पहाड़ पर चढ़े के होला ओह पर पूरा चौड़ा रास्ता बनावल बा लेकिन इहां

रास्ता उस्ता कुछ नइखे। लोग के अइला गइला से एक तरफ के निशान लेखा बन गइल बा। एही निशान के रास्ता मान के आदमी आगे पहाड़ पर चढ़त जाला। खूबी ई कि ई रास्ता भी अइसन बा कि एक ओर त पहाड़ आसमान छूअत बा आ दूसर ओर चार सौ फीट खाई। चारू ओर घनघोर घटे तक साबे घास उपिजल। हाथे लाते साबे टारत रास्ता बनावत हमनी आगे बढ़त गईनी। दू तीन माईल चलला पर एक ठो पहाड़ मिलल "बतासचौरा"। ई एतना उँचा बा कि जवना घड़ी कहीं हवा बयार ना रहीं इहवां ठंढा हवा मिलरत रही। एकरे नीचा करीब दू माईल तक घनघोर जंगल बा। एही जंगल पार कइला पर सोमेश्वर के सबसे उँचका चोटी पर पहुंचेला आदमी। जंगल पार करत में एक ठो खंडहर लेखा मन्दिर मिलल। मन्दिर के भीतर देवी के स्थान बा। बाहर गणेश जी आ शिव जी के पत्थर के मूर्ति बा। लोग कहेला कि राजा भरथरी एही जगह पर तपस्या कइले रहस। एह मन्दिर के भरथरी के कुटी कहल जाला। अचरज के बात ई रहे कि ईहां हरेक देवता पर ताजा आंढ़उल के फूल चढ़ल रहे। आस पास नजदिक में हमनी एक भी आंढ़उल के पेड़ ना देखनी। फिर एह सुनसान स्थान में ताजा आंढ़उल के फूल इहां के लाके चढ़ावेला। तरह तरह के भावना ले ले हमनी आगे बढ़त गईलीं। तब तक पानी जोर से पड़े लागल रहे। करीब पांच बजे सांझ के हमनी सोमेश्वर के चोटी पर पहुँचनी।

इहां एक ठो बहुत बढ़ियां बंगला बा। ई बंगला एक ठो अंगरेज पादरी रहे घुसनो साहेब, ओकरे बनवावल रहे। ई पादरी अपना मेम के साथे इहां रहत रहे। दू चार ठो थारु आ नेपाली के क्रिस्तान बना के पहाड़ का चोटी का नीचा छोटी छोटा मड़ई में राखत रहे। सुने में आवेला कि दू सौ बकरी पर चार चार गो ईंटा ओकरा पीठ पर लाद के एह पहाड़ी तक ढोवले जाये एह तरह बकरी के पीठ पर ईंटा आ सामान ढोवा के इ बंगला बनल। देखला से मालुम होला कि अपना जमाना में ई बंगला जोड़ रहल होई। लेकिन घुसनो साहेब के बाघ मार देलस आ मेम साहब देश लौट गइलिन। तब से बंगला के हालत खराब होत गइल। अब त बंगला में एक ठो टूट आराम कुर्सी, दू ठो बड़का बड़का टेबुल आ एक ठो दीवाल के आलमारी भर बांन गइल बा। बंगला के दीवाल पर भीतर आ बाहर रत्ती रत्ती जगह यात्री लोग अपना नाम लिख के खराब कर देहले बा।

एह बंगला से उत्तर नेपाल के सरहद शुरु होला। पहाड़ का नीचे चितामन मड़ी के जंगल शुरु होला जो नेपाल राज के ह। बंगला से एक मील पच्छिम देवी के आ स्थान पास में शिव जी के टूटल मन्दिर बा। एक पेड़ में घंटा भी टांगल बा। लेकिन शिव जी आ देवी के मूर्ति ना मिलल। सुने में आवेला कि दुश्मन लोग तूड़ के फेंक दीहल। लेकिन देवी के तेरुआर, शिवजी के त्रिशुल आ देवी के बाहन बाघ अभी भी एह जगह पर जइसे के तइसे बा। कहल जाला कि इहां सोमेश्वर महादेव के स्थान रहे। इहें पर एक ठो खम्भा गाड़ल बा, जे पर नेपाल आ भारत के झंडा फहरात रहेला।

लोक कथा

पनिहारिन के चार सवाल

—शैलेन्द्र किशोर चौबे (पूरबी चम्पारन)

चार गो इआर रहलन ! चारो जने में आकबदी इआरी लागल रहे। ऊ लोग दिन भर आपुस में खाली गप सप करे। ऊ लोग के बाप मतारी कार धंधा वास्ते कँउचे। एक दिन ऊ लोग सोचलक कि हमनिका भाग चलीं परदेस में आ अकिल के रोटी खाइल जाव। ऊ चारो जने घर से चलदेलन। उ लोग कहीं दूर देस में चल गइल। आन देस में बिना चिन्हा परचे के, ऊ लोगका ना तालाब मिले ना पोखरा। उ लोग कहाँ खाव ?

उहवाँ का राजा किहाँ एगो कुरमी नोकर रहे। आठ दिन भइल, ओकर गवना हो के आइल रहे। ऊ राजा का नोकरी पर से आएल आ ओकरा भूख लागल रहे। घइला में पानी ना रहे। लोटा में थोड़ा पानी रहे। वोह से ऊ हाथ गोड़ धो के खाये बैठ गइल। ओकर मेहरारू पानी लावे वास्ते घइला लेके इनार पर गइल। तब तक ऊ चारो इआर घूमत-फिरत वोह इनार पर पहुँचलें। ऊ लोग इनार देख के मन में विचार कइलक कि हमनिका एतहीं भोजन कर लिआव। वोह में से एक जने वोह कुरमिन से पूछलेन कि रउरा के लोग बानी ? ऊ कहलक कि हम कुरमिन हँई। ऊ वोकरा से एक लोटा पानी मङ्लेन त ऊ उनका से पूछलक कि रउरा के बानी ?तब ऊ जबाब देलेन कि हम मोसाफिर बानी। ई बात सुन के कुरमिन उनका से कहलक—'दुनिआ में दुइए गो मोसाफिर बा तीसर नइखे। एकर जबाब दीं तब हम पानी देहब।' ना त ना देहब ! उनका से एकर जबाब ना चलल आ उनका पानी ना मिलल। तब वोह लोग में से दोसर जना गइलन आ कुरमिन से पानी मङ्लेन। उनकरो से उ कुरमिन पूछलक कि रउरा के बानी ? ऊ मन में सोचलन कि हम अपना के जबरदस्त बताएब त ऊ डेरा के पानी दे दी। कहलेन कि हम जबरदस्त बानी। ऊ कुरमिन कहलक—'दुनिआ में दुइए गो जबरदस्त बाड़े तीसर नइखे। एकर जबाब दीं त पानी देहब ना त ना देहब।' ऊ एकर जबाब ना देलेन आ उनका पानी ना मिलल। एकरा बाद तीसरा इआर उहाँ गइलेन आ वोकरा से कहलेन—'हमरा के एक लोटा पानी द।' ऊ कुरमिन इनकरो से पूछलक कि रउरा के बानी ? ऊ मन में सोचलेन हम अपना के गरीब कहब त ई पानी दे दी। उ जबाब देलेन—'हम गरीब बानी।' ई सुन के ऊ कुरमिन कहलक—'दुनिआ में दुइए गो गरीब बा, तीसर नइखे। एकर जबाब दीं तब हम पानी देहब ना त ना देहब।' ऊ जबाब ना देलेन आ उनकरो पानी ना मिलल। तब चउठ जना वोकरा से कहलेन कि हमरा के लोटा पानी द। ऊ इनकरो से पूछलक कि रउरा के बानी ? ई कहलेन कि हम बुरबक बानी। ई सुन के ऊ कुरमिन कहलक—'दुनिआ में दुइए गो बुरबक बा, तीसर नइखे। एकर जबाब रउरा दीं त पानी देहब, ना त ना देहब।' उनकरो से जाबाब ना चलल आ उनका पानी ना मिलल। ई बात सोंच

के चारो इआर मतखाह हो गइलेन। ई लोग अकिल के रोटी खाए लाग घर से चलल रहे लेकिन ई लोग से एगो जनाना के जबाब ना चलल।

कुरमिन का पानी लेके जाये में देरी हो गएल। वोकरा सास मन में कहलक कि आज पहिले-वोहिलें ऊ पानी के गएल आ एतना देरी हो गएल। ऊ जा के देखे त उहाँ इनार पर चार आदमी खड़ा रहे आ वोकरा से ऊ बतिआत रहे। वोकर सास घूम के घरें चल गइल आ अपना बेटा से कहलक—'अइसन देस से मेहरारू क के ले आइल कि आज ऊ पहिले-वोहिले पानी के गएलह त अपना नइहर का चार गो इआर से बतिया रहल बा।' वोकर बेटा कहलक—'तूँ चुपचाप रह'। हम चारो जने के सजवा देहब।' एतने में कुरमिन पानी लेके आएल आ कुरमी अँचा के राजा का कहचरी में गएल आ राजा से करजोर के कहलक—'हजूर से जान बकस पाईं त कुछ सवाल करीं। हम हजूर के नोकरी करीं कि वोकर रखवारी करीं। ऊ अपना नइहर का चार गो इआर से बतिआत रहल ह।' ई बात सुन के राजा तुंरते चार गो सिपाही के छोड़लेन कि जा, वोह चारे के पकड़ लाव आ फाँसी दे द। राजा के चारो सिपाही छूटल आ एह चारो जना के पकड़ लेलक आ कहलक कि राजा के हुकुम बा कि तोहनी के फाँसी दे दिआई। ई चारो इआर ईसवर से विनती करे लागल लोग कि हे भगवान, हमनी से कवन कसूर भइल ह कि हमनिका फाँसी होखे जा रहल बा।

वोही जग के कवनो जनाना रहे। ऊ वोह कुरमिन से कहलक—'दूर हो-दूर हो'! भल तोहरा आठ दिन अएला भएल आ चार जने के फाँसी पर भेज देलू।' ई बात सुनके ऊ कुरमिन मनमें सोचलक 'ऊ चारो त हमरा से कवनो छल-छुदरम के बात ना बतिआएल ह। ई सब अगर फाँसी पर चढ़ जाई त हमरा बड़ा पातक लागी।' ऊ वोतही से राजा का कचहरी में चल गएल आ करजोर के कहलक—'जान बकस पाइ त राजा जी से हम एगो सवाल करीं।' राजा कहलेन-'हँ हँ। कर।' कुरमिन राजा से पूछलक-'कवना कसूर पर वोह चार आदमी के फाँसी के सजाय दिआएल ह।' ई बात सुनते राजा एक आदमी के दउरवलेन कि वोह चारो आदमी के छोड़ा के कचहरी में ले आव। ऊ आदमी गएल आ चारो इआर के ले आ के कहचरी में खड़ा कइलक। राजा वोह लोग से पूछलेन कि कुरमिन इनार पर पानी भरे गएल रहल ह त तोहनी वोकरा से का बतिअइल ह। चारो इआर जबाब देलेन—'हमनीका मरद-बच्चा हईं। हमनी से ना पूछ के उनकरे से पूछल जाव कि का बात ह।' राजा कुरमिन से पूछलेन कि ई लोग तोहरा से का बतिआएल ह? कुरमिन कहलक—'ई लोग हमरा से पूछलक कि तू के लोग बाड़ू त हम कहनो कि हम कुरमिन बानी। फेनु ऊ लोग हमरा से पानी मङ्गलक तब हम पूछनी कि रउरा के बानी। त एक जने कहलेन कि हम मोसाफिर बानी। तब हम कहनी कि दुनिआ में दुइएगो मोसाफिर बा, तीसर नइखे। एकर जबाब द त पानी देहब ना त ना देहब।' उनको से जबाब ना चलल कुरमिन के ई बात सुनके राजा पूछले—'एकर का माने ह।' कुरमिन जबाब देलक—'सुरुज आ चनरमा इहे दू गो मोसाफिर बाड़ेन जेकरा चलते बीतेला तीसर कोई मोसाफिर नइखे।' फेनु राजा पूछलेन 'तब?' कुरमिन कहलक—'दोसर जने हमरा से कहलेन कि हम जबरदस्त बानी। त हम कहनीं कि दुनिआ में दुइए गो जबरदस्त बा एकर जबाब दीं त हम पानी देहब।

उनका से एकर जबाब ना चलल।' राजा पूछलेन कि एकर का माने ह? कुरमिन कहलक—'दुनिआ में अन्न आ पानी, इहे दू गो जबरदस्त बा। एह दूनू बिना केहु जी नइखे सकत।' फेनु पूछलेन-तब' कुरमिन कहलक—'तीसर जने हमरा से कहलेन कि हम गरीब बानी त हम कहनी कि दुनिआ में दुइए गो गरीब बा, तीसर नइखे। लेकिन उनका से एकर जबाब ना चलल।' राजा पूछलेन कि एकर का माने ह? कुरमिन जबाब देलक—'दुनिआ में दुइए गो गरीब बा, एक बेटी आ दोसर गाय'। अगर बेटी के बिआह बाप-मतारी परम गरीबो से कर देला त ऊ कुछुओ ना बोले। गाय के कोई कसाइओ का हाथे बेच देला त ऊ ना कहे कि हम एकरा साथे ना जाएब।' फेनु राजा पूछलें—एकरा बाद?' कुरमिन कलहक—'चउठ जने हमरा से कहलेन कि हम बुरबक बानी त हम कहनी कि दुनिआ में दुइएगो बुरबक बा, तीसर नइखे। एकर जबाब दीं त पानी देहब ना त ना देहब। ऊ जबाब ना देलेन।' राजा पूछलेन—'दुनिआ में के के दू गो बुरबक बा?' कुरमिन जबाब देलक—'एगो बुरबक त हमार पति बा आ दोसर बुरबक रउरा बानी जे बे कसूर चार आदमी के फाँसी देबे जात रहनी ह।'

कैसे दूँ

कैसे दूँ भलाबेईमनवन के होला!
महंगी का मारे बहंगी फेंकाइल
पाकिट में अन्न आई रुपये तोला
काम केहू कैसे करो देह लटल जाला
भर पेट मिलतावे कवना टोला
अधिका खाइल काले होला।
का करी गोली का करी गोला
उठे मत पावे दादा, तनिको हहोला
बनो मत गोधन ओकनिके चोला।
बड़ बड़ बड़लोके जड़ ई उखड़ जाई
आवतावे आन्ही ए बंभोला
हमनी के पेट पीठ एक भइल जाता
ओकनी के बढ़ गइल देखीं नदकोला

—महेन्द्र शास्त्री (सारन)

मन के बात

कइसे कहीं मन के बतिया मन में चुभ-चुभ गड़ेला
ताकत रहिया तोहार हारल अँखिया हहरेला
चलत डगर पर नजर लगावे जिअरा मोर घबड़ाय
टक-टक ताके लोग अभागा देख जीव जरी जाय
कि मन में फेर से उभरेला,
रो के सुतल दरदिया दिल में फेरु उभरेला
कइसे कहीं मन के बतिया मन में चुभ-चुभ गड़ेला ।।१।।
एने-ओने के कनखी मटकी मनवा मोर शरमाय
अस मन करे काटल-काटल गरिया दिहिं सुनाय, कि
बतिया बढ़-बढ़ बोलेला,
नतिया करेला ठिठोली बतिया बढ़-बढ़ बोलेला ।।२।।
जइसे देखनी तोर सुरतिया जिअरा गइल जुड़ाय
हम बावरी परबस हो गइनी आपन सुध बिसराय, कि
अँखिया ढर-ढर ढरेला
कटलऽ पँखिया हमारऽ अँखिया ढर-ढर ढरेला
कइसे कहीं मन के बतिया मन में चुभ-चुभ गड़ेला ।।३।।
फले-फूले गदराइल देखनी हरिअर हरियर बाग
सोझिया मनवाँ सोचलस ना कि भरल बा नीचा आग, कि
गछिया धह-धह जरेला
पछिया मारेला झिकोरा गछिया धह-धह जरेला
कइसे कहीं मन के बतिया मन में चुभ-चुभ गड़ेला ।।४।।
नइखे कवनो शिकाइत कि तोह से मोर भइल बदनाम,
हम नेहिया के नेम निमहनीं नाम के ना बा काम, कि
मनवाँ अतने करेला
दे दऽ बहियाँ के छहियाँ मनवाँ अतने करेला
कइसे कहीं मन के बतिया मन में चुभचुभ-गड़ेला ।।५।।

—प्रभुनाथ शर्मा

पहिले का बाद

भोजपुरी में क्रिया के रूप

—विन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव

(१) सामान्य भूत काल :— कर्त्तरि :—उ० पु० खइनी, म० पु०—खइल—खइले :—खइलू—खइलनि (स्त्री) खइनी (आद०) अ० पु०—खइलन—खइलक—खइलस खइनन—खइली (स्त्री) खइनीं कर्मणि :—उ० पु०—खाएल गेल। प्रेरणार्थक : उ० पु०—खिवउनीम० पु० :—खिववल—खिववलेल खिववलू—खिववलिस (स्त्री) खिवउनी (आद०) उ० पु०—खिलवलन—खिलवलक—खिववलिन—खिववलों (स्त्री) खिवउनी—(आद०) कर्मणि :—खिवावल गेल नकारात्मकः—स्वीकारार्थक क्रिया का पहिले "ना" जोड़ के कर्त्तरि—कर्मणि—प्रेरणार्थक सब में चलेला।

(२) पूर्ण भूत (पुराघाटित अतीत) कर्त्तरि—उ० पु०—खइले रहीं। रहनी उ० पु०—खइले रहस—खइले रह खइले रहलू—खइले रहलिस (स्त्री) खइले रहनी—रहीं (आद०) अ० पु० खइले रहस—रहले रहन खइले रहली—रहलिन (स्त्री) खइले रहनी (आद०) कर्मणि :— खाएल गेल रहे। प्रेरणार्थक :—(कर्त्ता) उ० पु०—खिववले रहीं। रहनी म० पु०—खिववले रह—खिववले—खिववले रहस खिववले रहलू—खिववले-रहलिस (स्त्री) खिववले रहनी। रहीं (आद०) (कर्मणि) खिवावल गेल रहे। नकारात्मक—क्रिया का पहिले 'ना, जोड़ के विशेष :—मूल क्रिया ('ख') में "ले" के दू बार भी बोलल जाला :—जइसे :—"खा लेले रहीं" आदि।

(३) अपूर्ण भूत :—(घटमान अतीत) कर्त्तरि :—उ० म०—खात रह—खात रहस, खात रहलू—खात रहलिस (स्त्री) खात रहनी। रहीं (आद०) अ० पु०—खात रहस—खात रहे, खात रहली—खात रहलिन (स्त्री०) खात-रहनी। रहीं (आद०) कर्मणि :—खाएल जात रहे प्रेरणार्थकः—"खिवावल"का साथ अतीतवाची समापिका क्रिया रहनी, रहस-रह, रहे रहलू-रहली, आदि जोड़ल जाला। एकर कर्मणि प्रयोग "खिलावल जात रहे" होला। नकारात्मक :—"ना" का मेल से।

(४) संदिग्धभूत :—(सामान्य) कर्त्तरि :—उ० पु०—खात होखब् [खात होखबस म० पु०—खात होइब—खात होइबे, खात होइबू—खात होइबस (स्त्री) खात होइब् (आद०) अ० पु०—खात होई—खात होइहेन, (पु० स्त्री) खात होखब (आद०) कर्मणि :—खाएल जात होई। होखी प्रेरणार्थक :—"खिवावत" का साथे पुरुष-वचन का मोताबिक समापिका क्रिया "होखब्" आदि जोड़ के कर्मणि प्रयोग में "खिवावल जात होईं" नकारात्मकः—"ना का मेल से।

(५) संदिग्धभूत (घटमान) कर्त्तरिः— उ० पु० खात रहल होखब् म० पु०—खात रहल होखब—खात रहल होखबे खात रहल इोखबू—खात रहल होइबस (स्त्री) खात रहल होखब् (आद०) अ० पु०—खात रहल होई-खात रहल होइहेन (पु० + स्त्री) खात रहल होखब (आद०) कर्मणि :—"खाएल जात रहल होई" प्रेरणार्थक :—कर्त्तरि प्रयोग में "खिवावत रहल" का साथे "होखब" के रूप वचन और पुरुष का अनुसार जोड़ल जाला और कर्मणि प्रयोग में "खिवावल जात रहल होई" चलेला। नकारात्मकः—"ना" का मेल से बनेला। विशेष :—मध्यम पुरुष में "होखब" का जगह पर "होइब" भी बोलल जाला।

(६) संदिग्ध भूत (घटित चाहे पूर्ण)

कर्त्तरिः—उ० पु०—खइले होखब

म० पु०—खइले होखबे—खइले होखब् खइले होखबू—(स्त्री)
खइले होखब् (आद०)

अ० पु० ;—खइले होई। होखी—खइले होइहेन खइले होखब आद०

कर्मणि—"खाएल गेल होई"

प्रेरणार्थकः—कर्त्तरि "खिववले होखब" वाकी पुरुष—वचन में ऊपरे का रूप का लेखा "होखबू—होखबे" आदि लागेला। और कर्मणि प्रयोग में—"खिवावल गेल होई" चलेला।

नकारात्मक रूप "ना" का मेल से

(७) हेतुमान अतीत (हेतु-हेतु मद्भूत)

हेतुमान अतीत में क्रिया के रूप तीन तरह से बोलल जालाः—

(क) खइतीं—खइत्—खइतू—खइते" (सामान्य) (ख) खातरहतीं—खातरहतू आदि (सातव्य)

(ग) {खइले रहतीं—रहतू······आदि (संदिग्ध पूर्ण)
{खा लेले रहतीं·········आ!दि (,, ,,)

क्रिया का हेतुमान अवस्था मे हेतु के प्रधानता रहेला। ओकरा में पूर्णता के आरोपाभास हेतु का आधार पर कइल जाला, असल में पूर्णता कबदी रहे ना—सम्भावना के कल्पना रहेला।

कर्मणि प्रयोग में (क) खाएल जाइत (ख) खाएल जात रहित रूप बोलल जाला (ग) खाएल गेल रहीत जाला खा लेल गेल रहीत।।

प्रेरणार्थक :—रुप कत्तरि प्रयोग में

"खिववतीं" "खिवावत रहती" खिववले- रहतीं " "खिवा लेले रहती" आदि में वचन पुरुष का अनुसार "अ ई ऊ ए" प्रत्यय का भले से ऊपरे लेखा बनला। कर्मणि प्रयोग में भी—"खिवावल" मूल क्रिया का रूप में रहेला ओर पुरुष वचन का अनुसार "जाइत—जात रहित" आदि जाइल जाला।

नकारात्मक रूप "ना" का मेल से बनेला।

सामान्य भविष्यत्—कर्त्तरिः—

उ० खाएब म० पु० खाइब—खइबे, खइबू—खइबे (स्त्री०) खाएब (आदि०) अ० पु०—खाई—खइहेन, (पु० स्त्री०) खाएब (आदि०) कर्मणि :—"खाएल जाई"

प्रेरणार्थक :—

कर्त्तरि प्रयोग में "खिवाएब—खिवइब

खिइबे—खिवइबू" और कर्मणि प्रयोग में खिवावल जाई चल ला।

नकारात्मक—'ना' का मेल से बनेला।

(२) घटमान भविष्यत् (अपूर्ण)

कर्त्तरि—उ० पु० —खात रहब—म० पु०—खात रहब—खात रहबे,
खात रहबू—(स्त्री)

अ० पु०—खात रही खात रहिन (पु० स्त्री) खात रह०—(आ०)

कर्मणि—'खाएल जात रही'

प्रेणार्थक—'कर्त्तरि प्रयोग में खिवावत रहब"— रहबू—रहबे आदि और कर्मणि प्रयोग में

"खिवावल जान रहीं "बोलल जाला

नकारात्म—'ना' का मेल से बनेला।

(घटित भविष्यत् पूर्ण)

कर्त्तरि—उ० पु०—खइले रहब् म० पु०—खइले रहबे—खइले रहब
खइले रहबू—(स्त्री)
खइले रहब (आद०)

अ० पु० खइले रही—खइले रहिहेन (पु० स्त्री)
खइले रहब (आद०) ("खइले" का जगह पर "खा लेले रहब" भी बोलल जाला)

कर्मणि :—"खाएल गेल रही"

प्रेरणार्थक—कर्त्तरि प्रयोग में "खिववले रहब"

—रहबे, रहबू" आदि रूप और कर्मणि प्रयोग में "खिवावल गेल-रही" बोलल जाला।

नकारात्मक 'ना' का मेल से।

(४) सम्भाव्य भविष्यत्

कर्त्तरि :—उ० पु० खाईं

म० पु०—खा—खो—खास (पु० स्त्री) खाईं (आद०)

अ० पु० —खाओ खाव—खास (पु० स्त्री) खाईं (आद०)

कर्मणि :—"खाएल जाव"

प्रेरणार्थक :—कर्त्तरि प्रयोग में "खिवाइँ, खिवाव—खिवावे—"आदि रूप और कर्मणि प्रयोग में "खिवावल-जाव" बोलल जाला।

नकारात्मक—'ना' का मेल से।

(५) हेतुमान भविष्यत् में क्रिया क रुप हेतु॰ अतीत का लेखाही होला। प्रसंग भेद से ही काल भेद के पहचान कइल जाला।

यौगिक काल

(१) कारणात्मक भविष्यत्

कर्त्तरि :—उ॰ पु॰ खालेल—खालेहेब्

म॰ पु॰ खालेब—'खालेत्रे' खालेत्रू—(स्त्री) खालेब् (आद॰)

कर्मणि :—"खा लल जाइ।"

प्रेरणार्थक :—कर्त्तरि में 'खिवालेव—लवे—लेत्रू" आदि रूप और कर्मणि में "खिवा लेल जाई" चलेला।

नकारात्मक ना का मेल से।

(२) करणात्मक वर्त्तमान कर्त्तरि उ॰ पु॰ खा लेतानी म॰ पु॰—खाले ताल—(स्त्री) खा लेतानी कर्मणि—"खा लेल जाता" प्रेरणार्थक—"खिवा ले तानी" आदि "खिवा लेल जाता" नकारात्मक :—"ना" का मेल से।

(३) नकारात्मक अतीत कर्त्तरि उ॰ पु॰—खा लेती

म॰ पु॰ खा लेत'—खालेते, खा लेतू—(स्त्री) खालेनीं (आद॰)

अ॰ पु॰ :—खालहीत—खा लीहतन

खा लेती—खालेतीन (स्त्री खालेतीं (आद॰)

कर्मणि:—"खा लेल जाईत"

प्रेरणार्थक:—"खिवालेती" आदि रूप "अ, ई, ऊ, ए" प्रत्यय का मेल से बनेला।

कर्मणि प्रयोग –"खिवालले जाईत"

(नकारात्मक रूप पहिले ही लेखा) (ई रूप भविष्यत् काल में भी लागेला)

एहि तरह "खाएब" क्रिया का साथे "होखल" "पइल" ओर "देहल" क्रिया का मेल से यौगिक क्रिया के रूप बनेला।

क्रिया में "करत्रे" या "के" जोड़ के पूर्व कालिक क्रिया बनेला। जइसे:—खा करके। खा के

विधिलिंग में क्रिया का साथे "चाहीं" जोरल जाला :—"खाए के चाहीं"

अनुहाया आदेश मे खा—खाव खाइँ—खासं रूप चलेला उ॰ पु॰ खाई म॰ पु॰ खा—खौ, खाइँ अ॰ पु॰ खाव—खास—खाइँ

प्रेरनात्मक :—भोजपुरी में क्रिया के प्रश्नकायक रूप तीन तरह से बनेला :—

(१) प्रश्नवाचक सर्वनाम "का" का मेल से (क) उ खा लेलन का? (ख) का उ खइलन? दूसराका वाक्य (ख) में "का" अगर नाभी रहे तेहू पर कामयल जाई। पहिला में वाक्य का गठन का मोताबिक ओक रहल जरूरी बाटे।

(२) क्रिया का आखिरी हींसा के जोर का साथ (सुत करके बोलला से :—

उ० पु० —खाएब् म० पु० —खहबे

एसे जाहिरे बा कि जे प्रशनवाचक बनावे खातिर क्रिया के रूप ? काल और पुरुष वचन का मोताबिके रहेला मगर —कभी आखिर वाला अच्छा के और कभी ओकरा पहिले वाला अच्छा के बलाघात से प्लुत करके बोलल जाला। दू अच्छर का रूप बाला क्रिया में जादे खुलासा होई

देऽब् ? (उ० पु०, अ० पु०, म० पु० (आद०) भविष्यत् काल देबऽ ? (म० पु०) भविष्यत् काल देनीऽ ? (अ० पु० आद०)

विशेषणार्थक :—(““खात”)

क्रियार्थक संज्ञा :— “खाएल”

धातुपद (Infinitive) “खाए के”

क्रियाद्योतक खाने-खाने

भोजपुरी में काल के निर्देश जवना हालन में बेवहार में मिलेला ओकरा आधार र ओकरा विभाजन या बँटवारा के बहुत “सूक्ष्म” कहल जा सकल जाला। कए गो ल के उदाहरण अइसन मिली जे हिन्दी आदि में ओकर सही अनुवाद कएल अगर म्भव ना होए तो कठिन जरूर होई।

भोजपुरी का क्रिया का रूप में उ० पु० म० पु० (आदि०) और अ० पु० (आद०) के रूप हर हालतं में एके होला। बहुत बेर म० पु० और अ० पु० में पुलिंग और लिंग क्रिया के रूप लके होला। संस्कृत में हमेशा एक होला, मगर हिन्दी में कभी कारान्त और कभी पुलिंगे जइसन होला। संस्कृत में आदरार्थक सर्वनाम (भवान्) असल मध्यम पुरुष ह मगर ओकर क्रिया अन्यपुरुष के होला। हिन्दी में आदरार्थक सर्वनाम ध्यमपुरुष और अन्यपुरुष में अलग-अलग होला मगर क्रिया दूनू में एके होला।

तेहूपर तीन पुरुष में क्रिया के एके रूप भोजपुरी के अपन विशेष बा। भोजपुरी क्रिया के एगो आउर विशेषता बाजे एकवचन और बहुवचन कर्त्ता के क्रिया खासकर के एके होला। बहुवचन खातिर कर्त्ता (संज्ञा क सर्वनाम) में ही बहुवचन वाचक शब्दांश या ब्द जोर दिंआला।

ऊपर भोजपुरी क्रिया के एगो बहुत कुछ खुलासा रूप तैयार कएल गइल बा। गर ई पूराना बा एह लेख के मतलब भोजपुरी क्रिया के रूप एकट्ठा करेके बा। ई कवनो “आलोचनात्म अध्ययन” ना हवे। जबतक प्रयोग और हिन्दी संस्कृत को रूप साथ-थ ना देखल जाइ तवले खूब खुलासा ना होई। दोसर चीज ई बाजे ई सब रूप चम्पा-ण का भोजपुरी के ह। भोजपुरी का दोसर अंचल का रूप से भिन्न होबे करी।

परदा रहे दीं

इसारा के बतिया इसारे से कहि दीं
नयनवाँ के हक जीभ छीने ना पावे,
घइलवा भले रस के सरवे त सरवे,
मगर देखीं छलकें भा फूटे ना पावे
न कविता कनियवाँ के घुँघटा उघारीं,
सरम लाज पर कुछ त परदा रहे दीं।
घुँघटवा के ओटवा से छूटेला सनसन
कठिन कढ़ले फनवाँ नयनवाँ के बनवाँ,
कि गमकत गुलबवा के झाड़ी में छिपि के
अहेरिया लगावेला जइसे निसनवाँ।
महातम बहुत छिपि के मरला के बड़ुए,
कइल ओट से चोट खाली न जाला।
मुहब्बत के महफिल में बेमोल भइलन
जिगर केतने एगुड़े नजर में कबाला।
अकसवा के सोभा बढ़ावेला बदरा,
आ कजरा बढ़ावे नयनवाँ के रौनक,
अन्हारा के बतरस के रस के बखानी ?
रोसनियाँ ऊ रस दे सकेले कहाँ तक ?
ए दुनियाँ के हर खूबसूरत जिनिस पर
हमेशा से बड़ुए परल एगो परदा,
परदवा के पीछे उ बा हीरा मोती,
परदवा हटा दीं, मिली धूर गरदा,
बहुत वासना बड़ुए बेपरदगी में
परदवा में पइसीं आ छकि छकि के रस लीं।
'बहुत मीठ बड़ुए' ई मुख से न बोलीं
इसारा के बतिया इसारे से कहि दीं।

धीरेन्द्र प्रसाद सिनहा "धवल"

‘अजोर’

—कुमारी माधुरी श्रीवास्तव
एम० ए० साहित्यरत्न

चारों ओर घटाटोप अन्हार भइल रहे। अइसन घन अन्हार रहे कि हाथ के हाथ ना सूझत रहे। ओंहू में उबड़ खाबड़ रास्ता से जाए के। अकेलें जी घबड़ात रहे। हम थथमथाइल रहनी कि का करीं, केने जाईं। अतने में बुझाइल कि बड़ी दूर से कोई, जइसे सपना में सुनाला वइसहीं पुकारता। हमरा ई ना बुझाइल कि आवाज केने से आवता। लेकिन ध्यान देवे पर मालूम भइल कि स्वर में प्रेरणा भरल रहे। कोई हमरा के आगे बढ़े के उत्साहित करत रहे। हम बहुत परेशान रहनी और रास्ता टटोल के ही आगे बढ़े के कोशिश करत रहनीं। मन ही मने ओह आवाज के निर्देश पर भी गौर करत रहनी कि एतने में आसमान से तनी सा बदली छँट गइल। जब तक ले हम चान्द का रोशनी में रास्ता देखीं, देखीं तब ले ऊ फिनु बदली में लुका गइलन।

एतना मालूम रहे कि अइसन दिक्कत के रास्ता थोरहीं दूर लेंबा। कइसहूँ हिम्मत करके अगर एकरा के पार कर गइनी तो आगे बढ़िया सड़क मिल जाई, जौना पर आसानी से आगे बढ़ल जा सकेला। लेकिन अतन ही सा दूरी कइसे तय होखो। कभी-कभी तनी अँजोरिया झलक जाइल करता बाकी फिर तो ओतने अन्हार हो जाता। कभी ए दिसा से तो कभी ओ दिसा से, माने चारों ओर से अक्सर आवाज आ रहल बा हमरा के उत्साह बढ़ावे खातिर। थोड़े सा कष्ट सह के अगर हम ई मुश्किल रास्ता खतम कर लीं तौ फिर ओने त आगे लोग हमरा के स्वागत करे खातिर तैयार बइठल बा। ऊ स्वागत, इज्जत, मान पावे का पहिले जे हम इहाँ अन्हार में भटक रहल बानी ओकर त पहिले कोई उपाय होखो।

बड़ी देर का बाद बहुत दूर पर तनिक सा ‘अँजोर’ लउकल। ओकर हल्का सा पतला सा ‘किरिन’ हमरा लगे तक आवत रहे। हमरा मन के बड़ी ढाढ़स मिलल। ओही किरिन के लीक धइले अब हम आसानी से आगे बढ़ सकत रहनी। मन ही मन हम भगवान के धन्यवाद देनीं जे एतना नाजुक समय में हमरा के मदद कइलन। ओह अन्हार में हम कहीं भी, कभी भी नष्ट हो जा सकत रहनी। फिर के हमरा के जानीत, बूझीत।

तमसो मा ज्योतिर्गमय—अब हम अंधकार से प्रकाश के ओर बढ़त रहनीं, अज्ञान से ज्ञान के ओर जात रहनी। अब अतना ‘अँजोर’ हो गइल रहे कि हम अगल बगल के परिस्थिति भी देखत रहनी कि केतना लोग का मुकाबिला का बाद हमरा आगे बढ़े के बा। ‘अँजोर’ पा के तो हम निहाल हो गइनीं।

एही आनन्द में हम गोता खात रहनी तले आँखि खुल गइल। त का ई सब हम सपना देखत रहनीं? जागि के देखनी कि हाथ में ‘अँजोर’ पत्रिका के एगो अंक रहे। साइत पढ़ते-पढ़ते सुत गइल रहनो आ भोजपुरी के बारे में सोचते-सोचते अइसन सपना देखनी हा। मन में सोचनी कि भोजपुरी के भविष्य तो उज्ज्वल बुझाता। एकरा चाही कि कम से कम अपना क्षेत्र के जन-जन के मन पर प्रतिष्ठित होखो। फिर एकर साहित्य भी उन्नत होई। एकरा क्षेत्र के भी और विस्तार हो सकेला। एह संक्रान्ति काल से निकल गइला पर तो आगे पथ प्रशस्त होखबे करी।

भोजपुरी पर हिन्दी के निबंध एवं सन्दर्भ ग्रंथ

—गणेश चौबे

'अँजोर' के अक्टूबर' ६३-जनवरी' ६४ अंक में हमने भोजपुरी के मुद्रित साहित्य की एक सूची प्रकाशित की थी। यह हमारे लिए परम संतोष की बात है कि विद्वानों एवं जिज्ञासु पाठकों ने उसे बड़े चाव से अपनाया है और वह उनके लिए उपयोगी भी सिद्ध हुई है। उस सूची के प्रकाशन के बाद हमें पूर्व एवं सद्य प्रकाशित अनेक ग्रंथों की सूचना मिली हैं। हम उनकी एक पूरक सूची यथाशीघ्र प्रकाशित करने के लिए यत्नशील हैं।

नीचे हम भोजपुरी पर प्रकाशित हिन्दी के निबंध ग्रंथों की एक सूची दे रहे हैं। भोजपुरी भाषा और साहित्य पर युरोपीय विद्वानों ने बहुत काम किये हैं, जिनमें ग्रियर्सन, बीम्स, जौन क्रिश्चियन, फैलन, हौर्नले, फ्रेजर आदि प्रमुख हैं। इनके निबंध एवं ग्रंथ अंग्रेजी तथा अन्य युरोपीय भाषाओं में प्रकाशित हैं, जो आज दुर्लभ हो रहे हैं। हम 'अँजोर' के किसी अगले अंक में उनकी भी एक सूची देने का प्रयास करेंगे। यहाँ यह कहना अनुपयुक्त नहीं होगा कि हिन्दी की क्षेत्रीय भाषाओं में सबसे अधिक शोधकार्य भोजपुरी पर हुआ है, जिसकी विधिवत् जानकारी सुधी पाठकों के लिए अपेक्षित है।

तारांकित ग्रंथों के रचयिताओं ने लेखक को अपने-अपने ग्रंथ भेजकर इस कार्य में परोक्ष या प्रत्यक्ष रूप से सहायता पहुँचायी है, जिसके लिए हम उनके प्रति आभार प्रगट करते हैं।

✓१ भोजपुरीभाषा और साहित्य डा० उदय नारायण तिवारी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना, १९५४ ई०, पृ० सं० ३६०, मूल्य १३ रु० ५० पैसे। डी० लिट् के लिए स्वीकृत प्रबंध।

✓२ भोजपुरी लोक गाथा डा० सत्यव्रत सिन्हा, हिन्दुस्तानी एकैडमी, इलाहाबाद, १९५७ ई०, पृ० ३४०, मूल्य ८ रु० पी एच० डी० के लिए स्वीकृत निबंध।

✓३ भोजपुरी और उसका साहित्य, डा० कृष्ण देव उपाध्याय, राज कमल प्रकाशन, नई दिल्ली, १९५७ ई० पृ० सं० १५१, मू० २ रु० २५ पैसे।

✓४ हिन्दी साहित्य का वृहद इतिहास १६ वां भाग, महापंडित राहुल सांकृत्यायन एवं डा० कृष्ण देव उपाध्याय, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, १९५७ ई०, पृ० सं० ७८०, मू० २५ रु०। इस ग्रंथ के 'भोजपुरी लोक साहित्य' शीर्षक अध्याय का प्रणयन डा० कृष्णदेव उपाध्याय ने किया है (पृ० सं० ८२-१७३)

✓५ लोक साहित्य की भूमिका, डा० कृष्णदेव उपाध्याय साहित्य भवन लिमिटेड प्रयाग, १९५८ ई०, पृ० सं० २७५ मूल्य ८ रु०। इस पुस्तक में भोजपुरी लोक साहित्य का अनेक स्थलों पर विवेचन है।

✓६ भोजपुरी लोक साहित्य एक अध्ययन, श्री बैजनाथ सिंह विनोद, ज्ञानपीठ प्रा० लिमिटेड, पटना १९५८ ई०, पृ० सं० २९५ मू० ५ रु०।

✓७ पंचदश लोक भाषा निबंधावली (संकलित) बिहार राष्ट्र भाषा परिषद, पटना, १९६० ई०, पृ० सं० ३०४, ४५० पैसे। इस ग्रंथ के अन्तर्गत श्री गणेश चौबे का

'भोजपुरी भाषा और साहित्य' शीर्षक निबंध पृ० २३-४३ पर संकलित है, जो सन् १९५९ ई० परिषद के वार्षिकोत्सव में उनके द्वारा पढ़ा गया था।

८ भोजपुरी लोक साहित्य का अध्ययन, डा० कृष्णदेव उपाध्याय, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, १९६० ई०, पृ० सं० ४५२ मू० १० रु०। पी० एच० डी० के लिए स्वीकृत निबंध।

९ भोजपुरी लोक गीतों के विविध रूप, प्रो० श्रीधर मिश्र प्रकाश प्रिन्टिङ्ग वर्क्स ३ क्लाइव रोड, इलाहाबाद, १९६१ ई० पृ० सं० १८४, मूल्य ४ रु०।

१० भोजपुरी एक समीक्षा, श्री दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह 'नाथ' नव साहित्य मंदिर, रैन बसेरा, दलीपपुर, शाहाबाद, १९६४ ई०, पृ० सं० ५२, मूल्य २ रुपये।

११ जन कवि भिखारी ठाकुर श्री महेश्वर प्रसाद, भोजपुरी परिवार सालिमपुर अहरा पटना ३, सं० १९६४ ई० पृ० ११४ मूल्य ४ रु०।

१२ भोजपुरी व्याकरण, श्री रास बिहारी राय शर्मा एम० ए०, भोजपुरी संसद, जगत गंज वाराणसी, सं० १९६४ ई० ग्रंथकार से प्राप्त सूचना पर आधारित।

गीत

आजु लोर घर छोड़ पराइल जाता रोकनहार कहाँ बा ?
जिनिगी के सब साध तवाँइल पहिले अइसन प्यार कहाँ बा ?
एह दुख के तसवीर बनावे में जेकर घट गइल सियाही।
संग छोड़ के जेकर भागल अपने देहियाँ के परछाँही॥
अरथी उठल अन्हारे मन के जरल चिता पर आशा टूटल।
बाइ पियासे कंठ झुराइल सूखल पानी भरल सुराही॥
जो कुछ लिखत जातबानी हम करूणा बा सिंगार कहाँ बा ?
जिनिगी के सब साध तवाँइल पहिले अइसन प्यार कहाँ बा ?
अइसन ना मन भइल कि केहू आके दरद बटावो आधा।
बीच डगर खरउरिया नाचत डालत बा जाहूँ में बाधा॥
लुगरी गँथि पहिन बिहिटी हम अबले कतना जाड़ बितवली।
खून चूस के जोंक नियन बाटे अगराइल लोभी व्याधा॥
दुइ अँगुरी जमीन देबे पर मरघट तक तैयार, कहाँ बा ?
जिनिगी के सब साध तवाइल पहिले अइसन प्यार कहाँ बा ?
बा बेजाँइ अतने अबहीं ले अइठत बाटे चढ़ल जवानी।
महल छोड़ के भावत मन के घास पात के अवर पलानी॥
हम रेशम के छोड़ छाड़ के फाटल खद्दर के गुन गवलीं।
रहल बदेवर हमरा खातिर नफा अउर हरदम नुकसानी॥
कुंकुम बाइ हाथ में खाली कंगन पानी हार कहाँ बा ?
जिनिगी के सब साध तवाँइल पहिले अइसन प्यार कहाँ बा ?

—गणेश दत्त 'किरण'

भोजपुरी मुहावरे

दउरा में डेग डालल—धीरे-धीरे चलना या पैर बढ़ाना (व्यंग)
शीघ्र चलो दौरे में क्या डेग डाल रहे हो।

दरिआव पँवरल साहस का काम करना।

दही परोसत खरिका गड़ल—अनहोनी होना। जिसकी संभावना न हो।

दही में चीनी मेरावल—उत्साह पूर्वक समर्थन करना।

दाँत चिआरल—दीनता प्रकाशित करना। निरर्थक हँसना।

दाँते अँगुरी काटल—आश्चर्य्य चकित होना।

दाँते माथे चढ़ावल—किसी को सिर पर चढ़ाना।

दिया देखावल—किसी के जन्म का साक्षी होना (व्यंगात्मक)। तुमने क्या मेरा दिया दिखलाया है।

दिन ओराइल—समय का बीतना। गुजारा।

दिन फिरल—अच्छे दिन का लौट आना।

दिने दुपहर जोन्ही लउकल—असम्भव का सम्भव होना।

दुआरी पर गिरल—सहायता की याचना करना।

दुखड़ा धान्धा कइल—गरीबीवश मिहनत मजदूरी से जीवन यापन-करना।

दूध के दाँत टूटल—शैशव का अन्त होना।

दूध के माछी भइल—अग्राह्य। किसी को नहीं भाना अतएव उसका वहिष्कार।

दूधे पूते जुड़ाइल—धन एवं संतति से सम्पन्न।

दूध भात खाइल—सुख से जीवन-यापन करना।

दू रंगे कइल—भेदभाव-जनित व्यवहार करना।

देखनिहार के घरनिहार लागल—अत्यन्त मोहक सौन्दर्य या रूप पाना।

देश छूटल—अत्यन्त विवश होकर स्थान परित्याग करना।
अत्यन्त संकटापन्न परिस्थिति में पड़ जाना।

देहिजरल—अत्यन्त क्रुद्ध होना। इर्ष्याजनित क्रोध होना।

दोसर दुआर देखल—याचक को उपेक्षापूर्वक दूसरे स्थान पर जाने का आदेश।

धूरि में जँवर बरल—घोर प्रपंच करना।

धोती आकासे सुखावल—बढ़ चढ़कर दीखाना—दिखना।

नकदरिया कइल—विवशता की स्थिति में निहोरा करना।

नाऊ देखि के नोह बढ़ल—किसी वस्तु को देखकर उसे प्राप्त करने की कृत्रिम इच्छा उत्पन्न होना।

नाँव गाँव भइल—कुख्याति प्राप्त होना।

नीमना घरे बायन दीहल—अपने से बलवान से रार बसाहना

नूने मिलल—स्वजाति की पंक्ति में भोजन करना—नमक परित्याग के बाद पुनः नमक खाना।

भोजपुरी शब्दकोश

खरखून—स्वच्छ स्थान को खुरपा खर से खुरचने का भाव ।
खरची—भोजन की सामग्री या उसे प्राप्त करने के लिये द्रव्य ।
खरपा—स्त्रियों के पहनने का एक प्रकार का चमड़े का दिहाती चप्पल ।
खरवाँस—खलमास
खरहरा—घोड़े का बाल झाड़ने का लोहे का कंघा । झाड़ू विशेष ।
खरह—खड़, तृण ।
खरेमेंटाँव—जलपान (प्रातः काल का) ।
खराई—नियत समय पर जलपान न करने से उत्पन्न कंठ राग ।
खरिहान—खलिहान ।
खल—खरल, दुष्ट ।
खलरा—खाल, चमड़ा ।
खहुआ—खाने के ही उद्देश्य से आनेवाला व्यक्ति ।
खायेक, खएका-भोजन ।
खाएन—खुराकी, ऋण ।
खाँच—बांस की बनी बड़ी टोकरी ।
खाँची—विशुद्ध
खाँड़ा—खंड, टुकरा ।
खादर—सिठ्ठी, खाद ।
खादि—अन्न रखने का जमीन से बना गढ़ा ।
खाँवा—ऊँची मेंड़ ।
खिअवनिहार—खिलानेवाला ।
खिआइल—घिसा हुआ
खिचड़ी—दाल, चावल मसाला मिश्रित पकाया भोजन । मकर संक्रान्ति का प्रथम दिन ।
खिरसा—सद्यप्रसूता गाय या भैंस का औंट कर जमाया हुआ दूध ।
खिसिआह—क्रोधी ।
खींचा मकुनी—खींचातानी
खीलि—सद्यप्रसूता गाय या भैंस का विकृत दूध ।
खीला—गहने का पेंच । मेख
खँखुड़ी—मकई का लेंढ़ा ।
खुचुराही—व्यर्थ दोष निकालना ।

३८ पन्ना के अंश

भोजपुरी कहानियां—स० श्री स्वामी नाथ जी, प्रकाशन, भोजपुरी संसद जगत गंज वाराणसी—दाम ५० पैसा सुन्दर से सुन्दर कहानियन के मासिक पत्रिका ह ।

पुस्तक परिचय

छोटी मुटी गाज़ी मइया (भोजपुरी लघु कथा संग्रह)। सं० प्रो० चन्द्रभूषण सिन्हा। प्रकाशक भोजपुरी साहित्य परिषद, गोलमुरी बाजार, जमशेदपुर। दाम ५० पैसा

ई प्रकाशन डा० सत्यदेव ओझा का शब्द में अपना ढँग के पहिला प्रकाशन बा। भोजपुरी भाषा के बहुमुखी प्रतिभा के विकास के इ सुन्दर नमूना बा। कहे के ढँग, लिखे के शैली आ भाषा के सादगी सभे एमे बा। जमशेदपुर के भोजपुरी भाइलोग सराहना के पात्र बाड़े। छपाई, सफ़ाई सब सुन्दर बनि पड़ल बा।

खैरा पीपर कबहूँ ना डोले (भोजपुरी कहानी-संग्रह) लें० श्री रामवृक्ष राय 'विधुर' प्र० भोजपुरी संसद् जगत गंज वाराणसी दाम एक रुपया।

'विधुर' जी के कलम के कमाल अँजोर का पाठकनि से ओट नइखे। इ कहानी संग्रह नीमन नीमन कहानियन के लेके कइल गेइल बा। एकरा मे के कइगो कहानी अँजोर में छपलो बा। कथानक के छोटाई आ भाषा के सादगी कहानियन के विशेषता बा। ग्राम जीवन के, गरीबी के आ मनुष्य के मनोविज्ञान सम्बन्धी भाव जहाँ तहाँ बिखरल पड़ल बाड़ी स। कहानी रोचक और मर्म पर चोट करेवाली बाड़ी सन 'विधुर' जी सचमुच ऐसन कहानी संग्रह लिखि के बधाई के पात्र बाड़े आ संसद सराहना के।

भोजपुरी एक समीक्षा—ले० महाराज कुमार दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह नाथ प्र० नव साहित्य मंदिर, रैन बसेरा, दलीप पुर, शाहाबाद (बिहार) छपाई सफाई सुन्दर पन्ना-५२, दाम रु०।

भोजपुरी एक समीक्षा में—लेखक एक तरह से कइएक प्राचीन आ भूलल भोजपुरी कवियन के चर्चा कइले बानीं। साथ साथ आपन आ अपना भोजपुरी साहित्य सेवा के पूरा बखान बा जे वाजिब बा। शुरु में भोजपुरी का भाषा आ साहित्य के एगो छोटमुट इतिहासे एह किताब में लिखाइल बा। राजा महाराजा, सन्त, गृहस्थ कवि लोग के बड़ा रोचक वर्णन भइल बा। जहाँ तहाँ उधृत रचननि के अंश एह किताब के मर्यादा अउर बढ़ा देता। भोजपुरी क्षेत्र दुर्गा शंकर जी के सेवा से नित धनी हो रहल बा। अपने के भोजपुरी और भोजपुरी प्रदेश; साहित्य रामायन एही किताब का संगे निकलल हा जेकर समीक्षा आगेवाला अंक में कइल जाई। भोजपुरी का ऊपर जे अपने ऋण लादि रहल बानी ओकरा चुकावे में बहुत समय लागी। ई किताब बहुत सुन्दर और खोजपूर्ण बा। श्री नाथ जी के कीर्ति में और चाँद जुटि रहल बा। अइसना किताब लिखला खातिर अनेक धन्यवाद।

प्र० स०

रुबाई

तू दूर नइखु हमार जिया से
नेह त लागेला हिया का हिया से
चाहे जमाना हो जाए दुश्मन
मिल के रहिहें राम सिया से

—लव शर्मा "प्रशांत"

संपादक के विचार

पुष्पांजलि

राष्ट्र कवि मैथिली शरण गुप्त जी के स्वर्गवासी भइला से हिंदी साहित्य पर बहुत बड़ धक्का पहुँचल। उहाँका रहीं त हिंदी के कवि, लेकिन उहाँ के साहित्य में सउंसे भारत के परछाहीं बा, जन-जन के आत्मा के बोल बा। अइसन कवि कवनो एगो भाषा के कवि ना होखे, ऊ त समूचा देश के आत्मा के गायक होला। राष्ट्र कवि गुप्त जी के अमर कविता में पराधीन भारत के अँगड़ाई बा, स्वाधीन भारत के उजर सपना बा वो देश के अतीत के सुनहला पन्ना तथा सुर में बँधल बा। अइसन महान कवि के बैकुंठ बास हो गइला से सउंसे देश के साहित्य में कबहूँ ना मिटेवाला अभाव आ गइल बा। जवना हिंदी के सजे-सँवारे में उहाँ का आपन पूरा जिंदगी लगा देनी, भोजपुरी के प्रधान उद्देश्य भी ओही भाषा के श्री वृद्धि कइल बा। भोजपुरी हिंदी का रास्ता में कबहूँ रोड़ा बन के ना आई, एकर प्रतिज्ञा हमनी कै बार दोहरवले बानी। हमनी के पक्का विश्वास बा कि हिंदी के विशाल सागर वास्ते भोजपुरी एगो समर्थ नदी बिया। एह नदी के स्वतंत्र अस्तित्व जरूर बा, एकर लहर-लहर के आपन लोच आ शक्ति बा; मगर एगर समूचा लोच, शक्ति वो मौलिकता साध्य ना बनके साधन बा। भोजपुरी हिंदी के विकास वास्ते हर तरह से सभे निछावर करे के तैयार बा। अइसन हालत में राष्ट्रकवि के परलोकवास से भोजपुरी के भी कम नोकशान ना भइल। हमनी 'अँजोर' वो भोजपुरी जनता का तरफ से उहाँ का आत्मा का शांति वास्ते भगवान से बिनवत बानी वो उहाँ के दुखी परिवार खातिर संवेदना परगट करत बानी।

आदर्श भोजपुरी

'अँजोर' में हमनी अगिला अंक से एगो नया स्तंभ जोड़े के सोचि रहल बानी। भोजपुरी के महातम दिन ब दिन बढ़ि रहल बा। एकर बोले वाला पाँच करोड़ लोग बा जे ना खाली हिन्दुस्तान में, बल्कि दुनिया के कुछ और हिस्सा में फइलल बा। एह भाषा के एगो बड़का खूबी ई बा कि जे लोग एकरा के ना भी बोली सके, ऊ एकरा के आसानी से समुझ लेला आ बहुत हद तक ले एकरा साहित्य चाहे गीतन के रसास्वादन करी ले ला। भोजपुरी फिल्मन के जे सफलता आ बड़ाई मिली रहल बा ओकरा पाछे भी ई बात बहुत हद तक ले देखल जा सकत बा। एह भाषा में जे ताकत, मिठास आ जीवन बा ओकरा के ना खाली भोजपुरी भाषी जनता, बल्कि दोसर लोग भी नीमन समझत-बूझत बा। एकर जवन' साहित्य जनता का सामने आ रहलि बा, उ कम उछाह देवे वाला नइखे ओकरा के देखि के भोजपुरी के भविष्य बड़ा होनहार आ सोनहुला जान पड़ता।

अइसन हालत में ई बड़ जरूरी बुझाता कि भोजपुरी भाषा के रूप में बहुत कुछ एकरूपता रहे के चाहीं व्यावहारिक रूप से इ मुश्किल जरूर बा जे एतना बड़ क्षेत्र में फइलल भोजपुरी के रूप एके खानी होखे। आजु के समृद्ध से समृद्ध भाषा के संबंध में भी अइसन एकरूपता मिलल मुश्किल बा। मगर हर समृद्ध भाषा के एगो आदर्श रुप होता जौना का आधार पर ओकर व्याकरण बनेला चाहे साहित्य रचल जाला। अपवाद का रूप में कुछ अइसन क्रिया-रुप चाहे धातु-रूप के ले लेहल जाला जवन बोली

के सामान्य धारा से अलग रह कर के भी ओकर सहायक हो जाला। एह नजर से भोजपुरी के भी एगो आदर्श रूप जरूर सोचे के चाहीं जवन ना त बोली का साहित्य का विकास में बंधन बने आ ना वोह में कवनो अनगुढ़ मन मानी चले देवे। असल में भाषा का बारे में कवनो आदर्श ऊपर से ना लदा सके। जनता जौन बोली बोलत बा ओही में से अपना काम लायक बढ़िया चीज निकाल के आदर्श भोजपुरी के रूप खड़ा कइल जा सकत बा। मगर इहाँ भी सब से बड़ गड़बड़ी भोजपुरी क्रिया के रूप लेके बा। बनारस, आजमगढ़, आरा, छपरा, चम्पारन वगैरह जिलन में भोजपुरी के एकछत्र अधिकार बा, मगर ओकरा क्रिया-रूप में कहीं कहीं बड़ अंतर बा। हमनी का जानते भोजपुरी के क्षेत्र विशेष के जवन क्रिया-रूप एगो लीक अपनालेले बा, ओकरा के छोड़ल मुश्किल बा। भोजपुरी के आदर्श क्रिया-रूप के स्थिर कइला का बाद भी ओकरा के भोजपुरी के एगो विशिष्ट शैली का रूप में जगह दीहल उचित होई। हमनी का ख्याल में भोजपुरी के क्रिया-रूप पर विचार पाछे होई, काहे कि ऊ बहुत पेचिदा सवाल बा। मगर भोजपुरी के आदर्श शब्द-रूप कइसन होखे के चाहीं, पहिले एकरे पर विचार कइल जरूरी बा। केतना लोग संस्कृत के तत्सम या तद्भव रुप लेवे के ना चाहे, केतना लोग ओकरा के ले करके भी ओकर रूप बिगाड़ देला, जइसे 'व्याकरण' से 'बेयाकरन।' श, ष, स, वो न, ण के भी अलग समस्या बा। भोजपुरी के ध्वनि में ए सब के लेहल ठीक होई कि ना।

आदर्श भोजपुरी के रुप पर एके आदमी विचार करे, ई ठीक नइखे बुझात। एपर विद्वान लोग के विचार होखे के चाहीं, बहस होखे के चाहीं, चाहे कवनों पत्रिका का जरिये लोग के विचार सामने आवे के चाहीं। पाछे ओही सब विचार वो बहस का आधार पर आदर्श भोजपुरी के रूप गढ़ल जा सकत बा। एही बात के सोचि के हमनी 'अँजोर' के अगिला अंक से 'आदर्श भोजपुरी' नाम से एगो स्तंभ जोड़ि रहल बानी। एकर पहिलका किश्त में हम आपन विचार देहब। ओकरा बाद भोजपुरी के विद्वान भाई लोग से निवेदन बा कि ऊ लोग हमरा विचार के अच्छा चाहे बुरा पहलू पर रोशनी डालो। एह तरे कवनों तरह के क्षेत्रिय विवाद से अलग हटि के जब विशुद्ध विचार के संघर्ष शुरू होई, त कवनों वजह ना जे सत्य के झलक ना मिली।

'अँजोर' के समस्या

'अँजोर' के प्रकाशन का पाछे भोजपुरी भाई लोग के उत्साह वो मदद बा। मगर पिछला कितना अंक से 'अँजोर' के माली हालत नीक नइखे। कब ई अन्हार में छिप जाई, एकर कवनों ठीक नइखे। अइसन खराब हालत का रहते भी जे 'अंजोर' का स्तर में गिरावट नइखे आइल, चाहे एकर प्रकाशन बंद नईखे भइल, इ एगो रहस्य बा। 'अँजोर' का संपर्क में रहेवाला लोग ई अच्छा तरे जानत बा कि एह रहस्य के का भेद बा। लेकिन एतना विशाल भोजपुरी अँचल वास्ते का ई लाज के बात नइखे कि ऊ एके आदमी का कँधा पर एतना बड़ बोझ लाद देले बा वो खुद आँख मुँद के सूतल बा। 'अँजोर' भोजपुरी के केतना अँजोर दे रहल बा, ई केहू से छिपल नइखे। जब हमनी साहित्य के स्तर के एगो भोजपुरी त्रैमासिक भी ना चला सकत बानी, त अउर का कर सकब। भाइ लोग 'अँजोर' के बचा के भी भोजपुरी का विकास में आपन हाथ बटाईं।

—बसंत कुमार

पर्यटकों का आकर्षण केन्द्र: बिहार

पाटलिपुत्र के प्राचीन राजनगर, नालन्दा के विश्वविख्यात विश्वविद्यालय तथा राजगृही के भव्य दीवारों के भग्नावशेषों, ससराम स्थित शेरशाह के मकबरा, वैशाली, अरेराज और लौरियानन्दनगढ़ के अशोक-स्तम्भ, बौधगया, गया, देवघर, पारसनाथ और पावापुरी के प्राचीन मन्दिरों और पटना सिटी के सिक्ख गुरुद्वारा को अवश्य देखें।

राजगृह के गमजल के झरनों में स्नान करने तथा छोटानागपुर के जल-प्रपातों, पहाड़ियों, झीलों और मनोरम जंगलों के प्राकृतिक सौन्दर्य का अवलोकन करना न भूलें।

कृपया ३१ पैसे प्रति किलोमीटर की दर से शुल्क देकर पर्यटन विभाग की मोटर गाड़ी का उपयोग करें।

प्रत्येक रविवार के प्रातः काल पटना में दर्शनीय स्थलों के परिभ्रमण के लिये बिहार राज्य पथ परिवहन निगम की सुविधाजनक बस गाड़ी, २ रु० प्रति व्यक्ति शुल्क पर सुलभ रहती है।

विशेष सूचना के लिये कृपया पर्यटक सूचना केन्द्र, मजहरूलहक पथ, पटना (टेलिफोन सं० २५२६५) से कृपया सम्पर्क करें।

पर्यटन निर्देशालय, बिहार, पटना।

अँजोर के विज्ञापन दर

कभर के चौथा पन्ना—१५०)
तीसरा पन्ना— १२५)
साधारण पन्ना— १००)
,, आधा पन्ना ५०)
,, चौथाई पन्ना ३०)

एक प्रति के ७५ पैसा
एह प्रति के एक रुपया

सालाना साढ़ेतीन रुपया
प्रकाशक
भोजपुरी परिवार पटना—३

पुरान आ नया जबाना के होड़। अल्प बचत के चलते नया जबाना जीत गइल

काका:—अरे का बकबक कईले बाड़। हमनी के जबाना आ तोहन लोग के जबाना में कवनो मुकाबला नइखे।

बचवा:—"कवनो मुकाबला नइखे काका। ना कवनो मुकाबला नइखे"। "उ दूध दही जे हमनी के खा चुकनी जा उ तोहन लोग सपनों में ना देखब"।

"अच्छा ई बतावऽ कि कवनों साल अगर तोहरा अच्छा फसल होत रहे त ओके बेच के रुपैया कहाँ राखत रहलऽ।"

"अरे हई ल, इहां कवनो पूछे के बात ह। अइसन जगह चोरा के राखत रहनी कि दिन दहाड़े डकैती कइला पर भी ना मिलित।"

"बस-बस, अब पुरान जबाना हार गइल। इहे पोआइंट पर हम जीत गइनी"।

"आ उ कइसे ?"

"हम मानतानी कि तोहन लोग खूब दूध दही खइले बाड़ऽ, लेकिन तोहन लोग के जबाना में अल्प बचत ना रहे"।

"ई अल्प बचत का बलाय ह"।

"ई कवनो बलाय ना ह। बड़ा निमन चीज ह। कुछ दिन पहिले हमनी का स्कूल में एगो साहब आके एकरा बारे में समझवलन। उ कहलन कि आजकल के जबाना में पइसा बचावल बहुत जरूरी बा। आपन भविष्य खातिर आ आपन बेटा-बेटी के भविष्य खातिर। आ बढ़िया तरह से पइसा बचावे के इन्तजाम सरकार अल्प बचत द्वारा कइले बीया। फायदा ई बा कि पइसा जमा के जमा रहल आ उपर से नफा भी मिलल। आ नफा पर कवनों तरह के टेक्स ना लागे। एसे देश के भी फायदा बा। तोहार पइसा पहिले घर में रखल-रखल सड़त रहत रहे। अब उ सरकार के पास जमा रही आ सरकार ओके देश के तरक्की के काम में लगा सकेले। एसे अल्प बचत जेमे बारह वर्षीय सुरक्षा प्रमाण-पत्र, दस वर्षीय तिरक्षा जमा पत्र, सावधि संचयी जमा लेखा, डाकघर बचत बैंक बाड़े सन। तोहार परिवार के आ देश के सब कोई के फायदा होई। आ एकरा खातीर ज्यादे दूर भी नईखे ायेके। गाँव के डाक घर में सब काम हो जाई। आ छोट-बड़, ऊँच-नीच सब कोई आपन कूबत के अनुसार पइसा नफा पर बचा सकेला"।

"हँ, बचवा, इ त बहुत अकिलमंदी के जोजना सरकार बनवले बीया। हमहूँ काल्ह जा के डाक घर से एकरा बारे में पता करके कुछ पैसा जमा करब"।

प्रचारित, विशेष पदाधिकारी
राष्ट्रीय बचत, बिहार सरकार पटना द्वारा

भिखारी ठाकुर

भोजपुरी परिवार पटना से प्रकाशित, अनमोल ग्रन्थ भिखारी ठाकुर, एक अद्भुत ग्रन्थ बा। भूमिका लिखल ह डा० परमेश्वरी प्रसाद गुप्त। दाम चार रुपया। किताब बहुत कम बचल बा। आजे ४) भेजि के डाक से आपन प्रति मँगाईं।

व्यवस्थापक
भोजपुरी परिवार, पटना—१

मुद्रक, युनियन प्रेस पटना